

बीसवीं शताब्दी का साहित्य

3

सम्पादक मण्डल

विनायक कृष्ण गोकक

ये० चेलिशेव

इन्द्रनाथ चौधुरी

चं० आइत्मातोव

लक्ष्मीचंद जैन

गे० अंज्जापाबीद्जे

ह० म० नायक

से० बरुज्जिन

हेमचन्द्र पांडे

र० हमजातोव

विष्णु प्रभाकर

से० जलीगिन

रवि मोहन बक्शाया

इ० कोरोव्किन

गुलाबदाम ब्रोकर

फ्रे० कुज्नेत्सोव

वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य

ले० लेओनोव

अभय मोर्य

अ० मिलाइलोव

रघुवीर सहाय

मी० सन्नानिक

मिखाइल शोलोखीव

चुनी हुई रचनाएं

МИХАИЛ ШОЛОХОВ
Избранное
(Библиотека советской литературы XX века, том III)
На языке хинди

MIKHAIL SHOLOKHOV
Selected Works
(The 20th Century Soviet Literature, vol III)
In Hindi

सावित्र्य मघ म प्रकाशित

ISBN 5-05-002102-2

अनुक्रम

दोन की कहानियां

लच्छन	६
(अनुवादक विनय शुक्ला)	
चरवाहा	८१
(अनुवादक विनय शुक्ला)	
हरामी	३४
(अनुवादक मदनलाल मध)	
नीलाभ स्तेपी	७२
(अनुवादक विनय शुक्ला)	
बच्छिडा	८३
(अनुवादक विनय शुक्ला)	
पराया खून	६२
(अनुवादक विनय शुक्ला)	
इमान का नमीबा	११७
(अनुवादक मदनलाल मध)	
कुवारी भूमि का जागरण	१६४
भाग १	
(अनुवादक विनय शुक्ला)	
नोबल पुरस्कार विजेता का भाषण	५८३
(अनुवादक योगेन्द्र नागपाल)	

दोन की कहानियां

लच्छन

१

जली बारूद की गंध छोड़ते खाली कार्गूम, भेड की हड्डी, फौजी नक्शा, सैनिक गतिविधियों की रिपोर्ट, घोड़े के पसीने की गंधवाली लगाम, डबल रोटी का टुकड़ा—यह सब एक ही मेज पर पड़ा है। उधर खिड़की के दासे से पीठ टिकाये निकोल्का कोशेवोई मीलन के कारण फफूद लगी खुरदरी बेच पर बैठा है। उसकी ठड में अकड़ी उर्गालियों में पेमिल है। मेज पर फैले पुराने पोस्टरों के पास आधा भरा फार्म है। खुरदरे पन्ने पर बस यही लिखा है कोशेवोई निकोलाइ। स्क्वाइन कमांडर। खेतीहर परिवार में। रूसी युवक कम्युनिस्ट लीग का सदस्य।

आयु के खाने में पेमिल ने धीरे-धीरे लिखा १८ वर्ष।

निकोल्का के कंधे चौड़े हैं, उम्र में बड़ा लगता है। भुर्रियों में घिरी आखों और बूढ़ों की तरह भुकी कमर के कारण वह प्रौढ़ लगता है।

“बिल्कुल बच्चा है, छोकरा ही है, होठों पर मा का दूध भी नहीं सूखा अभी,” स्क्वाइनवाले मजाक में कहते हैं। “पर लाख दूढ़ने पर भी ऐसा दूसरा नहीं मिलेगा। दो-दो गिगेंहो का सफाया कर चुके हैं और अपना नुकसान न कर बराबर है। पूरे छह महीने से स्क्वाइन को ऐसी-ऐसी लड़ाइयाँ लड़ा रहा है। किसी पुराने कमांडर से उन्नीस नहीं है।”

निकोल्का को अपना अठारह वर्ष की उम्र पर शर्म आती है। हमेशा उम्र के मनहूस खाने में पहुँचकर पेमिल अटक जाती है और निकोल्का के कपोल शर्म के कारण लाल हो जाते हैं। निकोल्का का पिता कज्जाक था मतलब वह भी कज्जाक ही हुआ। उसे धुंधले सपने की तरह याद आता है कि जब वह कोई पाँच-छह साल का था तो पिता ने उसे अपने फौजी घोड़े पर बिठाया था।

“बेटा अयाल कसके पकड़े रह।” पिता जी चिल्लाकर कह रहे

थे और मा रसोई के दरवाजे में खड़ी निकोल्का की ओर देखकर मुस्करा रही थी, उनके चेहरे का रंग उड़ा-उड़ा-सा था, आखे फड़े कभी वह घोंडे की पीठ से चिपटी नन्ही टांगों को, तो कभी लगाम पकड़े पिता जी की ओर देख रही थी।

यह बहुत पुरानी बात है। फिर जर्मनी की लड़ाई में निकोल्का का पिता लापता हो गया। उसके ठौर-ठिकाने की कौन्ती खबर नहीं मिली। मा भी मर गयी। निकोल्का को अपने पिता में विरासत में घोंडे में प्यार, अदम्य साहस और लच्छन मिला था—कबूतरी के अडे जितना बड़ा, ठीक वैसा जैसा पिता के था, बायीं टांग पर टखने से कुछ ऊपर। पंद्रह साल की उम्र तक नौकरी-चाकरी करता रहा और बाद में किसी से बरानकोट मागकर गांव में गुजरती लाल रेजीमेंट के साथ ब्रागेल* की फौज में लड़ने चला गया। इन्हीं गर्मियों की बात है, निकोल्का सैन्य कमिसार के साथ दोन में नहा रहा था। वह निकोल्का की धूप से मावली कुबड़ी पीठ को थपथपाकर हकलाता हुआ बोला

“तु-तुम भ-भ-भाग्यशाली हो! ह-हा, भाग्यशाली हो! लच्छन कहते हैं, भाग्य की निशानी होता है।”

निकोल्का ने अपने चिट्टे दात चमकाकर गोता लगाया थोड़ी दूर जाकर मिर बाहर निकाला और फुफकारकर चिल्लाया

“तुम भी क्या अजीब बात कहते हो! बचपन से यतीम हूँ, जिदगी भर लोगों की चाकरी करते-करते कमर झुक गयी और तुम कहते हो भाग्यशाली हूँ।”

और दोन को अपने आगोश में समेटती पीली मकरी गेती की ओर तैर पड़ा।

२

वह घर जिसमें निकोल्का टिका था दोन के ऊँचे किनारे पर स्थित था। खिड़की से हरा कछार और पानी की मलेटी धारा दिखायी पड़ती थी। तूफानी रात को लहरे किनारे से टकराती, खिड़कियों के कपाट

* गृहयुद्ध में एक प्रतिक्रान्तिकारी जनरल।—म०

चरमराते और निकोल्का को लगता कि फर्श की दरारों में रिसकर घर में भरता पानी मकान को भिँभोड़ रहा है।

वह मकान बदलना चाहता था पर शरद तक बस वहीं रह गया। ठिठुरन भरे प्रातःकाल की नीरवता को नाल जड़े बूटों की ठकाठक से भग करता निकोल्का ड्योढ़ी में निकला और चेरी की बगिया में ओस में नम रुपहली घास पर लेट गया। कोठरी में घर की मालकिन गाय को शात खड़ा रहने के लिये पुचकार रही थी, बछड़ा जोर-जोर से रभा रहा था और बाल्टी में दूध की धारा गिरने की आवाज आ रही थी।

अहाते का फाटक खटका, कुत्ता भौकने लगा। प्लाटन नायक की आवाज सुनायी पड़ी

“कमांडर घर पर है”

निकोल्का कोहनियों के बल उठकर बोला

“यह रहा। क्यों, क्या हुआ?”

“कस्बे में हरकारा आया है। कहता है कि माल्स्क इलाके में गिराई आया है, ग्रूशन्स्की राजकीय फार्म पर कब्जा कर लिया उसने”

“बुलाओ उसे।”

हरकारा गर्म पसीने में तर घोड़े को अस्तबल की ओर खींच ले चला। पर वह आगन के बीचो-बीच पहले अगली टांगों पर गिर पड़ा और फिर बगल पर लुढ़क गया, नथुने फड़काकर उसने दम तोड़ दिया। उसकी जड़ आखे जजीर में बंधे भौक-भौककर बेहाल कुत्ते पर टिक गयीं। बेचारे घोड़े को इसलिये दम तोड़ना पड़ा क्योंकि उस लिफाफे पर जो हरकारा लाया था क्रॉस के तीन चिन्ह बने हुए थे और हरकारा बिना कहीं दम लिये चालीम वेर्स्ट* तक घोड़े को बेतहाशा दौड़ाता लाया था।

निकोल्का ने पढ़ा कि अध्यक्ष उसके स्क्वाड्रन की सहायता माग रहा था। कमरे में तलवार लटकाने समय उसने थकान के साथ सोचा “कहीं पढ़ने-वढ़ने के लिये जाना चाहिये, इधर यह गिराई आ टपका कर्मसार ताना मारता है कि एक शब्द भी ठीक से लिख पाता नहीं

* १ वेर्स्ट—१.०६ किलोमीटर।—म.०

और कहने को स्क्वाइन का कमांडर है मेरा इसमें क्या दोष है कि चर्च का स्कूल पास करने तक का वक्त नहीं मिला ? वह भी बड़ा अजीब है और इधर यह गिरोह आ टपका फिर खून-खराबा होगा, मैं तो थक गया हूँ ऐसी जिदगी से इस सब से जी उकता चुका है ”

वह चलते-चलते कारबाइन में गोलियाँ भरता हुआ बाहर निकला, दिमाग में घोड़ों की तरह विचार सरपट दौड़ते जा रहे थे “ शहर जाने को जी चाहता है कहीं कुछ पढ़-बढ़ लेता ”

मरे घोड़े के पास से वह अस्तबल की ओर जा रहा था, धूल भरे नथुनों में बहती खून की ऊदी धारा को देखकर उसने मुँह फेर लिया।

३

ऊबड़-खाबड़ कच्ची सड़क पर छकड़ों की लीको में घनी जंगली घास उगी हुई थी। कभी इस रास्ते में स्तेपी में सुनहली बूंदों की तरह छिटके खलिहानों को किमानों की बैलगाड़ियाँ आती-जाती थीं। मुख्य मार्ग टेलीग्राफ के खंभों के साथ-साथ जाता था। खंभों की पान बीहड़ों और घाटियों को पार करके शरतकालीन धुंध में विलीन हो रही थी और खंभों के साथ-साथ जाते मार्ग पर सरदार अपने गिरोह को लिये जा रहा था। गिरोह में सोवियत सत्ता से असंतुष्ट दोन और कुबान के पचास कज्जाक शामिल थे। तीन दिन और तीन रातों में वे रेवड में मुँह मारे भेड़ियों की तरह पगडंडियों और बीहड़ों में भागे जा रहे थे, और निकोल्का कोशेवोई का दस्ता लगातार उनका पीछा कर रहा था।

गिरोह में भूतपूर्व फौजी, शातिर और दुसाहसी लोग शामिल थे, फिर भी उनका सरदार चतित था रकाब के बल उचक-उचककर आँखों से स्तेपी को छान रहा था, दोन के उस पार फैली वन की नीलाभ पात तक दूरी का अनुमान लगा रहा था।

बस ऐसे ही भेड़ियों की तरह लुकते-छिपते वे जा रहे थे और निकोल्का कोशेवोई का स्क्वाइन उनके मिर पर सवार था।

गर्मियों में निर्मल आकाश तले दोन की स्तेपियों में गेहूँ की लह-

लहाती बालिया चादी की तरह झकार करती है। लुनाई से पहले सलोन, ठोस गेहू की बालियों के गुच्छे मग्न बरस के छोकरे की मूछों की तरह काले हो जाते हैं और जौ की बालिया आदमी से ऊँचाई में होड करने लगती हैं।

दाढ़ीवाले कज्जाक किसान वनो-कुजों के किनारे दुम्मट मिट्टी में रेतीले टीलो पर जौ बोते हैं। फसल उमकी कोई खाम नहीं होती। कभी भी एक एकड में चार-पाच मन से अधिक नहीं रहती। पर बोने इसलिये है कि जौ में देसी वोड्का बनती है, ओम जैसी निर्मल, क्यो-कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनके पुरखे पीते आये हैं। शायद इमीलिये दोन प्रदेश के कज्जाको के राज्यचिन्ह पर भी शराब के पीपे पर बैठा नगा कज्जाक बना था। पतझड के दिनों में बेद की टहनियों की बाडों के पीछे कज्जाको की टोपिया लडखडाती नजर आती।

इमीलिये सरदार भी रोज धुत्त रहता, इमीलिये मशीनगनवाली बगियों में गाडीवान और मशीनगन चालक नशे में झूमते रहते।

गिरोह के सरदार ने सात साल में अपने गाव के दर्शन नहीं किये थे। पहले जर्मनों की कैद में रहा, फिर ब्रागेल की फौज में भरती हो गया, धूप में तपता कॉन्स्तानतीनोपोलिस, कटीले तार से घिरा बंदी शिबिर, फिर पालदार तुर्क किशती, कुबान के घने मरकडे और अब यह गिरोह।

बस यही थे सरदार की जिदगी के मुकाम। उसका दिल वैसे ही कठोर हो गया था जैसे कि स्तेपी में झील के सूखे कीचड में ढोंगे के खुरों के निशान। अदर ही अदर में घुन की तरह अजीब-सा दर्द उसे कुतर रहा था, अग-अग में क्लार्ति व्याप्त थी। सरदार महसूस करता था कि इस दर्द और पीडा को किसी भी शराब से नहीं बुझाया जा सकता। पर पीता था—एक दिन भी होश में नहीं रहता था क्यो-कि दोन की स्तेपियों में पके जौ की मधुर गंध व्याप्त थी और गावों-कम्बों में फौजियों की गौरवर्ण बीबिया ऐसी वोड्का बनाती थी जैसे चश्मे का बहता पानी।

४

सुबह तडके इस साल का पहला पाला पडा। कुमुदिनियों के चौड़े पत्तों पर चादी की तरह बिखर गया, लुकीच को सुबह पनचक्की के

पहिले पर अभ्रक की तरह चमचमाते हिमकण दिखाई दिये।

सुबह से लुकीच की तबीयत खराब थी कमर दुख रही थी, तीखे दर्द में पैरों में मानो मीसा भर गया था। वह चक्की का मुआयना करने लगा, बड़ी मुश्किल में पाव घसीट रहा था, बेढब बदन का हाड-मांस उसे अलग-अलग होता लग रहा था। दलिया दलने की मशीन से चूहों की बिरादरी निकलकर दौड़ी, पानी से भरी नम आखे उसने ऊपर उठायी छत की कड़ी पर बैठा कबूतर गुटरगू कर रहा था। नथुनों से, जो चिकनी मिट्टी से बने लगते थे, बूढ़े ने सीलन की घुटन भरी बू और पिमे गेहू की सुगंध का फेफड़ों में खींचा, कान लगाकर सुनने लगा पानी गुड-गुड करता, चटकारे लेता उन बल्लियों को चूम रहा था जिन पर पनचक्की टिकी थी। मोच में डूबकर वह अपनी दाढ़ी मसोसने लगा।

लुकीच दम लेने के लिये मधुवाटिका में जाकर लेट गया। भेड़ की खाल का ओवरकोट ओढ़कर सो गया, मुंह खुला था, होठों के कोनों में जमी लमदार और गर्म गाल से दाढ़ी भीग रही थी। माझ के भुटपुटे ने बूढ़े की कुटिया पर म्लेटी रंग पोत दिया था कोहरे के दूधिया चिथड़ों ने पनचक्की को लपेट लिया

जब लुकीच की आख खुली तो उसे जंगल से आने दो घुड़मवार नजर आये। उनमें से एक मधुवाटिका में बूढ़े को देखकर चिल्लाया

“बाबा, डघर आओ।”

लुकीच शक की नजर में उन्हे देखकर खड़ा हो गया। इन अशांत वर्षों में वह ऐसे अस्त्रधारी लोगों को बहुत देख चुका था जो बिना पूछे चारा और आटा ले लेते थे। कोई भेद किये बिना वह उन सबमें गहरी नफरत करता था।

“जल्दी आ, खूमट बुढ़े।”

छत्ताघरों के बीच से, बदरग होठों में निशब्द बुदबुदाता हुआ लुकीच धीरे-धीरे चलकर मेहमानों में कुछ दूरी पर खड़ा हो गया। वह उनको तिरछी नजरों में देख रहा था।

“हम लाल फौज के हैं, बाबा तुम हममें डरो नहीं,” शांत स्वर में सरदार फुसफुसाया। “हम गिरोह का पीछा कर रहे हैं, अपने लोगों में पिछड़ गये हैं कल यहाँ से कोई दस्ता गुजरा था, शायद तुमने देखा हो?”

“हां कोई गये तो थे इधर से।”

“बाबा, किधर गये वो?”

“शैतान जाने, मेरी बला से!”

“तुम्हारी चक्की में तो उनमें से कोई नहीं रहा?”

“नहीं,” कहकर लुकीच ने उनकी ओर पीठ फेर ली।

“रुक बुढ़े।” सरदार कूदकर घोड़े से उतर गया, टेढ़ी टांगों पर नगे में डगमगाया और मुंह से देसी बोद्का की तीखी बू छोड़कर बोला: “हम, बाबा, कम्युनिस्टों का सफ़ाया कर रहे हैं... हां-हां! और हम है कौन, यह तुम्हारी अक्ल की बात नहीं।” उमे ठोकर लगी और लगाम हाथ से छूट गयी। “तुम्हारा काम बस मत्त घोड़ों के लिए चारा देना और चुप रहना है पलक झपकते ही हो जाना चाहिये यह काम। ममभे? कहां है अनाज?”

“नहीं है,” नज़र चुराकर लुकीच बोला।

“उम कोठरी में क्या है?”

“कबाड-वबाड भरा है अनाज नहीं है!”

“चल जरा, देखू मैं भी!”

बूढ़े का कालर पकड़कर घुटने में धक्के देता वह ज़मीन में धंसी टेढ़ी दीवारोंवाली कोठरी की ओर चल पड़ा। दरवाज़ा खोला। खत्तियों में गेहूँ और जौ भरा था।

“क्या यह अनाज नहीं है, हरामी बुढ़े?”

“अनाज है, अन्नदाता. पिसाई के लिये है... साल भर एक-एक दाना करके मैंने इसे जमा किया और तुम हो कि घोड़ों को खिलाना चाहते हो”

“तो तू क्या चाहता है कि हमारे घोड़े भूखों मर जाये? तू क्या लालवालो का तरफ़दार है, अपनी मौत को बुलावा दे रहा है?”

“दया करो मुझ पर, भले आदमी! मेरा क्रमूर क्या है?” टोपी उतारकर लुकीच घुटनों पर गिर पड़ा और सरदार के बालों में ठके हाथों को चूमने लगा...

“बोल तुझे लालवाले पसंद हैं?”

“माफ़ करो मुझे, रहमदिल! मेरी बेवकूफी माफ़ कर दो।

कर भी दो माफ, मुझे मारो नहीं," सरदार की टांगों में लिपट कर बूढ़ा गिड़गिड़ाने लगा।

"सौगंध खा कि तू लालवालो का तरफदार नहीं है नहीं, सलीब बनाने में काम नहीं चलेगा, मिट्टी खाकर दिखा।"

बूढ़े ने मिट्टी में रेत भरी और अपने पोपले मुंह में डालकर उसे चबाने लगा, उसकी आंखों में आंसुओं की धारा बह रही थी।

"ठीक है, अब मैं यकीन करता हूँ। चल, उठ बुढ़े!"

बूढ़ा अपनी सुन्न टांगों पर खड़ा न हो पा रहा था। उसे इस हालत में देखकर सरदार हमसे लगा। उधर बहा जमा हुए घुड़सवार खत्तियो में निकालकर जौ और गेहूँ घोड़ों के पैरों में डाल रहे थे, आगन को मुंहरे दानों में पाट रहे थे।

५

कोहरे और धुंध में भरी भोर थी।

लुकीच सतरी की आंख बचाकर सिर्फ उमी को जान पगडंडी में मड़क में नहीं, बीहड़ों और उनींदे वन को पार करना हुआ गांव की ओर दौड़ पड़ा।

पनचक्की के पास पहुंचकर वह बगल की गली में बड़ी मड़क पर मुड़ना चाहता ही था कि उसके सामने घुड़सवारों की धुधली आकृतियाँ प्रकट हुईं।

"कौन है?" नीरवता में कड़कनी आवाज सुनायी दी।

"मैं हूँ" लुकीच बुदबुदाया, हाथ-पाव फूल गये, थर-थर कांपने लगा।

"कौन हो? पास है? किस काम में घूम रहे हो?"

"चक्कीवाला हूँ मैं यही की पनचक्की से। काम से गांव जा रहा हूँ।"

"किस काम में? चलो, कमांडर के पास। आगे-आगे चल" घोड़े को आगे बढ़ाकर उनमें से एक चिल्लाया।

लुकीच को अपनी गर्दन पर घोड़े के गर्म-नम होठों की अनुभूति हुई और वह लगडाना हुआ गांव की ओर चल पड़ा।

चौक में खपरैल से ढके मकान के सामने वे रुक गये। संतरी कराह-कर घोड़े से उतरा और उसे बाड़ से बांधकर तलवार खड़खड़ाता ऊँचे ओसारे पर चढ़ा।

“मेरे पीछे-पीछे चलता आ!..”

खिड़कियों में रोशनी टिमटिमा रही थी। उन्होंने घर में प्रवेश किया।

लुकीच को तबाकू के धुएं के मारे छीक आ गयी, उसने टोपी उतारकर भट से देवस्थान की ओर मुंह करके सलीब का चिन्ह बनाया।

“बुढ़े को पकड़ा है। गांव में जा रहा था।”

निकोल्का ने मेज़ पर टिका अस्त-व्यस्त बालोंवाला अपना सिर उठाया, उनींदे, पर कड़े स्वर में पूछा:

“कहां जा रहा था?”

लुकीच आगे बढ़ा और खुशी के कारण उसे उच्छृंखल आ गयी।

“अरे, यह तो अपने ही हैं, मैं तो सोच रहा था कि फिर से वो अधर्मी आ गये हैं... बहुत डर गया था, पूछते हुए भी डर लग रहा था... मैं चक्कीवाला हूँ। जब मित्रोखिन के जंगल से तुम लोग जा रहे थे तो मेरे यहां ठहरे थे, मेरे प्यारे, मैंने तुमको दूध पिलाया था . क्या भूल गये?... ”

“अच्छा, कहना क्या चाहते हो?”

“मेरे प्यारे, कहूंगा यह: कल शाम को वो गिरोहवाले मेरे यहां आकर घोड़ों को अनाज खिलाने लगे!.. मेरी हंसी उड़ाने लगे... और उनका सरदार बोला: हमारा साथ देने की शपथ ले, जबर्दस्ती मिट्टी खिलवायी मुझे।”

“इस वक्त कहां है?”

“वही हैं। अपने साथ ढेरों वोदका लाये हैं, पापी कही के, मेरे घर में पी रहे हैं और मैं दौड़ा-दौड़ा तुम्हें खबर करने आ गया, तुम्ही कुछ करो उनकी अक्ल ठिकाने लगाने के लिए।”

“घोड़ों को तैयार करने को कह दो!.. बूढ़े की ओर मुस्कराता हुआ निकोल्का बेंच से उठा और थकान के साथ बरानकोट की आस्तीन खींची।

दिन निकल आया था।

रातों जागते रहने के कारण निकोल्का का चेहरा पीला पड़ गया था। वह घोड़े को दौड़ाता हुआ मशीनगनवाली बग्घी के पास जाकर बोला :

“जैसे ही हल्ला बोलेंगे तुम दायें बाजू पर मार करना। हमें उनका पहलू तोड़ना है !”

और मार्च के लिये तैयार स्क्वाड्रन की ओर चला गया।

मरियल बलूतों के कुंज के पीछे सड़क पर घुड़सवार दिखाई पड़े—चार-चार की पांतों में, बीच में मशीनगनोंवाली बग्घियां थी।

“सरपट दौड़ाओ !” निकोल्का चिल्लाया और अपनी पीठ पीछे खुरों की बढ़ती गरज को महसूस करके उमने अपने घोड़े को चाबुक लगाया।

वन के आंचल पर मशीनगन बेतहाशा ठक-ठक करने लगी और वे जो सड़क पर थे तेजी से, जैसे कि युद्धाभ्यास के समय, बिखर गये।

* * *

तूफान से गिरे पेड़ों के ढेर से निकलकर भेड़िया दौड़ता हुआ टीले पर चढ़ गया। उसके सारे बदन पर गोखरू चिपके हुए थे। थूथनी उठाकर उसने टोह ली। पास ही में धांय-धांय गोलियां चल रही थी, चीत्कारों का नाद-निनाद सुनाई पड़ रहा था।

“ठुक !” — आल्डर के कुंज में गोली चलती और कहीं टीले के पार से, जोतों के पार से प्रतिध्वनि बड़बडाती — “ठाक !”

और फिर “ठुक, ठुक, ठुक” होने लगी। टीले के पार से जवाब में “ठाक ! ठाक ! ठाक !” सुनायी पड़ती।

भेड़िया कुछ देर तक खड़ा रहा, फिर धीरे-धीरे घाटी में, सूखी ऊंची घास में विलीन हो गया ..

“संभालकर !.. मशीनगनों की बग्घियों को मत छोड़ना !.. भाड़ियों में ... अरे भाड़ियों में चलो, तुम्हारी मां की !..” सरदार रक्ताव से खड़ा होकर चिल्ला रहा था।

पर मशीनगनों की बगिचों के पास गाड़ीवान और मशीनगनचालक हड़बड़ी में रासों काट रहे थे, और मशीनगनों की निरंतर गोलीबारी से जगह-जगह टूटी पांत बिखरकर सिर पर पांव रखकर भाग पड़ी।

सरदार ने घोड़ा मोड़ा, उसकी ओर एक घुड़सवार अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता, तलवार घुमाता आ रहा था। छाती पर भूलती दूरबीन और नमदे के लबादे को देखकर सरदार समझ गया कि यह मामूली लाल सैनिक नहीं है और उसने अपने घोड़े की लगाम खींची। दूर से ही उसे बिना मूंछोंवाला युवा चेहरा दिखायी पड़ा, क्रोध से विकृत, हवा के कारण मिची-मिची आंखें। सरदार का घोड़ा पिछली टांगे झुकाकर एक ही स्थान पर नाच पड़ा, पेटी में फंसी पिस्तौल को झटके से निकालकर वह चिल्लाया :

“दुधमुहे पिल्ले ! .. घुमा, घुमा अपनी तलवार, मैं तुम्हें दिखाता हूं ! ..”

सरदार ने तेजी से पास आते काले लबादे पर गोली चलायी। आठ-एक गज दौड़कर घोड़ा गिर पड़ा, निकोल्का ने लबादा उतार फेंका, वह गोलियां चलाता हुआ सरदार के पास आता जा रहा था ...

भाड़-भाड़ा के पीछे से किसी का वहशी चीत्कार अधूरा रह गया। बादल ने सूरज को ढक दिया और स्तेपी, सड़क, हवाओं और पतझड़ से ठिठुरते वन पर परछाईया तैरने लगी।

“बच्चा है, होंठों पर दूध अभी सूखा नहीं, जरूरत से ज्यादा गर्म-मिजाज है, इसीलिये अब इसे मौत अपने पंजों में दबोच लेगी,” सरदार के दिमाग में रुक-रुककर ये विचार कौंध रहे थे और जब निकोल्का की पिस्तौल खाली हो गयी, तो सरदार ने लगाम छोड़ दी और चील की तरह उम पर झपट पड़ा।

जीन से झुककर उसने तलवार घुमायी, प्रहार से धराशायी होती देह की उसे क्षणिक अनुभूति हुई। सरदार कूदकर घोड़े से उतरा, मृतक की गर्दन से लटकी दूरबीन उतारी, कंपकंपाती टांगों पर नज़र डाली। इधर-उधर देखकर वह झुककर मृतक से क्रोम-लेदर के बूट उतारने लगा। चटकते घुटने पर पैर टिकाकर उसने झट से एक बूट उतार डाला। दूसरा बूट नहीं उतर रहा था, शायद मोज़ा खिसक गया था, गुस्से में गाली देकर उसने झटके से मोज़े सहित बूट उतार लिया। पैर पर, टखने से ऊपर उसे कबूतरी के अंडे जितना बड़ा लच्छन

दिखायी पड़ा। धीरे-धीरे, मानो उसे डर हो कि कहीं जाग न जाये, उसने ठंडा पड़ता सिर घुमाकर चेहरा अपनी ओर मोड़ा, मुंह से कलकल बहती खून की धारा से उसके हाथ सन गये। ग़ौर से चेहरे को देखकर ही वह टेढ़े कंधों से लिपटकर भर्रायी आवाज़ में बोला :

“बेटे ! .. निकोल्का, बेटे ! .. मेरे लाल ! .. मेरे कलेजे के टुकड़े ! ..”

नीला पड़कर वह चिल्लाया :

“कम से कम एक शब्द तो बोल ! यह हो कैसे गया ?”

बुझती आंखों, खून से तर पलकों को देखकर उसने अपना माथा पटका, फिर उठकर निर्जीव देह को भिंभोड़ने लगा .. पर निकोल्का ने नीली जीभ कसकर दांतों में भीच रखी थी, मानो उसे डर था कि कहीं कोई बड़ी और अहम बात उसके मुह से न निकल जाये।

सरदार ने बेटे के ठंडे पड़ते हाथों को छाती से लगाकर चूमा और दातों में पिस्तौल की पसीजी नाल भीचकर अपने मुह में गोली चला दी .

* * *

और शाम को जब भाड़ियों के पीछे से घुड़सवार प्रकट हुए, हवा उनके स्वरो और रक्काबों की खड़खड़ को उड़ाकर पास लाने लगी, सरदार के बिखरे बालोंवाले सिर से एक गिद्ध अनिच्छा के साथ उड़ा। उड़कर वह शरत्कालीन धुधले, बदरग आकाश में विलीन हो गया।

चरवाहा

१

धूप से झुलसी भूरी स्तेपी से सोलह दिनो से लू चल रही थी। जमीन जलकर कोयला बन गयी, घास पीली पड़ गयी, राजमार्ग के किनारे बने कुएँ सूख गये, अनाज की बालिया पूरी खुलने से पहले ही मुरझाकर बूढ़ो की तरह झुक गयी।

दोपहर को ऊँघते गाव में घंटे की टन-टन गूजने लगी।

कड़कती धूप और नीगवता का राज्य था। बम धूल उड़ाने कदमों की आहट, ऊबड़-खाबड़ सड़क पर सभल-सभलकर चलते बूढ़ो की ला-ठियों की ठक-ठक सुनायी पड़ रही थी।

घटा गाववालों को सभा का बुलावा दे रहा था। सभा में चरवाहे की नियुक्ति के सवाल को हल करना था।

कार्यकारिणी समिति में लोग मक्खियों की तरह भिनभिना रहे थे, तबाकू का धुआँ भरा था।

अध्यक्ष पेसिल के टुकड़े से मेज को ठकठाकर बोला

“नागरिको! पुराने चरवाहे ने हमारे द्वार चराने से इकार कर दिया, कहता है कि तनखा कम है। हम, कार्यकारिणीवाले, ग्रिगोरी फ़ोलोव को इस काम पर रखने की सिफ़ारिश करते हैं। यही पैदा हुआ, अनाथ है, कोम्सोमोल का सदस्य है बाप उसका, जैसा कि सब जानते हैं, मोची था। वह बहन के साथ रहता है, पेट भरने को उनके पास कुछ है नहीं। मेरे खयाल में आप लोग उसकी हालत पर रहम करके उसे द्वार चराने का काम दे दोगे।”

बुढ़े नेस्तेरोव से चुप न रहा गया, चुलबुलाकर वह बोला

“हम यह नहीं कर सकते झुंड बड़ा है, और वह भी कोई चरवाहा है। दूर ले जाकर चराना है क्योंकि आस-पास चारा है नहीं और उसे यह काम आता नहीं। पतझड़ तक आधे बछड़े भी नहीं बचेगे ”

इग्नात चक्कीवाला , घाघ बुढ़ा , विद्वेषपूर्ण स्वर में शक्कर घोलकर बोला :

“चरवाहा हम कार्यकारिणी के बिना भी ढूँढ़ लेंगे , यह हमारा अपना मामला है ... और आदमी हमें ऐसा चुनना चाहिये जो बूढ़ा , भरोसेमंद हो , ढोरों की देखभाल करना जानता हो ... ”

“ ठीक कहा , दादा ... ”

“अगर बुढ़े को रखोगे तो और भी जल्दी बछड़ों से हाथ धो बैठोगे ... अब वह ज़माना नहीं रहा , सब जगह चोर-उचक्कों की कोई कमी नहीं ... ” अध्यक्ष दृढ़ता के साथ बोला । पीछे से लोगों ने उसका समर्थन किया :

“बुढ़े से काम नहीं चलेगा ... यह भी ध्यान में रखो कि ये गाये नहीं बल्कि जवान बछड़े हैं । कुत्ते की तरह फुर्तीली टांगों की ज़रूरत है उन्हें चराने के लिये । भुंड बिदक गया , तो बुढ़ा दौड़ते हुए अपनी बत्तीसी खो बैठेगा ... ”

ठहाके गूंज उठे , पर बुढ़ा इग्नात अपनी बात मनवाने के लिये दबे स्वर में बोला :

“कम्युनिस्टो का यहां कोई काम नहीं ... यह काम तो पूजा-पाठ के साथ किया जाता है , ऐसे-वैसे नहीं ... ” और खूँसट बुढ़े ने अपनी टांट पर हाथ फेरा ।

पर अध्यक्ष फ़ौरन सख्ती से बोला :

“इस तरह की बातें नहीं चलेंगी .. इस तरह की ... ऐसी बातों के लिये ... सभा से बाहर निकाल दूंगा ... ”

प्रातः , जब चिमनियों से मैली रुई के चिथड़ों की तरह निकलकर धुआं चौक में फैलकर छाने लगता है , ग्रिगोरी ने डेढ़ सौ ढोरों का भुंड जमा किया और गांव की गलियों से हांककर सलेटी , मनहूस टीले की ओर चल पड़ा ।

स्तेपी भूरी फुंसियों की तरह मारमोटों के बिलों से ढकी थी , मारमोट चौकन्ने होकर सीटियां-सी बजा रहे थे ; घाटियों की नीची घास में दुबके हुकना पक्षी अपने रुपहले डैने चमकाते हुए फुर्र से उड़ रहे थे ।

भुंड शांति से जा रहा था। भुर्रीदार पपड़ी से ढकी जमीन पर बछड़ों के खुर बारिश की तरह टप-टप कर रहे थे।

ग्रिगोरी के साथ उसकी बहन दून्या मददगार की हैसियत से जा रही थी। उसका अंग-अंग—धूप से सावले गाल, आंखें, होंठ—सब हंस रहे थे, उसे सत्रहवां साल लगा था और सत्रह साल की उम्र में तो बात-बात पर हंसी आती है। भाई के फूले मुंह और लम्बे कानों-वाने बछड़ों को देखकर, जो जंगली घास चबाते चल रहे थे, उसे हंसी आ रही थी, इस बात तक पर हंसी आ रही थी कि दो दिन से उन्हें रोटी का एक टुकड़ा तक नसीब नहीं हुआ।

पर ग्रिगोरी नहीं हंस रहा था। फटी-पुगनी टोपी के नीचे से ग्रिगोरी का भुर्रियो से ढका चौड़ा माथा दिखायी पड़ रहा था, आंखों में थकान की झलक थी, मानो वह उन्नीस बरस का नहीं बल्कि बूढ़ा हो चला हो।

चित्तीदार लहरों की तरह उमड़ता भुंड रास्ते के किनार-किनारे चला जा रहा था।

ग्रिगोरी ने पीछे छूटे बछड़ों को सीटी बजाकर उकसाया और दून्या की ओर मुड़कर बोला

“पतभड़ तक. दून्या अनाज कमा लेंगे और फिर शहर चले जायेंगे। मैं मजदूर फैकल्टी में भरती हो जाऊंगा और तेरे लिये भी कोई प्रबंध कर दूंगा .. शायद किसी कोर्स-वोर्स में दाखिला दिलवा दूंगा .. शहर में, दून्या, बहुत किताबें होती हैं और रोटी भी वहां साफ़ होती है यहां की तरह घास-फूस मिली नहीं।”

“पर पैसे कहा से लायेंगे ... शहर जाने के लिये?”

“तू भी बड़ी भोंदू है .. हमें बीस पूद* गेहू मिलेगा, क्या यह पैसे नहीं हैं ... पूरे रूबल के हिसाब से एक-एक पूद बेच देंगे, फिर बाजरा और उपले भी बेच देंगे।”

ग्रिगोरी रुककर चाबुक की मूठ से सड़क की धूल पर हिसाब-किताब करने लगा।

“ग्रिगोरी, हम खायेंगे क्या? रोटी बिलकुल नहीं है...”

“मेरे भोले में पुए का सूखा टुकड़ा बचा है।”

* पूद—पुराना रूसी तौल जो १६ किनोग्राम के बराबर होता था।—अनु०

“आज तो खा लेंगे पर कल क्या करेंगे?”

“कल गांव से हमारे लिये आटा आ जायेगा ... अध्यक्ष ने वायदा किया है ...”

दोपहर का सूरज आग बरसा रहा था। ग्रिगोरी की टाट से बनी कमीज पसीने से तर होकर उसके मोठों से चिपक गयी।

ढोरो का भुंड बेचैनी से चला जा रहा था, डांस-मक्खियां बछड़ों को काट रही थीं, तपी हवा ढोरो के रंभाने और डांसों के भिनभिनाने से गूंज रही थी।

शाम को सूर्यास्त से पहले वे बाड़े के पास पहुंच गये। पास ही में जोहड़ था और बारिशों के कारण गले फूस की कुटिया थी।

ग्रिगोरी दौड़कर आगे गया और हांफते हुए उसने बाड़े का टहनियों से बना फाटक खोल दिया।

वह बछड़ों को गिनता हुआ एक-एक करके फाटक के काले चौकोर के भीतर हांक रहा था।

२

जोहड़ के पास के टीले पर उन्होंने नयी कुटिया बनायी। दीवारों पर गोबर लीपा और ग्रिगोरी ने फूस का छप्पर डाल दिया।

अगले दिन अध्यक्ष घोड़े पर सवार होकर आया। वह आधा पूद मकई का आटा और एक भोला बाजरा लाया।

छांव में बैठकर उसने सिगरेट सुलगायी और बोला :

“लड़का तू भला है, ग्रिगोरी। बस, किसी तरह भुंड की रखवाली कर ले, पतझड़ में हम क्षेत्रीय केन्द्र चलेंगे। वहां से शायद तुम्हें पढ़ने के लिये भिजवाने का प्रबंध हो जाये ... वहां लोक शिक्षा विभाग में मेरी जान पहचान का एक आदमी है, वह मदद कर देगा ...”

ग्रिगोरी का चेहरा खुशी से चमक उठा। विदा करते समय उसने अध्यक्ष को घोड़े पर चढ़ने में मदद दी और कसकर हाथ मिलाया। बड़ी देर तक वह घोड़े के खुरों से उड़ती धूल के गुबार को देखता रहा।

प्रातःकालीन बयार से कुछ राहत पाने के बाद दोपहर को सूखी

स्तेपी का तपती गर्मी से दम घुटने लगता। पीठ के बल लेटकर ग्रिगोरी नीली-सी धुंध से ढके टीले को देखता, उसे लगता कि स्तेपी एक जीव-धारी के समान है और वह गांवों, कस्बों और शहरों के भारी बोझ से कष्ट भेल रही है। लगता कि धरती की छाती सांस लेते हुए निरंतर हिल रही है, और कहीं नीचे, भूगर्भ में कोई अज्ञात जीवन पूरी गति से चल रहा है।

और दिन के उजाले में भी उसका दिल दहल जाता।

नज्जरो से टीलों की अपार शृंखला को नापता, उन पर छायी धुंध, कत्थई घास पर फैले भुंड को देखता और सोचता कि वह इस दुनिया से कटकर कहीं दूर चला गया है।

शनिवार की शाम को ग्रिगोरी ने ढोरो को बाड़े में बंद किया। दून्या कुटिया के पास आग जलाकर बाजरे और खुशबूदार जंगली साग की खिचड़ी बना रही थी।

ग्रिगोरी आग के पास बैठ गया और सौधी गंध छोड़ते उपलों को चाबुक की मूठ से कुरेदकर बोला:

“ग्रीगा की बछिया बीमार पड़ गयी। मालिक को इसकी खबर पहुंचवानी चाहिये।”

“मैं जाऊ गाव को?” दून्या ने कृत्रिम उदासीनता से पूछा।

“जरूरत नहीं है। अकेला भुंड को नहीं संभाल पाऊंगा...” मुस्कराकर पूछा: “क्या लोगों से मिलने को जी कर रहा है?”

“हां, ग्रिगोरी भडया... एक महीने से स्तेपी में रह रहे हैं, बस एक बार किसी आदमी के दर्शन हुए। अगर पूरी गर्मी हमने यही बिता दी तो बोलना ही भूल जायेंगे...”

“सब्र कर, दून्या. पतझड़ में शहर चले जायेंगे। हम दोनों पढ़ेंगे और पढ़ाई पूरी करके यहा लौटेंगे। विज्ञान जैसे कहता है वैसे खेती करना शुरू करेंगे, नहीं तो यहां कितना अंधेरा है, लोग सोये-से पड़े हैं सब अनपढ़ है. किताबें नहीं है..”

“हमें भरती नहीं करेंगे. हम भी तो अनपढ़ हैं..”

“हमें ले लेंगे। मर्दियो में जब मैं कम्बे में गया था, मैंने कोम्सो-मोल इकाई के सचिव के यहां लेनिन की किताब पढ़ी थी। उसमें कहा गया है कि सत्ता सर्वहारा की है, और पढ़ाई के बारे में भी लिखा है कि उनको पढ़ना चाहिये जो गरीबों की संतान हैं।”

ग्रिगोरी घुटनों के बल उचका, उसके गालों पर लपटों का लाल प्रकाश चमका।

“हमें पढ़ना चाहिये ताकि अपने जनतंत्र का काम चलाना सीख सकें। शहरों में तो सत्ता मजदूरों के हाथों में है, पर हमारे यहां कस्बे का अध्यक्ष कुलक है और गांवों में भी अमीर लोग अध्यक्ष बन बैठे हैं...”

“ग्रिगोरी, मैं कपड़े धोकर, महरी का काम करके कमाऊंगी और तुम पढ़ना...”

उपले धुआं छोड़ते, फुफकारते सुलग रहे थे। स्तेपी ऊंधती मौन पड़ी थी।

३

क्षेत्रीय केन्द्र जानेवाले मिलीशियामैन के हाथ कोम्सोमोल इकाई के सचिव पोलीतोव ने ग्रिगोरी को कस्बे आने का बुलावा भेजा था।

ग्रिगोरी पौ फटने से पहले ही रवाना हो गया और दोपहर को टीले से उसे गिरजाघर का घंटा और पुआल व टैन की छतोंवाले मकान दिखायी पड़े।

बिवाइयों से भरे पैरों को घसीटता हुआ वह चौक पर पहुंचा।

क्लब पादरी के घर में था। ताज़ी पुआल की सुगंध छोड़ती नयी चटाइयों पर चलकर उसने बड़े कमरे में प्रवेश किया।

खिड़कियों के पट बंद होने के कारण कमरे में धुधला-सा प्रकाश था। खिड़की के पास पोलीतोव रंदा चला रहा था—चौखट बना रहा था।

“सुना है मैंने, भाई, सुना है...” मुस्कराकर अपना पसीजा हाथ बढाकर वह बोला। “चलो और क्या कर सकते हैं! मैंने क्षेत्रीय केन्द्र से पता करवाया था: वहां तेल पेरने की फ़ैक्टरी में जवान लड़कों की ज़रूरत थी, पता चला कि उन्होंने ज़रूरत से ज्यादा बारह लोगों को भरती कर लिया... अभी भुंड की रखवाली कर लो और पतझड़ में तुम्हें पढ़ने के लिये भेज देंगे।”

“शनीमत है कि यह काम ही मिल गया... गांव के कुलक मुझे

क़तई भी चरवाहे का काम नहीं सौंपना चाहते थे ... कहते थे कोम्मोमोल का है, अधर्मी, पूजा-पाठ के बिना चरायेगा .. " ग्रिगोरी ने थकान भरी हंसी के साथ बताया।

पोलीतोव आस्तीन से बुरादे को हटाकर खिड़की के दासे पर बैठ गया। पसीने से भीगी भौंहों को सिकोड़कर वह ग्रिगोरी को निहारने लगा।

"ग्रिगोरी, तुम बहुत दुबले हो गये .. राशन-पानी का क्या हाल है तुम्हारे पास?"

"पेट भरने को है।"

दोनों चुप हो गये।

"चलो, मेरे यहा चर्नें। तुम्हे कुछ पढ़ने को दूंगा: क्षेत्रीय केन्द्र से अखबार और किताबें मिली हैं।"

वे क़ज़िस्तान से सटी सड़क पर जा रहे थे। राख के सलेटी ढेरों में मुर्गियां नहा रही थी, कही ढेकली चरमरा रही थी और बस कानों में सन्नाटा गूँज रहा था।

"तुम आज यही रुक जाना। सभा होगी। लड़के तुम्हारे बारे में पूछ रहे थे कि ग्रिगोरी कहां है, क्या हाल-चाल हैं उसके? उनसे भी मिल लोगे . आज मैं अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के बारे में व्याख्यान दूंगा... रात को मेरे यहा सोना और कल चले जाना। ठीक है?"

"मैं रात को नहीं ठहर सकता। दून्या अकेली भुड को नहीं संभाल पायेगी। सभा में जाऊंगा और जैसे ही ख़त्म होगी रात को ही चला जाऊंगा।"

पोलीतोव की इयोढ़ी में ठंडक थी।

मूखे सेबों की मीठी सुगंध और दीवारों पर टंगे जुओं और रासों से घोड़े के पसीने की बू आ रही थी।

कोने में—क्वास* से भरी लकड़ी की बालटी और पास ही में टेढ़ी चारपाई थी।

"यह रहा मेरा कोना: अंदर कमरे में गर्मी है..."

पोलीतोव ने झुककर तिरपाल के नीचे से सावधानी के साथ

‘प्राब्दा’ के पुराने अक और दो पुस्तिकाये निकाली।

उन्हे ग्रिगोरी को थमाकर उसने पैबद लगी बोरी का मुह खोला और बोला

“पकडो ”

ग्रिगोरी बोरी का सिरा पकडे हुए था पर आखे अखबार की पक्ति-यो पर फिसल रही थी।

पोलीतोव मुट्टी भर-भर कर आटा डाल रहा था। आधी भरी बोरी को ठसका देकर वह दौड़ा-दौड़ा कमरे मे गया।

बैकफैट के दो टुकडे लाया, बद गोभी के सूखे पत्ते मे लपेटकर उन्हे बोरी मे रख दिया और बुदबुदाया

“घर जाओगे तो यह लेते जाना।”

“नही, मै यह नही लूंगा ” ग्रिगोरी भडक उठा।

“कैसे नही लोगे?”

“कह दिया न लूंगा ”

“बौडम कही का।” पोलीतोव ग्रिगोरी पर नजरे गडाकर चिल्लाया। उमका चेहरा सफेद पड गया। “कहने को तो साथी कहलाता है। भूखा मर जायेगा पर चू नही करेगा। ले ले नही तो दोहूती खतम आज मे ”

“मै तुम्हारे मुह का कौर नही छीनना चाहता ”

“मुह का कौर छिने दुश्मनो का बाते ” पोलीतोव ग्रिगोरी को गुस्से मे बोरी का मुह बाधते देखकर कुछ नर्म स्वर मे बोला।

सभा पौ फटने से कुछ पहले ही समाप्त हुई।

ग्रिगोरी स्तेपी मे चला जा रहा था। कधे पर आटे की बोरी का बोझ था, छिले पावो मे जलन हो रही थी पर वह प्रभान की लालिमा की ओर उत्साह और उमग के साथ कदम बढ़ाता चल रहा था।

सुबह हुआ और जलाने के लिये सूखा गोबर बीनने के लिये कुटिया मे निकली। ग्रिगोरी बाड़े की ओर से सरपट दौड़ा आ रहा था। दून्या की माथा ठनका।

20 C'm

h = 33.25

D = 423

571 p

“क्या कुछ हो गया?”

“ग्रीशा की बछिया मर गयी... और तीन ढोर बीमार पड़ गये।”
दम लेकर बोला: “दून्या, जा गांव। ग्रीशा और बाक़ी लोगों को कह दे कि आज ही आ जायें... ढोरों को बीमारी लग गयी है।”

जल्दी से सिर पर रूमाल बांधकर टीले के पीछे से उगते सूरज की ओर पीठ करके दून्या टेकरी के रास्ते चल पड़ी।

उसको विदा करके ग्रिगोरी धीरे-धीरे बाड़े की ओर चल पड़ा।
भुंड घाटी में चला गया था और बाड़ के पास तीन बछड़े पड़े थे। दोपहर को तीनों मर गये।

ग्रिगोरी पागलों की तरह भुंड और बाड़े के बीच दौड़ रहा था :
और दो बछड़े बीमार पड़ गये...

एक बछिया जोहड़ के पास कीचड़ में गिर गयी ; ग्रिगोरी की ओर मुड़कर करुण स्वर में रंभाने लगी ; सूजी आंखों में आंमू भरे थे, उधर ग्रिगोरी के धूप से साबले गालों पर खारे आंमू टप-टप बह रहे थे।

सांभ ढलने पर दून्या मालिकों के साथ लौटी।...

वृद्ध अर्तेमिच निर्जीव बछिया को लाठी से छूकर बोला .

“छूत की बीमारी है यह... अब सारा भुंड बीमार हो जायेगा।”

खाल उतारकर लोथें उन्होंने जोहड़ से कुछ दूर गाड़ दीं। सूखी काली मिट्टी से छोटा-सा टीला बना दिया।

और अगले दिन फिर दून्या को गांव जाना पड़ा। एक साथ सात बछड़े बीमार पड़ गये।...

काले दिनों का तांता लग गया। बाड़ा सूना हो गया। ग्रिगोरी के मन में भी सूनापन छा गया। डेढ़ सौ डंगरों में से पचास बचे थे। छकड़ों पर मालिक आते, मरे बछड़ों की खाल उतारते, घाटी में उथले गड्ढे खोदते, खून में लथपथ लोथें मिट्टी से ढककर चले जाते। भुंड अनिच्छा के साथ बाड़े में जाता, बछड़े खून और उनके बीच रेंगती अदृश्य मौत की अनुभूति से चीख-चीखकर रंभाते।

तड़के, जब सूखकर पीला पड़ा ग्रिगोरी बाड़े का चरमराता फाटक खोलता, भुंड चरने के लिये जाते समय क़ब्रों के सूखे टीलों के बीच से होकर जाता।

सड़ते मांस की दुर्गंध, बेचैन ढोंगों के खुरों से उड़ती धूल, उनका

असहाय ऋंदन छा जाता , और तपता सूरज धीरे-धीरे स्तेपी पार अपने अभियान पर चल पड़ता ।

गांव से शिकारी आये । बाड़ के चारों ओर उन्होंने गोलियां चलायीं : भयंकर बीमारी को डराने के लिये । पर बछड़े मरते ही जा रहे थे और हर दिन के साथ भुंड घटता ही जा रहा था ।

ग्रिगोरी ने ध्यान दिया कि कहीं-कहीं कब्रें खुली हुई हैं , पास ही में चबी हड्डियां पड़ी हैं । रात को बछड़े बेचैन रहते , डरपोक हो गये थे ।

रात की नीरवता में अचानक वहशी चीत्कार सुनायी पड़ता और भुंड बाड़ को तोड़ता बाड़े में दौड़ने लगता ।

बछड़ों ने टहनियों से बनी बाड़ों को गिरा दिया , भुंड बनाकर कुटिया के पास आ जाते । आग के पास आहें छोड़ते , घास की जुगाली करते सो जाते ।

ग्रिगोरी कुछ समझ नहीं पा रहा था । एक बार उसकी नींद कुत्ते के भौंकने से टूटी । उसने चलते-चलते भेड़ की खाल का ओवरकोट पहना और भट से कुटिया के बाहर आया । वह बछड़ों की , ओस में भीगी बगलों से टकराया ।

दरवाजे के पास कुछ देर खड़े-खड़े उसने कुत्तों के लिये मीटी बजायी और उत्तर में उसे गद्यूची घाटी में भेड़ियों का लम्बा समवेत चीत्कार सुनायी पड़ा । टीले गिर्द/उगी भाड़ियों से एक और हुंकारा ...

कुटिया में घुमकर उमने दीया जलाया ।

“दून्या , सुन रही है ?”

प्रातः तारों के साथ ये आवाजें भी बुझ गयी ।

५

सवेरे इग्नात चक्कीवाला और मिखेई नेस्तेरोव आये । ग्रिगोरी कुटिया में बैठा चप्पलों की मरम्मत कर रहा था । बूढ़े अंदर आये । बूढ़े इग्नात ने टोपी उतारी , कुटिया के कच्चे फ़र्श पर पड़ती सूर्य की तिरछी किरणों की चमक से आंखें मिचमिचायीं और हाथ उठाया — वह कोने में लटकी , लेनिन की छोटी-सी तस्वीर के सामने सलीब का

निशान बनाना चाहता था। ध्यान से देखकर उसने अपना हाथ भट से जेब में ठूस लिया। गुस्से में थूककर बोला :

“यह बात है ... देव-प्रतिमा मतलब तेरे पास नहीं है? ..”

“नहीं है ...”

“उसके स्थान पर यह किसकी तस्वीर लटकी है?”

“लेनिन की।”

“तो यही वजह है हमारी मुसीबतों की .. भगवान यहां नहीं हैं इसीलिये बीमारी भट से आन पड़ी ... इसी वजह से तो बछड़े मर गये .. ओहो-हो, हमारे महाराजाधिराज ...”

“दादा, बछड़े इसलिये मरे कि ढोरो के डाक्टर को नहीं बुलवाया।”

“पहले तुम्हारे डागडरों के बिना ही रहते थे .. बहुत अकलमंद बनता है तू ... पूजा-पाठ वगैरह करता तो ढोगों के डागडर की कोई जरूरत न पड़ती।”

मिखेई नेस्तेरोव नज़रें घुमाकर चिल्लाया :

“उतार दे यहां से इम अधर्मी की तस्वीर ! .. तेरी वजह मे, पापी, भुंड मर गया।”

ग्रिगोरी का चेहरा हल्का-सा सफ़ेद पड़ गया।

“अपने घर चलाना हुक्म .. गला फाड़ने की जरूरत नहीं ... यह सर्वहारा के नेता है ...”

मिखेई नेस्तेरोव को ताव आ गया, वह तमतमाकर चिल्लाया :

“हमारा खाता है—हमारी तरह ही कर .. जानते है हम तुम जैसों को . देखते रहना, नहीं तो जल्दी ही अकल ठिकाने लगा देंगे।”

उन्होंने बाहर निकलकर टोपी पहनी और बिना कुछ कहे चले गये।

दून्या सहमी-सहमी भाई का मुंह ताकती रह गयी।

एक दिन बाद तीखान लोहार गांव से आया, अपनी बछिया को देखने के लिये।

कुटिया के पास उकड़ू बैठकर सिगरेट पीता हुआ, कड़वी मुस्कान के साथ बताने लगा :

“जिंदगी हमारी बहुत बुरी है .. पुराने अध्यक्ष को हटा दिया है, अब मिखेई नेस्तेरोव का दामाद हुक्म चलाता है। बस, अपने ढर्रे पर लौटा रहे हैं ... कल ज़मीन का बंटवारा कर रहे थे : जैसे ही किसी

गरीब के हिस्से अच्छी ज़मीन आती वे फिर से बंटवारा शुरू कर देते। अमीर फिर से हमारी गर्दन पर बैठ रहे हैं... ग़िगोरी प्यारे, सारी बढ़िया ज़मीनें उन्होंने खुद हथिया लीं। और हमारे हिस्से दुम्मत ज़मीन पड़ी... ये बातें हैं..."

ग़िगोरी आधी रात तक आग के पास बैठा हुआ मकई के चौड़े-चौड़े पीले पत्तों पर कोयले के टुकड़े से लिखता रहा। उसने ज़मीन के अन्यायपूर्ण बंटवारे के बारे में लिखा, यह भी लिखा कि ढोरो की बीमारी का इलाज जानवरों के डाक्टर में करवाने के बजाय गोलियां चलायीं। लिखावट से भरे मकई के पत्तों का बंडल तीखेन लोहार को थमाते हुए बोला :

"अगर शहर जाना हुआ तो पूछ लेना कि 'क्रास्नया प्राव्दा' अखबार कहां छपता है। उन्हें यह दे देना... मैंने विस्तार से लिखा है, बस मोड़ना नहीं, नहीं तो कोयला मिट जायेगा.. "

लोहार ने अपनी जली, कोयले से काली उंगलियों से खड़खड़ाती पत्तियों को संभालकर पकड़ा और दिल के पास क़मीज़ के अंदर छिपा लिया। विदा लेते हुए वह उसी मुस्कान के साथ बोला :

"पैदल जाऊंगा शहर, शायद वहां मुझे सोवियत मत्ता मिल जाये.. तीन दिन में मैं डेढ़ सौ वेर्स्ता का रास्ता तय कर लूंगा। एक हफ्ते बाद लौटते ही तुम्हे खबर कर दूंगा..."

६

बारिशों और नम कोहरे के साथ पतझड़ का मौसम आ गया था। दून्या खाने का सामान लाने के लिये सवेरे से गांव गयी हुई थी। बछड़े पहाड़ी की ढलान पर चर रहे थे। ग़िगोरी कंधों पर चोगा डाले उनके पीछे-पीछे चल रहा था, हथेली में वह मुरभायी घास के डंठलो को मसल रहा था। पतझड़ की छोटी सांझ से कुछ पहले टीले से दो घुड़सवार उतरे।

घोड़ों के खुरों की छप-छप सुनायी दी और वे ग़िगोरी के पास चले आये। ग़िगोरी ने उन्हें पहचान लिया। एक अध्यक्ष था—मिखेई नेस्ते-रोव का दामाद और दूसरा इग्नात चक्कीवाले का बेटा था।

उनके घोड़े भाग से ढके थे।

“नमस्ते, चरवाहे।”

“नमस्ते।”

“हम तुम्हारे पास आये हैं।”

अध्यक्ष घोड़े की जीन पर बैठे-बैठे बड़ी देर तक अपनी ठंड से ठिठुरी उगलियों से फौजी ग्रेटकोट के बटन खोलता रहा, उसने अखबार का पीला पृष्ठ निकाला और हवा में उसे खोलकर बोला

“तूने यह लिखा था?”

जमीन के बटवारे, ढांगे की बीमारी के बारे में मकई के पत्तों से उतरे शब्द ग्रीगोरी की आँखों के सामने तैरने लगे।

“चल, हमारे साथ।”

“कहा?”

“यही, घाटी में एक बात करनी है।” अध्यक्ष के नोले हाँठ फड़क रहे थे, आँखें टधर-टधर दौड़ रही थी।

ग्रीगोरी मुस्कराकर बोला “जो कहना है, यही कह दो।”

“यहाँ भी कह सकते हैं अगर तू चाहता है।”

उसने जेब में पिस्तौल निकाली मचलने घोड़े की लगाम खींचने हवा वह फटे स्वर में चिल्लाया “कमीने अखबारों में लिखेगा तू?”

“तुम यह क्यों कर रहे हो?”

“इसलिये कि तेरी वजह से मुझ पर मुकदमा चलेगा। चुगली करेगा? बोल, कम्युनिस्ट हगामो।”

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसने ग्रीगोरी के बदन में मुँह पर गोली चला दी।

ग्रीगोरी पिछली टांगों पर खड़े घोड़े के नीचे ढूँढ़ गया, आँह भरकर उसने अकड़ी उगलियों से पीली-नम घाँस का गुच्छा उखाड़ा और चिर-निद्रा में सो गया।

इग्नात चक्कीवाले का बेटा जीन से कूदकर उतरा, उसने मिट्टी में काली मिट्टी उठाई और फेनिल खून से भरे मुँह में ठूस दी

स्नेपी तो अपार है, भला कभी किसी ने उसे नापा है। यहाँ असम्य सड़के और पगडंडिया बिछी हैं। पतझड़ की रात अंधेरे से भी काली है और बारिश तो घोड़ों के खुरों के निशान बिल्कुल मिटा देगी।

स्तेपी की सड़क है, फुहार पड़ रही है, भुटपुटा छाया है।

उस राहू को चलने में क्या कठिनाई जिसके कंधे पर टगे नन्हे-से भोले में जौ की गेंटी का टुकड़ा और हाथ में लाठी है।

दून्या सड़क के किनारे-किनारे जा रही है। हवा फटी जाकट के पल्लुओं को फड़फड़ा रही है, पीछे से रुक-रुककर धक्का दे रही है।

चारों ओर बियाबान मनहूस स्तेपी फैली है। अधेरा छाने लगा है।

सड़क से कुछ दूर टीला दृष्टिगोचर होता है और उस पर जगली घास के बिखरते छप्परवाली कुटिया।

दून्या शराबियों की तरह लडखड़ाती हुई धमी कब्र के पास जाती है और औंधे मुह उस पर लेट जाती है।

गत घिर आयी है

दून्या सीधे स्टेशन जानेवाले रास्ते पर चलती जा रही है।

उसको चलने में कोई कठिनाई नहीं हो रही क्योंकि कंधे पर लटके भोले में जौ की गेंटी का टुकड़ा, स्तेपी की कमैली धूल की गंध छाड़ती फटी-पुगनी किताब और भाई ग्रिगोरी की सूती कमीज है।

जब दिल उदासी में भर जाता है, आसुओं से आखें जलने लगती हैं, तब वह कहीं एकांत में, पगयी नजरों में छिपाकर भोले से मैली कमीज निकालती है उसे चेहरे से मटा लेती है और भाई के पसीने की सुखद गंध को महसूस करती है देर तक वह ऐसे ही पड़ी रहती है

एक के बाद एक वेस्टर्न पीछे छूटते जा रहे हैं। स्तेपी के बीहड़ों में भेड़ियों का चीत्कार सुनायी पड़ रहा है और दून्या सड़क के किनारे-किनारे चली जा रही है, वह शहर जा रही है, जहां सोवियत सत्ता है, जहां सर्वहारा पढ़ते हैं ताकि अपने जनतंत्र का संचालन करना सीख सकें।

लेनिन की पुस्तक में यही कहा गया है।

हरामी

मीशका ने स्वप्न में देखा कि दादा ने बगीचे में चेरी की एक अच्छी कमची काट ली है। वे कमची, हिलाते हुए उसकी तरफ आ रहे हैं और डाटते हुए कह रहे हैं

“हा, इधर ता आ जरा मिखाईल फोमीच। अगर तेरे चूतडो पर मार-मारकर यह कमची न तोड़ी तो कहना।”

‘किसलिये दादा?’ मीशका ने पूछा।

‘इसीलिये कि तूने कलगीवाली मुर्गी के दरबे से सारे अण्डे चपत कर दिये और उन्हे ले गया हिण्डोले पर भूलने के लिये।’

दादा, इस साल तो मैं हिण्डोले पर एक बार भी नहीं भूला।” मीशका डर के मारे चीख उठा।

मगर दादा ने अकड़कर अपनी दाढ़ी पर गम्भीर ढंग से हाथ फेरा और पाव पटककर धमकाते हुए बोले

“शरारती कहीं का। कर पाजामा ढीला, तेरी चमड़ी उधेड़।”

मीशका चीख उठा और उसकी आख खुल गयी। उसका दिल जोर में धक धक कर रहा था मानो मचमुच ही कमचियों में खबर ली गयी हो। बड़ी होशियारी से उसने बायीं आख खोली। देखा कि घर में उजाला हो चुका है। सुबह की किरणें खिड़कियों से झाक रही थी। मीशका ने सिर उठाया तो उसे डयोढ़ी में से कड़ आवाजे सुनायी दी—मा खुशी से चीख रही थी, कुछ कहती जा रही थी, हमी के मारे उसका बुरा हाल हुआ जा रहा था, दादा खाम रहे थे और एक अजनबी-सी आवाज भी सुनायी दे रही थी, “बू-बू-बू”

मीशका ने आखें मली और देखा—दरवाजा खुला, जोर में बन्द हुआ, दादा लपककर भीतर आये, उछलते हुए। उनका चश्मा उनकी नाक पर नाच रहा था। मीशका ने सोचा कि भजनीको के साथ पादरी आये होंगे (ईस्टर के दिनों में जब पादरी आते थे तो दादा वसी तरह

भाग-भागें फिरा करते थे)। दादा के पीछे-पीछे एक लम्बा-तडगा और हट्टा-कट्टा फौजी अन्दर आया। वह काला फौजी कोट और फीतोवाली टोपी पहने था। मा उसके गले से लिपटकर रो रही थी।

घर के ठीक बीच में इस अजनबी ने मा को भटककर गले से अलग किया और ऊची आवाज में पूछा

“कहा है मेरी सन्तान?”

मीशका घबराकर कमबल के नीचे दुबक गया।

“तुम क्या सो रहे हो? अरे बेटा तूरा बाप फौज में आया है,” मा ने पुकारकर कहा।

मीशका आख भी न भपका पाया कि फौजी ने उसे जा दबोचा, छत तक उछाल दिया और फिर सीने में चिपका लिया। वह जब उसे अपनी लाल-लाल मूछों से प्यार करने लगा तो बस कुछ न पछिये—होठों, गालों और आखों की मुसीबत ही आ गयी। मूछे उसकी कुछ-कुछ नम थीं, नमकीन-सी। मीशका ने छूट निकलने की पूरी कोशिश की, मगर उसकी एक न चली।

“अरे वाह, तू तो अच्छा-खामा बोल्शेविक हो गया है। जल्द ही बाप में बाजी मार जायेगा। हो-हो-हो।” बाप जाँर में हम्रा और लगा मीशका को झुलाने—कभी हाथों पर बिठा चक्कर दिलाये और फिर कभी छत तक उछाल दे।

मीशका सहन करता रहा, सहता रहा और फिर दादा की तरह उसने भीट्टे मिकोडी और शरीर को अकडा लिया। उसने बाप की मूछे पकड़ ली।

“छोड़ दो मुझे, बापू।”

“नहीं छोड़ने का।”

“छोड़ दो। मैं बड़ा हो गया हूँ और तुम मुझे बिल्कुल छोटे वच्चे की तरह उछाल रहे हो।”

बाप ने बेटे को घुटनों पर बिठा लिया और मुस्कुराने लगा, पूछा

“कितने साल का हो गया है रे पिस्तौल तू?”

“आठवाँ चल रहा है,” मिकोडी हुई आखों से देखते हुए, मीशका ने अनिच्छा में कहा।

“याद है न बेटे कि दो साल पहले जब मैं आया था तो कैसे

मैंने तुम्हें जहाज बना-बनाकर दिये थे ? कैसे हमने तालाब में वे जहाज चलाये थे ? ”

“ याद है । ” मीष्का ने झट से जवाब दिया और कुछ भिन्न करने हुए अपनी दोनों बांहें बाप के गले में डाल दी ।

बस फिर क्या था खूब रग जमा । बाप ने मीष्का को कंधे पर बिठाया , पैरों से पकड़ा और कमरे में दे चक्कर पर चक्कर । कभी वह दुलकी चले तो कभी घोड़े की तरह हिनहनाये । मीष्का तो खुशी के मारे हाफने लगा । मा उसकी आम्नीन खींचने और जोर जोर में चिल्लाकर कहने लगी

“ अरे जा , बाहर जाकर खेल । अरे मुनता नहीं दुष्ट , कह रही है कि बाहर जाकर खेल । ” फिर उसने बाप से कहा , “ छोड़ दो अब इसे फोमा अकीमिच । छोड़ भी दो । यह तो तुम्हें , मेरे प्रिय को , आख भरकर देखने भी नहीं देगा । दो बरस में आखें तगम गयी हैं तुम्हें देखने की और तुम हो कि इसी में उलझे हुए हो । ”

बाप ने मीष्का को नीचे उतार दिया और कहा

‘ जा भाग , जाकर अपने दोस्तों में खेल-कूद । जब लौटेगा तो तुम्हें मिठाई खिलाऊंगा । ’

मीष्का ने दरवाजा खोला और बाहर । पहले तो यह ब्याल आया कि डयोटी में खड़ा रहकर कान लगाये और मृने कि कमरे में क्या बातचीत होती है । मगर तभी याद आया कि बाप के घर चौटने की खबर ता किमी भी बच्चे को मालूम नहीं । ऐसी खबर न बनायी जाये भला । और बस वह नजर आया अहाने में , और फिर घर के बगीचे में लगे आलुओं के पौधों को फाड़ता हुआ तालाब पर जा पहुँचा ।

तालाब के ठहरे हुए और बदबूदार पानी में मीष्का ने गोने पर गाँते लगाय । फिर वह रेत पर लोटा-पांटा और उसने आखिरी बार गोता लगाया । फिर वह एक टांग पर कदा और उसने पाजामा ऊपर खींचा । वह घर जाने को बिल्कुल तैयार ही था कि पादरी का बेटा वीत्का उसके पास आ पहुँचा ।

“ मीष्का , थोड़ी देर और रुक जा । आ हम साथ-साथ गोने लगाये और फिर हमारे घर चलकर खेलेंगे । माता जी तुम्हें हमारे घर आने से नहीं रोकती । ”

मीष्का ने खिसक रहे पाजामे को बाये हाथ में खींचा , कंधे पर की पट्टी ठीक की और कहा

“मैं तेरे साथ खेलना नहीं चाहता। तेरे कान सड़े रहते हैं!..”
वीत्का ने बदले की भावना से आंख सिकोड़ी और अपने हड्डिले कंधे से खींचकर कमीज उतारते हुए कहा :

“यह तो कनपेड़ा है। पर तू किस मुंह से बात करता है, रे गंवार, तेरी मा ने तो तुझे बाड़ तले जना था!”

“तू देखने गया था न?”

“सुना है मैंने तो। हमारी बावर्चिन ने बताया था मेरी माता जी को।”

मीशका ने पांव से मिट्टी कुरेदी और वीत्का को सिर से पाव तक देखा।

“बकवास करती है तेरी माता जी! मेरे बापू तो लड़ाई लड़कर आये हैं और तेरा बाप हरामखोर है, बैठा-बैठा पराया माल हड़पता रहता है!”

“हरामी!” पादरी के बेटे ने रुआंसा होकर कहा।

मीशका ने जैसे ही पानी से घिमा हुआ एक पत्थर उठाया कि पादरी का बेटा अपने आमुओ को रोकता हुआ मधुरता से मुस्कराया :

“लड़ नहीं मुझसे मीशका, बुरा मत मान! अगर तू चाहे तो मैं तुझे अपना चाकू दे सकता हूं। अच्छे लोहे का बना हुआ है!”

मीशका की तो खुशी से बाछे खिल गयी। उसने पत्थर एक तरफ को फेंक दिया। मगर तभी उसे अपने बाप के घर लौटने की बात याद आयी। उसने गर्व से कहा :

“मेरे बापू तेरे चाकू से भी बढ़िया चाकू लाये हैं मेरे लिये, लड़ाई के मोर्चे से।”

“भू-ऊठ बोलता है।” विश्वाम न करने हुए वीत्का ने “भू” को लबा खींचकर कहा।

“तू खूद है भूठा! जब कह रहा हू कि लाये है तो इसका मतलब है कि लाये है! मचमुच की बन्दूक भी लाये है..”

“अरे वाह, तब तो तेरे बड़े ठाठ हैं!” वीत्का ने उसकी खिल्ली उड़ायी।

“उनके पास तो एक टोपी भी है जिस पर फीते टंके हुए हैं और सुनहरे अक्षर लिखे हैं, ठीक वैसे ही, जैसे तेरी किताबों में है!”

बीत्का देर तक सोचता रहा कि क्या कहे कि मीशका दग रह जाये। उसने माथे पर बल डाले और अपना पेट खुजाया। आखिर बात सूझी।

“मेरे पिता जी तो बस जल्दी ही बड़े पादरी बननेवाले हैं और तेरा बाप—वह तो था चरवाहा, ढोर चराता था। अब बोल ? ”

मीशका तग आ गया था। वह मुड़ा और बगीचे की तरफ चल दिया। पादरी के बेटे ने उसे पुकारा

“मीशका रे मीशका ! सुन तुझे एक बात बनावू ! ”

“बता । ”

“यहा आ, मेरे पास । ”

मीशका उसके पास गया और आशका से उसे देखने लगा

“हा, तो बता । ”

पादरी का बेटा अपनी पतली और टेढ़ी-मेढ़ी टांगो से रेत पर नाचा, मुस्कराया और मीशका को चिढ़ाने की नीयत से ऊँचे स्वर में कह उठा

“तेरा बाप कम्युनिस्ट है। जैसे ही तू मरेगा और तेरी आत्मा उड़कर आसमान में पहुँचेगी तो भगवान कहेगा—‘चूँकि तेरा बाप कम्युनिस्ट था, इसलिए तेरी जगह जहन्नूम में है।’ वहा शैतान तुझे पकड़कर कडाही में भूनना शुरू कर देगे। ”

“और तू यह समझता है कि शैतान तुझे छोड़ देगे ? ”

“मेरे पिता तो पादरी है। तू बिल्कुल बुद्धू है, अनपढ़ गवार है। कुछ भी तो नहीं समझता ”

मीशका को डर ने आ दबोचा। वह मुड़ा और चुपचाप घर की ओर दौड़ चला।

अहाते की बाड़ के करीब पहुँचकर वह रुक गया। वहा से उसने चीखकर पादरी के बेटे को आवाज दी और घूमा दिखाते हुए कहा

“अभी जाकर पूछता हूँ दादा से। अगर भूठ निकला तो बस फिर कभी हमारे अहाते के पास से मत गुजरना । ”

मीशका बाड़ लाघकर अहाते में पहुँचा। घर की तरफ लपका। उसकी आँखों के सामने घूम रही थी कडाही और कडाही में भूना जा रहा था वह खुद मीशका वह गर्म-गर्म कडाही में बैठा है और चारों ओर मलाई उभड़-उभड़ भाप छोड़ रही है। डर के मारे उसके

रोंगटे खड़े हो गये। जल्दी से जाना चाहिये दादा के पास, पूछना तो चाहिये।

फाटक में तो जैसे जान-बूझकर सूअर फसा हुआ था। उसकी गर्दन एक तरफ थी और बाकी हिस्सा था दूसरी तरफ। वह खुरो को जमीन पर टेके था, दुम हिलाता हुआ बुरी तरह चिल्ला रहा था। मीशका ने चाहा कि सूअर को मुसीबत से बचाये। उसने फाटक खोलना चाहा, मगर सूअर बहुत जोर से खरखराने लगा। वह सूअर की पीठ पर चढ़ बैठा। सूअर ने अपना पूरा जोर लगाया, फाटक टूटकर अलग जा गिरा। सूअर वहां से भागा, अहाता लाघता हुआ खलिहान की ओर बढ़ चला। मीशका ने उसके पेट में एड़िया मारनी शुरू की। सूअर उड़ चला, मीशका के बाल हवा में लहराने लगे। मीशका खलिहान के पास पहुंचकर सूअर की पीठ में कूदकर नीचे उतरा। उसने देखा कि दादा ड्योढी की देहरी पर खड़े हैं और उगली से इशारा करके उसे बुला रहे हैं।

“इधर आना जग मेरे पास, मेरे बेटे।”

मीशका समझ न पाया कि दादा उसे क्यों बुला रहे हैं। मगर तभी उसे नरक की कड़ाही की याद आ गयी। वह तेजी से भागा, दादा की तरफ।

“दादा, प्यारे दादा, क्या आसमान पर शैतान होते हैं?”

“ठहर, अभी चखाता हूँ तुझे शैतान का मजा। अरे ओ पाजी, तू सूअर पर क्यों चढ़ा फिर रहा था?”

दादा ने मीशका के बाल पकड़ लिये और आवाज देकर घर के अन्दर से मा को बुलाया

“जग बाहर आकर अपने लाडले को तो देखो।”

मा हड़बड़ायी हुई आयी।

“क्यों डाट-डपट रहे हो?”

“क्यों डाट-डपट रहा हूँ? यह हजरत अहाते में सूअर की सवारी कर रहे थे, धूल फाकने फिर रहे थे।”

“अरे हाय! तू गाभिन सूअर पर चढ़ा फिर रहा था?” मा तो चीख उठी।

मीशका अपनी सफाई देने को मुह भी न खोल पाया कि दादा ने कमर से पेट्टी खोल ली। बाये हाथ से वे कमरबन्द थामे रहे कि कहीं

पाजामा न फिसल जाये और दाये हाथ से उन्होंने मीशका का सिर अपने घुटनो मे दबाया और लगे मग्मम करने। पिटाई करने जाने थे और साथ ही डाटने जाने थे

“खबरदार जां अब फिर कभी सूअर की मवारी की खबर-दार।”

मीशका का मन हुआ कि जोर से चीखे, मगर दादा ने डाटा

“कुत्ते के पिल्ले, मोने नही देगा अपने बापू को? वह थका-हारा आया है मफर मे। जरा आख लगी है और अब तू गला फाड़ेगा?”

मजबूर होकर चुप रह जाना पडा। मीशका ने दादा को लान मारने की कोशिश की, मगर यह कोशिश भी कारगर न हुई। मा ने दादा से मीशका का पिंड छुड़ाया और मकान के अन्दर धकेल दिया।

“बैठ यहा, तेरी मा को जैतान ले जाये। ऐसी चमडी उधेंडगा तेरी कि दादा की मार भूल जायंगा।”

दादा रमोईघर मे तख्ते पर बैठे थे। वे रह-रहकर मीशका की पीठ का देख रहे थे।

मीशका दादा की ओर घूमा, मट्टी में मलकर उमने आखिरी आम् पोछा और दरवाजे के साथ पीठ मटाकर कहा

‘अच्छा दादा तुम भी याद रखना।’

“अरे पाजी, तू क्या अपने दादा को डराना-धमकाना चाहता है?”

मीशका ने देखा कि दादा फिर से पेंटी खालने लगे है। उमने भी होशियारी में थोडा-सा दरवाजा खोल लिया।

‘हा, तो तू मझे डराने-धमकाने चला है?’ दादा ने फिर से पूछा।

मीशका झटपट दरवाजे के पीछे गायब हो गया। वह दरवाजे की दरार के साथ आख लगाकर दादा की हर गतिविधि को ध्यान में देखने लगा। फिर बोल उठा

“कुछ दिन और ठहर जाओ, कुछ दिन और, दादा जी। फिर तुम्हारे दात गिर जायेंगे। तब मैं तुम्हे कौर चन्ना-चबाकर नही दूंगा। तब तुम मुझसे कहना भी नही।”

दादा बाहर आये। देखा कि बगीचे में सन के भबरीले पौधो के बीच से मीशका का सिर और नीला पाजामा झलक दिखा रहा है।

दादा देर तक उसे बैमाखी दिखा दिखाकर धमकाते और दाढी में अपनी मुस्कान छिपाते रहे।

* * *

बाप के लिये मीशका - मीन्का था। मा उसे बुलाती थी - मीन्युशका। दादा को जब प्यार आता तो वह उनकी नजर में शरारती लडका होता। बाकी समय जब दादा की मुरभायी-सी मफेद भौंहे आखों पर लटकी-सी रहती तो वे उसे पुकारते और कहते, "अरे ओ मिखाईल फोमीच, इधर आ, जग तरे कान गर्म कर दू।"

बाकी लोग, जैसे कि इधर-उधर की बाते उडानेवाली पडोसिने, छोकरे और गली-मोहल्लेवाले उसे मीशका या "हरामी" कहकर बुलाते।

मा कुंवारी ही थी कि मीशका ने जन्म लिया था। महीने भर बाद बेशक फोमा चगवाहे से उसकी शादी हो गयी थी। उमी का यह बच्चा था। मगर बदनामी भरा यह "हरामी" शब्द मदा के लिये मीशका के नाम के साथ जुड़कर रह गया था।

मीशका मीख-सलाई-मा था। वसन्त के दिनों में मीशका के बाल खिलने हुए सूरजमुखी के फूल की पखांडियों की तरह पीले पड़ जाते। जून महीने का सूरज उन्हें झुलसाकर उलझे-झबरीले बना देता। मीशका के गाल चिड़िया के अंडों जैसे लगते, जहां-तहां बुर्दकिया पड़ी हुई। रही नाक तो वह तेज धूप और तालाब में बार-बार गोते लगाने में छिली रहती और उसकी चमड़ी फटी रहती। इस धनुषाकार टांगोवाले मीशका की सिर्फ आखें ही सुन्दर थीं। तग पपोटो में से उसकी नीली और शरारती आखें यों चमकती जैसे नदी में बर्फ के वे टुकड़े जो अभी पिघले न हों।

बाप को मीशका की दो चीजें पसन्द थी - एक तो उसकी सुन्दर आखें और दूसरे उसका घड़ी भर को भी टिककर न बैठना। फौज में वह उसके लिये दो उपहार लाया था - एक तो बिस्कुट जो काफी समय तक रखा रहने के कारण सूखकर पत्थर हो गया था और दूसरा, थोड़े-से घिसे हुए ऊंचे बूटों का जोड़ा। बूट तो मा ने तौलिये में लपेटकर सन्दूक में रख दिये और बिस्कुट को मीशका ने देहली पर रखकर हथौड़े में तोड़ा और उसका आखिरी कण तक हड़प गया।

दूसरे दिन जैसे ही सूरज निकला कि मीशका भी उठ बैठा। उसने लोहे के पतीले में से चुल्लू भर गर्म पानी लिया और पिछले दिन का मैल मैले-कुचैले गालों पर फैला डाला। मुह सुखाने के लिये वह बाहर दौड़ गया।

मा गाय की मेवा में जूटी हुई थी, दादा पुश्ते पर बैठे थे। मीशका पर नजर पड़ते ही उसे आवाज दी

“अरे शरारती, जा भागकर खत्ती में जा। वहाँ मुर्गी कुड़कुड़ायी है, अड़ा दिया होगा।”

मीशका दादा का हुक्म बजाने को सदा तैयार रहता था—हाथो-पैरों के बल आन की आन में जा पहुँचा खत्ती में। इधर से गया, उधर से रेगा और यह जा और वह जा। भाग लिया तालाब की ओर। भागता था और देखता जाता था कि कहीं दादा तो नहीं देख रहे हैं? बाड़ तक पहुँचते बिच्छू बूटी ने काट लिया, टांगे जैसे जल ही तो गयी। दादा बैठे रहे राह देखते हुए, खीझते हुए। जब सब्र का प्याला छलक गया तो खुद घुमे खत्ती में। जगह-जगह मुर्गियों की बीट चिपक गयी। भीतर घुप अन्धेरा था। बड़े मिया टटोलते हुए जो आगे बढ़े तो शहती-रों में जोर में सिर टकगया। आखिर रेगकर दूसरी ओर के सिरे पर जा पहुँचे।

“अरे ओ उल्लू रे, मीशका, क्या कहूँ तुझे। दूढ़ रहा है, दूढ़ रहा है और कुछ पल्ले नहीं पड़ेगा तेरे। अरे मूर्ख, मुर्गी क्या वहाँ जाकर अड़ा देगी? यही पत्थर के नीचे होगा अड़ा। तू कहा रेगता फिर रहा है शरारती?”

दादा कहते गये, मगर जवाब में छापी रही खामोशी। उन्होंने अपने कपड़ों से बीट झाड़ी और खत्ती में निकल आये। आखे सिकोड़कर देर तक तालाब की ओर देखने रहे। आखिर मीशका को देख लिया और हताश होकर हाथ झटक दिया।

बालको ने तालाब के निकट मीशका को घेर लिया और लगे पूछने

“तेरा बाप लड़ाई पर गया था?”

“गया था।”

“क्या करता रहा वह वहाँ?”

“करता क्या रहा, लड़ता रहा।”

“तू बकता है ! वह वहा जूए मारता और रसोईघर में हड़िया चूसता रहा । ”

बालको न जोर का ठहाका लगाया , मीष्का का उगलियो में कोचने और उसके गिर्द उछलने-कूदने लगे । स्त्रीभ और अपमान से मीष्का की आखों में आसू आ गये । निम पर पादरी के बेटे बीत्का ने एक और तीर छोड़ा

“ तेरा बाप कम्युनिस्ट है न ? ” उसने पूछा ।

“ मालूम नहीं ”

“ मैं जानता हू कि वह कम्युनिस्ट है । मेरे पिता जी आज सुबह कह रहे थे कि तेरे बाप ने शैतान के हाथ अपनी आत्मा बेच दी है । उन्होंने यह भी कहा था कि सभी कम्युनिस्टों को शीघ्र ही फांसी दी जायेगी । ”

बालक चुप हो गये , मीष्का का दिल बैठ गया । मेरे बाप को फांसी दी जायेगी — पर किस लिये ? उसने जोर से दात पीमें और कहा

“ मेरे बाप के पाम बहुत बड़ी बन्दूक है सभी बर्जों को उड़ा देगा । ”

बीत्का एक पैर आगे की तरफ बढ़ाकर बड़ी शान में बोला

“ कुछ नहीं बनेगा उसके किये-धरे । मेरे पिता जी उसे आशीष ही नहीं देगे । बिना आशीष के वह कुछ नहीं कर पायेगा । ”

दूकानदार के बेटे प्रोश्का ने नथुने फुलाकर मीष्का की छानी में मक्का मारा और चीखकर कहा

“ तू अपने बाप की शान में मत रहता । जब क्रान्ति हुई थी तो वह मेरे बाप का माल उठा ले गया था । मेरे पिता ने कहा था — ‘ सरकार लौट आयेगी तो मैं चरवाहे फोमा को ही सबसे पहले खत्म करूंगा । ’ ”

प्रोश्का की बहन नताशा ने पैर पटककर कहा

“ कगे इसकी मरम्मत , देख क्या रहे हो ? ”

“ मारो इस कम्युनिस्ट के बेटे को । ”

“ हगमी । ”

“ प्रोश्का , दिखाओ इसे तारे । ”

प्रोश्का ने कमची घुमायी और कमकर मीष्का के कंधे पर रसीद

की। पादरी के बेटे वीत्का ने लगड़ी मारी और मीशका रेत पर चारो खाने चित हो गया।

बालक खूब जोर से चिल्लाये और मीशका पर टूट पड़े। नताशा अपनी बारीक आवाज में शोर मचाती हुई झपटी और मीशका की गर्दन नोचने लगी। किसी ने कमकर मीशका के पेट में लात जमायी।

मीशका ने जोर लगाकर प्रोशका को अपने ऊपर से धकेला, उछलकर खड़ा हुआ और शिकारी कुत्तों से बचकर भागते हुए खरगोश की तरह घर की तरफ झपटा। उसके पीछे सीटिया बजती रही उस पर पत्थर फेका गया। मगर उसका पीछा किसी ने नहीं किया।

मीशका ने पट्टा के हरे भरे कुज में पहुँचकर ही दम लिया। पट्टा के पौरे उसके मिर में ऊँचे थे। वह सीली और मोधी जमीन पर बैठ गया और नोची-खसोटी हुई गर्दन से खून साफ करने हुए रो पड़ा। ऊपर, पत्तियों के बीच से धूप छन रही थी, वह मीशका की आँखों में झाँकने के लिये बेचैन थी। धूप ने उसके गालों में आँसू मोख लिये और उसके उठे हुए लाल बालों को मा की तरह प्यार में चूमती रही।

मीशका देर तक डमी तरह वहाँ बैठा रहा। जब आँखें मूँख गयी तो वहाँ से उठा और चुपचाप आगन में पहुँचा।

पिता छानी में बैठा हुआ छकड़े के पहिये को तेज लगा रहा था। उसकी टोपी खिसककर गुद्दी पर पहुँच गयी थी, फीते लटक रहे थे और वह सफेद धाग्रियाँवाली नीली कमीज पहने था। मीशका नज़र बचाकर पिता के पास पहुँचा और छकड़े के करीब आकर खड़ा हो गया। देर तक वह चुपचाप साधे रहा। फिर उसने हिम्मत करके बाप का हाथ छुआ और फुमफुमाते हुए पूछा

“बापू, तुम लडाई पर गये थे तो वह क्या करते रहे?”

अपनी लाल मूँछों के बीच मुस्कुराते हुए पिता ने जवाब दिया

“लडाई लड़ता रहा बेटे।”

“मगर लड़के लड़के कहते हैं कि तुम वहाँ सिर्फ जूए मारते रहे।”

आँसुओं से मीशका का गला रुध गया। बाप हम दिया और उसने मीशका को हाथों पर उठा लिया।

“मेरे बेटे, वे बकते हैं। मैं तो जहाज पर था। उस बड़े जहाज पर जो समुद्र में चलता है। मैं उसी में था और फिर लड़ने गया।”

“ किससे तुमने लडाई लड़ी ? ”

“ धन-दौलतवालो से , मेरे लाल ! तू अभी बहुत छोटा है ! इसी-लिये मुझे लडना पडा तेरे बजाय । इसके बारे मे तो गाना भी गाया जाता है ।

बाप मुस्कराया , मीशका की ओर देखते हुए पैरो से ताल देकर गाने लगा

अर मिखाईन , मेरे बेटे ,
मत जा रे तू लाम पर
मेरी मास अभी बाकी है
जीवन की मै मभी बहार देख चुका हू
तू तो खिलता फूल अभी है
अभी तुझे शादी करनी है
मेरे लाल मेरे लाल

बालको की हरकत से मीशका को जो दुख हुआ था , अब वह उसे भूल गया । अब उसे इस बात पर हमी आ गयी कि बाप की मूछे उमके होटो पर मूज के उन रेशो की भाति अकडी हुई थी जिनसे मा भाड बनाती है । मूछो के नीचे जब होठ हिलने-डुलते थे तो देखने से हमी आती थी और जब मुह खुलता था तो अन्दर एक गोल और काला-सा छेद नजर आता था ।

“ तू इम वक्त मेरे काम मे खलल मत डाल मीन्का , ” बाप ने कहा , “ अभी मुझे छकडे की मरम्मत कर लेने दे और रात को मोते वक्त मै तुझे लडाई की मभी बाने सुनाऊगा । ”

* * *

दिन लम्बा होता चला गया , स्तेपी के सुनसान लम्बे रास्ते की तरह । सूरज ने अपना किरणजाल समेटा और घोडो का भुण्ड गाव से गुजर गया । धूल बैठ गयी और मवलाये हुए आकाश मे पहले सितारे ने लजाते हुए धरती की ओर देखा ।

मीशका के मन को चैन नहीं था , और मा जैमे कि जान-बूझकर देर करती जा रही थी । वह देर तक दूध दुहती रही , देर तक उसे छानती रही , फिर तहखाने मे गयी तो वही घण्टा भर गुम रही ।

मीशका को करार नहीं था, वह मा के इर्द-गिर्द चक्कर काटता फिर रहा था।

“जल्द ही खाना दोगी न मा?”

“जरा सब्र कर रे। मिल जायेगा खाना, मरा क्यों जा रहा है।”

मगर मीशका उसके पीछे-पीछे लगा रहा। मा तहखाने में जाये तो वह भी उसके पीछे, मा रसोईघर जाये तो वह भी वहां हाजिर। जोक वी तरह चिपक गया मा का दामन पकड़े।

“मा मा जरा जल्दी से खाना दे दो।”

“अरे कह तो दिया। पेट में आग लगी है तो जा, जाकर रोटी का टुकड़ा लेकर खा ले।”

मगर मीशका मुनी-अनमुनी करता रहा। मा ने गुद्दी पर एक चपत जमा दिया, मगर इसमें भी कोई फर्क नहीं पड़ा।

मीशका ने रात का खाना हडबडी में जैसे-तैसे गले के नीचे उतारा और फटाफट जा पहुँचा सोने के कमरे में। पाजामा उतारकर उसने सन्दूक के पीछे काफी दूर फेंक दिया और बिस्तर में मा की रजाई के नीचे जा दुबका। रजाई रगबिरग कपड़ों के टुकड़ों को जोड़कर बनायी गयी थी। बिस्तर में जा लेटा और मन में इस बात की बेचैनी बनी हुई थी कि कब बाप आये और लड्डई का हाल सुनाये।

दादा देव-मूर्तियों के सामने घुटने टेकें हुए प्रार्थना कर रहे थे। मीशका ने सिर ऊँचा किया। देखा कि दादा बड़ी कठिनाई से और बाये हाथ की उंगलियों से सहारा लेकर झुके और इतना झुके कि उनका सिर फर्श से जा टकराया। मीशका ने दीवार पर कुहनी मारी - ठक।

दादा फिर फुसफुमाने हुए प्रार्थना करते और फर्श पर माथा टेकते रहे। मीशका भी दीवार को ठकठाता रहा। दादा खीझ उठे, मीशका की तरफ मुड़े और डाटते हुए बोले

“ठहर शैतान, अभी बताता हूँ तुझे। क्षमा करना मुझे भगवान! नहीं मानता तो अभी तेरी मरम्मत करता हूँ।”

पिताई शुरू होनेवाली ही थी कि पिता ने भीतर कदम रखा।

“तू मा के बिस्तर में क्यों जा घुसा रे मीन्का?” बाप ने पूछा।

“मैं मा के साथ ही तो सोता हूँ।”

बाप बिस्तर पर बैठ गया और चुपचाप मूँछों को बल देने लगा। कुछ देर बाद उसने कहा

“ मगर मैंने तो दादा के साथ तेरा बिस्तर लगाया है ”

“ मैं दादा के साथ नहीं मोऊगा । ”

“ मगर क्यों ? ”

“ उनकी मूछो में तम्बाकू की बू आती है । ”

बाप ने फिर मूछे मरोड़ी और गहरी सास ली

“ नहीं बेटे , तू दादा के साथ ही जाकर सो जा ”

मीशका ने रजाई से सिर ढक लिया और चोरी-चोरी एक आख में देखते हुए शिकायत के लहजे में कहा

“ कल भी तुम मेरी जगह सोये रहे और आज फिर वही चाहते हो आज तुम सो जाओ दादा के साथ । ”

मीशका बिस्तर पर उठकर बैठ गया , बाप का सिर हाथों में ले लिया और धीरे में बोला

“ तुम ही सो जाओ दादा के साथ । मा तो मैंने भी तुम्हारे साथ नहीं सोयेगी । तुम्हारे मुँह में भी तम्बाकू की तेज बू आती है । ”

“ अच्छा , मैं ही सो जाऊंगा दादा के साथ , मगर फिर लडाई का किस्सा नहीं सुनाऊंगा । ”

बाप उठा और रसोईघर की तरफ चल दिया ।

“ बापू । ”

“ क्या है ? ”

‘ अच्छा तो यही सो जाओ ’ मीशका ने गहरी सास लेकर कहा और उठकर बैठ गया , “ मगर लडाई के बारे में तो सुनाओगे ना ? ”

“ हा सुनाऊंगा । ”

दादा दीवार की ओर लेट गये और मीशका को उन्होंने दूसरी ओर लिटा दिया । कुछ देर बाद बाप आया । उसने बिस्तर के करीब एक बेच खींच ली और कागज में मोटा तम्बाकू लपेटकर कश लगाने लगा ।

‘ हा तो हुआ यह तूझे याद होगा कि हमारे खलिहान के पीछे कभी दूकानदार का एक खेत था ? ’

मीशका को याद हो आया कि कैसे वह कभी मोधे और ऊँचे-ऊँचे गेहूँ के खेत में भागा-फिरा करता था । पत्थर की मुंडेर फादकर वह इस खेत में जा पहुँचता था । गेहूँ के पौधे उसके सिर से ऊँचे-ऊँचे होते थे और भरी हुई बाले मुँह पर गुदगुदी किया करती थी । खेत में धूल-

मिट्टी और स्तेपी की हवा की गन्ध भी आया करती थी। मा उसे पुकार-पुकारकर कहा करती थी

“मीन्युश्का, खेत में बहुत दूर मत जाना, तू रास्ता भूल जायेगा।”

बाप घड़ी भर का चुप हो गया और फिर मीश्का का मित्र सहलाते हुए बोला

“याद है तुम्हें कि तू मेरे साथ रेत के टीले तक गया था? वहाँ हमारा खेत था।”

मीश्का को फिर याद आया रेत के टीले के पीछे, रास्ते के साथ-साथ, खेत की एक टढ़ी और पतली-सी पट्टी थी तो सही। मीश्का अपने बाप के साथ वहाँ गया था और खेत को पशुओं के खुरों से रौंदा हुआ पाया था। भूमि पर जहाँ-तहाँ गेहूँ की बालों की गन्दी-मन्दी ढेरियाँ लगी हुई थी। सिर्फ डठल हवा में भूल रहे थे। मीश्का को इस बात का भी स्मरण हो आया कि उसके हट्टे-कट्टे और लम्बे-तडंगे बापू का चेहरा बहुत भयानक रूप से विकृत हो उठा था और धूल-मिट्टी में लथपथ उसके गालों पर रुक-रुककर आसू की बूंदें टपकने लगी थी। बाप को गेता देखकर मीश्का भी रो दिया था।

लौटते हुए बाप ने खेत के रखवाले से पूछा था

“फेदोत, जानते हो कि मेरे खेत का किमने ऐसा बुरा हाल किया है?”

फेदोत ने जोर से थूककर जवाब दिया था

“दूकानदार मंडी की ओर अपने ढोर-डगर लिये जा रहा था। जान-बूझकर उसने उन्हें तुम्हारे खेत में छोड़ दिया था।”

बाप ने बेच और नजदीक खीची और कहा

‘दूकानदार और बाकी अमीर लोगों ने मारी जमीन हथिया रखी थी, गरीबों के पास बोनो के लिये जमीन ही नहीं थी। हमारे गाँव में ही नहीं, सभी जगह यही हाल था। बुरी तरह से नाक में दम कर रखा था तब उन्होंने हमारा जीना दूभर था मैंने सोचा जमीन नहीं है, न सही, दूसरों के ढोर चरगा करूँगा। कुछ अर्से बाद मुझे सेना में भर्ती कर लिया गया। सेना का भी यही हाल कि अफसर लोग जरा-सी बात पर कसकर तमाचा लगाते फिर बोल्शेविक सामने आ गये। इनमें जो सबसे बड़ा था, उसे लेनिन कहते थे। वह वैसे तो

बड़ा सीधा-सादा आदमी था, मगर दिमाग बहुत बढ़िया पाया था उसने। जरूर हम देहातियों की नस्ल का ही होगा। बोल्शेविको ने हमें ऐसी बातें बतायीं कि हम तो दग रह गये। कहा उन्होंने, 'अरे देहातियों, किसानों-मजदूरों, मुह बाये क्या देख रहे हो?' उठो मिलकर, सफाया कर दो इन श्रीमानों का, इन अफसरों का। सब कुछ तुम्हारा ही है।'

"उनके इन शब्दों ने हमें चक्कर में डाल दिया। सोचा विचारा तो महसूस हुआ कि ठीक ही कहते हैं। तो हम लोगो ने श्रीमानों से जमीन-जायदाद छीन ली। मगर इन लोगो ने बुरा वक्त भला कब देखा था, टूट पड़े हम पर, हम किसानों और मजदूरों पर, और बस लड़ाई शुरू हो गयी समझे बेटे?"

"हां, और बोल्शेविको में सबसे बड़े यानी लेनिन ने जनता को उठाकर खड़ा कर दिया। ठीक वैसे ही जैसे कि हल का फाल मिट्टी को उठाता चला जाता है। उन्होंने फौजियों और मजदूरों को एकजुट किया और अमीर लोगो की धज्जिया उड़ाने लगा। धज्जिया उड़ा दी उनकी। फौजी और मजदूर लाल गार्ड कहलाने लगे। मैं भी उन्हीं में था। एक बड़े-में घर में रहते थे हम—स्मोल्ली नाम था उसका। दालान उसका—यह लम्बा साग था और कमरे इतने थे कि आदमी गमता भूल जाये।

'एक बार क्या हुआ कि रात का वक्त था, मैं दरवाजे पर पहरा दे रहा था। बाहर बड़ी ठंड थी और मैं सिर्फ एक फौजी कोट पहने था। हवा तन को काट रही थी तभी इस घर में दो आदमी बाहर निकले और आगे बढ़े तो मैंने देखा कि उनमें से एक लेनिन है। वह मेरे पास आये और प्यार से बोले

"साथी, सर्दी तो नहीं लग रही?"

"और मैंने जवाब दिया, 'नहीं साथी लेनिन। ठंड ही क्या, कोई दुश्मन भी नहीं डरा सकता हमें। हमने शासन की बागडोर इमलिये तो अपने हाथों में नहीं ली है कि फिर से उमें बुर्जुओं के हवाले कर दें।'

"लेनिन मुस्करा दिये और उन्होंने जोर से मुझसे हाथ मिलाया। फिर वह धीरे-धीरे आगे बढ़े और फाटक की ओर चले गये।"

बाप ने जेब से तम्बाकू निकाला, कागज में लपेटा और सिगरेट

बनाकर दियासलायी जलायी। उस रौशनी में मीशका ने बाप की लाल और अकड़ी हुई मूछों में चमकती हुई आसू की बूद देखी, ओस की उस बूद जैसी जो मुबह के वक्न बिच्छूबूटी की पत्ती के मिरे पर अटकी रह जाती है।

“हा तो ऐसे थे लेनिन। सभी की चिन्ता करते थे। एक-एक फौजी रहता था उनके दिल में। उस दिन के बाद मैंने अक्सर उन्हें देखा। मेरे नजदीक से गुजरते, दूर से ही मुस्कराने और पूछने

“‘तो बर्जुआ मिटा तो नहीं डालेंगे हमें?’

“‘इतना दम उनमें कहा, माथी लेनिन।’ मैं उन्हें जवाब देता।

“मोलह आने सही निकली बेटे उनकी बात। जमीने और कारखाने हमने शमीरो से, हमारा खून पीनेवालों से छीन लिये और उनकी कमर तांड डाली। जब बड़ा हो जायेगा तो यह याद रखना कि तेरा बापू जहाजी था और चार बरस तक उसने कम्यून के लिये अपना खून बहाया था। तेरे बड़े होने तक मैं इस दुनिया में नहीं रहूँगा, लेनिन भी नहीं होंगे, पर हमारा काम सदियों तक जियेगा। बड़ा होने पर तू भी अपने बापू की तरह ही सोवियत सत्ता के लिये लड़ेगा न?

‘लडगा।’ मीशका चिल्ला उठा। वह उछलकर बिस्तर पर खड़ा हो गया। उसने बाप की गर्दन में लिपटना चाहा। वह भूल गया कि करीब हो दादा सोये पड़े हैं, उनके पेट में पाव लगा।

दादा चीख उठे। उन्होंने हाथ बढ़ाया कि मीशका को बालों में पकड़ ले। मगर बाप ने जल्दी में मीशका को हाथों पर उठा लिया और दूसरे कमरे में ले गये।

मीशका बाप के हाथों पर ही सो गया। शुरू में तो वह देर तक अद्भुत व्यक्ति लेनिन, बोल्शेविको, लडाई और जहाजों के बारे में सोचता रहा। नींद आते समय उसे दबी-दबी-सी अवाजे सुनायी देती रही, पसीने और घटिया तम्बाकू की गन्ध आती रही। बाद में पलके भिन्न गयी मानो किसी न हथेलियों में सहला-सहलाकर उन्हें बन्द कर दिया हो।

मीशका को अभी अच्छी तरह से नींद भी न आयी थी कि उसने स्वप्न में एक शहर देखा। चौड़ी-चौड़ी सड़के, राख में लोट-पोट होती हुई मुर्गियां। गाव में उनकी काफी सख्या होती है, मगर नगर में तो कोई हिसाब ही नहीं। मकान बिल्कुल वैसा थे जैसे कि बाप ने

बताये थे। एक बड़ा-सा मकान, सरकडो से ढका हुआ, उसकी चिमनी पर एक और मकान खड़ा हुआ, उसकी चिमनी पर तीसरा मकान रखा हुआ और सबसे ऊपरवाले मकान की चिमनी आकाश को छूती हुई।

मीशका है कि चला जा रहा है इस शहर की सड़क पर। मुह ऊपर को किये इधर-उधर देखता जा रहा है। अचानक इतने में कहीं से एक लम्बा-तडगा आदमी उसके सामने आकर खड़ा हो गया। वह लाल कमीज पहने था।

“अरे मीशका क्यों तू सड़क पर बेमतलब मटरगश्ती करता फिर रहा है?” उसने बड़े प्यार से पूछा।

“दादा ने मुझे खेलने की छुट्टी दी है।”

“तू जानता है कि मैं कौन हूँ?”

“नहीं, मैं नहीं जानता ”

“मैं—साथी लेनिन हूँ।”

मीशका को डर ने ऐसा दबोचा कि उसके घुटने जवाब दे गये। उसका मन हुआ कि मिर पर पैर रखकर भाग ले, मगर लाल कमीज-वाले व्यक्ति ने मीशका की बांह पकड़ ली और कहा

‘रे मीशका शर्म तो तुझमें रूनी भर नहीं है। तू खूब अच्छी तरह यह जानता है कि मैं गरीब लोगों के लिये लोहा ले रहा हूँ। तू क्यों मेरी फौज में शामिल नहीं हुआ?’

“दादा मुझे इसकी इजाजत नहीं देते।” मीशका ने अपनी सफाई पेश की।

“खैर देख ले जैसी तेरी मर्जी, साथी लेनिन ने कहा, ‘मगर तेरे बिना मेरा काम मिर चढ़ने का नहीं। तुझे मेरी फौज में नाम लिखाना ही होगा।’

मीशका ने लेनिन का हाथ पकड़ लिया और बहुत दृढ़तापूर्वक कहा

‘अच्छा तो या ही नहीं। मैं दादा से पूछे बिना ही तुम्हारी फौज में शामिल हो जाता हूँ और गरीब लोगों के लिये लड़गा। ऐसा करने के लिये अगर दादा मुझे डाटे-डपटेगे तो उनसे तुम निपट लेना।’

“मैं जरूर तुम्हारी हिमायत करूँगा।” साथी लेनिन ने कहा और सड़क पर आगे बढ़ गया। मीशका का तो खुशी के मारे यह हाल था कि माम लेना मुश्किल। दिल बल्लियो उछल रहा था। उसका मन हो

रहा था कि चीखकर कुछ कहे, मगर जबान सूखकर रह गयी।

मीशका बिस्तर पर उछल पड़ा, दादा को लात लगी और मीशका की आख खुल गयी।

दादा नींद में बड़बड़ाये, होठों में चप-चप की आवाज़ करने लगे। खिड़की में रोशनी भाकने लगी थी। तालाब के पड़े, हल्के पीले आकाश में रक्तवर्णी फेन में मिलते-जुलते बादल पूर्व की ओर में उमड़े चले आ रहे थे।

* * *

अब तो बाप हर शाम मीशका को लड़ाई और लेनिन के किस्से सुनाने और यह बताने लगा कि वह किम-किम जगह लड़ने गया।

शनिवार का दिन था। शाम को कार्यकारिणी समिति का चौकीदार एक नाटे-से व्यक्ति को साथ लिये हुए आया। यह व्यक्ति फौजी कोट पहने था और बगल में चमड़े का बैग दबाये था। चौकीदार ने दादा को आवाज दी और कहा

‘देखिये, मैं आपके घर पर सोवियत के एक कर्मचारी को लेकर आया हूँ। वह नगर से आया है और रात को आप ही के यहाँ टिकेगा। दादा रात की रोटी का प्रबन्ध कर दीजियेगा।’

‘वह तो खैर सब हो जायेगा,’ दादा ने कहा ‘मगर श्रीमान माथी, आप आर्डर तो लाये हैं न?’

दादा की योग्यता देखकर मीशका तों दग ही रह गया। वह मुह में उगली डालकर बहुत ध्यान से बातें सुनने लगा।

“आर्डर-वार्डर सब कुछ है।” चमड़े के बैगवाला व्यक्ति हम दिया और अन्दर के कोठे की तरफ चल दिया।

दादा उस अजनबी के पीछे-पीछे हो लिये और मीशका दादा के पीछे-पीछे।

“किम काम में आप हमारे गांव में आये हैं?” दादा ने रास्ते में पूछा।

“मैं यहाँ चुनाव कराने आया हूँ। सोवियत के सदस्यों और अध्यक्ष का चुनाव होगा।”

कुछ ही देर बाद बाप भी खलिहान से आ गया। उसने अजनबी

से दुआ-सलाम की और मा से खाने का प्रबन्ध करने को कहा। खाने के बाद अजनबी और मीशका का बाप बेच पर साथ-साथ बैठ गये। अजनबी ने अपना चमड़े का बैग खोला, उसमें से कागजों का एक पुलिन्दा निकाला और बाप को दिखाने लगा। मीशका के मन में बड़ी जिज्ञासा थी और वह इनके आस-पास घूम रहा था कि किसी तरह उन कागजों पर एक नजर डाल ले। बाप ने एक कागज लिया और मीशका को दिखाते हुए कहा

“देख मीशका, यह है लेनिन।”

मीशका ने बाप के हाथ से तस्वीर झूट ली, उसी पर नजर गड़ा दी और उसका मुह आश्चर्य में खुल गया। यह लेनिन का एक छविचित्र था। कद बहुत बड़ा नहीं, वह लाल कमीज भी नहीं, कोट पहने थे। एक हाथ पतलून की जेब में था और दूसरा सामने की ओर उठा हुआ। मीशका इस चित्र पर नजर टिकाये था। एक ही नजर में वह उसे ऊपर में नीचे तक देख गया। उसके स्मृतिपट पर हमेशा के लिये, अमिट रूप में लेनिन का एक-एक नक्श अंकित होकर रह गया। कुछ-कुछ मुड़ी हुई भौंहे और आँखों और होठों के कोनों में दुबकी हुई मुस्कान की स्मृति उसके मन में मढ़ा के लिये जमकर रह गयी।

अजनबी ने मीशका के हाथ से चित्र लिया, अपने बैग में रखकर ताला लगाया और सोने की तैयारी करने लगा। उसने कपड़े उतारे और फौजी कोट ओढ़कर प्लेट गया। उसकी आँख लगने ही वाली थी कि दरवाजा चरचराया। उसने सिर ऊपर उठाया

“कौन है?”

फर्श पर किसी के नगे पैरों की आहट हुई।

कौन है?” उसने दोबारा पूछा और बिस्तर के निकट बिल्कुल अप्रत्याशित ही मीशका को खड़े पाया।

“क्या बात है बेटे?”

मीशका घड़ी भर चुपचाप खड़ा रहा, फिर उसने माहम बटोरों और फुसफुसाकर कहा

“चाचा, देखो बात यह है तुम मुझे मुझे लेनिन दे दो।”

अजनबी चुप रहा, बिस्तर से आगे की ओर गर्दन बढ़ाकर उसने लड़के को गौर से देखा।

मीशका को डर ने आ दबाया—हो सकता है कि चाचा कजूसी

कर जाये और चित्र न दे। आवाज काप न जाये इसका प्रयास करने और रुधने हुए गले में उसने जल्दी-जल्दी फुसफुसाकर कहा

“आप मुझे दे दे, बिल्कुल दे दे यह तस्वीर मेरे पास टीन का अच्छा-सा डिब्बा है, मैं वह दे दूंगा आप को और इसके अलावा पासे भी दे दूंगा और ” मीशका ने हाथ भटका और बुझे मन में आगे कहा, “वे जूते भी दे दूंगा जो बापू मेरे लिये लाये हैं।”

“मगर तू करेगा क्या लेनिन का?” अजनबी ने मुस्कराते हुए पूछा।

“नहीं देने का।” मीशका ने मन ही मन सोचा। उसने मुह दूसरी तरफ फेर लिया ताकि आसू नजर न आये और टूटती-सी आवाज में कहा

“चाहिये, बस।”

अजनबी हम दिया। उसने सिग्नाने के नीचे में बैग निकाला और मीशका को तस्वीर दे दी। मीशका ने तस्वीर ली, उसे कमीज के नीचे, दिल के बिल्कुल निकट, सीने पर जोर में भीचा और कोठे में भागता हुआ बाहर आया। दादा की आख खुल गयी और उन्होंने पूछा

“अरे तू कहा टापता फिर रहा है आधी रात को?” कहा था तुझमें कि रात को दूध मत पी—अब बार-बार उठ-उठकर भागेगा। अरे सुन। अब गन्दे पानी की यह जो बाल्टी पड़ी है, उसी में अपना काम कर ले। बाहर अहाते में ले जाऊ तुझे, यह मेरे बस की बात नहीं।”

मीशका चुपचाप नेट गया, तस्वीर को दोनों हाथों में भीचे रहा। वह करवट लेते हुए डरता कि कहीं तस्वीर मुड़मुड़ा न जाये। इसी तरह उसकी आख लग गयी।

मुह अधरे ही मीशका की आख खुल गयी। मा ने गाय दुहकर उसे रेवड के साथ बस भेजा ही था। मीशका को देखा तो दोनों हाथों से सिर थाम लिया

“अरे तुझे किसने काट खाया है। इतने सवेरे ही क्यों उठ बैठा है?”

मीशका ने फोटो को कमीज के नीचे दबाया और मा के करीब में भटपट खलिहान की तरफ बढ़ गया और खत्ती में गायब हो गया।

खत्ती के चारों ओर बरडाँक की भाड़िया खड़ी थी और बिच्छू

बूटी की हरी दुर्गम दीवार काटे फैलाये हुए थी। मीस्का कूद-फादकर खत्ती में जा पहुँचा। उसने धूल और मूर्गियों की बीट हाथों में हटायी, बरडाँक का एक बड़ा-सा और सूखकर पीला पड़ा हुआ पत्ता तोड़ा, फोटो को उसमें लपेटा और जमीन पर रखकर उस पर एक ककड रख दिया ताकि वह हवा से उड़ न जाये।

सुबह से शाम तक पानी बरसता रहा। आकाश में मुरमई चदवा छाया हुआ था। अहाते के गढ़हों में बूंदों की टपटप हो रही थी और मंडको पर छोटे-छोटे नद-नाले बह रहे थे।

मीस्का को मजबूरन दिन भर घर में बैठे रहना पड़ा। झुटपुटा हो चला था, जब बाप और दादा मभा में भाग लेने के लिये कार्यकारिणी के दफ्तर की ओर चले। मीस्का ने दादा की छज्जेदार टोपी पहनी और उनके पीछे-पीछे हो लिया। कार्यकारिणी का दफ्तर गिर-जाघर के चौकीदार के भोपड़े में था। बड़ी मुश्किल से टेढ़ी-मेढ़ी और गन्दी-मन्दी मीढ़िया चढ़कर मीस्का बग्गानी में पहुँचा और वहाँ से कमरे में गया। कमरा खचाखच भरा हुआ था और तम्बाकू का धुआँ छत को छू रहा था। खिड़की के पास मंज लगाये वही अजनबी बैठा था। वह कमरे में जमा होने हुए कज्जाको में कुछ कह रहा था।

मीस्का चूपचाप सबसे पीछेवाली बेच पर जा बैठा।

‘मार्थियो! आपमें से कौन इस बात के हक में है कि फोमा कोर्गनोव को अध्यक्ष चुना जाये? कृपया अपने हाथ उठाये।’

मीस्का के आगे दूकानदार का दामाद प्रोखोर लिमेन्कोव बैठा था। वह चिल्लाया

“भाइयो! मेरी प्रार्थना है कि इस व्यक्ति को उम्मीदवार न बनाया जाये। वह ईमानदार नहीं है। वह जब हमारे गेवड चरगया करता था तभी यह बात साफ हो गयी थी।”

मीस्का ने मोची फेदोत को खिड़की के दास में उठते देखा। वह दोनों हाथ हिलाकर चिल्लान लगा

“मार्थियो, खाते-पीते लोग यह महन नहीं कर सकते कि चरवाहा फोमा मोवियत का अध्यक्ष चुना जाये। मगर चूंकि वह प्रोलेतारी और मोवियत सत्ता का हिमायती है इसलिए ”

मोची फेदोत अपनी बात पूरी भी न कर पाया कि दरवाजे के पास मटककर खड़े हुए, मालदार कज्जाक जोर-जोर से पाव पटकने और मी-

टिया बजाने लगे। कार्यकारिणी के दफ्तर में गुलगपाड़ा मच गया।

“चरवाहा नहीं चाहते।”

“फौज में लौट आया है—अब फिर से ढोर चगाया करे।”

“भाड़ में जाय फोमा कोर्शुनाव।”

मीशका ने बेच के पाम खड़े बाप के चेहरे पर नजर डाली, उस पर हवाइया उड़ रही थी। बाप का ऐसा हाल देखकर खुद मीशका के चेहरा का रंग उड़ गया।

“खामोश रहो साथियो! मभा में निकाल दूंगा।” मंज पर जोर से मुक्का मारकर अजनबी चिल्लाया।

“कज्जाको मे से अपना आदमी चूनेगे।”

“नहीं चाहिये।”

“नहीं चाहिये—” कज्जाक शोर मचा रहे थे और सबसे ज्यादा गला फाड़कर चीख रहा था दुकानदार का दामाद प्रोखोर।

एक हट्टा-कट्टा और लाल दाढ़ीवाला कज्जाक उछलकर बेंच पर खड़ा हो गया। उसके कान में बाली थी और फटे हुए कोट पर जहा-तहा पैबन्द लगे थे।

भाड़यो! मामला चौपट हुआ जा रहा है। हांहल्ला करके ये अमीर लोग अपन आदमी को अध्यक्ष बना देना चाहते हैं। फिर मे वही

वहा उतना शोर मच रहा था कि कानों के पर्दे फटे जा रहे थे। बालीवाला कज्जाक चीख-चीखकर जो कुछ कह रहा था उसका काई-कोई शब्द ही मीशका को मनायी दिया

जमीन फिर बटवायी जायेगी बजर हम बाढ़िया जमीन व मद दबा लेगे ”

‘प्रोखोर को अध्यक्ष बनाया जाये।’ दरवाजे के निकट लगातार यही स्वर गूँज रहा था।

‘प्रोखोर! हो-हो-हो! हा-हा-हा!’

जैसे-तैसे शोर कम हुआ। अजनबी भौंहे चढ़ाकर और लाल-पीला होकर देर तक कुछ चीखता-चिल्लाता रहा।

“डाट-डपट रहा होगा।” मीशका ने सोचा।

अजनबी ने ऊँची आवाज में पूछा

“फोमा कोर्शुनोव के हक में कौन-कौन है।”

बेंचों के ऊपर बहुत-से हाथ उठ गये। मीशका ने भी हाथ ऊंचा कर दिया। कोई आदमी एक के बाद दूसरी बेंच पर कूदता हुआ ऊंचे-ऊंचे गिनती करने लगा :

“तिरसठ ... चौसठ,” मीशका की ओर न देखते और उसके उठे हुए हाथ की ओर उंगली से इशारा करते हुए उसने कहा : “पैंसठ !”

अजनबी ने काराज पर कुछ लिखा और फिर ऊंची आवाज में कहा :

“जो प्रोस्त्रोर लिसेन्कोव के हक में हैं, हाथ उठाये !”

सत्ताईस धनी कज्जाकों और चक्की के मालिक येगोर ने भटपट हाथ ऊंचे कर दिये। मीशका ने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ायी और उसने भी हाथ ऊंचा कर दिया। गिनती करनेवाला व्यक्ति मीशका के बराबर आया और ऊपर से उसे देखकर उसने जोर में मीशका का कान पकड़ लिया। मीशका को बड़ा दर्द हुआ।

“अरे पाजी कही के ! चल भाग यहां से वरना मरम्मत कर डालूंगा ! चला है गय देने !”

इर्द-गिर्द बैठे लोग हंम दिये। गिनती करनेवाला व्यक्ति मीशका को दरवाजे तक लाया और पीठ पर ठोक दिया। मीशका को याद हो आया कि दादा और बाप के बीच तकरार हो जाने पर बाप ने क्या कहा था। गन्दी-मन्दी और फिसलनी सीढ़ियों से नीचे जाते हुए मीशका ने भी वही गब्द दोहरा दिये

“तुम्हें ऐमा करने का हक नहीं है !”

“ठहर, बड़ा आया है मुझे हक ममभानेवाला !”

मीशका को अपमान का कड़वा घूट पीना पड़ा, बहुत खीझ आयी।

मीशका ने घर लौटकर आंसू बहाये और फिर मां से फ़रियाद की। मां ने डांट पिलायी :

“तू हर जगह घुसता क्यों फिरता रहता है ! सभी जगह अपनी नाक घुमेडा करता है !.. तेरे कारण तो नाक में दम है मेरा !”

अगले दिन सुबह सब नाश्ता करने बैठे। नाश्ता अभी खत्म भी नहीं हुआ था कि बहुत दूर से बाजे की ढम-ढम सुनायी दी। बाप ने चमचा मेज़ पर रखा और मूँछें पोंछते हुए कहा :

“यह तो फ़ौजी बैंड लगता है !”

मीशका तो हवा की तरह बेंच से गायब हो गया। ड्योढ़ी का

दरवाजा बन्द हुआ। खिड़की से तेज कदमों की चप-चप सुनायी देती रही

दादा और बाप बाहर अहाने में आ गये। मा खिड़की में धड़ बाहर निकालकर देखने लगी।

सड़क के सिरे पर हरी लहंगे-मी लहंगती हुई लाल सेना की कतारे चली आ रही थी। आगे-आगे कुछ बैडवाले बिगुल बजाते चले आ रहे थे और ढोलची जोरों से ढोल को ढमढमा रहा था। पूरे गाव में बैड की आवाज गूँज रही थी।

मीशका की आँखें सभी ओर दौड़ रही थी। शुरू में तो वह खोया-खोया-सा एक ही जगह पर चक्कर काटना रहा और फिर भपटकर बैडवालों के पास जा पहुँचा। उसके हृदय में कोई मीठी-मीठी चीज हिलोरे ले रही थी, वह मुह तक आने को बेकरार थी। मीशका धूल-मिट्टी से सने हुए लाल सेना के फौजियों के प्रफुल्लित चेहरों को और गाल फुला-फुलाकर बाजों से आवाज निकालते हुए बैडवालों को देखता रहा। फिर उसने अचानक और एकबारगी यह नय कर लिया 'मैं भी जाऊँगा इनके साथ लड़ाई लड़ने।'

उसे अपना सपना याद हो आया। न जाने कहाँ उसे हिम्मत आ गयी कि किनारेवाले फौजी का पैला थामकर उसने पूछा

"आप कहाँ जा रहे हैं? लड़ाई लड़ने?"

तो और क्या? लड़ने ही तो जा रहे हैं।'

"किस की ओर से आप लड़ेंगे?"

"मोबियन सत्ता की ओर से, पगले! अच्छा इधर आ, बीच में।"

उसने मीशका को फौजियों की कतारों के बीच खींच लिया, किसी ने हसते-हसते उसकी गुद्दी पर चुटकी काट ली, किसी अन्य ने जेब में पड़ा हुआ गन्दा-सा चीनी का छोटा-सा टुकड़ा निकाला और उसके मुँह में ठूस दिया। चौक में पहुँचने पर पहली कतार में से किसी ने चीखकर कहा

"थम जा।"

लाल सेना के फौजी रुके, चौक में इधर-उधर बिखरे और स्कूल की बाड़ की छाया में ठण्डी जगह देख सटकर लेट गये। घुटे हुए सिर-वाला लाल सेना का एक लम्बा-तडगा फौजी मीशका के पास आया।

उसकी बगल में तलवार लटक रही थी। मुस्कराते हुए उसने पूछा
“अरे तू कहाँ से आ गया इधर?”

मीशका ने अपने चेहरे पर बड़प्पन का भाव लाकर नीचे सरकते पाजामे को खींचकर ऊपर किया।

“मैं आप लोगों के साथ लड़ाई लड़ने चला आ रहा हूँ।”

“साथी बटालियन कमांडर, इसे भी सहायको में शामिल कर लो।” एक सैनिक ने ऊँची आवाज में कहा।

सभी ओर जोर के कहकहे गूँज गये। मीशका बार-बार पलके झपकाता खड़ा रहा। मगर “बटालियन कमांडर” के अजीब-से नामवाले व्यक्ति ने भौंहे चढ़ाये और जोर में डाटते हुए कहा

“हसने की क्या बात है, मूर्ख? स्पष्ट है कि हम इसे अपने साथ ले चलेंगे मगर एक शर्त पर,” बटालियन कमांडर मीशका की ओर घूमा और बोला, ‘देख तेरे पाजामे में सिर्फ एक पट्टी है। ऐसे काम नहीं चलेगा। ऐसे तो तू अपने हतियारों से हमारी हेठी करायेगा यह देख, मेरे पतलून में दो पट्टियाँ हैं सभी के पतलूनों में दो हैं। जा भागकर जा मा में दूसरी पट्टी सिलवा ला। हम तेरा यही इन्तजार करेंगे’ इतना कहकर कमांडर बाइ की तरफ घूमा और आखिरी मार्गते हुए उसने ऊँची आवाज में कहा ‘तेरेस्वेंको जा लाल सेना के नये फौजी के लिये जल्दी से बन्दूक और फौजी कोट लेकर आ।’

बाइ की छाया में लेंटे हुए फौजियों में से एक उठा, टोप के छज्जे तक हाथ उठाकर उसमें मलामी दी और कहा

‘जो हुक्म’ वह जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ बाइ के साथ-साथ चल दिया।

‘अच्छा अब तू उड़कर जा। मा में झटपट पट्टी सिलवाकर लौट आ।’

मीशका न कड़ी नजर से बटालियन कमांडर की तरफ देखा
“देखो मुझे धोखा नहीं देना।”

‘क्या बात करता है। कभी हाँ सकता है?’

चौक में घर तक काफी फासला था। मीशका फाटक तक ही दौड़ा था कि दम फल गया। साम लेना कठिन हो गया। फाटक के पास पहुँचने पर उसने दौड़ते-दौड़ते ही पाजामा उतार लिया। नगे पाव जल्दी में दौड़ता हुआ तेज भोके की तरह मकान में जा घूसा

“मा पाजामे की एक और पट्टी मी दे।”

घर मे खामोशी थी। अगीठी के ऊपर मक्खिया भिनभिना रही थी। मीशका भागता हुआ अहाते मे पहुँचा, खलिहान और बगीचे मे गया—न बाप न मा, न दादा। छलागे मारता कोठे मे गया—एक बोरी पर नजर जा पड़ी। उसने चाकू लिया और उसकी लम्बी डोरी काट ली। सीने की फुगमत मीशका को कहा थी और फिर सीना आता भी तो नहीं था। उसने भटपट उसे पाजामे मे बांध लिया और कंधे पर से ले जाकर सामने की तरफ गाठ दे दी। वह भागकर खन्ती मे गया।

उसने ककड़ हटाकर लेनिन का चित्र उठाया। अपनी ओर इशारा करते लेनिन के उठे हुए हाथ को उड़ती नजर मे देखा और साम गोक-कर धीरे मे फुसफुसाया

“देख लिया न? मै भी जा रहा हू तुम्हारी फौज मे।”

बड़ी सावधानी से उसने लेनिन की तस्वीर बरडॉक के पत्ते मे लपटी उसे कमीज के नीचे दबा लिया और उछलता-कूदता सड़क पर आ गया। वह एक हाथ से चित्र को छाती मे चिपकाये रहा और दूसरे मे पाजामा सम्भालता गया। जब दौड़ता हुआ पड़ोसिन की बाड़ के निकट मे गजरा तो पुकारकर कहा

“अनीमिमोव्ना।”

‘क्या है?’

‘हमारे घरवालों से कह देना कि खान पर मेरा उल्लंघन न करे’

“तू कहा उड़ा जा रहा है, पाजी?”

मीशका ने हाथ हिलाकर जवाब दिया

“फौजी नौकरी पर जा रहा हू।”

वह भागता हुआ चौक मे पहुँचा तो उसे जैसे काठ भार गया। चौक मे तो आदमी का नाम-निशान तक न था। बाड़ के करीब मिगरेटो के टकड़े, खाली डिब्बे और किसी की फटी-पुगनी पट्टिया पड़ी थी। गाव के बिल्कुल दूसरे सिरे से बैड की आवाज और ठोस मिट्टी की कच्ची सड़क पर चलनेवालों के पैरों की धम-धम सुनायी दे रही थी।

मीशका का गला आमुओं से रुध गया। वह चीख उठा और अपनी बची-बचायी पूरी ताकत समेटकर भाग खड़ा हुआ। जा मिलता, जरूर वह उनमे जा मिलता, मगर चमार के अहाते के सामने पीले रंग का

दुमदार कुत्ता पसरा हुआ था। उसने गुर्गकरी दात दिखाये। मीशका जब भागकर दूसरी सड़क पर पहुँचा तो बाजों की आवाज खो चुकी थी और पैरों की धम-धम भी।

* * *

दो दिन बाद गाँव में कोई चालीस फौजियों की एक टुकड़ी आयी। ये लोग घुटनों तक के भूरे फेल्ट के बूट और मजदूरों के तेल लगे हुए कोट पहने थे। बाप कार्यकारिणी समिति से दोपहर का खाना खाने घर आया तो दादा से बोला

“बापू, खन्ती में अनाज तैयार कर लो। अनाज-दस्ता आया है। अनाज देना होगा।”

फौजी एक-एक घर में जाते थे, कोठारों-खानियों में सगीने भोक-भोककर जाच करते थे और छिपाया हुआ अनाज निकलवाकर एक सामाजिक भण्डार में जमा करते जाते थे।

वे ग्राम-सोवियत के अध्यक्ष के घर भी आये। उनमें जो सबसे आगे-आगे था, मुँह में पाइप लगाये था। उसने दादा से पूछा

“बड़े मिया, अनाज छिपा रखा है क्या? सच-सच बना दो।”

दादा ने दाढ़ी पर हाथ फेरा और बड़े गर्व से कहा

‘अजी क्या कहते हैं, मेरा बेटा तो खुद कम्युनिस्ट है।’

सब खन्ती में पहुँचे। पाइपवाले फौजी ने एक नजर में मारे अनाज को आका और मुस्करा दिया।

“बड़े मिया, इनमें से इतना हमारे भण्डार में पहुँचा दो, बाकी अपने परिवार की रोटी और बीज के लिये रख लो।”

दादा ने बूढ़े घोड़े को छकड़े में जोता, कुढ़ते-बड़बड़ाते आठ बोरिया छकड़े में लाद दी। अफसोस में उन्होंने हाथ भटका और सामाजिक भण्डार की ओर छकड़ा बढ़ा दिया। मा को अनाज के इस तरह निकल जाने का दुख हुआ, वह कुछ रोयी-धोयी। मगर मीशका ने अनाज की बोरियों की लड़ाई में दादा का हाथ बटाया और फिर पादरी के बेटे वीत्का के साथ खेलने के लिये उसके घर चला गया।

मीशका और वीत्का अभी रसोईघर में जाकर बैठे ही थे, उन्होंने कागज के घोड़े काट-काटकर फर्श पर बिछाये ही थे कि वे ही फौजी

पादरी के रसोईघर में आ पहुँचे। पादरी साहब दौड़-धूप करने लगे, उनकी आवभगत को दौड़े आये लोग आदरभाव जताने लगे। उन्होंने फौजियों से आराम-कमरे में जाने को कहा। मगर पाइपवाले फौजी ने कडायी-रुखायी से कहा

“खत्ती में चलिये। कहा जमा कर रखा है आपने अनाज?”

भीतरवाले कमरे में पादरी की बीवी लपककर वहाँ आयी। उसके बाल अम्त-व्यस्त हुए पड़े थे। अपने होठों पर चोर की सी हसी लाकर उसने कहा

“विश्वास कीजिये जनाब, हमारे घर में तो अनाज का एक दाना भी नहीं है। मेरे पति ने अपने श्रद्धालुओं के घरों में अभी फेरा नहीं किया ”

“तहखाना है आपके यहाँ?”

“नहीं, हमारे यहाँ तहखाना नहीं है हम तो खत्ती में ही पहले अनाज जमा करते थे ”

मीशका को याद हो आया कि कैसे वह वीत्का के साथ रसोईघर में एक बड़े-से तहखाने में जाया करता था। पादरी की बीवी की तरफ मुँह करके उसने कहा

“रसोईघर में मैं और वीत्का तो तहखाने में उतरा करते थे, आप भूल गयी क्या?”

पादरी की बीवी के चेहरे का रंग उड़ गया, मगर वह हस दी

“तू भूल रहा है छोकरे! वीत्का तुम लोग बाहर बगीचे में जाकर खेलो।”

पाइपवाले फौजी ने आखे झपकायी और मीशका की ओर देखकर मुस्कराया

“लडके, किधर में रास्ता है उस तहखाने का?”

पादरी की बीवी बेचैनी में उर्गलिया चटकाती हुई बोली

“सूब है आप भी, इस बेवकूफ छोकरे की बात पर विश्वास कर रहे हैं। मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि हमारे घर में तहखाना नहीं है।”

पादरी ने अपने चोगे के छोर झटकते हुए कहा

“आइये, कुछ जलपान कीजिये। चलिये कमरे में।”

पादरी की बीवी ने मीशका के पास से गुजरते हुए उसके हाथ पर जोग की चुटकी काटी और मुस्कुराकर बड़े प्यार से कहा

“जाओ बच्चो, बगीचे में जाओ। यहाँ गड़बड़ी नहीं करो।”

फौजियों ने आखों में इशारे किये और रसोईघर में इधर-उधर चक्कर काटते हुए बन्दूकों के दस्तों से फर्श को ठोक-बजाकर देखने लगे। दीवार के पास से उन्होंने मेज खिसकायी और टाट उठाया। पाइपवाले फौजी ने फर्श का एक तख्ता उलटा, तहखाने में भाका और मिर हिलाते हुए कहा

“शर्म नहीं आती आप लोगों को ? कह रहे थे कि अनाज का एक दाना भी नहीं है और तहखाने में ऊपर तक गेहूँ भरा पड़ा है।”

पादरी की बीवी ने मीशका को ऐसी काटती नज़र से देखा कि उसका कलेजा काप उठा। उसका मन हुआ कि भटपट भाग ले घर को। वह उठा और आगन में आया। पादरी की बीवी भी लपकती हुई उसके पीछे-पीछे झुंझी में पहुँची और उस पर झपटी। मीशका को बालों में पकड़कर वह उसे फर्श पर घसीटने लगी।

मीशका ने बड़ी मुश्किल में अपने बाल छुड़वाये और जान फोड़कर घर की तरफ भागा। आसू थे कि भंडी बनकर बरस रहे थे। मा को उसने रो-रोकर सारा हाल सुनाया और वह तो बस मिर थामकर रह गयी

‘हाथ रे, क्या करूँ मैं तेरा ? दूर हो जा मेरी आँखों के सामने मे वरना मार मारकर नटनी बना दूँगी।’

इस दिन के बाद तो यह नियम बन गया कि जब कोई मीशका का अपमान करता, वह खत्ती में जा घुसता। पत्थर हटाता, बरडाँक के पत्ते में चित्र निकालता, आसूओं में चित्र को भिगोता और लेनिन को अपना दुख-दर्द सुनाता, अपमान करनेवाले के खिलाफ शिकवा-शिकायत करता।

इसी तरह एक मन्ताह बीत गया। मीशका को ऊँच अनुभव होने लगी। साथ खेलनेवाला कोई नहीं था। अडाम-पड़ोस के बच्चे कन्ती काटते। “हरामी” के साथ अब बड़ों में सुनी-सुनायी एक उपाधि और जोड़ दी गयी थी। लड़के पीछ में आवाजे कमते

“अरे ओ कम्युनिस्ट ! ओ मडे अडे, इधर देख।”

एक दिन क्या हुआ कि मीशका साभ गहराने के पहले तालाब

से घर लौटा। वह अभी घर के भीतर नहीं पहुंचा था कि बाप को तीखी आवाज में कुछ कहते सुना। मा गिड़गिड़ाती हुई उसी तरह विलाप कर रही थी जैसे कि किसी के मर जाने पर किया जाता है। मीस्का ने दरवाजे में दाखिल होते ही देखा कि बाप अपना फ़ौजी कोट तह कर रहा है और बड़े बूट कम रहा है।

“बापू, तुम कहा चले?”

बाप हस दिया। उसने कहा:

“बेटा, तू अपनी मां को समझा-बूझा... इसके रोने-धोने से मेरा कलेजा फटा जा रहा है। मैं लड़ाई पर जा रहा हूँ और यह मुझसे चिपकी जा रही है।”

“मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा, बापू!”

पिता ने पेट की कमी और फ़ीतोवानी टोपी पहनी।

“तू भी कमाल का छोकरा है! एक ही साथ तो हम दोनों को नहीं जाना चाहिये घर से! मैं लौट आऊंगा तब तुम जाना, वरना जब फसल पकेगी तो कौन काटेगा? मां तुम्हारी घर के काम-काज में उलझी रहती है और दादा हो गये बूढ़े...”

पिता से विदा होते समय मीस्का ने आसू अन्दर ही अन्दर पी लिये। इतना ही नहीं, मुस्करा तक दिया। मा, पहले की भांति, बाप की गर्दन से लिपट गयी। बाप ने जबर्दस्ती उससे अपने को आजाद किया। दादा ने केवल आह भरी। लड़ाई पर जानेवाले को चूमने हुए उन्होंने उसके कान में फुमफुमाकर कहा।

“फ़ोमा, मेरे प्यारे बेटे! अच्छा हों कि तुम न जाओ! तुम्हारे बिना, शायद तुम्हारे बिना भी काम चल जाये! अगर तुम मारे गये तो हम कहीं के न रहेंगे!..”

“हटाओ बापू.. यह बात ठीक नहीं है। अगर सभी बीवियों की गोद में छिपकर बैठे रहेंगे तो हमारी सत्ता की रक्षा कौन करेगा?”

“अगर ऐसा ही ठीक समझते हो तो जाओ।”

दादा ने मुंह दूसरी ओर किया और उनके-से आसू पोंछ डाले। घर के लोग बाप को कार्यकारिणी के दफ्तर तक पहुंचाने गये। वहां आगन में कोई बीस आदमी जमा थे, बन्दूकें लिये हुए। मीस्का के बाप ने भी बन्दूक ली और आखिरी बार मीस्का को चूमा। फिर बाकी

लोगों के साथ मड़क पर कदम बढ़ाता हुआ वह भी गांव के बाहर की ओर चला गया।

मीशका दादा के साथ घर लौटा। उसकी मां मुश्किल से अपने को सम्भालती और लडखड़ाती हुई पीछे-पीछे चली आ रही थी। गांव में कहीं-कहीं कुत्ते भौंक रहे थे, कहीं-कहीं रोगनी नज़र आ रही थी। गांव पर गत का अंधेरा इस तरह छाया जा रहा था मानो किसी बुढ़िया ने काली ओढ़नी ओढ़ ली हो। बूढ़ा-बांदा हो रही थी, गांव से कुछ दूर स्तेपी में बिजली कौंध-कौंध उठती थी और रह-रहकर बादलों की गरज सुनायी पड़ती थी।

वे घर के निकट पहुंच गये। मीशका रास्ते भर चुप रहा, मगर अब उसने पूछा।

“दादा, बापू किससे लड़ने गये हैं?”

“अरे, छोड़ भी मेरा पिंड!”

“दादा!”

“क्या है?”

“किससे लड़ेंगे मेरे बापू?”

दादा ने फाटक की चटखनी लगाते हुए जवाब दिया •

“हमारे गांव के पास कुछ दुष्ट लोगों ने मुसीबत कर रखी है। लोग उसे ‘गिरोह’ बताते हैं, मगर मैं तो यही समझता हूं कि कोई डाकू-लुटेरे होंगे... तुम्हारा बाप उन्हीं से लड़ने गया है।”

“बहुत है क्या वे लोग दादा?”

“सुना है कि कोई दो सौ है। अच्छा अब जाकर सो जा। तुम्हें क्या लेना-देना है इन बातों से!”

गत को आवाजों के शोर में मीशका की आंख खुल गयी। उसने अपना बिस्तर टटोला तो दादा को गायब पाया।

“दादा, कहां हो तुम?”

“चुपचाप पड़ा रह और सो जा!”

मीशका उठा और अंधेरे में रास्ता टटोलता हुआ खिड़की तक जा पहुंचा। दादा सिर्फ जाघिया पहने हुए, बेच पर बैठे थे, सिर उनका खिड़की से बाहर निकला हुआ था और वे बहुत गौर में आवाजें सुन रहे थे। मीशका ने भी कान लगा दिये। रात के गहरे सन्नाटे में उसे गांव के परे बार-बार गोली चलने की आवाज साफ सुनायी दी। उसके

बाद तो गोलियों की बौछार ही लग गयी।

“तड़ाक ! तड़-तड़-तड़ ! तड़-तड़-तड़ाक !”

ऐसा लगता था मानो कोई कीलें ठोक रहा हो।

मीशका का दिल दहल उठा। वह दादा से जा लिपटा और उसने पूछा :

“यह मेरे बापू गोली चला रहे हैं न ?”

दादा चुप हो गये और मां फिर से विलाप करने लगी।

पौ फटने तक गोलिया चलती रही और उसके बाद सन्नाटा हो गया। मीशका वही बेंच पर मिमट-मिमटाकर लेट गया और बेचैन, बोझल और दुख की नीद में गया। उजाला हुआ तो कार्यकारिणी समिति के कार्यालय की ओर घुड़मवारों का एक दल तेज़ी से आता दिखायी दिया। दादा ने मीशका को जगाया और खुद बाहर भागे।

कार्यकारिणी समिति के आगन में धुएँ का खम्भा-सा उठा और आग की लपलपाती हुई लपटें इमारतों की ओर बढ़ चली। मड़कों पर घुड़मवार घोड़े कुदाते फिर रहे थे। एक घुड़मवार अहाते के पास आया और उसने पुकारकर दादा से पूछा :

“बूढ़े, घोड़ा है ?”

“हां है ...”

“जोतकर गांव के बाहर चला जा ! वहां भाड़ियों में तुम्हारे कम्युनिस्ट पड़े हैं ! जा, ले आ लादकर ! सगे-सम्बन्धियों से कह देना उनकी मिट्टी ठिकाने लगा लें !”

दादा ने भटपट घोड़े को जोता, कांपते हाथों से लगामें सम्भाली और तेज़ी से अहाते के बाहर निकल गये।

गांव में तो हाय-दुहाई मच गयी। डाकू घोड़ों में उतरकर खलिहानों से सूखी घाम निकाल लाये, भेड़-बक़रिया काटने लगे। एक डाकू अनी-सिमोव्ना के अहाते के करीब घोड़े से नीचे कूदा और घर में जा घुसा। मीशका ने अनीसिमोव्ना को भर्राई आवाज़ में रोते-कलपते सुना। डाकू तलवार लिये हुए धड़ाधड़ बाहर आया, मीढ़ियों पर बैठ गया और उसने जूते उतारे। उसने अनीसिमोव्ना के फूलदार और पर्वों के अवसरों पर पहने जानेवाले शॉल के दो टुकड़े किये, अपनी गन्दी पट्टियां उतारीं और उनकी जगह उन्हें अपनी टांगों पर लपेट लिया।

मीशका कोठे में जाकर बिस्तर पर लेट गया। उसने सिर तकिये

मे गड़ा दिया और तभी उठा जब फाटक चरमग उठा। भागा हुआ दरवाजे पर गया। देखा कि दादा की दाढ़ी आमुओ से तर है और वह घोड़े को अहाते के अन्दर ला रहे है।

पीछे छकड़े मे एक आदमी नगे पाव पड़ा था। उसकी बाहे फैली हुई थी, छकड़ा जब हिचकोले खाता तो उसका मिर दाये-बाये टकराता और छकड़े के तन्तो पर गाढ़ा-गाढ़ा काला खून गिस रहा था

मीशका कापते पैरो से छकड़े के करीब गया। उसने चेहरे पर नजर डाली जो तलवार के वारो से बिल्कुल टुकड़े-टुकड़े हुआ पड़ा था। दात बाहर निकले हुए थे, हड्डी समेत कटा हुआ गाल लटक रहा था और बाहर को निकली, खून से लथपथ आख पर हिलती-डुलती हुई बड़ी-सी हरी मक्खी बैठी थी।

मीशका नहीं पहचान पाया कि वह लाश किसकी है। वह डर से कुछ कुछ काप रहा था। उसने उस व्यक्ति की छाती को देखा, खून में तर-बतर नीली और सफेद धारियोवाली कमीज की ओर उसका ध्यान गया और वह इस तरह काप उठा माना किसी ने पीछे से उसकी टांगो पर कमकर चोट की हो। फटी-फटी आखो मे उसने एक बार फिर उस निश्चल और म्याह पड़े हुए चेहरे को देखा और उछलकर छकड़े पर जा पहुँचा।

‘उठो बापू! उठो मेर प्यारे बापू! वह छकड़े मे नीचे गिर पड़ा उसने भाग जाना चाहा मगर टांगे जवाब दे गयी। हाथो-पैरो के बल रेगता हुआ वह बड़ी मुश्किल मे घर के दरवाजे तक पहुँचा और लुढ़क गया।

* * *

दादा की आखे अन्दर को घस गयी थी। मिर हिलता और हिचकोले खा रहा था, होठ हिलते-डुलत थे मगर उनमे कोई आवाज नहीं निकलती थी।

दादा देर तक चुपचाप मीशका का सिर सहलाते रहे। फिर बिस्तर पर औधी पड़ी हुई मा की ओर देखते हुए उन्होने फुसफुसाकर मीशका से कहा

‘चल बेटे, बाहर अहाते मे चले ’

दादा ने मीशका का हाथ थामा और दगवाजे की ओर चले। कोठे का दगवाजा लाघते हुए, मीशका ने आखे मूद ली, वह मिहर उठा। कोठे में मेज पर बाप की लाश पड़ी थी, गुमसुम और गम्भीर। उसका खून धोकर साफ किया जा चुका था, मगर मीशका अपनी आखों के सामने शीशे की तरह पथगयी और खून में सनी वही आख देख रहा था जिम पर बड़ी हरी मक्खी बैठी थी।

दादा ने काफी देर लगाकर कुण में रम्मी खोली, फिर अम्तबल की ओर गये और घोड़े को बाहर लाये। न जाने क्यों अपनी आम्तीनों में उन्होंने घोड़े के मुह में भाग पोछी। फिर उसे लगाम पढ़नायी और कान लगाकर बाहर की आवाजे सुनते रहे। गाव में खूब शोर मचा हुआ था, ठहाके गूज रहे थे। अहाते के करीब में दो घुडसवार गुजरे, अंधेरे में उनकी मिगरेटों की चिगागिया चमकी और उनकी यह बातचीत सुनायी पड़ी

“क्यों, कैसी रही, करवा दी न हमने भूखों में उनकी पिटायी। अब हमरी दुनिया में पहुँचकर याद करेंगे कि लोगों में अनाज छीनने का क्या नतीजा होता है।”

घोड़ों की टापों की आवाज जब बिल्कुल बन्द हो गयी तो दादा न मीशका के कान में धीरे में कहा

‘देख बेटे मैं हूँ बड़ा आदमी घोड़े की सवारी मेरे ब्रम की बात नहीं तुम्हें उस पर चढ़ा देता हूँ, तू भगवान का नाम लेकर प्रोनीन गाव को चला जा रम्मा मैं तुम्हें दिखा दूँगा वहाँ फौज के वें जवान पड़े होंगे जो बैड बजाते हैं हमारे गाव में गुजरे थे उनसे कहना कि तुरन्त हमारे गाव की ओर चले आये—यहाँ डाकुओं का गिरोह है। समझ गये?’

मीशका ने चुपचाप सिर हिलाकर हामी भरी। दादा ने मीशका को घाँडे पर बिठाया रम्मी में दोनों पाव जीन के साथ बांध दिये ताकि वह गिर न पड़े और खलिहान, तालाब और डाकुओं के अड्डे के करीब में होते हुए, घोड़े को स्नेपी में लाये।

“देख बेटा, उस टीले की तरफ घाटी चली गयी है, उसके साथ-साथ घोड़ा चलाते जाना, इधर-उधर नहीं मुड़ना। सीधा गाव में जा पहुँचेगा। अच्छा अब चल दे मेरे लाल।”

दादा ने मीशका को चूमा और घोड़े को धीरे में थपथपाया।

रात चादनी थी, उजली-उजली थी। घोड़ा हल्के कदमों से दौड़ने और नथने फुलाने लगा। पीठ के बोझ को हल्का महसूस करते हुए वह सम्भालकर कदम रखने लगा। मीशका उसे लगाम छुआता जाता था, गर्दन थपथपाता था और घबको से उछल-उछल जाता था।

अनाज की हरी घनी बालों के बीच बटेर मस्ती में चहक रहे थे। घाटी की तह में भरने का पानी अपना भर-भर का गीत अलाप रहा था। हवा में कुछ-कुछ सिहरन थी।

स्तेपी में अकेले होने से मीशका को डर लगने लगा। उसने दोनों बाहे घोड़े की गर्म-गर्म गर्दन के गिर्द डाल दी और उसका ठिठुरता-कापता छोटा बदन घोड़े से चिपक गया।

घाटी ऊपर की ओर जाती, नीचे ढलती और फिर ऊपर की ओर ऊंची उठती। मीशका को पीछे की ओर देखने से डर लगता। वह कुछ फुमफुसाता हुआ यह प्रयत्न कर रहा था कि उसके दिमाग में किसी तरह का विचार न आये। सन्नाटा उसके कानों में साय-साय बज रहा था, उसने आंखें मूंद रखी थी।

घोड़े ने मिर झटका नथने फुलाये और कदम तेज कर दिये। मीशका ने जरा-सी आंख खोलकर नीचे की ओर देखा। पहाड़ी के दामन में उसे मद्धिम रेशमिया दिखायी दी। हवा के झोंकों के साथ कुत्तों के भौकने की आवाज भी सुनायी दी।

घड़ी भर में ख़ुशी के मारे मीशका के दिल में गर्मी आ गयी। उसने घोड़े को पैर से एड लगायी और टिटकारी भरी

“टिन-ट-ट-ट।”

कुत्तों के भौकने की आवाज निकट आ गयी। टीले पर पवनचक्की के पखों की धुधली-सी रेखाएँ नजर आयीं।

“कौन जा रहा है यह?” पवनचक्की से आवाज आयी।

मीशका ने फिर चुपचाप घोड़े से आगे बढ़ते रहने का आग्रह किया। ऊघते हुए गाव में मुर्गों की बाग सुनायी दी।

“रुक जाओ। कौन जा रहा है। गोली मार दूंगा।”

मीशका डर गया, उसने लगामें खींची। मगर घोड़े को करीब ही घोड़ों की उपस्थिति की गंध आ गयी, वह जोर से हिनहिनाया और सवार की परवाह न करते हुए मरपट दौड़ चला।

“ठहरो।”

पवनचक्की के करीब से गोलियों की तड़तड़ सुनायी दी। मीस्का की चीख घोड़ों की टापों की आवाज़ में डूब गयी। उसके घोड़े का दम फूल गया, वह पिछली टांगों के बल खड़ा हुआ और दायें पहलू ढह पड़ा।

मीस्का अब अपनी टांग में बहुत ही जोर का, जानलेवा दर्द महसूस कर रहा था। चीख उसके होंठों पर जमकर रह गयी। घोड़ा मीस्का की टांग पर अधिकाधिक बोझ डालता गया।

घोड़ों की टापें करीब आयी। तलवारें बाधे हुए दो सवार करीब पहुंचे, घोड़ों से कूदे और मीस्का पर झुक गये।

“हाय ग़ज़ब हो गया, यह तो बेचारा कोई छोकरा है!..”

“कही जान तो नहीं ले ली?!”

किमी ने क़मीज़ के अन्दर हाथ ले जाकर मीस्का के दिल की धड़कन जाची। मीस्का के मुंह के पाम तम्बाकू के लहरे आ रहे थे। किमी ने खुश होते हुए कहा:

“ज़िन्दा है!.. घोड़े ने कही टांग न कुचल डाली हो?..”

बेहोश होता हुआ मीस्का फुमफुमाया:

“गाव में गिरोह है.. बापू को मार डाला.. समिति का कार्यालय जला दिया, दादा ने कहा है कि आप फ़ौरन वहां पहुंचें!”

मीस्का की धुधलानी हुई आंखों के सामने रंगीन चक्कर-से घूमने लगे

अपने बापू को उसने सामने से गुज़रते देखा, लाल मूछो को मरोड़ते और हंमते हुए। मगर उसकी आंख पर एक बड़ी-सी भूलती हुई हरी मक्खी बैठी थी। फिर दादा सामने आये, सिर हिलाते और बिगड़ते हुए। इसके बाद मा दिखायी पड़ी। मब के बाद उसके सामने उभरा छोटे क़द का चौड़े माथेवाला व्यक्ति जिमका हाथ उठा था। उसका हाथ सीधे मीस्का की ओर इशारा कर रहा था।

“साथी लेनिन!..” मीस्का अपनी फटी-सी आवाज़ में पुकार उठा। जोर लगाकर उसने सिर ऊपर उठाया, वह मुस्कराया—और उसने अपने दोनों हाथ लेनिन की ओर बढ़ा दिये।

नीलाभ स्तेपी

मैं और जखार दादा दोन के किनारे धूप में झुलसे टीले पर जगली बेर की छाया में लेटे हैं। आकाश में बादलों की घुघगली शृंखला के पाम कत्थई चील मडरा रही है। चिड़ियों की बीट में चितकबरी बेर की पत्तियों में हमें कोई राहत नहीं मिल रही है। कड़ाके की गर्मी से कान भन्ना रहे हैं। नीचे मथर-गति में बहती दोन को या पैरों के पास पड़े तरबूज के सूखे-पिचके छिलकों को देखकर मुँह में लसीली राल भर आती है और इस राल को थूकने में भी आलस्य आता है।

घाटी में सूखती झील के पाम भेड़ों का जमघट है। थकी-मादी वे दुबे मटका रही हैं, धूल के कारण जोर-जोर से छीक रही हैं। बध के पास हट्टा-कट्टा मेमना पिछली टांगों पर खड़ा भदमैली भेड़ के थन चूम रहा है। कभी-कभी वह मा के थन को मिर में दबाता है, भेड़ कराह रही है, दोहरी होकर मेमने को दूध पिला रही है, और मुँह लगाता है कि उसकी आखों में व्यथा का भाव है।

जखार दादा मेरे बगल में बैठे हैं। बुनी हुई ऊनी कमीज को उतार-कर वह आखें मिचमिचाते हुए जोड़ों और सिलवटों में टटोल-टटोलकर कुछ ढूँढ़ रहे हैं। दादा की उम्र एक कम पूरे सत्तर है। नगी पीठ भुर्गियों के विचित्र बेल-बूटों से ढकी है, खाल के नीचे से पखौड़ों की पैनी हड्डियाँ उभरी हुई हैं। पर ग्लेटी भौहोवाली आखें—नीली और युवा हैं, दृष्टि चपल और पैनी हैं।

कमीज में मिले चिल्लड़ को वह बड़ी मुश्किल में अपनी कापती, रूखी उगलियों में पकड़े है, वह उसे सावधानी से, बड़े प्यार से पकड़े हुए है, फिर उसे अपने से दूर, ज़मीन पर रखकर उन्होंने हवा में मलीब का निशान बनाया और बुदबुदाये

“रेग जा यहा से दूर, जानवर ! शायद जीना चाहता है न ?”

क्या ? वही तो मैं कह रहा हूँ देखो तो मही जी भरकर खून चूम लिया जमींदार की तरह ”

कराहकर दादा ने कमीज चढ़ा ली और पीछे की ओर मिर झुकाकर लकड़ी की बोतल से गट-गट गुनगुना पानी पीने लगे। हर घूट के साथ टेढ़ा ऊपर खिसकता। ठोड़ी से गले तक दो मिलवटे लटकी है, दाढ़ी पर बूंदें लुढ़क रही हैं, अधखुली केमरी पलकों में छनकर धूप लाल हो गयी है।

बोतल में डाट लगाने हुए उन्होंने मेरी ओर तिरछी नजर डाली, नजरे मिलने पर उन्होंने होठ चबाये और स्नेपी को देखने लगे। घाटी के उस पार धूध की तरह मरीचिका व्याप्त है, तपनी धरती पर बहती हवा में थंडम के मधु की मादक गंध बसी है। दादा ने चपचापा गड्गियों की हकनी एक तरफ उठाकर रखी और धूम्रपान में पीली उगली में दशाग करके बोले

‘ देख रहे हो इस बीहड़ के उस पार सफेदों की फुर्तगिया ? तामीलिन खानदान की जागीर — तोपोल्योव्का है। वहीं पास ही मे किमानो की बस्ती तोपोल्योव्का है पहले वे भू-दास थे। मेरा बाप अपनी ज़िदगी के आखिरी दिन तक जागीरदार का कोचवान रहा। जब मैं छोकरा था पिता ने मुझे बताया था कि मालिक येंग्राफ तोमीलिन ने पालतू सारस के बदले में उन्हें पड़ोसी जमींदार से लिया था। पिता की मौत के बाद मैं उनकी जगह कोचवान का काम करने लगा। मालिक की उम्र तब साठ के करीब थी। बड़ा हट्टा-कट्टा था। जवानी में जार की गारद में था फिर नौकरी छोड़कर दोन के इलाके में बाकी दिन गुजारने आ गया। दोन के इलाके में उनकी जमीन कज्जाको ने दबा ली और सरकार ने मालिक को सरातोव प्रांत में तीन हजार देस्यातीना * जमीन बख्श दी। यह जमीन वह सरातोव के किमानो को बटाई पर चढ़ाता था और खुद तोपोल्योव्का में रहता था।

“ बड़ा अजीब आदमी था। हमेशा बढिया ऊनी अगरखा पहनकर और कटार लटकाकर घूमता था। जब कही जाना होता तो जैसे ही हम तोपोल्योव्का के बाहर निकलने हुकम देता

* देस्यातीना — पुरानी रूसी माप। १ देस्यातीना लगभग २७ एकड़ के बराबर था। — स०

“ ‘दौड़ा, हरामी!’ ”

“ मैं चाबुक चलाता। घोड़े सरपट दौड़ने लगते, तेज़ हवा आंखों से बहते पानी को न सुखा पाती। रास्ता ऊबड़-खाबड़ होता—बमन की बाढ़ से वह जगह-जगह कट जाता—अगले पहिये तो फटाक से निकल जाते, पर पिछले धम्म से उछलते। आधा मील आगे चले जाते तो मालिक चिल्लाता: ‘मोड़ पीछे!’ मैं उल्टा मोड़ता और पूरी रफ़्तार से उस कटाव की ओर दौड़ पड़ते... दो-तीन बार उस मरदुए कटाव को पार करते, जब तक कमानी न टूट जाती या बग़्घी के पहिये न उखड़ जाते। तब मेरा मालिक बड़बड़ाकर उठता और पैदल चल पड़ता, और मैं पीछे-पीछे लगाम थामे घोड़ों को लिये जाता। मनबहलाव का उसका एक तरीक़ा यह था। जागीर में हम बाहर निकलते और वह मेरे पास कोचवान की सीट पर आ बैठता, मेरे हाथ से चाबुक छीनकर कहता. ‘बीचवाले को दौड़ा!...’ मैं बीचवाले घोड़े को दौड़ाता और वह बग़लवाले पर चाबुक चलाता। बग़्घी में तीन घोड़े होते थे, बग़लों में दोन की खालिस नसल के घोड़े जोते जाते थे, वे साप की तरह बल खाकर ज़मीन पर सिर लटका देते थे।

“ और वह उनमें से किसी एक पर चाबुक चलाता, बिचारा भाग से ढक जाता... फिर मालिक कटार निकालता, और भुक्कर, जैसे बाल को उम्नरे से काटने है वैसे ही जोत काट देता। घोड़ा दो-एक फ़र्लांग तक ताबड़तोड़ दौड़ा जाता, और धम्म में ढह जाता, नथुनों से खून की धारा फूट पड़ती—हो गया काम तमाम! दूसरे का भी यही हाल होता. बीचवाला घोड़ा भी जब तक निढाल नहीं हो जाता तब तक दौड़ता रहता, मालिक को क्या परवाह, बस उसका मन बहल जाना, गालो पर लाली छा जाती।

“ कभी भी आखिर तक सवारी में नहीं गया: या तो बग़्घी तुड़वा देता या घोड़ों को मरवा देता, और बाद में पैदल जाता... बड़े मजे का था मालिक... बीती बात हो गयी है, भगवान हमारा फैसला करे... उसे मेरी लुगाई का चस्का पड़ गया, वह घर में नौकरानी थी। वह नौकरों के कमरे में दौड़ी आती, शमीज़ चिथड़े-चिथड़े होती—फूट-फूटकर रोती। देखता क्या हूँ, छातियाँ उसकी दांतों से कटी हुई हैं, खाल चिथड़ों की तरह लटकी है... एक बार की बात है रात को मालिक ने मुझे कंपाउंडर को बुलाने भेजा। मैं तो जानता था कि

इशकी कोई जरूरत नहीं है, समझ गया कि बात क्या है, स्तेपी में रात घिरने का इतजार करके लौट आया। हवेली में खलिहान की तरफ से घुसा, घोड़ो को बाग में छोड़कर मैंने चाबुक सभाला और अपनी कोठरी की ओर चल पड़ा। दरवाजा खोला, दियासलाई जान-बूझकर नहीं जलायी, सुनता हूँ कि पलंग पर उथल-पुथल हो रही है जैसा ही मेरा मालिक उठा, मैंने उसे चाबुक मारा, और मेरे चाबुक के सिरे में सीसा भरा था। सुनता हूँ कि वह खिड़की की ओर रास्ता बना रहा है, मैंने अंधेरे में एक बार और उसके माथे पर वार किया। वह खिड़की में कूदकर भाग गया, मैंने लुगाई की थोड़ी पिटाई की और सो गया। कोई पांचक दिन बाद हम कस्बे को जा रहे थे, मैं बगधी पर धुस्सा तान रहा था, मालिक ने मेरा चाबुक उठाया और हाथों में घुमा-घुमाकर उसके सिरे की जांच करने लगा, जब उसने सीसे को टटोला तो पूछने लगा

“कुत्ते की औलाद, तूने चाबुक में सीसा क्यों मी रखा है?”

“आप ही ने तो हुक्म दिया था” मैंने जवाब दिया।

“वह कुछ नहीं बोला। सारे रास्ते पहले कटाव तक दात भीचकर सीटी बजाता रहा, मैं पल भर के लिये मुड़ा तो देखता हूँ बालो ने माथा ढक रखा है और छज्जेदार टापी काफी भुकी हुई है।

“दो-एक माल बाद उसे फालिज पड़ गया। उसे उस्त-मेद्देदिल्मा ले जाया गया, ढेरो डाक्टर बुलवाये गये और वह फर्ग पर पड़ा था, शरीर मारा काला पड़ गया। जब से नोटो की गर्डिया निकालकर पटक दी, गला फाड़कर चिल्लाने लगा ‘इलाज करो, हरामियो!’ सब दे दूंगा तुम्हें।

“बस पैमे के साथ भगवान को प्यारा हो गया। बेटा वारिस रह गया, फौजी अफसर था। जब छोटा था तो जिदा पिल्लो की खाल उतारकर उन्हें छोड़ देता था। बाप पर गया था। पर जब बड़ा हो गया तो ऐसी आदतें छोड़ दी। लम्बे कद का पतला-दुबला था, बचपन से ही लुगाइयो की तरह उसकी आँखों के नीचे काले गड्डे थे नाक पर सुनहरा चश्मा चढ़ाये रहता था, चश्मा फीतेवाला था। जर्मनी से लड़ाई के वक्त साइबेरिया में युद्धबंदियों का अफसर था, और तस्ता-पन्ट के बाद हमारे इलाके में आ गया। तब तक मेरे पोते बड़े हो चुके थे, बेटा तो भगवान को प्यारा हो गया था। बड़े पोते

मेम्योन की गादी कर दी थी और अनिकेई अभी मटरगश्ती कर रहा था। बस उनके साथ रहता, अपनी जिदगी के दिन गुजार रहा था बसत में फिर मत्ता पलट गयी। हमारे किसानों ने जवान मालिक को जागीर से निकाल दिया, उसी दिन मभा में मेम्योन किसानों को जागीरदार की जमीन आपस में बांटने और उसका माल-अमबाब अपने-अपने घर ले जाने के लिये मनाने लगा। बस यही कर दिया गया सामान घरों में चला गया जमीन बांट दी गयी और जुताई शुरू हो गयी। एक हफ्ते बाद शायद इसमें भी जल्दी, अफवाह उड़ती-उड़ती पहुँची कि जागीरदार कज्जाको के साथ हमारी बस्ती में मार-काट करने आ रहा है। हमने फौरन दो छकड़े स्टेशन पर भेज दिये हथियार लाने के लिये। ईस्टर के हफ्ते लाल गार्ड में हथियार ले आये, तोपोल्योव्का के बाहर खदके खोद ली गयी। जागीरदार के जोहड़ तक खोद ची।

“उधर देख रहे हो जहाँ थाडम चारों ओर उग रहा है दस बीहड़ की दूमरी ओर ही तोपोल्योव्कावाले खदको में लेट गये। वहाँ मेरे मेम्योन और अनिकेई भी थे। सुबह में लुगाटया उन्हें खाना-पीना दे आयी थी जैसे ही मूरज चढ़ा-टीले पर घुड़सवार नजर आये। छिनरकर उन्होंने चढ़ाई की तैयारी की, तलवारे चमकने लगी। खलिहान में मैंने देखा कि आगेवाले ने जो मफेद घोड़े पर सवार था तलवार हिलायी और घुड़सवार शोर-शराबे के साथ टीले में नीचे आने लगे। मफेद घोड़े की चाल से मैंने जागीरदार के घोड़े को पहचान लिया और घोड़े में सवार को भी पहचान लिया दो बार हमारे लोगों ने उन्हें खदेड़ दिया, पर तीमरी बार कज्जाको ने घमककर पीछे से हमला किया, चालाकी में काम लेकर और ऐसी मार-काट हुई दिन ढलते लड़ाई खत्म हो गयी। मैं घर में बाहर निकला, देखता हूँ घुड़सवार हवेली की ओर लोगों के झुंड को हाककर ले जा रहे हैं। मैंने लाठी उठायी और उस ओर चल पड़ा।

“अहाने में हमारे तोपोल्योव्कावाले झुंड में मिमटकर खड़े थे, वैसे ही जैसे ये भेड़े। चारों ओर कज्जाक थे मैंने पास जाकर पूछा

“भाइयो, मेरे पोते कहा है?”

“दोनों ने मुझे भीड़ में पुकारा। हमने आपस में कुछ देर बात-चीत की, देखता हूँ कि जागीरदार ड्योढी से निकला। मुझे देखकर चिल्लाया

“‘अरे, यह तुम हो जखार दादा?’

“‘जी हुआर।’

“‘क्यों आये हो?’

“इयोडी के पास जाकर मैं घुटनों के बल खड़ा हो गया।

“‘पोतो को मुसीबत से बचाने आया हू। मालिक, दया करो। जिदगी भर आपके पिता जी की सेवा की, भगवान उनकी आत्मा को शांति दे, मालिक, मेरी लगन को याद करो मेरे बूढ़ापे का लिहाज करो।’

“वह बोला

“‘देखो, जखार दादा, मैं अपने पिता जी की सेवा के लिये तुम्हारा बहुत लिहाज करता हू, पर तुम्हारे पांतो को नहीं छोड़ सकता। वे असली बागी हैं। दादा समझा लो अपने मन को।’

‘मैं उसकी टांगों से टिपट गया, इयोडी में रेंगने लगा।

“‘मालिक, दया कर। मेरे प्यारे, याद कर कैसे दादा जखार मेरी खिदमत करता था, रहम कर, मेरे सेम्योन का तो दूधपीता बच्चा है।’

“उसने सूशबूदार सिगरेट सुलगायी, धुआं छोड़कर बोला

“‘जा, उन हरामजादों से कह कि मेरे कमरे में आये, अगर माफी मांगेंगे तो ठीक है, पिता जी की याद की खातिर उन्हें कोड़े लगाकर अपने दमने में भर्ती कर लूंगा। क्या पता, अपनी लगन से वे अपने गर्मनाक कुमूर का पछतावा कर ले।

“‘मैं दौड़ा-दौड़ा अहाते में गया, पांतो को बतलाया और आम्नीनो से पकड़कर उन्हें खींचने लगा

“‘जाओ, बेवकूफो, जब तक माफ न कर दे जमीन पर लेंटे रहना।’

“सेम्योन ने सिर तक नहीं उठाया। उकड़ बैठा तिनके से मिट्टी कुरेदता रहा। अनिकेई मुझे घूरता रहा और फिर चिल्लाकर बोला

“जा, अपने मालिक से कह दे कि जखार दादा जिदगी भर घुटनों के बल रेंगता रहा, और उसका बेटा भी, पर पोते अब यह नहीं चाहते। जाओ यही बता दो उसे।’

“‘नहीं जायेगा, कुतिया के पिल्ले?’

“‘नहीं जाऊंगा।’

“‘तेरे लिये, हरामी, जीने-मरने का मोल कौड़ी भर का है पर सेम्योन को कहां फंसा रहा है? अपनी लुगाई और बच्चे को किस पर छोड़ेगा?’

“देखता हूं कि सेम्योन के हाथ कांप उठे, चुपचाप तिनके से जमीन कुरेदता जा रहा है, न जाने क्या ढूंढ़ रहा है। बैल की तरह चुप है।

“‘जाओ दादा, हमें मत सताओ,’ अनिकेई ने मिन्नत की।

“‘नहीं जाऊंगा, शैतान की दुम! अगर कुछ हो गया तो सेम्योन की अनीमिया न जाने क्या कर बैठे!..’

“सेम्योन के हाथ का तिनका चट से टूट गया।

“मैं इंतज़ार करने लगा। पर वे फिर चुप।

“‘सेम्योन प्यारे, होश में आ, मेरे पालनहार! जा मालिक के पाम।’”

“‘आ गये होश में! नहीं जायेंगे! जा तू रेंगकर!’ गुम्से में अनिकेई बोला।

“मैंने कहा:

“‘तू मुझे यह उलाहना दे रहा है कि जागीरदार के सामने मैंने घुटने टेके? तो क्या हुआ, मैं बुढ़ा हूं. मां की चूची की जगह मैंने जागीरदार का चाबुक चूसा .. अपने पोतों के सामने घुटने टेकने हुए भी मैं नहीं शर्माऊंगा।’

“घुटनों के बल खड़ा हो गया, जमीन पर मिर पटक-पटककर बिनती करने लगा। किसानों ने मुंह फेर लिया मानो कुछ देख ही न रहे हो।

“‘जाओ दादा ... जाओ, नहीं तो मार डालूंगा!’ अनिकेई चिल्लाया, उसके होंठों पर भाग आ गया. आंखों में फंदे में फंसे भेड़िये की तरह वहशी चमक थी।

“मैं उल्टे पांव जागीरदार के पास गया। उसकी टांगों से लिपट गया, हाथ जड़ हो गये, मुंह से कोई बोल न निकले। उसने पूछा:

“‘कहां है पोते?’

“‘मालिक, डरते हैं ...’

“‘अच्छा, डरते हैं ...’ और कुछ नहीं बोला। बूट से सीधे मेरे मुंह में ठोकर मारी और ड्योढ़ी में चला गया।”

जखार दादा हांफने लगे, पल भर के लिये उनका चेहरा पिचककर सफ़ेद पड़ गया; बड़ी कठिनाई में उन्होंने बुढ़ापे की रुलाई को दबाया। सूखे होंठों को हथेली में पोंछकर उन्होंने मुंह मोड़ लिया। दूरी पर, भील के उस पार डैने तिरछे फैलाकर चील घास में टकरायी और झपट्टा मारकर उसने सफ़ेद छातीवाली सोहन चिड़िया को हवा में उठाया। बर्फ़ के गालों की तरह पर बिखर गये, घास पर पड़े वे ऐसे चमक रहे थे कि उनको देखकर आंखों में असहनीय चौंध होती। जखार दादा ने नाक सिनकी और उंगलियों को क़मीज़ के किनारे से पोंछकर फिर बताने लगे:

“मैं भी पीछे-पीछे ड्योढ़ी पर चला गया, देखता हूं कि सेम्यों की अनीसिया बच्चे को गोद में लिये दौड़ी आ रही है। इस चील की तरह ही वह पति से टकरायी और उसकी बांहों में लटक गयी...

“जागीरदार ने मार्जेंट-मेजर को बुलाया, सेम्योन और अनिकेई की ओर इशारा किया। मार्जेंट-मेजर और छह कज़ाक उन्हें पकड़कर हवेली के पिछवाड़े में ले चले। मैं पीछे-पीछे चल पड़ा और अनीसिया बच्चे को अहाते में पटककर जागीरदार के पीछे-पीछे रेंगने लगी। सेम्योन सबसे आगे तेज़ी से चल रहा था, अस्तबल के पाम जाकर वह बैठ गया।

“‘तू क्या कर रहा है?’ जागीरदार ने पूछा।

“‘बूट काट रहे हैं, नहीं सहा जा रहा।’—और मुस्कराने लगा।

“बूट उतारकर मुझे देते हुए बोला:

“‘दादा, जी भरकर पहनो। दाहरे तलवे के हैं, अच्छी हालत में हैं।’

“मैंने बूट ले लिये और फिर चल पड़े। चहारदीवारी के पाम पहुँचे। टहनियों से बनी बाड़ के पास उन्हें खड़ा कर दिया। कज़ाक बंदूकों में गोलियां भरने लगे, जागीरदार पास ही में खड़ा छोटी-सी कैची से नाखून काट रहा था, उसका हाथ गोरा-चिट्ठा था। मैं उससे बोला:

“‘मालिक, इन्हें कपड़े उतारने दीजिये। कपड़े अच्छे-खासे हैं, हम ग़रीबों के काम आ जायेंगे।’

“‘उतारने दो।’

“अनिकेई ने पतलून उतारी, उसे उलटा करके बाड़ के छूटे पर

टाग दिया। जेब से तबाकू की थैली निकाली, सिगरेट जलायी, पैर चौड़े करके धुएँ के छल्ले छोड़ने लगा, बाड़ के पार थूकने लगा। सेम्योन ने पूरे कपड़े उतार डाले, सूती जाघिया तक, पर टोपी उतारना भूल गया—शायद मति मारी गयी। मेरे शरीर में कभी भुरभुरी फैल जाती, कभी आग-सी लगने लगती। अपना सिर छूता तो चश्मे के पानी की तरह ठंडा पसीना बहता मिलता। देखता हूँ—दोनों पास-पास खड़े हैं। सेम्योन की पूरी छाती घने बालों से ढकी थी, नग-धडंग, पर सिर पर टोपी है। अनीसिया अपने पति को बिल्कुल नगा, सिर्फ टोपी पहने देखकर, दौड़कर उससे चिपट गयी जैसे बेल पेड़ से लिपट जाती है। सेम्योन उसे धक्का देकर हटाने लगा।

“‘जा यहाँ से, छिनाल।’ होश में आ, यहाँ इतने लोग हैं। क्या सूझी है तुम्हें, देखती नहीं कि मैं एकदम नगा हूँ। शर्म आती है।’

“अनीसिया ने अपने बाल बिखेर लिये और बस यही चिल्लाने लगी

“‘हम दोनों को गोली मार डालो।’

‘जागीरदार न कैची जेब में रखकर पूछा

“‘मारू गोली?’

“‘मार पापी।’

“जागीरदार से इस तरह बोली।

‘बाध दो इसे खसम के साथ, उसने हुक्म दिया।

“अनीसिया चेंती और पीछे हटने लगी पर बात बिगड़ चुकी थी। कज्जाकों ने हसते हुए उसे बागडोर में सेम्योन के साथ बाध दिया। पगली, जमीन पर ढह गयी और घरवाले को भी साथ गिरा दिया। जागीरदार ने पास जाकर दात भीचकर पूछा

“‘क्या बच्चे की खातिर माफी-वाफी नहीं मागना चाहता?’

“‘माग लूँगा,’ सेम्योन कराहकर बोला।

‘‘कोई बात नहीं, अब माग लेना भगवान से मुझसे मागने में देर कर दी।’

“जमीन पर पड़े-पड़े ही दोनों को गोली मार दी। अनिकेई गोली लगने पर लडखड़ाया पर फौरन गिरा नहीं। पहले घुटनों पर गिरा और फिर झटके में पीछे लेट गया, मुँह ऊपर था। जागीरदार

ने उसके पास जाकर बड़े स्नेह से पूछा :

“‘जीना चाहता है? अगर चाहता है तो माफ़ी मांग। चल, पचास कोड़े लगवाकर मोर्चे पर भेज दूंगा।’

“अनिकेई ने मुंह में थूक भरा पर थूकने की शक्ति नहीं बची थी, थूक बस दाढ़ी पर बहकर रह गया ... गुस्से से चेहरा फक पड़ गया, पर कर क्या पाता, तीन गोलियां उसे बीध चुकी थी ...

“‘इसे सड़क पर फेंक दो!’ जागीरदार ने आदेश दिया।

“कज़्ज़ाक उसे घसीटकर ले गये और बाड़ के ऊपर से सड़क पर फेंक दिया। उसी समय तोपोल्योव्का से कज़्ज़ाकों का रिसाला क्रस्बे को जा रहा था, उनके साथ दो तोपें भी थी। जागीरदार मुर्गे की तरह फुदककर बाड़ पर चढ़ गया और जोर से चिल्लाया :

“‘तोपवाले, घोड़ो को सगपट दौड़ाते ले जाओ, बचाकर मत जाना ! ...’

“मेरे रोंगटे खड़े हो गये। हाथों में सेम्योन के कपड़े और बूट पकड़े था, पर टांगें मुड़ी जा रही थी ... घोड़ों में दैवी शक्ति होती है, एक ने भी अनिकेई पर पैर नहीं रखा, कूदकर उसे पार कर रहे थे ... मैं टहनियों की बाड़ से चिपक गया, आंखें नहीं बंद कर पा रहा था, मुंह सूख गया था .. तोप के पहिये अनिकेई की टांगों पर चढ़े .. वे कुरकुरायी जैसे दांतों में पापड़, तिनको की तरह कुचल गयी ... सोचा अनिकेई भयंकर पीड़ा से मर जायेगा, पर वह चिल्लाया तक नहीं, उफ़ तक न निकली उसके मुंह से सिर पूरे जोर से ज़मीन से सटाये पड़ा हुआ था, मिट्टी भर-भरकर सड़क की मिट्टी मुह में ठूस रहा था ... मिट्टी चबाते हुए, जागीरदार को अपलक देख रहा था और आंखें उसकी स्पष्ट, निर्मल थी, आकाश की तरह ...

“जागीरदार तोमीलिन ने उस दिन बत्तीस जनों को गोलियों से भुनवा दिया। बस अकेला अनिकेई ही ज़िंदा बच गया अपने गर्व के कारण ...”

जख़ार दादा बड़ी देर तक बोतल से गटगट पानी पीते रहे। बदरंग होंठों को पोंछकर उन्होंने अनमने ढंग से क्रिस्सा पूरा किया :

“गयी-बीती बात हो चुकी है। बस खंदकें ही बची हैं जिनमें हमारे किसानों ने अपने लिये ज़मीन जीती। उनमें अब घास और झाड़ियां उगती हैं ... अनिकेई के पैर काट दिये गये, अब वह हाथों

के बल चलता है धड़ को जमीन पर घसीट-घसीटकर। देखने में बड़ा हसमुख है, सेम्यों के छोकरे के साथ दरवाजे की चौखट में रोज कद नापता है। छोकरा तो उससे लम्बा हो ही जायेगा सूरियों में गली में निकल जाता, लोग दोरो को नदी पर पानी पिलाने के लिये हाकते और वह हाथ उठाकर रास्ते में बैठ जाता बैल बिदककर नदी पर जमी बर्फ पर भाग जाते, वहाँ फिसल-फिसलकर बेहाल हो जाते और वह हसता रहता एक बार की बात है बसत में हमारे कम्यून का ट्रैक्टर खेत जोत रहा था, बस वह भी चल पड़ा उस तरफ। मैं वहीं पास में भेडे चरा रहा था। देखता क्या हूँ कि मेरा अनिकेई जुते खेत में रेंग रहा है। सोचने लगा कि वह क्या करना चाहता है? और देखता हूँ कि अनिकेई ने चारों ओर नजर दौड़ायी, आसपास कोई उसे दिखाई नहीं दिया, उसने जमीन से अपना चेहरा सटा लिया, हल के फाल से पलटे मिट्टी के लौदे में कमकर लिपट गया, उसे महलाने, चूमने लगा उसे पच्चीसवा लग गया है, पर जमीन कभी नहीं जोत पायेगा बस यही दुख उसे मताता है ”

धुधली साभ्र में नीलाभ स्तेपी ऊध रही थी, थाइम कं भडते फूलों से मधुमक्खिया उम दिन के लिये आखिरी बार पगग बटोर रही थी।

रुपहली और घनी फैदर घाम घमड के साथ अपनी कलगीदार बालिया हिला रही थी। भेडों का रेवड तोपोल्योव्का की ओर ढलान पर उतर रहा था। जम्बार दादा हकनी का सहारा लेते हुए चुपचाप चल रहे थे। धूल से ढके रास्ते पर चिन्हों की रेखाएँ दिखाई दे रही थी एक भेडिये का था—कदम-ब-कदम, फैले पजे, दूसरा—तोपोल्योव्का के ट्रैक्टर के धारीदार पहियों का।

जहाँ कच्चा रास्ता पुराने जमाने के, घास-फूस ढके गजमार्ग से मिलता है, चिन्ह भिन्न दिशाओं में जा रहे थे। भेडिये के जगली घास और काटेदार झाड़ियों की दुर्गम हरियाली में डूबे बीहड़ों की ओर मुड़ गये और रास्ते पर मिट्टी के तेल की बूँ छोड़ता एक गहरा और अनवरत चिन्ह रह गया।

बछेडा

दिन-दहाड़े, हरी मक्खियो से ढके लीद के ढेर के पाम, अगली टागो को पसारें, सिर के बल वह अपनी मा की कोख से निकला। जन्म लेते ही उसे किरच गोले के विस्फोट का नीला-सुरमई पुज दिखायी पड़ा। धमाके ने उसकी नम काया को मा की टागो के बीच पटक दिया। सत्रास—यहा, धरती पर यही उसकी प्रथम अनुभूति थी। अस्तबल की खपरैलवाली छत और जमीन पर ओलो की तरह, बदबूदार छरें बरसे। बछेडे की मा—त्रोफीम की लाखी घोड़ी—डर के मारे फुदकी और फिर हिनहिनाकर उसने पसीने से तर अपनी बगल को लीद के सुरक्षादायी ढेर पर टिका दिया।

तपिश भरी नीरबता मे मक्खियो की भिनभिनाहट साफ सुनायी पड रही थी। तोप की गोलाबारी के डर से कही घनी घाम मे दुबके मुर्गे ने डैने फडफडाकर, निमकोच परतु फटे-फटे स्वर मे बाग दी। घर के भीतर से घायल मशीनगनर का करुण ऋदन सुनायी पड रहा था। कभी-कभी वह तीखे, फटे स्वर मे चिल्लाता, बीच-बीच मे चुन-चुनकर गालिया जड देता। फुलवारी मे पोस्त के सिदूरी मखमली फूलो पर मधुमक्खिया गुजार कर रही थी। गाव के बाहर मैदान मे मशीनगन दनादन गोलिया बरमा रही थी, उसकी उत्साहवर्द्धक तड-तड की पृष्ठभूमि मे, पहले और दूसरे गोले के बीच के अंतराल मे लाखी घोड़ी ने ममता के साथ अपने नवजात शावक को चाटा। मा के फूले थन से चिपककर उसे पहली बार जीवन के आनद और मा के स्नेह की अनंत मिठास की अनुभूति हुई।

जब खलिहान के पीछे कही गिरकर दूसरा गोला फटा, त्रोफीम भडाक से मकान का दरवाजा खोलकर निकला और अस्तबल की ओर चल पडा। लीद के ढेर से बचता हुआ वह धूप की चौध के कारण आखो के ऊपर हथेली का छज्जा बनाकर चल रहा था। यह देखकर

कि तनाव से फुदकता बछेड़ा उसकी घोड़ी का थन चूस रहा है वह सकपका गया, उसने जेबों में हाथ डाला और कांपती उंगलियों से तंबाकू की थैली निकाली, कागज में तंबाकू लपेटकर उसने सिगरेट बनायी और उसकी बोलती लौट आयी :

“आ ... हा ... मतलब ब्याह गयी? तू ने भी खूब वक्त चुना इसके लिये।” त्रोफीम के इस वाक्य में कटु निराशा का भाव झलका।

घोड़ी की पसीना सूखने से खुरदरी हुई बगलों पर घास के तिनके और सूखी लीद चिपकी हुई थी। वह बेहद दुबली लग रही थी पर आखों से थकान मिश्रित गर्वोल्लास टपक रहा था और ऊपरवाले मखमली होंठ पर मुस्कान फैली थी। कम से कम त्रोफीम को तो यही लगा। त्रोफीम ने घोड़ी को अस्तबल में बांध दिया, गर्दन पर टंगे अनाज के भोले को हिलाते हुए वह फुफकारी। चौखट से टिककर त्रोफीम ने बछेड़े की ओर तिरछी नज़र डाली और सख्त आवाज़ में पूछा :

“उड़ा ली मौज?”

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह बोला :

“कम से कम इग्नात के घोड़े जैसा ही जनती, शैतान जाने किम पर गया है ... बता तो सही, मैं इसका कल क्या?”

अस्तबल की अंधकारमय नीरवता में अनाज चबने की आवाज़ आ रही थी, दरवाज़े में धूप की तिगछी सुनहरी किरणों का पुंज चमक रहा था। प्रकाश त्रोफीम के बायें गाल पर पड़ रहा था, उसकी ललछौंही मूँछ और दाढ़ी के बाल चमक रहे थे, मुंह को घेरे भुर्रियां टेढ़ी-मेढ़ी काली खाइयों की तरह लग रही थी। बछेड़ा तिनके जैसी पतली टांगों पर काठ के घोड़े की तरह खड़ा था।

“मार दूँ इसे?” तंबाकू मसलने के कारण हरे अंगूठे से बछेड़े की ओर इशारा करके त्रोफीम बोला।

घोड़ी पलक भपकती, अपनी लाल आंखों से मालिक की ओर उपहासपूर्ण नज़र में देख रही थी।

* * *

स्क्वाड्रन कमांडर के कमरे में उस दिन शाम को निम्न वार्तालाप हुआ :

“मैंने गौर किया कि मेरी घोड़ी बड़ी सभलकर चलने लगी, सरपट नहीं दौड़ती, सास फूलने लगता उसका। ध्यान से देखा तो वह ग्याभन निकली इतनी सभलकर रहती कि पूछो मत बछेडा तो कुम्भैत है बस ” त्रोफीम बता रहा था।

स्क्वाइन कमाडर ताबे का मग मुट्ठी में कसकर थामे चाय पी रहा था। उसने मग को ऐसे पकड़ रखा था जैसे कि हमला बोलने में पहले तलवार की मूठ को पकड़े हो। वह उनीदी आखों से लैम्प को ताक रहा था। आग की पीली-सी लौ पर पतंगे मड़ग रहे थे, वे खिड़की से अंदर आते, गर्म चिमनी में झुलमकर गिर जाते और दूसरे उनका स्थान ले लेते।

“क्या फर्क पड़ता है, चाहे भूग हो या काला। गोली मार देनी चाहिये। बछेडे के साथ तो हम बजारों की तरह लगेंगे।”

‘क्या?’ हा, मैं भी तो कहता हूँ कि बजारों की तरह लगेंगे। अगर सेना कमाडर आये तब? रेजिमेंट का निरीक्षण करने आयेगे और वह परेड के वक्त दुम हिलाता कुलाचे भरेगा तब? सारी लाल सेना के सामने हमारी नाक कट जायेगी। समझ नहीं आता त्रोफीम, तुमने यह होने कैसे दिया? गृह-युद्ध जोंगों पर है इधर ऐसी भौड़ी हरकतें यह तो बड़ी शर्म की बात है। साईमो को मेरा कड़ा हुक्म घोड़ों को घोड़ियों से अलग रखो।”

सुबह त्रोफीम रायफल लिये घर से बाहर निकला। सूरज अभी उगा नहीं था। घाम पर गुलाबी ओम बिछी थी। पैदल सेना के बूटों में कुचला खदको से पटा मैदान—दुख की पीड़ा में व्याकुल युवती के चेहरे की तरह लग रहा था। कैंटीन में बावर्ची अपने काम में व्यस्त थे। स्क्वाइन कमाडर पमीने से गला पुगना बनियान पहने ड्योढ़ी पर बैठा था। रिवात्वर की मूठ की उत्साहवर्द्धक ठडक की अभ्यस्त हाँचुकी उगलिया फूहड़ ढंग से भूले-बिसरे, प्रिय काम को याद करते हुए बेत की पौनी बुन रही थी। पास से गुजरते हुए त्रोफीम ने कौतूहल के साथ पूछा

“पौनी बना रहे है?”

स्क्वाइन कमाडर ने पतली टहनी से हथ्थी को जोड़ा और दात भीचकर बुदबुदाया

“अरे, मकान मालकिन जो है न कहती रहती है बना दो,

बना दो। एक जमाने में इस काम का माहिर था, अब वह बात नहीं रही ठग की नहीं बनी।”

“नहीं, बढिया है,” त्रोफीम ने प्रशंसा की।

स्क्वाड्रन कमांडर ने घुटनों से छीलन को भाड़ते हुए पूछा

“बछेड़े का काम तमाम करने जा रहे हो?”

त्रोफीम चुपचाप हाथ हिलाकर अस्तबल में चला गया।

स्क्वाड्रन कमांडर सिर झुकाये गोली चलने की प्रतीक्षा करने लगा।

एक के बाद एक पल बीतते जा रहे थे, पर गोली चलने की आवाज़ नहीं सुनायी दी। अस्तबल के पीछे में त्रोफीम प्रकट हुआ, वह भेपा-भेपा-सा लग रहा था।

“क्यों, क्या हुआ?”

“लगता है रायफल में कुछ गड़बड़ी है टोपी पर हथौड़ा नहीं पड़ रहा।”

“जरा दिखाना, रायफल।”

त्रोफीम ने अनिच्छा के साथ दी। बोल्ट हटाकर स्क्वाड्रन कमांडर ने आखे मिचमिचायी।

“अरे, इसमें तो गोली ही नहीं है।”

“कैसे नहीं है।” त्रोफीम चिहुककर बोला।

“मैं कह रहा हूँ, नहीं है।”

अरे हा, मैंने तो उन्हें वहाँ अस्तबल के पीछे फेंक दिया ”

स्क्वाड्रन कमांडर ने रायफल को बगल में रख दिया और बड़ी देर तक हाथ में नयी पौनी को उलट-पलटकर निहारता रहा। बेत की ताजी चिपचिपी टहनियाँ मधुर सुगंध फैला रही थी, नथुनों में खिलते बेद-मजनु की गंध भर रही थी, युद्ध की अनंत आग में विस्मृत श्रम की, धरती की सुगंध आ रही थी।

“सुनो! जाने दो! रहने दो उसे अभी अपनी माँ के साथ। बाद में देखा जायेगा। लड़ाई खत्म हो जायेगी खेत जोतने के काम आयेगा। सेनापति अगर आये तो उसकी मजबूरी को समझ लेंगे—दुधमुहा है तो माँ का थन चूसेगा ही सेनापति ने भी चूची चूसी थी, हमने भी चूसी, आखिर जब रीत ही ऐसी है तो बात खत्म! और, हा, तुम्हारी रायफल में कोई खराबी नहीं है।”

कोई एक महीने बाद एक दिन त्रोफीम के स्क्वाड्रन की उस्त-खोप्येस्की कस्बे के पास कज्जाक रिमाले में मुठभेड़ हो गयी। दिन ढलने में पहले गोलीबारी शुरू हो गयी। जब उन्होंने हल्ला बोला साभ का भुटपुटा छाने लगा था। त्रोफीम अपने प्लाटून से बहुत पीछे छूट गया। घाँड़ी पर न कोड़े का और न ही एंडो का कोई असर हो रहा था, वह मरपट नहीं दौड़ी। वह एक ही स्थान पर मिर उठाकर हिनहिनाती घूमने लगी जब तक कि दुम उठाये उसका बछेड़ा पास न आ गया। त्रोफीम कूदकर उतर गया, तलवार को म्यान में ठूसकर उसने गुस्से में कंधे से रायफल उतारी। दाया पक्ष श्वेत सैनिकों में भिड़ गया था। खड्ड के पास घुड़सवारों का भुड़ उमड़ रहा था, मानो हवा के भोके उसे दाये-बाये उड़ा रहे हों। चुपचाप मार्ग-काट हो रही थी। घोड़ों के खुरों से जमीन काप रही थी। त्रोफीम ने उस ओर एक नजर डालकर बछेड़े के मिर का निशाना बाधा। न जाने गुस्से में हाथ काप गया या निशाना चूकने का कोई और कारण था, जो भी हो, पर गोली चलने के बाद बछेड़े ने कुलाच भरी और खुरों में सफेद धूल उड़ाता कुछ दूरी पर जा खड़ा हुआ। त्रोफीम ने शैतान की औलाद पर साधारण नहीं, ताबे की लाल नोकवाली बख्तरभेदी गोलियों की पूरी मैगजीन खाली कर डाली, जब उसे यकीन हो गया कि बख्तर भेदी गोलियों तक में (जो संयोग में थैले में से उसके हाथ में आ गयी थी) लाखी घाँड़ी की औलाद का बाल बाका नहीं हुआ, तो वह घोड़ी पर सवार हो गया, और कोसता हुआ दुलकी चाल में उस ओर चल पड़ा, जहाँ लाल चेहरेवाले दबिगल स्क्वाड्रन कमांडर और तीन लाल सैनिकों को खड्ड की ओर खदेड़ रहे थे।

उस रात स्क्वाड्रन ने एक छोटे-से खड्ड के पास पड़ाव डाला। सिगरेटे कम पी। घोड़ों पर जीने कसी हुई थी। दोनों के तट में लौटे गोही दल ने बताया कि नदी पार करने के स्थान पर शत्रु का भारी जमाव है।

त्रोफीम पैरों को रबड़ की बरसाती में लपेटे लेटा था। उनीद में वह दिन भर की घटनाओं को याद कर रहा था। उसकी आँखों के सामने खड्ड में कूदते स्क्वाड्रन कमांडर, कमिसार पर तलवार से बार

करते पोपले मुहवाले दढियल का लाल चेहरा, एक कज्जाक का क्षत-विक्षत शरीर, काले खून से तर किसी की जीन और बछेडा घूम रहे थे।

पौ फटने से पहले स्क्वाइन कमांडर त्रोफीम के पास आया और अंधेरे में उसके पास बैठ गया।

“ सो रहे हो, त्रोफीम ? ”

“ ऊष रहा हू। ”

बुझते तारों को देखता हुआ स्क्वाइन कमांडर बोला

“ अपने बछेडे को मार दो ! ढग से लड़ाई नहीं करने देना

उसे देखकर हाथ काप जाता है तलवार नहीं उठती। यह सब इसलिये कि वह बिल्कुल नादान है घर की याद दिलाता है और युद्ध के समय ऐसी बातों का कोई स्थान नहीं पत्थर का दिल भी पसीज जाता है देखो तो सही घमामान लड़ाई में हगामी को किसी ने कुचला नहीं, टागो के बीच घूम रहा था ” चुप होकर वह खयालों में डूबा मुस्कराया, पर त्रोफीम यह मुस्कान नहीं देख रहा था। “ जानते हो त्रोफीम, उमकी दुम पीठ पर रखकर चौकड़ी भरता है और दुम हबहू लोमड़ी जैसी है क्या जबर्दस्त दुम है !

त्रोफीम कुछ नहीं बोला। बरानकोट से सिर को ढककर ओस की नमी से ठिठुरता हुआ वह आश्चर्यजनक तेजी से सों गया।

* * *

पुराने मठ और पहाड़ी के बीच सकरे स्थान पर दोन निरकुश वेग से बहती है। मोड पर पानी उफनता और हरी फेर्नल लहंगे बमत की बाढ से तट पर बिखरे खडिया के खडों को पूरे जोर से हिलाती।

अगर कज्जाको ने दोन के उम स्थान पर कब्जा न कर लिया होता जहा उसका वेग धीमा और पाट चौड़ा व स्वभाव शांत है, और तलहटी पर वहा से गोलीबारी न शुरू की होती, तो स्क्वाइन कमांडर कभी भी मठ के सामने तैरकर नदी पार करने का निर्णय न लेता।

दोपहर को नदी पार करने का काम शुरू हो गया। छोटी-सी नौका पर मशीनगन से लैस बग्घी, उसके चालक और तीन घोडे चढा दिये गये। जब नौका दोन के बीचो-बीच पहुचकर प्रवाह के विपरीत

तेजी से मुड़कर हल्की-सी भुक गयी, तो बायी ओर जोता जानेवाला घोड़ा जिसने कभी पानी नहीं देखा था बिदक गया। पहाड़ी की तलहटी में, जहां स्क्वाइन घोड़ों की काठी-जीन उतार रहा था, नौका के लकड़ी के फर्श पर उस घोड़े की नालों की ठकठक और व्याकुल खर्राहट साफ़-साफ़ सुनायी पड़ रही थी।

“नाव डूबो देगा!” भौहें सिकोड़कर त्रोफीम बुदबुदाया, उमका हाथ अपनी घोड़ी की पसीने से तर पीठ तक भी न जा पाया कि नौका में घोड़ा जोर से हिनहिनाया और मशीनगनवाली बग़्घी के बम को ठेलता हुआ पिछली टांगों पर खड़ा हो गया।

“गोली मार दे!...” स्क्वाइन कमांडर चाबुक को हाथ में मसोमते हुए चिल्लाया।

त्रोफीम ने देखा कि मशीनगन चालक ने घोड़े की गर्दन पर लटककर उसके कान में पिस्तौल की नाल ठूस दी। पटाखे की तरह गोली दगने की आवाज़ हुई, बाक़ी दोनों घांड़े सहमकर एक दूसरे से चिपक गये। मशीनगन चालकों ने नौका उलटने के डर में, मरे घोड़े को बग़्घी से मटा दिया। उसकी अगली टांगे धीरे-धीरे मुड़ गयी, सिर नटक गया...

कोई दसक मिनट बाद मकरी रेती से सबसे पहले स्क्वाइन कमांडर ने अपने समंद घोड़े को पानी में उतारा, उसके पीछे छप-छप करता पूरा स्क्वाइन पानी में उतर गया—एक सौ आठ अधनंगे घुड़मवार और इतने ही नाना रंगी घोड़े। जीन-काठियां तीन डोंगियों में थी। उनमें से एक त्रोफीम खे रहा था, अपनी घोड़ी उसने प्लाटून नायक नेचेपुरेन्को को सौंप दी थी। दोन के बीच पहुंचकर त्रोफीम ने देखा कि अगले घोड़े घुटने भर नदी में उतरकर अनिच्छापूर्वक पानी गटक रहे थे। घुड़सवार दबे स्वर में उन्हें हांक रहे थे। कुछ देर बाद तट से कोई पचास गज़ की दूरी पर घोड़ों के सिर ही सिर दिखायी पड़ रहे थे, फूत्कार सुनायी पड़ रही थी। घोड़ों के साथ उनकी अयाल पकड़े, रायफलों पर कपड़ों की पोटलियां और भोले लटकाये लाल सैनिक तैर रहे थे।

डोंगी में चप्पू पटककर त्रोफीम सीधा खड़ा हो गया और धूप से आंखें मिचमिचाते हुए तैरते भुंड में अपनी घोड़ी के लाखी सिर को खोजने लगा। स्क्वाइन शिकारियों की गोलियों की आवाज़ से डरकर आकाश में बिखरे जंगली हंसों की तरह लग रहा

था। आगे-आगे स्क्वाड्रन कमांडर का समंद घोड़ा अपनी चमकीली पीठ को ऊंचा उठाता तैर रहा था, उसकी पूंछ के पास सफ़ेद धब्बों की तरह उस घोड़े के कान चमक रहे थे जो कभी कमिसार का हुआ करता था। उनके पीछे काला भुंड तैर रहा था और सबसे पीछे, हर पल पिछड़ता हुआ प्लाटून नायक नेचेपुरेन्को का लटवाला सिर और उसके बायी ओर त्रोफ़ीम की घोड़ी के खड़े कान दिखायी पड़ रहे थे। आंखों पर जोर डालने पर उसे बछेड़ा भी दिखायी दे गया। वह भटक-भटककर तैर रहा था, कभी वह पानी से फुदकता तो कभी सिर्फ़ उसके नथुने दिखायी देते।

और तभी दोन पर चली हवा ने त्रोफ़ीम के कानों तक मकड़ी के तार की तरह महीन पुकार – हि-हि-हि SS पहुंचायी।

नदी की सतह पर गूंजता उसका हृदयविदारक चीत्कार तलवार की धार की तरह पैना था। वह कोड़े की तरह त्रोफ़ीम के दिल पर पड़ा और उसमें अजीब-सा परिवर्तन आ गया: पांच साल उसने लड़ते-लड़ते गुज़ार दिये, कितनी बार मौत से उसकी आंखें चार हुईं, पर उस पर कोई असर नहीं पड़ा, लेकिन इस समय ललछौंही दाढ़ीवाने चेहरे का रंग उड़ गया, धूसर-नीला पड़ गया – और चप्पू मंभालकर उसने बहाव से उलटी दिशा में, उस ओर नाव मोड़ दी जहां भंवर में निढाल बछेड़ा घूम रहा था और उससे कोई बीस-एक गज़ की दूरी पर नेचेपुरेन्को, भंवर की ओर हिनहिनाकर तैरती मां को रोकने के लिये पूरा जोर लगा रहा था। त्रोफ़ीम का मित्र स्तेस्का येफ़ेमोव जो नाव में काठियों के ढेर पर बैठा था सल्ली से चिल्लाया:

“पागल मत बन! किनारे की तरफ़ मोड़! देखता नहीं, वहां कज़्ज़ाक है! ...”

“मार दूंगा!” त्रोफ़ीम सांस छोड़कर बोला और उसने पेटो से पकड़कर रायफल पास खींची।

नदी का बहाव बछेड़े को उस स्थान से दूर ले गया, जहां से स्क्वाड्रन ने नदी पार की थी। छोटा-सा भंवर, हरी लहरों की जिह्वाओं से चाटता उसे धीरे-धीरे घुमा रहा था। त्रोफ़ीम जोर-जोर से चप्पू चला रहा था, नाव छलांगें-सी लगाती चल रही थी। दायें तट पर बीहड़ से कज़्ज़ाक दौड़ते निकले। मशीनगन जोर-जोर से तड़-तड़ करने लगी। पानी में गिरती गोलियां सूं-सूं कर रही थीं। किरमिच की

फटी कमीज पहने अफसर पिस्तौल हिलाता हुआ कुछ चिल्ला रहा था।

बछेड़ा अब कभी-कभी हिनहिनाता, उमका करुण चीत्कार धीमा हो गया। उसका यह चीत्कार किसी बच्चे की चीख से इतना मिलता था कि रोम-रोम सिहर उठता। नेचेपुरेन्को ने घोड़ी को छोड़ दिया और बायें तट की ओर तैर चला। कांपते हाथों से त्रोफीम ने गायफल उठायी, भंवर में फंसे सिर के नीचे का निशाना लगाकर गोली चला दी, फिर उसने भटके से बूट उतार दिये और हाथ फैलाकर दबी-सी हुंकार करके पानी में कूद गया।

बायें तट पर किरमिच की कमीज पहने अफसर दहाड़ा

“गोली चलाना बंद करो!”

पांच मिनट बाद त्रोफीम बछेड़े के पास था, बायां हाथ ठंडे पेट के नीचे डालकर उसने बछेड़े को पकड़ लिया, और नाक-मुंह में पानी भरने के कारण जोर-जोर से हिचकियां लेता बायें तट की ओर तैर पड़ा। दायें तट से एक भी गोली नहीं चली।

आकाश, वन, रेत—सब चटख हरे, मायावी लग रहे थे। शक्ति बटोरकर बचा-खुचा जोर लगाया—और त्रोफीम ने अपने पांवों तले ज़मीन महसूस की। उसने घसीटकर बछेड़े की लिसलिसी काया को रेत पर खींचा और मुबकियां लेता हरे पानी की उलटियां करता रेत को टटोलने लगा... जंगल में नदी पार कर चुके स्क्वाड्रन के सैनिकों की आवाजों का कोलाहल गूंज रहा था, रेत की पीछे कहीं नोपे दगने की कापती गरज सुनाई पड़ रही थी। लाखों घोड़ी बदन से पानी झाड़ती और बछेड़े को चाटती त्रोफीम के पास खड़ी थी। उमकी लटकी पूंछ में रेत में पानी की इंद्रधनुषी धारा टपक रही थी।...

त्रोफीम लड़खड़ाता हुआ खड़ा हुआ, रेत पर दो पग रखे और उछलकर बगल पर गिर पड़ा। मानो सीने में गर्म मुआ घुस गया; गिरते समय उसे गोली की आवाज सुनायी पड़ी। पीठ में इकलौती गोली लगी—दायें तट से चली। दायें तट पर किरमिच की फटी कमीज पहने अफसर ने धुआं छोड़ते कारतूस को फेंकने के लिये उदासीनतापूर्वक कारबाइन का बोल्ट उतारा। उधर रेत पर बछेड़े से दो कदम की दूरी पर त्रोफीम दम तोड़ रहा था और उसके कड़े नीले होंठों पर, जिन्होंने पांच साल से अपने बच्चों को न चूमा था, मुस्कान और खून के बुलबुले फूट रहे थे।

पराया खून

मौसम का पहला हिमपात हुआ। रात को दोन के पार से तेज हवा चल पड़ी, स्तेपी में पाले से ढकी भाडिया खडखडाने लगी, हवा ने बर्फ के अस्तव्यस्त ढेरों को मवार दिया और उबड़-खाबड़ सड़कों को समतल बनाने लगी।

रात ने कज्जाको के गाव को नीरवता के हरित धुधले आवरण से ढक दिया। घरों के पिछवाड़े में अनजुती, जगली घास से ढकी स्तेपी ऊघ रही थी।

आधी रात को बीहड़ों में भेड़िये की दबी-दबी हूक सुनायी पड़ी, गाव के कुत्तों ने भौककर उसका जवाब दिया और गवरीला दादा की नींद टूट गयी। अलावघर की टांड से पैर लटकाकर, बल्ली को पकड़े हुए वह बड़ी देर तक खासते रहें, बलगम थूककर उन्होंने तबाकू की थैली निकाली।

हर रात मुर्गों की पहली बाग के बाद दादा उठ जाते, बैठे-बैठे मिगरेट पीते, खासते, खखागकर फेफड़ों में बलगम निकालते। खामी के दौरों के बीच दिमाग में चिर-परिचित विचारों का ताता बंध जाता। दादा की सोच का विषय बस एक ही था—उनका बेटा, जो युद्ध में लापता हो गया था।

इकलौता था—पहला और आखिरी। उमी के लिये दिन-रात हाडनोड काम करते थे। जब लाल सेना में लड़ने के लिये उसे मोर्चे पर भेजन का समय आया—बैलों की दो जोड़ी बाजार ले गये, उनकी बिक्री में मिले पैसों से एक कल्मीक से फौज लायक घोड़ा खरीदा। घोड़ा क्या, पूरा तूफान था, हवा से बातें करता था। सद्क में अपने दादा की चादी के काम की जीन और लगाम निकाली। विदाई के समय कहा

“देखो, पेत्रो, मैंने तुम्हें बढ़िया सामान से नैस कर दिया है,

कोई अफसर तक ऐसे सामान के साथ शान से जा सकता है उसी तरह सेवा करना जैसे तुम्हारे बाप ने की, कज्जाक फौज और शात दोन की नाक मत कटने देना। तुम्हारे दादा-परदादो ने जागे की सेवा की, तुम्हे भी करनी चाहिये। "

दादा हरी चादनी से चमकती खिडकी मे देख रहे है, बाहर आगन मे सरसराती, न जाने क्या तलाशती हवा की साय-साय को मुनते हुए, उन दिनों को याद कर रहे है जो न लौटेंगे, फिर न वापस आयेगे

रगलूट की विदाई के समय छप्पर गवरीला के तले कज्जाक गला फाड़-फाड़कर पुगना कज्जाक गीत गा रहे थे

अरे हम लडत ह पाते बाधकर
मुनते ह मिर्फ हुक्म।
कमाडर आका हमारे देने जो हुक्म
पूरा करत है हम उसका
मार-काट करके ही लेते है हम दम।

मेज पर बैठा पेत्रों मदहोश था, उसका चेहरा सफेद-फक था, उमने आखिरी 'रकाब' का जाम पीकर थकान के साथ आखे भीची, पर घोडे पर सधकर बैठ गया। तलवार ठीक की और जीन मे भूककर अपने आगन की मट्टी भर मिट्टी उठा ली। न जाने अब कहा वह सोया पडा है, न जाने परदेस मे किस जमीन की गोद मे लेटा हुआ है?

दादा जोर से खामते है, छाती मे फेफडे घर-घर करते है और जब बलगम निकालकर वह भुकी कमर को बल्ली मे टिकाते है वही जाने-पहचाने विचार फिर उन्हे घेर लेते है।

* * *

बेटे को विदा किया और एक महीने बाद लाल सैनिक आ गये। दुश्मनों की तरह वे परंपरागत कज्जाक रहन-सहन मे घुस गये, दादा के आम, दैनंदिन जीवन को उन्होंने खाली जेब की तरह पलट दिया। पेत्रो मोर्चे की उम ओर, दोनेत्स नदी के पास था, लडाइयो मे बहादुरी दिखाते हुए जमादार बनने का जतन कर रहा था और गाव मे गवरीला दादा मन ही मन परदेसियो, 'लालवालो' के प्रति तीव्र घृणा को

उसी तरह बड़े प्रेम से पाल-पोस रहा था जैसे कभी उसने अपने लाड़ले पेत्रो को पाला था।

वह उन्हें चिढ़ाने के लिये कज़्जाक स्वाधीनता की प्रतीक लाल पट्टियोवाली शलवारनुमा ऊनी पतलून में घूमता था। गारद की नारंगी किनारीवाला चकमेन* पहनता था, जिस पर कभी लगे सार्जेंट-मेजर के फ़ीतों के निशान थे। ज़ार की जी-जान से सेवा के लिये मिले मेडल और क्रॉस छाती पर टांगकर इतवार के दिन गिरजे जाता। भेड़ के खाल के ओवरकोट को खोले रखता ताकि सब देख सकें।

एक बार गांव की सोवियत के अध्यक्ष ने मिलने पर उसे कहा :

“उतार दे, दादा ये लटकने! गुज़र गया इनका ज़माना।”

बुढ़ा भड़ककर बोला :

“तू कौन होता है ऐसा हुक्म चलानेवाला, क्या तूने टांगा था इन्हें, जो उतारने को कह रहा है?”

“जिसने टांगा, वह तो कब से कब्र में सड़ रहा है।”

“सड़ने दो!.. पर मैं नहीं उतारूंगा! क्या मरे से उतारेगा?”

“तुम भी क्या कहते हो मैं तो तुम्हारा भला सोचकर मलाह दे रहा हूं, मेरी बला से तो तुम इनसे चिपककर सोओ, पूर कुत्ते.. कुत्ते तो तुम्हारी पैट पर पैबद लगवा देंगे! वे तो अब ऐसे भेम में लोगो को देखने के आदी नहीं रहे, तुम्हे पराया समझ बैठेंगे..”

वह अपकार का कड़वा घूंट पीकर रह गया। तमगे उतार डाले पर मन ही मन अपकार की ठेस बढ़ते-बढ़ते क्रोध में बदल रही थी।

बेटा लापता हो गया — किमके लिये अब दौलत जमा करे। कोठरिया ढह रही थी, मवेशी बाड़ा तोड़ रहे थे, भेड़-बकरियो की कोठरी का छप्पर आंधी में उड़ गया था, अब उसकी कड़ियां गल रही थी। खाली अस्तबल में चूहे मौज कर रहे थे, बरगमदे में रस्त्री दराती जंग खा रही थी।

कज़्जाक गांव से जाते समय घोड़े ले गये थे, बचे-खुचे “लालवाले” ले गये। और लाल सैनिकों से एवज़ में मिले, टांगों पर लम्बे-लम्बे

* चकमेन — कज़्जाक सैन्यदल की वर्दी का कोट। — स०

बालो और बड़े-बड़े कानोवाले आखिरी घोड़े को पतझड़ में मखनो* के लोग फोकट में खरीद ले गये। उसके बदले वे बुढ़े को एक जोड़ी अग्रेजी गेटर छोड़ गये।

“हम से भी तुम्हें कुछ मिलना ही चाहिये।” मखनो का मशीनगन चालक आख मारकर बोला। “हमारे माल से अमीर बनो दादा।”

दसियों साल से जमा की गयी संपत्ति स्वाहा हो रही थी। काम करने हुए हाथ लटकते थे, पर वसत में जब खाली, दीन और क्लान स्तेपी पर पाव पड़ते—बूढ़े को भूमि अपनी ओर खींचती, रात को उसका अश्रव्य स्वर पुकारता लगता। बूढ़ा बेबस होकर बैलों को हल में जोतता और स्तेपी की छाती पर हल चलाने के लिये चल पड़ता, अतृप्त श्यामल भूमि में गेहूँ के उम्दा बीज बिखेरता।

कज्जाक सागर तट में और सागर पार से लौट रहे थे पर उनमें से किसी ने भी पेत्रो को नहीं देखा था। उसके साथ विभिन्न रेजिमेंटों में रहे, विभिन्न स्थानों पर गये—रूस भला छोटा है?—पर पेत्रो की रेजिमेंट में शामिल उसके गाववामी कुबान प्रदेश में कहीं जलोबिन के दस्ते से मुठभेड़ में अपनी पूरी रेजिमेंट के साथ खेत रहे थे।

गवगीला अपनी बुढ़िया से बेटे के विषय में लगभग कोई बात नहीं करता था।

रात को मुनता कि बुढ़िया तर्किये को आसुओ में भिगो रही है, नाक से सुड-सुड कर रही है।

“क्या हुआ बुढ़िया?” वह कराहकर पूछता।

कुछ देर चुप रहकर वह बोलती

“लगता है अलावघर की गैस भर गयी है घर में सिर में दर्द-सा हो रहा है।”

वह यह न जताता कि उसे असलियत मालूम है, सलाह देना

“अरे खीरे की काजी पी लो। कहो तो तहखाने से ले आऊ?”

‘सो जाओ। ऐमे ही ठीक हो जायेगा।’

और फिर मकड़ी के अदृश्य जाले की तरह घर में नीरवता छा

* मखनो—उक्राइना में सोवियत सत्ता के खिलाफ लड़नेवाले एक गिरोह का सरदार।—स०

जाती। चांद धृष्टता के साथ खिड़की में झाँकता, पराये दुख, मां की पीड़ा का आनंद लेता।

फिर भी उन्हें बेटे के लौटने की प्रतीक्षा और आशा थी। गवरी-ला ने भेड़ की खालें कमाने के लिये दे दीं और बुढ़िया से बोला :

“ हम दोनों तो जैसे-तैसे गुज़ारा कर लेंगे, पर पेत्रो लौटकर क्या पहनेगा ? सर्दियां आ रही हैं, उसके लिये भेड़ की खाल का ओवरकोट मिलवा लेना चाहिये। ”

उन्होंने प्योत्र के नाप का ओवरकोट मिलवाकर संदूक में रख दिया। उसके लिये रोज़मर्रा पहनने के बूट भी बनवा लिये। बूढ़े ने अपना वर्दी का नीला फ़्रेंच कोट संभालकर रख रखा था, उस पर तंबाकू छिड़क दिया ताकि कीड़े न काट दें। और जब मेमने को हलाल किया तो उसकी खाल से बूढ़े ने बेटे के लिये टोपी सी और खूटी पर टांग दी। आंगन से जब घर में घुसता, तो लगता कि बस अब पेत्रो बगल के कमरे से बाहर निकलेगा और मुस्कराकर पूछेगा : “ क्यों, बाबा, ठंड है बाहर ? ”

कोई दो-एक दिन बाद की बात है। शाम को बूढ़ा ढोंगों को चारा-पानी देने गया था। नाद में चारा डालकर वह कुएं में पानी खींचना चाहता था, पर उसे याद आया कि दस्ताने तो घर में भूल आया। लौटकर उसने दरवाज़ा खोला और देखा कि बुढ़िया बेंच के पाम घुटनों के बल बैठी पेत्रो के लिये बर्नायी गयी नयी टोपी को छाती से चिपकाकर, बच्चे की तरह झुला रही थी। . .

बूढ़े की आंखों में अधेरा छा गया, वह खूंखार जानवर की तरह उस पर झपटा, उसे ज़मीन पर धकेलकर होंठों पर निकले फेन को गटकने लगा, चिल्लाया :

“ छोड़, डायन ! . छोड़ ! .. तू कर क्या रही है ? ! ”

टोपी छीनकर उसने संदूक में पटक दी और उस पर ताला टांग दिया। बस तब से बुढ़िया की बायीं आंख फड़कने लगी और मुह टेढ़ा हो गया।

दिन और सप्ताह गुज़रते जा रहे थे, दोन में पानी बहता जा रहा था, पतझड़ के तेज़ बहाव में वह सदा की तरह स्वच्छ और पारदर्शी हरा था।

उस दिन दोन के किनारों पर बर्फ़ जम गयी। पीछे छोटे जंगली

हमो की डार गाव के ऊपर से गुजरी। गाम को पडोसी का लडका दौड़ा-दौड़ा गवरीला के पास आया, देव-प्रतिमा के सामने हडबडी में सलीब बनाकर बोला

“ सब ठीक-ठाक है ? ”

“ भगवान की दया है। ”

“ दादा आपने मुना ? प्रोखोर लिखोवीदोव तुर्को से लौटा है। वह आपके पेत्रो की रेजिमेंट ही में तो था। ”

गवरीला खासी के कारण हाफता जल्दी-जल्दी कदम रखना तेजी में गली में जा रहा था। प्रोखोर घर पर नहीं मिला वह अपने भाई के गाव गया हुआ था, कल आने की कह गया था।

गवरीला रात भर नहीं सोया। अनिद्रा उसे मता रही थी। पौ फटने में पहले उमने दिया जलाया और नमदे क बूटो पर तलवे टाकने लगा।

भोर के धुधले प्रभात में उषा की क्षीण लालिमा फूटी। सुबह हो गयी पर चंद्रमा आकाश के बीचो-बीच लटका रह गया, शक्ति उसमें टतनी नहीं बची थी कि काली घटा तक जाकर दिन भर को छिप जाये।

* * *

नाश्ते में पहले गवरीला खिडकी में झांका, न जाने क्यों वह फुसफुसाकर बोला

‘ प्रोखोर आ रहा है। ’

प्रोखोर ने घर में प्रवेश किया, वह बिल्कुल भी कज्जाको जैसा नहीं लग रहा था, परगयी वेशभूषा में था। उसके पैरों में नाल जड़े अग्रेजी बूट चरमरा रहे थे, अजीब-सा ओवरकोट उसके कंधों पर ढोंगी की तरह लटका था शायद किसी बेगाने का उतारा था।

“ गवरीला वसीलिच, ठीक-ठाक तो हो न। ”

‘ प्रभु की कृपा है। ’ आओ, बैठो। ’

प्रोखोर ने टोपी उतारी, बुढ़िया का अभिवादन किया और देव-प्रतिमाओं के पासवाले कोने में बेच पर बैठ गया।

“ देखो तो, मौसम कैसा हो गया, बर्फ इतनी पड़ी है कि चलना दूभर है। ”

“हा, बर्फ इस बार जल्दी पड़ गयी पुराने जमाने में तो इन दिनों ठोकर बाहर चरते थे।”

कुछ देर के लिये बोझिल चुप्पी छा गयी। देखने में तो गवरीला विरक्त और सतुलित लग रहा था, वह बोला

“छोरे, परदेस में तो तू बड़्का हो गया।”

“जवान होने की कुछ वजह ही नहीं थी गवरीला वसीलिच।” प्रोखोर ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

बुढ़िया ने मुह खोला

“हमारा पेत्रो ”

“चुप बुढ़िया।” गवरीला ने मस्ती से उसे डाटा। “आदमी बाहर से आया है, दम तो लेने दे वक्त आयेगा पूछ लेना।”

मेहमान की ओर मुड़कर उसने पूछा

“हा, तो प्रोखोर इग्नॉतिच दिन कैसे गुजरे?”

‘तारीफ करने लायक कोई बात है नहीं। लगड़े कुत्ते के मानिंद किसी तरह घर तक पहुंच गया, यही गनीमत है।’

“यह बात है मतलब तुम्हें के यहा मुसीबते भेलनी पड़ी?”

“बड़ी मुश्किल में गुजारा कर होता था, प्रोखोर बें मेज पर उगलियों से थाप की और बोला, “तुम भी गवरीला वसीलिच, काफी बूढ़े हो गये, तुम्हारे मिर के देखो कितने बाल सफेद हो गये सोवियत सत्ता में आप लोग कैसे रह रहे है?”

‘वेटे की बाट जोड़ रहा हूँ बुढ़ापे में हमें महारा देन के लिये गवरीला टेढ़े होठों में मुस्कराया।

प्रोखोर ने झट से नजरे दूसरी ओर मोड़ ली। गवरीला ने यह देखकर मस्ती से साफ-साफ मवाला किया

“बोलो कहा है पेत्रो?”

“क्या आपने नहीं सुना?”

‘तर्ह-तर्ह की बातें सुनी है।’ गवरीला चट से बोला।

मेजपोश की मैली झालर को उगलियों पर लपेटता प्रोखोर कुछ देर तक चुप बैठा रहा।

“शायद जनवरी की बात है हा-हा, जनवरी की ही है, हमारा रिमाला नोबोरोस्मीस्क के पास पड़ाव डाले हुए था यह शहर समुद्र के किनारे है बस पड़ाव डाले हुए थे ”

“क्या मारा गया? ..” गवरीला ने भुक्कर दबे स्वर में फुसफुसाहट के साथ पूछा।

प्रोखोर नज़रें झुकाकर कुछ देर चुप रहा, मानो उसने सवाल सुना ही नहीं।

“हम वहां तैनात थे, उधर लाल सेना पहाड़ों की तरफ बढ़ रही थी, हरी सेना से जुड़ने के लिये। आपके प्योत्र को रिसाले के कमांडर ने टोह लेने के लिये भेजा ... कमांडर हमारा था मूबेदार मेनिन ... बस तभी यह हुआ . ”

अलावघर के पाम टन् से देग गिरा, बुढ़िया हाथ फैलाकर पलग की ओर जाती दिखाई दी, गले से रुलाई फूट रही थी।

“मत चीख!!” गवरीला घुड़ककर चिल्लाया, मेज़ पर कोह-नियां टिकाकर प्रोखोर को एकटक देखता हुआ धीरे-धीरे थके स्वर में बोला

“पूरी भी कर बात!”

“टुकड़े-टुकड़े कर दिये!..” प्रोखोर चिल्लाकर खड़ा हुआ, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, बेच पर वह अपनी टोपी को टटोलता हुआ बोला। “पेत्रो को जान से मार डाला ... वे जंगल के पास रुके थे दम लेने के लिये ताकि घोड़े भी कुछ आराम कर लें, उसने जीन की पेटी ढीली कर दी, उधर जंगल में मे लाल सैनिक आ धमके...” जल्दी-जल्दी बोलने के कारण प्रोखोर का सांस चढ़ रहा था, कांपते हाथों से वह टोपी को मसल रहा था। “पेत्रो ने जीन की पेटी थामी और जीन खिसक कर घोड़े के पेट पर आ गयी ... घोड़ा बिदक गया ... नहीं सभाल पाया, वहीं रह गया . बस! ..”

“अगर मैं तेरी बात पर विश्वास न करूं?...” गवरीला शब्द चबा-चबाकर बोला।

प्रोखोर बिना पलटे जल्दी-जल्दी दरवाज़े की ओर चल पड़ा।

“मर्जी आपकी है गवरीला वसीलिच, पर मैंने सच बताया ... मैं सच बोल रहा हूं .. सिर्फ सच ... अपनी आंखों से देखा ...”

“अगर मैं इस पर यकीन नहीं करना चाहता?!” गवरीला तमतमाकर बोला। उसकी डबडबायी आंखों में खून उतर आया। क्रीमीज़ का गरेबान फाड़कर, बालों में ढकी छाती उघाड़कर, आहें भरता हुआ, पसीने से भीगे मिर को भटकता हुआ वह प्रोखोर पर

चढ़ गया, जो उसे इस हालत में देखकर सहम गया।

“इकलौते बेटे को मार डाला?। मा-बाप के सहारे को?। मेरे पेत्रो को?। भूठ बोलता है, कुतिया की औलाद। मुना तूने?। तू भूठ बोलता है। मैं यकीन नहीं करता।”

पर रात को ओवरकोट पहनकर अहाते में निकला, बर्फ पर नमदे के बूट चरमराता खलिहान में गया और पुआल के ढेर के पास खड़ा हो गया।

स्तेपी में हवा चल रही थी बर्फ का बुगदा उड़ रहा था चेरी की नगी भाड़िया काले सख्त अधेरे से लदी हुई थी।

“बेटा।” गवरीला ने दबे स्वर में पुकारा। कुछ रुककर बिना हिले-डुले, बिना सिर घुमाये फिर आवाज दी “पेत्रो। मेरे बेटे।”

फिर पुआल के ढेर के पाम पैरों से कुचली बर्फ पर चित लेट गया और आखे मूढ़ ली।

* * *

गाव में अनाज-वसूली की और दान के निचले भाग में अग्नेवाले डकैत गिगेहो की बाते उड़ रही थी। कार्यकारिणी समिति में गाव के निवासियों की मभाओ में फुसफुसाकर खबरे सुनायी जाती थी, पर बूढ़े गवरीला ने एक बार भी कार्यकारिणी समिति की टेढ़ी ड्योढ़ी पर पाव नहीं रखा था, जरूरत नहीं पड़ी, इसलिये उसने बहुत-सी बाते नहीं सुनी, बहुत कुछ उसे मालूम न था। उसे बड़ा अजीब लगा जब इतवार के दिन गिग्जे में दोपहर की प्रार्थना के बाद अध्यक्ष उसके यहाँ आया। अध्यक्ष के साथ उल्टी खाल के पीले छोटे ओवरकोट पहने तीन राइफलधारी थे।

अध्यक्ष ने गवरीला से हाथ मिलाया और फट से पूछा

“दादा, कबूल करो अनाज है तुम्हारे पास?”

“और तुम क्या सोचते थे, हवा में पेट भरते हैं क्या?”

“तुम मजाक मत करो, ठीक से बताओ कहा है अनाज?”

“होगा कहा, बखार में है।”

“चलो।”

“पर यह तो बताओ कि मेरे अनाज से तुम्हारा क्या रिश्ता?”

लम्बे कद के, सुनहरे बालोवाले ने जो देखने में उनका मुखिया लगता था, ठंड के कारण बूटो की एंडिया पटकते हुए कहा

“राज्य के लिये फालतू अनाज इकट्ठा कर रहे हैं। अनाज-वमूली चल रही है। सुना है, बाबा ?”

“पर अगर मैं न दू ?” गवरीला गुस्से में फुफकारकर बोला।

“नहीं दोगे ? तो खुद ले लेगे।”

अध्यक्ष के साथ कानाफूसी करके वे बखार में घूम गये, सुनहरे-सावले, चुने गेहूँ पर उनके बूटो से बर्फ के चिथड़े बिखर गये। सुनहरे बालोवाले ने सिगरेट पीते हुए फैसला किया

‘बीज और खाने के लिये छाँड़कर बाकी सब वमूल कर लो।’ मालिक की नजर से उमन अनाज की मात्रा का अनुमान लगाया और गवरीला की ओर मुड़कर बोला, “कितनी जमीन बोओगे ?”

“ठेगा बोऊंगा।” गवरीला फटी आवाज में खासता हुआ बोला। “ले जाओ पापियो। लूट लो। सब तुम्हारा ही तो है।”

“तुम्हें क्या पागल कुत्ते ने काटा है, होश में आओ, गवरीला दादा।” अध्यक्ष गवरीला को मनाने लगा।

‘पराया माल तुम्हारे गले में अटके। ठूसो अपने पेट में।’

सुनहरे बालोवाले ने अपनी मछो पर पिघलती बर्फ को भाड़ा और गवरीला को व्यग्रपूर्ण अदाज में आख मारकर, शात मुस्कान के साथ बोला

“बाबा, तुम फुदको मत। चिल्लाने का कोई फायदा नहीं। तुम चू-चू क्यों कर रहे हो, क्या किसी ने तुम्हारी दुम पर पैर रख दिया है ?” और भौंटे मिकोडकर बिलकुल दूसरे लहजे में बोला “जबान सभाल। अगर लम्बी है तो काट ले दातो से। ऐसे प्रचार के लिये” बात पूरी किये बिना उसने पेट की गलटके पिस्तौल के पीले खोल पर हाथ मारा और नर्म स्वर में बोला “आज ही अनाज वमूली-केन्द्र पहुँचा देना।”

यह बात नहीं थी कि बूढ़ा डर गया, पर दृढ़ और स्पष्ट आवाज में वह सहम गया, समझ गया कि सचमुच चिल्लाने से कुछ नहीं होगा। हाथ भाँड़कर वह घर की इयोढी की ओर चल पड़ा। उसने अभी आधा आगन भी पार न किया था कि वह वहनी चीख में सिहर गया

“कहां है अनाज-वसूली दस्ता?!”

गवरीला ने मुड़कर देखा—टहनियों से बनी बाड़ की दूसरी ओर पिछली टांगों पर नाचते घोड़े पर घुड़सवार बैठा था। किसी असाधारण घटना के पूर्वाभास से गवरीला के घुटने कांपने लगे। वह मुंह भी न खोल पाया कि घुड़सवार ने बखार के पास खड़े लोगों को देखकर भटके से घोड़े को रोका और पलक भपकते कंधे से रायफल उतार ली।

धाय से गोली चली, गोली चलने के बाद आंगन में छाया क्षणिक नीरवता में रायफल का बोल्ट खटकने की आवाज सुनायी पड़ी और कारतूस का खोल सूं SS करके गिरा।

स्तब्धता टूट गयी: सुनहरे बालोंवाला चौखट से चिपक गया, कांपते हाथ से रिवाल्वर को खोल से निकालने में उसे बड़ी देर लग रही थी। अध्यक्ष आंगन में खरगोश की तरह फुटकता हुआ खलिहान की ओर दौड़ पड़ा, अनाज-वसूली दस्ते का एक आदमी बाड़ के पीछे हिलती काली टोपी पर कारबाइन से गोलियां चलाते हुए घुटने के बल गिर गया। अहाता गोलियों की धाय-धाय से भर गया। मानो बर्फ से चिपके अपने पैर गवरीला ने मुश्किल से उठाये और भारी कदम घसीटता हुआ घर की ड्योढ़ी की ओर चल पड़ा। जब उसने मुड़कर देखा तो उल्टी खाल के कोट पहने तीन जने बिखरकर, बर्फ के ढेरों में फंसे हुए खलिहान की ओर दौड़ रहे थे और बेबाक खुले फाटक में घुड़सवार उमड़ते आ रहे थे।

आगेवाला घुड़सवार कुबानी टोपी पहने था। अपने ललौहे घोड़े पर झुककर उसने सिर के ऊपर तलवार घुमायी। गवरीला की आंखों के सामने हंस के डैनों की तरह उसके सफेद बागलिक* के सिरे चमके, घोड़े के खुर्चों से उछली बर्फ के छीटे चेहरे पर पड़े।

निढाल गवरीला नक्काशीदार ड्योढ़ी का सहारा लेकर खड़ा हो गया। उसने देखा कि ललौहा घोड़ा सिमटा और टहनियों की बाड़ को फांद गया, जौ की पुआल के ढेर के पास पिछली टांगों पर खड़ा होकर घूमने लगा और कुबानी कज्जाक, जीन से लटककर, घुटनों

* बागलिक—(तुर्क) लम्बे सिरोंवाला हड जो टोपी और मफलर दोनों का काम देता है।—अनु०

पर रेगते अनाज-बसूली दस्ते के आदमी पर तलवार से आड़े-तिरछे वार करने लगा

खलिहान से अम्पष्ट-सा शोर, हाथापाई की आवाज और किमी का दारुण चीत्कार सुनायी पड़ा। पल भर बाद सिर्फ एक बार धाय की आवाज आयी। गोलीबारी से डरकर उड़े कबूतर उस समय बखार की छत पर उतर रहे थे, वे चौककर आकाश में बैगनी छर्छों की तरह फैल गये। घुड़मवार खलिहान में अपने घोड़ों से उतर गये।

गाव में निरंतर घटे-घड़ियाल बज रहे थे। गाव का पगला लडका पाशा गिरजे के घटागार पर चढ़ गया था, वह अपने पगलेपन के कारण खतरे का घटा बजाने की जगह ईस्टर-नृत्य की धुन बजा रहा था।

कंधो पर मफेद बाशलिक डाले कुबानी कज्जाक गवरीला के पास आया। उसका पसीने से गीला तमतमाया चेहरा फड़क रहा था, होठों के लटके कोने थूक से गीले थे।

“जई है ?”

गवरीला कठिनाई के साथ हिला अभी-अभी उसने जा कुछ देखा था उसमें उसकी जबान को मानो लकवा मार गया।

“शैतान की औलाद, क्या तू बहरा हो गया ?” पूछ रहा हूँ, जई है ? बोरी ला।”

चारे की नाद के पाम घोड़ों को ला भी न पाये थे कि एक और घुड़मवार घोड़े को सरपट दौड़ाता फाटक में घुसा।

“चढ़ो घोड़ों पर ! पहाड़ी से पैदल फौज आ रही है ”

कुबानी कज्जाक ने कोमकर भाप छोड़ते पमीनें से तर अपने घोड़े को लगाम पहनायी और बड़ी देर तक अपनी दायी आम्तीन के कफ को बर्फ में रगड़ता रहा जो किमी सिदूरी-लाल चीज में सना था।

फाटक से पांच घुड़मवार निकले, पिछलेवाले की जीन में बंधे खून के धब्बों से सने उल्टी खाल के पीले ओवरकोट को गवरीला ने पहचान लिया—वह मुनहरे बालोवाले का था।

* * *

टोले के पीछे बेर की भाड़ियोंवाली घाटी में शाम तक गोलियां चलती रही। पिटे कुत्ते की तरह दुम दबाकर सन्नाटा गाव में पसरा

पड़ा था। जब गवरीला खलिहान में जाने का साहस जुटा पाया तब तक साभू का भुटपुटा छा गया था। उसने खुले दरिचे में प्रवेश किया। अध्यक्ष सिर लटकाये खलिहान के बाड़े की बल्ली पर पड़ा था। गोली ने यही उसको धगसायी कर दिया था। उसके लटके हाथ, मानो बाड़ की दूसरी ओर गिरी टोपी को उठाने का यत्न कर रहे थे।

पुआल के ढेर के पाम, जहा जूठन और भूमी बिखरी पड़ी थी, बर्फ पर अनाज-वसूली दस्ते के तीनो जने एक पात में लेटे हुए थे। कच्छे-बनियान के अलावा उनके सारे कपड़े उतरे हुए थे। इस भयकर दृश्य से दहले गवरीला के दिल में उनके पति अब वह क्रोध न रहा, जो सुबह खौल रहा था। यह दुस्वप्न लगता था कि उसके खलिहान में जहा हमेशा पड़ोसी की बर्कगिया उत्पात मचाती थी, पुआल के गठुर में मुह मारती थी अब तिनके की तरह कटे तीन लोग पड़े हैं, और उनसे, डबरो में जमे उनके फेनिल खून में अब मुर्दों की हल्की-सी ब फैलने लगी है।

मुनहरे बालोवाला अस्वाभाविक मुद्रा में सिर मोड़े पड़ा था अगर सिर बर्फ में न चिपका होना तो यह लग सकता था कि वह टांग पर टांग रखकर लेटा हुआ वेफित्री में आगम कर रहा है।

दुसरा चेचक के दाग और काली मूछोवाला कंधे उचकाकर धनष की तरह पड़ा था, उसके अधखुले मह में चमकते दांतों पर अडिगता और क्रोध का भाव था। तीसरा पुआल में सिर छिपाये बर्फ पर तैराक की मुद्रा में औधा पड़ा था उसकी फैली निर्जीव बांहें इतनी शक्तिशाली लगती थी।

गवरीला मुनहरे बालोवाले के ऊपर झुका काले पड़े चेहरे को ध्यान से देखकर वह करुणा से मिहर गया उसके सामने कोई उन्नीमेक बरस का छोकरा पड़ा था, न कि गुस्मैल, कटखनी आखोवाला खाद्य-कमिसार। मूछों के पीले रोयों के पाम होठ पर पाला जम रहा था, बस माथे पर आड़ी काली भुर्रि थी—गहरी और गभीर।

गवरीला ने यू ही हाथ में उसकी नगी छानी को छुआ। आर्कास्मिकता ने उसे भिभोड दिया उसकी हथेली को बर्फीली ठंड में बुझती गर्मी की अनुभूति हुई

जब कराहता और हाफता गवरीला खून में लथपथ, अकड़े शरीर को पीठ पर लादकर लाया तो बुढ़िया का मुह खुला का खुला रह गया,

वह सलीब बनाते हुए अलावधर के पास हट गयी।

गवरीला ने उसे बेच पर लिटाया, ठंडे पानी में धोया, और मोटे ऊनी मोजे में हाथ, पाव, छाती को तब तक रगड़ता रहा जब तक खुद पसीने से तर होकर निढाल न हो गया। उसने घिनौनी ठंडी छाती में कान लगाया और बड़ी मुश्किल में उसे दिल की धड़कन मुनायी दी, दिल रुक-रुककर धड़क रहा था।

* * *

चार दिन में वह मुर्दे की भांति केमरी-पीला कमरे में लेटा था। माथे में लेकर गाल तक तलवार के लाल घाव में खून जम गया था, कमर पट्टी में बंधी छाती कबल को ऊपर-नीचे उठाती घर्घर्, गूँगुंड करती फेफड़ों में हवा भरती थी।

रोज गवरीला उसके मुँह में अपनी फटी, रूखी उगनी डालता, छुरी की नोक में, मावधानी के साथ, उसके भिचे जबड़ों को खोलता और बूढ़िया सरकड़े की नली में गर्म दूध और भेड़ की हड्डियों की यखनी डालती।

चौथे दिन सुनहरे बालोवाले के गालों पर हल्की-सी लाली छा गयी दोपहर तक उसका चेहरा दहकते अगारे जैसा लाल हो गया, मांग शरीर कापने लगा और ठंडा चिर्पाचिपा पसीना आने लगा।

तब में वह बेहोशी में बड़बड़ाने लगा पलंग में उठने की कोशिश करने लगा। गवरीला और बूढ़िया दिन-रात बागी-बारी में उसके पास बैठे रहते।

जाड़े की लम्बी रात में जब दोन के दियाड़े से आती पुरबिया काले आकाश में उथल-पुथल करती गाव के ऊपर टंडी घटाओं को बिछा देती, गवरीला हाथों पर मिर टिकाकर घायल के पास बैठा अर्पागचित बोली में उसकी बड़बड़ाहट को कान लगाकर सुनता, देर-देर तक उसकी काले गड्डोवाली बद आखों की आममानी पलकों को देखता रहता। और जब बदरग होठों से लम्बी कराह, फटे स्वर में कोई फौजी आदेश या भद्दी गाली निकलती और चेहरा क्रोध व दर्द में विकृत हो उठता—गवरीला का दिल पसीज जाता। ऐसे क्षणों में करुणा बिनबुलाये मेहमान की तरह मुँह उठाये आ जाती।

गवरीला देख रहा था कि हर दिन के साथ, बिना पलक मूंदे बितायी गयी हर रात के साथ बुढ़िया पलंग के पास बैठी-बैठी सूखती जा रही है। गवरीला ने उसके भुर्रियों से ढके गालों पर आंसू भी बहते देखे थे और वह समझ गया, मच कहा जाये तो अपने दिल से उसने महसूस किया कि भगवान को प्यारे हुए बेटे पेत्रो के प्रति उसके मन में बची ममता इस निर्जीव-से, मौत के मुंह से निकले पराये बेटे को देखकर धधक उठी है।...

एक बार गांव से गुजरती रेजिमेंट का कमांडर आया। घोड़े को फाटक पर ही अर्दली को सौंपकर तलवार और महमेजें खड़काता दौड़कर इयोदी पर चढ़ गया। कमरे में उसने टोपी उतार दी और बड़ी देर तक घायल के पास मौन खड़ा रहा। घायल के चेहरे पर धुंधली छायाएं तैर रही थी, बुखार से फटे होंठों से खून रिस रहा था। कमांडर ने समय से पहले सफ़ेद हुए बालोंवाला अपना मिर हिलाया और धुंधली आंखों से न जाने किम ओर देखते हुए, गवरीला से बोला :

“बाबा, हमारे साथी को बचा लो ! ”

“बचा लेगे। ” गवरीला ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

दिन और सप्ताह बीतते जा रहे थे। बड़ा दिन गुजर गया। मोलहवे दिन सुनहरे बालोवाले ने पहली बार आंखें खोली और गवरीला को अस्फुट स्वर सुनायी पड़ा :

“बाबा, यह तुम हो ? ”

“हा। ”

“मेरी ज़बर्दस्त हजामत बनायी थी ? ”

“भगवान किसी की ऐसी न करे। ”

उसकी निर्मल, दुर्ग्राह्य नज़रों में गवरीला को मामूम कटाक्ष का आभास-सा हुआ।

“और मेरे साथी ? ”

“उन्हें वो ... उन्हें चौक पर दफ़ना दिया है। ”

उसने कंबल पर टिकी उंगलियां हिलायी और छत के बिना रंगे तस्त्तो की ओर आंखें उठा ली।

“तुम्हारा नाम क्या है ? ” गवरीला ने पूछा।

नसों से ढकी आसमानी पलकें धीरे से भुकीं।

“निकोलाई। ”

“पर हम तुम्हे पेत्रो कहकर पुकारा करेंगे हमारा बेटा था पेत्रो ” गवरीला ने उसे ममझाया।

कुछ सोचकर और किसी चीज के बारे में पूछना चाहता था पर उसे नाक की खर्खर् सुनायी पड़ी और वह बाहे फैलाकर दबे पाव पलग के पास से हट गया।

* * *

उसमें जीवन धीरे-धीरे, मानो आनच्छा से लौट रहा था। दूसरे महीने में वह बड़ी मुश्किल से अपना सिर तकिये में उठा पाया था, पीठ पर लेटे रहने के कारण चकते पड़ गये थे।

हर दिन के साथ गवरीला को भय के साथ यह अनुभूति होती कि उसे नये पेत्रो से गहरा लगाव होता जा रहा है और पहले, अपने बेटे की छवि उमी तरह धूमिल होती जा रही है जैसे मकान की अन्नक जड़ी खिड़की पर अस्ताचलगामी सूरज की चमक। वह पहलेवाले दुख और पीड़ा को लौटाने की लाख कोशिश करता पर अतीत दूर, बहुत दूर होता जाता और इससे गवरीला को मन ही मन शर्म आती, अटपटा लगता। मवेशियों के बाड़े में जाकर घंटों कुछ न कुछ करता रहता पर यह याद करके कि पेत्रो के पलग के पास बुढ़िया निरंतर बैठी है उसे ईर्ष्या होती। घर में जाकर मिर्गहाने के पास खड़ा हो जाता अपनी अकड़ी उगलियों से तकिये का गिलाफ ठीक करता और बुढ़िया की क्रुद्ध नजर को देखकर चुपचाप बेच पर बैठ जाता।

बुढ़िया पेत्रो को मारमोट की चर्बी और वसत में जमा की गयी जड़ी-बूटियों का काढ़ा पिलाती। इस वजह से या बीमारी पर जवानी की शक्ति के हावी होने के कारण घाव भर गये, भर आये गालों पर लाली छाने लगी, बस दाया हाथ चगा होने में देर लगा रहा था, क्योंकि घाव के साथ हड्डी भी टूट गयी थी लगता था कि वह बेकार ही हो जायेगा।

फिर भी ईस्टर उपवास के दूसरे सप्ताह पेत्रो पहली बार खुद, किसी की सहायता के बिना, पलग पर बैठ गया, उसे अपनी शक्ति पर आश्चर्य हो रहा था, बड़ी देर तक वह मुस्कराता रहा, उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

रात को, रसोई में अलावघर की टाड पर खासते हुए गवरीला ने फुसफुसाकर पूछा

“तू सो रही है, बुढ़िया?”

“क्या चाहिये?”

“हमारेवाला तो पैरो पर खड़ा होने की तैयारी कर रहा कल सड़क में पेट्रो की पतलून निकाल लेना सारे कपड़े तैयार कर देना उसके पास पहनने को तो कुछ है नहीं।”

“मैं खुद जानती हूँ! कबके निकाल रखे है।”

“बड़ी चट है! खाल का ओवरकोट तो निकाला नहीं?”

“छोरा क्या ऐसे ही ठंड में घूमेगा भला।”

गवरीला करवटे बदलने लगा नींद बस आ ही गयी थी, पर याद करके उसने विजेता की तरह मिर उठाया

“और टोपी? टोपी के बारे में तो भूल गयी होगी तू बुढ़ी बत्तख?”

“छोड़ो भी मेरा पिंड! मौ बार पास में गुजरे एक बार तो देख लिया होता दो दिन में वहाँ कील पर टगी है।”

गवरीला खीजकर खामा और चुप हो गया।

चंचल वसंत दोन को बर्फ की जकड़ से मुक्त करने लगा। बर्फ काली भुरभुरी और ऊबड़-खाबड़ हो गयी मानो उसमें कीड़े पड़ गये हों। पहाड़ी गजी हों गयी। बर्फ स्टेपी में रेंगकर बीहड़ों और घाटियाँ में दुबक गयी। दोन का दियाग धूप की बाढ़ में डूबा मुप्त था। स्टेपी में आती हवा नागदौन की स्फूर्तिदायी कमैली गंध अपने साथ लाती थी।

मार्च का महीना समाप्त हो रहा था।

* * *

बाबा आज खड़ा हो जाऊगा।”

हालांकि गवरीला के घर में आनेवाले सभी लाल सैनिक उसके सफेद बालों को देखकर गवरीला को ‘बाबा’ कहकर ही पुकारते, पर इस बार स्वर में उसे अपनेपन की अनुभूति हुई। उसे शायद ऐसा लगा या फिर वास्तव में ही पेट्रो ने इस शब्द में पुत्र का प्रेम भरा, जो भी हो गवरीला बिलकुल लाल हो गया, उसे खामी आ गयी और लजाई खुशी का छिपाकर बुदबुदाया

“ तीसरा महीना लग गया तुम्हे लेटे-लेटे अब तो पेत्रो, उठने का वक्त आ गया । ”

पेत्रो गेडियो की तरह पैर रखता ड्योढी में निकला और फेफड़ों में घुसे हवा के तेज झोके से उसका दम घुटते-घुटते बचा। गवरीला उसे पीछे से सहारा दे रहा था और बुढ़िया ड्योढी के पास बेचैन खड़ी अपने आसुओं को पल्ले से पोछ रही थी।

बखार के पास से गुजरते हुए धर्म-पुत्र — पेत्रो ने पूछा

“ नब अनाज दे आये थे ? ”

“ दे आया ” गवरीला अनमने में बुदबुदाया।

“ बहुत अच्छा किया, बाबा । ”

और फिर ‘ बाबा ’ शब्द सुनकर गवरीला गदगद हो गया। गेज पेत्रो बहगी का महाराज लेकर लगडाता हुआ धीरे-धीरे अहाने में टहलता। गवरीला चाहे जहा होता, खलिहान में ओसारे में, सब जगह में वह अपने नये बेटे को बेचैन अन्वेषी नजरों में देखता। कहीं ठोकर खाकर गिर न जाये।

आपस में वे कम ही बोलते थे, पर सबध उनके बीच सरल और मधुर हो गये थे।

उस दिन के कोर्ट दो-गक दिन बाद जब पेत्रो पहली बार बाहर निकला था रान को मोने की तैयारी करने हुए गवरीला ने पूछा

“ बेटे, तुम कहा के हो ? ”

“ उगल से आया हू । ”

“ किसान-परिवार के हो ? ”

नहीं, मजदूर हू । ”

“ क्या मतलब ? कोई धधा करते थे क्या, जैसे मोची या बढई का ? ”

“ नहीं, बाबा, मैं कारखाने में काम करता था। लोहा ढालने के कारखाने में। बचपन में वही काम किया । ’

“ और अनाज वमूल करने कैसे आये ’ ’

“ फौज ने भेजा था । ’

“ तुम क्या उनके कमांडर थे ? ”

“ हा । ”

पूछते हुए झिझक हो रही थी पर बातचीत का मक़सद तो यही था :

“मतलब यह कि तुम पार्टी के आदमी हो?”

“हां, मैं कम्युनिस्ट हूं।” पेत्रो ने निश्चल मुस्कान के साथ कहा।

और इस निष्कपट मुस्कान के कारण गवरीला को पराया शब्द ‘कम्युनिस्ट’ अब भयावह नहीं लगा।

बुढ़िया ने मौक़ा देखकर झट से पूछा :

“पेत्रो प्यारे, तुम्हारा परिवार तो है न?”

“कोई नहीं है मेरा!... आसमान में चांद की तरह अकेला हूं!”

“मां-बाप क्या मर गये?”

“बच्चा ही था, कोई सात-एक साल का था... बाप शराबियों की लड़ाई में मारा गया और मां कहीं गुलछर्रे उड़ा रही है...”

“देखो तो कुतिया को! मतलब तुम्हें, नन्हे-से को भाग्य के सहारे छोड़ गयी?”

“किसी ठेकेदार के साथ भाग गयी और मैं कारख़ाने में पला।”

गवरीला टांड से पैर लटकाकर बैठ गया, बड़ी देर तक चुप रहा, फिर एक-एक शब्द को तौलकर धीरे-धीरे बोलने लगा :

“तो बेटे, अगर तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं तो हमारे पास ही रह जाओ... हमारा बेटा था, उसी की तरह हम तुम्हें पेत्रो कहकर बुलाते हैं... था बेटा पर न रहा और अब मैं और बुढ़िया, हम दोनों अकेले रह गये हैं... तुम्हारे लिये हमने कितनी मुसीबतें उठायी, शायद इसी से हमें तुम से लगाव हो गया। चाहे तुम में पराया खून है, पर हमारा दिल तुम्हारे लिये अपने ही बेटे की तरह दुखता है... रह जाओ यही! तुम्हारे साथ मिलकर खेती करेंगे, दोन प्रदेश की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है... तुम्हारे कपड़े-लत्ते बनवा लेंगे, बहू लायेंगे... मैंने तो जितना हो सकता था कर लिया, अब घर-बार तुम ही संभालो। बस तुम हमारे बुढ़ापे का खयाल रखना, मरने तक दो वक़्त की रोटी देते रहना... हमें छोड़कर मन जाना पेत्रो...”

अंगीठी के पीछे से भीगुर की नीरस भंकार मुनायी पड़ रही थी।

हवा से खिड़की के किवाड़ चरमरा रहे थे।

“मैंने और बुढ़िया ने तुम्हारे लिये बहू की खोज शुरू कर दी

है! .” गवरीला ने कृत्रिम हर्ष से आंख मारी, पर होंठ कांपे और उन पर करुण मुस्कान आ गयी।

पेत्रो टकटकी बांधे ऊबड़-खाबड़ फ़र्श को देख रहा था, बायें हाथ की उंगलियों से वह बेंच पर ठक-ठक कर रहा था। रुक-रुककर आती यह ध्वनि व्यथित कर रही थी।

स्पष्टतः, वह अपने उत्तर पर विचार कर रहा था। और फ़ैसला करके उसने ठक-ठक बंद की, मिर झटका:

“बाबा, मैं आपके यहां खुशी से रह जाऊंगा, पर खुद देखते हो, मैं ढंग का काम करने लायक रहा नहीं। हाथ मेरा चंगा होने का नाम ही नहीं लेता, साला! पर काम मैं करूंगा जितना हो सकेगा। गर्मी भर यही रहूंगा, बाद में देखा जायेगा।”

“और बाद में शायद तुम यही रह जाओगे!” गवरीला ने बात पूरी की।

बुढ़िया का चरखा हर्षोल्लास के साथ तकली पर गोयेंदार ऊन को लपेटता हुआ घरघराने लगा।

न मालूम वह थपक-थपककर लोरी सुना रहा था या मजे की ज़िंदगी का लालच दे रहा था।

* * *

वसंत के बाद तपती धूप, स्तेपी की घनी धूल भरे दिन आये। बहुत दिनों के लिये मौसम माफ़ हो गया। अल्हड़ और तीव्र दोन में ऊंची-ऊंची लहरें उठने लगी। वसंत की बाढ़ का पानी गांव के छोर के मकानों तक चढ़ आया। दोन के हरित-श्वेत दियारे में फूलते पोपलरों की मधुर सुगंध व्याप्त हो गयी, मैदान में जंगली सेबों की झड़ी पंखुड़ियों से ढकी भील उषा की लालिमा की तरह दीप्तिमान थी। रातों में क्षितिज पर बिजलियों की चमक बालाओं की तरह आख-मिचौली खेलती, रातें भी क्षितिज पर बिजली की क्षणिक चमक की तरह छोटी हो गयी। दिन भर के काम के बाद बैलों को आराम नहीं मिल पाता था। ढोर चरागाहों में चरते थे।

हफ़्ते भर से गवरीला पेत्रो के साथ स्तेपी में ही रह रहा था। वे जुताई करते, हेंगा चलाते, बोवाई करते और रात को छकड़े के

नीचे दोनों एक ही ओवरकोट को ओढ़कर सोते। पर गवरीला ने कभी यह नहीं कहा कि नये बेटे ने उसे कितना कसकर अदृश्य सूत्र से बांध लिया है। हसमुख, कर्मठ मुनहरे बालोवाले ने दिवगत पेत्रो की छवि को धूमिल कर दिया। उसके बारे में गवरीला अब बहुत कम ही सोचता था। और काम में लगे रहने से सोचने का समय भी नहीं मिलता था।

दिन चोंगे की तरह चुपचाप खिसकते जा रहे थे। घास काटने के दिन आ गये।

मुबह में पेत्रो घास काटने की मशीन को ठीक करने में जूटा था। उसने लोहारखाने में उसके ब्लेडों पर धार चढ़ायी और टूटे हिस्सों की जगह नये बनाकर लगा दिये। गवरीला यह देखकर चकित रह गया। मुबह में घास काटने की मशीन में लगा रहा और माफ़ ढलने पर कार्यकारिणी के दफ्तर चला गया। किसी सम्मेलन का बुलावा आया था। उसी समय बुढ़िया जो पनघट पर गयी थी रास्ते में डाकघर में एक चिट्ठी लायी। लिफाफा पुराना, चीकट था, पता गवरीला का था। लिफाफे पर लिखा था कामरेड निकोलाई कोसीख के लिये।

अनिष्ट की अस्पष्ट-सी अनुभूति के साथ बड़ी देर तक गवरीला कापिंग पेसिल में चौड़ी लिखावट में लिखे धुंधले अक्षरोंवाले लिफाफे को हाथों में पलटता रहा।

वह रोशनी की तरफ करके देखता पर लिफाफा किसी के रहस्य की मुग़्तैदी में रक्षा कर रहा था और गवरीला को इस पत्र के प्रति, जिसने जीवन के शान क्रम को भग कर दिया, बढ़ते क्रोध की अनुभूति हो रही थी।

मन में विचार कौधा-फाड़ दू, पर कुछ मोचकर उसे दे देन का फैसला किया। फाटक पर हो उसने पेत्रो को खबर सुना दी

“बेटे, तुम्हारे लिए कहीं से चिट्ठी आयी है।”

“मेरे लिए?” उसे आश्चर्य हुआ।

“हां, तुम्हारे लिये है। जाओ, पढ़ लो।”

कमरे में बत्ती जलाकर गवरीला पैनी, टोहक निगाहों में, पत्र पढ़ते पेत्रो के खुश चेहरे को देख रहा था। उससे रहा न गया और पूछ बैठा

“कहा में आयी है?”

“उराल में।”

“किसकी है?” बुढ़िया ने कौतूहल के साथ पूछा।

“कारखाने के साथियो की है।”

गवरीला का माथा ठनका।

“क्या लिखते है?”

पेत्रो की आखो मे अधेरा छा गया। अनिच्छा के साथ उसने उत्तर दिया

“कारखाने मे बुला रहे है उमे चालू करना चाहते है। मन् मन्त्रह मे रुका पडा है।”

“यह कैसे? मतलब तुम जाओगे?” फटे स्वर मे गवरीला ने पूछा।

“पता नही ”

* * *

पेत्रो मूखकर पीला पड गया। रान को गवरीला उसे पलग पर करघटे बदलने, आठे भरते मन्ता। बहुत सोच-विचार के बाद वह समझ गया कि पेत्रो गाव मे नही रहेगा, स्तेपी की अछूती श्यामल भूमि की छाती पर हल नही चलायेगा। पेत्रो को पाल-पोसकर बडा करनेवाला कारखाना एक न एक दिन उसे छीन ही लेगा और फिर से काले, मनहूस दिनो का क्रम शुरू हो जायेगा। बस चलता तो गवरीला घृणित कारखाने की ईट मे ईट बजा देता, उसे मिट्टी मे मिला देता ताकि वहा सिर्फ विच्छू बूटी और जगली घास ही उगे।

तीसरे दिन घाम की कटाई के समय जब वे दोनो पडाव पर पानी पीने आये, पेत्रो बोला

“बाबा, मै यहा नही रुक सकता। कारखाने मे जाऊंगा वह मुझे बुलाता है. मन मे उथल-पुथल करता है ”

“क्या यहा की जिदगी अच्छी नही है? ”

“नही, यह बात नही कारखाना अपना है, जब कोल्चाक* ने चढाई की तो डेढ हफ्ते तक उसकी रक्षा करते रहे, कोल्चाक के

* एडमिरल कोल्चाक (१८७४-१९२०) प्रतिक्रांतिकारी श्वेत सेना का नायक।-स०

लोगो ने बस्ती पर कब्जा करते ही नौ जनो को फासी दे दी। और अब जो मजदूर मौज में लौटें हैं, फिर से कारखाने को पैरों पर खड़ा कर रहे हैं वे खुद और उनके बाल-बच्चे भूखो मर रहे हैं, पर काम कर रहे हैं ऐसी हालत में मैं यहाँ कैसे रह सकता हूँ? मेरा जमीर क्या बोलेगा?"

"तुम क्या मदद कर पाओगे? एक हाथ तो तुम्हारा किसी काम का नहीं।"

"बाबा, आप भी अजीब बात करते हैं। वहाँ एक-एक हाथ अनमोल है।"

"मैं तुम्हें नहीं गेकता। जाओ।" गवरीला ने खुद को ढाढ़स देते हुए कहा, "बुढ़िया को मत बताना कह देना कि लौट आओगे कुछ दिन रहकर लौट आओगे नहीं तो तड़प-तड़पकर मर जायेगी एक तुम ही तो हमारा सहारा थे"

आशा की अंतिम किरण बची थी, गवरीला ने फुसफुसाकर, हाफते हुए पूछा

"क्यों मचमुच लौट आना। हूँ? क्या हमारे बुढ़ापे पर इतना भी तरस नहीं खाओगे क्यों?"

* * *

छकड़ा चू-चू कर रहा था, बैल अपनी मौज में चल रहे थे, पहियों से कुचलकर खाड़िया मिट्टी खर-खर बिखर रही थी। दोन के किनारे किनारे बल खाती सड़क चैपल के पास बायाँ ओर मुड़ रही थी। मोड़ से कम्बे के गिरजे और बागों की हरियाली दिखायी पड़ रही थी।

गवरीला रास्ते भर बतियाना जा रहा था। वह मुस्कराने की कोशिश करता।

"इस जगह कोई तीन साल पहले लड़ाकिया दोन में डूब गयी थी। इसीलिये चैपल बना है।" उसने चाबुक की मूठ से चैपल की मनहूस चोटी की ओर इशारा किया। "यही हम विदा लेगे। आग रास्ता नहीं है। पहाड़ी खिसक गयी है। यहाँ से कम्बे तक कोई वेस्ता भर की दूरी होगी, धीरे-धीरे पहुँच जाओगे।"

पेत्रो ने पेटो में लटके खाने के भोले को ठीक किया और छकड़े

से उतर गया। बड़ी मुश्किल से रुलाई को दबाकर गवरीला ने चाबुक जमीन पर पटका और कापती बाहे फैलायी।

“अलविदा, मेरे प्यारे। तुम्हारे बिना हमारे लिये सूरज डूब जायेगा ” और पीडा से विकृत, आसुओ से भीगे चेहरे को तिरछा करके तीखी, चिल्लाहट भरी आवाज में बोला “बेटे, खाने की चीजे तो नही भूले? बुढिया ने तुम्हारे लिये बनायी नही भूले? ठीक है, अलविदा। बेटे प्यारे, अलविदा। ”

पेत्रो लगडाता हुआ सडक के मकरे किनारे पर चल पडा, वह लगभग दौड ही पडा था।

“लौट आना। ” छकडे का महाग लकर गवरीला चिल्ला रहा था।

“नही लौटेगा। ” मन में गूज रहा था।

मोड पर आखिरी बार सुनहरे बालोवाला प्यारा मिर चमका, आखिरी बार पेत्रो ने टोपी हिलायी और उम स्थान पर जहा उमका पाव पडा, चचल हवा ने सफेद धूल का गुबार उडा दिया।

इंसान का नसीबा

१९०३ मे कम्युनिस्ट पार्टी की मदद
यूगोस्लाविया ग्रिगोर्येव्ना लेवीत्स्काया को समर्पित

मंडाई के बाद का पहला वसन्त बड़ी तेजी में, बहुत जोर-शोर दिखाता ऊपरी दोन के प्रदेश में आया। मार्च के अंत में अज़ोव सागर के किनारे से गरम हवाये बहने लगी और दो दिनो में ही दोन नदी के बायें तट की सारी बालू के ऊपर की बर्फीली चादरें हट गयी। स्तेपी में बर्फ से भरी हुई घाटिया, नाले और खड्ड फूल-से गये, स्तेपी की नदियां बर्फ तोडकर पागलो-सी उमड़ चली। रास्तों में आना-जाना बिल्कुल दुश्वार हो गया।

माल के इस अटपटे समय में कुछ ऐसा हुआ कि मुझे बुकानोव्स्काया कस्बे में जाना पड़ा। दूरी कोई विशेष न थी—बस, कोई साठ किलोमीटर,—पर यही किलोमीटर जब तय होने पर आये तो काले कोसो में बदल गये।

मैं अपने मित्र के साथ मूर्योदय के पहले खाना हुआ। मोटे-ताजे घोड़ों ने जोतों पर पूरा जोर मारा, फिर भी भारी गाड़ी मुश्किल से खिंची। पहिले धुरो तक बालू, जमे हुए पानी और बर्फ के मिले-जुले गारे में धंसते रहे। एक घंटे के अंदर-अंदर घोड़ों की बगलो और कूल्हों के बंदों के नीचे से झाग के बड़े-बड़े दूधिया चकते नज़र आने लगे। सुबह की ताज़ा हवा घोड़े के पसीने और साज़ पर पतने हुए और धूप में गर्म हो गये तारकोल की तीव्र और नशीली बास से भर गयी।

जहां घोड़ों को गाड़ी खींचने में खास कठिनाई होती, वहां हम उतर जाते और पैदल चलते। हमारे पैर जहां भी पड़ते, बूटों के नीचे की ढीली बर्फ पिस-सी उठती और आगे बढ़ना बहुत ही टेढ़ी खीर लगता। परन्तु रास्ते के किनारों पर अब भी जमे हुए पानी की चमचमाती

परत बिछी हुई थी और उधर से जाना और भी दुस्तर था। गरज यह कि येलान्का नदी को पार करने तक की तीस किलोमीटर की मजिल तय करने में हमें छह घंटे लगे।

मोखोव्स्की गांव के सामने बहती हुई छोटी-सी नदी जो गरमी में जगह-ब-जगह सूखी रहती थी, अब आल्डर के पौधों से भरी दलदलों की एक किलोमीटर की चौड़ाई तक बाढ़ में उमड़ी मिली। यहां हमें नदी को पार करने के लिये एक नाव का सहारा लेना पड़ा चपटे तले की और अविश्वसनीय। उसमें अधिक में अधिक तीन आदमी एकमात्र बैठ सकते थे। तो, अब हमने घोड़े वापस कर दिये। उस पार सामूहिक फार्म के शेड में खड़ी एक जीप हमारा इन्तजार कर रही थी। जीप पुरानी थी, उसके सारे अजर-पजर ढीले थे, और वह जाड़े में वहां छोड़ दी गयी थी। मैं और ड्राइवर हिचकते-झिझकते उस हिलती-डलती डोंगी पर सवार हुए। मगर मित्र मारे सामान के साथ किनारे पर ही रह गया। डोंगी ने किनारा छोड़ा ही था कि सड़े हुए तम्बों में पानी के छोटे-छोटे फव्वारे चालू हो गये। हमने जो हाथ आया उससे दरंगे भरी और रह-रहकर पानी बाहर उलीचने रहे। उस तरह एक घंटे में हम नदी के दूसरे किनारे पर पहुंचे। ड्राइवर गांव में जीप लाया, नाव के पास गया और डाढ़ उठाते हुए बोला

“अगर यह सड़ा-गला, पुराना तमला टुकड़े-टुकड़े होकर पानी में बह न गया, तो मैं दो घंटे में आपके दोस्त को लेकर वापस आ जाऊंगा। हा, इसमें कम वक्त न लगेगा।”

गांव नदी में काफी दूर था, और नीचे, पानी के पास एक अजब-सा मन्नाटा था। ऐसा मन्नाटा वीरान जगहों में या तो शरद के काफी बीतने पर छाता है, या फिर वसन्त के बिल्कुल आरम्भ में धिरता है। पानी में सीली-सीली बू आ रही थी और इस वृत्त में सड़ते हुए आल्डरों की सड़ायध मिली हुई थी। बकाइनी धुंध में नहायी दूर की स्तेपी में धरती की मोधी-मोधी बाम हवा के हलके-हलके लहरों के परो पर पड़ी चली आ रही थी। यह सदाबहारों बास इन्द्रियों की पकड़ में भी कठिनता में ही आती थी और ऐसी जमीन की थी, जिसे हाल ही में बर्फ की जकड़ से छुटकारा मिला था।

पानी में थोड़ी ही दूर बालू के ऊपर बेंतों और शाखों की एक टूटी हुई बाड़ पड़ी थी। मैं उस पर बैठ गया और सिगरेट का धुआ

उड़ाने की सोची। पर जब मे हाथ डाला तो निराशा हाथ लगी—सिगरेट का पैकेट भीग गया था। बात यह है कि पानी की मतह से सटी नाव के ऊपर से गुजरती हुई एक लहर मुझे कमर तक मटियाने पानी से तर-ब-तर कर गयी थी। उस समय सिगरेट की बात सोचने का समय नहीं था मेरे पाम, क्योंकि नाव को डूबने से बचाने के लिये मुझे उसी क्षण डाइ रखकर पानी उलीच-उलीचकर बाहर फेंकना पडा था। परन्तु इस समय अपनी लापरवाही पर काफी खीझ आयी। मैंने बहुत सावधानी से गीला, भूरा-सा पैकेट जब मे निकाला और उकड़ू बैठ एक-एक करके सारी सिगरेटे बाइ पर बिछाने लगा।

समय दोपहर का था। मूरज मई के दिनो की तरह तप रहा था। मुझे उम्मीद थी कि सिगरेटे देखते ही देखते सूख जायेगी। गरमी तो सचमुच ऐसी थी कि मुझे अफसोस होने लगा कि इस सफर के लिये मैंने यह फौजी पतलून और यह रूई की जैकेट आखिर क्यों पहनी? जाड़े के बाद यह सचमुच पहला गरम दिन था। अपने को पूरी तरह उम वीगने और मल्लाटे को मौप, अपनी पुरानी गर्म फौजी टोपी उतारकर वह बैठना, मशक्कत की खेवाई के बाद बाल मुछाना और धधलाये नीलम के बीच लहराते, उमड़ने-धुमड़ते बादलो को भर आख देखना मुझे बहुत भला लगा।

इसी समय गाव के सिरे के घरों के पीछे से निकलकर मैंने एक आदमी को गर्मने पर आते देखा। वह एक लडके का हाथ पकड़े आ रहा था। लडके की उम्र मुझे कोई पाच या छह वर्ष की लगी अधिक नहीं। सो वे दोनों थके-मादे-मे नदी का पार करने की जगह की ओर बड़े जा रहे थे पर जीप के पास पहुचकर मुंडे और मेरी तरफ आने लगे। आदमी कद का लम्बा था, उसके कधे थोडे झुके हुए थे। वह सीधा मेरे पाम आया और भारी-भरकम आवाज मे बोला

“नमस्ते भैया।”

“नमस्ते,” मैंने उसके बड़े-मे, खुरदरे हाथ से हाथ मिलाया।

आदमी लडके की ओर झुका और बोला

“चाचा को नमस्ते कहो, बेटे। लगता है तुम्हारे बापू की तरह यह भी कोई ड्राइवर है। फर्क सिर्फ यह है कि हम और तुम चलाने थे ट्रक और यह इस छोटी-सी मोटर को दौडाता है।”

बच्चे ने आममान की तरह निर्मल अपनी आखे मेरी आखो मे

डाली और जग-मा मुस्कराते हुए अपना गुलाबी, ठण्डा हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने धीरे-से उसका हाथ दबाते हुए पूछा

“ठण्डक से ठिठुरे जा रहे हो, बूढ़े-बाबा? आज तो ऐसी गर्मी है और तुम्हारा हाथ इतना ठण्डा है, यह क्यों?”

हृदयस्पर्शी, बाल-सुलभ विश्वास के साथ लडका मेरे घुटनो के पास सट आया और अचरज से अपनी छोटी-छोटी, पीली भौंहे ऊपर उठाते हुए बोला

“मैं बूढ़ा थोड़े ही हूँ, चाचा, मैं तो अभी लडका हूँ और ठण्ड भी मुझे नहीं लग रही है, मेरे हाथ इसलिये ठण्डे हैं कि मैं बर्फ के गोले बना रहा था।”

पीठ पर से अधभरा सफरी थैला नीचे उतारते हुए पिता धीरे-से मेरी बगल में आ बैठा और बोला

“मेरा यह नन्हा-मुन्ना मुमाफ़िर मेरा याग मुसलसल सिरदर्द है। इसने मुझे थका मारा है। आप लम्बा डग भरिये तो लडका दुलकी मारने लगता है, खैरियत तभी है कि आप उसके छोटे-छोटे कदमों से कदम मिलाकर चले। नतीजा यह कि जहाँ एक कदम में मेरा काम चल सकता है, वहाँ मुझे तीन कदम भरने पड़ते हैं और हम घोंडे और कछुए की तरह चलते जाते हैं। फिर यह क्या कर रहा है और क्या नहीं, इसके लिये दो आखे आपके सिर के पीछे होनी चाहिये। आपने पीठ फेरी नहीं कि साहबजादे या तो किसी गढ़े-गढ़ैया में उतर गये या जमे हुए पानी के किमी टुकड़े को तोड़ने में जुट गये और उसे मिठाई की तरह चूसने लगे। नहीं भाई, ऐसे बच्चे को साथ लेकर सफर करना आदमी के बस की बात नहीं कम से कम पैदल तो बिल्कुल ही नहीं।” इसके बाद थोड़ी देर तक वह चुप रहा और फिर उसने पूछा, “और तुम तुम अपनी कहो, भाई, अपने चीफ का इन्तज़ार कर रहे हो?”

उसे यह बतलाना अब मुझे अच्छा नहीं लग रहा था कि मैं ड्राइवर नहीं हूँ, अतएव मैंने उत्तर दिया

“हाँ, इन्तज़ार करना ही पड़ रहा है।”

“चीफ तुम्हारा उम पार से आनेवाला है?”

“हाँ, उस पार से ही आयेगा।”

“तुम्हें पता है, क्या नाव जल्दी ही आनेवाली है?”

“कोई दो घंटे में आयेगी।”

“काफ़ी वक़्त है। ख़ैर, तो ज़रा सांस ले ली जाये। मुझे कोई जल्दी नहीं। मैं तो इधर से गुज़र रहा था कि तुम पर नज़र पड़ी। सोचा कि कोई अपना ही ड्राइवर भाई है, इन्तज़ार कर रहा है। चलूं मैं भी वहीं, उसके साथ दो-चार कश तम्बाकू के ही हो जायें। अकेले कुछ मज़ा नहीं आता ... ऐसे ही जैसे अकेले दम तोड़ने में कुछ मज़ा नहीं। लगता है कि ठाठ से जीते हो, सिगरेटें पीते हो। भीग गई सिगरेटें, ऐं? ख़ैर, मेरे भाई, गीला तम्बाकू और डाक्टरी इलाज के बाद घोड़ा, दोनों के दोनों बेकार। तो आओ फिर, सिगरेट के बजाय देसी तम्बाकू का ही सहारा लिया जाये।”

उसने अपने हल्के, खाकी पतलून की जेब से नली की तरह लिपटी हुई गुलाबी रंग की एक पुरानी-सी थैली निकाली और खोली तो मेरी निगाह एक कोने पर कढ़े कुछ शब्दों पर पड़ी। लिखा था: “प्यारे फ़ौजी को—लेबेद्यान्स्क माध्यमिक स्कूल की छठी श्रेणी की एक छात्रा की ओर से।”

हमने देमी तेज़ तम्बाकू के कश लगाये और बहुत देर तक मौन साधे रहे। फिर मैंने सोचा कि इस लड़के के साथ वह आखिर जा कहां रहा है, और क्या ऐसा काम आ पड़ा कि इन बुरे रास्तों का मुंह देखना पड़ा। परन्तु मैं पूछू-पूछू कि उसने ही पहले सवाल कर दिया:

“क्या पूरी लड़ाई भर ड्राइवरी ही करते रहे?”

“लगभग पूरी लड़ाई भर।”

“मोर्चे पर?”

“हां।”

“ख़ैर, भाई मेरे, वहां भी ऐसी मुसीबतें देखी, ऐसी तकलीफें झेली कि ... कुछ न पूछो ... ज़रूरत से ज़्यादा झेली ...”

उसने अपने बड़े, काले हाथ घुटनों पर टिकाये और कंधे झुका लिये। मैंने बग़ल से उस पर निगाह डाली तो अजीब ढंग से परेशान हो उठा ... आपने कभी ऐसी आंखें देखी हैं जिनमें राख का छिड़काव नज़र आये, ऐसी कलप और उदासी से भरी आंखें कि उनकी तरफ देखने की हिम्मत ही न हो? बस, तो संयोग से मिले मेरे इस परिचित की आंखें बिल्कुल ऐसी ही थीं।

उसने बाड़ से ऐंठी हुई एक टहनी तोड़ी और एक क्षण तक बालू

पर उससे कुछ अजीब-सी चित्रकारी करता रहा। फिर बोला

“कभी-कभी रातो को मैं पलक तक नहीं झपका पाता। मैं बस अधेरे में आखे गड़ाये रहता हूँ, गड़ाये रहता हूँ, और सोचता रहता हूँ—‘जिन्दगी, तुमने ऐसा क्यों कर किया, तुमने इस तरह मेरी आत्मा को कुचल क्यों डाला? तुमने मेरे तन-बदन से सारी जान क्यों निकाल ली, इस तरह बेजान क्यों कर दिया?’—पर न तो इन सवालों का कोई जवाब मुझे अधेरा देता है, और न दमकते सूरज का उजाला नहीं, मुझे कोई जवाब नहीं मिलता और शायद मुझे कोई जवाब कभी मिलेगा भी नहीं।” इतना कहकर वह अपने आप में आया, अपने बेटे को स्नेह से थपथपाते हुए बोला, “मुन्ने, जाओ, पानी के पास जाकर खेलो, बड़ी नदी हो तो छोटे बच्चों को खेल-खिलवाड़ के लिये कुछ मिल ही जाता है। पर देखो, ख्याल रखना तुम्हारे पैर न भीगने पाये।”

धुआ उड़ाते समय मैंने मौका मिलते ही तेजी से एक निगाह बाप और बेटे दोनों पर डाली और एक बात मुझे बहुत ही अजीब लगी। लड़के के कपड़े सादे, पर अच्छे और साफ थे। मेमने की पुरानी खाल के अस्तरवाला, लम्बे पल्ले का छोटा-सा कोट उसके बदन पर बहुत ही फिट था, छोटे-छोटे बूटों में ऊनी मोजों के समाने की अच्छी गुजाइश थी और कोट की एक आस्तीन का फटा हुआ हिस्सा बहुत ही सफाई से सिला हुआ था। यानी यह कि इन सब में मा का कुशल हाथ था। पर पिता का हिमाब-किताब बिल्कुल दूसरा था। उसकी रुईदार जैकेट कई जगह में जली हुई थी और रफू भटा था। पुराने, खाकी पतलून पर लगा पैबंद ठीक से सिला न था, मोटे-मोटे टाके लगाकर यो ही जोड़ दिया गया था। हाथ किसी मर्द का मालूम होता था। उसके फौजी जूते लगभग नये थे, पर मोटे ऊनी मोजों में छेद ही छेद थे। उन्हे जैसे किसी औरत का हाथ नसीब ही न हुआ था इस पर भी अनुभव मैंने यही किया कि या तो यह आदमी विधुर है या इसके और इसकी पत्नी के बीच कुछ न कुछ गड़बड़ है।

उसने पानी की ओर दौड़ते हुए अपने बेटे को गौर से देखा, खासा और फिर बोलना शुरू किया। मैं उसकी बात पूरे ध्यान में सुनने लगा। कहने लगा

“गुरु में मेरी जिन्दगी बहुत ही साधारण रही है। मैं बोरोंनेज

प्रदेश का रहनेवाला हूँ और वहाँ सन् १९०० में मेरा जन्म हुआ। गृह-युद्ध के जमाने में मैं क्विक्वीड्जे डिविजन में लाल सेना में रहा। १९२२ के अकाल के वक्त मैं कुबान चला गया और वहाँ कुलको के लिये बैल की तरह खटा। इसलिये ही जिन्दा बच गया। पर मेरे परिवार के सारे लोग यानी पिता, माता और बहन घर पर ही बने रहे और भुखमरी के शिकार हो गये। इस तरह मैं अकेला रह गया। जहाँ तक और नाते-रिश्तेदारों की बात है, मेरा नामलेवा कहीं कोई नहीं। खैर, तो एक साल बाद मैं कुबान से लौटा और अपनी झोपड़ी बेचकर वोगेनेज चला गया। वहाँ पहले मैंने बढई का काम किया, फिर एक कारखाने में चला गया और मिस्त्री का काम सीख लिया। इसके बाद जल्दी ही मेरी शादी हो गयी। मेरी पत्नी का लालन-पालन बाल-मदन में हुआ था। वह भी अनाथ थी। हाँ, पत्नी मुझे कायदे की मिल गयी। बड़ा मधुर स्वभाव, बड़ी हँसमुख, हमेशा मेरी बड़ी चिंता करनेवाली फूर्तिली और चुस्त भी वह मुझमें कहीं ज्यादा थी। बचपन में उमने दुख-मुसीबते देखी थी। हो सकती है कि इस बात का भी उसके चरित्र पर प्रभाव पड़ा हो। तुम उसे अजनबी के नाते देखते तो कह लो कि कहीं कोई भी खाम बात न लगती, पर, देखो न, मैं तो उसे ऐसे नहीं देखता था। उसका पूरा व्याक्तन्व मेरे सामने रहता था, और मेरे लिये उसमें ज्यादा खूबमूरत और प्यारी औरत न तब दुनिया में थी और न अब कभी होगी।

“मैं काम से घर आता—थकान में चूर और कभी-कभी तो ऐसा बौखलाता-बरसता कि कुछ न पूछो। पर नहीं, वह रूखाई और सस्ती का जवाब सस्ती से कभी न देती। हमेशा सदय और शान रहती, कम आमदनी होते हुए भी मुझे बढिया से बढिया भोजन खिलाने की कोशिश करती। उसे देखते ही मन हल्का हो जाता और मैं एक क्षण बाद ही उसकी कमर में हाथ डालता और कहता ‘मेरी प्यारी-प्यारी डीरीना, मुझे बड़ा दुख है कि मैंने तुम्हारे साथ इस तरह का रूखा व्यवहार किया। जानती हो, आज काम पर दिन बहुत ही बुरा बीता।’ और फिर हममें सुलह हो जाती और मेरा चित्त स्थिर हो उठता। और भाई, तुम जानते हो, कि काम करनेवाले के लिये इसके क्या मानी होते हैं? सुबह आँख खुलती तो मैं पलंग से बन्दूक की गोली की तरह चालू होता और यह जा—वह जा कि फैक्टरी को रवाना।

फिर तो यह कि जिस काम को हाथ लगाता वही घड़ी की तरह सटीक चलता ! यानी पत्नी के रूप में सचमुच समझदार मित्र के साथ होने के मानी यही होते हैं।

“कभी ऐसा होता कि मैं तनख्वाह के दिन यार-दोस्तों के साथ ढाल लेता और फिर लड़खड़ाते हुए, गिरते-पड़ते घर आता। देखने में जरूर ही बहुत भयानक लगता होगा। ऐसे में किनारे की कुल्हियों-गलियों की तो बात क्या, बड़ी सड़क की चौड़ाई भी मेरे लिये कम पड़ जाती। उन दिनों मैं हट्टा-कट्टा, गठीला जवान था, काफ़ी शराब पचा सकता था, और बिना किसी की मदद-सहारे के पीने के बाद अपने आप घर जा सकता था। पर कभी-कभी आखिरी दौर में गाड़ी निचले गियर में आ जाती, और जानते हो, मामला हाथों और घुटनों के बल रेंगने तक आ पहुंचता। पर फिर भी पत्नी मेरी न मुझे डांटती, न फटकारती, न चीखती-चिल्लाती। मेरी इरीना केवल हस देती और सो भी ऐसी होशियारी से कि मैं नशे में उस हंसी का भी कोई शलत मतलब न लगा पाता। वह मेरे बूट खीचकर उतारती और फुसफुसाते हुए कहती, ‘अंद्रेई, अच्छा हो कि आज तुम दीवार की तरफ़ लेटो—कहीं नींद में लुढ़ककर नीच न जा रहो।’ और मैं जई के बोरे की तरह पलंग पर ढह पड़ता और मेरे सामने की हर चीज़ जैसे नाचने-सी लगती। फिर अनुभव करता कि वह हल्के-हल्के मेरा सिर सहला रही है और धीरे-धीरे प्यार भरे कुछ शब्द कह रही है। इस पर भी मुझे बराबर लगता कि उसका मन मेरे लिये दुखी है...

“सुबह वह मुझे काम पर जाने के कोई दो घंटे पहले जगा देती ताकि मैं बिल्कुल अपने होश-हवास में आ जाऊं और पूरी तरह चौकस हो जाऊं। वह जानती थी कि शराब पी लेने के बाद मैं कुछ खाता नहीं, इसलिये वह अचारी खीरा या ऐसा ही कुछ ले आती और खुमार तोड़ने के लिये छोटे-से गिलास में वोदका भर देती। कहती, ‘यह लो, अंद्रेई, लेकिन अब दुबारा इस तरह की पिलाई न करना, मेरे प्यारे।’ भला ऐसे और इस तरह विश्वास करनेवाले आदमी को नीचा कोई कैसे दिखला सकता है? मैं तुरन्त गिलास खाली कर देता, नज़रों से ही धन्यवाद देता, उसे चूमता और चुपचाप काम के लिये चल पड़ता। पर मेरे नशे की हालत में यदि वह एक शब्द भी मेरे खिलाफ़ कहती या कोसा-काटी और डांटना-डपटना शुरू कर देती तो मैं दुबारा

पीकर घर आता। ईश्वर जानता है कि मैं बिल्कुल यही करता। जिन परिवारों में पत्निया बेवकूफ होती हैं, वहां यही होता है। मैंने यह कितनी ही बार देखा है, और मैं यह अच्छी तरह जानता हूं।

“खैर, तो फिर जल्दी ही बच्चे पैदा होने लगे। पहले बेटा हुआ और फिर दो लड़कियां... बस, तो इसके बाद मैं अपने यात्र-दोस्तों से कट गया और अपनी सारी तनख्वाह घर लाकर पत्नी के हाथों में देने लगा। अब तक परिवार काफ़ी बड़ा हो गया था, और अब मैं पीने की बात सोच भी नहीं सकता था। छुट्टी के दिन मैं सिर्फ़ एक गिलास बीयर पीकर सन्तोष कर लेता था।

“१९२६ में मैं मोटरों में दिलचस्पी लेने लगा। मैंने ड्राइवरी सीखी और एक ट्रक पर काम करना शुरू कर दिया। फिर जब एक बार इम रास्ते पर पड़ गया तो दुबारा कारख़ाने में जाने को मन न हुआ। ट्रक चलाना मेरे जी को ज्यादा भाया। इस तरह दस साल मैंने यों बिता दिये कि मालूम ही न हुआ कि समय कब आया और कब निकल गया। सब कुछ एक सपना था जैसे। पर क्या होते हैं दस वर्ष! ज़रा किमी ढलती उम्र के आदमी से पूछ तो देखो कि तुम्हारी इतनी जिन्दगी कैसे बीत गई? मालूम होगा कि उसने ज़रा बराबर भी कुछ नहीं देखा! गुज़रा हुआ ज़माना धुंध के पीछे छिपी, एक किनारे पड़ी दूर की उस स्टेपी की तरह होता है। आज सुबह मैं उसे पार कर रहा था तो हर चीज़ चारों ओर साफ़ थी, पर अब मैं बीस किलोमीटर पार कर आया हूं तो धुंध का एक पर्दा-सा पड़ गया है। अब मैं न पेड़ों को झाड़-झंखाड़ में अलग कर देख सकता हूं और न जुते हुए खेत को चरागाह में अलगाकर।...

“उन दस वर्षों में मैंने दिन-रात काम किया, खासी रकम कमाई और हम दूसरों से कुछ उन्नीस ढंग से नहीं जिये। बच्चे हमारे दिलों की खुशी रहे। तीनों बच्चे स्कूल की पढ़ाई में अच्छे निकले और सबसे बड़ा बच्चा अनातोली तो गणित में ऐसा चमका कि उसका नाम एक केन्द्रीय अख़बार तक में छपा। वैसे यह बड़ी प्रतिभा उसे किससे मिली, कहां से मिली, यह मैं तुम्हें नहीं बतला सकता, मेरे भाई। पर मेरे लिये यह बड़े ही सुख की बात रही, और मुझे उस पर अभिमान रहा—बड़ा अभिमान रहा!

“दस वर्षों में हमने थोड़ी-सी रकम बचा ली और लड़ाई के पहले अपने लिये एक छोटा-सा घर खड़ा कर लिया—दो कमरे, स्टोर और गलियारा। इरीना ने दो बकरियाँ खरीद ली। भला हम और क्या चाहते? बच्चों की खीर के लिये घर में दूध, मिर के ऊपर छत, शरीर पर कपड़े और पैरों में जूते, यानी सभी कुछ था, और ठीक था। अगर कोई कसर थी तो सिर्फ यह कि घर के लिये जगह अच्छी न थी। जो जगह मुझे दी गयी थी, वह हवाई जहाजों के कारखाने से कोई बहुत दूर न थी। हो सकता है कि अगर मेरा छोटा-सा मकान वहाँ न होकर कहीं और होता, तो मेरी जिन्दगी शायद कोई दूसरा मोड़ ले लेती।

“और फिर छिड़ गयी लड़ाई। दूसरे दिन मेरे बुलावे के कागजात आ गये और इसके बाद—‘कृपया स्टेशन पर रिपोर्ट कीजिये। मेरे परिवार के चारों सदस्यों ने मुझे विदाई दी, यानी इरीना, बेटे अनातोली और मेरी दोनों बेटियों ने मुझे विदा किया। बच्चों ने हिम्मत से काम लिया, गोकि बेटियों की आँखों में रह-रहकर आँसू छलकते रहे। अनातोली थोड़ा-सा सिहरा, जैसे कि उसे सर्दी लग रही हो। उस समय वह सत्रह वर्ष का होने जा रहा था। लेकिन मेरी बड़ इरीना हम दोनों सत्रह साल साथ रहे थे, पर इस रूप में तो मैंने कभी उसे देखा ही न था। उस रात को मेरी कमीज और मेरा सीना उसके आसुओं में तर हो गये थे, और मुँह भी वही झड़ी थी। हम स्टेशन पर आये तो उसके लिये मेरा मन इतना दुःखा कि मैं उसकी आँख में आँख न मिला सका। आसुओं की बौछार में उसके होठ सूज गये थे, बाल शाल के बाहर निकले हुए थे और आँखें किसी बदहवास आदमी की तरह बेजान और धुंधलाई हुई थी। अफमगे ने रेलगाड़ी में सवार होने का हुक्म दिया, पर वह मेरे सीने पर ढह पड़ी, मेरी गरदन में हाथ डाल लिये, और मिर में पैर तक इस तरह कापने लगी, जैसे कि वह कोई ऐसा पेड़ हो, जिसे काटा जा रहा हो। बच्चों ने समझाने की कोशिश की और मैंने भी पर सागी कोशिश बेकार रखी। दूसरी ओरते अपने पतियों और बेटों से इधर-उधर की बातें करती रही, पर मेरी पत्नी तो शाख की पत्नी की तरह मुझसे चिपक गयी, सारे समय सिहरती रही और उसके मुँह में एक शब्द न फूटा। मैंने कहा, ‘अपने को सम्भालो, मेरी प्यारी इरीना। मेरे जाने के पहले मुझसे

कम मे कम दो बाने तो कर लो।' इस पर मिर्मिकियो के बीच उसने जो कुछ कहा, वह यह था - अद्वेई मेरे प्रियतम हम अब कभी नहीं एक-दूसरे से अब कभी नहीं मिलेंगे इस दुनिया में '

"इधर तो मेरा दिल खुद ही उसके लिये दर्द से फटा जा रहा था, और उधर वह मुझसे ऐसी बात कह रही थी। मुझे लगा कि उसे मोचना चाहिये कि उससे बिलुडना मेरे लिये भी कुछ आसान नहीं - फिर मैं किसी दावत-पार्टी में तो जा नहीं रहा। बस तो यह म्याल आते ही मैं अपने आपे में न रहा। मैंने उसके हाथ अपनी गर्दन से अलग किये और उसे एक ओर को हल्के-से झटक दिया। वह झटका मुझे तो हल्का-सा लगा पर उस समय मैं बेल की तरह मजबूत आदमी था। नतीजा यह हुआ कि वह कोई तीन कदम तक लडखडाती पीछे चली गयी। इसके बाद छोटे-छोटे कदम रखत हुए फिर मेरी ओर बढ़ी तो मैं चीख पड़ा। इसी तरह विदा दी जाती है न? तुम मेरे मरने से पहले ही मुझे दफन कर दना चाहती हो क्या? ' लेकिन फिर मैंने उसकी हालत ब्रिगडती देखी ता उसे अपनी बाहों में बांध लिया '

इसके बाद आपबीती कहनेवाले की आवाज उसका साथ न दे सकी। वह गकायक ही चुप हो गया। इस मौन में मैंने एक सिमकी-सी सुनी और उसकी भावना न अपनी गहराई मेरे अन्तर तक पहुँचा दी। मैंने कनखियों से देखा ता उसकी उन राख-सी धुधली आँखों में मुझे एक भी आस नजर न आया। वह मायूसी में सिग झुकाये बैठा रहा। उसके मन्त्र में पड़े, लटकते हाथ हल्के-हल्के काप रहे थे, उसकी ठोड़ी थरथरा रही थी और उसी तरह उसके हठीले होठ भी काप रहे थे।

"बीनी बाता को मत दाँहराओ मेरे दोस्त।" मैंने धीरे-से कहा, पर लगा कि उसने मेरी बात सुनी ही नहीं। फिर बड़ी चेष्टा से उसने अपने काँ साधा और अजब ढंग में बदली हुई, भगई-सी आवाज में बोला

'जिन्दगी के आखिरी लमहे तक, अपनी आखिरी सास तक उसे इस तरह धक्का देने व लिये मैं अपने को क्षम न करूँगा। '

अब वह फिर चुप हो गया और यह चुप्पी काफी देर तक बनी रही। उसने एक सिगरेट रोल करने की कोशिश की, पर अबबारी कागज का टुकड़ा उसकी उगलियों के बीच ताग-तार हो गया और

तम्बाकू घुटनो पर बिखर गया। आखिरकार उसने जैसे-तैसे एक भट्टी-सी सिगरेट रोल की, दो-चार लम्बे-लम्बे कश खीचे, फिर गला साफ किया और अपनी दास्तान जारी रखी

“मैंने किसी तरह अपने को इरीना से अलग किया, उसका चेहरा अपने हाथों से साधा और उसे चूमा। उसके होठ बर्फ की तरह ठड़े लगे। मैंने बच्चों से अलविदा कही और भागकर चलती हुई गाड़ी पर चढ़ गया। गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ी, और इस तरह मैं एक बार फिर अपने परिवार के सामने से गुजरा। मैंने देखा कि बेचारे मेरे अनाथ बच्चे एक-दूसरे से सटे हुए, हाथ हिला रहे हैं और मुस्कराने की कोशिश कर रहे हैं, पर मुस्कान है कि चेहरे पर आने का नाम ही नहीं ले रही है। मैंने देखा कि इरीना हाथों से सीना थामे हैं, उसके होठ खड़िया से मफेद पड़ गये हैं, वह कुछ बुदबुदा रही है, टकटकी बाधकर देख रही है और उसका सारा शरीर इस तरह आगे की ओर झुका हुआ है, जैसे कि वह तेज उलटी हवा से लड़ती हुई आगे बढ़ने की कोशिश में हो उसका यही चित्र हमेशा-हमेशा, जिन्दगी भर मेरी आँखों के सामने रहेगा—हाथों से सीना थामे, मफेद होठ और आसुओं से भरी हुई फटी-फटी-सी आँखें अक्सर इमी रूप में तो मैं उसे अपने सपनों में देखता हूँ क्यों मैंने उसे इस तरह धक्का दिया था? आज भी जब यह याद करता हूँ तो मुझे ऐसे लगता है मानो कोई कुन्द छुरी से मुझें हलाल कर रहा हो

“हमें उक्राइना में स्थित बेलाया त्सेर्गोव में अपने यूनिटों में जमा दिया गया। मुझे एक तीन टनी ट्रक मिली और इस ट्रक के साथ मैं मोर्चे पर गया। खैर, तो लड़ाई की चर्चा तुमसे क्या की जाये। वह तो तुमने खुद भी देखी है और तुम्हें पता ही है कि शुरू-शुरू में कैसा-क्या रहा। मुझे घर-परिवार से बहुत-सी चिट्ठियाँ मिलती पर मैं खुद कम ही लिखता। कभी-कभी लिखता, ‘सब कुछ ठीक है, दुश्मन से थोड़ा-बहुत लोहा ले रहे हैं। अभी बेशक हम कुछ पीछे हट रहे हैं, पर चिन्ता की कोई बात नहीं। हम जल्दी ही अपनी ताकत जुटायेगे, और ऐसी मुह की देगे कि जर्मनों को मजबूर होकर आगा-पीछा मोचना पड़ेगा।’ और भला लिखा भी क्या जाता? बड़ा विकट समय था। कुछ लिखने-लिखाने का मन ही नहीं होता था। वैसे यहाँ यह भी कह दूँ कि मेरी गिनती उनमें कभी नहीं रही भी नहीं जो पत्रों

मे रोने रोया करते। इसके साथ ही मोर्चे पर वे भी मुझे फूटी आखों न सुहाते जिनकी आखें डबडबाई रहनी, जो मतलब-बेमतलब हर दिन अपनी पत्नियों और प्रेमियों को खत लिखते और कागज पर भरी नाक छिनकते कि उफ, यहा की ज़िन्दगी का हाल कुछ न पूछो, बड़ी मुसीबत है, उफ, मेरी जान जा सकती है। तो, ये कुत्ते के पिल्ले, इस तरह शिकवे-शिकायत करने जाते, हमदर्दी जगाते जाते, और टसुए बहाते रहते। वे यह बान समझने ही नहीं थे कि घर-परिवार में उनकी मुसीबत की मारी पत्निया और बच्चे भी उतनी ही परेशानी की ज़िन्दगी बिता रहे हैं, जितनी कि हम यहा। यानी ये औरते और बच्चे मारा देश अपने कंधों पर साधे हुए थे और जरा सोचो तो—कैसे कंधे हमारी उन औरतों और बच्चों के होने कि वे इम बोझ के नीचे दबकर पिस न जाते। और वे सचमुच दबकर पिस नहीं गये, उन्होंने यह बोझ सहा। फिर बच्चों की तरह ठुनकता कोई ऐसा ही आदमी दर्द में भरा खत लिख देता और मेहनत-मशक्कत करनेवाली किसी औरत के पैरों के नीचे की धरती ही खिमक जाती। ऐसे पत्र के बाद बेचारी दुःख में गहरी डूब जाती समझ न पाती कि कैसे अपने को सम्भाले और अपने काम का क्या करे। नहीं। यही तो तू मर्द बच्चा माबित होता है यही तो पता चलता है कि तू मिपाही है तुझे ही तो हर परिस्थिति का मामना और ज़रूरत होने पर हर दर्द सहन करना होता है। लेकिन अगर भाई, तुम तबीयत में मर्द में ज्यादा औरत हो तो जाओ और चौड़ा स्कर्ट पहनो ताकि तुम्हारे हड्डिले चतड ढक जाये फूले-फूले लगे, और तुम कम से कम पीछे से तो औरत लगो ही। उसके बाद चकन्दर की निगाई करो और गायें दहा, तुम मरीखे लोगों की ज़रूरत मोर्चे पर नहीं। तुम्हारे बिना भी वहा काफी बदबू है।

लेकिन मैं एक साल भर भी लडाई में हिस्सा न ले पाया उस बीच दो बार घायल हुआ मगर दोनों ही बार हल्की चोट आयी—एक बार बाजू पर तो दूसरी बार पैर पर, पहली बार एक हवाई जहाज में गोली लगी तो दूसरी बार बम के एक टुकड़े का शिकार हुआ। जर्मनों ने मेरी ट्रक की छत में और अगल-बगल में सुराख कर दिये, पर भाई, शुरू में तो मैं किस्मत का धनी माबित हुआ, किस्मत बराबर साथ देती रही। लेकिन बाद में नसीब फिर गया और १९४२ की मई में मैं लोजोवेकी में दुश्मनों के हाथों में पड गया और कैदी

बना लिया गया। बहुत ही अटपटी परिस्थिति में यह सब कुछ हुआ। जर्मन जोर-शोर से हमला कर रहे थे कि हमारी १२२ मिलीमीटरवाली तोपों के गोले खत्म हो गये। मेरी ट्रक के ऊपर तक गोले भरे गये और खुद मैंने इस तरह जुटकर काम किया कि मेरी कमीज पसीने से मरा-बोर होकर चिपक गयी। बहुत जल्दी करने की जरूरत थी, क्योंकि दुश्मन हमारे नजदीक आते जा रहे थे। बायीं ओर किसी के टैंक घड़घड़ा रहे थे तो दायीं ओर और सामने से गोलियां बरस रही थी। आसपास कुछ अच्छे न थे

“‘इस सब के बीच से निकल जा सकने हो, सोकोलोव?’ हमारी कम्पनी के कमांडर ने पूछा। पर उसके इस सवाल की कोई जरूरत न थी। सोचने की बात है कि वहां मेरे साथियों की जान पर आ बल सकती थी। ऐसे में मैं भला कैसे हाथ पर हाथ रखे बैठा रह सकता था? इसलिये मैंने जवाब दिया, ‘यह भी कोई पूछने की बात है? मुझे तो बीच से जाना ही है और बस।’ कमांडर बोला, ‘तो फिर बैठो ट्रक में और हवा हो जाओ।’

“और मैं चल दिया। इस तरह मोटर या ट्रक मैंने ज़िंदगी में क्या ही कभी चलाई थी। मैं जानता था कि मैं आलू लिये नहीं जा रहा हूँ। मैं जानता था ट्रक पर सामान ऐसा है कि मुझे ज्यादा से ज्यादा हाशियारी बरतनी है, पर यह मैं कर कैसे सकता था जबकि हमारे अपन जवान खाली हाथों नड रहे थे, और जबकि सारा रास्ता तोपों की आग के नीचे उबल रहा था। खैर, तो मैंने छह किलोमीटर की दूरी तय की और मैं गेन ठिकाने के पास पहुंच गया। अब मुझे तोपखानेवालों खाई तक पहुंचने के लिये मुड़कर मड़क छोड़ देनी चाहिये थी। पर, मैंने देखा क्या? मैंने देखा कि हमारी प्यादा पलटन के सिपाही मड़क के दोनों ओर के मैदान में से पीछे को भागे आ रहे हैं चारों तरफ में गोले बरस रहे हैं। अब मैं क्या करूँ? लौट जाऊँ यह तो करूँगा नहीं। तो, अब मैंने अब देखा न ताब, अपनी ट्रक पूरी रफ्तार में दौड़ा दी। तोपखाना और मेरे बीच सिर्फ़ कोई एक किलोमीटर का फासला था गाड़ी में मड़क से काट ही लाया था, पर भाई मेरे, अपने तोपखाने तक पहुंच नहीं पाया हो न हाँ, कोई लम्बी सार करनेवाली तोप ही रही होगी, ट्रक के पास ही उसने कोई भारी गोला फेका। मैंने न कोई धडाका मना और न कुछ और। कोई

चीज सिर्फ मेरा दिमाग भेदती चली गयी, और इसके बाद क्या हुआ, मुझे कुछ पता नहीं। मुझे याद नहीं कि मैं कैसे जिन्दा बचा और नहीं बता सकता कि कितनी देर तक खायी से कुछ दूर अचेत पड़ा रहा। मैंने आँखें खोली तो उठने न बना। मंग मिर झटके खाता रहा और मैं यो कापता रहा, जैसे कि मुझे बुझा हो। जिधर देखा उधर ही आँखों के आगे अधियारा नज़र आया। बायें कंधे के अन्दर कोई चीज मुझे खुरचती और पीसती-सी लगी। बदन के जोड़-जोड़ में इस तरह दर्द का अनुभव हुआ जैसे किसी के हाथ जो पड़ा, उसने वही उठा-उठाकर पिछले दो दिनों में बराबर मेरे बदन पर दे मारा हो। ऐसे में कितनी ही देर तक मैं पेट के बल पड़ा ऐंठता रहा और आखिरकार जैसे-तैसे उठा। पर फिर भी समझ न पाया कि मैं हूँ कहाँ और मुझे हुआ क्या है। मेरी याददाश्त जैसे गर लगाकर उड़ गयी थी। फिर से लेटने की बात माँचकर मंग मन डगता था। मुझे लगा कि अगर लेटा तो फिर उठने की नौबत कभी न आयेगी। इमलिये तूफान की लपेट में आये चिनार की तरह मैं जहाँ का तहाँ खड़ा इधर-उधर झटके खाता रहा।

“जब मैं सम्भला और मैंने चारों तरफ निगाह दौड़ायी तो मुझे लगा जैसे कि किसी ने मेरे दिल का प्लाम में जकड़ रखा है जो गोलें में ल जा रहा था, वे मंग चारों आर फैले पड़े थे मरी टूक भी पाम ही थी, टूटी-फूटी और मुड़ी-मुड़ायी। पहिये हवा में थे। और लडाई लडाई मेरे पीछे चल रही थी हा, मेरे ठीक पीछे चल रही थी।

“मुझे आज यह मानने में कोई शक नहीं कि यह बात समझते ही मेरी टांगें जवाब दे गयी और मैं ऐसे गिरा जैसे कि किसी ने कूल्हाड़े में मुझे काट डाला हो। सबब साफ है। मैंने अनुभव किया मैं कटकर दुश्मनों की कतारों के पीछे रह गया हूँ, याना साफ कहूँ तो, फार्मिस्टों का कैदी हो गया हूँ। ऐसे-ऐसे रंग दिखाती है लडाई

“नहीं, यह समझना बहुत आसान नहीं है, मेरे भाई, कि आदमी अपनी इच्छा के विरुद्ध, अनचाहे ही कैदी हो जाये और जिस पर खुद कभी यह बीती नहीं, उसे यह बात समझने में भी वक्त लगेगा कि आखिर इसके मानी क्या हाते हैं।

“इस तरह मैं वहाँ लेटा रहा कि जल्द ही मैंने टैको की गडगडाहट सुनी, चार मझाले जर्मन टैक पूरी रफ्तार में मेरी बगल से गुजरे

और जिस दिशा से मैं गोले लाया था, उस दिशा में बढ़े तुम क्या मोचते हो कि उस समय मुझ पर कैसी गुजरी होगी? इसके बाद तोपें खींचती हुई गाड़ियां गुजरीं और उसके पीछे एक चल-बावर्चीखाना। सबसे पीछे थी पैदल-सेना। पैदल-सेना बहुत नहीं थी—एक कम्पनी के बच्चे-खुचे जवान। मैंने जब-तब चोर नजर से निगाह डाली और फिर अपना चेहरा धरती में गड़ा लिया, आखे मूढ़ ली उन्हें देखते ही मुझे घृणा होने लगती, कलेजा मुह में आने लगता।

“जब मैंने सोचा कि सब के सब लोग जा चुके हैं तो सिर ऊपर उठाया और देखा कि कोई सौ कदम के फासले पर छह सबमशीनगन चालक मार्च करने चले आ रहे हैं। मेरे देखते-देखते वे सड़क छोड़कर सीधे मेरी ओर आये—छह के छह बिल्कुल चुपचाप। मैंने सोचा कि अब खैर नहीं। मैं लेटे-लेटे दम तोड़ना न चाहता था, इसलिये पहले तो मैं उठकर बैठा और फिर खड़ा हो गया। अब उन छह में से एक मुझमें कुछ कदमों की दूरी पर ठिठका और झटके से उसने अपनी सबमशीनगन कंधे में उतारी। आदमी जाने किम अजीब मिट्टी का बना होता है, पर उस समय मुझे जरा भी घबराहट नहीं हुई, मेरे दिल में फुरेरी तक नहीं हुई। मैं उस आदमी की तरफ देखता हुआ मोच रहा था—अभी चूटकी बजाते ही यह मेरा खेल खत्म कर डालेगा लेकिन जाने निशाना कहा साधेगा—मेरे सिर पर या मेरे मीने पर? जैसे कि मुझे इस बात में कोई फर्क पड़ता था कि वह मेरे बदन के किम हिस्से को छेदेगा।

“आदमी जवान था—हट्टा-कट्टा, बाल काले, होठ तागे की तरह पतले, और वह आखे मिकोड़कर देखता था। मुझे लगा कि यह आदमी तो न आव देखेगा न ताव और बस मुझे गोली से उड़ा देगा। मचमच ऐसा ही हुआ भी, उसने सबमशीनगन साध ली। मैंने उसकी आखों में आखे डाली और मुह में कुछ नहीं कहा। पर डमी समय उम्र में उसमें बड़ा कारपोरल या ऐंसे ही कुछ एक दूसरे आदमी ने चिल्लाकर कुछ कहा, फिर उस आदमी को एक ओर को ढकेला और मेरी ओर आया। अब वह अपनी भाषा में कुछ बुदबुदाया, मेरी कोहनी झुकाई और मेरी बांह की मांसपेशियां टटोलीं। मेरे मजबूत पुट्टे को टटोलते हुए खुशी से ‘ओ-ओ-ह’ कह उठा। उसने डूबते हुए सूरज की ओर जानेवाली सड़क की तरफ इशारा किया और जैसे कहा, ‘चलो, खच्चर, चलकर हमारे

राइख की सेवा करो।' कुत्ते का बच्चा, बड़ा मक्खीचूस किस्म का आदमी था।

“लेकिन काले बालोवाले की नजर मेरे बूटो पर थी। वे देखने में काफी अच्छे और मजबूत थे। मो, उसने हाथ से इशारा किया, ‘उतारो।’ मैं जमीन पर बैठ गया, जूते उतारे और उसकी ओर बढ़ाये। उसने उन्हें जैसे कि मेरे हाथ से छीन ही लिया। इसके बाद मैंने पैर की पट्टियाँ उतारी और उसकी आँखों में आँखें डालकर उसे देखते हुए उसकी ओर बढ़ायी। पर दम पर वह बरी तरह बिगड़ा, उमन गालियाँ दी और उसकी सबमशीनगन फिर तन गयी। दूसरे लोग हमते-हसते लोट-पोट होते रहे और फिर वहाँ से हट गये। महज उमी काले बालोवाले ने सत्रक तक पहुँचने के पहले मुड़कर मुझे तीन बार देखा। उसकी आँखों में भेड़िये के बच्चे की आँखों जैसी आग धधक रही थी। ऐसा लगता था माना उसने नगी बॉल्क में उसका जूते उतरवा लिये हों।

‘तो दोस्त हो ही क्या सकता था।’ मैं मड़क पर आया वोगेनेज की जो बुरी से बुरी और भयानक गालियाँ याद आयीं वे बक दी और पश्चिम की ओर कदम बढ़ाये। अब मैं एक कैदी था।

‘पर मुझमें चलने की ताकत न रह गयी थी। इसलिये एक घंटे में सिर्फ एक किलोमीटर चल पाता था—इससे ज्यादा नहीं। चलता भी यो था कि जैसे शराब के नशे में होऊँ, यानी मैं सीधे बढ़ने की कोशिश करता, पर कोई चीज़ मुझे मड़क के एक सिरे से दूसरे सिरे की ओर ढकेल देती। इस तरह मैंने थोड़ी दूरी पार की कि मेरे अपने ही डिविजन की टुकड़ी के लोग बन्दी बने हुए मेरे बराबर आ पहुँचे। वे कोई दम जर्मन सबमशीनगनगो की हिरासत में थे। सब से आगे-आगे चलनेवाला जर्मन मेरे पास आया, उसने न कुछ कहा, न सुना और मेरे गिर पर सबमशीनगन की ठोकर दी। ऐसे में अगर मैं गिर पड़ता तो वह जर्मन तडाक में गोली चलाता और मुझे जमीन से पाट देता। पर मेरे साथी फौजियो ने मुझे गिरते-गिरते थाम लिया और टुकड़ी के बीच में कर लिया। कुछ देर तक मैं मुझे महारा दिये रहे। यही नहीं, मैं जब जरा सम्भला तो एक साथी ने कान में फुसफुसाते हुए कहा, ‘ईश्वर के लिये गिरना मत। जब तक जरा-सी भी शक्ति बाकी रहे, चलते जाओ, वरना ये लोग तुम्हें मार डालेंगे।’ मेरे

बदन मे बेशक बहुत ही थोड़ी शक्ति बच रही थी, फिर भी मैं जैसे-तैसे चलता रहा।

“ फिर ज्यो ही मूरज डूबा, जर्मनों ने गार्ड बढ़ा दिये। अब एक ट्रक में २० सबमशीनगनर और आये और हमे अधिक नेज रफ्तार से हाक चले। हममे से जो लोग बुरी तरह घायल थे वे बाकी लोगों के कदमों से कदम मिलाकर न चल सके और उन्हें जर्मनों ने रास्ते में ही गोली से उड़ा दिया। दो आर्मीयो ने भाग निकलने की कोशिश की, पर यह भूल गये कि चादनी रात में आदमी एक मील की दूरी तक मैदान में नजर आता है। मतलब यह कि गोलियों से भन दिये गये। आधी रात होते-होते हम एक अधजले गाव में पहुँचे। दुश्मन हमे चकनाचूर गुम्बदवाले एक गिरजे के अन्दर ले गये। रात हम सबन बिना फूस के एक तिनके के, पत्थर के फर्श पर बितायी। किसी के पाम ओवरकोट नहीं था। सब ट्यूनिंग पहने हुए थे इसलिये नीचे बिछाने के लिये कुछ नहीं था। हममें से कुछ के बदन पर तो ट्यूनिंग भी न थे, सिर्फ नीचे पहनने की कमीजें थी। ये लोग ज्यादातर नान-कमीशड अफसर थे। उन्होंने अपन ट्यूनिंग इसलिये उतार दिये थे कि वे भी माधायण फोजिया जेम नजर आय। तार्फियों के बदन पर भी ट्यूनिंग न थे। वे अधनगे ही तोपो पर अपना काम कर रहे थे कि उन्हें कैदी बना लिया गया था।

उस रात ममलाधार प्लानी बरसा और हम सब क सब तर-ब-तर हो गये। गिरज का गुम्बज तोप के भारी गोले या बम से उड़ गया था। छत भी बिल्कुल टटी-फूटी पड़ी थी यहा तक कि बदी के ऊपर भी चप्पा भर सूखा जगह नहीं थी। सा, हमन ठीक उसी तरह उस गिरजे में पूरी रात बितायी जैसे भेड़े एक अन्धरे बाड़े में। कार्ट आधी रात के समय किसी न मेरे बाजू पर हाथ रखा और पूछा ‘तुम घायल हो क्या मारथी’ मैंने कहा, ‘क्यों भाई तुम यह क्यों पूछ रहे हो?’ जवाब मिला ‘मैं डाक्टर हूँ—तुम्हारी किसी तरह की मदद कर सकता हूँ?’ मैंने उस बताया कि मेरा बाया कंधा आवाज करता है सूजा हुआ है और बहुत दर्द करता है। व्यक्ति ने दृढ़तापूर्वक कहा, ‘ट्यूनिंग और अन्दर की कमीज उतार डालो।’ मैंने ये उतार डाले और वह अपनी पतली-पतली उंगलियों से मेरे कंधे को इधर-उधर से टटोलने और दर्द पहुँचाने लगा। मैंने दात पीस और बोला, ‘तुम जानवरों

के डाक्टर होंगे, साधारण डाक्टर तो तुम हो नहीं सकते। जहाँ दर्द होता है, वही क्यों दबाते हो, मगदिल शैतान?’ पर वह उम्मी तरह दधर-उधर टटोलता रहा और फिर बिगड़ते हुए इस तरह बोला, ‘तुम्हारा काम है कि तुम अपना मह मिये रूहा, ममझे’ बड़े बक्की हो तुम तो। हिम्मत से काम लेना, अभी और जाग से दर्द होगा। और इसके बाद उसने मेरा हाथ इस तरह पेंठा कि मेरी आँखों से लाल लाल चिनगागिया-सी फूट पड़ी।

“मैं होश में आया तो मैंने उसमें पूछा ‘कम्ब्रान्त फासिस्ट, तुम यह करने क्या हो? मेरे बाजू का जोड़-जोड़ टूटा हुआ है और तुम उसे उस तरह पेंठते हो?’ वह धीरे-से हमारा और फिर बोला, मैं तो समझता था कि तुम मझ पर दाहिना हाथ जमा दोगे, पर लगता है कि तुम खामे ठण्डे स्वभाव के आदमी हो। बात यह है कि तुम्हारा हाथ टूटा नहीं था, जोड़ में खिमक गया था और मैंने उसे उसकी जगह पर जमा दिया है। हा तो अब कुछ पहले से बेहतर है न?’ और मचमच ही मूँझ कम दर्द होने लगा। मैंने डाक्टर को दिल में धन्यवाद दिया। वह अंधेरे में धीरे-से यह पूछते हुए आगे बढ़ा, ‘कोई घायल है?’ वह था असली डाक्टर। कैदी होने पर भी घुप अंधेरे में वह अपना महान कर्तव्य पूरा करता रहा।

“रात बड़ी बचैनी से भरी थी। सीनियर-गार्ड ने हमें जॉडो में गिरजे के अन्दर ढाकते हुए पहले से ही आगाह कर दिया था कि पेशाब-पाखाने के लिये भी बाहर नहीं जान दिया जायेगा। और किस्मत का फेर कि हमसे मे एक ईसाई को पाखाना लगा। कुछ देर तक तो वह टालता गया, पर अंत में रो पड़ा ‘मैं पवित्र स्थान को तो अपवित्र नहीं कर सकता। मैं आम्तिक ह मैं ईसाई ह’। यागो, मूँझे बनाओ मैं क्या करूँ?’ और तुम जानते ही हो अपने लोगों को? हमसे मे कुछ इस बात पर हमसे कुछ न भला-बुरा कहा और कुछ उसे उल्टी-सीधी मजाकिया मलाहते देते लगे। उसने हम सब का खामा मन बहलाया, मगर आखिर में नतीजा बहुत बुरा हुआ वह जोर से दरवाजा खटखटाने और यह प्रार्थना करने लगा कि उसे बाहर निकलने दिया जाये। उसकी प्रार्थना ‘स्त्रीकार’ की गयी एक फासिस्ट ने दरवाजे के बीच में गोर्लिया बरमानी शुरू कर दी, उसने उस ईसाई के साथ अन्य तीन लोगों को भी गालियों से भून डाला। इनके अलावा एक आदमी इतनी बुरी

तरह घायल हुआ कि सुबह होते-होते दम तोड़ गया।

“हमने मुर्दों को खींचकर एक तरफ किया, फिर चुपचाप बैठकर मन ही मन सोचने लगे कि श्रीगणेश तो कुछ अच्छा नहीं हुआ इसी समय फुसफुसाहट शुरू हुई और लोग एक-दूसरे से पूछने लगे कि कौन कहा का है और कौन किस तरह दुश्मन के हाथों में पड़ा, इसके बाद एक ही प्लाटून या एक ही कम्पनी के लोग अधेरे में ही एक-दूसरे को सम्बोधित करने लगे। अपनी बगल में ही मैंने धीरे-धीरे यह बात-चीत होती सुनी एक बोला, ‘अगर कल यहाँ से आगे ले चलने के पहले वे हमें कतार में खड़े करके पूछेंगे कि हममें से कौन कमिमार है, कौन कम्युनिस्ट है और कौन यहूदी, तो तुम अपने को छिपाने की कोशिश न करना, प्लाटून-कमांडर।’ इस तरह जान नहीं बचेगी। तुम्हारा ख्याल है कि तुमने अपना ट्यूनिंग उतार दिया है, इसलिये तुम मामूली फौजी समझ लिये जाओगे? इसमें कोढ़ नहीं धुलेगा। फिर मैं तुम्हारे कारण अपने को मुम्बित में नहीं डालूँगा। सबमें पहले तुम्हारी तरफ इशारा करूँगा। मैं जानता हूँ कि तुम कम्युनिस्ट हो। तुमने मुझे पार्टी में लाने के लिये डोरे डालने की भी कोशिश की थी। आज यहाँ तुम उसका जवाब दोगे।’ ये बातें जिस व्यक्ति ने कही, वह बिल्कुल मेरे पाम ही, बायीं ओर बैठा हुआ था। उसकी बगल में बैठे हुए दूसरे व्यक्ति ने अपने युवा स्वर में उत्तर दिया, ‘क्रीजेव, तुम्हारे मामले में हमेशा मेरे मन में यह शका बनी रही थी कि तुम अच्छे आदमी नहीं हो। यह बात ख़ास तौर पर तब मुझे महसूस हुई थी जब तुमन पार्टी का सदस्य बनने से इन्कार किया था और बहाना बनाया था कि तुम अपढ़ हो। लेकिन तुम गद्दार साबित होगे, यह मैंने कभी नहीं सोचा था। तुमने ७ साला स्कूल की पढ़ाई तो खत्म की है न?’ दूसरे आदमी ने अलमाये-सं स्वर में जवाब दिया, ‘हाँ, खत्म की है। तो इसमें क्या?’ इसके बाद कुछ देर तक वे दोनों चुप रहे। तब मैंने दूसरी आवाज पहचानी और प्लाटून-कमांडर को धीरे-से यह कहते सुना, ‘देखो, मुझे दुश्मनों को मत मौपना, साथी क्रीजेव।’ क्रीजेव हल्के-से हँस दिया, ‘तुम्हारे साथी मोर्चे के उस पार रह गये हैं, मैं तुम्हारा कोई माथी-वाथी नहीं, इसलिये मेरी मिन्नत समाजत करने में कोई लाभ नहीं होगा। मैं तो तुम्हारी तरफ इशारा करूँगा ही। अपनी जान तो आदमी को सबसे ज्यादा प्यारी होती ही है।’

“उनकी बातचीत बन्द हो गयी, पर इस कमीनी हरकत की बात सोचते ही मुझे अपने गरीब में फुरफुरी-सी अनुभव हुई। मैंने मन ही मन सोचा, ‘नहीं, कुतिया के पिल्ले, मैं तुझे तेरे इस कमाडर के माथ गद्दारी नहीं करने दूंगा। अपने पैरों के बल तो तू इस गिरजे में बाहर जाने में रहा, तुझे पावों में घसीटकर ही बाहर फेंकेगे।’ जब कुछ-कुछ उजाला हुआ तो मैंने वही एक बड़े थलथल चेहरेवाले आदमी को, सिर के पीछे हाथ बांधे, चित लेते देखा। उसकी बगल में एक छोकरा-सा बैठा था—उठी हुई छोटी-सी नाक, हाथ घुटनों के गिर्द, दुबला-पतला, पीला चेहरा और बदन पर महज एक कमीज। मैंने सोचा, ‘यह छोकरा इस साड को क्या साधेगा। मुझे ही इसका काम तमाम करना होगा।’

मैंने छोकरे के बाजू पर हाथ रखा और फुसफुसाते हुए पूछा, ‘तुम प्लाटून-कमाडर हो?’ लडके ने मुह से कुछ न कहकर सिर्फ सिर हिला दिया। मैंने चित लेते आदमी की ओर इशारा किया और कहा, ‘यही है न जो तुम्हें दुश्मन के हाथों मौत देना चाहता है?’ उसने फिर सिर हिलाकर हामी भरी। मैंने कहा, ‘तो अच्छा, उसके पैर कमकर पकड़ लो ताकि वह लान न चला सके। और देखो, जल्दी करो।’ अब मैं कदकर उस आदमी के ऊपर जा डटा, और मैंने अपनी उंगलियों में उसकी गर्दन जकड़ ली। उसे चीखने तक का मौका नहीं मिला। कुछ देर तक मैं अपनी पकड़ ज्यों की त्यों रखी और फिर हाथ ढीले कर दिये। उसकी जीभ बाहर लटक आयी। कर ले बेटा अब गद्दारी।

‘इसके बाद मेरा जी बड़ा ही रागब हुआ। हाथ धोने की बड़ी इच्छा अनुभव की जैसे कि मैंने आदमी का स्वात्मा न कर किसी रंगने हुए माप को कुचल डाला हो। जिन्दगी में पहली बार मैंने किसी की जान ली थी—मैं भी अपने ही एक आदमी की पर वह क्या साक अपना था। वह तो दुश्मन में भी गया-बीता था, गद्दार था। आखिर मैं उठा और मैंने प्लाटून-कमाडर से कहा, ‘साथी, यहाँ से कहीं और चलना चाहिये, गिरजा काफी बड़ा है।’

“जैसा कि क्रीज्नेव ने कहा था, सुबह पाँचे ही हम सबको गिरजे के बाहर कतार में खड़ा कर दिया गया। सबमशीनगनरो ने हमें चारों ओर से घेर लिया, और तीन जर्मन अफसर ऐसे लोगों को चुन-चुनकर अलग करने लगे जिन्हें वे खतरनाक समझते थे। उन्होंने पूछा, ‘कौन

कम्युनिस्ट, कौन अफसर और कौन कमिसार है ?' पर ऐसा कोई हाथ नहीं लगा। फिर यह कि हममें उन्हें कोई ऐसा गद्दार भी नहीं मिला, जो गद्दारी करता, यद्यपि हममें से लगभग आधे लोग कम्युनिस्ट थे, कितने ही अफसर और कितने ही कमिसार थे। इस तरह २०० से अधिक लोगों में से उन्होंने सिर्फ चार आदमी छाटे—आम फौजियों के बीच में एक यहूदी और तीन रूसी। इन रूसियों की इसलिये मुसीबत आयी कि उनके बाल काले और घुघराले थे। सो, जर्मन अफसर उनके पास आये और बोले, 'यहूदी ?' उन्होंने नीनो में से जिससे पूछा उसी ने अपने को रूसी बतलाया, पर उन्होंने कान ही नहीं दिया। 'कतार में बाहर आ जाओ।'—और बात खत्म।

“तो उन्होंने इन बदकिस्मतों को गोली से उड़ा दिया और हमें आगे हाक ले चले। जिस प्लाटून-कमांडर ने गद्दार का गला घोटने में मेरी मदद की थी वह पोजनान तक मेरे दाहिने चलता रहा। मार्च के पहले दिन तो वह रह-रहकर मेरे पास सट आता और चलने-चलने में हाथ कृतज्ञता में दबा देता। पर पोजनान में हम एक-दूसरे में अलग हो गये। घटना कुछ इस तरह घटी।

बान यह है भाई कि त्रिग दिन में दुश्मनों के हाथ पड़ा था उसी दिन में भाग निकलने की बात मेरे दिमाग में नाचने लगी थी। पर मामला पक्का होने पर ही कोशिश करना चाहता था। पोजनान पहुँचने तक के रास्ते में कोई ढग का मौका मेरे हाथ नहीं आया। पोजनान में हमें कैम्प में रखा गया यहाँ हमें लगा जैसे कि जो मझे चाहिये, वह मझ मिल गया। मई के महीने के आखिर तक हमारे कितने ही साथी पेचिश में मर गये—हमें उन्हें दफनाने के लिये कब्र खोदने को कैम्प के पास के एक छांटे-में जगल में भेजा गया। यहाँ पोजनान की जमीन खोदते समय मैंने जो डग-उधर नजर दौड़ायी तो देखा कि हमारे गार्डों में से दो तो बैठे कुछ खा रहे हैं और एक धूप में बैठा ऊँघ रहा है। बस तो मैंने अपना फावड़ा रखा और चुपके-से एक झाड़ी के पीछे जा छिपा और फिर मैं अपनी पूरी ताकत भर सीधे उस दिशा में भाग चला जिधर से मूरज निकला था

“स्पष्टतः गार्डों को काफी देर बाद ही मेरा ध्यान आया। मैं सुबकर ऐसा हो चुका था कि हड्डी-हड्डी गिन लीजिये। नहीं जानता कि मुझमें इतनी ताकत कहाँ से आ गयी कि मैंने एक दिन में लगभग ४०

किलोमीटर की दूरी तय कर डाली। पर बात कुछ बनी नहीं चौथे दिन जब मैं उस मनहूस कैम्प में काफी दूर निकल गया था, दुश्मनों ने मुझे पकड़ लिया। उन्होंने खून के प्यासे शिकारी कुत्ते मेरी खोज में मेरे पीछे लगा दिये थे। जई के एक अनकटे खेत में उन्होंने मुझे आ खोजा।

“सुबह-तड़के मैं एक खुले खेत में आ निकला तो दिन के उजाले में उसे पार करने की बात सोचकर मेरा मन काप उठा। जंगल और इस खेत के बीच कम से कम तीन किलोमीटर का फासला था, इसलिये मैं जई के बीच ज्यादा से ज्यादा दुबककर लेट रहा कि दिन कट जाये तो यहाँ से निकलूँ। यहाँ मैंने जई की बालों को मसला, कुछ दाने निकाटकर खाये और कुछ जेब में डाले कि कुत्तों को भूकने और मोटर-माइकल की घड़घड़ाहट की आवाज मेरे कानों में पड़ी मेरा दिल बैठ गया, क्योंकि कुत्ते नजदीक ही नजदीक आते जा रहे थे। मैं पल लेट गया और मैंने अपना चेहरा हाथों से ढक लिया ताकि वे मेरा मुह न नोच डालें। खैर, तो वे मेरे पास आ पहुँचे और पल भर में उन्होंने मेरे कपड़े-पतले तार-तार कर डाले। मेरे बदन पर कुछ न रह गया और इस तरह मैं बिल्कुल नंगा हो गया। अब कुत्तों ने मुझे जई के बीच उधर-उधर घसीटा और जो मन भाया सा किया। आखिर में एक बड़े वृत्त में मेरे सीने पर अपने अंगुली पंज जमाये और मेरे गले की ओर खुरगे-खुरगेच दारू की। लेकिन उसने फौरन दान नहीं गड़ाये।

‘दो मोटरमाइकलों पर जई जाये। उन्होंने पहले तो कमकर मेरी मरम्मत की और फिर मझ पर कुत्ते लुहा दिये कि बदन में तहाँ-तहाँ माम निकल आया। मैं बिल्कुल नंगा और खून में तर-ब-तर था। उसी हालत में वे मुझे कैम्प में वापस ले गये। इस तरह भागने के लिये मुझे एक महीने तक एकान्त में कैद रखा गया, पर जिन्दा मैं तब भी रहा जैसे-जैसे जिन्दा रहा ही।’

“भाई मेरे, कैदी की शकल में मझ पर क्या-क्या गुजरी उसे याद करके ही दिल भारी हो जाता है, और उस सब का बयान करना तो खैर और भी मुश्किल है। जब याद आता है कि वहाँ जर्मनी में हमारे साथ कैसा जानबूरे का सा व्यवहार किया गया जब वे अपने ही मगी-माथी याद आते हैं जिन्हें कैम्पो में तरह-तरह से मता-मनाकर मार

डाला गया तो कलेजा मुह को आ जाता है, नीचे की सास नीचे और ऊपर की ऊपर रह जाती है।

“उफ, कैद के दो मालो के दौरान मुझे कहा-कहा की खाक नहीं छाननी पड़ी। आधा जर्मनी तो नाप ही डाला होगा मैंने सैकमोनी में मैंने सिलीकेट पत्थरों के एक कारखाने में काम किया, रूहर प्रदेश में एक खान से कोयला निकाला बवारिया में कमर झुकाये हुए फावड़े चला-चलाकर पसीने-पसीने होकर गला। कुछ समय तक थुरीगेन में भी खटा। शैतान ही जानता है कि जर्मनी में कहा-कहा मारे-मारे नहीं फिरना पड़ा। जगह-जगह कुदरत के अलग-अलग नजारे देखने को मिले, पर जिस ढंग से उन्होंने हमें गोली में उड़ाया और मार-मारकर अधमरा किया, वह हर जगह एक जैसा ही रहा। नरक के इन अजदहों और आदमखोरो ने जिस तरह पीट-पीटकर हमारी खाल में भुस भरा, उस तरह तो हमारे यहाँ जानवरों को भी नहीं पीटा जाता। वे हम पर घुसे बरसाते, ठोकरें जमाते, रबड़ के डंडों से झोंगते, जो भी लोहा हाथ में आता उसे ही उठाकर दे मारते। राइफलों के कुदों और लकड़ी की अन्य चीजों की तो चर्र चर्चा ही क्या की जाये।

वे हमें इसलिये पीटते थे कि हम रूसी थे कि हम अब तक दुनिया में ज़िन्दा थे और कि हम उनके लिये खटते थे। वे इसलिये भी हमारी चमड़ी उधेड़ते थे कि उन्हें हमारा देखने का ढंग पसन्द नहीं आया था कि उन्हें हमारी चाल अच्छी नहीं लगी थी, कि उनके मनपसन्द ढंग में हम मूड नहीं पाय थे वे मारते ताकि हमारी जान निकाल ले, वे मारते कि हमारा ही खून हमारे गले में अटक जाये और हम मार खाते-खाते ही इस दुनिया में चल बसे। मैं समझता हूँ कि जर्मनी में उस समय हमें जलाने के लिये शायद काफी भट्टे नहीं थे

“फिर यह कि हम जहाँ भी जाते, खाना हमें एक-सा ही दिया जाता, यानी लकड़ी का बुरादा मिली ‘इरसात्ज’ गोटों और शलजम का पतला शोरबा। कहीं-कहीं हमें पीने को उबला हुआ पानी दिया जाता और कहीं-कहीं वह भी नहीं। इन बातों की चर्चा भी क्या की जाये? तुम खुद ही निर्णय कर सकते हो अब खुद ही सोच लो कि लडाई शुरू होने के पहले मेरा वजन ८६ किलोग्राम था और शरद के आते-आते मैं पचास किलोग्राम से अधिक न रह गया था, सिर्फ हड्डियाँ

रह गयी थी और हड्डियों के ऊपर की खाल। ताकत इतनी भी नहीं कि इन हड्डियों का ही बोझ ढोया जा सके। लेकिन इस पर भी काम तो करना ही पड़ता था, और सो भी बिना मुंह खोले। फिर यह कि काम भी ऐसा जो गाड़ी खींचनेवाले घोड़े का भी भारी पड़ता।

'सितम्बर के शुरू में हम १४२ मोवियत कैदियों को जर्मन कुस्त्रीन के पाम के कैम्प में ट्रेज्देन के कैम्प में ले गये। उस समय तक उस कैम्प में हमारे कोई दो हजार कैदी थे। तो हम सब पत्थर निकालने की खान में काम करते और जर्मन पत्थर अपने हाथों से काटते और तोड़ते थे। हमारे लिये मात्रा नय होती और हममें से हर एक को चार घन मीटर पत्थर हर दिन काटना पड़ता। जरा सोचो तो कि यह माधना पड़ता उस आदमी को जो किसी तरह अपने तन का बोझ ढो रहा था। नतीजा यह कि दो महीने के बाद हमारे दल के १४२ लोगों में से महज ५७ रह गये। क्यों क्या ग्याल है तुम्हारा, भाई? ऐसा बुरा वक्त गुजरा कि कुछ न पूछो।' हम अपने साथियों को दफनाने भी न पाये थे कि यह अफवाह कानों में पड़ी कि जर्मनों ने स्तालिनग्राद पर कब्जा कर लिया है और साइबेरिया की ओर आगे ही आगे बढ़ने जा रहे हैं। एक के बाद एक चोट दिल पर पड़ती। ये छोटे हमें इस तरह दबाये रखती कि हम जमीन से ऊपर नजर न उठा पाते, जैसे कि हम कह रहे हों कि हम जर्मनी की उस अजनबी धरती में ही समा दीजिये।' और ऐसे में हर दिन कैम्प के गार्ड पीते, गला फाड़-फाड़कर गाते और मनमानी गग-गलिया मनाते।

'एक दिन शाम को हम कचरे में अपनी बैरक में लौटे। सारा दिन पानी बरसता रहा था और हमारे तन के चिथड़े बिल्कुल तर-ब-तर हो गये थे। हम ठण्डी हवा के मारे कापते थे और हमारे दात किटकिटाने थे। चिथड़े सुखाने या तन गर्माने की कहीं कोई जगह नहीं थी, फिर भूख भी ऐसी लगी थी कि दम निकला जा रहा था। लेकिन शाम को हमें खाने को कुछ भी नहीं दिया जाता था।

"खैर, तो मैंने गीले चिथड़े उतारे, अपने सोने के पट्टे पर फेंके और कहा, 'ये लोग माग करते हैं कि हम चार घन मीटर हर दिन निबटाये, लेकिन हममें से हर एक की कब्र के लिये तो एक घन मीटर ही बहुत काफी होगा।' सिर्फ इतना ही कहा मैंने, लेकिन तुम यकीन करोगे कि हमारे अपने साथियों में से ही एक आदमी ऐसा कुत्ता निकला

जिसने जाकर कैम्प-कमांडर से चुगली खा दी और मेरे कडवे शब्द दोहरा दिये।

“कैम्प-कमांडर या वहा के लोगो के लफजो मे कैम्प-फूरेग एक जर्मन था और उसका नाम मूल्लर था - कद बहुत लम्बा नही, हट्टा-कट्टा, बाल मन के गुच्छे जैसे और खुद भी भूरा-भूरा-मा। उसके सिर के बाल भूरे थे, बरौनियो के बाल भी भूरे थे और आंखे भी भूरी-भूरी थी, फूली-फूली-सी। रूसी वह तुम्हारी और मेरी तरह बोलता था। उच्चारण कुछ-कुछ वोल्गा-प्रदेश के लोगो जैसा था, जैसे कि वही कही पैदा और बड़ा हुआ हो। रही गालिया देने की बात, ओह, सो कुछ न पूछो! जाने उम कम्बलन्त ने इस धधे में ऐसा कमाल कैसे हासिल किया था?

“जर्मनो के शब्दो मे ब्लाक यानी बैरक के सामने हमे कतार में खड़ा होने का हुक्म देता और अपने दुमछल्लो से घिरा दाहिना हाथ ताने हुए एक मिरे मे दूसरे मिरे तक बढ़ता चला जाता। वह चमड़े के दस्ताने पहनता और चमड़े के नीचे उंगलियों के बचाव के लिये सीमें की एक पट्टी टांती। वह हर दूसरे आदमी की नाक में नून की धार बहाता जाता। इसे वह 'इन्सुयेजाविरोधी टीका' कहता। और यह मिलामिला हर दिन चलता। कैम्प में कुल चार ब्लाक थे। एक दिन वह ये टीके एक ब्लाक के लोगो को लगाता तो दूसरे दिन दूसरे ब्लाक के लोगो को, और इसी तरह यह क्रम चलता जाता। आदमी पक्का हरामी था। एक दिन का भी नागा न करता। लेकिन एक बात थी जो वह बेवकूफ समझ नहीं पाता था। होता यह कि अपनी गश्त शुरू करने के पहले वह सामन आकर खड़ा हो जाता और अपने को तैयार करने के लिये गालिया देना शुरू करता। तुम जानते हो, गालिया देना तो जो भी भरा गालिया देता, और हम थोड़े हारिया उठते। देखो न भाई, लफज बिल्कुल अपने लगते और ऐसा अनुभव होता कि हवा का कोई झोका हमारे मुल्क-दश में आ गया है मैं सोचता हू कि अगर वह यह बात जानता कि उसकी गालियो और कोसा-कामी से हमें सुख मिलता है तो वह हरगिज रूसी में गालिया न देकर अपनी मातृभाषा का प्रयोग करता। और हमारा एक साथी, मास्कोवासी मेरा एक यार तो बहुत बौखला उठता। कहता, 'जब वह इस तरह गालिया देता है तो मैं तो आंखें मूंद लेता हू और ऐसा लगता है जैसे

कि मास्को मे हू और किमी बीयरखाने मे बैठा हू। कुछ ऐसा बहा का सा रंग होता है कि एक गिलास बीयर के लिये मन तडप-तडप उठता है।'

"तो, घन मीटिंगेवाली बात के दूसरे दिन कैम्प-कमांडर ने मुझे बुलवा भेजा। शाम को एक दुभाषिया और दो गार्ड हमारी बैरक मे आये और आवाज दी, 'मोकोलोव अट्रेई?' मैंने जवाब मे हा की। वे बोले, 'चलो, आओ. हमारे पीछे-पीछे, जल्दी करो श्रीमान कैम्प-फ़रेर ने खुद तुम्हे बुलाया है।' मैं आगे का साग कुछ फौरन ही समझ गया कि सीधे-सीधे गोली मार दी जायेगी।

"मेरे साथी भी यह बात जानते थे। मैंने उनसे अलविदा कही, एक लम्बी मास ली और गार्डों के पीछे-पीछे चल दिया। कैम्प के मैदान को पार करने हुए मैंने आख उठाकर सितारों को देखा, उनसे विदा ली और मन ही मन सोचा, 'खैर तुमने जुल्म-मुसीबत का अपना उधार पाट दिया, अट्रेई मोकोलोव, नम्बर ३३१। इस समय इरीना और बच्चों के लिये मेरा मन कलपा, पर मैंने अपने को माधा और बिना डगमगाये, एक फौजी की तरह पिस्तौल की नली का सामना करने के लिये साहस बटोरने लगा ताकि दुश्मन यह न ताडने पाये कि इस जिन्दगी मे अलग होते समय आखिरी वक्त मुझे कितनी तकलीफ हुई

"कमांडर के कमरे मे खिडकी के दासे पर फूल रखे थे और कमरा हमारे क्लबो के किमी भी कमरे को तरह साफ-सुथरा था। मेज के पास कैम्प के पाचो अफसर बैठे थे। वे स्नाप्स शराब ढाल रहे थे और मुअर की चरबी चबा रहे थे। मेज पर स्नाप्स शराब की खुली हुई एक बड़ी बोतल, गेटी, चरबी मिर्के मे खट्टे किये हुए मेब और तरह-तरह के डिब्बे खुले रखे थे। मैंने मभी चीजो पर एक उडती नजर डाली और नुम यकीन न करंग कि मेरा जी ऐसा खराब हुआ कि मैं होने-होने का हो गयी। बात यह है कि मैं भेडिये की तरह भूखा था और अब तक इन्मानी खुराक का जायका तक भूल चुका था। और यहा मेरी आखो के सामने तरह-तरह की चीजो के मजे उडाये जा रहे थे जैसे-तैसे मैंने अपनी मतली पर काबू पाया, मगर उस मेज से अपनी निगाह हटा पाने के लिये मुझे काफी कोशिश करनी पडी।

"मेरे ठीक सामने बैठा था मूल्लर शराब के नशे मे आधा चूर -

कभी एक और कभी दूसरे हाथ में पिस्तौल से खिलवाड़ करता हुआ। तो उसने अपनी निगाह मुझ पर गड़ा दी — बिल्कुल सांप की तरह। खैर तो, मैंने टूटी हुई एड़ियां आवाज़ करते हुए मिलायीं, एटेंशन खड़ा हुआ और ऊंची आवाज़ में कहा, 'फ़ौजी क़ैदी अंद्रेई सोकोलोव आपकी सेवा में हाज़िर है, श्रीमान कमांडर।' वह बोला, 'तो रूसी इवान, चार घन मीटर पत्थर की निकासी तुम्हारे लिये बहुत ज्यादा है, क्यों?' मैंने जवाब दिया, 'जी हां, श्रीमान कमांडर, बहुत ज्यादा है।' इस पर वह बोला, 'और एक घन मीटर तुम्हारी क़ब्र के लिये काफ़ी है?' मैंने कहा, 'जी हां, श्रीमान कमांडर, बहुत काफ़ी है, कुछ बच भी रहेगा।'

"वह उठा और बोला, 'मैं तुम्हें बड़ी इज़्ज़त बख्शांगा और इन शब्दों के लिये खुद गोली मारूंगा। लेकिन यहां ठीक नहीं, इसलिये वहां अहाते में चले चलो। वहां बाहर आराम रहेगा मरने में।' मैंने जवाब दिया, 'जैसा आप कहें।' अब वह एक मिनट तक खड़ा कुछ सोचता रहा, फिर उमने पिस्तौल मेज़ पर रखी, शनाप्स शराब से गिलास भरा, रोटी का एक टुकड़ा लिया, उस पर चरबी का एक छोटा-सा टुकड़ा रखा, सब कुछ मेरी ओर बढ़ाया और बोला, 'रूसी इवान, मरने के पहले, जर्मनों की विजय का ज़ाम पी लो।' •

"मैं शराब का गिलास और रोटी उसके हाथ से लेने ही वाला था, लेकिन जब मैंने उसके लफ़्ज़े मुने तो मुझे अपने अन्दर आग-सी जलती अनुभव हुई। मैंने सोचा, 'मैं एक रूसी फ़ौजी, जर्मनों की जीत का ज़ाम पीऊं? क्या और कुछ तुम मुझसे नहीं चाहोगे, श्रीमान कमांडर? मरना तो है ही मुझे, भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारी यह शनाप्स!'

"मैंने गिलास मेज़ पर रख दिया और उसके साथ ही रोटी भी। बोला, 'मेहमाननवाज़ी के लिये धन्यवाद, लेकिन मैं पीता नहीं।' वह मुस्कराया, 'तो तुम हमारी जीत का ज़ाम नहीं पीना चाहते? खैर, तो अपनी मौत का ज़ाम पीओ।' इसमें मेरा भला क्या जाता था? 'अपनी मौत और इस यातना से निजात के लिये,' मैंने कहा, गिलास उठाया और दो घूंटों में सारी शराब गले के नीचे उतार गया। पर रोटी मैंने छुई तक नहीं। मैंने हल्के-से अपने होंठ पोछे और कहा, 'इस खातिर के लिये धन्यवाद। मैं तैयार हूं।'

अब आप मुझे गोली से उडा सकते है, श्रीमान कमाडर।’

“मगर वह मुझे पैनी नजर से देखते हुए बोला, ‘मरने के पहले दो कौर मुह मे डाल लो।’ मैंने कहा, ‘पहले गिलास के बाद मैं कुछ नहीं खाता।’ इस पर उसने दूसरा गिलास भरा और मेरी ओर बढ़ाया। मैंने वह भी पी डाला, पर रोटी फिर भी नहीं छुई। मैंने हिम्मत को अपना हथियार बनाया और सोचा, ‘चलो, मरने के लिये बाहर अहाने मे जाने से पहले नशे मे हो लू।’ कमाडर की भूरी भौंहे ऊपर उठी, ‘लेकिन तुम खाने क्यों नहीं, रूसी इवान? शर्माओ नहीं।’ मैं अपनी बात पर अडा रहा, ‘माफ कीजिये, श्रीमान कमाडर, मैं दूसरे गिलास के बाद भी कुछ नहीं खाता।’ उसने अपने गाल फुलाये, नाक बजायी और फिर जोर का ठहाका लगाया। साथ ही उसने जर्मन भाषा मे जल्दी-जल्दी कुछ कहा। शायद मेरी बात का अपने साथियो के लिये अनुवाद किया। दूसरे भी हसे, अपनी कुर्सिया पीछे खिसकायी और मुझे देखने के लिये अपने थोबडे मेरी ओर किये। अब मैंने उनकी आंखों मे कुछ और ही यानी नमी का सा भाव लहरे लेते देखा।

‘कमाडर ने मेरे लिये तीसरा गिलास भरा। इस बीच हमी के मारे उसका हाथ कपकपाता रहा। यह गिलास मैंने जरा धीरे-धीरे खाली किया, जग-सी रोटी काटी और बाकी मेज पर रख दी। मैं इन शैतानों को यह दिखला देना चाहता था कि बेशक भूख से मेरा दम निकला जा रहा था, फिर भी उन्होंने जो टुकडे मेरे सामने फेक दिये थे, मैं उन्हें अपने मुह मे ठूंसने नहीं जा रहा था। मैं उन्हें यह जतला देना चाहता था कि मेरा अपना रूसी स्वाभिमान और रूसी मर्यादा है और लाख चाहने पर भी वे अभी मुझे आदमी से जानवर नहीं बना पाये है।

‘इसके बाद उस कमाडर का चेहरा गम्भीर हो गया उसने अपने सीने पर दो क्रांस मीधे किये, निहत्था मेज से आगे बढ़ आया और बोला, ‘देखो, सोकोलोव, तुम मच्चे रूसी फौजी हो। तुम बढ़िया फौजी हो। मैं भी फौजी हूँ और शानदार दुश्मन की इज्जत करता हूँ। मैं तुम्हे गोली नहीं मारूंगा। और जानने हो, आज हमारी बहादुर फौजे बोल्गा तक पहुच गयी है और उन्होंने स्तालिनग्राद पर पूरी तरह कब्जा कर लिया है। यह हमारे लिये बहुत ही खुशी की बात है, इसलिये मैं तुम पर रहम कर तुम्हारी जान बख्शता हूँ। इसलिये अपने

ब्लाक में वापस जाओ और यह तुम्हारी हिम्मत का इनाम है, इसे अपने साथ लेते जाओ।' यह कहकर उसने एक पावरोटी और चरबी का एक लोदा मेरे हाथों में थमा दिया।

“मैंने उस रोटी को कसकर अपने सीने से चिपटा लिया और चरबी अपने बाये हाथ में ले ली। सारी घटना के एकदम एक अप्रत्याशित मोड़ ले लेने में मुझे इतनी हैरानी हुई कि मैं धन्यवाद तक देना भूल गया। केवल बायी ओर मुड़कर घूमा और दरवाजे की ओर बढ़ चला। पर हर समय मुझे यही लगता रहा कि अब मेरी पीठ पर गोली चली। और यह टुकड़ा मेरे साथियों तक न पहुँच पायेगा। लेकिन कुछ नहीं हुआ। एक बार फिर मौत मेरी बगल में निकल गयी। सिर्फ उसकी ठंडी सासों से मेरी सासें छुईं, और बस

“मैं कमांडर के कमरे से बिल्कुल सधे हुए कदमों में निकला, पर बाहर निकलते ही कभी इधर लड़खड़ाया तो कभी उधर। गिरते-पड़ते बैरक में पहुँचा, अन्दर घुसा, मीमेट के फर्श पर ढह पड़ा और बेहोश हो गया। फिर अभी अधेरा ही था कि साथियों ने मुझे जगाया, 'बताओ तो कि हुआ क्या?' इस पर मुझे कमांडर के यहाँ की पूरी घटना याद आयी और मैंने उन्हें सारा किस्सा सुनाया। 'पर रोटी हम आपस में किम तरह बाँटेंगे?' कापती हुई आवाज में मेरी बगल के पटरे के आदमी ने पूछा। मैंने कहा, 'सभी को बराबर-बराबर। फिर हमने उजाला होने की गह देखी और उजाला होने पर डोरे के एक टुकड़े में रोटी और चरबी काटी। हर एक को दियासलाई की डिब्बियाँ के बराबर रोटी मिली और एक कण भी बरबाद नहीं किया गया। जहाँ तक चरबी का सवाल है, वह तो थी ही इतनी कि आदमी के होठ भर चिकने हो सके। लेकिन उसमें भी हमने सभी के लिये बराबर हिस्से किये।

“जल्दी ही जर्मनों ने हमसे से सबसे मजबूत ३०० लोगों को एक दलदल सुखाने के काम पर लगा दिया और फिर हम रूहर प्रदेश की खानों में काम करने के लिये भेज दिये गये। वही मैं १९४४ तक रहा। उस समय तक हमारी फौजों ने जर्मनों की थोड़ी अक्ल ठिकाने कर दी थी और फासिस्टों ने हम कैदियों की उपेक्षा करना बंद कर दिया था।

“एक दिन जर्मनों ने हमें यानी सुबह की पाली के पूरे के पूरे

लोगो को एक कतार में खड़ा किया और दौरे पर आये किमी ओवर-लेफ्टनेट ने दुभाषिये के सहारे हमसे कहा, 'तुमसे मैं जो फौज में या लडाई के पहले मोटर-ड्राइवर रहे हो, वे एक कदम आगे आ जाये।' तो हमसे मैं सात ड्राइवर आगे आ गये। जर्मनो ने हमें पुराने ओवरआल दिये और गाड़ों की निगरानी में वे हमें पाँट्सडम ले आये।

"वहाँ पहुँचे तो हमें अलग कर दिया गया। मुझे 'टोइन्' में काम करने के लिये भेजा गया। सड़के बनाने और हिफाजत के कामों में सम्बन्ध रखनेवाली सस्था को जर्मन इसी नाम से बुलाते थे।

"तो 'टोइन्' में मैं जर्मन इंजीनियरों के एक मेजर की 'ऑपेल-एडमीरल' मोटर चलाने लगा। यह समझो कि वह फासिस्ट बेहद मोटा था। ठिगना-सा, जितना लम्बा उतना ही चौड़ा, पेट था कि बिल्कुल घड़ा, पीछे का हिस्सा बिल्कुल छिनालो जैसा। सामने लटकती हुई टोइयों की गिनती एक नहीं तीन, गर्दन के पीछे चारों ओर झूलती हुई मांस की तीन परतें। मेरे ख्याल में बदन की शुद्ध चरबी का वजन कुछ नहीं तो पचास किलोग्राम होगा। चलता तो इंजन की तरह हवा छोड़ता और हाफता और खाने बैठ जाये तो समझो कि भगवान ही खैर करे। सारा दिन मुह चलाता रहता और अपने फ्लाम्क में उड़ेल-उड़लकर ब्राडी के बड़े-बड़े घूट घोटता रहता। जब-तब थोड़ा-बहुत हिस्सा मेरा भी लग जाता। वह सड़क के किनारे मोटर रुकवाता, थोड़ी-सी सासेज और पनीर काटता और गिलास चढ़ाता। कभी रंग में होता तो कुत्ते की तरह एक टुकड़ा मेरी ओर भी लोका देता। हा, हाथ में मीधे कभी न देता। कभी नहीं—इसे तो वह अपनी शान के खिलाफ बात समझता। लेकिन जो भी हो, कैम्प में इस जिन्दगी का कोई मुकाबला नहीं था और धीरे-धीरे मैं आदमी जैसा नजर आने लगा—यहाँ तक कि कुछ-कुछ मांस भी हड्डियों पर चढ़ने लगा।

"लगभग दो हफ्तों तक मैं मेजर को पाँट्सडम में बर्लिन ले जाता और बर्लिन में पाँट्सडम वापस लाता रहा। इसके बाद वह हमारी फौजों के विरुद्ध किलेबन्दी के मिलामिले में आगे के मोर्चे पर भेज दिया गया। फिर तो मेरी पलकों की नींद हवा हो गयी। मैं सारी रात यही सोचता रहता कि किस तरह यहाँ से भागकर अपने साथियों से जा मिलूँ, कैसे अपने देश वापस पहुँचूँ।

'हम पोलोत्स्क नगर गये। वहाँ दो साल में पहली बार अपनी

तोपों के धड़ाके मेरे कानों में पड़े। जानते हो, भाई, मेरा दिल कैसे खुशी से उछला था? यों समझो, दोस्त, कि इरीना के साथ शुरू की मुलाकातों में भी दिल इस तरह कभी न धड़का था! लडाईं पोलोत्स्क से कोई १८ किलोमीटर के फ़ासले पर पूरब में चल रही थी। शहर के जर्मन बुरी तरह बौखलाये हुए थे, बुरी तरह घबराये हुए थे। ऐसे में मेरे घड़े-से पेटवाले अफ़सर ने पीने का हिसाब बढ़ाना शुरू किया तो बढ़ाता ही चला गया। दिन में वह मोटर में इधर-उधर चक्कर लगाता और किलेबंदी के मिलसिले में हिदायते देता और रात को अकेले बैठकर ढालता। नतीजा यह कि वह फूलता चला गया और उसकी आंखों के नीचे बड़ी-बड़ी थैलियां लटकने लगी ..

“मैंने सोचा, ‘अब और देर नहीं करनी चाहिये, अब मेरा वक़्त आया है! लेकिन अकेले मुझे यहाँ से बचकर नहीं जाना है, इस मोटे तोदल को भी साथ ले जाना है, हमारे लोगों के काम आयेगा!’

“तो खडहरों में मुझे दो किलोग्राम का बटखरा मिल गया। मैंने उसके चारों तरफ चिथड़े लपेट दिये ताकि इसमें वार करने पर खून न निकले। फिर सड़क पर टेलीफोन का एक लम्बा-सा तार भी मेरे हाथ लग गया, इस तरह मैंने ज़रूरत की हर चीज़ तैयार कर ली और अगली सीट के नीचे छिपा दी। जर्मनों को अलविदा कहने के दो दिन पहले, एक दिन शाम को, मैं मोटर में पेट्रोल डलवाकर लौट रहा था कि मैंने एक छोटे जर्मन अफ़सर को नशे में धुत्त दीवार को थामकर चलते देखा। बस तो मैं उसके पास पहुंचा, उसे एक टूटी हुई इमारत में ले गया, उसकी बर्तनी और सिर की टोपी उतार ली। यह सब भी मैंने सीट के नीचे छिपा दिया। अब तैयारी पूरी हो गयी।

“२६ जून की सुबह को मेरे मेजर ने मुझे शहर से बाहर त्रोस्नीत्सा की तरफ ले चलने को कहा। वह वहाँ के रक्षा-सम्बन्धी निर्माण-कार्यों का सचालक था। हम मोटर में बैठे और रवाना हो गये। मेजर पीछे की सीट पर बैठा चैन में ऊँघने लगा और मेरा कलेजा उछलकर बाहर आने-आने को होने लगा। मैंने मोटर तेज़ चलायी, पर शहर के बाहर पहुंचकर रफ़्तार धीमी कर दी। फिर गाड़ी रोकी, बाहर निकला और चारों ओर नज़र दौड़ायी। पीछे बहुत दूर दो टुकें धीरे-धीरे आती देखी। मैंने अपना वज़नी बटखरा निकाला और दरवाज़ा पूरा खोला। देखा कि घड़े-सी तोंदवाला मेजर सीट पर पड़ा इस तरह खरटे ले

रहा है, जैसे कि उसकी बीबी उसकी बगल में हो। बस, तो मैंने आव देखा न ताव, और बटखरा उसकी बायीं कनपटी पर दे मारा। उसका सिर उसके सीने पर झूल गया। मामला पक्का करने के लिये मैंने एक चोट फिर की। पर मैं उसे मारना नहीं चाहता था। मैं उसे ज़िन्दा अपने साथ ले जाना चाहता था, हमारे लोग उससे कितनी ही काम की चीजें जान सकते थे। हा, तो, मैंने उसके केस में पिस्तौल निकाली और उसे अपनी जेब में डाल लिया। फिर मैंने पिछली सीट के पीछे एक बैकेट घुसेड़ा और टेलीफोन का तार मेजर की गर्दन के चारों ओर लपेटकर बैकेट से बांध दिया ताकि मेरे तेजी से मोटर चलाने पर वह लुढ़के नहीं। अब मैंने जर्मन वर्दी डाटी, टोपी लगायी और मोटर मीधे उस ओर बढ़ायी जिस ओर धरती हाहाकार कर रही थी और लड़ाई चल रही थी।

“मैंने जर्मन मोर्चे की सीमा तोपो की भूमिगत चौकियों के बीच में पार की। एक खाई से सबमशीनगनों की एक टोली ने सिर बाहर निकाला। मैंने जान-बूझकर मोटर धीमी कर दी, ताकि वे देख लें कि मेरे साथ एक मेजर है। इस पर वे चीखने-चिल्लाने और हाथ हिला-हिलाकर मुझे आगे जाने से रोकने लगे, लेकिन मैं ऐसे बना जैसे कि कुछ समझ ही नहीं रहा, और मैंने मोटर अस्सी की रफ्तार पर छोड़ दी। जब तक जर्मनों ने असलियत समझी और गोली चलायी तब तक मैं बिल्कुल खरगोश की तरह गडों में बचता-बचाना अधिकारहीन इलाके में पहुंच गया।

‘यहां जर्मन पीछे में गोलियां बरमाने रहे कि आगे में मेरे अपने साथी तिलमिला उठे और मुझ पर निशाना साधने लगे। चार गोलियां विंड-स्क्रीन के पार हो गयीं। उन्होंने रेडियेटर उड़ा दिया। पर पास ही एक झील की बगल में मुझे एक छोटा-सा जंगल नज़र आया और अपने कुछ साथी मोटर की ओर दौड़ते दीखे। मैंने गाड़ी जंगल की ओर बढ़ा दी। वहां पहुंचकर दरवाज़ा सपाट खोल दिया और धरती पर लेटकर उसे चूमा। इस समय सांस मुश्किल से ही आती-जाती रही...

“जैसी मैंने पहले कभी नहीं देखी थी, वर्दी पर लगी खाकी रंग की स्कंधिकाओंवाला एक जवान सबसे पहले मेरे पास आया और दांत निकालने हुए बोला, ‘हा, नो, जर्मन शैतान, रास्ता भूल गया है तू?’ मैंने झटके से जर्मन वर्दी चीर डाली, टोपी को पैरों के नीचे रौंदा

और उससे बोला, 'प्यारे-प्यारे, जवान बच्चे। मेरे राजा बेटे। मैं और जर्मन वोरनेज मे पैदा हुआ, वही बड़ा हुआ। मैं तो फौजी कैदी रहा हूँ, समझे? और सुनो, अब उस मोटे को मोटर से बाहर निकालो, उसका ब्रीफ-केस अपने कब्जे में करो और मुझे अपने कमांडर के पास ले जाओ।'

"मैंने उन्हें पिस्तौल सौंप दी और फिर शाम तक एक आदमी से दूसरे आदमी के पास भेजा जाता रहा। आखिर शाम को डिविजन के कर्नल-कमांडर के सामने पेश होने को कहा गया। उस समय तक मुझे खिलाया-पिलाया और नहलाया-धुलाया जा चुका था। तरह-तरह के मवाल पूछे जा चुके थे और नयी वर्दी मिल चुकी थी। इसलिये मैं कर्नल की खाई में गया तो कायदे से कायदे के कपड़ों में, तन और मन में निर्मल। कर्नल अपनी कुर्सी से उठा, सभी अफसरों के सामने उसने मुझे अपने सीने से लगाया और बोला, 'फौजी जो तोहफा तुमने हमें लाकर दिया है, उसके लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। तुम्हारे मेजर और उसके ब्रीफ-केस में हमें इतनी सूचना मिली है जितनी हमें मोर्चे पर बन्दी बनाये जानेवाले बीम जर्मनों से भी न मिलती। मैं सरकारी सम्मान और पदक के लिये तुम्हारी मिफारिश करूँगा। कर्नल के शब्दों और स्नेह ने मुझे इस तरह द्रवित किया कि हजार न चाहन पर भी मेरे होठ थरथरा उठे। मैं सिर्फ इतना ही कह पाया 'साथी कर्नल, मेरी प्रार्थना है कि मुझे राइफल यूनिट में शामिल कर लिया जाये।

'पर कर्नल हमारा और मरग कंधा थपथपाया, तुम भला लड़ोगे क्या जब सीधे खड़े भी नहीं हो सकते? मैं तुम्हें अभी अस्पताल भेज रहा हूँ। वहाँ तुम्हारा जरूरी इलाज होगा और तुम्हें खिला-पिलाकर कुछ तगड़ा किया जायेगा। इसके बाद तुम एक महीने की छुट्टी पर घर जाकर अपने परिवार के लोगों में मिलाओगे। जब वापस आओगे तब तय करेंगे कि तुम्हें कहा भेजा जाये।'

"कर्नल और वहाँ उपस्थित सभी अफसरों ने मुझसे हाथ मिलाये और दिल से अलविदा कही। मैं जब बाहर आया तो बहुत उत्तेजित और द्रवित था क्योंकि युद्ध के कैदी के रूप में पिछले दो वर्षों में बिल्कुल भूल ही गया था कि इन्सान के साथ इन्सान का सा व्यवहार कैसा होता है। और, भाई, जरा गौर करना, एक जमाने तक मेरा

यह हाल रहा कि जब अपने ऊँचे अफसरो में बातचीत करता तो गर्दन कंधों के बीच छिपाता रहता। हर वक्त यही खटका लगा रहता कि अब उनका हाथ उठा, कि अब उठा। हा, तो इस तरह का बना दिया गया था हमें फासिस्ट कैम्पो में

“अस्पताल में पहुँचते ही मैंने इरीना को एक पत्र लिखा और इने-गिने शब्दों में पूरी दास्तान दोहराई कि मैं कैसे कैदी बना और कैसे जर्मन मेजर को अपने साथ लिये हुए जान बचाकर भाग निकला। बच्चों की तरह डींग हाकने की मझे यह क्या सूझी थी, कहना मुश्किल है। मैं बिल्कुल सब्र से काम नहीं ले पाया और यह तक भी लिख दिया कि कर्नल ने पदक के लिये मेरे नाम की सिफारिश करने का वायदा किया है

“फिर दो हफ्तों तक मैं मिर्फ सोता और खाता-पीता रहा। अस्पताल में लोग एकबारगी खाना कम ही देते, पर दिन में कई बार खिलाते। डाक्टर ने कहा कि अगर मुझे मनमाने ढंग में खाने को दिया जाये तो मैं मर जाऊँगा। मैं खूब स्वस्थ हो गया। लेकिन दो हफ्तों बाद तो एक कौर तक मुह में डालने को मेरा मन न होता। इस बीच घर में कोई खत नहीं आया और मझे यह मानना ही होगा कि मेरा मन बहुत परेशान रहने लगा। अब न खाने का ध्यान आता और न सोने का। तरह-तरह के बुरे स्याल दिमाग में चक्कर काटते रहते उसे मैं तीसरे सप्ताह वोरोनज में खत आया, पर पत्र इरीना का न था, बल्कि बर्डर्ट का काम करनेवाले मेरे एक पड़ोसी इवान तिमोफेये-विच का था। ईश्वर न करे कि किसी को कभी ऐसा खत मिले। पड़ोसी ने लिखा था ‘जर्मनों ने जून १९४२ में हवाई जहाजों के कारखान पर बमबारी की और एक बम सीधे तुम्हारे घर पर गिरा। जब बम गिरा तो इरीना और बच्चिया घर पर ही थी बाद में हमें उनके नाम-निशान तक का पता न चला। जहाँ तुम्हारा मकान था, वहाँ गहरा गढ़ा-सा बन गया’ पहली बार तो हिम्मत जवाब दे गयी और मैं वह खत पूरा पढ़ नहीं सका। आँखों के आगे अधेरा छा गया और दिल एकदम मुर्दा-सा हो गया और लगा कि बम अब खेल खत्म। मैं पलंग पर लेटा रहा और जब थोड़ी-सी हिम्मत और शक्ति लौटी तो मैंने खत आखिर तक पढ़ा। मेरे पड़ोसी ने लिखा था कि बम के गिरने के समय अनातोलो शहर में था। शाम को घर आया तो

उसने वहां गहरा गढ़ा देखा। वह उसी रात को शहर लौट गया। जाने के पहले उसने पड़ोसी से सिर्फ़ इतना कहा कि नाम लिखाकर लाम पर जा रहा है... और बस।

“जब मेरा दिल ज़रा क़ाबू में आया और तबीयत सम्भली तो मुझे याद आया कि स्टेशन पर मुझसे विदा होते समय इरीना कैसे मेरे साथ लिपटी रही थी। उसके औरत के दिल ने ज़रूर तभी उसे यह बता दिया होगा कि अब हम इस दुनिया में एक-दूसरे से कभी मिलेंगे नहीं। और मैंने उसे एक ओर को धकेल दिया था... कभी मेरा परिवार था, मेरा अपना घर था और इस परिवार और इस घर को बसाने में सालों-साल लगे थे, पर एक झटके में ही सब कुछ बरबाद हो गया था और मैं अकेला रह गया था। मैं सोचने लगा—मेरी यह अटपटी ज़िन्दगी क्या एक सपना, एक स्वप्न तो नहीं है? बेशक सपना ही है! जब मैं कैदी था तो हर रात को इरीना और बच्चे मेरे सपनों में आते थे और मैं उन्हें यह कहकर ढाढ़स बंधाने की कोशिश करता था कि तुम लोग दुखी न हो, मन छोटा न करो, मैं जल्दी ही घर आऊंगा, मैं मज़बूत आदमी हूँ, सब कुछ सह सकता हूँ, हम ज़रूर एक न एक दिन फिर एक साथ होंगे . यानी दो-माल तक मैं बराबर मुर्दों से बातें करता रहा था?!”

वह एक मिनट तक चुप रहा, फिर बदली हुई, धीमी आवाज़ में रुक-रुककर बोला :

“आओ, भाई, एक सिगरेट हो जाये . जाने क्यों ऐमा लगता है जैसे कि कोई मेरा गला घोट रहा है।”

हमने सिगरेटें जलायी। बाढ़ की लपेट में आये हुए जंगल को गुंजाता हुआ कोई कठफोड़वा खट-खट कर रहा था। गर्म हवा आलडेरों की सूखी पत्तियों को अब भी सरसरा रही थी। आसमान में बहुत ऊपर, नावों के कसे हुए दूधिया पाल जैसे बादल अब भी नीलम के बीच तैरते हुए सामने से गुज़र रहे थे। उदासी भरे मौन के इन क्षणों में वमन्त के विशद आगमन के लिये, जीवन में प्राण की अमर प्रतिष्ठा के लिये तैयार होता अपार जगत मुझे बिल्कुल दूसरा ही लगा।

चुप्पी जैसे काटने लगी, और मैंने पूछा :

“फिर... फिर क्या हुआ?”

अपनी कहानी कहनेवाले ने बेमन से जवाब दिया, “फिर... फिर

क्या हुआ ? फिर मुझे कर्नल ने एक महीने की छुट्टी दे दी। एक सप्ताह बाद मैं वोरोनेज जा पहुंचा और पैदल उस जगह गया जहां कभी अपने परिवार के साथ रहता था। वहां जंग लगे पानी का एक बड़ा गढ़ा नज़र आया। हर ओर उगी हुई जंगली झाड़ियां कमर-कमर तक ऊंची थी ... हर तरफ़ गहरा सन्नाटा था, वीरानगी थी—कब्रगाह की तरह का सा सन्नाटा। भाई मेरे, उस समय कैसा लगा, कैसी तबीयत परेशान हुई, तुम्हें बतला नहीं सकता मैं ! मैं वहां खड़ा रहा, भारी मन लिये हुए। इसके बाद मैं स्टेशन लौट आया। वहां तो एक घंटे रहना भी दुश्वार हो गया। नतीजा यह कि उसी दिन डिविजन में वापस आ गया।

“लेकिन तीन महीने बाद मेरी ज़िन्दगी में खुशी का एक क्षण अनजाने ही कौधा, जैसे बादलों के बीच धूप की एक किरण। मुझे अनानोली की खोज-खबर मिली। उसने दूसरे मोर्चे से मेरे नाम खत भेजा। हमारे उसी पड़ोसी मे उसे मेरा पता मिल गया था। पता चला कि शुरू-शुरू में उसने तोपखाने के कालेज में प्रशिक्षण पाया और गणित में उसकी विशेष योग्यता उसके खामे दाहिने आयी। एक साल बाद उसने शानदार अंक प्राप्त करके इम्तहान पास किया और लड़ाई पर चला गया। उसने लिखा कि उसे कप्तान का ओहदा मिल गया है, अब वह '४५' के एक तोपखाने की कमान सम्भाले है और अब तक उसे छह तमगे और पदक मिल चुके हैं। मतलब यह कि उसने अपने बूढ़े बाप को बहुत पीछे छोड़ दिया था और एक बार फिर मुझे उस पर बड़ा अभिमान हुआ। तुम जो चाहे सो कहो, पर यह कि मेरा अपना बेटा कप्तान और एक तोपखाने का कमांडर हो गया था, यह कोई मामूली बात नहीं थी। इतना ही नहीं, वह बहुत-से पदक भी पा चुका था। इसमें क्या फ़र्क पड़ता है कि उसका बाप 'स्टूडीबेकर' लारी में तोप के गोले और ऐसी ही दूसरी चीज़ें इधर-उधर पहुंचाता फिरता था। उसके बाप का ज़माना गुज़र चुका था, लेकिन उसकी, मेरे उस कप्तान की तो सारी ज़िन्दगी उसके आगे पड़ी थी।

“और अब रातों को मैं बूढ़ों के से सपने देखने लगा कि लड़ाई खत्म होते ही मैं अपने बेटे की शादी करूंगा और नये परिवार के साथ रहूंगा। थोड़ी-बहुत बढ़ईगीरी और बच्चों की देखभाल करूंगा—यानी वह सब करूंगा जो कोई भी बूढ़ा आदमी करता है। लेकिन ये सारे

सपने भी महज सपने ही रहे। जाड़े में हमारी फौजे बग़बर आगे ही आगे बढ़ती गयी और एक-दूसरे से चिट्ठी-पत्री करने को समय न मिला। पर लडाई के ख़ात्मे के करीब यानी बर्लिन के बिल्कुल पास से मैंने एक दिन सुबह अनातोली को एक ख़त लिखा और जवाब दूसरे ही दिन मिला। हुआ यह कि हम दोनों ही अलग-अलग रास्तों से जर्मनी की राजधानी तक पहुँच गये थे और एक-दूसरे के बहुत ही पास थे। अब मुलाकात होने तक का एक-एक पल भारी हो गया। ख़ैर, तो वह क्षण भी आया ऐन नौ मई को विजय दिवस की सुबह को मेरे अनातोली को एक जर्मन निशानची ने मार डाला

“दोपहर के बाद मुझे कम्पनी-कमांडर के सामने बुलाया गया। मैंने उसके साथ तोपखाने के एक अनजाने लेफ्टिनेंट-कर्नल को बैठे देखा। मैं कमरे के अन्दर घुसा तो वह इस तरह उठकर खड़ा हो गया, जैसे कि अपने से बड़े किसी अफसर में मिल रहा हो। मेरे कम्पनी-कमांडर ने कहा, ‘यह तुमसे मिलने आये हैं, सोकोलोव,’ और खुद खिड़की की तरफ मुँह करके खड़ा हो गया। मुझे तो जैसे बिजली का झटका-सा लगा मैं समझ गया कि दुर्भाग्य की कोई बिजली टूटी है। वह लेफ्टिनेंट-कर्नल मेरे सामने आया और धीरे-से बोला ‘ब्रह्मन् से काम लीजिये, बापू।’ आपका बेटा कप्तान सोकोलोव आज सुबह शहीद हो गया। आइये, मेरे साथ चलिये।’

“मैं लडखड़ाया पर मैंने अपने पैर माधे। फिर मलबे में अटी सड़का पर उस लेफ्टिनेंट-कर्नल के साथ उसकी बड़ी मोटर में बैठकर मैं जैसे गया, वह आज तक सपने-सा लगता है। मीथी लाइन में खड़े फौजियों और लाल मखमल से ढकें ताबूत की आज मुझे महज धुधली-धुधली-सी याद है। पर भाई मेरे, मेरा अनातोली आज भी उसी तरह मेरी निगाहों के सामने है, जैसे तुम। मैं ताबूत के पास गया। हा मेरी आँखों के सामने मेरा बेटा था और फिर भी जैसे वह मेरा बेटा नहीं था। मेरा बेटा अनातोली तो मेरे सामने सदा बच्चे की शक्ल में आया था—होठों पर हमेशा मुस्कान, कंधे सकरे और पतली गर्दन की उभरी हुई कठी। लेकिन यहाँ तो मेरे सामने एक पूरा जवान था—कंधे चौड़े, देखने में सुन्दर, आँखें अधमुदी जैसे कि मुझे न देखते हुए कहीं दूर, अनजाने में कुछ देख रहा हो। महज एक चीज ज्यों की त्यों थी और वह थी मेरे बेटे के होठों के कोनों पर हल्की-सी मुस्कान।

यही थी वह मुस्कान जिससे मैं परिचित था। सो, मैंने उसे चूमा और हटकर एक किनारे खड़ा हो गया। लेफ्टिनेंट-कर्नल ने भाषण दिया। मेरे अनातोली के मित्र अपने आसू पोछ रहे थे, पर मेरी आँखों में एक भी आसू न आया। मुझे लगता है कि मेरे आसू मेरे दिल में ही सूखकर रह गये थे। शायद इसीलिये मेरा दिल आज तक बुरी तरह टीसता है ?

“मैंने अपनी आखिरी खुशी और उम्मीद उस परायी जर्मन धरती में दफना दी। तोपो ने गोले दागकर अपने कमांडर को लम्बे सफर के लिये विदा दी। मुझे अपने अन्दर की कोई चोज जैसे दम तोड़ती-सी लगी। मैं अपने यूनिट में वापस आया तो एकदम लुटा-लुटा-सा। इसके बाद जल्द ही मुझे मेना में छुट्टी मिल गयी। जाऊ तो कहा ? वोगेनेज ? मन न कहा। नहीं हर्गज नहीं। मुझे अपने एक दोस्त की याद आयी—वह लंडन में अपाहिज होकर जाड़े में ही घर लौटा था और उर्यूपिन्स्क नगर में रहता था। उसने एक बार मुझे अपने पास आने को कहा भी था—तो बस, मैं रवाना हो गया।

मेरे दोस्त और उसकी बीवी का कोई बच्चा न था और शहर के सिरे पर उनका छोटा-सा निजी घर था। दोस्त को अपाहिजी की पेशान मिलती थी, पर वह एक ट्रक-डिपो में ड्राइवर का काम करता था। सो, मुझे भी वही काम मिल गया। मेरे दोस्त ने मुझे भी मिर छिपाने की जगह दे दी। हम ट्रक पर तरह-तरह के सामान लादकर आम-पाम कं इलाका में पहुँचाते। पतझड़ में हम अनाज की दुलाई करते। तो यही मेरा परिचय अपने नये बेटे से हुआ, यानी इम बच्चे से हुआ जो इस समय वहाँ बालू में खेल रहा है।

“हम ड्राइवर लोग जब कोई लम्बा चक्कर लगाकर लौटते हैं तो सबसे पहले किसी चायखाने में जाते हैं, मुह में कुछ डालते हैं, और थकान मिटाने के लिये एक गिलाम बोद्का गले के नीचे उतारते हैं। मैं यह मानता हूँ कि उस वक्त तक यह मेरी खराब-सी आदत हो गयी थी। सो, मैं एक दिन चायखाने में गया तो मैंने इम लडके को वहाँ देखा और दूसरे दिन गया तो इसे फिर वहाँ पाया। नन्हा-मुन्ना-मा यह बच्चा अजीब फटेहाल में दीखा—चेहरा तरबूज के रस और धूल-गर्द में मना हुआ ऐसा गदा कि कहने की बात नहीं, चेहरे पर अस्त-व्यस्त बाल लेकिन आँखें ऐसी जैसे कि बरखा-बूंदी के बाद रात के सितारे।

बात बड़ी बेतुकी-सी लग सकती है, पर वह मेरे मन में ऐसा उतर गया कि न देखता उसे तो जैसे कोई कमी-सी खटकती। यही नहीं, मैं अपना काम जल्दी-जल्दी पूरा करता ताकि चायखाने पहुंचूं और जल्दी से जल्दी उसे एक नज़र देखूं। यह बच्चा उस चायखाने में ही खाता यानी जो कोई जो कुछ दे देता, वही इसका खाना हो जाता।

“चौथे दिन मैं अपनी ट्रक में अनाज भरे सीधा चायखाने आया और मैंने अपनी ट्रक वहां रोकी। बच्चा सीढ़ी पर बैठा पैर हिलाता नज़र आया। लड़का खासा भूखा है, यह बात उसके चेहरे पर एक निगाह डालते ही साफ़ हो गयी। मैंने खिड़की से बाहर सिर निकाला और चिल्लाकर कहा, ‘ए वान्या, इधर आओ... चढ़ आओ ट्रक पर . मैं तुम्हे एलीवेटर तक ले चलूंगा। फिर हम यहां लौटेंगे और खायें-पियेंगे।’ लड़का मेरी आवाज से चौंक गया, फिर सीढ़ियों से कूदा और ट्रक के पायदान पर चढ़ा। उसकी सितारों जैसी आंखें अचरज से फैल गयी। वह धीरे-से बोला, ‘तुम्हे कैसे मालूम है कि मेरा नाम वान्या है?’ लड़का आंखें फाड़कर मेरे जवाब का इन्तज़ार करने लगा। मैंने कहा, ‘भैया, मेरी गिनती दुनिया के उन लोगों में है जो सभी कुछ जानते हैं।’

“लड़का घूमकर दायां ओर आ गया। मैंने दरवाज़ा खोलकर उसे अपनी बगल में बिठा लिया और हम चल दिये। लड़का बड़ा ही जिन्दा-दिल लगा, लेकिन यकायक चुप हो गया और रह-रहकर अपनी लम्बी, छल्लेदार बगैनियों के नीचे से मुझे देखता और आह भरता रहा। सोचो कि इतना नन्हा-मा बच्चा और आहें भरे! मैंने पूछा, ‘तुम्हारे बापू कहा है, वान्या?’ बहुत धीमी आवाज़ में जवाब मिला, ‘लड़ाई के मोर्चे पर मारे गये।’—‘और तुम्हारी मा?’—‘मा . हम गाड़ी में सफ़र कर रहे थे कि एक बम आ गिरा और वह मर गयी।’—‘गाड़ी में कहां से आ रहे थे तुम?’—‘मालूम नहीं, मुझे याद नहीं .’—‘यहा तुम्हारा कोई रिश्तेदार नहीं है?’—‘नहीं, कोई भी नहीं है।’—‘रात को तुम सोते कहां हो?’—‘कहीं भी।’

“गर्म-गर्म आसू छलकने को बेकरार होने लगे। मैंने तुरन्त ही फ़ैसला कर लिया कि मुझे क्या करना है। क्या ज़रूरत है हमें अकेले-अकेले और अलग-अलग यातनायें भोगने की! मैं इसे बेटा बना लेता हूं! . बम, तो इस ख्याल के साथ ही मन जैसे हल्का हो गया और

दिल में जैसे एक तरह का उजाला हो गया। मैं उसकी तरफ झुका और मैंने बहुत धीरे-से पूछा, 'वान्या, तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?' उसने गहरी सास लेते हुए पूछा, 'कौन हो तुम?' - 'मैं तुम्हारा बापू हूँ,' मैंने पहले की तरह धीरे-से कहा।

"भगवान ही जानता है कि इसके बाद क्या हुआ। वह मेरी गर्दन से आ लिपटा, मेरे गाल, होठ और माथा चूमने लगा और गानेवाली चिड़िया की तरह इतनी जोर से चहचहाने लगा कि केबिन उसकी आवाज से गूँज उठी, 'मेरे प्यारे बापू! मैं जानता था। मैं जानता था कि तुम मुझे खोज लोगे। मैं जानता था कि चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, तुम मुझे खोजकर ही दम लोगे। मैं कब से तुम्हारी राह देखता रहा हूँ।' वह मेरे बदन से सट आया। वह हवा में लहराती घास की पत्ती की तरह काप रहा था। मेरी आँखें धुंधला गयीं और मैं भी कापने लगा, हाथ थरथराने लगे। मैं स्टीयरिंग कैसे साधे रहा, कह नहीं सकता। फिर भी गाड़ी सड़क से नीचे उतर गयी और इंजन बन्द हो गया। मेरी आँखों से जब तक धुंध हट नहीं गयी मुझे गाड़ी चलाने हुए दर महसूस हुआ कि कहीं किसी को कुचल न दूँ। हम कोई पाँच मिनट तक वहाँ बैठे रहे और मेरा बेटा मेरे साथ बेहद मटा हुआ, बिल्कुल खामोश और सिर्फ कापता रहा। मैंने अपना दाया हाथ उसके कंधे पर रखा उसे प्यार से कसा, बाँये हाथ से गाड़ी घुमायी और अपने घर वापस आ गया। तब तो एलिवेटर तक जाने का ब्याल ही न रहा।

"घर पहुँचने पर मैंने गाड़ी दरवाजे पर रोक़ी, अपने नये बेटे को गोदी में उठाया और अन्दर ले आया। वह मेरे गले में झूल गया और बस वही चिपककर रह गया। यही नहीं उसने अपना गाल मेरी बढी दाढ़ीवाले गाल से चिपका लिया और फिर वही बनाये रखा। इसी रूप में मैं उसे घर लाया। मेरा मित्र और उसकी पत्नी दोनों घर पर थे। मैंने उन्हें आँखों से इशारे किये और उत्साह और खुशी से भरकर बोला, 'आखिर अपने नन्हे-मुन्ने वान्या को खोज ही लिया मैंने। ये रहे हम दोनों, देखते हो।' मेरे सन्तानहीन मित्र-दम्पति तुरत ही मारी बात समझ गये और इधर-उधर दौड़ने-धूपने लगे। मगर बेटा था कि मुझसे चिपटा हुआ था। पर किसी तरह मैंने उसे बहलाया। मैंने उसके हाथ साबुन में धोये और उसे खाने की मेज पर ला बिठाया।

मेरे मित्र की पत्नी ने एक तश्तरी शोरबा तुरत ही उसके सामने ला रखा और जब उसने बच्चे को शोरबे पर टूटते देखा तो उसकी आंखे भर आयी। वह खड़ी पेशबन्द से अपने आसू पोछती रही। मेरे वान्या ने उसे रोते देखा तो वह दौडकर उसके पास पहुंचा, स्कर्ट का सिरा खींचते हुए बोला, 'तुम रो क्यों रही हो, चाची? बापू ने मुझे चायखाने के पास पाया। इस पर सब को खुश होना चाहिये और तुम रो रही हो।' पर वह तो अब फूटकर रो पड़ी और फिर उसकी आंखे ऐसी बरसी, ऐसी बरसी कि तन-बदन आसुओं से तर-ब-तर हो गया।

“खाने के बाद मैं उसे नाई के पास ले गया और मैंने उसके बाल कटवाये। फिर घर वापस लाकर मैंने उसे टब में नहलाया और साफ चादर में लपेटा। इसके बाद उमने मेरे गले में बाहे डाली और उसी हालत में सो गया। मैंने उसे धीरे-से पलंग पर लिटाया, ट्रक ले जाकर अनाज एलीवेटर में खाली किया, ट्रक डिपो में पहुंचाया और जल्दी-जल्दी दूकानों की ओर बढ़ा। यहाँ मैंने अपने बेटे के लिये सर्ज का पतलून, कमीज, एक जोड़ी सैंडल और तिनकोवाला एक टोप खरीदा। सभी चीजे गलत माइज की निकली और माल की निगाह से भी कोई बहुत अच्छी न रही। पतलून देखकर तो मेरे दोस्त की पत्नी ने मुझे डाट भी पिलायी, 'तुम्हारा दिमाग खराब' है। ऐसी गरमी में बच्चे को सर्ज का पतलून पहनाओगे।' यही नहीं, दूमरे ही मिनट उसन सिलायी की मशीन सामने रखी, मन्दूक उलटा-पलटा, कपडा निकाला और मेरे वान्या के लिये देखने-देखने सूती पतलून और एक सफेद कमीज मीकर तैयार कर दी। रात हुई तो मैंने उसे अपने साथ सुलाया और एक जमाने के बाद पहली बार मैं चैन में सोया। वैसे रात में मैं कोई चार बार जगा। बच्चा हल्की-हल्की सामे लेता पत्तियों के नीचे बसेगा लेती गौरैया की तरह मेरी बाहों में बधा सोता रहा। दोस्त, मेरे पाम शब्द नहीं कि मैं तुम्हें बतलाऊ कि मुझे कैसा और कितना मुख मिला। मैंने कोशिश की कि हिलू-डुलू तक नहीं, कि कही बच्चे की नीद न टूट जाये। पर यह कोशिश बेकार रही। बीच-बीच में मैं बहुत धीरे-से उठता, दियासलाई जलाता और उसके सिरहाने खड़ा उसे प्यार से देखता

“उजाला होने के जरा पहले मैं जागा और समझ नहीं पाया कि क्यों मुझे घुटन-घुटन-मी लगी। पर जरा देर बाद ही मालूम हुआ कि

बेटे-माहब अपनी चादर से बाहर आ गये हैं, मेरे सीने पर पमरे हुए हैं और नन्हा-मा पैर मेरे गले पर टिकाये हैं। साथ मोता है तो परेशान बहुत करता है, पर अब आदी हो गया हूँ। वह साथ नहीं मोता तो मुझे जैसे उसकी कमी-मी खटकती है। रात को मैं कभी उमे सोते हुए भर आख देखता हूँ, कभी उसके बाल मूघता हूँ और जैसे दिल का दर्द कम हो जाना है। तबीयत हल्की हो जाती है। मेरा दिल तो दर्द सहने-सहते पत्थर हो गया था, मेरे भाई

“शुरू-शुरू में तो यह हुआ कि मैं टुक चलाता तो बान्या मेरे साथ-साथ ही रहता। लेकिन फिर मुझे महसूस हुआ कि इस तरह काम चलने का नहीं। मेरी अकेली जान को भला जरूरत ही किस चीज की होती थी? एक टुकड़ा गेंदी, एक अदद प्याज और एक चुटकी नमक, फौजी आदमी के सारे दिन के लिये काफी। मगर जब लडका रहता तो बात ही दूसरी होती। कभी उमे दूध की जरूरत पड़ती तो कभी उसके लिये एक अडा उबाला जाना जरूरी होता और कुछ न कुछ गरम चीज खिलाना तो बिल्कुल जरूरी था। लेकिन मुझे तो अपना काम भी करना होता। इसलिए मैंने कलेजा कड़ा किया और उमे अपने दोस्त की पत्नी की देखरेख में छोड़न लगा। खैर तो, वह सारे दिन रोता रहता और शाम को मुझसे मिलने प्लीबेटर पर आ जाता और काफी रात गये तक मेरी राह देखता रहता।

“शुरू-शुरू में लडके के मामले में काफी तकलीफों का सामना करना पड़ा। एक बार हम उजाला रहने ही पलंग पर जा लेंटे। दिन भर बहुत कटी मेहनत की थी मैंने। लेकिन रमेशा गौरैया की तरह चहकनेवाला लडका आज बहुत ही उदास और शांत लगा। मैंने पूछा, ‘बेटे, क्या सोच रहे हो तुम?’ उसने छत की तरफ देखे हुए पूछा, ‘तुमने अपने चमड़े के कोट का क्या किया, बापू?’ मेरे पास चमड़े का कोट जिनदगी में कभी रहा ही नहीं था। मैंने जैसे-तैसे बहलाया। कहा, ‘कोट बोगोनेज में रह गया।’ — और मुझे खोजने में तुम्हें इतने दिन क्यों लगे?’ — ‘बेटे, मैं तुम्हें खोजा जर्मनी में, पोलैंड में और पूरे बेल्जियम में। लेकिन तुम मिले यहाँ यूरोपियन में।’ — ‘बापू, यूरोपियन जर्मनी की तुलना में निकट है? क्या पोलैंड हमारे घर से दूर है?’ यानी इस तरह हम तब तक बातें करते रहे जब तक कि नींद नहीं आ गयी।

“लेकिन शायद, दोस्त, तुम यह समझते हो कि चमड़े के कोट का

सवाल लड़के ने योंही, बिना किसी खास वजह के किया? नहीं, ऐसा नहीं है। उस सवाल के पीछे अच्छा-खासा एक कारण था। इसका मतलब यह है कि उसके असली पिता के पास कभी कोई चमड़े का कोट था और उसे उस चमड़े के कोट की याद हो आयी थी। बच्चों की याददाश्त गरमी के दिनों की बिजली की तरह होती है कि अभी-अभी कौंधी और हर चीज दमक उठी और अभी-अभी गायब! यानी उस बच्चे की याददाश्त ने भी बिल्कुल गरमी की बिजली की कौंधों का सा काम किया।

“हो सकता है कि उर्यूपिन्स्क में हम एक साल और साथ रहते, पर नवम्बर में मैं एक दुर्घटना कर बैठा। एक दिन एक गाव के दलदली रास्ते से ट्रक ले जा रहा था कि गाड़ी किनारे के सिरे पर फिसलने लगी और रास्ते में एक गाय आ गयी और टक्कर खाकर गिर पड़ी। तो तुम जानो कि औरतों ने बड़ा शोर-गुल मचाया, तमाम लोग इधर-उधर से आ जमा हुए, होते-होते एक ट्रैफिक-इन्स्पेक्टर भी वहां आ पहुंचा। मैंने उससे कहा कि जाने दीजिये, मामूली-सी बात है लेकिन उसने मेरा लाइसेंस ले ही तो लिया। गाय उठी और पूंछ नचाती हुई गली में भाग गई, मगर मेरा लाइसेंस छिन गया। फिर जाड़े भर मैंने बड़ई का काम किया। इसके बाद ड्राइवर का काम करनेवाले एक पुराने फ़ौजी दोस्त से मेरा पत्र-व्यवहार हुआ और उसने मुझे अपने यहां आने को कहा। मेरा वह मित्र आपके कशगरी ज़िले में रहता है। उसने लिखा, ‘आओ और मेरे साथ रहो। तुम एक माल यहां बड़ई का काम करना, इसके बाद तुम्हें हमारे इलाक़े में ट्रक चलाने का नया लाइसेंस मिल जायेगा ...’ इस तरह हम यानी मैं और मेरा बेटा कशगरी के लिये पैदल रवाना हुए।

“लेकिन दुर्घटना से इसका कोई सम्बन्ध नहीं। गाय का मामला न होता तो भी मैं उर्यूपिन्स्क तो छोड़ ही देता। मेरा दर्द मुझे एक जगह जमकर रहने नहीं देता। लेकिन अब, जब मेरा वान्या बड़ा हो जायेगा और स्कूल जाने लगेगा तब शायद कहीं पैर जमाना ही पड़ेगा। लेकिन फिलहाल तो हम रूसी धरती मंझा रहे हैं।”

“लड़का इस तरह चलते-चलते थकता नहीं?” मैंने पूछा।

“वह अपने पैरों से तो बहुत ही कम चलता है। अक्सर तो वह मेरी सवारी करता है। मैं उसे कंधों पर बैठा लेता हूं और जब वह अपने पैर सीधे करना चाहता है तो नीचे कूद पड़ता है और मेमने की

तरह उछलते हुए सड़क के किनारे-किनारे दौड़ लगाता है। भाई मेरे, इसकी तो कोई बात नहीं। किसी तरह हम जिदगी काट सकते हैं, पर बात यह है कि मेरे दिल में कहीं कोई खटक होती है और इस मशीन का पिस्टन बदलना जरूरी हो गया है। कभी-कभी इस तरह टीस उठती है कि आखे चकगने लगती हैं। मुझे तो डर है कि कहीं किसी दिन सोते ही सोते मेरा दम निकल जायेगा और मेरा बेटा महम जायेगा। फिर एक दूसरी मुसीबत भी है। लगभग हर रात को सपनों में मैं अपने दिल के उन टुकड़ों को देखता हूँ, जो आज इस दुनिया में नहीं हैं। जिन्हें मैं खो चुका हूँ। अक्सर तो ऐसे देखता हूँ जैसे कि मैं किसी काटेदार तार के इस तरफ हूँ और वे आजाद उस तरफ। मैं अपनी इरीना और बच्चों से बाने करता हूँ, लेकिन ज्यों ही इस काटेदार तार को बीच से तोड़ फेंकने की कोशिश करना हूँ, त्यों ही वे दूर चले जाते हैं, मेरी आखों के सामने ही जैसे विलुप्त हो जाते हैं। और इस मामले में एक बात और भी है। दिन में तो मैं अपने को साधे रहता हूँ, इसलिए न तो पलके गीली होती हैं और न मुँह में उफ निकलती है। पर रात में कभी-कभी आँख खुल जाती है तो पता है कि मेरा तकिया आमुओ से तर है।

इसी समय नदी की ओर में मेरा मित्र की और पानी में डांडों के छपाके की आवाज आयी।

अब करीबी दोस्त लगनेवाले उस अजनबी ने लकड़ी के कुंदे की तरह मस्त अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया

विदा, भाई हमेशा किस्म-तुम्हारा साथ दे।”

“तुम भी मेरी शुभकामनायें स्वीकारो। तुम्हारा कगारी का सफर सफल हो।”

“धन्यवाद अरे बेटे, सुनने हो, चलो नाव में चले।”

लडका दौड़कर अपने पिता की बगल में आ गया और उसकी रूईदार जैकेट का सिंग पकड़कर नाव की ओर नन्ह-नन्हे कदम बढ़ाने लगा।

दो अनाथ, बालू के दो कण लड़ाई के स्थानक तूफान में उड़कर किन अजीब कहरो के बीच जा पड़े। आखिर अब उनका भविष्य क्या है? मेरे अन्तर ने पूरे विश्वास में कहा कि यह रूसी, यह अदम्य इच्छा-शक्तिवाला आदमी सब कष्ट सह जायेगा, टूटेगा नहीं और यह

लडका अपने पिता की स्नेह-छाया में रहकर एक नये साचे में ढलेगा। वह एक ऐसा आदमी बनेगा, जो देश की पुकार पर कड़ी से कड़ी मुसीबत सह सकेगा और बड़ी से बड़ी बाधा की कलाई मरोड़ सकेगा।

मैंने पिता और पुत्र को जाते देखा तो मेरा मन बड़ा टीसा। शायद जुदा होते समय इतना अधिक दुख न होता, यदि अपनी पतली-पतली टांगों में कुछ कदम जाने के बाद वान्या मेरी ओर मुड़कर अपना नन्हा-मुन्ना गुलाबी हाथ न हिलाता। और सहसा ही एक कोमल पर चगुलदार पंजा मुझे अपना सीना जकड़ता-सा लगा। मैंने झटपट मुह दूसरी ओर कर लिया। नहीं जिन सयाने लोगों के बाल लड़ाई के वर्षों न सफेद किये हैं वे नींद में ही नहीं, बल्कि उठते-बैठते, चलते-फिरते भी रोते हैं। परं सबसे बड़ी बात है समय रहते आसू पोछ लेना। महत्त्व की बात यही है कि बच्चे का दिल न दुखे, उसे ऐसा मौका न मिले कि उसकी निगाह आदमी के गाल के एकमात्र दृक्कत हुए आसू पर जा पड़े।

कुंवारी भूमि का जागरण

भाग १

भाग १

१

जनवरी के अंत में जब पहली बार बर्फ कुछ पिघलती है तब चेरी के बागों में मौघी गंध फैल जाती है। दोपहर को (अगर धूप में कुछ गर्मी हो) हवा में बचे स्थान पर पिघलती बर्फ की नम वाष्प के साथ हिम में भाकती, मृत पत्तियों से ढकी भूमि की जीवत और शाश्वत मास में बसी चेरी की छाल की उदास, हल्की-सी सुगंध की स्पष्ट अनुभूति होती है।

बागों में नीला अधेरा छाने तक, तब तक, जब तक पत्र-विहीन टर्नियों में चंद्रमा का पन्ना जड़ित हसिया न लटक जाये, यह मादक गंध विचरती रहती है जब तक अल्हड़ खरगोश बर्फ की मतह पर अपने पदचिह्नों की पखडिया न बिखेर दे।

और फिर स्तेपी में बहती हवा पाले में ठिठुरे नागदौन की भीनी-भीनी गंध को बागों में भर देती है, दिन की मुगधे और स्वर धूमिल हो जाते हैं, जंगली भाड़-भखाड़ों और जुने खेत के ऊबड़-खाबड़ लहरदार विस्तार पर चुपचाप भूरे भेंड़िये की तरह पूरब में रात आ जाती है—भूटपुटे की परछाइयों के रूप में स्तेपी में अपने पदचिह्न छोड़ती।

* * *

मन् १९३० की जनवरी की शाम को स्तेपी के पासवाली गली में एक घुडसवार ने ग्रेम्याची गांव में प्रवेश किया। नदिया के पास उसने अपने थके घोड़े को रोका और उतर गया। घोड़े के पुट्टा पर पाला जमा हुआ था। तब गली के दोनों ओर बागों की काली छायाओं के ऊपर, पॉप्लरों के टापुओं सरीखे कुजों के ऊपर कृष्ण-पक्ष के चांद का हसिया लटका हुआ था। गली में अधेरा और नीरवता छाई हुई थी। नदिया के उस पार कहीं कुत्ता जोर-जोर से रो रहा था और कोई बत्ती टिमटिमा

रही थी। घुडसवार ने पाले की हवा में गहरी मास खींची और आराम से दस्ताना उतारकर सिगरेट सुलगायी, फिर जीन की पेंटी कसी, जीन के नीचे उगलिया डाली और घोड़े की गर्म, पसीने से ढकी पीठ को महसूस करके फुर्ती में उसने अपनी विशाल काया को जीन पर टिका दिया। उथली, सर्दियों में भी न जमनेवाली नदिया को पार करने लगा। घोड़ा तली में बिछे ककड़ों पर नालों में ठकठक करता जा रहा था, उसने चलते-चलते पानी पीने के लिये गर्दन झुकायी पर सवार ने उसे हाका और घोड़ा ढलवा तट पर चढ़ गया।

सामने में उसे लोगों की बातों और स्लेज-गाड़ी के चलने की आवाज सुनायी पड़ी, घुडसवार ने फिर से घोड़े को रोक दिया। घोड़ा चौकन्ना होंकर मुड़ा। चादी का पेशबंद और कज्जाक काठी का चादी जड़ा ऊँचा हरना चाद की किरणों में अंधेरी गली में दमक उठे। सवार ने हरने पर लगाम पटककर जल्दी-जल्दी ऊट के ऊन का बना हूड ओढ़ लिया जो अब तक उसके कंधों पर लटका हुआ था। चेहरे को लपेटकर उसने घोड़े को मरपट दौड़ा दिया। स्लेज-गाड़ी जब पीछे रह गयी तो फिर वह दुलकी चाल में चल पड़ा पर हूड नहीं उतारा।

गांव में पहुँचकर उसने रास्ते में मिली एक औरत में पूछा

“अरे बुआ यह तो बनाना कि यहाँ याकोव ओम्ब्रोवोव कहा रहता है?”

‘क्या याकोव लूकीच?’

“हा-हा वही।”

“उधर पालर व पीछे उसका मकान है खपरैल की छतवाला दिखायी दिया?”

‘समझ गया। शुक्रिया।’

खपरैल की छतवाले बड़े मकान के पास वह उतरा, फाटक में घोड़े को खींचकर अंदर घुस गया। खिड़की को चाबुक की मूठ में हौले से खटखटाकर आवाज दी

“मालिक! याकोव लूकीच, एक मिनट के लिये जग बाहर आना।”

बिना टोपी के, कोंट को हाथ में बंद किये मालिक ओंगारे पर निकला, आगतुक के चेहरे को घूरते हुए वह ओंगारे से उतरा।

“कौन बेवक्त आया है?” स्लेटी मूँछों में मुस्कगते हुए उसने पूछा।

“पहचाना नहीं, लुकीच ? रात काटने दो यहा। घोड़े को गर्म जगह में बाधने का हे कोई इतजाम ?”

“नहीं. कामरेड, पहचाना नहीं। आप इलाकाई कार्यकारिणी से तो नहीं है ? भूमि विभाग से तो नहीं ? कुछ-कुछ जाने-पहचाने लग रहे हे आवाज आपकी मुझे परिचित-सी लग रही है ।”

आगतुक के सफाचट होठ मुस्कान में मिकुड गये, हुड उतारकर वह बोला

‘पोलोवत्सेव की याद है ?’

याकोव लुकीच ने घबराकर इधर-उधर नजर डाली उसका चेहरा पीला पड गया, वह फुमफुसाकर बोला

‘जनाब ! आप कहा मे ? येमाऊन * साहब ! घोड़े का इतजाम अभी कर देते है अस्तबल में कितने साल गुजर गये ’

“अरे तुम शोर मत मचाओ ! वक्त बहुत गुजर गया तुम्हारे पास कोई भूल तो होगी ? तुम्हारा घर मे कोई गैर ता नहीं है ?”

आगतुक ने मालिक को लगाम थमा दी। घोड़ा पराये हाथ के आदेशो को आलस्य के साथ पूरा करता हुआ, तनी गर्दन पर मिर उठाकर अस्तबल की ओर चल पडा। उसने लकड़ी के फर्श पर जार से खुर पटका, फुत्कार कर पराये घोड़े की वहा बसी गध को महसूस किया। पराये आदमी का हाथ उसकी थूथनी पर पडा, उगर्तियो ने कुशलता और सावधानी के साथ रगड खाये समूडो को लोहे के दरान से मुक्त किया और घोड़ा कृतज्ञता के साथ चारे पर भुक गया।

पेटी मेने ढीली कर दी ह कुछ देर जीन में खडा रहने दो कुछ दम ले लेगा तब जीन उतार दूंगा, घोड़े को ठंडी भूल मे ढकते हुए मालिक बोला। जिस तरह घोड़े के मां की पेटिया बधी थी वह भाप गया कि मेहमान बडी दूर से आया ह आर आज उसने बडा लम्बा रास्ता तय किया हे।

“अनाज ह तुम्हारा पास याकोव लुकीच ।”

‘थोडा-सा ह। पाना पिलाकर अनाज डाल देगे। अच्छा, चलिये घर के अंदर, अब आपका किस तरह पुकार । ग नहीं पुगनी रीत

* येमाऊन - क्रांतिपूर्व कज्जाक रजिमेंट का अपसर। - अन०

से—आदत नहीं रही और वैसे भी अच्छा नहीं है...” अंधेरे में मालिक बेठब ढंग से मुस्करा रहा था हालांकि जानता था कि उसकी मुस्कान दिखायी नहीं दे रही।

“पूरा नाम लेकर बुलाया करो। भूले तो नहीं?” अस्तबल से आगे-आगे निकलते हुए मेहमान बोला।

“कैसे भूल सकता हूँ! जर्मन से पूरी लड़ाई साथ लड़ी और इसमें भी... मैं आपको अकसर याद करता था, अलेक्सान्द्र अनीसीमोविच। जब से नोवोरोसीस्क* में हम बिछुड़े आपकी कोई ख़ैर-ख़बर नहीं मिली। मैं तो सोचता था कि आप कज़ाकों के साथ तुर्की चले गये।”

उन्होंने खूब गर्म रसोई में प्रवेश किया। आगंतुक ने हुड और मेमने की खाल की सफ़ेद टोपी उतारी, सफ़ेद, छितरे बालों से ढकी उसकी बड़ी, चौकोर खोपड़ी दिखायी पड़ी। झड़ते बालोंवाले भेड़िये जैसे माथे को मिकोड़कर उसने नज़र दौड़ायी और गहरी धंसी आममानी आँखों को मिचमिचाकर मुस्कराते हुए उसने बेंच पर बैठी मालकिन और बहू का झुककर अभिवादन किया।

“ठीक-ठाक हो, लुगाइयो?”

“भगवान का शुक्र है,” मालकिन ने संयमित स्वर में उत्तर दिया, उसने पति की ओर प्रश्नवाचक नज़र डाली: “यह किम आदमी को तुम लाये हो और उसकी आवभगत कैसे करनी है?”

“खाना परोसो,” मालिक ने मेहमान को कमरे में मेज़ के पास आने का निमन्त्रण देकर संक्षिप्त आदेश दिया।

अतिथि औरतों की उपस्थिति में बंदगोभी और सुअर के मांस का शोरबा खाते हुए मौसम के बारे में, फ़ौजी माथियों के बारे में बातचीत कर रहा था। उसका विशाल, मानो पत्थर से तराशा, जबड़ा धीरे-धीरे हिल रहा था; वह थके-मांदे, जुगाली करते बैल की तरह खाना चबा रहा था। खाना खाकर उठा, धूल से ढके कागज़ के फूलों से सजी देव प्रतिमाओं की पूजा करके, पुरानी, कंधों में तंग कमीज़ पर गिरे डबल रोटी के चूरे को भाड़कर वह बोला:

* मन् १९२० के वमत में देनीकिन की ध्वस्त मैना के दस्ते नोवोरोसीस्क बदर-गाह में पलायन करके विदेश या क्रीमिया में जनरल द्रागेल के पास चले गये थे।—म०

“रोटी-नमक के लिये शुक्रिया, याकोव लुकीच। और अब कुछ काम की बातें कर ले।”

बहू और सास ने जल्दी-जल्दी मेज साफ की, और मालिक की भौह के इशारे पर रसोई में चली गयी।

२

दवीदोव पर तिरछी नजर डालकर, कमजोर आँखों और सुस्त हरकतावाला, पार्टी की इलाकाई समिति का सचिव मेज के पास बैठकर आँखें मिचमिचाता हुआ उसके दस्तावेज पढ़ने लगा।

खिडकी के बाहर तेज हवा टेलीफोन के तारों में अटककर सीटियाँ बजा रही थी, नीची बाड़ से बड़ी घोड़ी की रीढ़ पर मटरगइती करता हुआ कौवा कुछ चुग रहा था। हवा उसकी पूछ मरोड़ रही थी, उसे फड़फड़ाकर उड़ा रही थी पर वह फिर से बृद्धी उदास मग्नियन घोड़ी की पीठ पर बैठ जाता, विजयोल्लास के साथ अपनी वहशी आँख मटकाता। कस्बे पर नीचे लटके बादलों के चिथड़े तैर रहे थे। कभी-कभी मृज की तिरछी किरणें नीचे पड़ती, गर्मियों की तरह नीले आकाश का टुकड़ा दृष्टिगोचर होता और तब खिडकी से दिखायी पड़ता दोन का मोड़, उसके पार का जंगल और क्षितिज पर पवनचक्कीवाला दृग्स्थ दर्ग किसी कोमल मनोहारी चित्र की तरह लगते।

तो तुम बीमारी के कारण रोस्नोव में रुक गये थे? अच्छा, ठीक है बाकी आठ पच्चीस हज़ारी* तीन दिन पहले पहुँच चुके हैं। सभा हुई थी। सामूहिक फार्मों के प्रतिनिधियों ने उनकी अगवानी की।” सचिव ने कुछ सोचते हुए होंठ चबायी। “आजकल हमारे यहाँ हालत ख़ास तौर से जटिल है। इलाके में सामूहिकीकरण का प्रतिशत चौदह दशमलव आठ है। ज्यादातर संयुक्त कृषि सहकारिताएँ हैं। अमीर कुलको से अभी अनाज की काफी वसूली बाकी है। लोगों की

* मन् १९२६ में पार्टी के आह्वान पर औद्योगिक केन्द्रों से २५ हज़ार अग्रणी मजदूर सामूहिक फार्मों की स्थापना में सहायता देने के लिये देहात गये थे। - अनु०

जरूरत है। बहू-५-५-त मस्त। सामूहिक फार्मों ने तेतालीस मजदूरों का आवेदन किया था पर सिर्फ तुम नौ जनों को ही भेजा गया है।”

अपनी मूजी पलको को उठाकर वह किसी नये, कौतूहलपूर्ण भाव के साथ दवीदोव की आंखों में झाँका, मानो यह अदाजा लगा रहा हो कि यह आदमी कितने पानी में है।

“अच्छा, तो कामरेड मेरे, तुम फिटर हो? बहू-५-५-त अच्छा। और पुतीलोव कारखाने* में कितने दिनों में काम कर रहे हो? लो मिगरेट पियो।”

“फौज से छुट्टी मिलने के बाद से। नौ साल हो गये हैं।” दवीदोव ने मिगरेट लेने के लिये हाथ बढ़ाया और सचिव की नजर दवीदोव की कलाई पर धुधले नीले गोदने पर पड़ी, उसके लटके होठों के कोनों पर मुस्कान आ गयी।

“सुंदरता के लिये है? नौसेना में रहे थे?”

हां।”

“वही तो देखता है कि लगर गदा है”

“जवान था दिमाग में भ्रम भरा था बस गोद डाला।” दवीदोव ने झपककर आंखों में खींची, उसने मन ही मन सोचा “जहां जरूरत नहीं वहां तेरी जरूरत पैनी है। और अनाज-बमूली के मामले में आखिरी भपकता रह गया।”

सचिव कुछ देर तक चुप रहा और उसने अपने रुग्ण मुँह-में चेहरे में मेहमाननवाजी की निरर्थक मुस्कान का खदेड़ दिया।

“कामरेड तुम आज ही इलाक़ाई समिति के प्रतिनिधि की हमियत में पूर्ण सामूहिकीकरण करने जाओगे। क्षेत्रीय समिति का नया निर्देश पढ़ा है? जानते हो? हाँ, तो तुम ग्रेम्याची ग्रामीण सोवियत में जाओगे। आगम बाद में करना, अभी वक्त नहीं है इसके लिये। शत-प्रतिशत लांगों का सामूहिक फार्म में शामिल करने पर जोर देना। वहां छोटी-सी सहकारिता है पर हमें तो बिराट सामूहिक फार्म बनाने हैं। जैसे ही हम प्रचार अभियान दल का गठन करेंगे फौरेन तुम्हारे पास भेज देंगे। और तब तब तुम वहां जाकर कूलकों को सावधानी में दबाकर सामूहिक

* पुतीलोव कारखाना - लेनिनग्राद का सुप्रसिद्ध 'कीराव प्लाट' - ५०

फार्म की स्थापना करने लगे। सभी गरीब और मझले किसानों को तुम्हारे सामूहिक फार्म में होना चाहिये। फिर वहाँ सन् उन्नीस सौ तीस में सामूहिक जोतों पर बोने के लिये बीज का आम कोष बना लेना। सावधानी से काम लेना। खासकर मझले किसानों से। ग्रेम्याची में तीन कम्युनिस्टों की इकाई है। इकाई का सचिव और ग्राम मोवियत का अध्यक्ष—अच्छे बड़े हैं, लाल छापामार रह चुके हैं।” और फिर होठ चबाकर उसने जोड़ा, “उनके स्वभाव पर इसका असर दिखायी पड़ता है। ममभे, मेरा मतलब ? राजनीतिक दृष्टि में अधकच्चे हैं, गर्लतिया कर सकते हैं। अगर कोई कठिनाई हो तो इलाकाई केंद्र चले आना। उफ, टेलीफोन लाइन अभी नहीं है। यही बुरी बात है। हा, एक बात और वहाँ की इकाई का सचिव ‘लाल पताका’ पदक से विभूषित, तेज स्वभाव का है। टेढ़े मिजाज का है।”

सचिव ने पोर्टफोलियो ने ताले पर उगलिया बजायी और दबीदोव को उठता देखकर मजीव होकर बोला

“जग रुको, एक बात और है रोज हरकारे के हाथ मूचनाये भेजने रहना, और उन लोगों को चुस्त बनाना। हा अब प्रबन्ध विभाग के निदेशक को अपना मर दिखाकर खाना हा जाओ। मैं कह दूंगा कि तुम्हें इलाकाई कार्यकारणी के धाड़े दे दे। बस तुम सामूहिकीकरण का शत-प्रतिशत तक उठा दो। प्रतिशत को देखकर ही तुम्हारे काम का मूल्यांकन करेंगे। अठारह गावों का विराट सामूहिक फार्म खड़ा कर देंगे। हुई न बात ? पुतोलोव कारखाने जैसा।” उसे अपनी तुलना इतनी पसंद आयी कि मुस्कुरा दिया

“तुम मुझे कुलको के साथ सावधानी बरतने के बारे में कह रहे थे। तुम्हारा तात्पर्य क्या था ?” दबीदोव ने पूछा।

“वह यह कि, ‘सचिव के होठों पर बड़प्पन की मुस्कान फैल गयी, “एक कुलक तो अनाज वमूली का कोटा पूरा करता है और ऐसे भी है जो जान-बूझकर नहीं करते। ऐसे का मामला तो साफ है धारा * एक सौ सात थोप दो उस पर और काम खत्म। पर

* अपनी निजी आवश्यकता की पूर्ति के बाद बचनेवाला अनाज राज्य को न देनेवाले और अनाज की खेती आम जिलाबाजारी करनेवाले धनिक किसानों—कुलकों के खिलाफ मोवियत मन्त्र दंड विधान की धारा १०१ का प्रयोग करती थी।—म०

पहलेवाले का मामला जटिल है। उदाहरण के लिये तुम क्या करोगे उसके साथ ?”

दवीदोव कुछ सोचकर बोला

“मैं तो उसे नया काम सौंप देता।”

“क्या बात कही है। नहीं कामरेड, ऐसे काम नहीं चलेगा। इस तरह तो हमारे कदमों पर से लोगों का विश्वास ही उठ जायेगा। और तब मझोला किसान क्या कहेगा? वह कहेगा ‘देखो तो कैसी है सोवियत सत्ता। किसानों को किस तरह सता रही है।’ लेनिन ने हमें किसान वर्ग की मनोवृत्ति को गंभीर रूप से ध्यान में रखने की सीख दी थी, और तुम कह रहे हो ‘दूसरा काम’। यह तो, भाई मेरे, बचकानी बात है।”

“बचकानी?” दवीदोव का चेहरा तमतमा गया। “क्यों, तुम्हारे खयाल से क्या स्टालिन गलती कर रहा है?”

“स्टालिन से इसका क्या वास्ता?”

“भाषण पढ़ा था उसका सम्मेलन में उन मार्क्सवादियों के, क्या कहते हैं, अरे उनको अरे वही, जो जमीन के मामलों को देखते हैं क्या नाम है उनका? अरे जमीनवालों के।”

“कृषिविदों के?”

“हां-हां उन्हीं के सम्मेलन में।”

“तो क्या हुआ?”

“इस भाषणवाला ‘प्राव्दा’* तो मगवाओ।”

मेक्रेटरी ‘प्राव्दा’ ले आया। उसे खोलकर दवीदोव जल्दी-जल्दी नजर दौड़ाने लगा। सचिव उसके चेहरे को ताकता हुआ मुस्करा रहा था।

“यह रहा। मुनो ‘जब तक हमारा रवैया पारंगमीमन का था, कुलकों का निर्मूलन नहीं किया जा सकता था’ हा आगे देखो यह रहा ‘और अब? अब—बात दूसरी है। अब हमें कुलक वर्ग

* ‘प्राव्दा’ के २६ दिसंबर १९२६ के अंक में मार्क्सवादी कृषिविदों के सम्मेलन में सोवियत मध्य में कृषि नीति के प्रश्नों पर स्टालिन का २७ दिसंबर १९२६ का भाषण प्रकाशित हुआ था।—स०

पर निर्णायक चढ़ायी करने, उसका प्रतिरोध तोड़ने और वर्ग के रूप में उसका निर्मूलन करने की सभावना प्राप्त है' वर्ग के रूप में, समझे? उससे अतिरिक्त अनाज देने को क्यों नहीं कहा जा सकता? क्यों उसे जू की तरह नहीं कुचला जा सकता?"

सचिव की मुस्कान बुझ गयी चेहरा गंभीर हो गया।

"वहाँ आगे कहा गया है कि कुलक की बेदखली सामूहिक फार्म में शामिल होनेवाले गरीब और मझोले किसानों का समूह करता है। क्या ठीक नहीं कह रहा? पढ़ो।"

"अरे, तुम भी।"

"अरे-वरे नहीं कर।" सचिव तैश में आकर बोला, उसकी आवाज तक काप गयी। "तुम क्या मुझसे दोगे? हरेक कुलक के खिलाफ बिना माचे-समझे कानूनी कार्यवाही का। यह भी उस इलाके में जहाँ सिर्फ चौदह प्रतिशत सामूहिकीकरण हुआ है, जहाँ मझोला किसान अभी यह सोच ही रहा है कि सामूहिक फार्म में शामिल हो कि नहीं। इस काम में पल भर में गर्दन कट सकती है। आ जाते हैं ऐसे-ऐसे लोग जिन्हें यहाँ के हालात का कोई अंदाज तक नहीं" सचिव अपने को काबू में करके शांत आवाज में बोला 'इस तरह सोचोगे तो अधाधुंध गलतियाँ कर बैठोगे।'

यह तो तुम कह रहे हो "

"तुम फिर मत करो। अगर यह कदम आवश्यक और सम्योचित होता तो क्षेत्रीय समिति हमें सीधे हुक्म देती। कुलको का सफाया कर दो।" तब बात दूसरी है। एक मिनट में कर देते। मिलीगिया पूरा अमला तुम्हारी खिदमत में है पर अभी हम अनाज छिपानेवाले कुलको को जन न्यायालय के जगिये धारा एक सौ सात के अंतर्गत आर्थिक दंड ही दिलवा सकते हैं।"

"तुम्हारे कहने का मतलब है कि खेत मजदूर, गरीब और मझोले किसान कुलको की बेदखली के खिलाफ है? कुलक के पक्ष में है? कुलक पर चढ़ाई में उनकी अगुआई करने की क्या जरूरत नहीं है?"

सचिव झटके में पोर्टफोलियो का ताला खद करके रखे स्वर में बोला

"नेता के किसी भी शब्द का तुम जो चाहो अर्थ निकालो, पर इलाके की जिम्मेदारी इलाकाई समिति के ब्यूरो और व्यक्तिगत रूप

मे मुझ पर है। जहा हम तुम्हे भेजेगे वहा हमारी नीति चलाने का कष्ट करना न कि अपनी ईजाद की हुई। और मुझे माफ करो, मेरे पास तुम से बहस करने का वक्त नहीं। मेरे पास इसके अलावा भी ढेर काम है," यह कहकर वह उठ गया।

दबीदोव की आखो में फिर खून उतर आया, पर वह अपने को काबू में करके बोला

"मैं पार्टी की नीति चलाऊंगा, और तुम्हे कामरेड, मजदूर की तरह माफ-माफ कहे देता हूँ तुम्हारा रवैया भ्रामक है. राजनीतिक दृष्टि से गलत है, फैक्ट।"

"मैं खुद जिम्मेदार हूँ अपन और तुम्हारी यह बात 'मजदूर की तरह' पुरानी पड चुकी है, जैसे "

टेलीफोन की घटी घनघनायी। सचिव ने चोगा उठाया। कमरे में लोग जमा होने लगे और दबीदोव प्रबन्ध विभाग के निदेशक के पास चल दिया।

"दाये पैर पर लगडाकर चलता है * फैक्ट।" इलाकाई समिति की इमारत में निकलते समय वह सोच रहा था। 'कृषिविदों के लिये भाषण को एक बार फिर पुरा पढ डालूंगा। क्या मचमच मैं गलत हूँ ? नहीं भट्टया माफ करो। अपनी सहिष्णुता की वजह से तूने कुलको को मित्र पर बिठा लिया है। मडल समितिवाले भी क्या हैं, कहते थे कि काम का आदमी है, और उगन कुलका में पूरा अनाज तक नहीं बम्ला। दबाव डालना एक बात है और काटे की तरह उसे जड़ समेत उखाड़ना - बिल्कुल दूसरी। जनता को क्या लामबंद नहीं करते ?' मन ही मन वह बहस किये जा रहा था। हमेशा की तरह सबसे विश्वसनीय दलीले बाद में दिमाग में आ रही थी। वहाँ इलाकाई पार्टी समिति में भावावेश में आकर जो बात मुँह में आती कहे जा रहा था। ठंडे दिमाग में काम लेना चाहिये। वह हाट के चोक पर बर्फ की पपड़ी में ढक्के डबरो में छुप-छुप करता, जमकर पत्थर बने गोबर के ढेरों में ठोकरे खाता जा रहा था।

'दुख की बात है कि इतनी जल्दी बात खत्म कर दी नहीं ता

मैं तुझे निरुत्तर कर देता,' दबीदोव जोर में बोल पड़ा, पास में गुजरती औरत को मुस्कुराते देखकर वह भेपकर चुप हो गया।

* * *

'कज्जाक और किमान भवन' में जाकर दबीदोव ने अपनी अटैची ली, यह याद करके वह मुस्करा दिया कि दो जोड़ी जाघिये-बनियान, मोजो और मूट के अलावा उमका मुख्य अगबाब—पेचकम, प्लास, रेती, छेनी, परकार, रिच और अन्य औजार थे, जो वह लैनिनग्राद में लाया था। "इनकी यहा कोई जरूरत न पड़ेगी। सोचा था ट्रैक्टर वगैरह ठीक करने में काम आ जायेंगे पर यहा तो ट्रैक्टर ही नहीं है। लगता है ऐसे ही प्रतिनिधि बना-बना घूमूंगा पूरे इलाके में। किसी मार्माहिक फार्म के लोहार को दे दूंगा,' स्नेज में अटैची रखते हुए उसने सोचा।

जई पर पले कार्यकारिणी के हट्टे-कट्टे घोड़ रगबिरगे चटकीले बेल-बटेदार स्नेज को आसानी से खींच रहे थे। जैसे ही वे कस्बे में बाहर निकले दबीदोव ठंड में अकड़ गया। ओवरकोट के मेमने की खालवाले घिमें कॉलर को खड़ा करने, टोपी माथे पर झुकाने के बावजूद उसे बेहद ठंड लग रही थी हवा और नम हिम-कण कॉलर और आस्तीनों के जगिये अंदर घुसकर बदन में कपकपी दौड़ा रहे थे। पुगने जूतों में पैरों को खाम तौर में ठंड लग रही थी।

कस्बे में ग्रेम्याची तक निर्जन गृग में अट्टाईस किलोमीटर की दूरी थी। कुचली लीद में मैला रास्ता पहाड़ी की चोटी पर जाता था। चारों ओर जिधर देखो हिम-प्रातर ही दृष्टिगोचर होता था। जगली भांडिया बर्फ के बाभ में मिर झकाय खड़ा थी। वम खड़ा के ढलानों पर भूमि के दुम्मट चकते झाक रह थे हवा के कारण बर्फ बहा टिक न पानी थी पर खंडों और घाटियों की तली में बर्फ के ढेर पड़े थे।

दबीदोव बड़ी देर तक स्नेज के तस्बे को पकड़कर दौड़ता रहा तार्क पैरों में कुछ गर्मी आ जाये, फिर वह स्नेज पर चढ़ गया और दुबककर ऊधने लगा। कभी-कभी पाले में ढकी अधखुली पलकों में दबीदोव को सड़क में फूदकर उड़ते कौओं के धूप में बैगनी बिजली

की तरह चमकते डैने दिखायी पड़ते और फिर मीठी तद्रा उसकी आखों को बद कर देती ।

दिल को चुभोती ठड के कारण उसकी नीद टूट गयी और उसने आखे खोली । नम आखों मे उसे इद्रधनुषीय आभा मे लिपटा ठडा सूरज , मूक स्नेपी का अनन विस्तार , क्षितिज पर आकाश का सुरमई किनारा और पास ही मे टीले की सफेद चोटी पर ललौही लोमड़ी दिखायी पडी । लोमड़ी चूहों का शिकार कर रही थी । वह पिछली टागो पर खडी होती , बल खाती कूदती और अगली टागो पर गिरकर पजो मे बर्फ खोदने लगती , उसका सारा शरीर शुभ्र हिमधूलि मे लिपट जाता और उसकी पूछ लाल ज्वाला की तरह बर्फ पर बिछ जाती ।

साभ ढलने से पहले वे ग्रेम्याची पहुँचे । ग्राम-सोवियत के बडे अहाते मे दो घोडोवाली खाली स्नेज खडी थी । ओसारे पर कोई सात-एक कज्जाक भुड बनाकर सिगरेट का धुआ उडा रहे थे । जमकर बर्फ बने पमीन के कारण खरदरी चमडीवाले घोडे ओसारे के सामने रुके ।

“ नमस्ते भले लोगो ! अस्तबल कहा है ? ”

“ नमस्ते , खरगोश की टोपी पहने एक अधेड कज्जाक ने सबकी एवज उत्तर दिया । “ वह रहा अस्तबल , सरकडे के फ्लपरवाला । ”

“ उधर चलो , ” दवीदोव ने गाडीवान को आदेश दिया और कदकर स्नेज मे उतर गया । नाटे कद का उसका बदन गठा हुआ था । दम्नानो मे गान रगडला हुआ वल्ल स्नेज के पीछे-पीछे चल पडा ।

कज्जाक भी असमजस मे पडकर अस्तबल की ओर चल पड क्योंकि आगतुक जो देखने मे कर्मचारी लगता था और जिसका उच्चारण स्थानीय लोगो जैसा नही था , स्नेज के पीछे-पीछे जा रहा था न कि ग्राम-सोवियत मे ।

अस्तबल के फाटक से लीद की घनी भाप निकल रही थी । इला-काई कार्यकारिणो के गाडीवान ने घोडे रोके । दवीदोव फुर्ती के साथ लगाम उतारने लगा । पास में भुड बनाये कज्जाक हैरत मे पड गये । औरतोवाला सफेद समर का कोट पहने बूढा मूछो से लटके हिम-शकुओ को भाडकर , चुलबुलाकर बोला “ देख के , दुलत्ती मार देगा , कामरेड ! ”

घोडे की पूछ को फदे मे निकालकर दवीदोव बूढे की ओर मुडा , उसके काले मे हाँटों पर मुस्कान फैली थी , आगे का एक दान गायब था ।

“बाबा, मैं मशीनगन चलाता था, ऐसे-ऐसे घोड़ों से मेरा वास्ता पड़ चुका है।”

“पर दात तो नदारद है, कहीं किसी घोड़ी ने तो नहीं तोड़ दिया?” कब्बे की तरह काली घनी घुघराली दाढ़ीवाले एक कज्जाक ने पूछा।

और सब मजाक पर हस पड़े, पर दक्षता से जुआ उतारते हुए, दबीदोव ने भी मजाक का जवाब मजाक में दिया

“नहीं, दात तो कब का तुड़वा चुका हूँ शराब की वजह से। चलो अच्छा ही हुआ, कम से कम लुगाइया तो नहीं डरेगी कि मैं उन्हें काट खाऊँगा। ठीक कह रहा हूँ न बाबा?”

मजाक पसंद आया और बूढ़ा कृत्रिम खेद के साथ सिर हिलाकर बोला

“मैं तो छोरे, जितना हो सकता था काट चुका हूँ। मेरा दात तो कब का लटक गया है ”

काली दाढ़ीवाला कज्जाक मफेद दानोवाला मुँह फाड़कर घोड़े की तरह हिनहिनाता हस रहा था वह कज्जाक अगरखे को कमे लाल कमरबंद को बार-बार पकड़ रहा था, मानों उसे डर था कि कहीं ठहाको में खुल न जाये।

दबीदोव ने कज्जाको को मिगरेटे बाटी और अपनी मिगरेट मुल्गाकर ग्राम-मोत्रियत की ओर चल पड़ा।

“वहा है, वही है अध्यक्ष, जाओ। और हमारी पार्टी का सेक्रेटरी भी वहा है,” दबीदोव के पीछे पीछे चलता बूढ़ा बोल रहा था।

कज्जाक भी लम्बे-लम्बे कश खींचते साथ-साथ चल रहे थे। उन्हें यह बात बहुत पसंद आयी कि आगतुक अन्य इलाकाई अधिकारियों की तरह स्लेज से उतरकर बगल में बैग दबाये, लोगों का अभिवादन किये बिना ग्राम-सोवियत में नहीं घुसा, बल्कि खुद घोड़ों को खोलने में गाडीवान की मदद करने लगा और उसने यह काम बड़ी दक्षता से किया। इसमें पता चलता था कि उसे घोड़ों का अच्छा ज्ञान है। पर साथ ही इन बातों से वे चकित भी हो रहे थे।

“कामरेड, तुम्हें घोड़ों को छूते घिन नहीं आती? भला यह नौकरी-पेशेवालों का काम है? और गाडीवान किमलिये है?” काली दाढ़ीवाले से न रहा गया।

“हमारे लिये यह बड़ी अजीब बात है,” बृढ़े ने साफ-साफ स्वीकार किया।

दवीदोव कुछ बोल भी न पाया।

“अरे यह तो लोहार है।” दवीदोव की, धातु के साथ काम करने-कगने स्लेटी पड़ी हथेलियों, नाखूनों पर चोटों के पुगने निशानों की ओर इशारा करके पीली-सी मूछोवाला युवा कज्जाक निराशा के साथ चिहुककर बोला।

“फिटर हू,” दवीदोव ने उसकी गलती ठीक की। “और आप लोग किसलिये ग्राम-सोवियत में जा रहे हैं?”

“यो ही, कौतूहलवश,” ओसारे पर रुककर सबकी गवज बढ़ा बोला। “जानना चाहते हैं कि तुम किसलिये आये हो? अगर फिर अनाज-वसूली के लिये ”

“सामूहिक फार्म के मिलसिले में आया हू।”

बृढ़े ने निगशा के साथ लम्बी सीटी बजायी और सबमें पहले उल्टे पाव लौट गया।

* * *

नीची छतवाले कमरे में भेड़ की खाल के गीले ओवरकोटों और लकड़ी की राख की तीखी ब्र फैली थी। मेज के पाम लैम्प की बत्ती चढ़ाता, दवीदोव की ओर मुह किये लम्बे कद का और सीधे कध्रो-वाला पुरुष खड़ा था। उसकी खाकी कमीज पर ‘लाल पताका’ पदक दमक रहा था। दवीदोव समझ गया कि यही ग्रेम्याची की पार्टी इकाई का सचिव है।

“मैं इलाकाई समिति का प्रतिनिधि हू। तुम कामरेड पार्टी इकाई के सचिव हो?”

“हा, मैं इकाई सचिव नागूल्लोव हू। बैठिये कामरेड, सोवियत का अध्यक्ष अभी आता है।” नागूल्लोव ने दीवार पर घूसा मारा और दवीदोव के पास आया।

उसकी छाती चौड़ी और टांगे रिमाले के सैनिकों की तरह बाड़ी थी। उसकी बड़ी-बड़ी काली-स्याह पुतलियोंवाली पीली-सी आँखों के ऊपर घनी भौंहे फैली थी। अगर बाज की तरह उसकी छोटी-सी नाक

के नथुने इतने खूबवार न होते, आखे धुधली न होती तो वह पुरुषो-
चित सुंदरता का प्रतीक हो सकता था।

बराबर के कमरे से बकरी की खाल की स्नेटी टोपी को पीछे की ओर झुकाकर लगाये हुए, गठीले बदनवाला कज्जाक निकला। उसने फौजी कपड़े की जैकेट और सफेद ऊनी मोजो में ठूसकर कज्जाको की पट्टियोवाली शलवारनुमा पैट पहन रखी थी।

“यही सोवियत का अध्यक्ष अद्रेई रजम्योल्नोव है।”

अध्यक्ष ने मुस्कराते हुए अपनी बदरंग-सी घुघराली मूछो पर हाथ फेरा और उसे गरिमा के साथ दवीदोव की ओर बढ़ाया।

“और आप कौन हैं? इलाकाई समिति के प्रतिनिधि? अच्छा। आपके कागजात देखा, मकार? आप शायद सामूहिक फार्म के सिलमिले में आये होंगे?” वह दवीदोव को ग्रीष्म के आकाश की तरह निर्मल अपनी आखों को झपकता भोली-बेबाक नजर में घूरकर देख रहा था। उसके गेहुण, कई दिनों से बढी दाढ़ीवाले चेहरे पर आतुरता का भाव व्याप्त था। माथे पर घाव का नीला तिरछा निशान बना था।

दवीदोव ने मेज के पाम बैठकर पार्टी द्वारा चलाये जानेवाले संपूर्ण सामूहिकीकरण के दो महीने के अभियान के उद्देश्यों के विषय में बताया और कल ही गरीबों और सत्रिय लोगों की सभा बुलाने का सुभाव रखा।

स्थिति को समझते हुए नागूल्नोव ने ग्रेम्याची की कृषि सहकारिता की बात छोड़ी।

रजम्योल्नोव उगकी बातों को भी उतन ही ध्यान के साथ सुन रहा था बस यदा-कदा कन्थई लाली से ढके गाल पर हाथ टिकाये कोई बात जोड़ देता था।

‘हमारे यहाँ संयुक्त खेती की तथाकथित सहकारिता है। मैं आपको भाफ कहे देता हूँ कामरेड मजदूर, यह सामूहिकीकरण का मखौल और सोवियत सत्ता का नुकसान ही है,’ काफी भावावेश में नागूल्नोव बोल रहा था। “उसमें अठारह कुटुम्ब शामिल हैं—सब बेहद गरीब। तो इसका क्या परिणाम निकलता है? मजाक ही बनकर रह जाता है। वे मिल गये, अठारह कुटुम्बों के पास चार घोड़े और बैलों की एक जोड़ी हो गयी और खानेवाले एक सौ सात। वे कैसे करे गुजारा?”

बेशक, उन्हें मशीनें और खेत जोतने के लिये ढोर खरीदने के वास्ते दीर्घकालिक ऋण दिये जाते हैं। वे ऋण तो ले लेते हैं पर लम्बी अवधि में भी उन्हें नहीं चुका सकेंगे। अभी समझाता हूँ कि क्यों अगर उनके पास ट्रैक्टर होता तो बात दूसरी होती, पर ट्रैक्टर उन्हें नहीं दिया गया और बैलों के बूते इतनी जल्दी अपने पावों पर नहीं खड़े हो सकते। यह भी कहे देता हूँ कि वे भ्रष्ट नीति चलाते हैं, मैं तो कब का उनको विसर्जित कर देता क्योंकि वे मरियल बछड़े की तरह सोवियत सत्ता का थन तो चूसते हैं पर बड़े नहीं होते। उनके बीच यह विचार भी घर कर गया है 'अरे, हमें तो हर हाज़त में मिलेगा।' पर कर्ज की वजह से हमसे ले क्या लेंगे।' इसी कारण उनमें कोई अनुशासन नहीं रहा और कल ही यह सहकारिता स्वर्गवामी हो जायेगी। यह बिलकुल सही विचार है सबको सामूहिक फार्म में शामिल करने का। यह जिदगी नहीं, पूरी मौज होगी। पर कज्जाक कौम बड़ी रूढ़ि पमद होती है, और उसे तोड़ना पड़ेगा।

“आप में से कोई इस सहकारिता में शामिल है?” दवीदोव ने उनकी ओर देखकर पूछा।

“नहीं” नागूलोव बोला। “मैं मन बीस में कम्यून में शामिल में इनकार कर दिया। मुझ पर सर्पित से घृणा का भूत सवार है, इसलिए अपने बैल और औजार मैंने पड़ोस के कम्यून नबर छह को दे दिये वह अब भी चल रहा है, हम मिया-बीवी के पास कुछ नहीं है। रजम्योलोव ऐसा उदाहरण नहीं दे सकता था। बात यह है कि वह विधुर है, बस बूढ़ी मा ही बची है उसकी। अगर वह शामिल हो जाता तो नानो की बौछार लग जाती। कहते ‘मठ दिया है मा को हमारे मत्थे और खुद खेत में काम करता नहीं।’ ये सब बागीकिया ध्यान में रखनी पड़ती है। और हमारी इकाई का तीसरा सदस्य—वह अभी बाहर गया हुआ है—लूला है। ग्रेशर में कट गया था हाथ उसका। वह भी सहकारिता में शामिल होने से शर्माता है, कहता है कि मेरे बिना भी वहां खानेवाले बहुत ज्यादा हैं।”

‘हा, हमारी सहकारिता भी एक म्मीबत है,’ रजम्योलोव ने हा में हा मिलायी। “उसका अध्यक्ष अर्काशा लोसेव काम का आदमी नहीं है। उन्होंने कैसे को ढूँढ़ कर चुना है। सच कहूँ, हमारी गलती है इसमें। ऐसे आदमी को नहीं पद पर बैठाने देना चाहिये था।”

“बात क्या है?” कुलकों की संपत्ति की मृची पर नज़र दौड़ाते हुए दबीदोब ने पूछा।

“अरे यही,” मुस्कराते हुए रज़म्योल्नोव बोला, “वह बीमार आदमी है। भाग्य की रेखा के अनुसार तो उसे मौदागर होना चाहिये था। बस यही रोग है उसे: उसका बम चले तो हर चीज़ को बेच दे या अदला-बदली कर ले। सहकारिता का उसन भट्टा बिठा दिया! अच्छी नसल का साड खरीदा था, उसे उसके बदले मोटर साइकिल लेने की मूभी। अपने मदम्यो को फुसला लिया, हमसे मलाह नही ली, एक दिन देखते है कि स्टेशन से मोटर साइकिल लादकर ला रहा है। हमने अपना मिग पीट लिया! चलो ले आया, कोई बात नही, पर उसे चलाना किमी को आता नही। और उन्हे उसकी ज़रूरत भी क्या है? चाहे हमो चाहें गेओ। कस्बे ले गया उसे। वहा जानकार लोग देखकर बोले, ‘इसे रगकर फेक देने मे ही भला है।’ उसमे कुछ ऐसे पर्जे नही थे जो मिर्फ कारखाने मे ही बनाये जा सकते है। उन्ह तो याकोव लुकीच ओस्त्रोव्नोव जैसे अध्यक्ष की ज़रूरत है। बडा अक्लमद आदमी है।’ उसन क्रान्नादार से नयी किस्म का गेहू मगवाया -- भीषण मे भीषण लु को सह नेता है. खेत मे वर्ष को जमा रखता है, जिसमे नमी की कमी नही होती। फसल उसके यहा हमेशा सबसे बढ़िया होती है। नसलदार मवेशी पालता है। यह मही है कि जब हम उस पर टैक्स का दबाव डालते है, तो बड़बडाता ज़रूर है पर किसान वह अच्छा है, उसे प्रशमा-पत्र भी प्राप्त है।”

“वह अपनो मे कुछ परग्या-गराया-सा है. हमेशा अलग, कुछ दूरी पर रहता है।” नागूल्नोव मदेह के साथ मिग हिलाकर बोला।

“अरे, नही! वह अपना ही आदमी है,” विश्वास के साथ रज़म्योल्नोव बोला।

३

उस रात, जब याकोव लुकीच ओस्त्रोव्नोव के पास उसका भूतपूर्व रिसाला कमाडर येसाऊल पोलोवत्सोव आया, उनके बीच लम्बी बातचीत हुई। गाव मे याकोव लुकीच को बुद्धिमान, लोमड़ी की तरह चालाक

और मावधान आदमी माना जाता था, पर वह गावों में भड़कते प्रचंड सघर्ष से परे न रह सका और भवर की तरह घटनाओं में फस गया। उसी दिन से याकोव लुकीच का जीवन खतरनाक ढलान पर लुढ़कने लगा

तब खाने के बाद याकोव लुकीच ने तबाकू की थैली निकाली, मोटी ऊनी जुरबवाले पैर को मोड़कर सटूक पर बैठ गया और इतने सालों से दिल का बोझ बना अपना दुखड़ा रोने लगा

“क्या बताऊ अलेक्सांद्र अनीसीमोविच? जीवन में न कोई खुशी है, न आनंद। बस, कज्जाक खेतीबाड़ी को सभालकर कुछ कमाने लगे। सन् छब्बीस या सन् सत्ताइस में टैक्स कमोवेश ठीक ही थे। पर अब फिर बुरा हाल हो रहा है। आपके कम्बे में क्या हाल है सामूहिकीकरण के बारे में बाते हो रही है या नहीं?”

“हो रही है” मेहमान ने कागज पर थूक लगाकर मिग्रेट बनाते हुए सक्षिप्त उत्तर दिया और मेजबान की ओर भौंहे उठाकर ध्यान में देखा।

“मतलब, इस लोरी में सब जगह आसू बह रहे हैं” चर्निया में आपको अपन वारे में बताना है मन बीम में हार के बाद में लौटा। काले सागर पर दो जोड़ी छोटे और साग माल छूट गया। खाली घर में लौटा। तब से काम में दिन-रात एक कर दिया। पहली बार कामरेडों ने अनाज-वसूली से ठेस पहुंचायी साग अनाज बुहारकर ले गये। फिर मैं इन ठेसों की गिनती ही भूल गया। वैसे गिनती तो की जा सकती है पहले तो ठेस पहुंचाने है फिर रसीद छोड़ जाने है तार्कि भूल न जाऊ।’ — याकोव लुकीच उठा और शीशे के पीछे हाथ डालकर उमने, कतरी हुई मृष्टों में मस्कराने हुए कागजों का पुर्लदा निकाला।

“ये रही रसीदे कि सन् इक्कीस में मैंने क्या-क्या दिया और दिया मैंने उन्हें अनाज भी, मांस भी और चमड़ा भी, उन भी मुगिया भी और पूरे के पूरे बैलों को भी वसूली के दफ्तर में हाककर ले गया था। और ये रही लगान की रसीदे और बीमें वगेरह की रसीदे भी है और चिमनी में निकलने धुएँ का भी टैक्स दिया, इसका भी टैक्स दिया कि बाड़े में मवेशी सही-मलामत है जल्दी ही इन कागजों में बोरी भर जायेगी। मतलब यह, अलेक्सांद्र अनीसी-

मोविच, जमीन मेरा पेट भरती थी और मैं परायो का। मेरी चमड़ी कोई एक बार थोड़ी उतारी गयी, पर हर बार नयी आ जाती थी। पहले-पहल दो बछड़ों को पाला, वे बड़े हो गये। एक को मैंने सरकार को मास के लिये दे दिया। बीवी की सिलाई की मशीन बेचकर दूसरा खरीदा। कुछ वक्त के बाद, मन् पच्चीस में अपनी गायों में एक जोड़ी और हो गयी। इस तरह मेरे पास दो जोड़ी बैल और दो गायें हो गयी। बोट मेरी नहीं छीनी, पर आगे के लिये मेरा नाम मझोले किसानों की सूची में दर्ज हो गया।”

“घोड़े हैं तुम्हारे पास?” अर्नाथ ने पूछा।

“जरा रुकिये, घोड़ों के बारे में भी बताता हूँ। मैंने पडोसन से खालिस नसल की दोन की घोड़ी का साल भर का बछेड़ा खरीदा, गाव में अकेली ऐसी घोड़ी बची थी। बछेड़ा बड़ा होकर ऐसी उम्दा घोड़ी निकला कि पूछो मत। कद छोटा, रिसाले के घोड़े में कुछ छोटी पर तेज ऐसी—ढूँढ़े न मिले। जिले में ग्रामीण जीवन की नृमायश में मझे उसके लिये इनाम और खालिस नसल का प्रमाण-पत्र मिला। मैं कृषिशास्त्री का कहना मानने लगा, जमीन की ऐसी सेवा करता जैसे बीमार लुगाई की। मकई मेरी गाव में सबसे बढ़िया, फसल सबसे ज्यादा। मैं बीज को भिगोता था और बर्फ का खेत में उड़ने न देता था ताकि धीरे-धीरे पिघलकर नमी देनी रहे। मतलब यह कि मैं सभ्य किसान बन गया और उसके बारे में मेरे पास प्रशस्ति-पत्र भी है जिले के भूमि विभाग का। वह देखिये।”

अर्नाथ ने उस ओर नजर डाला जिसे याकोव लुकीच की उगली उठी हुई थी वहाँ तकड़ी के चौखटे में जडा लाख की मूहरवाला मर्टिफिकेट देव प्रतिमाओं के पास लागेशिलोव के हाटों के साथ रखा था।

जी हाँ, मार्टिफिकेट दिया और कृषिशास्त्री मेरे गेहूँ की बालिया अपने अफसरे को दिखाने के लिये रोस्तोव नगर ले गया था, याकोव लुकीच गर्व के साथ बोला। ‘शुरू में मैं पांच देस्य्यातीना पर खेती करता था जब पावों पर खड़ा हो गया, तो पुग जोंग लगाकर तीन, चार, सात कृग* तक बोये मैंने हुई न बात।’ मैं अपने बेटे और

* कृग — चार हक्टेयर। स०

बहू के साथ काम करता था। बस दो बार जब ज्यादा काम था मजदूर को रखा था। इन बरसों में सोवियत सत्ता क्या हुकम देती थी? — जितना हो मके उससे भी अधिक बोओ! और मैं बोता था, इतना बोता था कि दिन में तारे नजर आने लगते, भगवान की सौगंध! पर अब, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच, यकीन मानिये — डरता हूँ! डरता हूँ कि इन सात कूगो की जोत की वजह से मेरा सब कुछ छिन जायेगा, बेदखली करवा देगे। हमारी सोवियत के अध्यक्ष, लाल छापेमार कामरेड रजम्योत्नोव ने, उस अंद्रेई के बच्चे ने मुझे उसमें फसवा दिया, उसकी मा की ऐमी की तैसी! कहता मुझमें 'याकोव लुकीच, जितना ज्यादा हो सकता है बो, सोवियत सत्ता की मदद कर, उसे आजकल अनाज की सख्त जरूरत है।' पहले मुझे शक ही था पर अब लगने लगा है कि यह 'ज्यादा से ज्यादा' मेरी टगडी तुडवा देगा भगवान की कमस!"

"तुम्हारे यहाँ सामूहिक फार्म में नाम लिखे जा रहे हैं? मेहमान ने पूछा। वह पलंग के पास, हाथों को पीठ के पीछे पकड़े खड़ा था चौड़े कंधे, बड़ा सिर और अनाज से ठसाठस भरे बोंरे की तरह गठीला।

सामूहिक फार्म में? अभी तक तो इतना जोर नहीं था पर कल गरीबों की मभा होगी। शाम को अधेरा हाँन में पहले घर-घर का फेरा लगाकर बता गये हैं। अपने तो बड़े दिन में शार मचा रहे हैं। 'शामिल हो, शामिल हो'। पर लोगो ने साफ-साफ इनकार कर दिया किमी ने अपना नाम नहीं लिखवाया। कौन खुद अपने पैर वृन्हाडा मारे? शायद कल भी फुमलायेगे। कहते हैं कि आज शाम इलाके से कोई मजदूर आया है और सबको सामूहिक फार्म में हाकेगा। अत आ रहा है हमारी जिदगी का। कमर तोड़कर कुछ कमाया, मरते दम हाथों में छाले पड़े रहेंगे और अब माग माल एक ढेर में डाल दो, मतलब ढोर भी, अनाज भी, मुर्गे-मुर्गिया भी, मकान भी? वही बात हुई न राह चलते को बीवी देकर खुद कोट पर जा और नहीं तो क्या। आप खुद ही बताइये, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच, मैं तो सामूहिक फार्म को बैलो की जोड़ी (एक जोड़ी तो मास का व्यापार करने-वाले मगठन को बेच चुका हूँ), वछेंडे के साथ घोड़ी, सारे औजार, अनाज दूगा और दूसरा — जूओ से भरी अटी। मैं और वह अपना-

अपना माल मिला लेगे और मुनाफा आधा-आधा बाटेगे। भला मुझे यह मुहायेगा? क्या पता वह जिदगी भर आगम में लेटा मीठी रोटी के सपने ही देखता रहा और मैं क्या कहूँ! जी मिचलाता है यह सब सोच के। अच्छा छोड़िये भी ये बातें। आप कैसे हैं? किसी दफ्तर में आजकल नौकरी करते हैं या कोई धंधा?"

मेहमान याकोव लुकीच के पास आकर स्टूल पर बैठ गया और कागज में तबाकू लपेटकर मिगरेट बनाने लगा। वह तबाकू की थैली में नजरे गड़ाये हुए था और याकोव लुकीच उसकी पुरानी कमीज के तग कालर को टकटकी लगाये देख रहा जो कलथई गर्दन में गड़ा जा रहा था, और इससे टेढ़ा के पास गर्दन की नसे फूली हुई थी।

"लुकीच, तुम मेरे दस्ते में थे याद है, एक बार येकातेरीनो-दार* में, शायद उन दिनों जब हम पीछे हट गये थे, कज्जाको के साथ सांविगत सत्ता के बारे में मेरी बातचीत हुई थी? मैंने तभी कज्जाको को चेतावनी दी थी, याद है? मैंने कहा था 'यागो बहुत भयंकर गलती कर रहे हो। कम्युनिस्ट तुम्हें शिकजे में कम देंगे, कचूमर निकाल देंगे तुम्हारा। पछताओगे तुम, पर देर हो चुकी होगी।'" वह चुप हो गया, नीली-सी आँखों की पुतालियाँ सिमटकर बिंदु बन गयीं, और वह मुस्कराया। "क्या मेरी बात सही नहीं निकली? मैं नावो-रोमीस्क से अपने लोगों के साथ नहीं गया। जा नहीं पाया। तब हमारे साथ गद्गारी की गयी थी स्वयंसेवी और मित्र-देश** हमें अकेले छोड़ गये। मैं लाल सेना में भरती हो गया, स्क्वाड्रन कमांडर रहा, पोलिश मोर्च पर जाते समय उनके यहाँ एक आयोग था। फिल्ट्रेशन आयोग, भूतपूर्व अफमरो की जाँच का इस आयोग में मुझे पद में हटा दिया और गिरफ्तार करके क्रांतिकारी अदालत भेज दिया। सच कहूँ, कर देते कामरेड मेरा काम तमाम या यातना शिविर में ठूस देते। पता है क्यों? कुतिया की औलाद, मेरे गाँव के किसी कज्जाक ने

* अब क्राम्नोदार शहर। - स०

** स्वयंसेवी - दनीकिन की सेना के श्वेत गार्ड मित्र-देश - एन्टेण्ट गट के देश इंग्लैंड, स० रा० अमेरिका, फ्रांस व अन्य। - स०

रिपोर्ट कर दी कि मैंने पोदत्योल्कोव * को मृत्युदंड देने में भाग लिया था। रास्ते में मैं भाग गया बहुत दिनों तक छिपकर रहा, दूसरे नाम से रहता रहा, और सन् तेईस में अपने कस्बे में लौट आया। इसके बारे में दस्तावेज़ कि मैं कभी लाल मेना में स्क्वाड्रन कमांडर था मैंने सभालकर रखा हुआ था, अच्छे लोगों से पाला पड़ा—बस मैं ज़िदा बच गया। शुरू-शुरू में दोनचेका ** के राजनीतिक ब्यूरो में पूछ-ताछ के लिये बुलाया जाता था। किसी तरह उनसे पिंड छुड़ाया और मास्टर बन गया। हाल ही तक पढ़ाने का काम करता रहा। पर अब अब बात दूसरी है। काम से उस्त-खोप्योस्की जा रहा हूँ, रास्ते में पुराने फौजी साथी की तरह तुम्हारे पास रुका हूँ।”

“मास्टर थे? यह बात है आप पढ़े-लिखे आदमी हैं, पोथे पढ़े हैं। यह तो बताइये कि अब होगा क्या? ये सामूहिक फार्म हमें ले कहा जायेंगे?”

“कम्युनिज्म में, भइया। अमली कम्युनिज्म में। मैंने कार्ल मार्क्स को भी पढ़ा है और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रसिद्ध घोषणापत्र को भी। पता है सामूहिक फार्मों का क्या अंत होगा? पहले सामूहिक फार्म होंगे फिर कम्युन—संपत्ति का पूर्ण सफाया। न केवल बैल बल्कि बच्चे भी तुमसे सरकार छीन लेगी। सब कुछ आम होगा बच्चे बीबिया, प्याले चम्मच, सब। तुम हम का शेरबा खाना चाहोगे पर तुम्हें सूखी गेटी खिलायेंगे। बधुआ मजदूर बन जाओगे।”

“पर अगर मैं यह न चाहूँ?”

‘अगर, तुमसे पूछना कौन।’

‘यह कैसे हो सकता है?’

‘बस ऐसे ही।’

“बड़ी चालाकी की बात है।”

* पोदत्योल्कोव फ्यादोर प्रिगार्योविच (१८८६-१९१८) — क्रांतिकारी कज़ाक का एक नेता, दोन प्रदेश में सोवियत सत्ता की मदद करने के लिये मघर्ष के सक्रिय नेता। सन १९१८ के मार्च में दोन सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना हुई। पोदत्योल्कोव उसके जन कोमिससारे की परिषद का अध्यक्ष चुन गये थे।—स०

** दोन क्षेत्र में प्रतिक्रांतिकारियों भीतरघातियों और जमाखोरों-मनाफाखोरों से मघर्ष के लिये गठित आयोग।—स०

“तुम क्या मोचते थे ?। अच्छा अब मैं तुमसे पूछना चाहता हूँ भला आगे इसी तरह रहा जा सकता है ?”

“आगे है ही क्या ?”

“अगर नहीं है तो कुछ करना चाहिये. सघर्ष करना चाहिये।”

‘आप भी क्या कहते हैं अलेक्सांद्र अनीमीमोविच ! हमने को-शिश की थी, सघर्ष किया था बिल्कुल अमभव है। सोच भी नहीं सकता इसके बारे में।’

“पर तुम कोशिश तो करो।” मेहमान बिल्कुल सटकर बैठ गया, उमने रसाई के कमकर बद दरवाजे की ओर नजर मोड़ी और अचानक उमके चेहरे का रंग उड़ गया, वह फूफूसाकर बोला ‘म माफ-माफ, तुमसे कहे देता हूँ मुझे तुम पर भरोसा है। हमारे कस्बे के कज्जाक विद्रोह की तैयारी कर रहे हैं। और तुम यह मत सोचो कि सब बस ऐसे ही हो रहा है कि उठाया और कर डाला। हमारे सबध मास्को में है, उन जनरलों में हैं जो अब लाल सेना में नौकरी करते हैं, उन दजीनियरो में हैं जो फैक्टरियो और कारखानों में काम करते हैं और तो और विदेशों में भी हमारा संपर्क है। हा-हा ! अगर हम एक होकर अभी विद्रोह करें तो वसंत तक विदेशी शक्तियों की मदद से दोन प्रदेश साफ हो जायेगा। वसंत में तुम अपने बीज में, सिर्फ अपने लिये ही अनाज बोओगे अच्छा, बाद में बनाना। हमारे इलाके में हमसे सहानुभूति रखनेवाले बहुत हैं। उन सबको एक करके संगठित करना है। इसी काम में मैं उस्त-खोप्योस्की जा रहा हूँ। तुम हमारा साथ दोगे ? हमारे संगठन में तीन सौ से अधिक भूतपूर्व कज्जाक सैनिक शामिल हो गये हैं। दुब्रोव्स्की, बोयस्कोव्स्की, तुब्यान्स्की और मालीय ओल्बोवात्स्की में हमारे लडाकू दल ६० यद्वा येम्याची में भी ऐसे ही दल का गठन करने की जरूरत है अच्छा, बोला।

“लोग मामूहिक फार्मों और अनाज-वसूली में असंतुष्ट हैं

‘क्यों जरा बात लोगों के बारे में नहीं, तुम्हारे बारे में हो रही है। मैं तुमसे पूछ रहा हूँ। बोलो ?’

“भला ऐसी बातों का एकदम फैसला थोड़े ही किया जाता है ?

बात फार्मी के फदे में मिर घुसाने की है

‘सोच लो हुकूम मिलते ही एकसाथ सभी गावों से चढ़ाई शुरू करेंगे। तुम्हारे इलाके के कस्बे पर कब्जा कर लेंगे, मिलीशिया

और कम्युनिस्टो का एक-एक करके उनके घरों में ही काम तमाम कर देगे, और आगे तो दावानल की तरह फैल जायेगी विद्रोह की आग।”

“पर है क्या हमारे पास?”

‘मिल जायेगा। तुम्हारे पास भी तो कुछ होगा?’

“क्या पता कहीं पड़ी है टूटी-फूटी, आस्ट्रियन बटूक”

“बस शुरू करने की देर है और एक हफ्ते बाद विदेशी जहाज तोपें भी और रायफले भी ले आयेगे। हवाई जहाज तक होंगे हमारे पास। क्यों?”

“येमाऊल साहब, कुछ मोचने का वक़्त दे। एक दम हाथ न बाधे मेरे”

अतिथि ने पलंग से पीठ टिकायी, उसके चेहरे का रंग अभी नहीं लौटा था, वह फटे स्वर में बोला

“हम सामूहिक फार्म में नहीं बुला रहे, कोई ज़ोर-जबर्दस्ती नहीं कर रहे। तुम्हारी जो मर्जी हो पर जबान देख लेना, लुकीच। छह तुम्हारे हिस्से की और सातवीं” और उसने जेब में ग्वाल्वर की टिक-टिक करनी मैगजीन उगली में घुमायी।

“जबान पर मेरी पूरा भरोसा रख सकते हैं। पर आपका काम जोखिम भरा है। मैं छिपाऊंगा नहीं ऐसे काम में शामिल हूँ। डर लगता है। पर ज़िदगी ने कोई चारा नहीं छोड़ा।” कुछ चुप रहकर वह बोला “अगर अमीरों को न मताया जाता तो मैं गांव का नबर एक आदमी होता। अगर आजादी होती तो मैं अपनी मोटर रखता।” — पल भर के मौन के बाद मेज़वान मलाल के साथ बोला। “पर अकेले इस काम को करने पलक झपकते गर्दन मरोड़ देगे।”

‘पर अकेले क्यों?’ हताश स्वर में अतिथि ने उसकी बात काटी।

“नहीं, यह तो मैं ऐसे ही कह रहा हूँ, पर दूसरे क्या करेंगे? मतलब गाववाले? जनता देगी भी हमारा साथ।”

“जनता तो भेड़ों के रेवड की तरह है। उसे हाकना होता है। तो तुमने कर लिया फैसला?”

“मने कह तो दिया, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच”

“मुझे ठीक से मालूम होना चाहिये कर लिया तुमने फैसला या नहीं?”

“दूसरा चाग ही नहीं है इसलिये कर रहा हूँ फैमला। पर आप मोचने की कुछ मोहलत तो दे। कल सुबह अंतिम फैमला बता दूंगा।”

“इसके अलावा तुम्हें भरोसेमंद कज्जाको को राजी करना होगा। ऐसे लोगो को ढूँढना जो मावियत मत्ता में खार खाये बैठे हैं,” पोलाव-न्सव अब हुक्म देने लगा।

“गेमी जिदगी में कौन नहीं खाये बैठा।”

“और तुम्हारा बेटा?”

“हाथ में हथेली कहा जायगी? जिधर मैं उधर वह।”

“ठीक-ठाक है न मजबूत जवान है?”

“बढ़िया कज्जाक है,” मौन गर्व के साथ मेजबान बोला।

महमान के लिये कमरे में मोटे स्लेटी नमदे और समूर के कांट का बिस्तर बिछा दिया गया। उसने बूट उतारे, पर कपडों में ही लेट गया, ठंडे पगों की गर्रवाले तकिये पर गाल टिकाते ही उसे नींद आ गयी।

भोर में पहले याकोव लुकीच ने बगल के कमरे में सोनवाली अपनी अस्मी वर्षीया मा को जगाया। संक्षेप में उसने अपने भूतपूर्व कमांडर के आने का प्रयोजन उसे बताया। बुढ़िया कान पर हाथ लगाकर पलंग में अपनी काली नसा में ढकी मख्खा गठिया में टेढ़ी टांगें लटकाकर मृत रहती थी।

“माता जी आशीर्वाद दागी?” याकोव लुकीच घुटनों के बल खड़ा हो गया।

‘लड़ो लड़ो इन अधर्मियों में मेरा लाल! भगवान आशीर्वाद देगे। गिरजे बद कर रहे हैं पापी पादरियों का जीना हराम कर दिया लड़ो इन में।’

सबेर याकोव लुकीच ने महमान को जगाया

“कर लिया फैमला! हुक्म दीजिये।”

‘पढ़कर दम्नस्वत कर दा। पोलावन्सव ऊपर की जेब से कागज निकालकर बोला।

“भगवान हमारे साथ हैं। मैं दोन की भरीन सेना का कज्जाक प्रिय दोन मुक्ति मघ’ में शामिल होता हूँ अपने अधिकारियों के आदेश पर मैं खून की आबिरी बूढ़ तक शक्ति और सभी साधनो में ईसाई धर्म के कट्टर शत्रुओं और रूसी जनता के शोषको—

कम्युनिस्टो-बोलशेविको से लड़ने का वचन देता हूँ। अपने अधिकारियों और कमांडरो के आदेशों का पूरी आज्ञाकारिता से पालन करूँगा। मैं अपने सनातन पितृदेश पर अपना सर्वस्व अर्पित करने का वचन देता हूँ। मेरे हस्ताक्षर इसका प्रमाण हैं।”

४

बत्तीस आदमी—ग्रेम्याची के कार्यकर्ता और दरिद्रजन एक ही हवा में साँस ले रहे थे। दबीदोव कुशल वक्ता नहीं था पर वे लोग शुरू में उसकी बातों को इतने ध्यान में सुन रहे थे जैसे किसी कथावाचक को भी नहीं सुना जाता।

“साथियों, मैं लाल पुतिलोव कारखाने का मजदूर हूँ। हमारी कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर वर्ग ने मुझे सामाजिक फार्म का गठन और हमारा खून चूमनेवाले कुलकों का सफाया करने में आपकी मदद के लिये भेजा है। मैं ज्यादा नहीं बोलूँगा। आप सबको सामाजिक फार्म में शामिल होना चाहिये, अपनी जमीन, अपना मजदूरीसमान और सबेरी मिला लेने चाहिये। पर सामाजिक फार्म में किसलिये? इसलिए कि अब अगर हम तरह-तरह जीना असंभव है। अनाज की कमी इसलिए है कि कुलक उसे जमीन में गाड़कर सड़ा देता है, लड़-भगडकर उसमें अनाज वसूल करना पड़ता है। आप तो खुशी से दे देते, पर खुद आपको अनाज की कमी है। मझोले और गरीब किसानों के अन्न में सोवियत संघ का पेट नहीं भरा जा सकता। ज्यादा जमीन पर बोना चाहिये। पर तुम लकड़ी के हल या एक फालवाने हल में ज्यादा जमीन कैसे जोत सकते हो? सिर्फ ट्रैक्टर ही इसका इलाज है। फैंक्ट! मुझे नहीं मालूम आपके यहां दोन प्रदेश में एक हल से पूरे पतझड़ में कितनी जमीन जोती जा सकती है”

‘दिन-रात हल की मछ पकड़ रहो तो मर्दियां तक काई बारह दस्यतीना जोत सकते हो।”

“बस! बारह? और अगर जमीन कड़ी हो?”

“अरे आप भी क्या बातें कर रहे हैं?” तीखा महिला स्वर बोला। “एक हल के लिये तीन-चार जोड़ी बढिया बैलों की जरूरत

है पर हमारे पास कहा से आये ? है, पर वह भी हरक के पास नहीं, मरियल बैलों की जोड़ी ज्यादातर उन बैलों से जोतते हैं, थनवालो से। अमीरो के पास है यह सब, हवा तक पीछे से धकेलकर उनकी मदद करती है "

"अरे बात इसकी नहीं हो रही। दामन मुह में ठूसकर चुप बैठी रह," किसी ने भारी, फटी-फटी आवाज में कहा।

"अरे तू अकलवाले। जाके अपनी बीवी को मिखा, मुझे इसकी जरूरत नहीं।"

'और ट्रैक्टर से ? "

दबीदोव उनके चुप होने का इतजार करके बोला

"और ट्रैक्टर से भी, हमारे पुतिलोव कारखानेवाले को ही लो, अगर कुशल ट्रैक्टर चालक हो तो दिन भर में दो पालियों में बारह देम्यातीना भी जोती जा सकती है।"

मभा में भाग लेनेवाले अवाक् रह गये। किसी के मुह में अनायास निकल पडा

"तेरी मा की । "

'यह हुई न बात। ऐसे घोंडे में हल चलाना हो नसीब " किमी ने ईर्ष्या भरी उमाम छोड़ते हुए कहा।

दबीदोव घबराहट के कारण मूखे होठों पर हाथ फेरकर आगे बोला

"हम अपने कारखाने में आपके लिये ट्रैक्टर बनाते हैं। ट्रैक्टर खरीदना गरीब या मझोले किमान में बस की बात नहीं है। मतलब यह कि उसे खरीदने के लिये खेत-मजदूरों, गरीब और मझोले किसानों को एक होना चाहिये। आप जानते हैं कि ट्रैक्टर ऐसी मशीन है जिसे जमीन के छोटे टुकड़े पर चलाने में नुकसान ही है, उसे बड़ी जोतों की जरूरत है। छोटी-छोटी सहकारिताओं का फायदा उतना ही है जितना एक जू में तेल।"

"अरे इसमें भी कम।" पीछे में किसी की भारी आवाज सुनायी पड़ी।

"तब क्या किया जाये ?" दबीदोव फल्ती पर गौर किये बिना आगे बोला, "पार्टी ने संपूर्ण सामूहिकीकरण की योजना बनायी है ताकि ट्रैक्टर से जोड़कर आपको दरिद्रता से उबार जा सके। अपनी

मृत्यु से पहले कामरेड लेनिन क्या कहा करते थे? सिर्फ सामूहिक फ़ार्म में ही किसान गरीबी से छुटकारा पा सकता है। नहीं तो उसका भट्टा बैठ जायेगा। कुलक-पिशाच उसका सारा खून चूस लेगा ... और आपकी पूरी दृढ़ता के साथ निर्देशित मार्ग पर चलना चाहिये। मजदूरों के साथ संघ बनाकर सामूहिक किसान सभी कुलकों और दुश्मनों का सफ़ाया कर देंगे। मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ। अब मैं आपकी सहकारिता की चर्चा करूँगा। वह छोटी-सी, कमज़ोर है और इस कारण उसका हाल बहुत दयनीय है। इस कारण सिर्फ़ शत्रुओं का लाभ हो रहा है ... अरे लाभ-वाभ कुछ नहीं बस उससे सिर्फ़ नुकसान ही हो रहा है! पर हमें इस सहकारिता को सामूहिक फ़ार्म में बदलना चाहिये, यह उसकी रीढ़ बनेगी और उसमें मंभोले किसान जुड़ जायेंगे ...”

“रुको, मैं तुम्हारी बात काट रहा हूँ!” चित्तीदार चेहरेवाला भेंगा द्योम्का उशाकोव खड़ा हुआ, एक समय वह इस सहकारिता का सदस्य रह चुका था।

“पहले अनुमति मांग, फिर बोलना,” दवीदोव और अंद्रेई रज़म्यो-त्नोव के साथ मेज़ पर बैठे नागूल्लोव ने मस्ती के साथ उसे रोका।

“मैं बिना पूछे ही कहूँगा,” द्योम्का हाथ भटककर बोला, उसकी आंखें ऐसी तिरछी हुईं, लगता था कि वह एक साथ सभा में बैठे लोगों और मंच की ओर दिख रहा हो—“क्यों हम, माफ़ कीजिये, घाटे में रहे और सोवियत सत्ता के लिये बोझ बन गये? मैं पूछता हूँ, क्यों हम ऋण देनेवाली कंपनी की रोटी मुफ्त में तोड़नेवालों की तरह रहे? हमारी सहकारिता के पूजनीय अध्यक्ष की वजह से! अर्काशा बदलू की वजह से!”

“कुत्ते की तरह भौंक रहा है!” पीछे की पंक्तियों से पतली आवाज़ सुनायी पड़ी और अर्काशा कोहनियों से धकेलकर रास्ता बनाता हुआ मेज़ के पास आया।

“मैं सिद्ध कर दूँगा!” द्योम्का की आंखें नाक के बांसे को घूरने लगीं। रज़म्योत्नोव मेज़ पर उभरी हड्डियोंवाले अपने हाथ से घूसे मार रहा था पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। अर्काशा की ओर मुड़कर वह बोला, “नहीं दे सकता तू सफ़ाई अपनी! हमारी सहकारिता का भट्टा इसलिये नहीं बैठा कि हम कम थे बल्कि तेरी अदला-बदली के कारण। और ‘कुत्ता’ कहने के लिये मैं तुम्हें मज़ा चखा दूँगा।

बिना किमी में पूछे मोटर माइकिल के बदले माड नही दिया ? माड के बदले ही तो लाया । अडे देनेवाली मुर्गियों की अदला-बदली की किसे सूझी ”

“ फिर झूठ बक रहा है । ” अर्काशा उसकी बात काटे जा रहा था ।

बग्घी के बदले तीन उम्दा मेढो और दो साल को बछिया देने के लिये तूने नही तां किमन कहा था ? मौदबाज कही का । ठीक ही तो कहा मैने । ” द्योम्का विजयोल्लास के साथ बोला ।

‘ अरे होश मे आओ । क्यों तुम मुर्गों की तरह लड रहे हो । ” नागू नोव ने उन्हे शात करवाया , उसका लाल गाल फडकने लगा ।

“ मुझे भी बोलने दो , ” मेज के पास आकर अर्काशा बोला ।

वह अपनी सुनहरी दाढी को मुट्ठी मे भरकर बोलना ही चाहता था पर दवीदोव ने उसे हटा दिया

“ पहले मै अपनी बात पूरी कर लूँ और अब कृपया परेशान मत करा हाँ तो मै सार्थिया , कहता हूँ सिर्फ सामूहिक फार्म ही इसका इलाज है ”

‘ अरे तुम हमे मन मनाओ ! हम तो वैसे भी सामूहिक फार्म मे शामिल हो जायेंगे , ” दरवाजे के पास बैठे लाल छापेमार पावेल ल्युबीशिकन ने उसकी बात काट दी ।

“ हम राजी है सामूहिक फार्म के लिये । ”

‘ सब मिलकर तो किसी से भी टक्कर ले सकते है । ”

‘ पर अक्ल से काम लेना चाहिये । ’

वही ल्युबीशिकन कुर्सी से खड़ा हुआ , उसने अपनी काली टोपी उतारी — उसका कद ऊँचा , कंधे चौड़े — पूरे दरवाजे को घेरे थे , वह जोर से चिल्लाया

“ अरे , अजीब आदमी हो तुम भी ! क्यों हमारे बीच सोवियत सत्ता का प्रचार कर रहे हो ? अरे लडाई करके हमने उसे यहा अपने पावो पर खड़ा किया , खुद ही हमने उसे अपन कंधे का सहारा दिया ताकि डगमगा न जाये । हमे मालूम है कि सामूहिक फार्म क्या है और हम उसमे शामिल होंगे । हमे मशीने दो । ” उसने फटी खालवाली अपनी हथेली पसारी । “ ट्रैक्टर बाकई जबर्दस्त चीज है , मानते है , पर तुम मजदूरो ने कम बनाये है , और इसीलिये हम तुम्हे फटकारते

है। मुसीबत तो यह है कि हमारे पास कोई चारा नहीं। और बैलो से तो सामूहिक फार्म के बिना भी हल चलाया जा सकता है, बस एक हाथ से हाकते और दूसरे से आमू पोछते रहेंगे। अरे, मैं तो खुद सामूहिक फार्मों के अभियान में पहले ही क्लीनिन* को चिट्ठी लिखने की मोच रहा था, कि किसानों को कोई नया जीवन शुरू करने में मदद दिलवाये। पहले सालों में तो पुराने शासन की तरह—लगान चुकाओ, और जैसे मर्जी हो गुजारा करो वाली बात थी। और कम्युनिस्ट पार्टी किसलिये है? ले ली हमने सत्ता अपने हाथ में, और आगे क्या? वही पुरानी बात चलाओ हल—अगर उसमें जोतने को द्वार है तो। और अगर किसी के पाम नहीं है, तो? हाथ पसारकर भीख मागे गिरजे के सामने? या फिर सोवियत सेठों और सहकारितावालों के लिये काम करना? अमीरों को जमीनें चढ़ा दी पट्टे पर, उन्हें खेत मजदूर रखने की इजाजत दे दी। क्या सन् अठारह में क्रांति ने यही करने को कहा था? आपने तो उनकी पलके मूढ़ डाली है। और जब कहो 'आखिर किसलिये संघर्ष किया था?' तो वे कर्मचारी, जिन्होंने ब्राह्मण की गध तक नहीं सूँधी, इन शब्दों पर हमते हैं और उनकी आड़ में तरह-तरह के श्वेत प्रतिक्रांतिकारी दरिद्रे साजिशों के जाल बुनते हैं। 'तुम बेकार की बातें मत करो' बहुत सुन चुके हैं हम सुंदर-सुंदर बातें। तुम हमें मशीन दो—उधार पर या अनाज के बदले, पर कोई हल-वल नहीं बल्कि बढ़िया मशीन। ट्रैक्टर दिलवाओ, जिसके बारे में तुम बना रहे थे। मझे यह किसलिये मिला है?" वह बेच पर बैठे लोगों के घुटनों को फादता मेज की ओर चल पड़ा, रास्ते में वह शलवारनुमा पतलून का नाड़ा खोलने लगा। पास जाकर उसने कमीज उठायी और ठोड़ी के नीचे दबा ली। गेहूँ पेट और कूल्हे पर घावों के भयंकर निशान थे। "प्रतिक्रांतिकारियों का यह तोहफा किसलिये मिला मुझे?"

"बेशर्म कही का! पूरी पतलून ही उतार दे ना!" द्योम्का उशा-कोव के पाम बैठी विधवा अनीसिया क्षोभ के साथ पतली आवाज में चिल्लायी।

* क्लीनिन मिखाईल डवानाविच (१८७४-१९४६) सोवियत संघ के प्रथम राष्ट्रपति। - अनु०

“तू चाहती है?” द्योम्का ने उसकी ओर तिरछी नजर डालकर कटाक्ष किया।

“चुप भी हो जाओ अनीमिया बुआ! मुझ मजदूर आदमी को अपना घाव दिखाते शर्म नहीं आती। देखने दो! अगर आगे भी ऐसे ही जीना है तो कोई फर्क नहीं पड़ता, जल्दी ही इसे ढांपने के लिये भी कुछ नहीं बचेगा। अब भी नाम की ही पतलून है। दिन में लड़कियों के सामने इसे नहीं पहना जा सकता, नहीं तो देखकर डर जायेगी।”

पीछेवाली कतारों में ठहाके गूज उठे पर ल्यूबीशिकन ने मस्जिनी में नजर दौड़ायी और फिर लैम्प की जलती बत्ती की चट-चट सुनायी पड़ने लगी।

‘शायद मैं टमीलिये पत्रिकातिकारियों में लड़ा कि फिर मैं अमीर मुझसे बेहतर जिदगी गुजारे? ताकि वे मालपूड़े खाये और मैं प्याज के साथ सूखी रोटी?’ क्यों डमीलिये, कामरेड मजदूर? तुम मकार, दीद मत मटकाओ। मैं माल मैं एक बार बालता हूँ बालन दा।

“हा-हा बोलो, दबीदोव ने मिर हिलाकर कहा।

‘बोल रहा हूँ। इस माल मैं तीन देम्यातीना गेह बोया। मेरे घर में तीन बच्चे, अपाहिज बहन और बीमार बीवी हैं। दे दिया मैंने अनाज का अपना कोटा रजम्योलोव?’

हा, दे दिया। शोर क्या मचा रहा है।’

मचाऊंगा शोर! और कुल-फ़ाल नकट न उसकी मा।

‘जबान मभाल! नाग्ल्नाव मेज पर घूसा पटककर बोला।

‘फ़ाल नकटे न निर्धारित काटा दिया’ नहीं।’

“पर उस पर तो अदालत न जुर्माना ठाका और अनाज भी वसूल कर लिया, रजम्योलोव बोल पड़ा उसकी आंखें चमक रही थी वह बड़े आनंद के साथ ल्यूबीशिकन की बातें सुन रहा था।

“तुम्हें यहाँ आकर देखना चाहिये, सुस्त घोंदें।” दबीदोव को इलाकाई पार्टी समिति का सचिव याद आ गया।

“इस माल फिर उसे आदर के साथ फ़ोल इग्नतिच कहकर बुलाओगे। और बसत में वह फिर मुझे काम पर बुलायेगा।” और उसने दबीदोव के पैरा में अपनी टोपी पटक दी। “तुम मुझे सामूहिक फार्म के बार में क्या कह रहे हो?” कुलको की रीढ़ तोड़ दो तब शामिल

होगे। हमे उनकी मशीने, उनके बैल, उनकी ताकत दे दो, तभी हम बराबर होंगे। नहीं तो बस बातें ही बातें सुनायी देती हैं, 'कुलक का सफाया करो' और वह है कि साल-ब-साल बढ़ता जा रहा है, खर-पतवार की तरह, हमें पनपने नहीं देता।"

'हमें फ़ोल का माल दो और अर्काशा बदलूँ उसके बदले हवाई-जहाज ले आयेगा," द्योम्का बोल पड़ा।

"हो-हो-हो!"

"पलक भपकते ही अदला-बदली कर डालेगा।"

'आप लोग गवाह हैं मेरी बेइज्जती के।"

"चुप! सुनने नहीं दे रहा, चुप!"

"तुम अधर्मियों को किसी चीज का डर है भी?"

"अरे ओ, चुप भी रह।"

दबीदोव मुश्किल में लोगों को शांत करा पाया।

"अरे यही तो हमारी पार्टी की नीति है! खुले दरवाजे को क्यों ठकठका रहे हो? वर्ग के रूप में कुलक का सफाया करके उसकी सारी जायदाद सामूहिक फार्मों को दे देनी चाहिये, फैक्ट! और कामरेड छापेमार, तुमने बेकार ही टोपी मेज के नीचे पटक दी, तुम्हारे सिर को उसकी अभी जरूरत पड़ेगी। अब पट्टे पर जमीन चढ़ाने और बटाई मजदूर रखने की बात ही नहीं हो सकती। कुलक का हम इसलिये सह रहे थे कि इसकी जरूरत थी वह सामूहिक फार्मों से ज्यादा अनाज देता था। पर अब उल्टा होगा। कामरेड स्तालिन ने इसके अकर्मण्यता का हिमाब लगाकर कहा कुलक को हमारे जीवन से मुअत्तल कर दो! उसकी संपत्ति सामूहिक फार्मों को दे दो तुम मशीनों का रोना रो रहे थे सामूहिक फार्मों की हालत मुधारने के लिये पचास करोड़ रूबल दिये जा रहे हैं, इस पर क्या बोलोगे? सुना है तुमने इसके बारे में? तो क्यों बिना बात शोर मचा रहे हो? पहले सामूहिक फार्म तो पैदा करो फिर मशीनों की चिन्ता करना। और तुम हो कि पहले जुआ खरीदना चाहते हो और फिर जुग के नाप का घोड़ा। हम क्यों रहे हो? ठीक ही तो कह रहा हूँ।"

"हो गयी ल्युबीशकिन की टाय-टाय फिस्स!"

"हो-हो"

"अरे हम तो जी-जान से सामूहिक फार्म में शामिल होंगे।"

“अरे इसने जुए के बारे में क्या खूब कही ”

“अरे अभी रात को ही तैयार है।”

“लिखो नाम अभी।”

“कुलको पर चढ़ाई के लिये ले चलो।”

“कौन सामूहिक फार्म में नाम लिखवाना चाहता है, हाथ उठाओ,” नागूल्लोव ने प्रस्ताव किया।

गिनने पर तैतीस हाथ निकले। किमी ने बहककर दोनों हाथ उठा दिये थे।

घुटन ने दवीदोव का ओवरकोट और कोट उतरवा दिये। उसने कमीज के बटन खोले और मुस्कराता हुआ लोगो के शांत होने की प्रतीक्षा करने लगा।

“आप लोग बहुत सचेत हैं, फैक्ट। पर आप सोचते हैं कि सामूहिक फार्म में शामिल हो गये और बस? नहीं, यह काफी नहीं है। आप गरीब लोग—सोवियत मत्ता का सहारा हैं। अरे, मा के लालो, खुद भी सामूहिक फार्म में शामिल हो जाओ और हिचकिचाते मझोले किसान को भी अपने साथ खींचो।”

“वाह तुम उसे कैसे खींचोगे अगर वह नहीं चाहता? वह कोई बैल तो है नहीं कि सीगो पर रस्सी बांधी और हाक ले गये?” अर्काशा बदलू ने पूछा।

“उसे मनाओ, विश्वास दिलाओ। तुम हमारी मच्चाई के कैसे प्रचारक हो कि दूसरे को नहीं समझा सकते? कल सभा होगी। खुद पक्ष में हाथ उठाना और अपने पड़ोसी—मझोले किसान को भी इसके लिये मनाना। और अब हम कुलको की बात करेंगे। उनको उत्तरी कार्केशियाई प्रदेश में निर्वासित करने का फैसला करेंगे या कुछ और?”

“हम राजी हैं।”

“जड़ से काट दो उन्हें।”

“नहीं, बेहतर तो यही होगा कि उन्हें जड़ समेत उखाड़ दो, न कि जड़ से काटो।” दवीदोव ने बात ठीक की और रजम्योल्लोव की ओर मुड़कर बोला “कुलको की सूची पढ़कर सुनाओ। अब उनकी बेदखली का फैसला करेंगे।”

अट्रेई ने फाइल से एक पन्ना निकालकर दवीदोव को थमा दिया।

“फ़ोल दामास्कोव। क्या वह सर्वहारा के इस दंड के योग्य है?”

लोगों ने एकसाथ हाथ उठाये। पर गिनते समय दबीदोव को एक आदमी मिला जिसने हाथ नहीं उठाया।

“सहमत नहीं हो?” उसने पसीने के कणों से नम भौंहें सिकोड़ी।

“मैं निष्पक्ष हूं,” देखने में दब्बू, साधारण-से कज़ाक ने सक्षिप्त उत्तर दिया।

“क्यों?” दबीदोव ने कौतूहल के साथ पूछा।

“क्योंकि वह मेरा पड़ोसी है, उमने बहुत बार मेरा भला किया। इसीलिये मैं उस पर हाथ नहीं उठा सकता।”

“निकल जाओ फ़ौरन सभा से!” नागूलोव ने उचककर कांपती आवाज़ में आदेश दिया।

“नहीं, ऐसे नहीं करते, कामरेड नागूलोव!” दबीदोव ने उसे सख्ती से टोका। “नागरिक, तुम नहीं जाओ! अपना तर्क समझाओ। तुम्हारे ख़याल से दामास्कोव कुलक है कि नहीं?”

“ये सब बातें मैं नहीं समझता—अनपढ़ हूं और सभा से मेरी छुट्टी कर दीजिये।”

“नहीं, कृपया तुम हमें बताओ तो कि उससे तुम्हें क्या-क्या नेमने मिली?”

“वह हमेशा मेरी मदद करता था, बैल देता था, बीज उधार देता था ... और भी बहुत कुछ ... पर मैं मत्ता के साथ गद्दारी नहीं कर रहा। मैं सत्ता का हामी हूं...”

“क्या उमने तुमसे उसकी वकालत करने का अनुरोध किया था? पैसे दिये या अनाज इसके लिये? अरे तुम स्वीकार कर लो, डरो नहीं!” रज़म्योलोव बीच में बोल पड़ा। “बोल भी: उसने तुम्हें क्या लालच दिया था?” और इस आदमी पर आती शर्म व अपने बेतकल्लुफ़ सवालियों के कारण उसके होंठों पर अटपटी मुस्कान छा गयी।

“कुछ भी नहीं। तुम क्या जानते हो?”

“भूठ बोल रहे हो, तिमोफ़ेई! तुम्हें ख़रीदा जा चुका है, मतलब तुम कुलक के चाकर हो!” कोई चिल्लाया।

“जो चाहे कह लो, मर्जी तुम्हारी है...”

दबीदोव ने इस अंदाज़ में, मानो गर्दन पर छुरी टिका रहा हो उससे पूछा:

“तुम मोबियत सत्ता के पक्ष में हो या कुलक के? तुम, नागरिक,

गरीब वर्ग की नाक मत कटवाओ, सभा को साफ-साफ बताओ तुम किस के पक्ष में हो ?”

“अरे क्यों इस पर समय बर्बाद कर रहे हो।” रोष के साथ ल्युबीशकिन बोला। “वोदका की एक बोतल में इसे इसके चिथड़ों में खरीदा जा सकता है। तुम्हें देखकर तिमोफेई, दिल कमकता है।”

मतदान में भाग न लेनेवाला तिमोफेई बोश्चोव अंत में बनावटी आज्ञाकारिता के साथ बोला

“मैं सत्ता के पक्ष में हूँ। क्यों पड़ गये हाँ हाथ धोकर मंरे पीछे ? अपनी अनपढ़ता के कारण ” पर दोबारा मतदान कराये जाने पर उसने स्पष्ट अनिच्छा के साथ हाथ उठाया।

दवीदोव ने अपनी डायरी में लिखा “तिमोफेई बोश्चोव, वर्गीय शत्रु के प्रभाव में। समझाने की जरूरत है।”

सभा में और चार कुलकों की बेदखली का एकमत में अनुमोदन किया गया।

पर जब दवीदोव बोला

‘नील बोरोदीन। कौन पक्ष में है?’ सभा में कष्टकर चुप्पी छा गयी। नागुलोव ने भीपी नजर में रजम्योलोव की ओर देखा। ल्युबीशकिन टोपी में माथे का पसना पोछन लगा।

“आप लोग क्यों चुप है ? क्या बात है ?” दवीदोव ने हैरानी के साथ पातों में बैठे लोगों की ओर देखा पर किमी ने उसमें नजर तक नहीं मिलायी। उसने नागुलोव की ओर नजरे मोड़ी।

“बात यह है,” वह हिचकिचाहट के साथ बोला। “यह बोरोदीन जो है न, जिसे हम आपस में तितोक कहकर पुकारते हैं, हमारे साथ सन् अठारह में अपनी मर्जी से लाल गार्ड में शामिल हुआ था। गरीब घर का होने के नाते वह बड़ी वीरता से लड़ा। घायल हुआ, पुरस्कार भी मिला—क्रांतिकारी कारनामों के लिये चादी की घड़ी। वह दुमेन्को के दस्ते में था। और तुम समझते हो कामरेड मजदूर, कि उसने हमारा दिल किस तरह तोड़ दिया ? जैसे गिट्ट लाश पर टूट पड़ता है, वैसे ही यह घर लौटते ही खेतीबाड़ी में लग गया और हमारी चेतावनी के बावजूद अमीर बनने लगा। दिन-रात काम करता, बिलकुल वहशियों की तरह, सर्दी हो चाहे गर्मी एक ही सूती पतलून में घूमता। तीन जोड़ी बैल और भारी बोझ उठा-उठाकर पाला हर्निया,

पर यह भी उसे कम लगा। दो-दो, तीन-तीन बटाई मजदूर रखने लगा। पवन-चक्की लगा ली, फिर पाच अश्वशक्ति का भाप का इंजन खरीदा और कोल्हू बनाने की तैयारी करने लगा, मवेशी का व्यापार करने लगा। खुद रूखी-सूखी खाता और मजदूरों को भूखा मारता, हालांकि वे बेचारे दिन में बीस घंटे काम करते, पर रात को उठकर पाच बार घोंडो और मवेशी को चारा डालते। हमने कई बार उसे पार्टी इकाई में और सोवियत में बुलाकर बड़ा शर्मिदा किया, उससे कहा 'छोड़ दे, तीत, यह सब, हमारी प्यारी सोवियत सत्ता के गान्ने में रोड़ा मत बन। तूने खुद उसके लिये मुसीबतें भेली, श्वेत गार्ड से मोर्चों पर लड़ा।" नागल्नोव ने ठंडी सास छोड़कर हाथ पसारे। "क्या किया जा सकता है, जब आदमी पर भूत सवार हो? जायदाद घुन की तरह उसे थोथा कर रही है। हम उसे बुलाकर समझाते-बुझाते हैं, लड़ाइयों की, मिलकर भेली मुसीबतों की याद करते हैं, उसे मनाते हैं, डराते-धमकाते हैं कि अगर वह हमारे गान्ने में आ रहा है, बुर्जुआ बन रहा है, विश्व-क्रांति की प्रतीक्षा नहीं करना चाहता तो नेस्तनाबूद कर देंगे।"

"तुम मक्षेप में बताओ," दवीदोव ने बेमब्री में अनुरोध किया।

नागल्नोव का स्वर कापकर धीमा हो गया।

"उसके बारे में मक्षेप में नहीं बताया जा सकता। यह ऐसा दर्द है, खून में गिरता घाव पर वह यानी तीत हमें उत्तर देता है 'मैं सोवियत सत्ता का आदेश पूरा कर रहा हूँ, जोत बढ़ा रहा हूँ। और मजदूर मेरे यहाँ कानूनन काम करते हैं, मेरी लुगाई को औरतों की बीमारी है। मैं कुछ नहीं था और सब कुछ बन गया, मेरे पास सब कुछ है, दूध के लिये तो मैंने लड़ाई में खून बहाया था। और सोवियत सत्ता भी तुम लोगों पर नहीं टिकी है। मैं अपने हाथों से उसको खाना देता हूँ और तुम तो कलम-घसीटू हो, मैं थूकता हूँ तुम पर।' जब हम युद्ध और मिलकर भुगती कठिनाइयों के बारे में उससे बातें करते हैं तो उसकी आंखें नम हो जाती हैं, पर वह अपने आसुओं को टपकने नहीं देता, मुंह मोड़कर, दिल कड़ा करके कहता है 'जो हुआ सो हुआ।' और हमने उसे नागरिक मताधिकार से वंचित कर दिया। उसने इधर-उधर दौड़-धूप की, मास्को तक अर्जी भेजी। पर मैं तो यही समझा कि केन्द्रीय मस्थाओं के प्रमुख पदों पर पुराने

क्रांतिकारी काम करते हैं और वे यह बात समझते हैं कि अगर गद्दारी की तो तुम दुश्मन हो और तनिक भी दया के पात्र नहीं !”

“ फिर भी, तुम कुछ संक्षेप में बताओ ...”

“ अभी पूरी करता हूं बात। वहां भी उसका मताधिकार बहाल नहीं किया गया, पर वह अब तक नहीं बदला, हां मजदूरों का हिसाब उसने ज़रूर कर दिया ...

“ तो फिर बात क्या है ?” दवीदोव ने नागूलनोव के चेहरे पर नज़र गड़ाकर पूछा।

पर उमने अपनी पलकें झुका ली। और बोला :

“ इसीलिये लोग चुप है। मैंने तो बस यही बताया कि आज का कुलक तीत बोरोदीन हमारे उन प्यारे दिनों में क्या था।

दवीदोव ने होंठ भींचे, उमका चेहरा तमतमा गया :

“ तुम हमें करुणा भरे किस्से सुना किमलिये रहे हों ? छापमार था — इसके लिये वह सम्मान का पात्र है, कुलक बन गया, यानी दुश्मन हो गया — कुचल दो ! कोई दूसरी बात हो ही नहीं सकती !”

“ नहीं मैं उस पर तरस नहीं खा रहा। तुम, कामरेड, मुझ पर फालतू लांछन मत लगाओ !”

“ कौन बोरोदीन की बेदखली के पक्ष में है ?” दवीदोव ने नज़रों से वहां बैठे लोगों की पातो को टटोला।

हाथ एकदम नहीं पर एक-एक करके खड़े हो गये।

सभा के बाद नागूलनोव ने दवीदोव को अपने यहां गन बिताने के लिये बुलाया।

“ और कल आप के लिये रहने की जगह ढूँढ देंगे, ” सोवियत की अंधेरी इयोदी मे टटोल-टटोलकर चलते हुए वह बोला।

वे किचकिचाती बर्फ पर साथ-साथ चल रहे थे। नागूलनोव बरान-कोट के बटन खोलकर धीमे स्वर में बोलने लगा :

“ प्यारे कामरेड मजदूर, जब से मैंने सुना कि किसानों की सारी संपत्ति को सामूहिक फार्म में शामिल करना चाहिये, मेरा जी हल्का हो गया। बचपन से मुझे संपत्ति में नफ़रत है। सभी बुराइयों की जड़ वही है, विद्वान कामरेडो मार्क्स और एंगेल्स ने ठीक ही लिखा है। सोवियत सत्ता-काल तक मैं लोग इस रोग के बीज की वजह से नांद को घेरे मुअरों की तरह से छीना-भपटी, धक्का-मुक्की, चिल्लपों करते

है। और पुरानी सरकार के जमाने में क्या होता था ? सोचकर भी रोगटे खड़े हो जाते हैं। मेरा बाप खाता-पीता कज्जाक था, चार जोड़ी बैल और पांच घोड़े थे। जोत हमारी बहुत बड़ी थी, साठ, मत्तर, मौं देस्यातीना तक की। कुनबा भी बड़ा था, मेहनती। खुद करते थे साग काम। सोचिये भी मेरे तीन शादी-शुदा भाई थे। मेरे दिमाग में एक घटना काटे की तरह चुभ गयी जिसके कारण मैंने सपत्ति के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। एक बार पड़ोसी का सुअर हमारी सागबाड़ी में घुस गया और उसने आलू के कुछ पौधे खराब कर दिये। मा ने उसे देखकर खौलते देग में मग भरा और मुझसे बोली 'मकार बेटे, खदेडो उसे और मैं फाटक पर खड़ी होती हूँ।' तब मेरी उम्र कोई बारह-एक बरस की रही होगी। और मैंने उस अभागे सुअर को खदेड़ा। मा ने उस पर खौलता पानी उड़ेल दिया। उस बेचारे के बालों तक में धुआ उठने लगा। गर्मियों के दिन थे, सुअर के घाव में कीड़े पड़ गये, घाव मड़ता ही गया और सुअर मर गया। पड़ोसी खार खाके बैठ गया। और एक हफ्त बाद स्तपी में हमारा गृह के तेईस गट्टर जल गये। बाप को मालूम था कि यह किसकी कर्तव्य है और उसने नालिश कर दी। तो उनमें ऐसी दुश्मनी हो गयी कि एक दूसरे को देख तक नहीं सकते थे। थोड़ी-सी पी लने और हाथापाई कर बैठत। कार्ट पांच माल तक मुकदमेबाजी करते रहे और खून-खराबे पर उतर आये जाड़े की विदाई के त्योहार के दिनों पड़ोसी के बेटे का खालिहान में कत्ल हो गया। किसी ने उसकी छाती में कर्ट जगह पांचा भाक दिया था। मुझे कुछ बातों में अनुमान हो गया कि यह मेरे भाइयों का काम है। मामले की जांच हुई पर हत्यारे नहीं मिले यह रिपोर्ट बना दी गयी कि शराब के नशे में वारदात हुई। तब मैं बाप के यहाँ से चला गया और मजदूरी करने लगा। फिर लंडई के मोर्चे पर चला गया। वहाँ कर्ट बार ऐसा होता था कि जर्मन हम पर भारी गोला बरमाता जमीन से आसमान तक काला धुआ उठता। लेटे-लेटे मन में विचार आता 'आखिर किस के लिये, किस की सपत्ति के लिये मैं यहाँ लेटा आतक मह रहा हूँ, मौत में आखे चार कर रहा हूँ?' गोलाबारी के समय कील बनकर जमीन में मिर तक गड़ जाने को जी चाहता। मा की कमर में। मैंसे सूधी, जहर चढ़ गया था। अब भी थोड़ी-सी चढ़ाई चढ़ते ही हाफने लगता हूँ, मिर चकराने लगता है, अभी तक

असर नहीं उतरा है। बुद्धिमान लोगो ने मोर्चे पर ही सब समझा दिया, बोल्शेविक बनकर वहां से लौटा। और गृह युद्ध में, अरे उन हरामियों को मैंने बड़ी बेरहमी से मारा-काटा। कस्तोरनाया स्थान के पास मुझे धमाके से अदरुनी चोट लगी, फिर दौरे पड़ने लगे। और अब बस यही निशानी बची है,” नागूल्लोव ने पदक पर अपनी चौड़ी हथेली रखी, और उसके स्वर में अजीब-सी गर्माहट आ गयी। ‘यह मुझे अब गर्मी देता है। आजकल मैं, प्यारे कामरेड, गृह-युद्ध की तरह अपने को मोर्चे पर महसूस करता हूँ। चाहे जमीन में गड़ना पड़े पर सबको सामूहिक फार्म में भरती करना चाहिये। विश्व-क्रांति पास आ जायेगी।”

“तीत बोरोदीन को तुम अच्छी तरह जानते हो?” किसी मोच में डूबे-डूबे दवीदोव ने पूछा।

“कैसे नहीं, अरे हम दोस्त थे। बस इसी वजह से टूट गयी दोस्ती कि उमे जायदाद से बेहद प्यार है। मन् बीस में वह और मैं दोनेत्स्क इलाके के एक प्रात में विद्रोह को कुचलने के लिये गये थे। दो म्स्वाइनों और विशेष दस्तों ने विद्रोहियों पर चढ़ाई की। कम्बे के बाहर ढेरों उक्राइनी मारे गये। तितोक रात को लौटा, साथ में उसके बोरिया थी। उन्हें खोलकर उसने फर्श पर खाली किया। उनमें से आठ कटी टांगे गिरी। ‘पागल हो गया है, तेरी ऐसी की तैसी?’ साथी उससे बोला, ‘फौरन ले जा यहाँ से।’ पर तीत ने उसे उत्तर दिया ‘अब करके देखे विद्रोह, मादर। और चार जोड़ी बूट मेरे काम आयेगे। मेरा पूरा कुटुंब अब नगे पाव नहीं रहेगा।’ अगीठी पर रखकर उन्हें मुलायम किया और पिडली पर मिलाई के जोड़ को तलवार से उधेड़कर बट उतार लिये। नगी टांगे जाकर पुआल के ढेर में गाड़ दी। बोला ‘दफना दिया।’ अगर तब हमें मालूम पड़ जाता तो हम उमें दुश्मन की तरह गोली मार देते। पर उसके साथियों ने बात दबा ली। पर बाद में मैंने उसमें पूछा कि यह सही बात है? वह बोला ‘हां, सही है, ऐसे उतार नहीं सका, पाले से पैर अकड़े हुए थे और मैंने तलवार से टांगे काट ली। मैं एक मोची की हैमियत में यह कैसे सह सकता था कि अच्छे-खासे जूते जमीन में सड़ जाये। पर अब याद करके सिहर उठता हूँ। कभी रात को आख खुल जाती है तो लुगाई से कहता हूँ कि मुझे दीवार के पास लेटने दे, नहीं तो किनारे पर डर लगता

है ... ' ... लो आ गया मेरा घर।" नागूलनोव ने आंगन में घुमकर दरवाजे की सांकल खोली।

५

अंद्रेई रज्ज्म्योलनोव को सन् १९१३ में फ़ौज में भरती किया गया। तब के नियमों के अनुसार उसे अपने घोड़े के साथ पलटन में जाना था। पर घोड़ा तो क्या उसके पास कज़्जाक के लिये आवश्यक वर्दी ख़रीदने तक के लिये पैसे नहीं थे। अपने दिवंगत पिता से उसे विरासत में बस दादा की घिसी-पिटी म्यानवाली तलवार मिली थी। अंद्रेई जीवन भर के उस कटु अनुभव को न भुला सकेगा! बुजुर्गों ने पंचायत के खर्च पर उसे फ़ौजी सामान दिलाने का फ़ैसला किया। उसके लिये सस्ता-सा ललौहा घोड़ा, जीन, दो बरानकोट, दो जोड़ी शलवारनुमा पतलूनें और बूट ख़रीद दिये... "पंचायत के पैसे से तुम्हें सामान दिलाकर फ़ौज में भेज रहे हैं अंद्रेई, हमारा एहसान मत भूलना, गांव की नाक मत कटवाना, ज़ार की जी-जान से नौकरी करना..." बुजुर्गों ने अंद्रेई से कहा।

और अमीर कज़्जाको के बेटे घुड़दौड़ के समय अच्छी-अच्छी नसलों के अपने घोड़ों, महंगी ज़ीनों, चादी के कामवाली लगामों और नये कपड़ों पर इतराते... अंद्रेई की ज़मीन पंचायत ने ले ली। उधर अंद्रेई परायी संपत्ति और परायी, भरपेट ज़िंदगी की रक्षा करते हुए मोर्चों की धूल छानता रहा, उधर पंचायत ने उसकी ज़मीन बटाई पर चढ़ा दी। जर्मनी से लड़ाई में अंद्रेई को अपनी वीरता के लिये तीन सेट जार्ज क्रॉस पदक मिले। 'क्रॉस' का भत्ता पत्नी और मां को भेजता रहा। बस इसी तरह सास-बहू गुज़ारा करती रहीं। अंद्रेई को अपनी मां के आंसुओं में भीगे बुढ़ापे का चिंगा बनने का काफी देर से मौक़ा मिला।

युद्ध के आख़िरी दिनों में अंद्रेई की घरवाली ने पतझड़ के मौसम में खलिहानों में मज़दूरी करके कुछ पैसे जमा किये और मोर्चे पर अपने पति से मिलने गयी। वहा वह कुछ दिन रही (११वीं दोन कज़्जाक रेजिमेंट जिसमें अंद्रेई सेवारत था, उन दिनों चंडावल में आराम कर

रही थी), पति की बांह पर सिर टिकाकर सोयी। वे रातें पलक भ्रपकते बीत गयीं। पर बिड़िया को पर मारने और भूखी औरत को मुख पाने में भला कोई देर लगती है? वह वहां में आंखों में चमक लेकर लौटी और निश्चित समय पर उमने बिना पीड़ा और आंसुओं के, मानो अनायास ही, खेत ही में लड़के को जन्म दिया, हूबहू अंद्रेई जैसे।

मनु अठारह में रज्जम्योल्लोव कुछ देर के लिये ग्रेम्याची आया। गाव में वह ज्यादा नहीं रहा: उसने कोठरियों की गली बल्लियों और कड़ियों को बदला, दो देम्यातीना ज़मीन जोती, एक बार दिन भर वह बेंटे के साथ व्यस्त रहा, उसे कंधों में धंसी गर्दन पर बिठाकर कमर में दौड़ता रहा, बहुत हस रहा था, उसकी चमकीली, प्रायः क्रुद्ध-सी गहनेवाली आंखों की कोरों में पत्नी को आंसू डबडबाते नज़र आये, उसे काटो तो खून नहीं: “क्या जा रहे हो, अंद्रेई?” – “कन। खाना बांध देना।”

और अगले दिन अंद्रेई, मकार नागूल्लोव, अतामान गार्ड रेजिमेंट का कज़्जाक ल्युबीशकिन, तीन बोगोदीन और मार्च पर रह चुके आठ कज़्जाक अंद्रेई के घर के पाम जमा हुए। रग-बिगगे घोड़े उन्हे ले चले। पवनचक्की के पीछे जाकर वे अगांचर हो गये पर सड़क पर हल्के नालोवाले खुरों में उड़ती बसती धूल बड़ी देर तक तैरती रही।

कामेत्स्काया में अंद्रेई अपने साथियों में बिछुड़ गया। बोगोशीलांव के एक दस्ते के साथ वह मोगोज़ोव्स्काया – त्सार्गीत्सिन की ओर चढ़ाई में शामिल हुआ। मकार नागूल्लोव, ल्युबीशकिन और बाकी लोग बोगोनेज जा पहुँचे। तीन महीने बाद क्रीवोई-मुज़्गा के पास ग्रेनेड की किरच से अंद्रेई को हल्का घाव लगा। पट्टी बंधवाने चिकित्सा केन्द्र गया, तो वहाँ उसे संयोगवश अपने ही गाव का आदमी मिला। उससे अंद्रेई को पता चला कि पोदत्योल्कोव की पलटन की हार के बाद, अंद्रेई के गाव के श्वेत कज़्जाकों ने, उसके लाल सेना में चले जाने का बदला लेने के लिये उसकी पत्नी के साथ बलात्कार किया और सारे गांव को इसका पता चल गया। उसकी पत्नी येव्दोकीया जग-हंसाई न सह सकी और उसने आत्महत्या कर ली।

.. पाला पड़ रहा था। दिसंबर के अंत की बात है। ग्रेम्याची के मकान, कोठरियां, बाड़ें, पेड़ सब सफ़ेद झबरीले पाले से ढके थे।

दूर के टीले के पीछे लड़ाई हो रही थी। जनरल गुसेल्सिकोव की तोपें दहाड़ रही थीं। ग्राम को भाग से ढके घोड़े को दौड़ाता अंद्रेई गांव पहुंचा। उसे अब तक यह याद है, बम आंख बंद करने की देर है और यादों के घोड़े उसे उस दिन में पहुंचा देते हैं... फाटक चरमराया। हांफता हुआ अंद्रेई लगाम को खींचता थकान से लड़खड़ाते घोड़े को आगन में लाया। मां सिर ढके बिना घर से दौड़ती निकली।

ओफ़, उसके मातमी रोने से अंद्रेई के कान फट गये!

“अरे, मेरे राजदुलारे! बंद हो गयीं उसकी निर्मल आंखें!..”

रज़म्योलोव को लगा कि वह पराये घर में पहुंच गया है: ओसारे की रेलिंग से उसने लगाम लपेटी और घर में घुस गया। मुर्दे की तरह धंसी आंखों में उसने खाली कमरे, खाली पालने को टटोला।

“बच्चा कहाँ है?”

मां पेशबंद में मुंह गड़ाये, अपने भीने बालोवाले, सफेदी से ढकने सिर को हिला रही थी।

बड़ी मुश्किल से उसके मुह से जवाब निकला।

“नहीं बचा सकी मैं अपने लाड़ले को! येव्दोकीया के बाद दूसरे हफ्ते ही . स्कार्लेट बुखार में।”

“नहीं चिल्ला... मुझे, मुझे कहीं से आंसू मिल जायें। किमने येव्दोकीया में बलात्कार किया?”

“अनिकेई देव्यात्किन उसे घसीटकर खलिहान में ले गया था . मुझे—कोड़े से पीटा . साथियो को खलिहान में बुलाया। बेचारी की चिट्ठी बांहें म्यान में पीट-पीटकर काली कर दी लौटी तो चेहरे पर बम आंखें बची थी ”

“इस वक्त घर पर है वह?”

“फरार है।”

“उनके घर पर है कोई?”

“उसकी लुगाई और बुझा बाप। अंद्रेई! तुम उन्हें नहीं मारो! दूसरे के पाप के लिये वे दोषी नहीं हैं...”

“तू!.. तू मुझे यह कह रही है?!” अंद्रेई का चेहरा स्याह पड़ गया, दम घुटने लगा। उसने ग्रेटकोट के फीते तोड़ दिये, जैकेट और क्रीमीज़ के कालर फाड़ दिये।

पानी में भरे लोहे के देग पर उभरी पसलियोंवाली नंगी छाती

को भुकाकर पीने लगा, पीते-पीते वह देग के किनारो पर दात गड़ा रहा था। फिर सीधा खड़ा हुआ और नजरे उठाये बिना उसने पूछा

“मा ! मरने से पहले उसने मेरे लिये क्या सदेश छोड़ा ?”

मा ने देव-प्रतिमा के पीछे हाथ डालकर कागज का पीला-सा टुकड़ा निकाला। और मौत से पहले लिखे गये शब्द प्रिय स्वर की तरह गूँज उठे “मेरे प्यारे अद्रेई ! पापियो ने मुझे अपवित्र कर दिया, मेरा और तुम्हारे से मेरे प्रेम का उपहास किया। मैं अब तुम्हें और इस दुनिया को नहीं देख पाऊँगी। मेरी आत्मा मुझे इस लाछन के साथ जीने की अनुमति नहीं देगी। मेरे अद्रेई, मेरे परम प्यारे ! मैं कितनी रातों से नहीं सोयी, तकिया आसुओं से भीग जाता है। हमारे प्रेम को मैं नहीं भूली, उस लोक में भी नहीं भूलूँगी। बस मुझे एक बात का दुःख है—बच्चे का और तुम्हारा, इस बात का कि हमारा सहजीवन, हमारा प्रेम उतना अल्पकालीन रहा। दूसरी को घर में ले आओगे—भगवान के लिये, वह हमारे बच्चे पर रहम करें। तुम भी उस पर रहम करना, मेरे अनाथ बच्चे पर। मा जी को कह दो कि मेरे लहगे, दुपट्टे और चोलिया, सब मेरी बहन को दे दे। वह शादी के लायक हो गयी है, उसे जरूरत है इन चीजों की ”

अद्रेई घोंडे को सरपट दौड़ाता देव्यात्किन के घर पहुँचा, उतरकर उसने म्यान से तलवार निकाली और लपककर ओसारे पर चढ़ गया। अनिकेई देव्यात्किन के बाप—ऊँचे कद के बूढ़े ने उसे देखकर सलीब का निशान बनाया और देव-प्रतिमाओं के पास घुटनों पर खड़ा हो गया।

“अद्रेई स्तेपानिच !” वह बस यही बोला और अद्रेई के पैरों में मिर भुका दिया, इसके बाद उसके मुँह में न कोई बोल फूटा न ही उसने अपना गुलाबी खन्वाट मिर फर्श से उठाया।

‘तू अपने बेटे की करतूत का जवाब देगा ! तुम्हारे भगवानों, सलीब पर मैं ! ’ अद्रेई ने बाये हाथ से बूढ़े की सफेद दाढ़ी पकड़ी, ठोकर मारकर दरवाजा खोला और देव्यात्किन को ओसारे पर घसीटने लगा।

बुढ़िया अगीठी के पास बेमुघ पड़ी थी, पर घर की बहू—अनिकेई की पत्नी—बच्चों का झुंड बनाकर (उनके पूरे छह अदद थे), रोती हुई ओसारे पर निकली। चुसी हड्डी की तरह सफेद अद्रेई बूढ़े की गर्दन

पर तलवार तान चुका था पर तभी रोते-बिलखते-रिरियाते बच्चे उसके पांव पड़ गये।

“मार दे इन सबको ! ये सभी अनिकेई के ही पिल्ले है ! मुझे मार डाल !” अनिकेई की बीवी अब्दोत्या चिल्लाती हुई, अपनी गुलाबी शमीज के बटन खोलकर, ढेरों पिल्लोंवाली कुतिया जैसी सूखी, पिचकी चूचियां भुलाते हुए अंद्रेई की ओर बढ़ रही थी।

और अंद्रेई के पैरों पर छोटे-बड़े बच्चे बिलख रहे थे...

आखें फाड़कर वह पीछे हटा, नलवार को म्यान में डालकर, समतल जमीन पर कई बार ठोकर खाता हुआ घोड़े की ओर चल पड़ा। मौत के मुंह से बचने की खुशी के साथ रोता हुआ बूढ़ा फाटक तक उसके साथ-साथ चलता, वह बार-बार रूकाब में भूलते पैर को चूमने का प्रयास करता पर अंद्रेई धिन के साथ पैर हटा लेता, वह गुरगता हुआ बोल रहा था :

“तेरी खुशकिस्मती है !.. बच्चे ...”

घर पर तीन दिन और तीन रात शराब पीता रहा, नशे में रोता, दूसरी रात को उसने वह कोठरी जला दी जिसकी कडी पर लटककर येबोकीया ने फांसी लगा ली थी, और चौथे दिन उसने चुपचाप मा से विदा ली, उसका मुंह सूजा हुआ था, देखने में वीभत्स लग रहा था। मा ने उसके सिर को छाती में चिपटाते हुए, पहली बार बेटे की सुनहरी लटो में, चांदी के धागों की तरह सफेद बाल देखे।

दो माल बाद अंद्रेई पोलिश मोर्चे से ग्रेम्याची लौटा। साल भर वह ऊपर दोन मडल में अनाज-वमूली दस्ते के साथ घूमता रहा, फिर घर लौटा। जब मां शादी करने की बात करती वह कुछ न कहता। पर एक बार मां ने उसके मुंह से जवाब निकलवाने की ठान ही ली।

“शादी कर ले, अंद्रेई बेटे ! अब चौका-बगनन मभालना मंगे बस की बात नहीं रही। कोई भी छोकरा तेरे साथ खुशी-खुशी शादी करने को तैयार हो जायेगी। किस के यहां रिश्ता करूँ ?”

“मैं नहीं करूंगा, मां, मत करो मुझे परेशान !”

“एक ही रट लगाये जा रहा है ! देख तो तेरे बाल पकने लगे हैं। आखिर कब तू फ्रैसला करेगा ? जब सिर सफेद हो जायेगा ? अरे मां की भी तो कुछ सोच। मैं तो सोचती थी कि पोतों को खिलाऊंगी। दो बकरियों के रोये इकट्ठे कर रखे हैं बच्चों की जुरबिं बुनने के लिये ...

पोतो को नहलाना-धुलाना ही मेरा काम है। गाय को दुहना भारी पड़ता है मुझे, अब उगलिया नहीं चलती।" और फिर वह गेने लगती "अरे मैंने किसे जना है। बुत की तरह बैठा रहता है। चुप क्यों है? राक्षस।"

अद्रेई टोपी उठाता और चुपचाप घर से चला जाता। पर बुढ़िया भी चैन से न बैठती पड़ोसिनो से सलाह-मशविर्ग, कानाफूसी करती रहती

"येब्दोकीया के बाद किमी को घर में न लाऊगा, ' अद्रेई अपनी जिद्द पर अड़ा रहा।

और मा का गुस्सा मृत बहू की आंर मुद गया।

'नागिन ने इस पर जादू कर दिया है।' वह पनघट जाते समय या शाम को अपने बाड़े के पास में जानेवाली बुढ़ियाओं को देखकर कहती। "टायन खुद तो फदे में भूल गयी और उसका भी जीवन हर लेगी। दूसरी को नहीं लाना चाहता। मेरी हालत तो देखो? अरे मन पछ प्यारी' दूसरे के पोतो को देखकर आसुओं में डूब जाती है दूसरी बुढ़ियाओं के घर में तो खुशिया बुढ़ापे का सहाग है और मैं अकेली जेमे ब्रिल में घूम "

उसी साल अद्रेई की यात्री नावोचर्कास्क के पास मारे गये सार्जेंट मिखाइल पोयाकोव की विधवा मरीना में हो गयी। उस पतझड़ में मरीना की उम्र चालीस के ऊपर हो गयी थी पर उसकी गदगयी और मजबूत देह में मावले चेहरे में अभी भी स्नेही जैसी सौम्य मुद्रता थी।

अक्तूबर में उसके मकान पर अद्रेई सरकड़े का छप्पर डाल रहा था। शाम को उसने अद्रेई को घर में बुलाया फुर्तों में मेज पर गोमी बार्ष का कटोरा रखा अद्रेई के घुटनों पर साफ कशीदाकारी में सजा नैर्पाकिन बिछाया और खुद उसके सामने हाथ पर गाल टिकाकर बैठ गयी। अद्रेई कनखियों से चमकीले-काले बालों के जूड़ेवाले उसके गर्वीले सिर को देख रहा था। बाल उसके घने देखने में घोड़े की अयाल की तरह कटे थे पर छोटे-छोटे कानों के पास वे बाल-मुलभ महजता में बिखरकर घुघरा रहे थे। मरीना अपनी काली आखों को मिचमिचाकर अद्रेई को ताक रही थी।

"और डालू?" उसने पूछा।

“ ठीक है , ” अद्रेई ने स्लेटी मूछ पर हाथ फेरकर महमति व्यक्त की ।

वह फिर से बोर्च खाने में तल्लीन होने ही वाला था । मरीना फिर से सामने बैठी शिकार को ताकते हिंस्र पशु की आकुल नजर से देख रही थी , पर अचानक अद्रेई की दृष्टि उसकी गदरायी गर्दन पर तेजी से फडकती नीली नम पर पड़ी और न जाने क्यों वह सकपका गया , उसने चम्मच मेज पर रख दी ।

“ क्या हो गया ? ” उसने हैरान होकर पूछा , उसकी भौंहे काले डैनों-सी तन गयी ।

“ पेट भर गया । शुकिया । कल सुबह आकर काम पूरा कर दूंगा । ’

मरीना उठकर उसके पास आयी । धीरे-धीरे मुस्कान में अपनी दनावली को उघाडते हुए , अपनी बडी , मुलायम छाती को अद्रेई से मटाते हुए उसने फुसफुसाकर पूछा

“ मेरे यहा ही रात गुजार लो ? ”

“ ऐसा भी किया जा सकता है , ” किर्कनर्व्यविमूढ अद्रेई को और कुछ नही सूझा उत्तर में ।

और फूट्ट उत्तर का बदला लेते हुए मरीना ने अपनी गदरायी कमर झुकाकर कहा

“ बहुत-बहुत शुकिया मेरे पालनहार ! बेचारी विधवा का खयाल करने के लिये मैं तो पापिन , डरती थी सोचती थी — मना कर दोगे ”

उसने भट में फूककर दिया बुझा दिया , अधेरे में बिस्तर बिछाया , ड्योढी के दरवाजे की कुडी चढा दी और कुछ निराशा के साथ तिर-स्कारपूर्ण स्वर में बोली

‘ तुम में कज्जाक खून की बूद तक नहीं है । ताम्बोव के ठठरे न तुम्हें बनाया है । ’

“ वो कैसे ? ” अद्रेई बुरा मान गया , वह बूट उतारते रुक गया ।

“ वैसे ही जैसे इस तरह के दूसरो को । आखो में तो बडे जाबाज लगते हो पर लुगाई में मागते डरते हो । कहने को तो लडाई में बडे-बडे नमगे पाये है । ” वह दांतों में बालों के काटे दबाकर जूडा खोलते हुए , अस्फुट स्वर में बोली । “ मेरे मीशा की याद है तुम्हें ? वह कद में मुझ में छोटा था । तुम तो मेरे बराबर हो , पर वह कुछ छोटा था ।

मैं सिर्फ उसके साहस के कारण उससे प्यार करती थी। शराबखाने में वह सबसे ताकतवर में भी नहीं डरता था हालांकि नाक से खून बहता पर वह हारता नहीं। शायद इसी वजह से वह मारा गया। उसे तो मालूम था कि मैं क्यों उससे प्यार करती थी ” गर्व के साथ उसने अपनी बात पूरी की।

अद्रेई को गांव के उन कज्जाको की बात याद आ गयी जो मरीना के पति की रेजिमेंट में ही थे और जिन्होंने अपनी आंखों में उसकी मौत देखी थी एक बार टोह के समय उसने अपने प्लाटून से दुगने बड़े लाल मैनिको के दस्ते पर धावा बोल दिया, उन्होंने ‘लुईस’ मशीनगन से उनमें भगदड़ मचा दी, चार कज्जाको को धराशायी कर दिया और मिखाईल पोयाकोव को बाकी लोगों से काट दिया और उसे पकड़ने की कोशिश की। पीछा करनेवाले तीन लाल मैनिको को उसने घोड़ा दौड़ाते हुए गोली से मार दिया। और खुद – वह रेजिमेंट का सर्वोत्तम शहसवार जो था – कलाबाजिया खाता हुआ गोलियों की बौछार में बचता रहा, पर घोड़े का पैर किमी गड्ढे में पड़ गया और उसने गिरते समय अपने सवार की टांग तोड़ दी। बस तभी जाबाज मार्जेंट की अंतिम घड़ी आ गयी।

पोयाकोव की मौत क किस्मे का याद करके अद्रेई मुस्करा दिया।

मरीना लेट गयी अद्रेई में मटककर वह तेजी से मास लेने लगी।

आधे घंटे बाद बात का मिलमिला जारी रखते हुए वह फुमफुमाकर बोली

“मीशा मैं उसके साहस के लिये प्यार करती थी, पर तुमसे बस ऐसे ही, कोई वजह है ही नहीं, ” और उसने अद्रेई की छाती पर अपना छांटा-सा दहकता कान टिका दिया। उसे झुटपुटे में लगा कि उसकी आख चिंगारी की तरह चमक रही हैं, उसमें आइयल, बेसधी घोड़ी की तरह अजेयता की झलक थी।

पौ फटने में पहले उसने पूछा

“कल आओगे छप्पर डालने ?”

“अरे, क्यों नहीं ?” अद्रेई ने आश्चर्य के साथ पूछा।

“नहीं आना ”

“क्यों, क्या हो गया ?”

“अरे, तुम भी कैसे हो डालनेवाले ! बूढ़ा श्चुकार तुमसे बेहतर

डालता है," और खिलखिला पड़ी। "मैंने तुम्हे जान-बूझकर बुलाया था। और किस बहाने तुम्हे फसाती? तुमने तो मेरा नुकसान कर डाला। छप्पर तो नये सिरे से डालना पड़ेगा।"

दो दिन बाद बूढ़ा श्चुकार मालकिन के सामने अद्रेई को कोसता छप्पर डाल रहा था।

और अद्रेई उस दिन के बाद में हर रात मरीना के पाम आने लगा। और उसे अपने में दस साल बड़ी औरत का प्यार मीठा लगा, पाला लगे जगली मेब की तरह मीठा।

जल्दी ही गांव में उनके सबधों की तरह-तरह से चर्चा होने लगी। अद्रेई की मा रो-रोकर पड़ोसियों में शिकायत करती "नाक कटवा दी। बुढ़िया में यागी कर बैठा। पर बाद में वह मन मारकर चप हो गयी। पड़ोसी की बेटी न्यूका जिसके साथ अद्रेई हमी-मजाक, दिल्लगी करता था, अब उससे कल्ली काटन लगी। पर एक बार जंगल में सूखी टहनिया बटोरते समय पगडंडी पर उसे देखकर न्यूका के चेहरे का रंग उड़ गया।

बुढ़िया ने तेरी नाक में नकेल डाल दी?" उसने कांपने लगे से मुस्कराते हुए पूछा वह अपनी डबडबाती आंखों को छिपाने का प्रयास भी नहीं कर रही थी।

'अरे पूछो मत, दम घुटा जाता है।' अद्रेई ने मजाक में उत्तर दिया।

'क्या कोई जवान नहीं मिल सकती थी?' जाने-जाते न्यूका ने पूछा।

"अरे देख तो मैं खुद कैसा हूँ, अद्रेई ने टोपी उतारकर अगूठे में अपने पकते बालोंवाले सिर की ओर इशारा किया।

"मैं तो पगली, तुम्हें सफेद बालोंवाले कुत्ते से प्यार कर बैठी थी। अच्छा तो अलविदा।' आहत होकर भी वह सिर उठाये चली गयी।

मकार नागूल्लोव बस यही बोला

अद्रेई में अनमादन नहीं करता। वह तुम्हें सार्जेंट साहब और टटपुजिया बना देगी। छोड़ भी, मजाक कर रहा हूँ, देखता नहीं?"

"अरे अब कर ले उससे शादी रस्म से," एक बार मा पसीजकर बोली। "बहू बना दे।"

“ बेकार की बात है , ” अद्रेई ने बात टालते हुए कहा ।

मरीना की उम्र मानो घटकर आधी रह गयी । वह रात को अपनी तिगछी काट की आखो मे दबी-दबी चमक के साथ अद्रेई का स्वागत करती , मदों की शक्ति से उससे लिपटती और सुबह तक उसके उभरी हड्डीवाले गदुमी गालो मे लाली न उतरती । मानो उसका यौवन लौट आया । वह अद्रेई के लिये रेशमी टुकडो मे तबाकू की रग-बिगगी थैलिया सीकर उन पर कढाई करती , बादी की तरह उमके हर इशारे पर अमल करती , खुशामदी करती । फिर उसके मन मे प्रचंड ईर्ष्या और अद्रेई को खो देने का भय घर कर गया । वह सिर्फ यह देखने के लिये सभाओं मे जान लगी कि वह कही जवान औरतो मे हमी-मजा^१ नही करता ? किमी मे दीदे तो नही लडाता ? शुरू-शुरू मे अद्रेई इस रखवाली से चिढता , मरीना को डाटता , कई बार उसे पीटा भी पर बाद मे इसका आदी हो गया , उसमे बैठे मर्द को यह मुहाने भी लगा । मरीना ने दिल खोलकर उसे अपने पति के सारे कपडे दे दिये । और अब अद्रेई जो पहले फटे-पुगने कपडो मे घूमता था - बिना किमी गर्म के , उत्तराधिकारी के नाते ग्रेंम्याची मे मार्जेट की ऊनी पतलून और कमीजे पहनकर ठाठ मे चलता , जिनकी आस्तीने उसके लिये काफी छोटी और कालर तग थे ।

वह अपनी रानी को घर-बार मे मदद देता , शिकार से उसके लिये खरगोश या तीतरों का पूरा गुच्छा मारकर लाता । पर मरीना ने कभी भी अपनी मत्ता का दुरुपयोग नही किया और अद्रेई की मा का हिस्सा नही लिया , हालाकि वह उससे मन-ही-मन कुढती रहती थी ।

वह खुद ही आगम मे घर-बार चला लेती थी और मर्द की मदद के बिना भी आसानी से काम चला सकती थी । कई बार अद्रेई उसे पांच से गेहू की बालियो के तीन-तीन पूद* भारी गट्टरो को उठाते , या रीपर पर बैठे-बैठे जौ की भारी बालियो के लुने ढेर को दाते से गिराते देखता । मन-ही-मन अद्रेई यह देखकर आनंद लेता । मरीना मे मदों जैसी फूर्ती और शक्ति थी । घोडे को जोतते समय भी वह मदों

* पूद—१६ किलोग्राम । - म०

की तरह, बम से पैर टिकाकर पेटिया कसती।

समय के साथ मरीना से लगाव गहरा होता गया। अद्रेई कभी-कभार अपनी पहली पत्नी को याद करता, पर यादों में अब पहले जैसी पीड़ा नहीं होती। बम कभी, फास में बस गये अनिकेई देव्यात्किन के बड़े बेटे को देखकर फक पड़ जाता बेटा हूबहू बाप लगता था।

और फिर काम की व्यस्तता, गोटो के टुकड़े के लिये संघर्ष, जीवन की दौड़-धूप में विद्वेष विस्मृत होता जाता, वैसी ही चीसती, कसक भरी पीड़ा शांत होती जा रही थी, जैसी वह कभी-कभार, माथे पर पुगने घाव में, हगेरियन अफमर की तलवार द्वारा छोड़ी गयी निशानी में महसूस करता।

* * *

गरीबों की सभा में अद्रेई सीधा मरीना के पास गया। वह उसकी प्रतीक्षा में बैठी ऊन कात रही थी। नीची छतवाले छोटे-मे कमरे में चरखे की उनीदी घर्घर् भरी थी, अगीठी से कमरा खूब तपा हुआ था। घुघराते बालोवाला मेमना कच्चे फर्श पर नन्हे-नन्हे खुर्गोभे टप-टप कर रहा था, वह पलंग पर कूदने की फिर्क में था।

रजम्योलोव ने झुंझलाकर नाक-भौं मिकोडी

“बद कर चरखा।”

मरीना ने चरखे के पैडल में पैर हटाया घोंडे के पुट्टों की तरह चौड़ी कमर झुकाकर मीठी जम्हाई ली।

“क्या हुआ सभा में?”

“कल कुलको का सफाया शुरू कर रहे हैं।”

“मच?”

“आज सब गरीब एक होकर सामूहिक फार्म में भरती हो गये,” अद्रेई कोट उतारे बिना पलंग पर लेट गया, उसने मेमने को उठा लिया। “तुम कल अर्जी ले जाना।”

“कैसी?” मरीना ने आश्चर्य के साथ पूछा।

“सामूहिक फार्म में भरती होने के लिये।”

मरीना ने तैश में आकर चरखे को अगीठी के पास पटका और बोली

“पागल तो नहीं हो गये ? मुझे वहाँ क्या लेना है ?”

“मरीना, इस बात पर बहस मत करो। तुम्हें सामूहिक फार्म में शामिल होना चाहिये। क्या कहेंगे लोग मेरे बारे में ‘लोगों को तो सामूहिक फार्म में फसा रहा है पर अपनी मरीना को बचा रहा है।’ ईमानदारी की बात नहीं होगी।”

“मैं नहीं जाऊँगी। हरगिज शामिल नहीं होऊँगी।” मरीना पलग के पास से पसीने और गर्म देह की भभक छोटती गुजरी।

“तब, देखना, हमें बर्तन-भाड़े बाटकर अलग होना पड़ेगा।”

“बहुत डरा दिया।”

“मैं धमकी नहीं दे रहा, पर मेरे पास कोई और चारा नहीं।”

तो जाओ कौन रोकता है तुम्हें। मैं अपनी गाय दे दूँगी और खद क्या करूँगे ? तुम ता खद आकर खाना मागोगे।

‘दूध आम होगा।’

“और लुगाइया भी आम होगी ? क्या तुम मुझे इसी का डर दिखा रहे हो ?”

कर दता तंगी पिटाई पर आलस आ रहा है।’ अट्रैई ने मेसन को फर्ज पर पटका, टोपी उठायी और गर्दन पर गयेदार ऊन का मफलर फदे की तरह डाला।

‘हरेक साले की मिन्नत करनी पड़ रही है। मरीना तक बिदक रही है। कल आम मभा में क्या होगा ? पिटाई कर देगे, अगर ज्यादा जोर डाला,’ अपने घर जाते समय वह गुस्से में सोच रहा था। उसे बड़ी देर तक नीद नहीं आयी, करवट बदलता रहा, उसने दो बार मा को, खमीर देखने के लिये उठते सुना। कोठरी में मुर्गा शैतान की तरह चीख रहा था। अट्रैई बेचैनी से कल के बारे में पुनर्निर्माण की इयोडी पर खड़ी मारी कृषि व्यवस्था के बारे में सोच रहा था। उसके मन में यह आशका उपजी कि रूखा और कठोर दबीदोव (उमें वह ऐमा ही लगा) कही किसी असावधान कदम से मभोले किसानों का सामूहिक फार्म में मुह न मोड़ दे। पर उसे दबीदोव का नाटा, गठा बदन ननावपूर्ण चेहरा, गालों के किनारे कड़ी भुर्रिया, चचल-बुद्धिमान आखें याद हो आयी, उसे याद आया कि जब ल्युबीशिकन भाषण दे रहा था दबीदोव ने नागूलनोव की पीठ के पीछे से झुककर उससे कहा था “छापेमार चगा बदा है, पर आप लोगों ने उसे अपने हाल पर

छोड़ दिया, कोई शिक्षा न दी, फ़ैक्ट ! उसे समझाने की ज़रूरत है।” यह याद करके अंद्रेई ने हर्ष के साथ सोचा: “नहीं यह ग़लती नहीं करेगा। अगर लगाम लगानी है, तो मकार पर ! कहीं तैश में आकर कुछ उल्टा-सीधा न कर बैठे। अगर मकार की दुम पर पाव पड़ गया तो गया छकड़ा हाथ से .. क्या गया हाथ से ? छकड़ा छकड़ा कहां से आ गया ? मकार .. तितोक .. कल ..” दबे पांव आयी नींद चेतना को शून्य करती जा रही थी। अंद्रेई नींद में डूबता जा रहा था, और उसके होठों में, पत्ती में ढलते ओस कणों की तरह मुस्कान टपक रही थी।

६

सवेरे के कोई सात बजे जब दवीदोव ग्राम-सोवियत में पहुंचा तो वहां ग्रेम्याची के चौदह गरीब जमा हो चुके थे।

“अरे हम तो बहुत देर में आपकी बाट जोह रहे हैं, सुबह-सवेरे आ गये थे,” ल्युबीज़िकन अपनी चौड़ी हथेली में दवीदोव का हाथ पकड़कर मुस्कगया।

“मन्न नहीं हो रहा...” बूढ़े श्चुकार ने स्पष्ट किया।

यह वही था जो औरतोवाला सफेद समूर का ओवरकोट पहने ग्राम-सोवियत के अहाते में पहले दिन दवीदोव से मज़ाक कर रहा था। उस दिन से वह अपने को दवीदोव का निकट परिचित मानने लगा और उसके साथ दोस्ताना अंदाज़ में बातें कर रहा था, दूसरों की तरह नहीं। उसके आने में पहले बूढ़ा श्चुकार कह रहा था “मैं और दवीदोव जो फ़ैमला करेंगे वही होगा। परमो वह बड़ी देर तक मुझसे मलाह-मशविग करता रहा। हां, गंभीर बातों के बीच में हंसी-मजाक भी हुआ, पर हम दोनों ने ज्यादातार प्लान्स पर विचार किया कि सामूहिक फार्म कैसा हो। बड़ा हंसमुख आदमी है, मेरे ही जैसा ”

दवीदोव ने सफ़ेद ओवरकोट से श्चुकार को पहचान लिया और अनजाने ही उसे बड़ी ठेस पहुंचा दी :

“अरे, यह तुम हो, बाबा ? देखा न : परमो तुम यह जानकर कि मैं किमलिये आया हूं, मानो निराश हो गये थे, पर आज खुद

सामूहिक फार्म के मदस्य हो। शाबाश।”

“वक्त नहीं था बिलकुल वक्त नहीं था, इसीलिये चला गया था ” बूढ़ा श्चुकार बडबडाता हुआ दवीदोव के पास से हट गया।

दो दल बनाकर कुलको को बेदखल करने के लिये जाने का फैसला किया गया। पहले दल को गाव के ऊपरी भाग में और दूसरे को निचले भाग में जाना था। पर नागूल्लोव ने, जिसे दवीदोव ने पहले दल की अगुआई का काम सौंपा, माफ-माफ इकार कर दिया। लोगो की नजरो को देखकर वह मकपका गया, उसने दवीदोव को अलग से बात करने को बुलाया।

“यह क्या तमाशा कर रहे हो?” दवीदोव ने रूखे स्वर में पूछा।

“मैं दूसरे दल के साथ निचले हिस्से में जाऊंगा।”

“अरे फर्क क्या पडता है?”

नागूल्लोव ने हांठ बाटे और मुह मोडकर बोला

“इस बारे में तो अरे, क्या फर्क पडता है, तुम्हे पता चल ही जायेगा। मेरी बीवी लूश्का तिमोफेई से यारी करती है, कुलक फाल दामास्कोव के बेटे से। मैं नहीं चाहता। लोग बातें बनायेगे। मैं निचले भाग में जाऊंगा, रजम्यान्लोव को पहले दल के साथ भेज दा ”

“अरे, भइया, बातों में डरने लगे खैर, मैं जबरदस्ती नहीं करता। चलो मेरे साथ, दूसरे दल को लेकर।”

दवीदोव को अचानक याद आया कि आज हो तो उसने नागूल्लोव की बीवी की भौह के ऊपर पुराना, हरा-पीला-सा नील देखा था, जब वह उन्हे नाश्ता परोस रही थी। नाक-भौ मिकोडकर, गर्दन को गेम हिलाते हुए, माना कालर क अदर कोई तिनका चभ रहा हो, उसने पूछा “क्या तुम्हारी कर्तूत है? पीटते हो?”

“नहीं, मैं नहीं।”

“तब कौन?”

“वह।”

“कौन है वह?”

“तिमोफेई फोल का बेटा ”

कुछ देर तक दवीदोव असमजस में पडा चुप रहा, फिर चिढ़कर बोला

“मारो गोली ! मैं कुछ समझा नहीं ! चलो , बाद में पूरी बात करेगे । ”

नागूल्लोव , दवीदोव , ल्युबीशकिन , बुद्धा श्चुकार और तीन अन्य कज्जाक ग्राम-सोवियत में निकले ।

“ किमसे शुरू करेंगे ? ” दवीदोव ने नागूल्लोव की ओर देखे बिना पूछा । वे दोनों उनकी बातचीत के बाद कुछ अटपटा महसूस कर रहे थे ।

“ तीत से । ”

वे चुपचाप सड़क पर जा रहे थे । खिड़कियों में लुगाइया कौतूहल के साथ उनको देख रही थी । बच्चे उनके पीछे-पीछे भुड़ बनाकर चलने ही वाले थे , पर ल्युबीशकिन ने बाड़ का खूटा उखाड़ लिया और अक्लमद बच्चे वहीं खड़े रह गये । जब वे तीत के घर के पास पहुँचे तो नागूल्लोव किसी की ओर मुड़े बिना बोला

‘ हम घर में सामूहिक फार्म का कार्यालय हागा । बड़ा है । और कोठरिया में सामूहिक फार्म का अस्तबल बना देंगे । ’

घर वास्तव में काफी बड़ा था । तीत ने पड़ोस के तुब्यान्की गाव में उसे मनु बाइस में दूर्भिक्ष के समय बाँध गाय और तीन पौद आटे के बदले खरीदा था । पहले मालिक का पूरा परिवार मर गया । बाद में तीत में इस मुफ्त के सौदे के लिये मुकदमेबाजी करनेवाला नहीं बचा । वह अजर-पजर खोलकर घर को ग्रेम्याची में ले आया , नयी छत डाल दी लट्टों की कोठरिया और अस्तबल बनवा दिये , मतलब हमेशा के लिये जड़ डाल दी गेरू से पुने अग्रभाग पर किमी पेटर ने पुरानी म्नाव शैली में लिख डाला था ‘ न० क० बोंगेदीन । सवत् १९२३ ईसवी । ’

दवीदोव कौतूहल के साथ घर को निहार रहा था । सबसे पहले नागूल्लोव फाटक में घुसा । चटखनी की आवाज सुनकर खत्ती के नीचे में बड़ा-सा , भेड़िये जैसी रगत का जजीर में बधा कुत्ता लपका । वह बिना भौंके भपटा पिछली टांगों पर खड़ा हो गया । उसका सफ़द रोयेदार पेट चमक रहा था , गले में कसे पट्टे के कारण हाफता हुआ वह गुर्गया । आगे-पीछे दौड़कर उसने कई बार जजीर तोड़ने की कोशिश की , पर असफलता का मुँह देखकर वह अस्तबल की ओर दौड़ पड़ा ।

अस्तबल तक तने तार में पिरोया हुआ उसकी जजीर का छल्ला भनभना उठा।

“अगर ऐसा शैतान भपट ले तो बचना मुश्किल है।” बूढ़ा श्चुकार बुदबुदाया और डर के मारे नजरे दौड़ाता हुआ बाड़ के पास-पाम रहने की कोशिश करने लगा।

वे भुड बनाकर घर में घुसे। तीत की दुबली, लम्बी पत्नी नाद से बछिया को पिला रही थी। उसने बिनबुलाये मेहमानों की ओर क्रुद्ध नजर डाली। दुआ-मलाम के उत्तर में वह कुछ इस तरह से बडबडायी, “आ गये मुह उठाये।”

‘तीत घर पर है?’ नागूल्लोव ने पूछा।

“नहीं है।”

“कहा है वह?”

“नहीं पता,” मालकिन ने दो टूक जवाब दिया।

“तुम्हें मालूम है पेर्फील्येव्ना, हम किसलिये आये हैं? हम बूढ़ा श्चुकार पहिली ब्रभने के अदाज में बोल पड़ा, पर नागूल्लोव ने उसकी तरफ हमें देखा कि बूढ़ा थक गटककर रह गया। वह आह भरकर रोब के साथ समूर के मफेद ओवरकोट के पल्लो को थामे बेच पर बैठ गया।

“घोड़े घर पर हैं?” नागूल्लोव ने रूखे सत्कार को अनदेखा करते हुए पूछा।

‘घर पर है।’

“और बैल?”

“नहीं है। तुम लोग आये किसलिये हो?”

“तुम्हारे साथ हम नहीं ” बूढ़ा श्चुकार ने फिर मुह खोला पर इस बार ल्युबीशकिन ने उसके ओवरकोट का पल्ला खींचकर उसे नजी में कमरे में बाहर कर दिया और वह बात पूरी न कर पाया।

“बैल कहा है?”

“तीत उन्हें जोतकर ले गया है।”

“कहा?”

“मैंने तुम्हें कह तो दिया कि नहीं जानती।”

नागूल्लोव ने दबीदोव को आख मारकर इशारा किया और बाहर

निकल गया। पाम से गुजरते हुए उसने श्चुकार को घूसा दिखाकर मलाह दी

“जब तक तुम से कोई पूछता नहीं तुम चुप रहा करो।” और दवीदोव की ओर मुड़कर बोला “हाल बुरा है। देखना चाहिये कि बैल कहा गये। कही वह उनको पार न कर दे ”

“बैलो के बिना ही सही ”

“अरे तुम क्या कह रहे हो।” नागूल्लोव मिहरकर बोला। “उसके बैल गाव मे सबसे बढिया है। उनकी कोई सानी नहीं। तुम कह क्या रहे हो। तीत और बैलो को ढूढना चाहिये।”

ल्युबीशकिन मे कानाफूसी करके वे ढोरो के बाडे और फिर वहा मे कोठरी और खलिहान मे गये। कोई पाच मिनट बाद ल्युबीशकिन ने लम्बी लाठी मे लैम होकर कुत्ते को खत्ती के नीचे खदेड दिया और नागूल्लोव अस्तबल मे ऊचे म्नेटी घोड को निकाल लाया। घोडे को थपथपाकर उसने अयाल पकडी और सवार हो गया।

“अरे तू यह क्या कर रहा है मकार, बिना पूछे पगये घर मे मनमानी कर रहा है?” मालकिन दौडती हुई ओमारे पर आयी और कल्हो पर हाथ टिकाकर चिल्लायो। ‘मेरा आदमी जब लैटिगा, मै उसे। वह तुम्हे देख लेगा।’

“शोर मत मचा। अगर वह घर पर होता तो मै खुद उसे देख लेता। कामरेड दवीदोव जरा डधर तो आना।”

नागूल्लोव की हरकतो मे असमजस मे पडा दवीदोव उसके पाम गया।

“खलिहान से बैलो के ताजे निशान सडक की ओर जा रहे है। लगता है, तीत को भनक पड गयी और वह बैलो को हाककर बेचने ले गया। गाडिया मारी कोठरी मे ही है। लुगाई भूठ बोलती है। तुम लोग इतने मे कोचेतोव के यहा काम पूरा करो और मै अभी तुब्यात्स्की होकर आता हू। वह सिर्फ वही उन्हे ले जा सकता है। जरा टहनी तो तोडकर देना मुम्हे घोड को दौडाने के लिये।”

नागूल्लोव खलिहान से सीधा सडक की ओर चल पडा। उसके पीछे-पीछे बर्फ की सफेद धूल उडती जा रही थी जो बाद मे धीरे-धीरे रजत कणो मे वाडो और जगली घास की टहनियो को ढकती जाती। बैलो और एक घोडे के खुरो के निशान सडक तक जाकर लुप्त हो

गये थे। नागूल्लोव तुब्यान्स्की की ओर कोई दो-तीन सौ गज तक घोड़े को दौड़ाता रहा। रास्ते में बर्फ के ढेरों पर उसे वही चिन्ह नज़र आ रहे थे, बस हवा ने उनमें बर्फ का बुरादा भर दिया था। वह निश्चित होकर कि सही दिशा में जा रहा है, घोड़े को दुलकी चाल में दौड़ाने लगा। इस तरह वह कोई डेढ़-एक मील चलता रहा पर अगले ढेर पर उसे खुरों के चिन्ह नज़र नहीं आये। भट में घोड़े को मोड़कर वह नीचे कूदा। वह ध्यान से देखने लगा कि कहीं बर्फ ने चिन्हों को ढक तो नहीं दिया। बर्फ का ढेर बिल्कुल साफ था। बस ढेर के किनारे पर कौए के पंजों के सलीब जैसे निशान थे। गाली देकर नागूल्लोव धीरे-धीरे उल्टा चल पड़ा, वह इधर-उधर नज़रे दौड़ाता जा रहा था। शीघ्र ही उसे खुरों के निशान दिखायी पड़े। चरागाह के पास बैल मड़क में उतर गये थे। घोड़े को दौड़ाते समय बैलों के निशान उसकी नज़र में नहीं आये। वह समझ गया कि तिनोक टीले पर चढ़कर सीधा वोयस्क़ोवोय गांव की ओर गया है। "शायद किसी जान-पहचानवाले के यहाँ गया है," निशानों के साथ-साथ, घाँड़े की रफ्तार को नियंत्रित करने हुए, उसने सोचा। टीले के उस पार, म्योर्तवी खड्ड के पास बर्फ पर बैल का गोबर दिखायी पड़ा वह रुक गया। गोबर ताजा था, हाल ही में उस पर बर्फ की पतली पपड़ी जमी थी। नागूल्लोव ने जेब में रिवाल्वर की ठंडी मूठ को टटोला। वह धीरे-धीरे खड्ड में उतरा। कोई आधे मील के सफर के बाद उसे कुछ दूरी पर पत्र-विहीन बलूत वृक्षा के कुज के पीछे घुड़मवार और खूले बैलों की जोड़ी दिखायी दी। घुड़मवार झुककर चाबक धुमा रहा था। उसके कंधों के आगे में तबराक का नीला धागा उठकर हवा में बिखीन होता जा रहा था।

"उल्टा मोड़।"

तीन ने हिनहिनाती घोड़ी को रोका, पीछे मुड़कर देखा और मुह से मिग्रेट थूककर धीरे-धीरे बैलों के आगे चला गया और धीमे से बोला

"क्या हुआ? हत-हत रुक।"

नागूल्लोव पास पहुँचा। तीन ने उसे धूरकर देखा।

"तू किधर जा रहा है?"

"बैल बेचना चाहता था, मकार। मैं कुछ छिपा नहीं रहा।"

तीत ने नाक सिनकी। मगोल की तरह लटकी ललौही मूछो को दस्ताने से रगड़-रगड़कर पोछा।

वे अपने घोड़ो पर आमने-सामने बैठे थे। उनके घोड़े फुफकारकर एक-दूसरे को सूँघ रहे थे। नागूल्लोव का हवा से लाल चेहरा गुस्से से तमतमाया था। तीत देखने में शांत लग रहा था।

“बैलो को मोड़कर घर चलो।” नागूल्लोव ने एक ओर हटते हुए आदेश दिया।

पल भर के लिये तीन हिचकिचाया वह उनीचे में मिर को भुकाकर लगाम से खेल रहा था, उसकी आँखें अधखुली थी, गाढ़े के अपने स्लेटी ओवरकोट में फटे भबरीले कनटोप पर हुड चढ़ाये वह ऊँघते बाज की तरह लग रहा था। “अगर इसने ओवरकोट में कुछ छिपा रखा है तो वह अभी हुक खोलेगा,” जड़ बैठे तीत को अपनाक देखता नागूल्लोव मोच रहा था। पर उसने मानो तद्रा से जागकर चाबुक फटकारा। बैले उल्टे लौट पड़े।

“ले लोगे ? बेदखल करोगे ?” अपना मौन तोड़कर तीत ने भौहो तक भुँके हड क नीचे में नागूल्लोव की ओर अपनी नीलाभ आँखें चमकाकर पूछा।

“बना ली न अपनी गत। तुझ बदी दुश्मन की तरह पकड़कर ले जा रहा हूँ।” नागूल्लोव चिल्लाया, उसका सब्र टूट गया।

तीत सिकुड़ गया। टीले तक वह चुप रहा। फिर उसने पूछा

“मेरा क्या करोगे ?”

“निकाल देगे यहाँ से। नेरे ओवरकोट के नीचे यह क्या उभरा हुआ है ?”

“कट्टा, तीत ने नागूल्लोव की ओर तिगछी नजर डाली और ओवरकोट का पल्ला खोल दिया।

कोट की जेब से, मफेद हड्डी की तरह, कट्टे का लापरवाही से बनाया गया मैला कुदा चमका।

‘लाओ, मुझे दो।’ नागूल्लोव ने हाथ बढ़ाया, पर तीत ने उसे चुपचाप भटक दिया।

“नहीं, नहीं दूँगा।” और लटकी मूछो के नीचे. धूम्रपान से काले दांतों को उघाड़कर मुस्करा दिया। वह नागूल्लोव को नेबले की तरह पैनी, पर चंचल नजर से देख रहा था। “नहीं दूँगा। जायदाद

मेरी छीन रहे हो, और आखिरी कट्टा भी छीनना चाहते हो? कुलक को कट्टे से लैस होना चाहिये, उसके बारे में अब्बार यही तो लिखते हैं। कुलक के पाम कट्टा होना जरूरी है। क्या पता, मैं इसकी मदद से अब अपनी गेट्टी कमाऊंगा, क्यों? ”

वह सिर हिला-हिलाकर हस रहा था, पर हाथ जीन के हरने पर टिके थे। नागूल्लोव ने कट्टा देने की माग नहीं की। “वहा, गांव में मैं तुम्हें देख लूंगा,” उसने फैमला किया।

“मकार, तू शायद सोच रहा है कि क्यों मैं कट्टे के साथ गया?” तीत बोला। “बड़ी मुसीबत है इसके साथ यह मेरे पास पुराने ज़माने से है, याद है मैं जब उक्राइनियों के विद्रोह में लाया था? पड़े-पड़े जग लग गया। मैंने इसको साफ करके तेल डाल दिया, — टिप-टाप कर दिया। मोचा था किमी जानवर या बूरे आदमी के खिल्पाफ काम आयेगा। और कल पता चला कि तुम लोग कुलको का माल जब्त करनेवाले हो बस यह नहीं मालूम था कि तुम आज ही शुरू कर दोगे नहीं तो बैलो को रात ही रात पार कर देता ”

“किसे पता चला?”

“अरे यह भी तुम्हें बता दूँ! अफवाहें खूब उड़ रही हैं। हा-हा, और हम मिया-बीवी न रात को बैलो को भरोसेमंद आदमी को मौपने का फैमला किया। कट्टा भी साथ ले लिया, स्तेपी में फेंकना चाहता था ताकि तुम्हें मेरे घर में न मिल जाये, पर फेंकते हुए मुझे दुख हुआ और तू आ धमका। अरे मेरे तो घुटने ही काप गये!” वह आखे बनाता हुआ जोर-जोर से बोल रहा था और अपनी घोड़ी से नागूल्लोव के घोड़े को धकेलता जा रहा था।

“तू मजाक बाद में करना, तीत! अभी मुंह बंद करके बैठ।”

“अरे क्यों! अभी तो वक्त है मेरे लिये मजाक करने का। लडाई लड़कर अपने लिये मीठी ज़िंदगी जीती, इसाफपसद मत्ता की हिफाजत की और वही मेरी गुद्दी दबोच रही है ” तीत का गला अचानक रुध गया।

और इस क्षण से वह चुप हो गया, वह जान-बूझकर अपनी घोड़ी को कुछ रोकता ताकि नागूल्लोव कुछ आगे हो जाये पर वह भी डर के मारे रुक जाता। बैल बहुत दूर चले गये थे।

“तेज-तेज चल!” नागूल्लोव जब से रिवाल्वर को थामे हुए तीत

की ओर घूरकर बोला। वह तो तीत की नम-नस पहचानता था। जितना वह जानता था उससे ज्यादा और कोई नहीं। “अरे पीछे मत रह। अगर गोली चलाने की सोचता है, तो नहीं चला पायेगा, तुझे इसका वक्त कहा मिलेगा।”

“अरे, तू तो डरपोक हो गया है!” तीत मुस्कराया और घोड़ी को चाबुक मारकर सरपट आगे चला गया।

७

जब अद्रेई रजम्योत्नोव अपने दल के साथ फ़ोल दामास्कोव के यहा पहुँचा, वह अपने परिवार के साथ दोपहर का खाना खा रहा था। मेज पर खुद फ़ोल – तिकोनी दाढ़ी और बाये कटे नथुनेवाला (बचपन में सेब के पेड़ में गिरकर उसका चेहरा बिगड़ गया था, इसीलिये उसे नकटा कहते थे) नाटा, जर्जर बुढ़ा, उसकी बीवी – हृष्ट-पुष्ट, ग़ैबदार बुढ़िया, बाइस माल का बेटा तिमोफ़ेई और मयानी बेटा बैठे थे।

मुदर-बाका तिमोफ़ेई मेज पर से उठा। उसका चेहरा मा से मिलता-जुलता था। उसने कपड़े में अपने चमकीले होठ पोछे, धृष्ट, उभरी आँखें मिकोडी और गाव के नबर एक बाँके की तरह, जिसको सभी लडकियाँ दिल दे बैठी थी, मनमौजी अदाज में इशारा करके बोला

“आइये, बैठिये, प्यारे नेता लोग।”

“हमारे पास बैठने का वक्त नहीं है,” अद्रेई फाटल में एक कागज निकालकर बोला “गरीबों की मभा ने तुम्हें, नागरिक फ़ोल दामास्कोव को, बेदखल करके मारी जायदाद और मवेशी जब्त करने का फैसला किया है। इसलिये खाना-वाना खाकर मकान खाली कर दो। इतने में हम सामान की सूची बना लेते हैं।”

“यह कैसे?” चम्मच पटककर फ़ोल खड़ा हो गया।

“कुलक वर्ग के रूप में हम तेरा मफाया कर रहे हैं,” छोम्का उशाकोव ने उसे समझाया।

फ़ोल चमड़े के तलवोंवाले नमड़े के बूटों को चरमराता कमरे में गया और वहाँ से एक कागज लाया।

“यह रहा मार्टीफ़िकेट, रजम्योत्नोव, तुमने खुद इस पर दस्तखत किये थे।”

“कैसा सार्टीफिकेट ?”

“ऐसा कि मैंने पूरा अनाज दे दिया।”

“अनाज का क्या वास्ता इससे।”

“तब क्यों मुझे घर से निकालकर सब जब्त कर रहे हो ?”

“गरीबों का फैसला है, मैंने तुम्हें समझा तो दिया।”

“ऐसा कोई कानून नहीं है।” तिमोफेई जोर से चिल्लाया।

“तुम डाका डाल रहे हो। बप्पा, मैं अभी इलाकाई कार्याकारिणी में जाता हूँ। जीन कहा है ?”

“अगर चाहता ही है तो इलाकाई कार्याकारिणी तू पैदल जायेगा। घोड़ा नहीं दूंगा,” यह कहकर अद्रेई मेज के सिरे पर बैठ गया और उसने पेसिल-कागज निकाला

फोल की कटी नाक नीली पड़ गयी, मिर कापने लगा। वह खड़े-खड़े फर्श पर धम्म से बैठ गया, उसकी फूली, काली-सी जबान मुश्किल में चल रही थी

हरामियो! कुतिया की औलादो! लूट लो! मार डालो!”

“बप्पा, भगवान के लिये उठ जाइये।” रोकर बेटी बाप की बगलों में हाथ डालकर उसे उठाने की कोशिश करने लगी।

फोल आपे में आया और उठकर बेच पर लेट गया। वह अब उदामीनता के साथ द्योम्का उशाकोव और लम्बे कद के शर्मिने मिखाईल इग्नात्योनोक को सुन रहा था जो रजम्योत्नोव को लिखवा रहे थे

“सफेद लट्टुओवाला लोहे का पलग, पखो भग गद्दा, तीन तर्किये, और दो लकड़ी के पलग ”

“बर्तनो की अल्मारी। क्या एक-एक बर्तन का नाम गिनाऊ ? अरे मारो भी गोली !”

“बारह कुर्मिया, एक टेकवाली बैच। एक अकार्डियन।”

“अकार्डियन नहीं लेने दूंगा।” तिमोफेई द्योम्का के हाथ से छीनकर बोला “भेगे, मत छेड़, नहीं थोबडा तोड़ दूंगा।”

“मैं तेरा ऐसे तोड़ूंगा कि सगी मा भी न पहचान पायेगी।”

“मालकिन, सद्को की चाबिया ला।”

“नहीं दो इन्हे, अम्मा ! तोड़ ले अपने आप ताने अगर इन्हे इसका हक है।”

“है हमारे पास तोड़ने का हक ?” सजीव होकर देमीद घुन्ने ने

पूछा, वह सिर्फ खास जरूरत पड़ने पर ही बोलता था, बाकी समय चुपचाप काम करता था, त्योहार के दिन गली में जमा होनेवाले कज्जा-को के साथ चुपचाप खड़ा होकर सिगरेट पीता था, सभाओं में चुप बैठा रहता और बस कभी-कभार ही सभाषी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए किमी मुजरिम की तरह मुस्कराता कि देखकर उस पर दया आती।

देमीद के लिये यह समार बेकार की आवाजों से भरा पड़ा था। उनसे जीवन का जाम लबालब भरा था, ये आवाजे रात को भी बंद नहीं होती, मन्नाटे को न सुनने देती, उस प्रज्ञा नीरवता को भरा करती जो प्रायः पतझड़ की ऋतु में स्तेपी और वन में व्याप्त होती है। देमीद को लोगों का गुल-गपाड़ा नहीं पसंद था। वह गाव के आंचल में अलग रहता था, बड़ा मेहनती था और इलाके में उस जैसा ताकतवर कोई दूसरा नहीं था। पर भाग्य उसका फूटा था, दर-दर की ठोकरें खिलाता उसे, मौतेला व्यवहार करता था पांच माल उसने फ़ोल दामास्कोव के यहां कमर तोड़ी, फिर शादी करके अपनी खेतीबारी शुरू कर दी। घर-बार खड़ा ही किया कि आग लग गयी। एक साल बाद फिर सब कुछ स्वाहा हो गया, बस धुएँ की गंध छोड़ता हवा ही बचा। शीघ्र ही बीवी भी छोड़कर चली गयी, बोली “दो माल तेरे साथ रही, तेरे मुँह में दो शब्द नहीं सुने। मुझमें नहीं होता, अकेला रह ! जंगल में भेड़िये के साथ भी मन इतना नहीं उचटेगा ! तेरे साथ रहकर तो दिमाग का पेंच ढीला हो जायेगा। मैं खुद अपने से बोलने लगी हूँ ”

लुगाई तो देमीद से हिल-सी गयी थी। हाँ, यह जरूर था कि पहले महीनां रोककर पति के पीछे पड़ जाती ‘देमीद प्यारे ! तुम मुझसे कुछ बात तो करो। अरे, एक शब्द ही बोल दो !’ देमीद के होठों पर बस बाल-मुलभ मुस्कान ही आ जाती, वह अपनी छाती के बाल खुजलाने लगता। और जब पत्नी के हठ से ऊब जाता तो भारी आवाज में कहता “तू तो मैना है, मैना !” और घर में चला जाता। न जाने क्यों लोंग-बाग देमीद को गर्वीला और चालाक, घाघ कहने लगे। शायद इसीलिये कि ज़िदगी भर वह लोगों के गुल-गपाड़े और शोर से कन्नी काटता रहा ?

इसीलिये तो देमीद की गरजती आवाज सुनकर अद्रेई ने सिर उठाकर उसका सवाल दोहराया

“हक ?” वह घुन्ने को ऐसे ताक रहा था मानो पहली बार उससे मिला हो। “हा, है हक हमे।”

देमीद अपनी गीली, घिसी-फटी जूतियों से फर्श को गदा करता हुआ टेढ़े-मेढ़े कदम रखता अदर के कमरे की ओर चल दिया। मुस्कगते हुए उसने दरवाजे में खड़े तिमोफेई को टहनी की तरह हाथ में हटा दिया और उसके कदमों से भूतभूताते बर्तनों की अलमारी के बराबर में सटूक के पास गया। उसने उकड़ बैठकर, भारी ताले को हाथ में लेकर उलटा-पलटा। एक मिनट बाद टूटा ताला सटूक पर रखा था और अर्काशा बदलू चकित होकर घुन्ने को देखता हुआ प्रणमा के भाव के साथ बोला

‘ हमे के साथ ताकत की अदला-बदली करनी चाहिये । ’

अद्रेई ढग से लिख भी न पा रहा था। कमरे में और बैठक में घोम्का उशाकोव, अर्काशा और वसीलीमा ताई—अद्रेई के दिल की एकमात्र महिला—विविध स्वरो में चिल्ला रहे थे

‘ समूर का जनाना ओवरकोट दोनवाला । ’

भेड को खाल का लम्बा ओवरकोट । ”

तीन जोड़ी नये फुलबूट रबड के तलबोवाले । ”

ऊनी कपडे के चार पीस ।

अद्रेई । रजम्योल्लोव । लल्ला यहा तां इतनी चीजे है कि एक छकटा काफी नहीं होगा । छोट भी काली साटन भी और भी न जान क्या-क्या है ”

कमरे में जाते समय अद्रेई का गलियारे में लडकी की हाथ-तोबा मालाकिन की चीख और इग्नात्यानोक की अनुनय-विनय मनायी पड़ी । अद्रेई ने दरवाजा खोला

“ क्या हो रहा है यहा ? ’

मालिक की बेटी दरवाजे का महारा लेकर फट-फूटकर रो रही थी उसका चेहरा आमुओं में सूजा था । उसके पास मा फुदक रही थी और शर्म में लाल इग्नात्यानोक भेपी-भेपी मुस्कान के साथ लडकी के लहंगे के पल्ले को खींच रहा था ।

“ तू यह क्या कर रहा ? । ” अद्रेई ने बात को समझे बिना, गुस्से में तमतमाकर इग्नात्यानोक को जोर से धक्का दिया । वह पीठ के बल गिर पड़ा, नमदे के जूतोंवाली उसकी लम्बी टांगे ऊपर को

उठ गयी। “यहा चारो ओर राजनीतिक घटनाये हो रही है। दुश्मन पर चढाई हो रही है और तू कोने मे लौडियो से छेडखानी कर रहा ?। इसके लिये तुझे अदालत ”

“अरे तुम सुनो भी, मेरी बात।” इग्नात्योनोक सहमकर खडा हो गया। “मुझे इसकी जरूरत क्या पडी है। इससे छेडखानी। अरे तुम देखो तो यह नौवा लहगा चढा रही है। और मै उसे नही चढाने दे रहा, और तुम धक्का देने लगे मुझे ”

तभी अद्रेई ने ध्यान दिया कि षडकी हडबडी का लाभ उठाकर कमरे से कपडो की पोटली उठा लायी और सचमुच उसने एक के ऊपर एक कई ऊनी पोशाके पहन ली। वह कोने मे दुबककर लहगा ठीक कर रही थी, बडी अजीब-सी बेढब लग रही थी इतने कपडे लादकर। उसकी गीली, खरगोश की तरह लाल आखो को देखकर अद्रेई को घिन और दया आने लगी। धडाम मे दरवाजा बंद करके उसने इग्नात्योनोक को कहा

“उमके कपडे मत उतारना। जो पहन लिया, मारगे गोली पर पोटली ले लो।”

घर के सामान की सूची पूरी हो रही थी।

“कोठरी की चाबी,” अद्रेई ने माग की।

जलकर कोयला बने ठूठ की तरह काले फोल ने हाथ भाडकर कहा

“नही है चाभिया-वाभिया।”

“जा तोड दे,” अद्रेई न देमीद को आदेश दिया।

वह कोठरी की ओर चल पडा, रास्ते मे उसने छकडे मे कीली निकाल ली।

पाच पौड का भारी ताला बडी मुश्किल से कुल्हाडे से टूटा।

“तू चौखट को तो मत काट। कोठरी अब हमारी है, तू अपनी चीज की तरह ध्यान से। देखकर। सभालकर।” हाफते घुन्ने को द्योम्का सलाह दे रहा था।

उन्होंने अनाज मापना शुरू किया।

“चलो अभी बो देते है, क्यो? वहा देखो खत्ती मे सूप भी है,” खुशी के नगे मे चर इग्नात्योनोक ने सुभाब दिया।

मब उसकी हसी उडाने लगे, नापने के बर्तन मे उम्दा गेहू को

भरते हुए वे बड़ी देर तक हसी-मजाक करते रहे।

“इसमे से तो दो-एक सौ पूद अनाज वसूलीवालों को भी दिया जा सकता है,” घुटनों तक अनाज में धसा द्योम्का उशाकोव बोल रहा था। वह बेलचे से गेहूँ को खन्ती के मुह के पाम डाल रहा था, कभी-कभी वह रुककर उसे मिट्टी में भर लेता और फिर उगलिया खोलकर बिखेर देता।

“बढ़िया फसल होगी इसमे।”

“अरे कहा! गेहूँ नहीं कुदन है, पर लगता है मिट्टी में गड़ा हुआ था देखते हो कुछ सीला-सा है।”

अर्काशा बदलू और दल का एक और लडका बाड़े में व्यस्त थे। अर्काशा अपनी सुनहरी दाढ़ी को महलाते हुए बैलों के गोबर की ओर दिखा रहा था, जिसमें मकई के अनपचे दाने नजर आ रहे थे

‘अरे, ये काम कैसे नहीं करेंगे’ अनाज खाते हैं और हमारा महकारिता में तो भूमी भी पेट भर नहीं मिलती।’

अनाज की काठरी में लोगों की गूजती आवाजे ठहाके, गेहूँ की मृगध भरी धूली बाहर फैल रही थी, कभी-कभी कोई चुनिंदा गाली सुनायी पड़ती अद्रेई घर में लौट आया। मालकिन ने बेटी के साथ बोरी में बर्तन-भाड़े भर लिये थे। फ़ोल मुर्दे की तरह छाती पर हाथ रखे बेच पर लेटा था उसके पावों में बम मोजे ही बचे थे। तिमोफेई ने, जो अब कुछ शांत लग रहा था, उसकी ओर घृणा के साथ दंखा और खिड़की की ओर मुह मोड़ लिया।

कमरे में अद्रेई को उकड़ बैठा घुल्ला दिखायी दिया। वह फ़ोल के नये चमड़े के तलबोवाले नमदे के बूट पहने था उसने अद्रेई को अदर आने नहीं देखा, वह टीन के पीपे में से बड़े चम्मच में भर-भरकर चटखारे लेता हुआ, पीली, चिपचिपी बूंदों को दाढ़ी पर टपकाना हुआ शहद खा रहा था

तीत के साथ नागूल्नोव जब गाव लौटा तो दोपहर हो चुकी थी। उनकी अनुपस्थिति में दबीदोव दो कुलक घरानों की जायदाद जब्त

करके, उनके मालिको को बेदखल करके तीत के घर लौटा और उपलों की कोठरी में छिपे अनाज को ल्यूबीशिकन के साथ नाप-तौल चुका था। बड़े श्चुकार ने भेड़ों की नाद में जूठन डाली और तीत को आते देख जल्दी-जल्दी भेड़ों के बाड़े में चला गया।

तीत जैकेट के बटन खोलकर, सिर उधाड़े अहाते में घूम रहा था। उसने खलिहान की ओर पाव मोड़े पर नागूल्लोव चिल्लाया

“फौरन इधर, नहीं तो कोठरी में बद कर दूंगा।”

वह गुम्मे में उर्नेजिन था, उसका गाल सामान्य में अधिक फड़क रहा था न जाने कहा और कैसे तीत ने उसकी नजर बचाकर कट्टा फेंक दिया था। खलिहान के पास पटचकर ही नागूल्लोव ने उसमें पूछा था

“कट्टा तो देगा या नहीं? नहीं तो छीन लेगे।”

‘मजाक छोड़।’ तीत मुस्करा दिया था। “तूने सपने में देखा होगा उसे।”

उसके ओवरकोट के नीचे भी कट्टा नहीं मिला। वापस लौटकर दूढ़ना व्यर्थ था गहरी बर्फ, जगली घाम में कहा मिलेगा। नागूल्लोव ने अपने पर कुढ़ते हुए दबीदोव को इसके बारे में बता बंदिया, और वह, जो नितोक को इतनी देर से कौतूहल के साथ ताक रहा था उसके पास जाकर बोला

“नागरिक तूम हथियार तो दे दो। तुम्हारा ही फायदा है इसमें।”

“नहीं था मेरे पास कोई हथियार-वथियार। नागूल्लोव मुझमें बदला लेने के लिये चुगली कर रहा है।” तीत गधबिलाव की तरह आखे मटकाने हुए मुस्कराया।

‘तो ठीक है, तुम्हें गिरफ्तार करके इलाकाई केंद्र भेजना पड़ेगा।’

“मुझे?”

“हा, तुम्हें। तूम क्या मोच रहे थे? तुम्हारे पुराने जीवन का खयाल करोगे? तूम अनाज छिपाकर रखते हो, देसी”

“मुझे?” मानो कूदने के लिये झुककर सीटी की तरह साम लेते हुए तीत ने गवाल दोहराया।

मारी दिखावटी खुशमिजाजी, समय और धीरज पल में काफूर हो गये। दबीदोव के शब्द अब तक उसमें घुटने प्रचंड क्रोध के विस्फोट का पलीता बन गये। उसने पीछे हटते दबीदोव की ओर कदम बढ़ाया, अहाते

मे पड़े जुग से ठोकर खाकर वह भुका और उसने भटके से उसका कीला निकाल लिया। नागूल्लोव और ल्यूबीशकिन दबीदोव की ओर लपके। बुड्डा श्चुकार भाग खड़ा हुआ। उल्टे मुसीबत यह कि वह दौड़ते हुए अपने ओवरकोट के हद से ज्यादा लम्बे पल्लो में उलझकर गिर पड़ा और जोर-जोर से चिल्लाने लगा

“बचाओ, बचाओ! अरे मार डाला!”

दबीदोव ने तीत की बायीं कलाई पकड़ ली पर उसने दाये हाथ से उसके सिर पर प्रहार किया। दबीदोव नडखड़ाया पर गिरा नहीं। घाव से फूटी खून की घनी धारा उसकी आँखों में भरने लगी, उसे कुछ दिखायी नहीं दे रहा था। दबीदोव ने तीत का हाथ छोड़ दिया, लडखड़ाते हुए उसने हथेली में आँखों को ढका। दूसरे प्रहार ने उसे बर्फ पर धराशायी कर दिया। उसी क्षण ल्यूबीशकिन ने तीत को अपनी बाहों में जकड़ लिया। पर वह शक्तिशाली होने के बावजूद उसे नहीं पकड़े रह पाया। उसके हाथों से छूटकर तीत छलांगे लगाता खलिहान की ओर दौड़ पड़ा। नागूल्लोव ने उसका पीछा करके फाटक के पास, घन बालोंवाली सपाट खोपड़ी पर रिवाल्वर की मूठ से वार किया। तीत की लुगाई ने और भी गड़बड़ कर दी। ल्यूबीशकिन और नागूल्लोव को अपने पति के पीछे दौड़ते देखकर उसने कोठरी के पास जाकर भट में कुत्ते की चेन खोल दी। उसने लोहे के पट्टे को खडखड़ाते हुए अहाने या नेजी में चक्कर लगाया और बुड्डे श्चुकार की भयाक्रांत चीखों को सुनकर, बर्फ पर फैले उसके ओवरकोट की ओर लपककर भपट पड़ा भेड़ की खाल के सफेद ओवरकोट की धज्जिया उड़ने लगी। बुड्डा श्चुकार उठ खड़ा हुआ और कुत्ते पर पटापट पैर चलाते हुए बाड़ के खूटे का उखाड़ने की कोशिश करने लगा। वह अपनी पीठ पर कालर दबोचे खूबवार कुत्ते को कोई चार-पाच गज तक घसीटना ले गया। अतन पूरा जोर लगाकर वह खूटा उखाड़ने में सफल हो ही गया। कुत्ता बिलबिलाकर पीछे हट गया पर जाते-जाने उसने बुड्डे के ओवरकोट को उधेड़ दिया।

“मकार, जरा देना मुझे लिवाल्वर!” आँखें तरेर कर उत्साह में बुड्डा श्चुकार गला फाड़कर चिल्लाया। “दे दो, अभी खून खौल रहा है! मैं उसका और उसकी मालकिन दोनों का काम तमाम कर दूँगा!”

तब तक दवीदोव को सहारा देकर घर के अंदर ले जाया चुका था। घाव के गिर्द बाल काट दिये, जिममें से बुलबुले छोड़ता काला खून अभी तक रिस रहा था। अहाते में ल्युबीशिकन बर्फगाड़ी में तीत के घोड़े जोत रहा था। नागूल्लोव मेज़ पर बैठा जल्दी-जल्दी लिख रहा था।

“ग० प० उ० * के इलाक़ाई अधिकारी कामरेड ज़ख़ारचेन्को। मैं आपके पास प्रतिक्रांतिकारी तत्व के रूप में कुलक तीत कोन्स्तानती-नोविच बोरोदीन को भिजवा रहा हूँ। इस कुलक के यहा ज़ब्ती के वक्त इसने हमारे यहां भेजे गये पच्चीसहज़ारी कामरेड दवीदोव पर औपचारिक रूप से हमला किया और दो बार उनके मिर पर लोहे के कीले से वार करने में मफल हुआ।

“इसके अलावा मैं घोषित करता हूँ कि मैंने बोरोदीन के पास रूसी माडल का गयफल का कट्टा देखा था जो मैं टीले पर होने के कारण और खून-खराबे के डर से नहीं छीन सका। कट्टा इसने आंख चुराकर बर्फ़ में फेंक दिया। मिलने पर आपके पास सबूत के तौर पर भिजवा देगे।

अखिल मघीय कम्युनिस्ट पार्टी (ब्रॉन्गेविक) की
ग्रेम्याची इकाई का मचिव और लाल पताका
पदक-धारक म० नागूल्लोव ”

तीत को बर्फ़गाड़ी में बिठाया गया। उसने पानी पिलवाने और नागूल्लोव को उसके पास बुलवाने का अनुरोध किया। वह घर के ओसारे में चिल्लाया :

“क्या चाहिये तुम्हें ?”

“मकार ! याद रख !” अपने बध्ने हाथो को हिलाता हुआ, शरा-बियों की तरह चिल्लाकर तीत बोला : “याद रख, हमारे गस्ते फिर मिलेंगे ! तू ने मुझे कुचला, पर तब मैं कुचलूंगा। मार के दम लूंगा।

* राजनीतिक महानिदेशालय - रूसी में 'ग्लावनोये पोलीतीचेस्काये उप्रबलेनिये' - तत्कालीन सुरक्षा विभाग। - म०

खुद गयी हमारी दोस्ती की कब्र !”

“जा यहां से, बैगी !” नागूलनोव हाथ भटककर बोला
घोड़े सरपट दौड़ पड़े।

६

सांझ ढलने पर ही अंद्रेई रज़म्योलनोव ने उसके साथ काम करनेवाले गरीबों के सहयोग दल को छुट्टी दी, गायेव कुलक के घर में ज़ब्त माल के आखिरी छकड़े को तीत के यहाँ रवाना किया, जहाँ सभी कुलकों का माल-असबाब जमा किया जा रहा था, और ग्राम-सोवियत की आंग्र चल दिया। सुबह ही उसने दवीदोव से वहाँ आम सभा से एक घंटे पहले मिलने की बात कर ली थी जो अंधेरा छाने पर शुरू होने-वाली थी।

इयोढी में ही अंद्रेई को ग्राम-सोवियत के कोनेवाले कमरे में रोशनी दिखायी पड़ी और वह पटाक में दरवाज़ा खोलकर कमरे में घुसा। आहत सुनकर दवीदोव ने डायरी पर झुका सफ़ेद कपड़े में बंधा अपना सिर उठाया और मुस्करा दिया।

“लो रज़म्योलनोव भी आ गया। बैठो, हम कुलकों के यहाँ मिले अनाज का हिमाब लगा रहे हैं। अरे हा, तुम्हारा काम कैसा रहा ?”

“हो गया तुमने सिर क्यों कपड़े में लपेट रखा है ?”

अखबार के पन्ने में लैम्प गेड बनाते हुए नागूलनोव अनिच्छा के साथ बोला .

“तीत का काम है। कीले से। तीत को मैंने ज़ख़ारचेन्को के पास ग० प० उ० में भेज दिया है।”

“ज़रा रुको, अभी बतायेंगे।” दवीदोव ने मेज़ पर गिनतारा मरकाया। “जोड़ो एक सौ पंद्रह। जोड़ लिया ? एक सौ आठ ...”

“ठहरो ! रुको ज़रा !” नागूलनोव सावधानी के साथ उंगलियों में गिनतारे के मनकों को खिसकाते हुए चिंतित स्वर में बुदबुदाया।

अंद्रेई उन पर नज़र डालकर कांपते होठों से, बैठे स्वर में बोला :

“आगे नहीं करूंगा काम।”

“क्या नहीं करेगा ? कहाँ ?” नागूलनोव ने गिनतारे को एक ओर रखकर पूछा।

“बेदखली करने नहीं जाऊंगा कुलको की। तू आखे फाड़कर क्या देख रहा है? क्या दौरा पड़वाना चाहता है?”

‘तुम ने पी रखी है क्या?’ दबीदोव ने आशकापूर्ण ध्यान के साथ अद्रेई के क्रुद्ध दृढ़ता से भरे चेहरे पर नजरे गड़ायी। “तुम्हे क्या हो गया? क्या मनलब—क्यो नहीं करोगे?”

उसकी शांत, पतली आवाज से अद्रेई तिलमिला गया, हकलाना हुआ वह आवेग में चिल्लाया

“नहीं सीखा है मैं। मैं मैं ने नहीं सीखा है बच्चों के साथ लड़ना। मोर्चे की बात और है। वहां तलवार में, चाहे जो हाथ में हो उसमें भाड़ में जाओ तुम सब। मैं नहीं जाऊंगा।”

तनते तार की तरह अद्रेई का स्वर खिचता जा रहा था और लगता था कि अब टूटने ही वाला है। पर अद्रेई फुफकार के साथ निश्वास छोड़कर अचानक फुमफुसाहट पर उतर आया

“यह भी भला कोई बात हुई? मैं क्या हूँ? जल्लाद हूँ भला? या मेरा दिल पत्थर का है? युद्ध ने मेरा सब कुछ ” और फिर वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा “गायेव के ग्यारह अदद बच्चें हैं। हम वहा गये—उनकी चीख-पुकार में सिर चकगने लगा। मेरे गोगटे खड़े हो गये। उन्हे घर में निकालन लगे तब मैंने अपनी आखे मूद ली कानो में उगलिया ठूस ली ओर बाड़े में भाग गया। लुगाइया मेसे रो रही थी माना कोई मर गया हो बहू बच्चे बेमुध हो गये भाड़ में जाओ तुम। ”

तू रो ले। दिल हल्का हो जायेगा ” नागूल्नोव ने सलाह दी। वह अपने फड़कते गाल को हथेली में कमकर दबाये हुए चमकती आखों से अद्रेई का एकटक देख रहा था।

“हा रो पड़गा। तुम्हे क्या पता मुझे अपने छोरे की ” अद्रेई का गला रुध गया, खीसे निपोरकर उसने मेज की ओर पीठ कर ली।

कमरे में नीरवता छा गयी।

दबीदोव धीरे-धीरे कुर्मी में उठा उसी तरह धीरे-धीरे उसके बिना पट्टीवाल गाल पर मर्दे जैसी नीलिमा छान लगी, कान पोला पड़ गया। अद्रेई के पास जाकर उसने उसके कंधे पकड़े और धीरे से उसे अपनी ओर घुमाया। वह अद्रेई के चेहरे पर नजरे गड़ाकर हाफता हुआ बोला

“तुम्हे उन पर दया आती है उन पर तुम्हे दया आती है। पर उन्होंने हम पर दया की थी? क्या शत्रु हमारे बच्चों के आसुओं को देखकर रोते थे? अनाथों पर दया की थी? बोलो? मेरे बाप को हडताल के बाद कारखाने में निकालकर माइबेरिया भेज दिया गया मा के हम चार थे मैं सबसे बड़ा था, तब नौ माल का था खाने को कुछ था नहीं और मा तुम इधर देखो। मा सड़क पर निकल गयी ताकि हम भूखे न मर जायें। हमारी कोठरी में—तहखाने में रहते थे—मेहमान को लाती बस एक पलंग बचा था और हम पर्दे के पीछे फर्श पर मैं नौ साल ही का था। उसके साथ नशे में धुन आते और मैं छोटी बहनों के मुंह हाथों में बद रखता ताकि रोये नहीं हमारे आम् किमन पोछे’ तुम सुनते हो? सबेरे मैं यह नासपीटा रूबल लेता ” दवाँदोव ने अद्रेई के चेहरे के पास अपनी मख्त हथेली फैलायी और दात पीमकर बोला “मा की कमाई का रूबल और रोटी लाने जाता ” और अचानक सीमे की तरह भारी अपनी काली मुट्ठी को मज पर पटककर वह चिल्लाया ‘तू!’ तू कैसे दया कर सकता है?’

और फिर से मन्नाटा छा गया। नागुल्नोव नाखून गड़ाकर मेज को पकड़े हुए था, जैसे चील अपने शिकार को। अद्रेई चुप था। हापने हुए, दवाँदोव न मिनट भर कमरे में चहलकदमी की और फिर अद्रेई के कंधे अपनी बाहों में भरकर उसके साथ बेच पर बैठ गया और टूटी-मी आवाज में बोला

‘तुम भी पागल हो। आने के साथ ही चिल्लाने लगे नहीं करूंगा काम बच्चे दया न जानें क्या-क्या कह डाला, होश म आओ। आआ जी खोलकर बात करे। दया आ गयी कि कुलको के परिवारों को बेदखल कर रहे हैं? तो क्या हुआ’ इसीलिये ता निकाल रहे हैं कि हमें नये जीवन का निर्माण करने में खलल न डाले, ऐसों के बिना ताकि भविष्य में फिर वही किस्मा न दोहराया जाये। तुम ग्रेम्याची में सोवियत सत्ता हो और मुझे तुम्हो को समझाना पड़ेगा?’ और मुश्किल में जोर लगाकर मुँकरा दिया। “अच्छा, निकाल देगे कुलको को, मोलोव्की* में निर्वासित कर देगे। अरे मर थोड़े ही

* रूस में श्वेत सागर में स्थित मोलोवत्स्की द्वीप-पुज।—अनु०

जायेंगे? काम करेंगे—हम उन्हें रोटी देंगे। और जब निर्माण पूरा कर लेंगे तो ये बच्चे कुलकों के बच्चे थोड़े ही होंगे। मजदूर वर्ग इन्हें शिक्षा देगा।” उसने सिगरेट का पैकेट निकाला, बड़ी देर तक कांपती उंगलियों से उसमें से सिगरेट को नहीं निकाल पा रहा था।

अंद्रेई नागूल्लोव के पीले पड़ते चेहरे को एकटक देख रहा था। अचानक वह तेजी से खड़ा हुआ, दवीदोव कुछ समझ न पाया, उसी क्षण नागूल्लोव उछला मानो उसे किसी ने उछाल दिया हो।

“बिच्छू!” मुट्ठियां कसकर वह गुर्गिया। “तू कैसे क्रांति की सेवा कर रहा है? दया करता है? अरे मैं... अभी मेरे सामने हज़ारों बुद्धों, बच्चों, लुगाइयों को खड़ा करो... और कहो कि इनका काम तमाम करना है.. क्रांति की खातिर इसकी ज़रूरत है... मैं मशीनगन से... उन सबको छलनी कर डालूंगा!” नागूल्लोव वहशियों की तरह चिल्लाया और उसकी विशाल, फैली पुतलियों में पागलपन का उन्माद छा गया, मुंह से भाग टपकने लगा।

“अरे, चिल्ला मत! बैठ जा!” दवीदोव चिंतित स्वर में बोला।

अंद्रेई कुर्मी को गिराकर तेजी से नागूल्लोव की ओर बढ़ा पर वह दीवार का सहारा लेकर, सिग को पीछे झुकाकर, तीखे स्वर में चिल्लाया:

“मार डालूंगा!” उसकी आंखें चढ़ गयी थी, गिरने-गिरते वह बायें हाथ से हवा में म्यान को ढूंढ़ रहा था और दाये हाथ से तलवार की अदृश्य मूठ को टटोल रहा था।

अंद्रेई ने भट से उसे पकड़ लिया, वह मकार के मानो सीमे से भरे भारी बदन की मांसपेशियों में भयकर तनाव को, इस्पाती कमानियों की तरह तनी टांगो को महसूस कर रहा था।

“दौरा पड़ा है... पैर इसके पकड़ो!...” अंद्रेई दवीदोव को बस यही कह पाया।

* * *

जब वे स्कूल पहुंचे तो वहां सभा में आये लोग ठसाठस भरे थे। सब लोग अंदर नहीं समा पा रहे थे। कज्जाकों, लुगाइयो और छोरियों के झुंड गलियारे और ओसारे तक पर खड़े थे। खुले दरवाजों

के गर्भ में तबाकू के धुएँ से मिली भाप उड़ रही थी।

नागूलनोव आगे-आगे चल रहा था, उसका चेहरा पीला था और फटे होठों पर खून जमा हुआ था। ठक-ठक करते उसके बूटों के तले मूरजमुखी की गिरियों के छिलके कुर्कुरा रहे थे। कज्जाक उससे रास्ता देते हुए सशय के साथ देख रहे थे। दबीदोव को देखकर कानाफूमी शुरू हो गयी।

“यही दबीदोव है?” रूमाल में बधी गिरियों की पोटली में इशारा करके बेल-बूटेदार शालवाली छोकरी ने जोर में पूछा।

“ओवरकोटवाला ठिगना-मा है।”

“ठिगना है पर गठीला है, देख, उसकी गर्दन को, अच्छे-खासे माड़ जैसी है। हमारे यहाँ नसल सुधारने भेजा है,” दबीदोव को अपनी गोल स्लेटी आँखों में ताकते हुए एक छोकरी खिलखिलाकर हसी।

“उसके कंधे तो देखो इस हजारी के, कितने चौड़े हैं। यह अगर बाहों में भर ले तो छोरियों ' फौजी की बीवी नतालया अपनी रंगी भवों को नचाकर बेगर्मी में बोली।

किमी छोकरी की भौड़ी-सी, तबाकू में भारी आवाज ने कटाक्ष किया

हमारी नताल्लि-देनेवाली तो पतलूनवाले को देखते ही ”

“अरे किमी ने इसके मिर पर चोच मार दी क्या? पट्टी बधी है ”

“अरे नहीं, किमी के दानों का कमाल है ”

नहीं। तीत ने

“छोरियों! मुदरियों! अरे क्यों पगंदेमी को आँखें फाड़कर देख रही हो? क्या मेरा बुरा है?” अघेड उम्र के सफाचट दाढ़ीवाले कज्जाक ने हो-हो हमते हुए अपनी लम्बी बाहों में भरकर छोरियों के पूरे भुड़ को दीवार में मटा दिया।

चिल्लपो मच गयी। कज्जाक की पीठ पर छोरियों के मुक्के बरस पड़े।

कक्षा के दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते दबीदोव पसीने से तर हो गया; भीड़ में मूरजमुखी के तेल, प्याज, सस्ते तबाकू और डकारों की बूँद आ रही थी। छोरियों और जवान लुगाइयों से मद्दक से निकले

कपडो और क्रीम की गंध फैल रही थी। स्कूल में मधुमक्खी के छत्ते जैसी भनभनाहट व्याप्त थी। और लोग भी मधुमक्खियों के भुड़ की तरह उमड़ रहे थे।

“आपके यहाँ छोकरिया बड़ी चुलबुली है,” मच पर चढ़ते समय दवीदोव सकुचाकर बोला।

पतले तख्तों से बने मच पर दो डेस्को को जोड़कर रखा गया था। दवीदोव और नागूल्लोव बैठ गये। रजम्योल्लोव ने सभा शुरू की। अध्यक्ष-मंडल निर्विघ्न रूप से चुन लिया गया।

“सामूहिक फार्म के बारे में इलाकाई पार्टी समिति के प्रतिनिधि दवीदोव बोलेंगे,” रजम्योल्लोव बोला, लोगों के गुलगपाड़े के ज्वार में भाटा आया और शांति छा गयी।

दवीदोव खड़ा हुआ, उसने मिर पर पट्टी ठीक की। वह कोई आधे घंटे तक बोलता रहा, अंत में उसकी आवाज बैठ गयी। सभा चुप थी। घुटन बढ़ती जा रही थी। दो लालटेन की रोशनी में दवीदोव को अगली पंक्तियों में बैठे लोगों के पसीने से चमकते चेहरे नजर आ रहे थे, और पीछे भुटपुटा छाया हुआ था। किमी ने भी उसे टोका नहीं, पर जब उसने बोलना समाप्त किया और पान्त्स का गिलाम उठाया, प्रश्नों की बौछार लग गयी

“मच कुछ का सामूहिकीकरण करना होगा?”

“और घरों का?”

“ये सामूहिक फार्म कुछ समय के लिये होंगे या हमेशा के लिये?”

“जो अलग से खेती करने हैं उनका क्या होगा?”

“उनकी जमीन तो नहीं छीन लेंगे?”

“क्या खाना भी मिलकर खाना होगा?”

दवीदोव बड़ी देर तक प्रश्नों का स्पष्ट-साफ उत्तर देता रहा। जब कृषि व्यवस्था के जटिल प्रश्नों की चर्चा होती तो नागूल्लोव और अर्द्रेड उसकी सहायता करते। सामूहिक फार्म का आदर्श विधान पढ़कर सुनाया गया परन्तु प्रश्नों की बौछार तब भी नहीं रुकी। अंततः बीच की कतारों से एक कज्जाक खड़ा हुआ, उसने लोमड़ी के समूह का कनटोप पहन रखा था, काले, खाल के ओवरकोट के बटन खुले हुए थे। उसने बोलने की अनुमति मांगी। छत से लटकी लालटेन की तिरछी रोशनी उसकी घिमी टोपी पर पड़ रही थी जिसके ललौहे रोये आग

की तरह दमकने मानो धुआ छोड़ रहे थे।

“मै मझोला खेतिहर हूँ, पर नागरिको, मै यही कहूँगा कि बेशक सामूहिक फार्म, यह काम नेक है, पर बहुत मोचने की जरूरत है। इस काम में चट मगनी पट ब्याहवाली बात नहीं चलेगी। पार्टी के कामरेड प्रतिनिधि ने कहा 'मिलकर काम करोगे तो यह भी फायदे की बात होगी। कामरेड लेनिन ने भी यह बात कही थी।' कामरेड प्रतिनिधि खेतीबाड़ी को कम समझते हैं, मजदूर रहे इसलिये उन्होंने कभी हल नहीं चलाया, उन्हें क्या मालूम कि बैल को किस ओर से जोतना चाहिये। इसी वजह से उनका निशाना कुछ चूक गया। मेरे खयाल में लोगो को सामूहिक फार्म में इस तरह भरती करना चाहिये जो मेहनती है और जिनके पास ढोर-डगर है उन्हें एक फार्म में, गरीबो को—दूसरे में, खाते-पीतो को—बात माफ़ है—और सबसे आलमियो को देग-निकाला तार्किक १० ५० ३० उन्हें काम करना सिखाये। सबको एक झुंड में हाकन का कोई फायदा नहीं, उसी कहानीवाली बात होगी जिसमें हम केकड़ा और मछली छकड़े को खींचते हैं—हम ऊपर उड़ता है मछली पानी की ओर खींचती है और केकड़ा उल्टी दिशा में।

सभा में हल्की-सी हसी फैल गयी। पीछे से किसी छोकरी की तीखी चीख सुनायी पड़ी, भट ने कोई भल्लाये स्वर में चिल्लाया

अरे तूम्, कमजोर की औलाद! छेड़खानी तो बाहर बाड़े में भी की जा सकती है। जाओ यहाँ से।”

घिसी टोपीवाले ने कमाल में माथा और होठ पोछे और आगे बाला

“लोगो को उसी तरह चुनना चाहिये जैसे अच्छा किमान बैलो को। वह तो बराबर कद के और बराबर ताकत के बैलो की जोड़ी बनाता है। अगर बेमानी के जोत दो तां क्या होगा? जो ताकतवर होगा वह आगे-आगे दौड़ेगा और कमजोर रुक जायेगा, उसकी वजह से ताकतवर को भी बार-बार रुकना पड़ेगा। ऐसी जोड़ी भला किस काम की? कामरेड कह रहे थे सारा गाव एक सामूहिक फार्म में, कुलको को छोड़कर वही बात हुई न राग मिलायी जोड़ी एक अध्रा—एक कोढ़ी।”

ल्युबोशिकन खड़ा हुआ, उसने ताव में आकर अपनी घनी, काली मूछ को हिलाया और वक्ता की ओर मुड़कर बोला

“अरे कुज़्मा, कभी-कभी तो तू इतना मीठा-मीठा बोलता है, इतनी सुंदर-सुंदर बातें करता है! लुगाई होता तो ज़िंदगी भर सुनता रहता तुझे!” (सभा में खिलखिलाहट दौड़ गयी।) तू सभा को इस तरह मना रहा है मानो यह पलागा कुज़्मीचोवा ...”

ठहाके गूँज उठे। लालटेन की लपट सांप की जीभ की तरह लपकी। सभी लोग इशारे को समझ गये, शायद यह कोई भौंडी, हंसने लायक बात थी। नागूल्लोव तक की आँखों में चंचलता छलक आयी। दबीदोव उसमें हंसी का कारण पूछने ही वाला था कि ल्युबीशकिन बड़ी जोर से चिल्लाया :

“सुर तो तेरा है पर गीत पराया! तुझे तो इसी तरह लोगों को चुनना अच्छा लगेगा। शायद तूने यह तभी सीखा होगा जब फ़ोल नकटे की मशीन कंपनी में शामिल था? इजन तो तुम्हारा पिछले साल ही ज़ब्त हो गया। और अब हमने तेरे फ़ोल की मुँड़ाई कर दी! फ़ोल के इंजन के गिर्द तुम भी सामूहिक फ़ार्म की तरह जमा हो गये थे, पर कुलकोवाले। तू भूला तो नहीं, कुटाई के लिये क्या लेते थे? क्या हर आठवां पृद नहीं? तू तो अब भी शायद अमीरो के भुंड में घुसना चाहेगा .”

ऐसा गुलगपाड़ा मच गया कि रज़्म्योल्लोव बड़ी मुश्किल से लोगों को शांत करा पाया। पर बड़ी देर तक जबर्दस्त तू-तू, मै-मै होती रही.

“अरे सहकारिता बनाके ही तुमने क्या खाक कमाया!”

“ट्रैक्टर से तो मारी जुए भी नहीं मार पाओगे!”

“कुलको ने तेरा दिल पत्थर बना दिया!”

“चटा दे धूल!”

“तेरा मिर तो मूसल का ही काम दे सकता है!”

फिर पतलो हालतवाले मंभोले किसान निकोलाई ल्यूश्न्या ने बोलने की अनुमति मागी।

“तुम बहस-वहस मत करना। बात साफ़ है,” नागूल्लोव ने उसे चेताया।

“यह कैसे? तुम्हें क्या पता, अगर मैं विरोध करना चाहूँ तब? या मुझे तुम्हारी बात के खिलाफ़ कुछ बोलने का हक़ नहीं? मैं तो यह कहूँगा: सामूहिक फ़ार्म—यह स्वेच्छा की बात है, चाहते हो—हो

जाओ भर्ती, चाहते हो—दूर से देखो। इसलिये हम एक तरफ खड़ा होकर देखना चाहते हैं।”

“यह कौन है ‘हम’?” दबीदोव ने पूछा।

“मतलब किमान।”

“तुम अपनी बात करो। दूसरे कोई अपनी जुबान बेच थोड़े ही बैठे हैं, खुद कह देगे अपनी बात।”

“अपनी भी बात कह सकता हूँ। अरे अपनी ही बात तो कह रहा हूँ। मैं पहले देखना चाहता हूँ कि सामूहिक फार्म में कैसी होगी ज़िंदगी। अगर अच्छी होगी तो नाम लिखवा लूँगा, अगर नहीं, तो मैं कोई पागल थोड़े ही हूँ कि भर्ती होऊँ। यह तो मछली ही पगली होता है, जाल में सिर घुमेड़ती है ”

“ठीक कहा।”

हम भर्ती होने में जल्दी नहीं करेंगे।”

“पहले दूसरों को देखने दो नयी ज़िंदगी।”

“भट में भर्ती हो जा। क्या देखना है वह कोई छोरी थोड़े ही है?”

‘अब अम्बालकिन बोलेगा। बोलो।’

“मैं अपने बारे में यह कहूँगा, प्रिय नागरिकों मैं और मेरा सगा भाई प्योत्र साथ रहते थे। पर नहीं रह पाये। कभी लुगाइया आपस में भिड़ जाती, एक दूसरे के बाल नोचती, कभी प्योत्र और मेरे बीच ठन जाती। और यहाँ तो पूरे गाँव को, सबको एक झुंड में हाकना चाहते हैं। अरे यहाँ तो ऐसी गड़बड़ होगी कि कुछ समझ न आयेगा। जब स्तेपी में हल चलाने जायेंगे, तो जरूर झगड़ा होगा। इवान ने मेरे बैलों को हद से ज्यादा दौड़ाया और मैंने उसके घोड़ों का ख्याल नहीं रखा यहाँ तो मिलीशिया को दिन-रात तैनात रखना पड़ेगा। हरेक का थोबड़ा टूटा होगा। एक ज्यादा काम करेगा, दूसरा कम। काम हमारा तरह-तरह का है, यह कारखाने में खराद चलाना नहीं है। वहाँ तो आठ घंटे की पाली करी पूरी और छड़ी उठाकर चल दिये ”

“तुम कभी कारखाने में गये भी हो?”

“मैं, कामरेड दबीदोव, नहीं गया पर जानता हूँ।”

“तुम्हें मजदूरों के बारे में कुछ पता नहीं। और अगर तू कारखाने में नहीं गया, अपनी आँखों से नहीं देखा, तो क्यों गाल बजा रहा है।

छड़ी लेकर टहलते मजदूर के बारे में बातें कुलकों का प्रचार है !”

“चलो मान लिया, छड़ी के बिना ही मही। काम किया और छुट्टी। पर हमारे यहां मुंह अंधेरे उठकर हल चलाना पड़ता है। रात तक घड़ो पसीना बह जायेगा, पैरों में मुर्गी के अंडों जितने बड़े छाले पड़ जायेंगे और रात भर बैल चराओ, खबरदार अगर सोये: बैल का अगर पेट नहीं भरा तो वह हल नहीं खींच पायेगा। मैं तो सामूहिक फार्म में जी लगाकर मेहनत करूंगा और दूसरा, अरे हमारे कोलीबा जैसा ही कोई, मेड़ पर सोयेगा। चाहे सोवियत मत्ता कहती है कि गरीबों में आलसी नहीं होते, कि यह सब कुलकों की गद्दी बातें हैं, पर यह सच नहीं है। कोलीबा ज़िंदगी भर आराम से अलावघर के ऊपर बनी टाड़ पर गर्मी में लेटा रहा। सारा गांव जानता है कि एक बार जाड़े में वह अलावघर के ऊपर सोया था, पैर दरवाज़े की तरफ़ पमारे। मुबह तक उसके पांव पाले में ढक गये और बसल गरम डंटो में जल गयी। मतलब यह कि इतना आलसी हो गया कि जंगल-पानी के लिये भी अलावघर में उठकर बाहर नहीं जा सकता। मैं ऐसे आदमी के साथ कैसे काम करूंगा ? नहीं होऊंगा भगती सामूहिक फार्म में !”

“अब कोद्रात माइदानिकोव की बागी है। बोलो।”

पिछली कतारों में मझले कद का, स्लेटी जाकेट पहिने कज्जाक बड़ी देर तक गस्ता बनाता हुआ मंच की ओर आ रहा था। सिपा-हियोंवाली बदरंग तिकोनी टोपी भेड़ की खाल की टोपियों, कनटोपों, लुगाइयो के सिरों पर बंधे रंग-बिरंगे रूमालों के ऊपर से हिलती हुई पाम आ रही थी।

पाम आकर वह अध्यक्ष-मंडल की ओर पीठ करके खड़ा हुआ और आगम में शलवारनुमा पतलून की जेब में हाथ डाला।

“पढ़कर सुनाओगे भाषण ?” द्योम्का उशाकोव ने मुस्कगते हुए पूछा।

“टोपी तो उतार दो !”

“मुह ज़बानी सुना।”

“अरे यह तो अपनी सारी ज़िंदगी का कागज़ पर चिट्ठा बनाकर रखना है।”

“अरे, पढ़ा-लिखा जो है ! . .”

माइदानिकोव ने मैनी-चीकट डायरी निकाली और जल्दी-जल्दी

टेढ़े-मेढ़े अक्षरो से भरे पन्ने पलटने लगा।

“अरे तुम हसने की जल्दी ना करो, क्या पता रोना पड़ जाये।” वह गुस्से में बोला। “हा लिखता हू कि कैसे रोट्टी कमाता हू। और अभी तुम लोगो को पढ़कर सुनाता हू। यहा तरह-तरह की आवाजे सुनायी दी, पर एक भी काम की नही। जिदगी के बारे में कम मोचते हो।”

दन्नीदोव का माथा ठनका। अगली कतारों में मुस्काने दिखायी पड़ी, स्कूल में कोलाहल सुनायी पड़ा।

“मेरी खेतीबाड़ी मभोली है,” निसकोच, विश्वास के साथ माइदार्लिनकोव ने बोलना शुरू किया। “पिछले साल मैंने पांच देस्यातीना पर अगाज बोया। जैसा कि आपको मालूम है मेरे पाम बैलो की जोड़ी, घोड़ा, गाय, बीवी और तीन बच्चे हैं। काम करने को ये दो हाथ हैं आप खुद देख रहे हैं। फसल में मुझे नब्बे पूद गेहूँ अठारह पूद मकई और तेइस पूद जौ मिले। परिवार का पेट भरने के लिये मझे खद माठ पूद की जरूरत है, मुर्गे-मुर्गियों के लिये दसैक पूद की जरूरत है जौ घोड़े के लिये पूरा पड़ेगा। राज्य को मैं कितना बेच सकता हूँ अड़तीस पूद। एक रूबल दस कोपेक फी पूद की दर में हिमाब लगाओ इकतालीस रूबल का गुरु मुनाफा बनता है। ठीक है मुर्गे-मुर्गियों को बेच दूंगा बत्तखे शहर ले जाऊंगा, इसमें कोई पद्रह रूबल इस तरह कमा लूंगा। और आखों में दर्द की भलक के साथ वह चिल्लाकर बोला क्या मैं इन पैसों में कपड़े-जूते, मिट्टी का तेल, मार्चम साबुन खरीद सकता हूँ और घोड़े की नाले जड़वाने के भी तौ पैसों लगते हैं? आप चुप क्यों हो? क्या मैं आगे इसी तरह जी सकता हूँ? कम-ज्यादा फसल हुई तो गनीमत है। और अगर फसल न हुई तब? तब मैं क्या बन जाऊंगा? भिखारी? तुम्हारी मा की एमी की तैसी तुम्हें क्या हक है मुझे सामूहिक फार्म में जाने से रोकने का? क्या उसमें मेरी जिदगी इसमें बदतर होगी? बिना बात के बक-बक करते हो। तुम सबका, जो मभोले हैं यही हाल है। और पता है, क्यों तुम लोग हाथ-पाव मार रहे हो अपना और दूसरों का दिमाग खराब कर रहे हो, अभी बताता हूँ।”

‘मुना, स्सालो को, कोद्रात।’ ल्युबीशिकन जोश में चिल्लाया।

“अभी उड़ाता हूँ घाज्जिया इनकी तार्कि होश में आये। तुम लोग

इसलिये सामूहिक फार्म के खिलाफ हो क्योंकि अपनी गाय व अपने दडबेनुमा मकान के अलावा तुम्हे दुनिया में कुछ नजर ही नहीं आता। मेरा है—इसकी हवस तुम्हे खा रही है। तुम लोगो को कम्युनिस्ट पार्टी नये जीवन की ओर धकेल रही है और तुम अंधे बछड़े की तरह हो जिसे गाय के थन के पास ले जाते हैं पर वह टांगे चलाता है और मिर नचाता है। और अगर बछड़े ने थन न चूसा तो वह इस दुनिया में स्वाक जियेगा। बस मैंने कह दिया। मैं आज ही बैठकर सामूहिक फार्म में शामिल होने के लिये अर्जी लिख डालूंगा और दूसरो में भी यही करने की अपील करता हूँ। और जो नहीं चाहता—वह कम से कम दूसरो को तो परेशान न करे।”

रजम्योल्नोव उठकर बोला

“बात साफ है, नागरिको! लालटेनो में तेल खत्म हो रहा है और देर भी बहुत हो गयी है। हाथ उठाओ, कौन सामूहिक फार्म के पक्ष में है। सिर्फ घर के मालिक ही हाथ उठाये।”

दो सौ सत्रह उपस्थित गृह-स्वामियो में से सिर्फ सड़मठ ने हाथ उठाये।

“कौन विरुद्ध है?”

एक भी हाथ नहीं उठा।

“सामूहिक फार्म में नाम नहीं लिखवाना चाहते?” दवीदोव ने पूछा। “मतलब यह कि कामरड माइदान्स्कोव ने ठीक कहा था?”

“नहीं चाहते।” कोई औरत नकियाते स्वर में बोली।

‘तुम्हारा माइदान्स्कोव कौन होता है हमें मिखानेवाला।’

“बाप-दादा रहते थे इसी तरह ”

“तुम हम से जोर-जबर्दस्ती नहीं करोगे।”

और जब चिल्लपो शांत हो गयी, पिछली कतारों में, सिगरेट के अगारों की चमक से आलोकित अधरे से किसी की गुस्सा भरी तीखी आवाज सुनायी दी

“हमें उल्लू बनाने की कोई जरूरत नहीं है। तीत ने एक बार तेरा खून निकाला, और भी निकाला जा सकता है ”

दवीदोव को मानो किसी ने कोड़ा मारा हो। भयावह सन्नाटे में क्षण भर के लिये वह अवाक् रह गया, उसका चेहरा पीला पड़ने

लगा, टूटे दांतोंवाला मुंह अधखुला रह गया, फिर वह फटे स्वर में चिल्लाया :

“तू! दुश्मन की आवाज़! मेरा कम खून बहाया गया! मैं वह दिन देखने के लिये ज़िंदा रहूंगा जब तुझ जैसे सभी का हम सफ़ाया कर देंगे। पर अगर ज़रूरत पड़ी तो मैं पार्टी की खातिर .. अपनी पार्टी के लिये, मजदूरों के ध्येय के लिये अपना सारा खून दे डालूंगा! सुन रहा है तू, कुलक बिच्छू? एक-एक बूंद तक!”

“कौन यह बोला?” नागूलनोव तनकर खड़ा हुआ।

रज़्म्योलोव मंच से कूदा। पिछली क्रतारों में बेच चरमरायी और कोई बीसेक लोगों का भुंड शोर के साथ गलियारे में निकल गया। बीच की कतारों में भी लोग उठने लगे। टूटे काच की भंकार हुई: किसी ने खिडकी का काच तोड़ दिया। छेद में से ताज़ी हवा तेज़ी से अंदर आने लगी, सफ़ेद भाप बवडर की तरह उड़ने लगी।

“यह शायद तिमोशा चिल्लाया था! फ़ोल नकटे का ..”

“निकाल दो उन्हें गांव में!”

“नहीं, यह अकीम्का था! यहा तुब्यान्स्की के कज़्जाक भी है।”

“निकाल दो गुडों को यहा से! ..”

सभा आधी रात के भी बहुत बाद में समाप्त हुई। सामूहिक फार्म के पक्ष और विपक्ष में खूब गर्मागर्म बहस हुई, लोगों के गले बैठ गये, आँखों में अंधेरा छाने लगा। कहीं-कहीं, मंच के पासवाले लोग तक, एक दूसरे का गरेवान खीच-खीचकर अपनी मत्थता को प्रमाणित करने लगे थे। कोद्रात माइदान्स्कोव के धर्मपिता और पडोसी ने सूड़ी तक उसकी क़मीज़ चीर दी। हाथापाई होते-होते बची। द्योम्का उशाकोव बेचों को फांदता, बैठे लोगों के सिरों को लाघता कोद्रात की सहायता के लिये लपका, पर दवीदोव ने बीच-बचाव कर दिया। और द्योम्का ने भट से माइदान्स्कोव से कटाक्ष किया:

“अरे कोद्रात, ज़रा हिसाब तो लगा, फटी क़मीज़ के लिये तुझे कितने घंटे हल चलाना पड़ेगा?”

“तू गिन तेरी लुगाई के कितने ...”

“संभल के! ऐसे मज़ाक़ के लिये मैं सभा में निकाल दूंगा।”

देमीद घुन्ना पिछली पंक्तियों में बैठ के नीचे किमी जानवर की तरह दुबककर चुपचाप सोया पड़ा था, उसने बेकार के शोर में कान

ढापने के लिये अगरखे के पल्ले में सिर लपेट रखा था। वृद्धाए, जो सभा में भी अधबूने मोजे साथ लायी थी, ऊन के गोले और सलाइया गिगती हुई दडबे में बैठी मुर्गियों की तरह ऊघ रही थी। बहुत-से लोग जा चुके थे। और जब कई बार भाषण दे चुका अर्काशा बदलू सामूहिक फार्म की हिमायत में कुछ और बोलना चाहता था तो उसके गले से नाग की फुफकार-सी निकलकर रह गयी। अर्काशा ने टेटुए को सहलाया और कटु भाव के साथ हाथ भाड़कर रह गया, पर फिर भी उसमें न रहा गया और अपनी जगह पर बैठते हुए, उसने सामूहिक फार्म के कट्टर विरोधी निकोलाई अरुवात्किन को यह दिखाने के लिये कि संपूर्ण सामूहिकीकरण के बाद उसका क्या होगा, अपने तबाकू में पीले अगूठे के नाखून पर दूसरा नाखून रखकर चट की आवाज की। फुमफुमाकर मा-बहन की गालिया देता निकोलाई बस थककर रह गया।

१०

कोद्रात माइदार्निकोव सभा में घर लौट रहा था। आकाश में कृत्तिका नक्षत्र के तारे अलाव की तरह जगमगा रहे थे। इतनी नीरवता व्याप्त थी कि दूर से पाले के कारण कड़कती जमीन की चटक, ठिठुरती टहनी की चट-चट सुनायी पड़ रही थी। घर पहुँचकर कोद्रात सीधा बैलों के बाड़े में गया, उनकी नाद में उसने सूखी घास का छोटा-सा गट्टर डाल दिया। फिर याद करके कि कल उन्हें आम बाड़े में ल जाना होगा, उसने घास का भारी गट्टर उठाया और बोला

“लो आ गयी विदाई की घड़ी अबे मरक गजे। चार माल तक हम, कज्जाक बैलों के लिये और बैल कज्जाक के लिये काम करते रहे और हम कुछ ढग में न कर पाये। तुम भी आधा पेट खाते और मैं भी ऐसे ही। इमीलिये तो सामूहिक जीवन के बदले में तुम्हें दे रहा हूँ। तू कान क्यों खड़े कर रहा है, मानो मचमुच में मेरी बातें समझ रहा है?” उसने हल में दायी ओर जोते जानवाले बैल का लान मारी और जुगाली करती, उसकी गल में सनी थूथनी को हाथ से धकेला। बैल की बैगनी आख में नज़रे चार होने पर उसे अचानक याद

आया कि पाच साल पहले इस बैल की कितनी प्रतीक्षा थी। बूढ़ी गाय न जाने कब ग्याभन हो गयी—न चरवाहे ने देखा न कोद्रात ने। पतझड़ में काफी दिन तक पना नहीं चला कि वह ग्याभन है। “बाभ ही रह गयी, डाकिन।” यह मोचकर कोद्रात सिंहर जाता। पर नवंबर के अंत में, सभी बूढ़ी गायों की तरह ब्याहने से एक महीने पहले इसका पना चला। बड़े दिन के सप्ताह के अंत में कोद्रात कितनी बार ठंडी रातों को, मानो किसी धक्के से जाग पड़ता और जाधिया पहने ही नमदे के बूटों में पैर डालकर गर्म गोशाला में देखने जाता कि कहीं ब्याह तो नहीं गयी? कड़ाके का पाला पड़ रहा था, मा के चाटने ही बछड़ा ठंड से अकड़ सकता था। अंतिम दिनों कोद्रात रात को न के बराबर ही सोता था। एक बार मुबह आन्ना, उसकी पत्नी बड़ी खुश-खुश अंदर आकर बोली

“लगता है आज रात बुढ़िया ब्याह जायेगी।”

कोद्रात शाम से ही कपड़े उतारे बिना लेट गया, लालटेन भी नहीं बुझायी। सात बार वह गाय को देखने गया। और आठवीं बार ही, पौ फटने में कुछ पहले, गोशाला का दरवाजा खोलने में पहले ही उसे गहरी पीड़ायुक्त कराह सुनायी पड़ी, उसने अंदर प्रवेश किया। गाय खेड़ी में मुक्त हो रही थी, और नन्हा-मा सफेद नथुनों खुरदरी खालवाला बछड़ा जिस मा चाट चकी थी थर-थर कापता ठंड होंठों में थन को टटोल रहा था। कोद्रात ने बाहर गिरी खेड़ी को हटाया ताकि गाय उसे न खा ले*, उसके बाद ही उसने बछड़े को गोद में लिया और अपनी साम में गर्मी देने हुए उसे अगरखे के पल्ले में लपेटा और दौड़ता हुआ मकान के अंदर ले गया।

“बैल है।” वह खशी के साथ चिल्लाया।

आन्ना सलीब का चिन्ह बनाकर बोली

“हे प्रभू, तुम्हारा शुक्र है। दीन दयालु न हमारी मुसीबत पर भी ध्यान दिया।”

इकलौते घोड़े के साथ कोद्रात मुसीबत बहुत भेल चुका था।

* उत्तरी दोन प्रदेश में यह मान्यता व्याप्त थी कि अगर गाय खेड़ी को खा ल तो बाग़ह दिन तक उसका दूध पीने लायक नहीं होता।—ले०

बैल बड़ा हो गया, गर्मियों में और कड़ाके की सर्दियों में—साल भर सड़कों और खेतों में हल या गाड़ी खींचते समय अपने फटे खुरों से असंख्य डग भरकर वह कोंद्रात की अच्छी सेवा करता रहा।

बैल को देखते-देखते कोंद्रात का गला अचानक रुंध आया, आंखों में जलन महसूस हुई। वह रो पड़ा और बाड़े से निकल गया, आंसुओं से उसका मन मानो हल्का हो गया था। बाक़ी रात वह सोया नहीं, सिगरेट पीता रहा।

... सामूहिक फ़ार्म में कैसी होगी ज़िंदगी? क्या हरेक उसी की तरह महसूस करेगा, समझ लेगा कि बस एक ही रास्ता है—उसमें भरती होना और यह अवश्यभावी है? बच्चों के साथ घर के कच्चे फ़र्श पर बड़े हुए ढोंगों को ले जाकर समाज को सौंपने का चाहे कितना ही दुख क्यों न हो, पर ले जाना चाहिये। और अपनी संपत्ति से इस हरामी लगाव को कुचल देना चाहिये, दिल से निकाल देना चाहिये। खरटि लेती पत्नी की बज़ल में लेटा अंधेरे को ताकता कोंद्रात यही मोच रहा था। और वह यह भी मोच रहा था: “पर मेमनों को कहां रखेंगे? उन्हें तो गर्म घर की ज़रूरत है। खयाल भी पूरा रहना चाहिये। उन बैरियों का पता कैसे चलेगा, सब करीबन एक जैसे हैं? उनकी मांगें भी और लोग भी उन्हें पहचान नहीं पायेंगे। और गायें? चारा कैसे पहुंचावेंगे? रास्ते में ही कितना बेकार जायेगा! तब क्या होगा अगर लोग एक हफ़्ते बाद ही कठिनाइयों से डरकर भाग खड़े हुए? तब एक ही रास्ता है—हमेशा के लिये ग्रेम्याची छोड़कर खान में नौकरी। अपने पास कुछ बचेगा नहीं।”

पौ फटने से पहले उसकी आंख लग गयी। नींद में भी उसका मन भारी-भारी था। कोंद्रात के लिये सामूहिक फ़ार्म कोई आसान बात नहीं थी! आसुओं और खून के साथ कोंद्रात उसे अपनी संपत्ति, बैलों, ज़मीन के अपने टुकड़े से जोड़नेवाली नाल को काट रहा था...

सबेरे उसने नाश्ता किया, बड़ी देर तक वह मन की यातना से माथा सिकोड़ता प्रार्थना पत्र लिखता रहा। अंततः उसने यह लिखा:

“कामरेड मकार नागूल्लोव को, ग्रेम्याची की कम्युनिस्ट पार्टी की इकाई के नाम।

अर्जी

मै, कोद्रात माइदानिकोव, मभोला किसान, अनुरोध करता हू कि मुझे, मेरी पत्नी और बच्चो तथा जायदाद और सभी ढोगे समेत सामूहिक फार्म मे भरती किया जाये। मै अनुरोध करता हू कि मुझे नये जीवन मे जाने दिया जाये चूकि मै उससे पूरी तरह राजी हू।

क० माइदानिकोव "

"हो गये भरती?" पत्नी ने पूछा।

"हो गया।"

"मवेशी ले जाओगे?"

'अभी ले जाता हू अरे पगली, तू रो क्यों रही है? मैंने क्या तुम्हे कम समझाया, इतना मनाया पर तू फिर वही पुराना राग अलाप रही है? तू तो राजी हो गयी थी।"

"मुझे कोद्रात बस गाय का दुख है मै राजी हू। बस दिल पीडा से बहुत कमक रहा है " पेशबद मे आसुओ को पोछकर वह मुस्करानी हुई बोली।

मा के बाद चार माल की छोटी बेटी खिस्तीशका भी रो पडी।

कोद्रात ने बाड़े से गाय और बैलो को निकाला और घोडे को थपथपाकर नदी की ओर हाककर ले गया। पानी पीकर बैल घर की ओर मुडे पर कोद्रात ने दिल मे उफनते गुस्मे से घोडा अडाकर उनका रास्ता रोका और ग्राम-मोवियत की ओर उन्हे मोड दिया।

खिडकियो मे लुगाइया भाक रही थी, कज्जाक मर्द सडक पर निकले बिना बाडो के पीछे से छिप-छिपकर देख रहे थे। कोद्रात बडा अटपटा महसूस कर रहा था। पर सोवियत की इमारत के पास, नुक्कड पर मुडकर मेले की तरह भीड, बैलो, घोडो, भेडो की भरमार देखी। बगल की गली से ल्युबीशकिन निकला। वह सीगो से रस्सी बाधकर गाय को खीच रहा था जिसके पीछे-पीछे गर्दन से लटकी रस्सी को झुलाता बछडा दौड रहा था।

"चलो इनकी पूछे बाध दे और एक साथ हाककर ले चले," ल्युबीशकिन ने मजाक करने की कोशिश की पर वह खुद देखने मे गभीर, विचारो मे खोया-खोया लग रहा था। वह बडी कठिनाई मे

गाय को ला पाया था, गाल पर ताजी खरोच इसका प्रमाण थी।

“किसने तुझे नोच लिया?”

“छिपाऊंगा नहीं लुगाई ने। डाकिन गाय की वजह से भिड़ गयी।” ल्युबीशकिन ने मुछ का सिरा मुह में दबाया और रोष के साथ दात भीच कर बोला “टैक की तरह चढ़ बैठी। बाड़े के पाम ऐसी खूनी मुठभेड़ हुई कि पड़ोसियों को मुह दिखाते शर्म आयेगी। चिमटा लेकर टूट पड़ी, तू यकीन नहीं करेगा। मैं बोला ‘अरे तू लाल छापे-मार पर हाथ उठाने की सोचती है? अरे हमने जनरलो तक की मिट्टी पलीद कर दी।’ और मैंने चट से उसका चोटी पकड़ी। देखनेवालों के लिये तो यह तमाशा ही लगा होगा ”

ग्राम-सोवियत में तीत के घर की ओर चल दिये। सुबह को और बारह मझोले किसान रात भर सोचकर प्रार्थना पत्र ले आये, मवेशी हाक लाये।

नागूलनोव दो बढड़यो के साथ आल्डर के तनो को कुल्हाड़े से तराश रहा था—ग्रंम्याची की पहली सामाहिक चरनी बनाने के लिये।

११

कोद्रात बड़ी देर में पाले से जकड़ी जमीन को सब्बल में फाँडकर खूटो के लिये गड्डे बना रहा था। उसके साथ ल्युबीशकिन भी काम में जुटा हुआ था। पावेल की काली घटा जैसी भबरीली काली टोपी के नीचे में पमीने की धाराएँ फूट रही थी, चेहरा तमतमाया हुआ था। मुह खोलकर वह पूरे जोर से सब्बल चला रहा था, अकड़ी मिट्टी के टुकड़े सभी दिशाओं में बिखर रहे थे, दीवार से टकराकर वे ककड़ों की तरह बज रहे थे। जल्दी-जल्दी चरनी बना डाली और आयोग द्वारा चुन गये बैलों की अट्टाईम जोड़िया कोठरे में हाक दी गयी। नागूलनोव ने कोठरे में प्रवेश किया, वह सिर्फ खाकी कमीज पहने था, मोठो पर वह पमीने से तर होने के कारण बदन से चिपकी थी।

“अरे दो बार कुल्हाड़ी चलायी और कमीज तर हो गयी? मकार, तुम भी कैसे मजदूर हो।” ल्युबीशकिन सिंग हिलाकर बोला। “मुझे देखा। हड़शा। हड़शा। नितोक का सब्बल बढ़िया है हड़शा।

अरे तुम जल्दी से कुछ पहन लो नहीं तो ठंड लग जायेगी और टांगे पसार दोगे।”

नागूल्लोव ने भेड की खाल का ओवरकोट कंधे पर डाल लिया। उसके गालों से धीरे-धीरे परत-ब-परत खूनी लाली उतर रही थी।

“यह गैमो का असर है। थोड़ा-सा काम करने या चढ़ाई पर चढ़ने में मांस फूल जाती है, दिल धुक-धुक करने लगता है आखिरी खूटा है? बहुत अच्छा। देखो तो हमारे पास कितना माल है।” नागूल्लोव ने चिगाग्यो की तरह चमकती आखों में नयी-नयी लकड़ी की छीलन की गंध छोड़ती नादों के किनारे-किनारे बैलों की लम्बी पात पर नजर दौड़ायी।

जब वह खुले बाड़े में गायों को बाधने का प्रबंध कर रहा था द्योम्का उशाकोव के साथ रजम्योन्नोव आया। नागूल्लोव को एक ओर ब्लाकर उसका हाथ पकड़कर बोला

‘मकार, यार, कल की बात पर नागज न हो बच्चों का रोना सुनकर मुझे अपने छोटे की याद आ गयी, बस दिल कमकने लगा”

‘तुम जैसे दयालु को अच्छी पिटाई की जरूरत है।”

‘चलो अब हो गया काफी’ मैं तो तेरी आखों में ही भाप गया कि तू मुझ पर नागज नहीं है।’

“अरे जाने भी दे गप्पी। किधर जा रहा है? घास लानी है। दवीदोव कहा है?”

‘वह बदलू के साथ मोर्वियत में सामूहिक फार्म में भरती के इच्छुको की अर्जिया देख रहा है। और मैं एक कुलक बच गया है, सेम्योन लाप्शीनोव, उसी की ओर जा रहा हूँ

“आकर फिर नखरे दिखायेगा? नागूल्लोव ने मुस्कराकर पूछा।

“अब छोड़ भी। मैं किसे अपने साथ ले जाऊँ? ऐसी-ऐसी बाने हों रही है, सब कुछ गड़-मड़ हो गया जैसे लडार्ड में। ढोर ला रहे हैं, घास-चारा भी। कुछेक तो बीज भी ले आये। मैंने वापस कर दिया। बीज का मामला बाद में निपटायेगे। किसे ले जाऊँ साथ अपने?”

“अरे कोद्रात माइदानिकोव को ले जा। कोद्रात। अरे इधर आ। अध्यक्ष के साथ लाप्शीनोव को बेदखल करने चला जा। डरता तो

नही? नहीं तो ऐसे भी हैं जो नहीं चाहते, जमीरवाले, तिमोफ़ेई बोश्चोव जैसे ... चाटते वक्त शर्म नहीं आती, पर लूट का माल ज़ब्त करते आत्मा कचोटती है ... ”

“नही, क्यों नहीं जाऊंगा? मैं जरूर जाऊंगा। खुशी-खुशी।”
द्योम्का उशाकोव भी आ गया और वे तीनों सड़क पर निकले। रज़म्योलोव ने कोंद्रात को कनखियों से देखकर पूछा:

“अरे तुम्हारा मुंह क्यों चढ़ा है? खुश होना चाहिये, देखो तो, गांव में क्या खलबली मची है, जैसे किमी ने चींटियों की बांबी छेड़ दी हो।”

“खुशी मनाने की जल्दी मत करो। बहुत कठिनाइयां आयेगी,”
कोंद्रात ने रुखाई से उत्तर दिया।

“कैसी?”

“बोवाई के वक्त भी और ढोरों की देखभाल में भी। देख रहे हो उधर. तीन काम कर रहे हैं और दस बाड़ का सहारा लेकर उकड़ूं बैठे सिगरेट पी रहे हैं ... ”

“सब काम करेंगे! यह तो शुरू-शुरू की बात है। खाने को जब कुछ होगा नहीं तब सिगरेट पीना भूल जायेंगे।”

मोड़ पर उलटी बर्फगाड़ी पड़ी थी। बगल में सूखी घास का ढेर बिखरा पड़ा था। बर्फगाड़ी एक तरफ़ से टूट गयी थी। अनजुते बैल बर्फ़ पर पड़ी चटक-हरी दूब खा रहे थे। एक युवक—सामूहिक फ़ार्म में भर्ती हुए सेम्योन कुभेन्कोव का बेटा—आलस्य के साथ तीन दानो-वाले पांचे से सूखी घास बटोर रहा था।

“अरे तू मुर्दों की तरह क्यों कर रहा है? तेरी उम्र में मैं चाबी के खिलौने की तरह फुर्तीला था! भला ऐसे काम करते हैं? ला इधर दे पांचा!” द्योम्का उशाकोव ने मुस्कराते युवक के हाथ से पांचा छीन लिया और जोर लगाकर पूरा गट्टर उठा लिया।

“कैसे पलट गयी तेरी गाड़ी?” बर्फगाड़ी का मुआयना करते हुए कोंद्रात ने पूछा।

“ढलान पर उलट गयी, तुम क्या जानते नहीं कैसे?”

“अच्छा जा, दौड़कर कुन्हाड़ी ला दोनेत्स्कोव के यहां से ले आ।”

बर्फगाड़ी को सीधा करके उन्होंने टूटे हिस्से की मरम्मत की। द्योम्का ने करीने से घाम लाद दी, पांचे से उसे बराबर कर दिया।

“अरे कुभेन्कोव के बच्चे ! तेल में भीगी संधी से तेरी पिटाई करनी चाहिये और ऊपर से चीखने की इजाजत न दी जाये तुम्हें। देख तो बैलों ने कितनी घास खराब कर दी ! तू बाड़ के पाम भोली भर घास डाल देता अलग से उनके लिये। इस तरह कौन खुला छोड़ता है ?”

बैलों को हांककर युवक हंसता हुआ बोला :

“अरे अब वह हमारी थोड़े ही है, सामूहिक फार्म की है।”

“देखा, कुतिया की औलाद को ?” द्योम्का ने भैंगी आंखों से कोद्रात और रज्ज्योत्नोव की ओर देखा और उसके मुह से भट्ठी गाली निकल पड़ी।

लाप्शीनोव के यहां जब वे माल-अमदाब की फ्रेहरिस्त बना रहे थे अहाते में कोई तीस-एक लोग जमा हो गये। उनमें ज्यादातर पड़ोस की लुगाइया थी, मर्द कम ही थे। ऊंचे क्रद के सफेद मिर्ग और तिकोनी दाढ़ीवाले लाप्शीनोव को जब घर खाली करने को कहा गया तो वहां जमा भीड़ में फुसफुसाहट और दबे स्वर में वार्तालाप होने लगा।

“देखो तो सही ! कमा-कमाकर घर भरा और अब जा टीने पर मो !”

“पुगना राग अलाप रहे है ”

“उसे शायद छोड़ने हुए दर्द हो रहा है ! क्यों ?”

“हरेक को अपना दर्द दुखता है।”

“खुद को अच्छा नहीं लग रहा यह, पर जब इसने पुगनी सरकार के जमाने में कर्ज के बदले त्रीफोनोव की जायदाद हड़पी तब नहीं मोचा इसके बारे में।”

“जैसी करनी वैसी .. ”

“इस शैतान, दाढ़ीवाले बकरे के साथ ठीक कर रहे है। दुम मरोड दी साले की !”

“लुगाइयो, पराये दुखड़े पर हसना पाप है। क्या पता तुम्हारा भी यही हाल हो।”

“क्यों नहीं ! जायदाद के नाम पर हमारे पास ठीकरे जो है। उनसे भला अमीर बना जा सकता है !”

“पिछले साल, दो दिन के लिये घास काटने की मशीन दी थी और मुझसे पूरे दस रूबल गे़ठ लिये। भला ईमान की बात है यह ?”

अर्से से लाप्शीनोव पैसेवाला आदमी माना जाता था। लोगों को मालूम था कि युद्ध से पहले भी उसके पास काफ़ी माल था क्योंकि बुद्ध को भारी ब्याज पर क़र्ज देने और लुक-छिपकर चोरी का माल खरीदने में कोई हिचकिचाहट नहीं थी। एक बार यह अफ़वाह गर्म थी कि उसके बाड़े में चुराये गये घोड़े छिपाये जाते हैं। कभी-कभी उसके पास, अधिकतर गत को बंजारे, घोड़ों के सौदागर आते थे। कहा जाता था कि लाप्शीनोव के ज़रिये चोरी के घोड़े बड़ी संख्या में त्सारीत्सिन, तगनरोग और उर्यूपिन्स्क तक जाते थे। पूरे गांव को भली-भांति मालूम था कि पुराने ज़माने में लाप्शीनोव माल में तीन बार कैथ्रीन* के नोटों को सोने के इम्पीग्रियलों** में बदलवाने शहर जाता था। सन् १९१२ में उसे लूटने तक की कोशिश की गयी थी पर बुद्धा लाप्शीनोव—घाघ और ताक़तवार—सिर्फ़ सोटे में लुटेरों को मज़ा चखाकर घोड़े पर भाग गया। पर वह खुद भी अपना फ़ायदा नहीं भूलता था: कितनी बार उसे स्तेपी में पराये अनाज के गट्टरों के साथ गंगे हाथो पकड़ा गया—यह जवानी की बात है, और बुढ़ापे में तो पराये माल पर हाथ माफ़ करना उसके लिये बाये हाथ का खेल हो गया जो कुछ पड़ा दिखायी पड़ता सब उठा ले जाता। इतना कज़ूम था कि गिरजे में सत निकोलम की प्रतिमा के सामने एक कोपेक की मोमबत्ती बालता। कुछ जल चुकने के बाद लाप्शीनोव फूंककर बुझा देता और प्रतिमा के सामने हाथ जोड़कर उसे जेब में रख लेता। पूरे साल भर एक ही मोमबत्ती बार-बार चढ़ाना, और जो लोग इतनी किफ़ायतख़ोरी और भगवान के लिये कज़ूसी करने के लिये उसे उलाहना देने उनको वह उत्तर देता भगवान तुम बेवकूफ़ों में ज़्यादा अक्लमद है। उसे मोमबत्ती नहीं आदर चाहिये। भगवान को मेरा नुक़सान कराने की क्या ज़रूरत पड़ी है। वह तो गिरजे में व्यापार करनेवालों की रम्सी में पिटाई करता था।”

बेदख़ली के बारे में ख़बर सूनकर लाप्शीनोव को कोई बेचैनी

* कैथ्रीन का नोट - ज़ारशाही रूप में जारीना कैथ्रीन द्वितीय के चित्रवाला सौ रूबल का नोट। - स०

** इम्पीग्रियल - क्रांतिपूर्व रूप में दस रूबल का सोने का सिक्का। - स०

नहीं हुई। डरने की कोई वजह नहीं थी उसके पास। सारा माल वह पहले से छिपाकर, विश्वसनीय लोगों को सौंप चुका था। वह खुद जायदाद की सूची बनाने में मदद कर रहा था, हाय-तोबा मचाती अपनी बुद्धिया को सख्ती में पैर पटककर धमकाता, पर कुछ देर बाद शांत होकर उससे कहता

“मत रों, भगवान हमारे कष्टों को ध्यान में रखेगा। वह तो दीनदयाल है, सब देखता है ”

“और वह यह तो नहीं देखता कि तुमने भेड की खाल का नया ओवरकोट कहा छिपा दिया?” मालिक के लहजे में द्योम्का ने गभीर स्वर में पूछा।

‘हैमा ओवरकोट?’

‘वह वाला जिसे पहनकर तुम पिछले इतवार को गिरजे गये थे।’

मेरे पास नहीं था नया ओवरकोट।’

‘था और अब कहीं छिपा हुआ है।’

‘द्योम्का तुम भी क्या कहते हो, भगवान की सौगंध—नहीं था।’

बुढ़ऊ भगवान तुम्हें सजा देगा। वह तुम पर कहर बरपायेगा।

‘ईसा मसीह की कमर, तुम बेकार ही ” लाप्शीनोव ने हवा में सलोब का निशान बनाया।

‘अपनी आत्मा पर पाप ले रहे हो।’ द्योम्का ने वहां जमा लुगाइया और कज्जाको के चेहरों पर मुस्वान लाने के लिये आख मारी।

‘मैं उसके सामने निर्दोष हूँ, मच कहता हूँ।’

‘ओवरकोट तो तुमने छिपा दिया है।’ कयामत के दिन इसका जवाब तुम्हें देना पड़ेगा।’

“अपने ओवरकोट के लिये?। तैश में आकर लाप्शीनोव बोल पड़ा।

‘छिपाने के लिये जवाब देना पड़ेगा।’

“तू सोचता है कि भगवान तुम्हें थोड़े चने की तरह बेबकूफ है। अरे वह इन मामलों में कोई दखल नहीं देगा। नहीं है कोई ओवरकोट-वोट। तुम्हें शर्म नहीं आती बूढ़े की हमी उड़ाने। भगवान और लोगों की तो कुछ लाज-शर्म कर।”

“और तुझे शर्म नहीं आयी मुझसे दो बालटी जौ के बदले, जो मैंने बोन के लिये लिया था, तीन बालटी लेते हुए?” कोद्रात ने पूछा।

उसका स्वर धीमा, फटा-फटा-सा था, गुल-गपाड़े में लगभग सुनायी नहीं पडा पर लाप्शीनोव नौजवानो की फुर्ती से उसकी ओर मुड़ा

“कोद्रात! तेरा बाप भला आदमी था और तू तू कम से कम उसकी याद पर तो कालिख मत पोत! बाइबल में लिखा है ‘गिरते को मत धकेल’—और तू क्या क्या कर रहा है? कब मैंने तुझसे दो के बदले तीन बालटिया ली? और भगवान? वह तो सब देखता है।”

“यह चाहता है कि इस भिखमगे को मुफ्त में दे दे।” लाप्शीनोव की बीबी गला फाड़कर चिल्लायी।

“शोर मत मचा! ईसा मसीह ने मुसीबते मही और हम को भी यही उपदेश दिया। उन्होंने काटो का ताज पहना और खून के आमुओ से रोये” लाप्शीनोव आस्तीन में धुधले आमु को पोछकर बोला।

चिल्लपो मचाती औरते चूप हो गयी और आंहे भरने लगी। लिखने का काम पूरा करके रजम्योल्नोव मक्ती में बोला

“अच्छा, लाप्शीनोव बूढ़े, अब यहा में रफा-दफा हो जाओ। तुम्हारे आमु किसी काम के नहीं। तुमने बहुतों को सताया और अब हम तुम्हारे भगवान के बिना खूद तुम्हारा पना साफ कर रहे हैं। निकालिये यहा में।”

लाप्शीनोव ने अपने हकले वावले-से बेटे का हाथ पकड़ा, उसके मिर पर टोपी पहनायी और घर में बाहर निकल गया। पीछे-पीछे भीड़ भी बाहर उमड़ आयी। अहाते में बूढ़ा भेड़ की खाल के कोट का पल्ला बर्फ पर बिछाकर घुटनो के बल बैठ गया। उसने माथा मिकोडकर मलीब का चिन्ह बनाया और चागे दिशाओ में जमीन पर मिर टिकाया।

“जाओ! जाओ!” रजम्योल्नोव ने हुक्म दिया।

पर भीड़ में भनभनाहट फैल गयी, कुछेक चिल्लाये

“अरे कम में कम अपने घरबार से विदा तो लेने दो!”

“अट्रेंड, तू बेवकूफी मन कर! देखता नहीं कि आदमी का एक पैर कब्र में है और तू”

“इतना जी लिया कि अब उसे दोनो उसमें डालने चाहिये।” कोद्रात चिल्लाया।

गिरजे के वार्डन बूढ़े ग्लादीलिन ने उसे टोका

“हुक्काम की चमचागिरी कर रहा है ? तुम जैसों की धुनाई करनी चाहिये ।”

“मैं तुम्हें, चूहे की औलाद, ऐसा मजा चखाऊंगा कि घर का गन्ना भूल जायेगा ।”

लाप्शीनोव भुक्-भुक्कर, छाती पर मलीब का निशान बनाता हुआ जोर-जोर से बोल रहा था ताकि सब सुने, औरतों के नर्म दिल पसीजे

“भले इसाइया ! अलविदा मेरे प्यारे ! भगवान तुम्हारा भला करे मेरी खून-पसीने की कमाई का फायदा उठाओ । मैं ईमानदारी से जीकर मेहनत करता था ”

“वोगी का माल खरीदता था ।” ओमारे से द्योम्का ने जोड़ दिया ।

“खून-पसीना एक करके रोजी-रोटी कमाता था ”

“लंगो को बर्बाद करता था, सूद खाता था, खुद भी चोरी करता था, मान ले ! जी करता है तुम्हें कुत्ते की औलाद की गर्दन दबाच जमीन पर पटक दूँ ।”

“रोजी-रोटी कमाता था और अब बूढ़ापे में ”

औरतों की नाके मुड़-मुड़ करने लगी, रूमालों के कोने आखों की ओर उठे । रजम्योलोव लाप्शीनाव को उठाकर अहाने में बाहर धकेलने ही वाला था, वह बस यही चिल्ला पाया “तू लोगों को नहीं भडका, नहीं तो ” पर तभी ओसारे से जिसकी रेनिग का सहारा लेकर द्योम्का खड़ा था अचानक शोर, छीना-भपटी की आवाज सुनायी पड़ी

लाप्शीनोव की पत्नी रमोई में निकली, उसके एक हाथ में हम के अंडों में भरा थैला, और दूसरे में सहमो-सहमी, बर्फ और धूप की चमक में चुरधियायी हसिनी थी । द्योम्का ने भट से थैला छीन लिया पर लाप्शीनोव की बीवी ने हसिनी को दोनों हाथों में कमकर पकड़ लिया ।

“मत छू इसे, पापी ! हाथ हटा !”

“अब सामूहिक फार्म की हसिनी है ! हसिनी की गर्दन को पकड़ते हुए द्योम्का चिल्लाया ।

लाप्शीनोव की बीवी हसिनी की टांगें पकड़े हुए थी । वे एक दूसरे को धकेलते हुए जोर लगाकर उसे अपनी-अपनी ओर खींच रहे थे ।

“छोड़ दे भैगे।”

“नहीं छोड़गा।”

“मैं कहती हूँ छोड़ दे।”

“सामूहिक फार्म की हसिनी है।” घोम्का हाफता हुआ चिल्ला रहा था। “बसंत में वह हमें चूजे देगी। छोड़ दे बुढ़िया, नहीं तो टगडी मार दूंगा। तुम अपना हिस्सा खा चुके हो।”

दहलीज पर जूता टिकाकर लाप्शीनोव की बुढ़िया चडी की तरह क्रोधोन्माद में अपनी ओर खींच रही थी। हसिनी मनहूस काय निकालकर शांत हो गयी, शायद घोम्का ने उसकी श्वासनली दबा दी पर वह अभी भी तेजी से डैंग फडफडा रही थी। ओसारे पर बर्फ के गालों की तरह पख और रोये उड़ने लगे। लगता था कि बस क्षण भर की देरी है और घोम्का बुढ़िया के उभरी हड्डियोवाले हाथों में अधमरी हसिनी को छीन लेगा, पर तभी हसिनी की नाजुक गर्दन कुरकुराकर टूट गयी। लाप्शीनोव की बीवी धम-धम करती ओसारे की पैडियो पर लुढ़क गयी, उसका लहगा सिर तक उठ गया। और अपने हाथों में सिर्फ हसिनी का सिर देखकर हक्का-बक्का घोम्का उसके पीछे रखे अडों के थैले पर जा पड़ा, सारे अडे फूट गये। हसी के विस्फोट से घर की छत से लटके हिमशकु तक टपक पड़े। लाप्शीनोव खड़ा हुआ, टोपी पहनी और लार टपकाते अपने उदामीन ब्रेटे का हाथ गुस्से में खींचकर मरपट अहाने में बाहर चला गया। लाप्शीनोव की बीवी खड़ी हुई, उसका चेहरा दर्द और क्रोध से नमनमा रहा था। लहगा भाडकर वह ओसारे की पैडियो पर छटपटाती हसिनी की ओर हाथ बढ़ाने ली वाली थी कि पास ही म चक्कर काटने पीले शिकारी कुत्ते ने खून बहता देख लिया, उसके रोगटे खड़े हो गये, वह लपका और लाप्शीनोव की बीवी के देखते-देखते हसिनी को घसीट ले गया।

घोम्का ने अनंत आश्चर्य के साथ इस दुनिया को ताकती नारंगी आखवाले हसिनी के सिर को लाप्शीनोव की बीवी की पीठ पर फेंका और घर में घुस गया। अहाने और गली में बड़ी देर तक रुक-रुककर हसी के ठहाके गूजते रहे, जिनके कारण सूखी लकड़ियों के ढेर पर बैठी चिड़िया डरकर उड़ जाती।

ग्रैम्याची में जीवन की तुलना किमी कठिन बाधा के समक्ष पिछली टागो पर खड़े मस्तैद घोड़े में की जा सकती थी। दिन में कज्जाक गलियो और घरों में जमा होकर सामूहिक फार्मों के विषय में बहस करने, अटकले लगाते। चार दिन तक रोज गाम को मभाये बुलायी जाती रही जो सवेरे मूर्गे की बाग तक चली।

इन दिनों में नागूल्नोव इतना दुबला हो गया, मानो लम्बे अर्में में बड़ा बीमार था। पर दवीदोव पहले की तरह शांत लगता था, बस होठों के ऊपर गालों के किनारे-किनारे हठीली मिलबटे अधिक गहरी हो गयी। किमी तरह उसने रजम्योल्नोव में भी आत्मविश्वास भर दिया जो पहले बड़ी जल्दी तैंग में आ जाता और उतनी ही जल्दी बिना बात के मत्रस्त हो जाता था। अद्रेई कद्व-मी आखों में विश्वास की झलक के साथ गाव में मवेशी के सामूहिक बाड़ों का निरीक्षण करना। अर्कागा बदल में जिसे सामूहिक फार्म के प्रबन्ध-मंडल के चुनाव तक मारा काम मौपा गया था, वह अकसर कहता

“हम उन्हें चटा देंगे धूल ! सब सामूहिक फार्म में भरती होंगे।”

दवीदोव ने टलाकार्द मर्मति में अपन घुडमवार मदेशवाहक के साथ यह सूचना भेजी कि अभी तक सामूहिक फार्म में बत्तीम प्रतिशत लोग शामिल किये गये हैं पर सामूहिक फार्म बनाने का काम पूरा जोगे पर है।

अपने घरों में बेदखल कुलक अपने रिश्तेदारों और मगे-मबधियों के यहा रहने चले गये। फ़ोल नकटा निमोफेई को मीधे मंडल अभियोक्ता के पास भेजकर अपने दोस्त बोश्चोव के यहा रहने लगा, उमी वाले के यहा जिसने एक बार गरीबों की मभा में मतदान में भाग लेने में इकार किया था। बोश्चोव के दो कमरों के छोटे-से मकान में कुलक मंडली जमा होती।

दिन के समय पिछवाड़ों में, खलियानों की तरफ में एक-एक, दो-दो करके चोगी-छिपे वहा आने ताकि लोग-बाग न देख ले, कही ग्राम-मोवियत को भनक न पड जाये। दवीद गयेव वहा आता, बुड्ढा घाघ लाप्पीनोव भी जो बेदखली के बाद ईसा के नाम पर भीख मागता, कभी-कभी याकोव लुकीच ओस्त्रोल्नोव भी टोह लेने आता। ‘मुख्यालय’ में निकोलाई ल्युन्ग्या जैसे कुछेक मझोले विमान भी आख बचाकर

आते जो सामूहिक फार्मों के समूह विरोधी थे। बोश्चोव के अलावा दो गरीब तक शामिल थे एक ऊँचे कद का, बिना भवों का, सिर और दाढ़ी पर उम्तरा करनेवाला, अडे जैसा चिकना वसीली अतामान्चुकोव, जो अधिकतर चुप रहता और दूसरा निकीता खोप्रोव—गार्ड बैटरी का तोपची, उसी रेजिमेंट का जिसमें पोदन्योल्कोव था। गृहयुद्ध में वह सेना में सेवा में कन्ली काटता रहा था, पर फिर भी सन् १९१९ में उसे श्वेत काल्मीक कर्नल अस्तीमोव के दमनकारी दस्ते में नौकरी करनी पड़ गयी। बस इसी तथ्य ने मोवियत सत्ता में खोप्रोव के जीवन को नया मोड़ दे दिया। गाव के तीन निवासियों—याकोव ओस्त्रोव्जोव और उसके बेटे तथा बूढ़े लाप्सीनोव ने उसे सन् १९२० में श्वेत सेना के पलायन के समय कुश्चेव्का में अस्तीमोव के दमनकारी दस्ते के साथ देखा था, उनके कंधों पर दफादार के सफेद फीते थे, उन्होंने उसे तीन काल्मीक कज्जाको के साथ कैद रेल मजदूरों को अस्तीमोव के पास पूछताछ के लिये ले जाते देखा था और नोवोगोस्मीस्क में ग्रैम्याची लौटकर जब उस पता चला कि ओस्त्रोव्जोव बाप-बेटा और लाप्सीनोव सही-सलामत हैं, उनकी जान खिसक गयी। प्रातिक्रांतिकारियों के निर्मम दमन के वर्षों में हट्टे-कट्टे गार्ड तोपची के दिल पर क्या-क्या बीती और वह, जो नाल जड़ने समय किमी भी घोड़े को पिछली टांग में पकड़ सकता था—धूर्त मुस्कानवाले लाप्सीनोव को देखकर पत्नी की तरह थरथराने लगता। वह सबसे अधिक उसी में डरता था। उसे देखकर कापती आवाज में मुश्किल में होठ हिलाकर कहता

‘दादा, मुझ लाचार पर रहम करो, मत खोलो मेरा भेद।’

लाप्सीनोव कृत्रिम गंघ के साथ उसे शांत करता

‘अरे निकीता, तुम भी क्या हो। भला मैं क्या पवित्र काम गले में नहीं पहनता?’ ईसा मसीह ने क्या सीख दी थी ‘अपने पड़ोसी में प्रेम करो।’ तुम दिमाग में भी न लाओ ऐसा विचार, कभी नहीं कहूँगा। चाहे जान चली जाये। मेरा तो स्वभाव ही ऐसा है पर तुम भी जरूरत पड़ने पर मदद कर देना मेरी अगर सभा वगैरह में कोई मेरे खिलाफ बोले या शामक मुझे सताये तुम भी मुझे बचाना ताली दो हाथ में बजती है। पर यह भी याद रखो कि तलवार उठानेवाला खुद तलवार में ही मारा जाता है। ठीक है न?’

हा, मैं तुमसे अनुरोध करना चाहता था कि तुम खेत जोतने में मेरा हाथ बटा दो। भगवान ने मुझे बेटा दिया, वह भी पागल, उसका कोई महारा नहीं और किसी को भाड़े पर रखना बहुत महंगा पड़ता है । ”

माल-ब-माल निकीता खोप्रोव लाप्सीनोव का 'हाथ बटाना' रहा, मुफ्त में खेत जोतता, गुड़ाई करता, लाप्सीनोव के श्रेणर में लाप्सीनोव का गेहूँ कूटता। और फिर घर लौटकर मेज पर बैठता, अपनी लौह हथेलियों में ललौही मूछोवाला चौड़ा चेहरा छिपाकर मोचन लगता “कब तक ऐसे चल सकती है? मार डालूंगा उसे।”

याकोव लुकीच ओम्ब्रोवोव अपने अनुरोधों में उसे नहीं सनाता था, न धमकी देता था। उसे मालूम था कि जब जरूरत पड़ेगी खोप्रोव न केवल बोद्का की बोतल बल्कि और भी बड़ी चीज के लिये मना नहीं कर सकेगा। और बोद्का तो याकोव लुकीच उसके यहाँ अकमर पीता था और हर बार शुक्रिया अदा करना न भूलता।

“अटक जाये वह तेरे गले में।” मेज के नीचे अपनी भागी-भरकम मर्दियों को घृणा के साथ भीचते हुए खोप्रोव मन ही मन मोचता।

पोलोवत्सेव अभी तक याकोव लुकीच के यहाँ उस कमरे में टिका हुआ था जिसमें पहले ओम्ब्रोवोव की मा रहती थी। वह अलावघर के ऊपर बनी टाइल पर मोती और पोलोवत्सेव उसके कमरे में छोटी-सी कोच पर लेटा अलावघर की गर्म दीवार पर अपने नंगे पैर टिकाकर हल्दम सिगरेट पीता रहता। रात को वह अकमर सोने घर में टहलता। दरवाजों के कब्जों में अच्छी तरह से हंस की चर्बी लगी थी इसलिए एक भी नहीं चरमराता था। कभी-कभी वह कंधों पर भेड़ की खाल का कोट डालकर, सिगरेट बुझाकर अपने घोड़े को देखने जाता जो भूसी की कोठरी में छिपा था। बेचैन घोड़ा दबे स्वर में हिनहिनाता मानो उसे मालूम था कि पूरे जोर से अपना हर्ष प्रकट करने का समय अभी नहीं आया। मालिक उसे सहलाता, अपनी अकड़ी, लौह उगलियों से उसकी टांगों के जोड़ों को दबाकर देखता। एक बार बहुत ही अघेरी रात को उसने घोड़े को भूसी की कोठरी से निकाला और जीन-काठी से बिना ही उस पर मवार होकर स्टेपी में चला गया। वह पौ फटने से पहले लौटा। घोड़ा पसीने में नहाया हुआ था, उसके पुट्टे काप रहे थे। सुबह पोलोवत्सेव याकोव लुकीच से बोला

“मैं अपने कस्बे गया था। वहाँ मेरी तलाश हो रही है कज्जाक तैयार है, बस हुकम मिलने की देर है।”

सामूहिक फार्म के विषय में जब गाव में दुबारा आम सभा बुलायी गयी तो पोलोवत्सेव के कहने पर ही याकोव लुकीच ने सामूहिक फार्म में भरती होने का आह्वान किया। उसके सन्तुलित और मकारात्मक भाषण से और गाव के गणमान्य याकोव लुकीच द्वारा सामूहिक फार्म में शामिल होने की घोषणा के बाद एकदम इकतीस प्रार्थना-पत्र मिलने से दवीदोव को अत्यंत हर्ष हुआ।

हा, याकोव लुकीच सामूहिक फार्म के बारे में बहुत अच्छा बोला, पर अगले दिन घर-घर जाकर विश्वसनीय, सामूहिक फार्म के विरांधी मझोले किसानों को पोलोवत्सेव के पैसों में खरीदी बोद्का पिलाकर और खुद भी एक दो घूट पीकर बिल्कुल दूसरी बात कहता रहा

“भइया, तुम भी अजीब हो। तुम में ज्यादा तो मुझे सामूहिक फार्म में भरती होने की जरूरत है, मैं उसके खिलाफ बाल भी नहीं सकता। मैं ठीक-ठाक रहता था इसलिये कुलक कहकर मुझे बेदखल कर सकते थे, पर तुम्हें क्या पडी है? क्या जुआ नहीं देखा? सामूहिक फार्म में तुम्हारी नाक में ऐसी नकेल डाल देगे कि इस दुनिया की मृथ भूल जाओगे।” और चपके में आगामी विद्रोह, पालियो के सामूहीकरण के बारे में गटी-गटायी बातें छोड़ देता और अगर मभापी हिचकिचाता, क्रोध में कुछ भी करने को तैयार होता तो वह उसकी अनुनय-विनय करता, दंड की धमकी देता, जब ‘हमारेवाले’ विदेश में लौटेंगे, और अंत में किला जीन लेता ‘सघ’ में शामिल होने की स्वीकृति पाकर चला जाता।

सब ठीक-ठाक चल रहा था। याकोव लुकीच ने लगभग तीस कज्जाकों को भरती किया और उन्हें मख्न हिदायत दी कि वे किसी को भी ‘सघ’ में भरती होने और उसमें हुई बातचीत के बारे में न बतायें। पर एक बार वह अपना काम पूरा करने के लिये ‘कुलक मुख्यालय’ में गया (बेदखल कुलको और उनके साथियों पर उसे और पोलोवत्सेव दोनों को पूरा विश्वास था, इसलिये उनको शामिल करने के काम को आसान समझकर उन्होंने बाद के लिये छोड़ दिया था), पर वही पहली बार अचानक उसका निगाना चूक गया याकोव लुकीच शाम ढलने पर लबादा लपेटकर बोर्शोव के यहाँ पहुँचा। कमरे में नीची

अगीठी जल रही थी। सब जमा थे। घर का मालिक तिमोफेई बोश्चोव घटनों के बल बैठा अगीठी में मृखी टर्हानया डाल रहा था, बेंचो और कोने में 'सेट जॉर्ज क्रॉस' के फीतो की तरह नागगी और काली धारिग्यो-वाले कटुओ के ढेर पर फ़ोल नकटा, लाप्शीनोव, गायेव, निकोलाई ल्यून्या, वसीली अतामान्चुकोव और तोपची खोप्रोव बैठे थे। फ़ोल नकटे का बेटा जो उसी दिन मडल के प्रशामनिक केन्द्र में लौटा था खिडकी की ओर पीठ किये खड़ा था। वह बता रहा था कि अभियोक्ता किम तरह उसके साथ मस्ती में पेश आया, उसकी शिकायत पर गौर करने के बजाय उसको गिरफ्तार करके वापस इलाकाई केन्द्र भेजना चाहता था। याकोव लुकीच के आने पर तिमोफेई चूप हो गया पर पिता उसमें रोला

"तिमोफेई, यह हमारा ही आदमी है। तुम डरो मत।"

तिमोफेई ने अपनी बाग पूगे की और आखों में चमक के साथ बोला

"जिदगी ऐसी है कि अगर कहीं कोई गिरोह होता तो घोड़े पर सवार होकर क्रम्यनिस्टो का खून बहाने लगता।"

हा अब तो जीना दुभर हो गया है " याकोव लुकीच ने भी हा म हा मिलायी। अगर ऐसी ही जिदगी हो तब भी गर्नामत है

'और क्या मसीबत टूटनेवाली है?' गम्मे में फ़ोल नकटे ने पूछा। "तुम्हारा कुछ नहीं बिगाडा इसलिये तुम तो मजे में हो पर मेरे अनाज पर तो हाथ साफ कर रहे है। त्रार के जमाने में हम-तुम एक जैसे रहते थे और अब तुम तो मही-मलामत हो और मेरे पैरों के तो आखिरी जूते तक उतार लिये।"

"मेरा मतलब यह नहीं, मझे डर है कि कहीं कुछ हो न जाय

"ऐसा क्या हो सकता है?"

"यद्द वगैरह

भगवान करे। मत जॉर्ज की कमर में। आज ही हो जाये। लिखा है न मतों के चरित में "

"मन् उन्नीस में व्योशेन्कायावालो की तरह खूटो में नडने को तैयार हूँ।"

"अरे मैं तो जिदो की चमड़ी उतार दूँ।"

फिलोनोव्स्काया कस्बे के पास गले में घायल हुआ अतामान्चुकोव गडरिये की बसी की तरह पतली, अस्फुट आवाज में बोला

“लोगो में इतना जनून है कि दातो-नाखूनो से लडेगे।”

याकोव लुकीच ने सावधानी से इशारा किया कि आस-पाम की बस्तियों में उथल-पुथल हो रही है, कहीं-कहीं तो कम्युनिस्टों को कज्जाक ढग से अक्ल सिखा रहे हैं जैसे ही जैसे पुगने काल में मास्को की चाकरी करनेवाले अलोकप्रिय कज्जाक अतामानों को सिखायी जाती थी, विधि सरल थी—बोगी में बद किया और पानी में फेक दिया। वह धीरे-धीरे, हर शब्द को तौल-तौलकर बोल रहा था। बात ही बात में उसने उल्लेख किया कि पूरे उत्तरी-काकेशिया प्रदेश में अगाति व्याप्त है, नीचे की बस्तियों में औरतो को मार्क्जिनिक मर्पत्ति बना दिया गया है और सबसे पहले कम्युनिस्ट ही खुले आम परगयी लुगाइयो के साथ सोते हैं, बसत में फौजे उतरनेवाली हैं। इसके बारे में उसे, अपनी पुगनी रेंजमेंट के परिचित अफसर ने बताया है जो एक हफ्ते पहले ग्रेम्याची में गुजरा था। याकोव लुकीच ने बस यह बात छिपा ली कि वह अफसर अभी तक उसके यहाँ छिपकर रह रहा है।

निकीता खोप्रोव ने जो अब तक चुप बैठा था, पूछा

“याकोव लुकीच, तुम हमें यह बताओ अच्छा, मान लिया हमने बगावत कर दी, अपने कम्युनिस्टों का तो सफाया कर लेगे पर आगे? मिलीशिया में तो हम निबट लेगे पर जब हमारे खिलाफ फौज भेजी जायेगी तब क्या होगा? तब कौन हमारी अगुआई करेगा? अफसर नहीं है, हम अनपढ़ हैं, तारों को देखकर रास्ता ढूँढते हैं पर लडाई में तुम्हारेबाजी नहीं चलती, अफसर नक्शे देखकर रास्ता ढूँढते हैं और नक्शे हेडक्वार्टर में बनाये जाते हैं। हमारे पाम हाथ तो होंगे, पर मिर नहीं।”

“अरे मिर भी होगा।” याकोव लुकीच जोश में बोला। “अफसर भी हो जायेगे। वे लाल कमांडरो से ज्यादा अक्लमंद हैं। अफसर बनने में पहले कैंडेट रह चुके हैं, बड़े-बड़े विज्ञान पढ़े हैं। और लाल कमांडर कैसे है? अरे हमारे मकार नागूल्लोव को ही लो। मिर काटने में वह माहिर है पर भला गिसाले की कमान सभालना उसके बस की बात है? हरगिज नहीं! वह नक्शों को क्या खाक समझेगा?”

“पर अफसर आयेगे कहा से?”

“ लुगाइया उन्हे पैदा करेगी। ” चिढ़कर याकोव लुकीच बोला।
 ‘ निकीता, क्यों मेरे पीछे पड़ गये हो हाथ धोकर? पूछे जा रहे हो
 ‘ कहा से, कहा से। ’ मुझे क्या पता? ”

“ विदेश से आयेगे। जरूर आयेगे। ” फ़ोल नकटा आशा दिलाते
 हुए बोला और सत्ता पलट, खून से बदला लेने की मधुर कल्पना करके
 आनंद के साथ अपने माबूत नथुने को फुला-फुलाकर तबाकू के धुएँ
 से भरी हवा को गुडगुड अपने फेफड़ों में भरने लगा।

खोप्रोव खड़ा हुआ, कदू को ठोकर मारकर उमने अपनी घनी
 ललौही मूछों पर हाथ फेरा और बोला

“ यह तो सब ठीक है पर अब कज्जाक अक्लमद हो गये है।
 बगावतों के लिये उनकी जबरदस्त पिटाई हो चुकी है। वे अब मिर
 नहीं उठायेगे। कुबानवाले हमारा साथ नहीं देगे ”

याकोव लुकीच के स्लेरी मूछोवाले होठों पर मुस्कान खेल रही
 थी, वह बस दोहराये जा रहा था

“ कैसे नहीं देगे, जरूर देगे। और मारा कुबान भी धधकने
 लगेगा लड़ाई में क्या होता है अब की बार मैं चित्त पड़ा हूँ और
 क्षण भर बाद दुश्मन चित्त पड़ा है और मैं उसकी छाती पर बैठा उसका
 हाथ मरोड़ रहा हूँ। ”

नहीं भाइयों, आप चाहे जो कहें, पर मैं राजी नहीं हूँ। ”
 अपन शरीर में दृढ़ता के संचार की अनुभूति में मिह्रकर खोप्रोव बोलने
 लगा “ मैं सरकार के खिलाफ नहीं मिर उठाऊंगा और दूसरों को
 भी इसकी सलाह नहीं दूंगा। और तुम, याकोव लुकीच, बेकार ही
 लोगों को ऐसी बातों में फसा रहे हो वह अफसर जो तुम्हारे यहाँ
 टिका था, पराया है, पता नहीं कहाँ का आदमी है। वह गड़बड़ करवा-
 कर अपने हाथ धो लेगा और फल फिर से हमों को भुगतना पड़ेगा। इस
 लड़ाई में उन्होंने हमें सोवियत मत्ता के खिलाफ भोक दिया, उन्होंने
 कज्जाको के फीतो पर बिल्ले टाककर अधकचरे अफसर बना दिया और
 खुद पिछवाड़े में हेडक्वार्टरों में बैठकर पनली कमरवाली लौडियो में
 इश्क लड़ाने लगे याद है जब हिसाब चुकाने का वक़्त आया तो
 किस को उनकी करनी का दाम चुकाना पड़ा था? नोवोरोसीस्क में
 जब लाल फौज घाटों पर काल्मीकों के सिर काट रही थी, उसी समय
 अफसर व अमीर-उमराव स्लीमरों में लड़कर पराये, गर्म देशों को जा

रहे थे। पूरी दोन सेना नोबोगोमीस्क में भेड़ों के गेवड की तरह जमघट बनाये हुए थी, पर जनरल कहा था? अरे हा, मैं पूछना चाहता था कि वह 'श्रीमान' जो तुम्हारे यहाँ रात को टिका था, अभी तुम्हारे यहाँ तो नहीं छिपा हुआ है? दो-एक बार मैंने तुम्हें भूमी की कोठरी में नाद में पानी ले जाते देखा है सोचा कि बात क्या है, याकोव लुकीच को वहाँ पानी ले जाने की क्या जरूरत पड़ी है, किस शैतान को उसने वहाँ पाल रखा है? फिर एक बार वहाँ से घोड़े के हिनहिनाने की आवाज सुनायी पड़ी।"

खोप्रोव को याकोव लुकीच के चेहरे का रंग उड़ते देखकर आनंद आ रहा था। सब लोग सकपकाकर भयभीत हो गये। खोप्रोव की छानी बदले की खुशी में फूल रही थी, उसे अपनी आवाज पगयी में लग रही थी।

'मेरे यहाँ कोई अफसर-वफसर नहीं है।' याकोव लुकीच ने निम्नेज स्वर में उत्तर दिया। 'मेरी घोड़ी हिनहिनायी होगी भूमी की कोठरी में पानी भी नहीं ले गया था कभी-कभार जूठन ले जाता है मुअर पाल रखा है वहाँ "

"तुम्हारी घोड़ी की आवाज मैं पहचानता हूँ मुझे धोखा नहीं दे सकते। और वैसे मुझे इसमें क्या लेना है? पर तुम्हारे काम में मैं भाग नहीं लेनेवाला और तुम खुद सोचो "

खोप्रोव ने भेड़ की खान की टोपी पहनी और कमरे में नजरे दौड़ा-कर दरवाजे की ओर चल पड़ा। लाप्सीनोव ने उसका रास्ता रोका। उसकी सफेद दाढ़ी फड़फड़ा रही थी और उसने अजीब ढंग में फुदक फुदककर हाथ नचाकर पूछा

खबर करने जा रहा है विश्वासघाती ज़ुडम? बिक चुका है? और अगर हम कह दें कि तू काल्मीको के दमनकारी दस्ते में था, तब "

'बुढ़े जरा सभल के।' लाप्सीनोव की दाढ़ी के पास अपनी भारी मुट्ठी को लाकर खोप्रोव उत्साह में बोला। "पहल मैं अपने ही बारे में बताऊँगा, कह दूँगा दमनकारी दस्ते में था, दफादार था, चलाओ मुकदमा सभ पर पर तुम लोग भी देखकर रहना। और तू घोड़ी की भाट के छल्ले और तू " खोप्रोव हाफने लगा, उसकी मास धौकनी की तरह चल रही थी। "तूने मेरा सारा खून चूस लिया।

कम से कम एक बार तो मैं भी बदला ले लूँ।”

उसने हाथ घुमाये बिना सीधे लाप्शीनोव के मुह पर घृसा माग और चौखट के पास गिरे बूढ़े की ओर देखे बिना धड़ाम से दरवाजा बंद करके चला गया। तिमोफेई बोर्जोव खाली बालटी ले आया। लाप्शीनोव घुटनों के बल बैठकर बालटी पर झुक गया। उसके नथुनों से खून की काली धारा फूट पड़ी मानो कोई नस कट गयी हो। अवाक् नीरवता में बस लाप्शीनोव की मुड़-मुड़ और दात पीसने की आवाज, उसकी दाढ़ी से रिसती खून की धाराओं की बालटी में टपकती बूंदों की टप-टप सुनायी दे रही थी।

“अब तो हम विलकुल मारे गये।” बड़े परिवारवाला बेदखल कुलक गायेव बोला।

निकोलाई ल्यूइल्या भी झट से खड़ा हुआ। किसी से विदा लिये बिना नगे मिर ही वहाँ से चला गया। उसके पीछे-पीछे अनामान्चकोव भी धीरे-धीरे कदम रखता चल पड़ा जाने-जाने वह पतली, फटी-सी आवाज में बोला

‘तितर-बितर हो जाने में ही हमारा भला है।’

कुछ देर तक याकोव लुकीच चूप बैठा रहा। उसकी जान मानो हलक में अटक गयी। मास लेने में मुश्किल हो रही थी। मिर में कोई हथौड़े चला रहा था, माथा पसीने से ढक गया। जब वह उठा, तब तक बहुत-से जा चुके थे। बालटी पर झुके लाप्शीनोव की आंर घिन के साथ देखकर तिमोफेई नकटे में धीमे स्वर में बोला

“मेरे साथ चलो, तिमोफेई।”

उसने चुपचाप कोट और टोपी पहनी। वे बाहर निकले। गाव में आखिरी बत्तिया भी बझने लगी थी।

‘कहा जायेंगे?’ तिमोफेई ने पूछा।

“मैंने कहा।

‘किसलिये?’”

“बाद में मालूम हो जायेगा, अब जरा फुर्ती में चल।”

याकोव लुकीच जान-बूझकर ग्राम-मोर्बिया के सामने से गुजरा, वहाँ रोशनी नहीं थी, खिड़कियों की काली चौखटों में अधेरा मुह बाये खड़ा था। उन्होंने याकोव लुकीच के अहाते में प्रवेश किया। ओसारे के पास रुककर उसने तिमोफेई के कोट की आस्तीन खींची।

“जरा यहा ठहर। मै बाद मे बुला लूगा।”

“चगा।”

याकोव लुकीच ने दरवाजा खटखटाया, बहू ने साकल खोलते हुए पूछा

“पिता जी, आप है?”

“मै।” उमने दरवाजा भेडकर बैठक का किवाड खटखटाया। अदर से भारी, फटा-सा स्वर सुनायी पडा

“मै हू, अलेक्साद्र अनीसीमोविच। अदर आ सकता हू?”

“आ जाओ।”

पोलोवत्सेव काले शाल से ढकी खिडकी के पास बैठा मेज पर कुछ लिख रहा था। लिखायीवाले पन्ने को अपने हाथ से ढककर उसने अपना चौड़े माथेवाला सिर घुमाया।

“हा. बोलो। क्या हाल-चाल है?”

“खराब मुसीबत आ गयी।”

“क्या? जल्दी बोल।” पोलोवत्सेव भट से खडा हो गया, उमने लिखायी का पन्ना जेब मे ठूसा, जल्दी-जल्दी कमीज का कालर बद किया, उसका चेहरा नमतमाकर लाल हो गया। वह अपने शिकार पर भपटने के लिये तत्पर हिस्र पश की तरह आगे को भुका।

याकोव लुकीच ने अटकते-अटकते उमे पूरा किस्मा मुनाया। पोलोव-त्सेव चपचाप उमे मुन रहा था। गहरे गड्डो मे उसकी नीली-मी आखे याकोव लुकीच को घूर रही थी। वह धीरे-धीरे सीधा तनके खडा हुआ, उसकी मुट्टिया कभी खुलती, कभी बंद होती, अपने होठो को टेढ़ा करके याकोव लुकीच की ओर कदम बढ़ाया।

“हरामी। बुड्डे उल्लू, तू मुझे मरवाना चाहता है? सारे काम पर पानी फिरवाना चाहता है? तूने आधा काम तो अपनी लापरवाही मे बिगाड ही दिया है। मैने तुझे क्या हुक्म दिया था? क्या हुक्म दिया था मैने तुझे? पहले एक-एक करके, अलग-अलग से उनका दिमाग टटोलना था। और तू दीवानखाने मे गैडे की तरह घुस गया।” उसकी दबी, भारी फुसफुसाहट से याकोव लुकीच के चेहरा का रंग उड गया, उसका डर और घबराहट और भी बढ़ गयी। “अब क्या करे? इस खोप्रोव ने खबर कर दी है या अभी नहीं? क्यों?”

नहीं? अरे बोल भी ग्रेम्याची के ठूठ! नहीं? वह किधर गया, तूने पीछा किया उसका?"

"जी नहीं अलेक्सांद्र अनीमीमोविच, मेरे माई-बाप, हम मारे गये।" याकोव लुकीच ने सिर पीट लिया। उसके कन्थई गाल पर ढुलककर आसू की बूद सफेद मूछ पर जा पड़ी।

पर पोलोवत्सेव दात पीमकर बोला

"तू, जनखा! कुछ करना चाहिये न कि तेरा बेटा घर पर है?"

"पता नहीं मैं अपने साथ एक आदमी को लाया हू।"

"किसको?"

"प्राल नकटे के बेटे को।"

"अहा। क्यों लाया है उसे?"

उनको नजरे मिली और बिना शब्दों के ही वे एक-दूसरे को समझ गये। याकोव लुकीच ने ही पहले नजर भुकायी और पोलोवत्सेव के इस प्रश्न पर कि 'विश्वमनीय लडका है या नहीं?' उसने चुपचाप सिर हिला दिया। पोलोवत्सेव ने झटके से कील पर लटका अपना कोट उतारा, तकिये के नीचे से हाल ही में साफ किया गया रिवाल्वर निकाला, उसका मॉलिडर घुमाया, उसमें निकलदार गोलिया चमकी। कोट के बटन बद करने हुए, पोलोवत्सेव ने लडाई की तरह साफ-सफाई आदेश दिये

"कुल्हाड़ी ले लो। सबसे छोटे रूमने में ले चलो। कितने मिनट की दूरी है?"

'यही पास ही में है, आठक घर आगे है'

"उसके बाल-बच्चे हैं?"

"बस बीवी ही है।"

"पड़ोसी पास ही में रहते हैं?"

"एक तरफ से खलिहान है और दूसरी तरफ में बाग।"

"और ग्राम-मोवियत?"

"वह बहुत दूर है"

"चलो!"

जब तक याकोव लुकीच कुल्हाड़ी लेने कोठरी में गया, पोलोवत्सेव ने बाये हाथ से तिमोफेई की कोहनी दबाकर दबे स्वर में कहा

“मेरी हर बात को मानना ! हम वहा जायेगे और तुम अपनी आवाज को बदलकर कहना कि ग्राम-सोवियत के हरकारे हो, उसके लिये कागज लाये हो। ताकि वह खुद दरवाजा खोले।”

“कामरेड, आप सभलकर रहना, नाम आपका नहीं जानता, यह खोप्रोव बैल की तरह ताकतवर है. अगर सावधानी नहीं बरती तो घूसे मे ही ” तिमोफेई बेतकल्लुफी से बोलने लगा।

“मुह बंद कर। पोलोवत्सेव ने उसे टोक दिया और याकोव लुकीच की ओर हाथ बगकर बोला “उधर द। दिखा रास्ता।

कुल्हाड़ी की याकोव लुकीच के हाथ मे गर्म और नम मूठ को उसने कोट के अंदर पतलून मे खोम लिया और कालर उठा लिया।

गली मे वे चुपचाप जा रहे थे। हट्टे-कट्टे पोलोवत्सेव के बराबर चलता तिमोफेई बिलकुल छोकरा लग रहा था। वह डगमगाकर कदम रखते श्वेत कप्पान के साथ-साथ चलता उसका मुह देखने की कोशिश कर रहा था, पर अंधेरे और कोट का कालर खड़ा होने के कारण वह देख न सका।

बाड को फादकर व खलिहान म घुमे।

“एक दूसरे के कदम के निशान मे पैर रखकर चलो ताकि बर्फ पर एक आदमी का निशान लगे ’ फुसफुसाकर पोलोवत्सेव ने आदेश दिया।

बर्फ की मपाट सतह पर वे भोंडियो की तरह, एक-दूसरे के पर्दाचन्ह म कदम रखते हुए चल दिये। अहाते के फाटक के पास दिल पर हाथ रखकर याकाव लुकीच बदबदाया

हे भगवान

पोलोवत्सेव ने दरवाजे की ओर इशारा किया।

‘ खटखटा । ’ तिमोफेई होठों के हिलने ही समझ गया आदेश।

उसने धीरे से माकल खटकायी और तभी उसन दरवाजे के दायी ओर खड़े सफेद टोपीवाले पराये आदमी को हडबडी मे कोट के बटन खोलने सुना। तिमोफेई ने एक बार फिर दरवाजा खटखटाया। बाडे म पड हल के नीचे मे छोटे-मे कुत्ते को निकलता देखकर याकोव लुकीच के रोगटे खडे हो गये। पर ठड मे अकडा पिल्ला हल्के से भौककर, गरियाता हुआ छप्पर मे डके तहखाने की ओर भाग गया।

खोप्रोव विचारों में डूबा घर पहुँचा, रस्ते में वह कुछ शांत हो गया। पत्नी ने उसे खाना परोसा।

उसने बेमन में खाना खाया और उदाम स्वर में बोला

“मार्या, इस वक्त तो तरबूज का अचार खाने को जी कर रहा हूँ।

क्या, नशा उतारने के लिये? वह मस्कराकर बोली।

“नहीं, आज तो मैंने पी नहीं है। मार्या, कल मैं अधिकारियों को बताने जा रहा हूँ कि मैं दमनकारी दस्ते में था। इस तरह जीना अब मेरे बस में नहीं रहा।”

“तुमने भी क्या मोची है! आज क्यों तुम बड़े अजीब-से लग रहे हो? मैं समझ नहीं पा रही।”

निकीता ललौही मूँछों को ताव देता मुस्करा रहा था और मोने से पहले फिर गंभीर स्वर में बोला

‘तुम मेरे लिये रस्क बना देना या फीके पड़े। मैं सजा काटने जाऊँगा।

और फिर बड़ी देर तक आँखें खाले लेंटा पत्नी की अनुनय-विनय पर कोई ध्यान दिये बिना मोचता रहा ‘अपने बारे में और आँखों-ज्वाव के बारे में बता दूँगा उन हरामियों को भी गिरफ्तार होने दो! और मेरा क्या कर लेगे? गोली तो मारेगी नहीं? तीनों माल की भजा होगी उगल पर लकड़ी काट के साफ लौटूँगा वहाँ से। तब कोई भी मुझे पुगनी बातों का उलाहना नहीं दे सकेगा। अपने पाप को छिपाने के लिये किसी पराये के लिये ह्राड नहीं तोड़ूँगा। ईमान से बता दूँगा कि अग्नीमोव के दस्ते में कैसे पहुँचा। साफ-साफ कह दूँगा मोर्चे पर नहीं जाना चाहता था, कौन चाहता है गोलियों की बौछार में सिर डालना? चलाने दो मुकदमा, पुगना किस्सा होने के कारण कुछ नरमी बरतेगे। सब बता दूँगा। लोगो को खुद मैंने गाली मारी नहीं, और जहाँ तक बात कोड़े मारने की है हा, कोड़े जरूर मारे थे, कज्जाक भगोडो को भी और कुछेक बोत्शेविको को भी तब मैं निरा मुँह था, मुझे भले-बुरे का कोई ज्ञान न था।’

सोचने-मोचते उसे नींद आ गयी। शीघ्र ही दरवाजा खटकने

से नींद उचट गयी। कुछ देर लंटा रहा। “कौन बेवक्त आया है?” उसने सोचा। दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। निकीता बड़बड़ाकर उठने लगा, वह लैम्प जलाना चाहता था, पर मार्या की भी आख खुल गयी और वह फुसफुसाकर बोली

“फिर सभा में बुलाने आये होंगे? मत जलाओ। दिन हो या रात कोई चैन नहीं है पागल हो गये हैं मर्दुए।”

निकीता नगे पाव इयोदी में आया।

“कौन है?”

“मैं हूँ निकीता चाचा, सोवियत में आया हूँ।”

किसी बच्चे की अपरिचित आवाज सुनायी पड़ी निकीता को बचैनी किसी अनिष्ट की-सी अनुभूति हुई, उसने पूछा

“अरे कौन है? क्या चाहिये?”

“यह मैं निकोलाई कुभेन्कोव हूँ। अध्यक्ष ने तुम्हें चिट भेजी है, फौरन सोवियत में आने को कहा है।”

“दरवाज के नीचे में मरका दे।

दूसरी तरफ क्षण भर का मौन छा गया सफेद भबरीली टोपी के नीचे से घूरती आखों को देखकर पल भर को हड़बड़ाया निमो-फेई सभल गया

“दस्नखत भी करने है चिट मिलने के खोलो दरवाजा।”

निमाफर्ट का कच्चा फर्श पर खोप्राव के नगे पावा की बचैनी भरी रगड़न की आवाज सुनायी पड़ी। काली मकल खटकी। दरवाजे की चौखट में काली पृष्ठभूमि में खोप्राव की सफेद आकृति प्रकट हुई। उसी क्षण पोलावत्सेव ने दहलीज पर बाया पैर रखा और कुल्हाड़ी घुमाकर उसके चपटे हिस्से में खोप्राव की नाक के बामे के ऊपर प्रहार किया।

कसाई के प्रहार से बैल की तरह निकीता घटना पर ढह गया और धीरे-धीरे पीठ पर लुढ़क गया।

“अदर घुसो। दरवाजे पर मिटकनी चढ़ा दो।” पोलोवत्सेव ने अस्फुट स्वर में आदेश दिया। उसने अदर के दरवाजे का हेडल टटोला और कुल्हाड़ी को कसकर पकड़े हुए उसे खोल दिया।

कोने में पलंग में टाट की खड़-खड़ और आशक्ति महिला स्वर सुनायी पड़ा

“निकीता, तुमने कुछ गिरा दिया क्या? कौन आया है निकीता?”

पोलोवत्सेव ने कुल्हाड़ी पटकी और हाथ फैलाकर पलंग पर भपटा।

“अरे कौन है? बचाओ।”

हडबडी में घर में घुसते समय तिमोफेई को चौखट से सिर में जोग से चोट लगी। कमरे के कोनों में उसे हाफने और हाथापाई की आवाज सुनायी पड़ी, पोलोवत्सेव औरत के ऊपर गिर पड़ा और उसके चहरे पर तकिया दबाकर तौलिये में उसके हाथ बांधने लगा। उसकी कोहनिया औरत की कोमल चूचियों पर फिसल रही थी। पोलोवत्सेव को उसके मजबूत, मुक्त होने के लिये सघर्षरत बदन की गर्मी, कैद चिड़िया की तरह धुक-धुक करने उसके दिल की अनुभूति हुई। क्षण भर के लिये उसमें तीव्र इच्छा जागी पर उसने गर्गक तकिये के नीचे हाथ डाले और दोनों हाथों में औरत का मुंह ऐसे फाड़ दिया मानो घोंडे की थूथनी खोल रहा हो। उसकी उगली में होठ रबन की तरह खिचा और फिर चिरता चला गया, उसकी उगली गर्म खून में तर थी, पर औरत अब नहीं चिल्ला रही थी। पोलोवत्सेव ने उसके मुंह में हलक नक लहगे हो मसोमकर ठस दिया था।

पोलोवत्सेव बधी औरत के पाम तिमोफेई को छोड़कर, खुद बीमार घोंटे की तरह हाफता ड्योढ़ी में चला गया।

“माचिस।”

याकोव लुकीच ने माचिस जलायी। उसकी धुधली रेशनी में पोलोवत्सेव फर्श पर पड़े खोप्रोव के ऊपर झुका। तोपची ब्रेडब ढंग में पैरों को मोड़कर कच्चे फर्श पर गाल टिकाये पड़ा था। साम लेती उसकी छाती ऊपर-नीचे उठ रही थी जब वह साम छोड़ता तो हर बार उसकी ललौही मछ का मिंग लान डबरे में डब जाता। माचिस की तीली बुझ गयी। पोलोवत्सेव ने खोप्रोव के साथे पर उरा स्थान को टटोला जहा चोट लगी थी। उसकी उर्गलियों ने चकनाचूर हड्डी की किरकिराहट महसूस की।

‘आप मुझे माफ कीजिये मुझे खून देखकर उल्टी आती है।’ याकोव लुकीच फुमफुसाकर बोला। उसके बदन में कपकपी दौड़ रही थी, घुटने कांप रहे थे, पर पोलोवत्सेव ने उसे आदेश दिया

“कुल्हाड़ी ला। वहा पलंग के पास पड़ी है। और पानी भी।”

पानी के छोटो से खोप्रोव को होश आ गया। पोलोवत्सेव ने उस-

की छाती पर घुटना टिकाकर पूछा

“गद्गार, तूने खबर कर दी? बोल! अरे, ओ! माचिस तो जला!”

माचिस की तीली ने फिर कुछ क्षणों के लिये खोप्रोव के चेहरे को, उसकी अधखुली आख को आलोकित किया। याकोव लुकीच का हाथ काप रहा था, नन्ही-मी रोशनी भी काप रही थी। इयोटी के छप्पर में लटकी मरकडो की बुहारियों में रोशनी के पीले चकत्ते नाच रहे थे। माचिस की तीली याकोव लुकीच के नाखूनो को जला रही थी पर उसे दर्द नहीं महसूस हो रहा था। पोलोवत्सेव ने दो बार प्रश्न दोहराया और फिर खोप्रोव की उगलिया मरोड़ने लगा। वह कराहा और पेट के बल लेट गया बड़ा जोर लगाकर वह हाथ-पाव पर उठा। पोलोवत्सेव पूरा जोर लगाकर उसे फिर से पीठ पर लुट्कान की कोशिश करने लगा पर तोपची की भालू जैसी शक्ति ने उसे पैरों पर खड़ा कर दिया। बाये हाथ से उसने याकोव लुकीच का कमरबंद पकड़ लिया और दाये से पोलोवत्सेव की गर्दन दबोच ली। वह कंधों में मिर को छिपाकर, गले को खोप्रोव की ठडी उगलियों में बचाने हुए चिल्लाया

“रोशनी करो! तुम्हारी गेमी की नैमी करो भी रोशनी!” वह अंधेरे में कुल्हाड़ी नहीं ढूँढ पा रहा था।

तिमोफेई ने रसोई में मिर निकाला, उसे नहीं पता था कि बात क्या हुई वह जोर-जोर से फुसफुसाकर बोला

‘अरे तुम उसकी गर्दन पर कुल्हाड़ी की धार गड़ाओ तब वह भट से बता देगा।’

अतत पोलोवत्सेव को कुल्हाड़ी मिल गयी, पूरा जोर लगाकर वह खाप्राव क चगल से मक्क टूटा और कुल्हाटी की धार से दा वार किये। खोप्रोव गिर पड़ा, गिरने समय उसका मिर बेच में टकराया और उग पर रखी बालटी गिर गयी। बालटी गिरने की आवाज गोली के धमाके को तरह गूजी। पोलोवत्सेव दात भीचकर उसका काम तमाम करने लगा, पैर से उसका मिर टटोला और पूरे जोर से कुल्हाड़ी चला दी। उसे खून की बुल-बुल, गुड-गुड सुनायी पड़ी। फिर वह याकोव लुकीच को धकेलकर अंदर के कमरे में ले गया और दरवाजा बंद करके दबे स्वर में बोला

“अबे उल्लू के पट्टे ! पकड़ लुगाई का मिर, हमें यह पता करना है कि उसने खबर दे दी है या नहीं ? ते, लड़के, तू इसके पैर दबाकर पकड़ ले !”

पोलोवत्सेव ने बधी औरत पर अपनी छाती टिका दी। पोलोवत्सेव के शरीर में पसीने की तीखी बू आ रही थी। उसने शब्द चबा-चबाकर पृष्ठा

“शाम को घर लौटने के बाद तेरा खसम मोवियत में या कहीं और गया था ?”

कमरे के भुटपुटे में उसे भय में आक्रांत, सूजी आखें, दम घुटने में काला पड़ा चहरा दिखाया पड़ा। उसका जी मिचलान लगा जल्दी में ताजी हवा में जाने की इच्छा हुई। उसने क्रोध और घृणा के साथ औरत के कानों के पीछे के हिस्से को अगुठो में दबाया। भयकर पीड़ा में तड़पकर वह मुर्च्छित हो गयी। फिर होश में आकर उसने लार में भीगे कपड़ को जीभ से धकेलकर मूँह में थूक दिया। पर वह चिल्लायी नहीं बल्कि मिमकिया लेती हुई फमफूसाकर गिड़गिड़ाने लगी

भल लोगो ! भल मानसो दया करो ! सब बना दूगी !’
उसने याकोव लकीच को पहचान लिया। वह तो उसका रिश्तेदार लगता है कोई सात साल पहले उसकी बहन के बेटे के बपतिस्मे में वे दोनों धर्मपिता और धर्ममाता बने थे। और बड़ी मुश्किल में अपने कट फटे हाथों को हिलाकर वह बाली

रिश्तेदार मरे ! मेरे प्यारे रिश्तेदार ! क्यों ? किमलिये ?”

पोलोवत्सेव ने टरकर अपनी चौड़ी हथेली में उसका मुँह ढक दिया। वह दया की आशा में अपने खून में लथपथ होठा में उसकी हथेली का चमन की कोशिश करने लगी। वह जीना चाहती थी ! वह भयभीत थी !

‘गया था कहीं तेरा खसम ?’

उसने मिर हिलाकर ना किया। याकोव लकीच पोलोवत्सेव के साथ पकड़कर कहने लगा

साहब साब्र अलेक्सांद्र अनीसीमोवच ! उसे छोड़ दो हम इसे धमका देंगे, यह किसी से कुछ नहीं कहेगी ! हरगिज नहीं कहेगी !”

पोलोवत्सेव ने उसे धक्का दिया। इन तनावपूर्ण मिनटों में उसने पहली बार उल्टे हाथ से चेहरे का पसीना पोछा और सोचने लगा “कल ही भेद खोल देगी। पर यह औरत है, कज्जाक औरत, मेरे लिये, अफसर के लिये यह शर्म की बात है भाड़ में जाये। आखे ढक देनी चाहिये इसकी ताकि अपना अंत न देख सके” सूती शमीज को ऊपर उठाकर उसने औरत के सिर पर लपेट दिया, पल भर के लिये उसने इस तीस साल की कभी भी बच्चे की मां न बनी औरत के मुडौल बदन पर नजर डाली। वह घुटने को समेटकर आहत पक्षी की भांति पड़ी थी। पोलोवत्सेव ने भुटपुटी रेशमी में देखा की औरत की छाती और बादामी पेट अचानक पसीने में चमकने लगे। “मतलब, समझ गयी कि क्यों उसका सिर ढका गया है। भाड़ में जाये।” पोलोवत्सेव ने हकार कर कुल्हाड़ी को शमीज में लिपेटे चेहरे पर मारा।

याकोव लुकीच ने देखा कि उसकी रिश्तेदार का शरीर ऐंठकर तड़पा। उसके नथुनों में ताजे खून की कमैली बूँद भर गयी। याकोव लुकीच लडखड़ाता हुआ अगीठों के पास तक जा पाया कि उसे जोर से उलटी आ गयी।

ओसारे के बाहर पोलोवत्सेव शराबी की तरह लडखड़ाया और भ्रूंककर रेलिंग पर पड़ी ताजी, भुरभुरी बर्फ को चाटने लगा। वह फाटक से बाहर निकले। तिमोफेई नकटा उनके साथ नहीं गया। घूम-फिरकर वह स्कूल की ओर चल दिया जहाँ से अकार्डियन के मंगीत की लहरिया गुजर रही थी। स्कूल के पास युवक-युवतियाँ रंगरेलियाँ मना रहे थे। तिमोफेई लडकियों को चोटना घेरे में घुस गया और उसने अकार्डियन-वाले से उसका बाजा मांगा।

‘तिमोफेई’ जिप्सी डाम की धून बजा, एक लडकी ने अनुरोध किया।

बाजेवाले ने तिमोफेई को अकार्डियन थमाया पर उसने बाजा गिरा दिया। हल्की-सी हमी के साथ उसे उठाया पर फिर गिरा दिया। उगलिया उसका कहना नहीं मान रही थी। उसने उगलिया हिलायी और हसकर बाजा वापस कर दिया।

“पी रखी है इमने।”

‘कही नशे में धूत तो नहीं है?’

‘ अरे, इमने तो कोट पर उलटी कर रखी है। ’

लडकिया तिमोफेई के पास से हट गयी। अकार्डियन के मालिक ने बड़बड़ाकर बाजा उठाया और उस पर चिपकी बर्फ को फूक-भाड़कर जिप्सी धुन निकालने लगा। सबसे लम्बी लडकी उल्याना अरुवात्किना नीची एडियोंवाली जूतियों को चरमगते हुए, बहगी जैसे हाथ फैलाकर नाचने लगी। “ यही बैठा रहना चाहिये मुबह तक, तिमोफेई ने किमी पराये की तरह मोचा, “ तब मामले की जाच के वक्त कोई सबन नही मिलेगा। ’ वह उठा और जान-बूझकर गगबी की तरह लड़खड़ाता हुआ स्कूल की ओसारे पर बैठी लडकी के पास गया, उसके गर्म घूटनो पर सिर टिकाकर बोला

“ लाडो, मेरा सिर महला दे। ’

* * *

और बदगोभी के पत्ते की तरह हरा याकोव लुकीच घर में घुमते ही पलंग पर श्रौधा पड़ गया। वह पोलोवत्सेव को नाद के ऊपर हाथ पर माबून मलते, फुफकारकर हाथ-मुह धोते सुन रहा था, फिर वह अपने कमरे में चला गया। आधी रात को पोलोवत्सेव ने याकोव लुकीच की पत्नी को जगाकर पूछा

उबले फलों का मत है मालकिन ? प्यास लगी है। ”

मत पीकर उसने गिलास से उबली नाशपाती निकाली (याकोव लुकीच उसे कनखिया में देख रहा था), चपड़-चपड़ उसे खाकर चल दिया सिगरेट का धआ छोड़ता, लुगाइयो जैसी फूली अपनी नगी छाती को महलाता हुआ।

कमरे में पोलोवत्सेव ने अलावघर की अभी तक गर्म दीवार पर अपने नगे पाव टिका दिये। रात को उसे गठिया से दुखते पैरो को गर्म करना अच्छा लगता था। मन् १९१६ की मर्दियों में बुग नदी को तैरकर पार करते समय, जब वह दिलोजान में महामहिम जार की सेवा और मातृभूमि की रक्षा करने हुए उसके पैरो को ठंड लग गयी। तब से कज्जाक कप्तान पोलोवत्सेव में गर्मी और नमदे के गर्म बूटो के लिये ललक उत्पन्न हुई

ग्रेम्याची में एक सप्ताह के प्रवास के दौरान दवीदोव के सम्मुख कई प्रश्न चट्टान की तरह उठ खड़े हुए थे। रात को ग्राम-सोवियत में या तीत के बड़े घर में स्थित सामूहिक फार्म के कार्यालय में लौटकर दवीदोव बड़ी देर तक कमरे में टहलता रहता, मिगरेट पीता और फिर डाक में आये 'प्राब्दा', 'मोलोत' समाचार-पत्र पढ़ता और फिर में ग्रेम्याची के लोगो, सामूहिक फार्म, दिन भर की घटनाओं के बारे में सोचने लगता। घिरे भंडिये की तरह वह सामूहिक फार्म के बाग में विचारो के घेरे में निकलने का प्रयास करता, अपने खाते, मित्रो, अपने काम को याद करता, यह सोचकर उस पर हल्की-सी उदामी छा जाती कि वहा इतने परिवर्तन आ गये हैं और यह सब उसकी अनुपस्थिति में, कि वह अब गियर-बॉक्स को सुधारने के लिये रात-रात भर कैटरपिलर ट्रैक्टर के इंजन के नक्शों का अध्ययन नहीं कर सकता कि उसकी नखरीली खराद पर अब कोई दूसरा काम कर रहा होगा, शायद वह आत्मविश्वासी गोल्दस्मीद्न ही हो। यह सोचकर वह उदाम हा जाता कि पच्चीसहजारियों की विदाई के समय जाशील भाषणो में नेक शब्द कहकर वे अब शायद उसके बारे में भूल गये। पर अचानक फिर विचारो की शृंखला ग्रेम्याची की ओर मड़ जाती, मानो दिमाग में कोई काटा बदलकर विचारो की दिशा मोड़ देता। दहात में काम पर आते समय वह इनना भोला शहरी तो नहीं था पर वर्ग संघर्ष का विकास, उसकी जटिल गुंथिया और अकसर छिपे छद्म रूप उसे इतने जटिल नहीं लगत थे जिनने कि यहा ग्रेम्याची में उसने पहले ही दिनो में देखे। वह यह नहीं समझ पाता था कि सामूहिक फार्म की विशाल श्रंष्टताओं के बावजूद अधिकांश मझोले किसान उनमें शामिल होने की कतई भी इच्छा नहीं रखते। बहुत-से लोगो और उनके आपसी संबंधो को समझने की कुजी वह नहीं खोज पा रहा था। तीत जो कल तक लाल छापेमार था अब कुलक और शत्रु है। निमोफेई बोश्चोव गरीब है पर कुलको की हिमायत करता है। ओस्त्रो-व्बोव सभ्य किसान है, स्वेच्छा में सामूहिक फार्म में शामिल हुआ, पर नागूल्नोव का व्यवहार उसके प्रति चौकसी भरा, द्वेषपूर्ण है। ग्रेम्या-ची के सभी निवासी दवीदोव के दिमाग में घूम रहे थे और उनकी

बहुत-सी बातें उसकी समझ के परे थी, किसी अदृश्य पर्दे से ढकी थी। गाव उसके लिये नये डिजाइन के जटिल इंजन की तरह था और दबीदोव पूरे ध्यान और शक्ति के साथ उसको अंत तक जानने, उसके हरेक पुर्जे को छूकर देखने, इस जटिल मशीन की दैनंदिन, अथक धड़कन में हरेक अनियमितता का कारण समझने की कोशिश कर रहा था।

गरीब खोप्रोव और उसकी पत्नी की रहस्यमय हत्या में उसके मन में यह विचार उपजा कि इस मशीन में कहीं छिपी कमानी सक्रिय है। उसको अस्पष्ट-सी अनुभूति हुई कि खोप्रोव की हत्या के कारणों का सामूहिकीकरण, बटी खेती की ढहती उमांग में तूफानी हवा की तरह घसी नयी बातों में सीधा सबध है। संवरे जब खोप्रोव और उसकी पत्नी के शव मिले, रजम्योलोव और नागूलोव में उसकी लम्बी बातचीत हुई। वे भी अनुमान और अटकलें ही लगा रहे थे। खोप्रोव गरीब किमान था, पहले वह श्वेत गाई में था, सामाजिक जीवन में निष्क्रिय था, कुलक लाप्शीनोव में उसकी दाल गलती थी। किसी के द्वारा व्यक्त यह अनुमान बिल्कुल बेतुका था कि उसे लूटेरों ने मार डाला क्योंकि घर में कुछ नहीं गया और खोप्रोव के पाम लूटने लायक कुछ था भी नहीं। रजम्योलोव ने यह कहकर बात टाल दी कि लुगाई-वगाई का मामला है, किसी की औरत का हाथ लगाया होगा इसीलिये कर दिया उसका काम तमाम।

नागूलोव चुप था उसे बिना सोच-समझे बोलना पसंद नहीं था। पर जब दबीदोव ने अपना यह अनुमान प्रकट किया कि हत्या में किसी कुलक का हाथ है और उनको फौरन गाव में निकालने का सुझाव दिया तो नागूलोव ने उसका पूर्ण रूप से समर्थन किया।

“उन्हीं का काम है, दो गाय नहीं हो सकती! भेज दो इन बिच्छू-ओं को ठंडे इलाकों में।”

रजम्योलोव ने हमकर कंधे उचकाये और बोला

“उन्हे निकालना चाहिये, इसमें कोई सदेह नहीं। वे लोगों को सामूहिक फार्म में भगती नहीं होने दे रहे। पर खोप्रोव के मारे जाने में उनका कोई हाथ नहीं। यह सच है कि वह लाप्शीनोव के साथ ही ज्यादा उठता-बैठता था, हमेशा उसके यहां काम करता था, पर पैट भग होने की वजह में थोड़े ही? गरीबी के बोझ में लाप्शीनोव का दामन पकड़े था। हर बात कुलको के मिर तो नहीं मढ़नी चाहिये,

तुम लोग भी अजीब हो ! नहीं , मानो या न मानो , पर यहा किसी लुगाई का मामला है ! ”

इलाके से जाच-अधिकारी और डाक्टर आये। उन्होंने शव-परीक्षा की , खोप्रोव के पडोमियो और लाप्शीनोव से पूछताछ की। पर जाच-अधिकारी को हत्यारे और हत्या के कारणों का कोई सुराग न मिला। अगले दिन , चार फरवरी को , सामूहिक फार्म के सदस्यों की आम सभा में सर्वसम्मति से कुलक परिवर्गों को उत्तरी काकेशिया प्रदेश से निर्वाचित करने का निर्णय पास किया गया। सभा में सामूहिक फार्म के निर्वाचित प्रबन्ध-मंडल का भी अनुमोदन किया गया , जिसमें याकोव लुकीच ओस्त्रोव्नोव (नागूलनोव के इतराज के बावजूद दवीदोव और रजम्योव्नोव ने उसकी उम्मीदवारी का उत्साह के साथ समर्थन किया) , पावेल ल्युबीशकिन , योम्का उशाकोव शामिल हुए , अर्काशा बदल को बड़ी मुश्किल में जरूरी वोट मिले , पाचवा सदस्य दवीदोव था जिसे सबने अपने वोट दिये। काफी हद तक इसमें उस पत्र ने भूमिका निभायी जो एक दिन पहले इलाकाई कृषि सघ में मिला था। उसमें कहा गया था कि इलाकाई कृषि सघ की महर्माति में इलाकाई पार्टी मर्माति अपने प्रार्तान्ध्रि , पच्चीसहजारी कामरेड दवीदाव को साम-हिक फार्म के अध्यक्ष के पद पर अपना उम्मीदवार खडा कर रही है।

* * *

दवीदोव अभी तक नागूलनाव के यहा रह रहा था। वह बड़ मट्ठक पर मोता था , पति-पत्नी के पलग और उसके बीच नीचा-मा छोट का पर्दा तना था। आगेवाले कमरे में घर की मालकिन - नि-मतान विधवा रहती थी। दवीदोव समझता था कि वह मकार को कष्ट दे रहा है पर पहले दिनों की दौडधूप और चिताओं के कारण मकान ढूढने का समय ही नहीं मिल पा रहा था। नागूलनोव की पत्नी लूशका का दवीदोव के प्रति व्यवहार अत्यंत मृदु था , पर इसके बावजूद , मकार के साथ उस दिन मयोगवश हुई बातचीत के बाद से जब उसने बताया कि उसकी पत्नी की तिमोफेई नकटे में यारी है , वह लूशका के प्रति अपनी उपेक्षा को नहीं छिपा पाता था। उनके घर

मे अपनी अस्थायी उपस्थिति उसे बहुत बोझिल लगती। सवेरे दवीदोव कुछ बोले बिना अकसर लूशका को कनखियो से देखता। देखने मे उसकी आयु पच्चीस से अधिक नहीं लगती थी। उसके लम्बोतरे कपोल घनी चित्तियो से ढके थे, उमका चिनकबरा चेहरा कौवे के अडे जैसा लगता था। पर उसकी काली-काली आखो में, उसकी दुबली मुडौल काया मे कोई ऐसी चीज थी जो उमको मोहक बनाती थी। उसकी धनु-पाकर स्नेहमय भौहे हमेशा कुछ-कुछ उठी रहती, जैसे कि वह सदा किसी खुशखबरी के इतजार मे रहती हो। उसके चमकीले होठो के कोनो मे हमेशा मुस्कान की झलक रहती। वह अपने ढलवा कधों को इस तरह हिलाती हुई चलती थी मानो कोई बस अभी पीछे मे उसके दुबले कधो को अपनी बाहो मे भर लेगा। वह ग्रेम्याची की बाकी कज्जाव औरतो जैसे ही कपडे पहनती पर शायद कुछ ज्यादा माफ-सुथरी रहती थी।

एक बार सुबह सवेरे जूते पहनते समय दवीदोव को पर्दे के पीछे मे मकार की आवाज सुनायी दी

“मेरे कोट की जेब मे गेटिस है। तुमने कहा था मेम्योन मे लाने का ’ कल वह कस्ब मे लौटा था तुम्हे देने को कह रहा था। ”

सच, मकार प्यारे ?” लूशका की उनीदी चहक सुनायी पड़ी

वह शमीज मे ही पलंग मे कूदकर कील पर टगे पति के कोट के पास गयी, जेब से उसने जाघ पर पहननेवाले रबड के छल्ले नहीं बल्कि पेट्टीवाली असली गेटिस निकाली जैसी शहर की औरते पहनती है। शीशे मे वह दवीदोव को दिखायी दे रही थी। वह खड़ी हुई, अपनी मुडौल टांग पर गेटिस को पहना, और पतली गरदन को नानकर देखने लगी। दवीदोव को शीशे मे उसकी खुशी मे चमकती आखें, चित्तीदार गालों पर हल्की-सी लाली नजर आ रही थी। टांग पर लम्बी काली जुगब चढाकर वह शीशे की ओर मुड़ी, उनकी आखे चार हुई, शमीज की काट मे उसके सावले तने स्तन कापे। लूशका ने पर्दे के ऊपर मे दवीदोव की ओर देखा और धीरे से बाये हाथ मे कालर को ढक लिया, पर उसने मुह नहीं फेरा आखे मिचमिचाकर वह मुस्करा दी। “देख ले, कितनी सुंदर हू मै।” उसकी बेहया आखे कह रही थी।

दवीदोव धम्म से सटूक पर बैठ गया, उमका चेहरा शर्म मे लाल

हो गया, माथे से अपनी काली लट को हटाते हुए, उसने सोचा “धत्त तेरे की! यह तो सोच बैठेगी कि मैं चोरी में देख रहा था क्यों खड़ा हो गया मैं, सोच बैठेगी कि मुझे उसमें रुचि है”

“अरी तू पराये आदमी के सामने तो नगी मत घूम,” दबीदोव का लजाकर खिखारते मुनकर मकार अमर्तोप के साथ बड़बड़ाया।

“उसे नहीं दिखायी दे रहा।”

“नहीं, दिखायी दे रहा है।”

दबीदोव पर्दे के पीछे में खामा।

“दिखायी दे रहा है तो देखने दो ज़ि भरकर,” वह उदासीनता के साथ लहगा पहनते हुए बोली। “मकार प्यारे, पराये-वगये कुछ नहीं होते। आज पराया है और चाह तो कल ही मेरा हो जायेगा,” वह हमकर बोली और दौड़कर पलंग पर कूद गयी। “तुम भी कितने भोले हो, बछड़े की तरह।”

* * *

नाश्ते के बाद घर में बाहर निकलने ही दबीदोव बोला

‘तेरी लगाई दो कौड़ी की है।’

“तेरा इसमें कोई वास्ता नहीं नागूल्लोव न दबीदोव की ओर देखे बिना धीमे स्वर में उत्तर दिया।

‘पर तेरा तो उसमें वास्ता है।’ आज ही में घर बदल रहा है, देखकर मेरा जी मिचलाना है। तू ऐसा बाका जवान है, पर उसके साथ मम्बनी में पेश नहीं आ सकता। खुद ही तो बता रहा था कि उसकी नकटे में यारी है।”

“तो क्या पीटू उसे?”

“पीट नहीं पर असर डाल। माफ-साफ कहना है मैं कम्प्यूनिस्ट हूँ, पर ऐसी बातें नहीं सह सकता। मैं तो उसे पीटकर घर से निकाल देता। वह तुम्हें लोगों के सामने बदनाम कर रही है और तू चुप है। रात-रात भर वह कहा गायब रहती है? जब हम देर रात सभा में लौटते हैं वह घर पर नहीं होती। मैं तुम्हारे अदरुनी मामले में दखल नहीं दे रहा”

“तुम शादी-शुदा हो?”

“नहीं। तुम्हारे परिवार को देखकर तो जिंदगी भर शादी नहीं करूंगा।”

“तुम औरत को सपत्नी की तरह देखते हो।”

“भाड़ में जा तू। अराजकतावादी कही का। रट लगा दी सपत्नी की। वह तो अभी भी है? तू उसे क्यों रट कर रहा है? परिवार तो है? और तू तेरी लुगाई के साथ अनाचार फैला रहा है, सहिष्णुता दिखा रहा है। मैं पार्टी इकाई में यह सवाल उठाऊंगा। तुझे तो किमान को उदाहरण दिखाना चाहिये। बहुत बढ़िया उदाहरण दिखायेगा।”

“ठीक है, मैं मार डालूंगा उसे।”

“जय हो।”

“अच्छा, तुम ऐसा करेंगे अभी इस मामले में देखल मत दो। सड़क के बीचोंबीच रुककर सकार ने अनुरोध किया। “मैं खूद कोई रास्ता ढूँढ लूंगा, अभी इसके लिये समय नहीं। अगर कल शुरू हुआ होता तो बात दूसरी थी पर मैं तो इसका आदी हो गया कुछ रुककर देखूंगा दिल भी अभी उससे जुड़ा हुआ है नहीं तो कभी का अच्छा, तुम किधर जा रहे हो भाविष्य में?” उसने बात बदली।

“नहीं ओम्ब्रोन्नोव के पास जाना चाहता हूँ। उसके घर में बैठकर बात करना चाहता हूँ। वह अक्लमंद आदमी है। मैं उसे प्रबंधक बनाना चाहता हूँ। तुम्हारा क्या विचार है? ऐसे आदमी की जरूरत है कि पार्टी-पार्टी का हिस्सा रखे। लगता है ओम्ब्रोन्नोव ऐसा ही आदमी है।

नागूल्लोव बौखलाकर बोला

“फिर वही किस्सा। तुम्हारा और अर्द्ध का तो इस ओम्ब्रोन्नोव ने दिमाग खराब कर दिया। सामूहिक फार्म को उसकी उतनी ही जरूरत है जितनी बैलगाड़ी को तीमरे पहिये की। मैं इसके खिलाफ हूँ। मैं उसे सामूहिक फार्म से निकलवाकर रहूँगा। दो साल तक इस अमीर हरामी ने अतिरिक्त कृषि कर चकाया लडाई में पहले कुलक था और हम अब उसकी सिफारिश करें?”

“वह सभ्य किसान है! तुम सोचते हो कि मैं कुलक की हिमायत कर रहा हूँ?”

“अगर उमके पर न काटे होते तो कब का कुलको के साथ गुटर-गू कर रहा होता।”

वे बात को पूरी किये बिना एक-दूसरे से रुष्ट होकर अपने-अपने रास्ते चले गये।

१४

फरवरी का महीना चल रहा था

ठंड से खेत-जमीन अकड़े पड़े थे। सूर्य पाले की सफेद धुध में उगता। जहा हवाओं ने बर्फ उड़ाकर जमीन को उघाड़ दिया था रात को कड़ककर दगरे पड़ती। स्तेपी में टीले पके तरबूजों की तरह बल खाती दरारों में ढके थे। गाव के बाहर खेतों में बर्फ के ढेर धूप में तीखे चमकते थे। नदी के तट पर पाप्तर वृक्षों पर मानो चादी मढी हुई थी। घरों की चिमनियाँ में मंतेरे पेड़ों के तनों की तरह नारंगी धुआँ उठता। और खलिहाना में पाले के कारण गेहूँ की पुआल में सुनहरे अगस्त, लू की तापश और ग्रीष्म आकाश की सुगंध फैलती।

ठंडे बाड़ों में बैल और गाये बेचैनी से रात गजारते। मूबह तक नादों में घास का एक भो डठल न बचता। मर्दियाँ में पैदा हुए समनों और बकरी के बच्चों को अब रात के समय बाड़ों में नहीं छाड़ा जाता। उनीदी औरते रात को उन्हें उनकी माओं के पास ले जाती और फिर अपने लहंगों के पल्लों में लपेटकर घरों की घुटन भरी गर्मी में ले आती। बकरी के बच्चा में उनके घुघगले ऊँ से पाले की हवा, सूखी घास, बकरी के मीठे दूध की सुगंध फैलती। आधी रात को इतनी नीरवता छा जाती ठंड आकाश में बिखरे तार ही टिमटिमाते — लगता कि जगत में कोई प्राणी ही न बचा।

रात को यदि नयी ब्याही घोड़ी अपने मखमली थना में दूध भरना महमूस करके हौले में हिनहिनाती तो उसके हिनहिनाने की आवाज कई मील तक सुनायी देती।

फरवरी का महीना

पौ फटने से पहले की नीलाभ नीरवता व्याप्त है।

आकाशगंगा धूमिल पड़ती जा रही है।

घगे की काली खिड़कियो मे आग की लालिमा दृष्टिगोचर होती अगीठिया जल रही है।

पनघट पर सब्बल की चोट से बर्फ भनभनाती है।

फरवरी का महीना।

* * *

याकोव लुकीच ने पौ फटने से पहले ही बेटे और औरतो को जगा दिया। उन्होने अगीठी जलायी। याकोव लुकीच के बेटे सेम्योन ने छुरियो पर धार चढायी। येसाऊल पोलोवन्सेव ने ऊनी मोजो पर कमकर पाय-नाबे बाधे और नमदे के बूट पहने। सेम्योन के साथ वह भेडो के बाडे मे गया। याकोव लुकीच के पास मन्त्रह भेडे और दो बकगिया थी। सेम्योन को मालूम था कि कौनसी भेड ग्याभन है और किमके मेमने हो चुके है। वह टटोल-टटोलकर यस्मी भडो, मेढो और जवान भेडो को चुनता और कोठरी मे धकेल देता। पोलोवन्सेव मफेद भबगीली टांगी को साथे पर भुकाकर मेडे के सर्पिल सींग पकडता और उसे जमीन पर पटककर उसका सिर उठाता और छुरे मे गला काट देता, खून की काली धारा फूट पडती।

याकोव लुकीच चालाक आदमी था। वह नही चाहता था कि किमी फैक्टरी की कैटीन मे कोई मजदूर या लाल मेना का सिपाही उसकी भेडो का माम खाकर मोटा हो। वे सोवियत है और सोवियत सत्ता ने तो दस साल मे तरह-तरह के कर और टैक्स लगाकर याकोव लुकीच का बुरा ही किया, उसे अमीर नही बनने दे रही, उसे अपनी पाचो उगलिया घी मे डुबोने नही दे रही। सोवियत सत्ता उसकी जानी दुश्मन है। और याकोव लुकीच सोवियत सत्ता का। याकोव लुकीच जिदगी भर धन-दौलत पान को ललकता रहा था ठीक उसी तरह जैसे कोई बच्चा आग को छूने को। क्रांति मे पहले वह मालदार होने लगा था, बेटे को वह नोवाचेकास्क के कैडेट कालेज मे भरती कराने की सोच रहा था, कोल्ह मशीन खरीदने की सोच रहा था, कुछ पैसे जोड भी लिये थे, तीनेक नौकरो को रखने की सोच रहा था (तब भावी सुख-समृद्धिपूर्ण जीवन के बारे मे सोचकर तो वह किनना पुलकित हो जाता था !), वह व्यापार शुरू करके घाटे मे चल रहे जमीदार -

फौजी अफसर भरोव मे उसकी बेकार पडी चक्की खरीदने की सोच रहा था दिन-रात सपनो मे याकोव लुकीच अपने को खदर की पतलून मे नही बल्कि टसर के सूट मे, पेट पर लटकी सोने की चेन के साथ देखता, वह अपने फटे-रूखे हाथ नही बल्कि मुलायम गोरे हाथ देखता जिन पर मे केचुली की तरह मैल मे काले नाखून उतर गये। बेटा कर्नल बन जाता और अमीर घराने की पढी-लिखी लडकी मे शादी कर लेता और एक दिन ऐसा आता कि याकोव लुकीच स्टेशन पर उन्हे लिवाने के लिये छकडे मे नही बल्कि अपनी कार मे जाता, वैसी ही, जैसी त्रमीदार नोवोपावलोव के पाम हे उस अविस्मरणीय काल मे याकोव लुकीच ने क्या-क्या सपने नही देखे थे, जब जीवन इतना उज्ज्वल था, उसके हाथ मे करारे नोट की तरह इद्रधनपी आभा छिटक रहा था। क्रांति ने सब कुछ भकभोर दिया याकोव लुकीच के पावो तले जमीन खिसक गयी, पर उसने होश नही गवाया। अपने ठडे दिमाग और चालाकी की बदौलत उसने आते तूफान को भाप लिया और इतनी जल्दी मे कि पडोमियो और गाववालो को भनक तक न पडी अपना मारा माल किनारे लगा दिया सन् १९१६ मे खरीदा भाप का इजन बेच दिया हाडिया मे दस-दस रूबल के मोन के तीस मिक्के और चमडे की थैली मे चादी के मिक्के भरकर गाड दिये, फालतू ढोंग बेच दिये और खेती कम कर दी। वह पूरी तरह तैयार था। क्रांति, यद्ध और मोर्चे उसके मिर पर मे ऐसे गुजर गये जैसी स्नेपी की आधी घाम के ऊपर मे भुकाने को ता भका दिया पर तोडा या उखाडा नही। आधी मे तो बनूत और पाप्लर के पेड जड ममेत उखड जाते है पर मरकडे नही, वे तो बस भूककर जमीन पर लेट जाते है और फिर तनकर मीधे खडे हो जाते है। पर याकोव लुकीच को तो 'खडे होने का मौका ही न मिला' इसीलिये तो वह मोवियत सत्ता के विरुद्ध है, इसीलिये वह खस्मी माड की तरह नीरस जिदगी जीता है। उसके लिये न मृजन का उल्लास है न जीवन की मादक खुशी। इसीलिये अब पोलोवत्सेव उमे पत्नी मे भी प्रिय और बेटे मे भी मगा है। अब या तो उसके साथ वही पुरानी चमकीली, नये करारे नोट की इद्रधनुषी आभावाली जिदगी लौटवायेगा या फिर यह वाली भी छोड देगा। इसीलिये तो याकोव लुकीच—ग्रेम्याची के मार्महिक फार्म के प्रबध-मडल का सदस्य, चौदह भेडो को हलाल

कर रहा था। “येसाऊल पोलोवत्सेव के पैरो के पास भाप छोड़ने खून को चाटते इस काले कुत्ते को इन भेड़ों का मांस डालना तो इसमें बेहतर है कि सामूहिक फार्म के रेवड में मोटी होकर, मेमनें जनकर वे इस बैरी सत्ता का पेट भरे।” याकोव लुकीच सोच रहा था। अकल-मद येसाऊल पोलोवत्सेव ठीक ही कहता था ‘दोरो को काटना चाहिये। बोल्शेविकों के पांव तले जमीन खिसका देनी चाहिये। बैलों को तो मरने दो बिना देखभाल के, बैल तो हम जुटा लेंगे जब सत्ता छीनेगे। बैल तो हमारे लिये अमरीका और स्वीडन में भेजे जायेंगे। भुखमरी, तबाही और विद्रोह की मदद से हम बोल्शेविकों का गला घोट देंगे। और घोड़ी का दुख न करो, याकोव लुकीच। यह अच्छा ही है कि मारे घोड़े समाज के हो गये। इसमें हमी को फायदा है जब विद्रोह करेंगे और गांवों पर कब्जा करेंगे हमें आम अस्त्रबलों में घोड़े लेने में सुविधा होगी, घर-घर जाकर नही खोजना पड़ेगा।’ एक-एक शब्द खालिस मॉने का ह। येसाऊल पोलोवत्सेव का दिमाग भी उतना ही फूर्तीला है जितना कि उसके हाथ ”

याकोव लुकीच कोठरी के पास खड़ा पोलोवत्सेव और सेम्यांन को छत की बल्ली में टगे धड़ों की खाल उतारते देख रहा था। लालटेन के प्रकाश में मांस के लोथड़े चमक रहे थे। वे दोनों बड़ी फूर्ती में खाल उतार रहे थे। बिना सिर के उलटी लटकी भेड़ को, नाद के पास भेड़ के काले कटे सिर को देखकर याकोव लुकीच मिहर गया, उसके घटने कापने लगे।

भेड़ की चमकती पीली पुतली में मौत के भय की छाप थी। उसे देखकर याकोव लुकीच को खोप्रोव की बीवी, उसकी लडखड़ाती भयकर फुसफुसाहट याद आ गयी “रिश्तेदार! प्यारे! किसलिये?” याकोव लुकीच न घिन के साथ भेड़ की बैगनी-गुलाबी लोथ की ओर देखा। तब की तरह खून की तीखी गंध में उसका जी मिचलाया, पर लडखड़ाये और वह तेजी में कोठरी में निकल गया।

‘हे भगवान, मांस तक नहीं देख पाता! गंध तक नहीं सह पाता।’

“तू आया क्यों था? तेरे बिना भी कर लेंगे, लिजलिजे।” पालावत्सेव खून में मनो, भेड़ की चर्बी की दुर्गंध छोड़ती उर्गालियों में सिगरेट लपेटते हुए मुस्कराकर बोला।

नाश्ते तक ले-देकर उन्होंने काम पूरा कर लिया। औरतो ने दुबो

को पिघला कर चर्बी निकाल ली। पोलोवत्सेव अपने कमरे में बंद हो गया (दिन भर वह वहां से नहीं निकलता था)। उसे भेड़ के मांस के साथ बदगोभी का ताजा शोरबा दिया गया, याकोव लुकीच के बेटे की बहू उसके कमरे में खाली कटोरा लायी ही थी कि अहाते का फाटक खटका।

“पिता जी! दवीदोव हमारे यहां आ रहा है,” सेम्योन चिल्लाया। सबसे पहले उमी ने दवीदोव को अहाते में घुसते देखा।

याकोव लुकीच के चेहरे का रंग उड़ गया। और दवीदोव झोड़ी पर भाड़ से बूटो की बर्फ भाड़कर जोर से खासता हुआ, रौब के साथ कदम रखता हुआ आ रहा था।

“मारा गया मैं!” याकोव लुकीच सोच रहा था। “देखो तो कुतिया की औलाद को, कैसे चलता है! मानो पूरी दुनिया का मालिक हो! मानो अपने घर में घूम रहा हो! अरे मारा गया मैं तो! शायद निकीता के लिये गिरफ्तार करने आया है हगामी, लग गया पता।”

दरवाजा खटका और तीखी पतली-सी आवाज सुनायी दी

‘आ सकता हूँ अदर?’

‘आइये, आइये,’ याकोव लुकीच जोर से बोलना चाहता था पर उसके मुंह में फुमफुमाहट ही निकली।

दवीदोव ने कुछ रुककर दरवाजा खोला। मेज पर बैठा याकाव लुकीच नहीं उठा (उठ नहीं सकता था! उसने कापते पैर तक फर्श में उठा लिय ताकि जूता की एंडियो की ठक-ठक न सुनायी दे)।

“नमस्ते मालिक!”

‘नमस्ते कामरेड!’ याकोव लुकीच और उसकी पत्नी समवत स्वर में बोले।

“बाहर तेज पाला पड़ रहा है ”

‘हां, पाला पड़ रहा है।’

“तुम्हारा क्या खयाल है, रई की फसल तो नहीं मारी जायेगी?” दवीदोव ने जेब में हाथ डालकर राख की तरह मैला रुमाल निकाला और उसमें नाक साफ की।

“आइये, कामरेड, बैठिये,” याकोव लुकीच बोला।

“बड़ा अजीब है, डर क्यों गया?” मालिक का फक चेहरा, कापते होठों को देखकर दवीदोव ने आश्चर्य के साथ सोचा।

“हा, तो रई की फसल का क्या होगा?”

“नहीं-नहीं, कुछ नहीं होगा बर्फ ने अच्छी तरह ढक दिया है वही शायद कुछ जम जाये, जहा हवा से बर्फ उड़ गयी।”

“अनाज से बात शुरू कर रहा है और अभी शायद कहेगा ‘चलो बाधा अपनी पोटली!’ किसी ने कही पोलोवत्सेव की खबर तो नहीं कर दी? तलाशी लेगा क्या?” याकोव लुकीच मोच रहा था। धीरे-धीरे उसने अपने भय को काबू में कर लिया, चेहरा तमतमाकर लाल हो गया, रोमो में से पसीना फूटकर माथे पर दुलकता मफेद-सी मूछो, दाढ़ी में ढकी ठोड़ी को तर कर रहा था।

“आइये-आइये, बैठक में चलिये।”

“मैं तुम्हारे साथ कुछ मलाह-मशविरा करने आया था। तुम्हारा पूरा नाम क्या है?”

‘याकोव, लुका का बेटा।’

“मतलब, याकोव लुकीच? हा तो, याकोव लुकीच, तुम सामूहिक फार्म के बारे में सभा में बहुत अच्छा बोले थे। बेशक, तुम ठीक ही कहते हो कि सामूहिक फार्म को जटिल मशीनों की भी जरूरत है। पर श्रम के गठन के मामले में तुम गलती पर हो, फैक्ट! तुम्हें फार्म का प्रबंधक बनाने की सोच रहे है। मुझे बताया गया है कि तुम अच्छे किमान हो ”

‘अरे आप अदर तो आटय कामरेड प्यारे! गाशा मामोवार चढ़ा दे। आप कुछ शेरबा तो चख लीजिये? या नमकीन तरबूज काट दूँ?’ आइये-आइये अदर तो आइये, हमारे प्यारे मेहमान! नये जीवन की ओर हमें ले ” याकोव लुकीच खुशी में नाच उठा, मानो किसी ने दिल पर पड़ा पन्थर हटा दिया हो। “विज्ञान का सहारा लेकर खेती करता था, आपन ठीक ही कहा अनाण्ड बाप-दादाओं के जमाने से चली आ रही गीत को बदलना चाहता था देखो तो कैसे जोतने है! यह तो धरती की लूट है! मुझे कृषि विभाग का प्रगस्ति-पत्र मिला है। सेम्योन! जरा मार्टिफिकेट तो लाना, वह जो फ्रेम में जड़ा है। अच्छा रहने दे, हम वहीं जा रहे है।”

याकोव लुकीच मेहमान को अदर के कमरे में ले जाने लगा और नजर बचाकर उसने सेम्योन को आख मारी। वह अर्थ भाप गया और पोलोवत्सेव के कमरे को बद करने के लिये गलियारे में निकला। पर

जब वह पोलोवत्सेव के कमरे में भाका तो उसके रोगटे खड़े हो गये कमरा खाली था। सेम्योन बड़ेवाले कमरे में गया। पोलोवत्सेव सिर्फ ऊनी मोज़ों में उस कमरे के दरवाजे के पाम खड़ा था जहाँ दवीदोव और याकोव लुकीच बातें कर रहे थे। उसने इशारे से सेम्योन को वहाँ में जाने को कहा और हिंस पशु की तरह खड़ा अपना कान किवाड़ पर टिका दिया। “बिल्कुल नहीं डरता, शैतान का बच्चा।” वहाँ से जाते हुए सेम्योन ने मोचा।

सर्दियों में ओस्त्रोव्नोव के घर के बड़ेवाले कमरे में कोई नहीं रहता। रंगे फर्श पर हर साल वे सन के बीज फैला देते थे। दरवाजे के पास सेब के अचार का लकड़ी का पीपा रखा था। पोलोवत्सेव पीपे के किनारे पर बैठ गया। उसे बातचीत का एक-एक शब्द सुनायी दे रहा था। तुषार से ढकी खिड़कियों से हल्की-सी गुलाबी रोशनी छनकर अंदर आ रही थी। पोलोवत्सेव के पैर ठिठुर रहे थे पर वह बिना हिले-डुले, किवाड़ के पीछे से जानी दुश्मन की फटी आवाज को कसक भरी घृणा के साथ सुन रहा था। “सभाओं में भौक-भौककर कुत्ते की आवाज फट गयी। मैं तुम्हें काश, अगर अभी इसका वक्त होता।” पोलोवत्सेव कमकर भिची मुट्टियों को छाती में चिपकाये मोच रहा था।

किवाड़ के पीछे से सुनायी दे रहा था

“हमारे फार्म के नेता जी, मैं तो यही कहूँगा कि अब पुराने ढंग से खेती करने में कोई त्रुटि नहीं। रई को ही लीजिये। क्यों उसे पाला मार देता है, देस्योतीना से अगर बीम पूद भी मिल जाये तो गनीमत है, कुछ तो बीज की भी भण्डाई नहीं कर पाने? पर मेरे खेत में इतनी घनी फसल हाँती है कि तुम चल नहीं सकते बालियों के बीच। अपनी घाँड़ी पर बैठकर जाता हूँ और बालिया काठी में भी ऊँची हाँती है। और बालिया भी हथेली से चौड़ी होती है। यह सब इर्मालिये कि मैं बर्फ को उड़ने नहीं देता हूँ, जमीन की प्यास बुझाता हूँ। कुछेक नागरिक ऐसे हैं कि सूरजमुखी की फसल जड़ के पास से काटते हैं, इस लालच में कि डठल ईंधन के काम आयेंगे। उन हरगमियों को गर्मियों में उपले बनाने का वक्त नहीं मिलता, पैदायशी आलसी जो हैं, वे यह नहीं मोचते कि अगर सूरजमुखी के फूल ही काटे जायें तो डठल बर्फ को रोके रहेंगे, हवा उनके बीच से बर्फ को उड़ाकर नहीं ले जा पायेंगी। बसंत में ऐसी जमीन पतझड़ में सबसे गहरी

जुताईवाली जमीन से भी बेहतर होती है। अगर बर्फ को नहीं रोकोगे खेत में, तो वह बेकार पिघल जायेगी, उसके पानी में न आदमी को फायदा होगा न जमीन को।”

“हा, तुमने बिलकुल ठीक कहा।”

“कामरेड दबीदोव, मेरी पालनहार सोवियत सत्ता ने यू ही मुझे प्रशस्ति-पत्र तो नहीं दिया। मैं तो सब समझता हूँ। वैसे तो कृषिशाली भी हमेशा सही नहीं होते, पर उनके ज्ञान में बहुत-सी सही बातें भी हैं। उदाहरण के लिये ले, मैं कृषि की पत्रिका मगवाना था, उसमें एक ऐसे खूब पढ़े-लिखे आदमी ने, जो छात्रों को पढ़ाते हैं, लिखा था कि रई पाले में नहीं मारी जाती बल्कि इसलिये कि वह जमीन जो बर्फ से ढकी नहीं होती फटने लगती है और बालियों की जड़ों को काट देती है।”

“अच्छा। मैंने नहीं सुना था इसके बारे में।”

“उमने ठीक ही लिखा है। मैं उसमें सहमत हूँ। जाच करने के लिये मैंने खूद प्रयोग किया था। खोदकर देखा कि सचमुच ही बीज से फूटी पतली-पतली जड़ें कटी हुई हैं। बीज को पानी नहीं मिलता और वह मर जाता है। अगर आदमी की नसे काट दो तो वह भला जी पायेगा? बीज का भी यही हाल होगा।”

“हा, याकोव लुकीच, तुम बिलकुल ठीक कहते हो। बर्फ को बचाकर रखना चाहिये खेतों में। तुम मुझे ये कृषि पत्रिकाएँ पढ़ने के लिये दे दो।”

“तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा। वक्त नहीं मिलेगा उसका। तेरी जिदगी के गिने-चुने दिन बचे हैं।” मुस्कराकर पोलोवत्सेव मन ही मन बोला।

“और पतझड़ में जुते खेतों में बर्फ कैसे रोकी जाये? आड़ों की जरूरत है। मेन टर्नियों में खनी आड़े बनाने की तरकीब ढूँढ़ निकाली है। बीहड़ों का कुछ करना चाहिये नहीं तो वे हर साल एक हजार दस्य्यातीना से ज्यादा जमीन काट देते हैं।”

“यह तो सब ठीक है, पर तुम मुझे यह बताओ कि ढांगों के लिये बाड़ों को गर्म कैसे बनाये, ताकि लागत भी ज्यादा न आये और काम चगा हो, क्यों?”

“बाड़ों को? यह तो हम कर डालेंगे। लुगाइयों को टर्नियों

के बाड़ों पर मिट्टी लेपने को कह देंगे, यह हुआ एक तरीका। अगर नहीं तो दोहरी बाड़ों के बीच ऊपर तक सूखा गोबर भर सकते हैं ... ”

“ ठीक ... अच्छा यह बताओ की बीजों की सफाई कैसे करेंगे ? ”

पोलोवत्सेव पीपे पर आराम से बैठना चाहता था पर भारी ढक्कन उसके नीचे से खिसककर बड़े शोर के साथ गिर पड़ा। पोलोवत्सेव दान पीसकर रह गया जब दवीदोव ने पूछा :

“ क्या गिरा ? ”

“ शायद किसी ने कुछ गिरा दिया। सर्दियों में हम उस कमरे में नहीं रहते, गर्म करने के लिये बहुत ईंधन की जरूरत पड़ती है। मैं आपको उम्दा क्रिस्म की मन के बीज दिखाना चाहता हूँ। बाहर से मंगवाये हैं। उमी कमरे में रखे हैं। चलिए। ”

पोलोवत्सेव उछलकर गलियारे में घुस गया, किवाड नहीं चरमराया क्योंकि पहले से ही उसके कब्जों में हंस की चर्बी लगी थी, इसलिये पोलोवत्सेव चुपचाप वहां से चला गया ...

दवीदोव बगल में पत्रिकाओं का पुलिंदा दबाये याकोव लुकीच के घर से निकला। वह उसके साथ हुई बातचीत से संतुष्ट था और उसे अब पूरा विश्वास हो गया कि ओम्ब्रोव्जोव बड़े काम का आदमी है। “ ऐसे लोगों की मदद से तो माल भर में गांव की काया पलटी जा सकती है ! अक्लमंद आदमी है, काफी पढ़ा-लिखा है। खेतीबाड़ी और ज़मीन की कितनी समझ है इसे ! अपने काम का माहिर है ! न जाने क्यों मकार को इसमें चिढ़ है। बेशक, सामूहिक फार्म को ऐसे आदमी से फायदा बड़ा होगा ! ” ग्राम सोवियत की ओर जाने हुए वह सोच रहा था।

१५

याकोव लुकीच की देखा-देखी ग्रेम्याची में हर रात ढोर काटे जाने लगे। अधेरा छाते ही इधर-उधर से किसी भेड़ की दबी में SS, किसी मूअर का चीत्कार या बछड़े का क्रंदन भरा रंभाना मन्नाटे को भेदता सुनायी पड़ता। सभी काट रहे थे, सामूहिक फार्म में शामिल होनेवाले भी और अपनी अलग से खेती करनेवाले किसान भी। बैलों,

भेड़ो, सूअरो, गायो तक को काट रहे थे। वे नमलदार ढोरो को भी काट रहे थे दो रातों में ग्रेम्याची के ढोरो की मख्या आधी हो गयी। गाव भर के कुत्ते छीछड़े छक रहे थे, भडारगृह और तहखाने मास में ठसाठस भर गये। दो दिन में सहकारी सस्था की दुकान में डेढ़ साल से पड़ा कोई दो सौ पौद नमक बिक गया। “काट डालो, अब हमारे नहीं है।”, “काटो, हर हालत में कसाईखाने में भेज देगे।”, “काटो, मामूहिक फार्म में तो माम का स्वाद ही भूल जाओगे।” इस प्रकार की अफवाहे फैलने लगी। और लोग अपने पशुओं को काट रहे थे, ठूस-ठूसकर खा रहे थे। छोटे-बड़े, बूढ़े और जवान, सबके पेट दुख रहे थे। खाने के समय घर-घर में मेजों पर उबले और भुने मास का ढेर होता। हरेक के होठ चिकनाई से मने होते, हरेक ऐसे डकारे लेता मानो तेरहवी के भोज में लौटा हो। ऐसी पेट पूजा में हरेक की आँखों में खुमार छाया रहता।

बुढ़ा श्चुकार भी पीछे न रहा, उसने अपनी एक साल की बछिया हलाल कर डाली। बुढ़ा-बुढ़िया दोनों मिलकर उम्रे छत की कड़ी में टागना चाहते थे ताकि खाल उतारने में आसानी रहे, पर उनकी सभी कोशिशें बेकार गयी (खा-खाकर मोटी बछिया बहुत भारी हो गयी थी।), बछिया की लोथ उठाने के कारण बुढ़िया की कमर में चिनक तक आ गयी और पूरे हफ्ते तक उसे भाड़-फूक करनेवाली में कमर पर लोहे का देग चढ़वाना पड़ा। अगले दिन बुढ़े श्चुकार को खुद खाना बनाना पड़ा, और या तो बुढ़िया की बीमारी की चिंता के कारण या लालच के कारण, जो भी हो, वह दोपहर के खाने में इतना अधिक उबला मास खा गया कि तब से कुछ दिनों तक घर में घुसा ही नहीं, टाट की पतलून के बटन बद करने की नौबत ही नहीं आयी, कड़कती ठंड में वह दिन-रात चौबीस घंटे घर के पिछवाड़े में सूरजमुखी के खेत में गायब रहता। उन दिनों उसके टूटे-फूटे भोपड़े के सामने से गुजरनेवाला कोई भी आदमी यह दृश्य देख सकता था पिछवाड़े में सूरजमुखी के डठलों के बीच में बुढ़े की टोपी एक ही स्थान पर जड़ दृष्टिगोचर होती, फिर अचानक बुढ़ा श्चुकार खेत से प्रकट होता और गली की ओर देखे बिना आड़े-सीधे डग भरता दोनों हाथों से खुली पतलून को थामे भोपड़े की ओर चल पड़ता। बड़ी मुश्किल से पैर घमीटता वह फाटक तक पहुँचता और अचानक, मानो उसे

कोई फ़ौरी काम याद आया हो, मुडता और सरपट दौडता सूरजमुखी के खेत में घुस जाता। और फिर से सूरजमुखी के डठलो के बीच बुड्डे की जड़ टोपी दिखायी देती। ठंड तो कड़ाके की पड़ रही थी। और तेज हवा बुड्डे को बर्फ की दीवार से घेर रही थी

दूसरे दिन शाम ही को रजम्योल्नोव को पता चला कि होगा को व्यापक पैमाने पर काटा जा रहा है और वह दौड़ा-दौड़ा दबीदांव के पास आया।

“क्यों, बैठे हो?”

“पढ़ रहा हूँ।” दबीदांव ने छोटी-भी पीली पुस्तिका का पृष्ठ पलटा और किसी सोच में डूबे मुस्कराया। “यह ऐसी किताब है कि कुछ पूछो नहीं।” टूटे दातवाला मुह खोलकर वह हम पड़ा।

“नावल पढ़ रहे हो। या प्रेम की कविताये। और पता है गांव में क्या ”

‘पागल हो तुम भी! कैसे नावल, कैसी कविताये?’ दबीदांव ने हमने हुए अद्रेई को अपने सामने स्टूल पर बिठाया और उसके हाथों में पुस्तिका थमा दी। ‘अगर यह तो रोस्ताव के पार्टी कार्यकर्ताओं के सम्मेलन में अद्रेयेव का भाषण है। भइया, उसके सामने तो दस नावल भी कुछ नहीं! मच कहता हूँ! पढ़ना शुरू किया तो खाने की मुछ ही न रही। अब तो शायद ठंडा हो गया होगा।’ दबीदांव के सावले-से चेहरे पर खीज की परछाई पड़ी। वह उठा और अपनी छोटी पतलून की जेबों में हाथ ठूसकर रसाई की ओर चल पड़ा।

‘तुम मंगी भी बात सनोगे?’ भइलाकर रजम्योल्नोव ने पूछा।

“क्यों नहीं? जरूर मनुगा। अभी आता हूँ।”

दबीदांव रसाई से वदगोभी के ठंडे शोरबे से भरी कूड़ी लाया। उसने रोटी का बड़ा टुकड़ा तोड़कर मुह में डाला और उसे चबाते हुए अपनी थकी, स्लटी आंखों में रजम्योल्नोव को टुकुर-टुकुर ताकने लगा। ठंडे शोरबे की मतह पर वसा के नागगी चक्ते जम गये थे, लाल मिर्च का तैरता टुकड़ा लपट की तरह चमक रहा था।

“माम के साथ है शोरबा?” अद्रेई ने कूड़ी की ओर उगली में इशारा करते हुए, व्यग्रपूर्ण लहजे में प्रश्न किया।

दबीदांव ने खीमे निपोडकर ‘हां’ में मिर हिलाया।

“कहा में आया माम?”

“पता नहीं। क्यों क्या हुआ?”

“हुआ यह कि गाव में आधे मवेशी काटे जा चुके हैं।”

“किसने काटे?” दबीदोव ने रोंटी के टुकड़े को हाथ में उठाकर पलटा और फिर रखकर एक तरफ सरका दिया।

“शैतानो ने।” रजम्योलोव के माथे पर घाव का निशान लाल हो गया। “सामूहिक फार्म के अध्यक्ष कहलाते हो। विगट फार्म बनाना चाहते हो। तुम्हारे ही किसान काट रहे हैं, और कौन काटेगा? अलग खेती करनेवाले भी। सब पागल हो गये हैं। अध्राधुध काटे जा रहे हैं, बैलो तक को काट रहे हैं।”

“तुम्हारी भी क्या आदत है ऐसे चिल्लाते हो जैसे सभा में बोल रहे हो।” शोरबा खाते हुए दबीदोव रुष्ट होकर बोला। “तुम मुझे शांत होकर, सब से बताओ कि कौन काट रहा है और क्या काट रहा है।”

“मुझे कैसे मालूम कि क्यों काट रहे हैं?”

“तुम हमेशा ऐसे ही चीख-चिल्लाकर बोलते हो। आखे बंद करके लगता है कि वही मनु मन्त्रह का प्यारा समय लौट आया।”

“पूरी बात मनुकर तुम भी कम नहीं चिल्लाओगे।”

रजम्योलोव ने ढोरो की कटाई के बारे में जो कुछ उसे मालूम था बताया। अंत में दबीदोव अनमने ढंग में, बिना चबाये खाना निगल रहा था। उसकी हसी काफूर हो गयी, आखों के पास झुर्रियाँ मिमटकर घनी हो गयी, देखते-देखते चेहरे पर बुढ़ापा-सा छा गया।

‘फौर्न जाकर सभा बुलवाओ। नागूल्लोव को अच्छा रहने दो मैं खुद उसके पास जाऊंगा।’

“किसलिये बुलानी है?”

“क्यों किसलिये? ढोरो को काटने की मनाही कर देगे। सामूहिक फार्म में निकालकर मुकदमा चलायेगे। इसकी बेहद जरूरत है, फैक्ट। यह सब कुलको की कारस्तानी है। लो मिगरेट पियो और जाओ अरे हा, मैं तो शेखी मारना ही भूल गया।”

दबीदोव के चेहरे पर हर्ष की मुस्कान दौड़ गयी, सक्ली से होठ भिकाइने पर भी वह अपनी खुशी को नहीं छिपा पा रहा था।

“मुझे आज लेनिनग्राद में पार्सल मिला है हा-हा साथियो ने भेजा है।” उसने झुककर पलग के नीचे से पेटी निकाली और

खुशी से लाल होकर उसका ढक्कन उठाया।

पेटी में सिगरेटों के पैकेट, बिस्कुट का डिब्बा, किताबें, लकड़ी का नक्काशीदार सिगरेट केस और न जाने क्या-क्या चीजें पुलिंदों और लिफाफों में बेतरतीब पड़ी थीं।

“साथी भूले नहीं मुझे, यह सब भेजा है यह भंडा, हमारे लेनिनग्राद की सिगरेटें हैं। देखो चाकलेट तक भेजी है, मुझे क्या जरूरत है इसकी? किसी के बच्चों को दे दूंगा। प्रमुख बात तो यह कि उन्होंने मुझे भेजी है ये चीजें। ठीक है न? सबसे बड़ी बात तो यह है कि उन्होंने मुझे याद किया, यह सब भेजा, चिट्ठी भी है”

दवीदोव का स्वर अस्वाभाविक रूप में कोमल हो गया। कामरेड दवीदोव को ग्रैंड पहली बार इतना मृदु भावुक दीख रहा था। न जाने कैसे दवीदोव की मनोदशा रजम्योलोव पर भी हावी हो गयी। वह कुछ प्रिय बात कहना चाहता था पर उसके मुह में निकला

“चलो ठीक है। तुम बढ़िया आदमी हो, इसलिये शायद भेजा है। देखो तो माल एक-दो रूबल का नहीं है।”

“अरे बात इसमें थोड़े ही है। तुम तो समझते हो, मैं तो बिल्कुल छड़ा हूँ न बीवी है, न ही कोई और है मेरा। पर देखो पार्सल आया है। कितनी मर्मस्पर्शी बात है चिट्ठी में तो देखो कितने लोगों के हस्ताक्षर हैं।” दवीदोव एक हाथ में सिगरेट बढ़ा रहा था, उसके दूसरे हाथ में हस्ताक्षरों से भरा पत्र था। हाथ उसके कांप रहे थे।

रजम्योलोव ने लेनिनग्राद की सिगरेट सुलगाकर पूछा

“तुम अपने नये क्वार्टर में तो खुश हो? मालकिन ठीक-ठाक है? कपड़े धोने का कोई प्रबंध किया? तुम या तो मेरी माँ को दे दिया करो या फिर मालकिन से बात कर लो तुम्हारी कमीज तो मैल में इतनी चीकट है कि तलवार से भी न कटे और पसीने की भी ऐसी बू आती है जैसे किसी घोड़े में।”

दवीदोव का चेहरा शर्म से लाल हो गया।

“हा, यह भी समस्या है नागूलोव के यहाँ इतना अच्छा नहीं लगता था सीने-धोने का काम जैसे-तैसे खुद कर लेता था। हा, यह सच है कि जब मैं आया हूँ एक बार भी नहीं नहाया। कमीज भी यहाँ की दुकान में साबुन नहीं मिला, मालकिन से कहा था पर वह बोली ‘साबुन लाओ’। साथियों को लिख दूंगा कि कपड़े

धोने का साबुन भेज दे। और मकान यह ठीक ही है, बच्चे-वच्चे नहीं है इसलिये आराम में पढाई-वढाई की जा सकती है।”

“ठीक है, तुम मेरी मा को दे जाना, वह धो देगी। तुम बिलकुल भी मकोच में मत पडना। वह बहुत दयालु है।”

“अरे चिता मत करो, कोई जुगाड बिठा लूंगा, श्रुतिया। हा, सामूहिक फार्म के लिये हम्माम जरूर बनाना चाहिये, मच कहता हू। बना डालेंगे, फैक्ट! अच्छा, जाओ सभा का प्रबन्ध करो।”

रजम्योन्तोव मिगरेट पीकर चला गया। दबीदोव ने पेटो में यू ही पैकेट-पुलिदे उलटे-पलटे, अपनी कमीज का मैला कालर ठीक किया, काले बालों पर हाथ फेरा और ओवरकोट पहनने लगा।

राम्ने में वह नाग्लोव के यहा गया। उमने भौंटे मिकोडकर नजरे मिलाये बिना दबीदोव का स्वागत किया।

“ढोर काट रहे है अपनी जायदाद का दुख हो रहा है। टुटपु-जियो में ऐसी खलबली मची हुई है कि कुछ पुछो मत।” अर्भवादन करके वह बुदबुदाया। पत्नी की ओर पलटकर वह सख्ती में बोला ‘लूका, तू जा यहा में। कुछ देर मकान मालकिन के पास बैठ ले, नेरे मामने मैं नहीं बोल सकती।”

लूका रमोई में चली गयी, वह उदाम लग रही थी। जिस दिन स कुलक परिवारों के साथ तिमोफेई नकटा चला गया था तब में वह कुम्हलायी-कुम्हलायी रहती थी। उसकी सूजी आखों के नीचे नीले-नीले गढहे पड गये थे, नाक तक मुर्दों की तरह पैनी हो गयी थी। लगता था कि अपने प्रियतम के विछोह में उमका दिल टूट गया। जब कुलक परिवार ध्रुवीय शीत क्षेत्र में भेजे जा रहे थे वह खुलेआम बहयाई में दिन भर तिमोफेई की प्रतीक्षा में बोश्चोव के अहाते के पास मडराती रही। और शाम को जब कुलक परिवारों और उनके माल-असबाब से लदे छकडे ग्रेम्याची में रवाना हुए वह बर्फ पर ढहकर बिलख-बिलखकर रोने लगी। तिमोफेई छकडे में उतरकर उसकी ओर दौड़ने ही वाला था पर फ़ोल नकटे ने सख्ती में चिल्लाकर उसे रोक दिया। तिमोफेई घृणा और क्रोध के कारण अपने सफेद होठों को काटता हुआ मुड-मुडकर ग्रेम्याची की ओर देखता छकडे के पीछे-पीछे चला गया।

जिस तरह पाप्लर की झडी पत्तिया कर्णप्रिय खडखड नहीं करेगी

उसी तरह तिमोफेई के स्नेहपूर्ण शब्द सुनना अब लूश्का की किस्मत में बदा नहीं। गुलाब के बिना तितली भला कैसे जियेगी! अब कौन उसकी आँखों में भाककर स्नेह के साथ कहेगा “लूश्का, आप इस हरे लहगे में इतनी सुंदर लगती हैं! इसमें तो आप पुराने जमाने के किसी अफसर की बीवी को भी मात देती हैं।” या फिर कौन उस महिलाओं के गीत के इन शब्दों में विदा किया करेगा “अलविदा मेरी सुंदरिया। ले गयी दिल तेरी सुंदरता।” सिर्फ तिमोफेई ही अपनी चापलूसी और बेहयाई से लूश्का के मन में आग लगा सकता था।

उस दिन से वह पति के लिये बिल्कुल परायी हो गयी थी। तब मकार शांत स्वर में, शब्दों को तौल-तौलकर बड़ी देर तक बोलता रहा

“चाहे तो कुछ दिन और रह ले मेरे यहाँ। फिर अपने फीते, गेटिम, क्रीम की शीशिया समेटकर मेरी नजरों से दूर हो जा। तुझमें प्रेम करके मैं बहुत जग-हसाई मह चुका हूँ पर अब मेरा धीरज टूट गया। कुलक के बेटे से तूने यारी की, मैं चुप रहा। पर अब जब तू उसके गम में सामूहिक फार्म की सचेत जनता के सामने फूट-फूटकर रोयी—मैं नहीं सह सकता। तेरे साथ ना विश्व क्रांति का दिन देखना तो क्या नसीब होगा मैं पहले ही पटरी से उतर जाऊँगा। तू मेरे लिये फालतू बोझ की तरह है। मैं उनारकर फेंक रहा हूँ यह बोझ। समझी?”

“समझी,” यह कहकर लूश्का चुप रह गयी।

उस शाम को दबीदाव और मकार के बीच खलकर बात हुई।

“लुगाई ने भरे बाजार तुम्हारी नाक कटवा दी। नागूल्नोव, अब तुम कैसे सामूहिक फार्म के लोगों में नजरे मिलाओगे?”

“तुम फिर वही पुराना राग ”

“तुम ठूठ हो। निरे उल्लू हो।” दबीदाव की गर्दन तमतमा गयी, साथे पर नमै फल गयी।

“समझ में नहीं आता, तुमसे बात कैसे करूँ?” नागूल्नोव कमरे में चहलकदमी करते हुए बोला, उगलिया चटकाते हुए वह मद-मद चालाकी भरी मुस्कान के साथ कहने लगा “कुछ भी गलत बोलू तुम फौर्न मुझ पर ‘अराजकतावादी’, ‘विचलनवादी’ का ठप्पा लगा देते हो। तुम्हें मालूम है कि मैं इस लुगाई को किस नजरिये से देखता

हूँ और किमलिये मैंने यह सब सहा ? तुमको बता तो चुका हूँ कि मैं उसके बारे में नहीं सोचता। तुमने कभी भेड़ की दुम के बारे में मोचा है ? ”

“न-नहीं ” बातचीत के विषय में इस आकस्मिक परिवर्तन से चकित दबीदोव के मुँह में यही निकला।

“पर मैंने इस विषय में मोचा था, कि प्रकृति ने भेड़ को क्यों ऐसे भारी-भरकम चौड़ी दुम दी है। वैसे तो देखने में बेकार लगती है। घोंडे या कुत्ते तो अपनी दुम से मक्खियाँ उड़ाते हैं। पर भेड़ की दुम में तो चार मेर चर्बी होती है, उसे थुल-थुल झुलाती चलती है, मक्खियाँ उड़ा सकती नहीं उसमें, गर्मियों में दुम से गर्मी लगने के अलावा उसे और मिलना क्या है, ऊपर से गोखरू और चिपक जाते हैं ”

“दुबो और दुमो का क्या वास्ता इससे ? ” दबीदोव को गुस्मा आने लगा।

पर नागूल्लोव कोई ध्यान दिये बिना आगे बोला

“मेरे खयाल में लाज ढापने के लिये होती है उसकी दुम। आराम-देह तो नहीं है पर कोई चारा भी नहीं है उसके लिये। और मुझे भी लुगाई की, मतलब पत्नी की वैसे ही जरूरत है जैसे भेड़ को अपनी दुम की। मैं तो विश्व क्रांति की आस में जीता हूँ। मैं उसकी अपनी प्रिया की तरह बाट जोह रहा हूँ और लुगाई तो मेरे लिये कुछ नहीं बस ऐसे ही है। उसके बिना भी नहीं रहा जा सकता, लाज भी तो ढापनी होती है। मर्द मैं बाका हूँ, चाहे बीमार ही मही पर कभी-कभी तो उस काम भी आ ही सकता है। अगर टांग उठाना मेरी लुगाई की कमजोरी है तो जाये भाड़ में ! मैंने उससे माफ-साफ कह दिया था ‘अगर तेरा जी मचलता है तो जा, पर एक बात याद रखियो, अगर दामन में कुछ लायी या कोई बीमारी लगी तो गर्दन मरोड़ दूँगा ।’ और तुम कामरेड दबीदोव यह सब समझते नहीं। तुम तो लोहे की छड़ की तरह हो। और क्रांति का भी तुम ठीक-ठीक अर्थ नहीं समझते क्यों तुम बिना बात लुगाई का दोष मेरे सिर मढ़ते हो ? और तो सब ठीक है पर हमारे वर्गीय दुश्मन के साथ यारी और उसके गम में गला फाड़कर रोने के लिये इस नागिन, इस बिच्छू को घर से निकाल दूँगा। पर पीट मैं उसे नहीं सकता। मैं नये जीवन में कदम रख रहा हूँ इस-

लिये अपने हाथ नहीं गंदे करना चाहता। पर तुम होते तो शायद पीट देते, क्यों? पर तब तुम कम्युनिस्ट और पुराने ज़माने के किसी बाबू के बीच क्या फर्क रह जाता? वे तो हमेशा अपनी पत्नियों को पीटते थे। यही तो असलियत है। नहीं, भइया, तुम लूशका के बारे में मुझसे बात करना छोड़ दो। मैं खुद निबट लूंगा, इस मामले में तुम फालतू हो। लुगार्ड का मामला बड़ा गंभीर है। उस पर बहुत कुछ निर्भर करता है।” नागूल्लोव किसी मोच में डूबा मुस्कराया और ज़ोंश के साथ आगे बोलने लगा “जब सारी सीमाएँ मिटा देगे, मैं ही सबसे पहले ज़ोंश-जोंश से चिल्लाकर कहूँगा ‘जगओ, दूसरी जातियों में शादी करो!’ सब घुल-मिल जायेंगे और धरती पर गोरे, काले, पीले नहीं रहेंगे, तब गोरे अपने को कालो में ऊँचा नहीं कह सकेंगे क्योंकि सब एक जैसे गेहुएँ रंग के होंगे। कभी-कभी रात को मैं इसकें बारे में भी सोचता हूँ”

“मकार, तुम तो सपनों की दुनिया में रहते हो।” दवीदोव झुंझलाकर बोला। “मैं तुम्हारी बहुत-सी बातें समझ नहीं पाता। नसली भेदभाव को तो मैं समझता हूँ पर बाकी सब रहन-सहन के प्रश्नों में मैं तुमसे सहमत नहीं हूँ। भाड़ में जाओ! बस अब मैं तुम्हारे यहाँ नहीं रहूँगा। फैक्ट!”

दवीदोव ने मेज के नीचे से अपना सूटकेस निकाला (उसमें बेंकार पड़े औज़ार खड़खड़ाय) और चल पड़ा। नागूल्लोव उसे सामूहिक फार्म के नि सतान किमान फिलिमानोव के यहाँ छोड़ आया जहाँ दवीदोव के रहने का प्रबंध किया गया था। तब मारे रास्ते वे बोवाई के बारे में ही बातें करने लगे, रहन-सहन और परिवार के प्रश्नों की चर्चा उन्होंने फिर कभी नहीं की। तब से उनके संबंधों में और अधिक ठंडक आ गयी।

इस बार भी नागूल्लोव ने नज़रे मिलाये बिना दवीदोव का स्वागत किया पर जब लूशका बाहर चली गयी वह कुछ मंजीव होकर बोला

“ढोंगे को काट रहे हैं, हगमी! चाहे मड जाये पर सामूहिक फार्म को न देना पड़े। मैं तो यह सुभाव दूँगा कि आज ही सभा में, ढोंगे को काटनेवालों को गोली मारने की सिफारिश दी जाये।”

“क्या कहा?”

“कह रहा हूँ, गोली मार दो! कौन यह सजा दे सकता है?”

लोक न्यायालय तो नहीं दे सकता, क्यों? ग्याभन गायो को काटनेवाले एक-दो को उतार देते मौत के घाट तो बाकी सब ठंडे हो जाते। अब तो पूरी मस्ती से काम लेना चाहिये।”

दबीदोव सड़क पर टोपी पटककर कमरे में चहलकदमी करने लगा। उसके स्वर में असतोष का पुट था

“तुम फिर हद से ज्यादा तुम्हारे साथ तो मुसीबत है, मकार। अरे तुम खुद सोचो भला ढोर को काटने के लिये मौत की सजा दी जा सकती है? ऐसे कानून भी नहीं है। केन्द्रीय कार्यकारिणी और मंत्री-परिषद की आज्ञा पति निकली थी, उसमें भी इस विषय में साफ-साफ कहा गया है दो साल की कैद, जमीन जब्त की जा सकती है, बार-बार ऐसा करनेवालो को निर्वासित किया जा सकता है और तुम कहते हो कि मृत्यु-दंड की अपील करनी चाहिये। सचमच तुम भी अजीब ही हो”

“कोई अजीब-वजीब नहीं हूँ। तुम बस अपनी नाप-तौल में व्यस्त हो। पर खेत कैसे जोतोगे? किम में जोतोगे अगर मार्महक फार्म में शामिल होनेवाले बैलो को काट देगे?”

मकार ने दबीदोव के पास आकर उसके चौड़े कंधों पर हाथ रखे, वह दबीदोव से एक मिग लम्बा था ऊपर से उसकी आँखों में भाककर वह बोला

“सेम्योन प्यारे! तुम्हारा दिमाग क्यों मुस्त है?” और लगभग चिल्ला पड़ा “अरे फसल नहीं बो पाये तो हम मारे जायेंगे। तुम समझते नहीं? ढोर-डगर काटने के लिये दो-तीन को जरूर गोली मार देनी चाहिये। कुलको को मारनी चाहिये। उन्ही की करतूत है। ऊपरवालो से अनुरोध करना चाहिये।”

“तुम तो उल्लू हो।”

‘मैं फिर निरा उल्लू रह गया’ नागूल्नोव ने फिर झुकाया और फिर उसे भटके में सीधा करके चिल्लान लगा ‘सब कुछ काटेगे। गृह-युद्ध की तरह ही मोर्चा सभालने का वक्त आया है, चारो ओर से दुश्मन चढ़ाई कर रहा है, और तुम! तुम जैसे लोग विश्व क्रांति का सत्यानाश कर दोगे। तुम जैसे बुद्धों की वजह से वह नहीं आ पायेगी। वहाँ सब तरफ पूजीवादी मजदूरों का खून चूस रहे हैं, लाल चीनियो फ्री चटनी बना रहे हैं, काले लोगो पर जुल्म ढा रहे

हैं और तुम यहां दुश्मनों से लल्लो-चप्पो करते हो ! शर्म की बात है ! बड़ी शर्म की बात है ! अपने उन सगे भाइयों के बारे में सोचकर कलेजा फटता है जिन पर विदेशों में पूंजीवादी जुल्म के पहाड़ ढा रहे हैं। इसी वजह से मैं अखबार नहीं पढ़ पाता ! .. अखबार पढ़कर मेरा कलेजा मुंह को आ जाता है ! और तुम ... तुम अपने सगे भाइयों का ऐसे खयाल रखते हो जो हमारे दुश्मनों की जेलों में सड़ रहे हैं ! तुम्हें उन पर बिलकुल भी तरस नहीं आता ! .. ”

दबीदोव ने जोर से नाक सुड़की और अपने चिकने, काले बालों में उंगलियां फेरकर बोला :

“ भाड़ में जाओ तुम ! कैसे तरस नहीं आता ? फ्रैक्ट ! और कृपा करके तुम चिल्लाओ मत ! खुद पगले हो और दूसरों को भी पगला बनाने पर उतारू हो ! क्या युद्ध में मैंने लूटका के मुदर नयनों की खातिर प्रतिक्रांतिकारियों का मफ़ाया किया था ? तुम क्या कहना चाहते हो ? होश में आओ ! गोली मारने की बात तक नहीं हो सकती ! बेहतर तो यही होता कि तुम प्रचार का काम करते, हमारी नीति समझाते, और गोली मारना तो कोई मुश्किल काम नहीं है ! तुम हमेशा इसी तरह की बातें किया करते हो ! ज़रा-सी बात पर तुम बिदक जाते हो। अब तक तुम क्या कर रहे थे ? ”

“ वही, जो तुम कर रहे थे ! ”

“ यही तो बात है ! हम ने इस अभियान में ढील दे दी और अब ग़लती ठीक करने के लिये काम करना चाहिये न कि गोली मारने की बातें ! छोड़ दो तुम हिस्टीरिया करना ! काम करो ! लुगाई कहीं का ! नेल पालिश में रंगे नाखूनोंवाली लुगाई से भी बदतर हो ! ”

“ मेरे खून में रंगे हैं ! ”

“ सभी के ऐसे हैं जिन्होंने बिना दस्ताने पहने लड़ाई लड़ी थी ! ”

“ मेम्योन, तुम कैसे मुझे लुगाई कह सकते हो ? ”

“ बस यूँ ही कह दिया । ”

“ तुम अपनी बात वापस लो, ” नागूल्लोव ने शांत स्वर में अनुरोध किया ।

दबीदोव ने उसकी ओर देखा और हंसकर बोला :

“ अच्छा ले लेता हूँ वापस । तुम शांत हो जाओ और चलो सभा में । ढोंगों को काटने के खिलाफ़ ज़बरदस्त प्रचार करना चाहिये ! ”

“कल दिन भर मैं घर-घर जाकर लोगों को समझाता रहा।”

“यह तो अच्छी बात है। हम सबको एक बार फिर जाना चाहिये घर-घर।”

“तुम फिर वही बात कल बाहर निकलते हुए सोचना कि मैंने उन्हें मना लिया, समझा लिया, पर जैसा ही बाहर निकलता किमी कटते सुअर की चे-चे सुनायी पड़ती। और मैं तो थोड़ी देर पहले ही उस हरामी सपत्ति प्रेमी को एक घंटे में विश्व क्रांति और कम्युनिज्म के बारे में समझा रहा था। और कैसे बोल रहा था। खुद का दिल पसीज जाता, आखों में आसू आ जाते। नहीं, उन्हें मनाने का कोई फायदा नहीं, पीट-पीटकर उसे मिखाना चाहिये ‘कुलक के बहकावे में मत आ, हरामी। उसकी तरह जायदाद में मोह मत कर। हरामजादे डोंग-डोंगर को मत काट।’ वह तो मोचता है कि बैल ही को हलाल कर रहा है, पर वास्तव में तो वह विश्व क्रांति की पीठ में छुरा भोक रहा है।”

“किसी को पीटना चाहिये, किमी को मिखाना, ‘दबीदोव ने फिर अपना रवैया दोहराया।

वे अहाने में निकले। गीली बर्फ की आधी चल रही थी। बर्फ के चिपचिपे गाले छतों पर गिरकर पिघल रहे थे, पुरानी मैली बर्फ का ढक रहे थे। घुप्प अधेरे में वे स्कूल पहुँचे। मभा में केवल आधे निवामी जमा हुए थे। रजम्योल्लोव ने ‘विद्वेषपूर्ण पशुवध के विरुद्ध संघर्ष के उपायों’ के बारे में केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति और मंत्री परिषद की आज्ञा पढ़कर सुनायी। फिर दबीदोव ने भाषण किया। अंत में उन्होंने साफ-साफ यह सवाल उठाया

“नागरिकों, हमारे पास सामूहिक फार्म में भरती के लिये छुट्टीय प्रार्थना-पत्र है। कल मभा में उन पर गौर करेंगे, और जिन लोगों ने कुलकों के फुसलावे में आकर फार्म में भरती होने में पहले संवेशी काट दिये उनको हम भरती नहीं करेंगे।”

“और सामूहिक फार्म में शामिल हो चुके लोग अगर अपने जवान संवेशी काटेंगे तो?” ल्यूबीशकिन ने पूछा।

“उनको निकाल देंगे।”

मभा में खलबली मच गयी।

“तो कर दो बद फार्म। गाव में एक भी घर ऐसा नहीं जहाँ

मवेशी न काटे गये हों!" बोश्चोव चिल्लाकर बोला।

नागूलोव मुट्ठी भीचकर उस पर चढ़ गया:

"कुलक के चमचे तू चुप रह! तू फार्म के मामले में अड़ंगा मत डाल, तेरी मदद नहीं चाहिये हमें! क्या तूने खुद तीन साल का बैल नहीं काटा?"

"अपने ढोरो का मैं खुद मालिक हू।"

"देख लेना, कल मैं तुझे जेल भिजवा दूंगा, वही दिखाना अपना मालिकाना।"

"यह तो बहुत ज्यादाती है! बहुत ही ज्यादा सख्त कानून है।" कोई फटे स्वर में चिल्लाया।

सभा में हालांकि लोग कम थे पर फिर भी वह खूब गर्मागर्म रही। गांववाले चुपचाप स्कूल की इमारत से बाहर निकले और झुंड बनाकर चलते हुए आपस में विचार-विमर्श करने लगे।

"न जाने क्यों मैंने दो भेड़े काट डाली?!" सामूहिक किसान सेम्योन कुभेन्कोव ल्युबीशकिन से शिकायत कर रहा था। "निकाल लां तुम अब यह माम मेरे गले में हाथ डालकर"

"अरे लड़के, मैं खुद तुम से बेहतर नहीं हूँ, बकरी काट डाली" ल्युबीशकिन ने उमास छोड़कर कहा। "अब सभा के सामने नज़रें गड़ाकर खड़े होना पड़ेगा। अरे इस लुगाई की वजह से हुआ यह सब! पाप में ढकेल दिया, उसकी दुम में खटखटा! रट लगा दी 'काट दो, काट दो।' माम खाने को जी कर आया उसका! लुगाई के भेष में अमली जैतान है! अभी घर पहुँचने हो ऐसी धुनाई करूँगा उसकी।"

"हां-हां, उसे सबक सिखाना चाहिये," ल्युबीशकिन के रिश्तेदार-बूढ़े अकीम बेसस्लेबनोव ने मलाह दी। "तुझे तो मचमुच ऐसी बात नहीं करनी चाहिये थी, तू तो सामूहिक फार्म का सदस्य है।"

"यही तो बात है," उमास छोड़कर ल्युबीशकिन बोला, वह अधरे में मूछों से बर्फ के गाले झाड़ता, उबड़-खाबड़ सड़क पर ठोकर खाता चल रहा था।

"और अकीम दादा, तुमने भी अपना चितकबरा बैल काट डाला?" बेसस्लेबनोव के पड़ोसी द्योम्का उशाकोव ने खांसकर पूछा।

"हां, बेटे, काट दिया। कोई चारा भी नहीं था। बैल टांग तोड़

बैठा। शैतान उसे ले गया तहखाने की तरफ, उसमें गिरकर टांग तोड़ बैठा।

“पर मैंने तो तड़के तुम्हें और तुम्हारी बहू को मटियो में हाककर उसे तहखाने की ओर ले जाते देखा था ”

“तुम क्या कह रहे हो? क्या कहते हो तुम द्योम्का! मोचो भी।” अकीम बूढ़ा घबराकर अधेरी गली के बीचोबीच स्तब्ध खड़ा रह गया।

“अरे चलो, चलो दादा,” द्योम्का ने उसे ढाढस बधाया। “क्यों खेत में फसे हल की तरह खड़े हो गये? बैल को तुम ही ने तहखाने के गट्टे में गिराया था ”

‘द्योम्का, वह खुद गिर पड़ा था। भूँट मत बोलो! भूँट बोलना पाप है।’

‘तुम बड़े चालाक हो, पर बैल से ज्यादा नहीं। बैल तो जीभ से अपनी दुम की जड़ को चाट सकता, पर तुम्हारे तो गायद यह ब्रस की बात नहीं, क्यों? सोचने थे कि बैल को घायल कर दूंगा तब कोई मझे कुछ नहीं कह सकेगा, क्यों ठीक है न?’

नेत्र नम हवा चल रही थी। नदी के तट पर कुजों में पाप्लर और विलो वृक्ष माय-माय कर रहे थे। गाव अधेरे की घनी चादर में लिपटा था कि हाथ को हाथ नहीं मूँक रहा था। रात की नमी में देर तक आवाजे गूँजती रही थी। बर्फ बरस रही थी। जाड़ा अपनी बची-खुची मौगात बिखेर रहा था।

१६

मभा के बाद दवीदोव रजम्यांलोव के साथ जा रहा था। भारी हिमपात हो रहा था। अधेरे में कहीं-कहीं कोई रोशनी टिमटिमा रही थी। हवा के भोके गाव में भौकते कुनों की मनहूस आवाज फैला रहे थे। दवीदोव को बर्फ जमा करने के बारे में याकोव लुकीच की बात याद आ गयी, उसने उमास लेकर मोचा “नहीं, इस साल तो इसकी फुर्सत नहीं है। वैसे तो इस तरह की बर्फीली आधी से खेतों में कितनी बर्फ जमा हो जाती! दुख होता है यह सोचकर।”

“चलो, अस्तबल मे चलकर फार्म के घोड़े देख ले,” रजम्यो-
लोव ने सुझाव दिया।

“चलो।”

वे गली मे मुड़ गये। शीघ्र ही उन्हे रोशनी टिमटिमाती नजर
आयी। लाप्शीनोव के खत्ते के पास, जहा अस्तबल बना दिया गया
था, लालटेन लटकी थी। उन्होने अहाते मे प्रवेश किया। अस्तबल के
दरवाजे के पास आंसारे तले कोई आठ-एक कज्जाक खड़े थे।

“आज कौन है ड्यूटी पर?” रजम्योलोव ने पूछा।

उनमे से एक ने बूट के तलवे से मसलकर सिगरेट बुझाकर उत्तर
दिया

“कोद्रात माइदानिकोव।”

“पर यहा भीड क्यों लगी हुई है? आप यहा क्या कर रहे है?”
दवीदोव ने कौतूहलवश पूछा।

“बस ऐसे ही, कामरेड दवीदोव खड़े हे मिलकर सिगरेट पी
रहे है।”

“शाम को खलिहान मे सूखी घाम लाये थे।”

“काम के बाद सिगरेट पीने लगे और बतियाते-बतियाते देर हो
गयी। बर्फीली आधी के रुकने का इतजार कर रहे है।”

थानो मे खड़े घोड़े जुगाली कर रहे थे। वहा घोड़ो के पसीने,
लीद और मूत्र की बू और सूखी घाम की गंध व्याप्त थी। हर थान
के सामने खूंटो पर जुग, राम या लगामे टगी थी। बीच के रास्ते पर
बुहारी लगी थी, और नदी की पीली बालू बुर्की हुई थी।

“माइदानिकोव!” अद्रेट ने आवाज दी।

“हा,” अस्तबल के दूसरे मिर मे उत्तर सुनायी पडा।

माइदानिकोव पुआल का गट्टर उठाकर ला रहा था। वह दरवाजे
मे चौथे थान मे गया और पैर मे ठोकर मारकर उसने वहा पमरे काले
घांड़े को उठाया और फर्श पर पुआल बिछा दी।

“थोडा परे हट। शैतान की दुम।” वह ऊघने घोड़े पर गुम्से
मे चिल्लाया।

घोड़े ने घबराकर खुर पटके और फुफकारकर नाद पर झुक गया।
कोद्रात दवीदोव के पास आया, उसके बदन से अस्तबल और पुआल
की घनी बू आ रही थी। उसने अपना रूखा ठंडा हाथ बढ़ाया।

“क्यों, क्या हाल-चाल है कामरेड माइदानिकोव ?”

“ठीक ही है कामरेड सामूहिक फार्म के अध्यक्ष।”

“तुम तो बहुत ज्यादा औपचारिकता दिखा रहे हो,” दवीदोव मुस्कराकर बोला।

“मैं इस समय ड्यूटी पर जो हूँ।”

“इन लोगो ने यहाँ क्यों भीड़ लगा रखी है ?”

“आप खुद ही पूछिये इनमें।” कोद्रात के स्वर में भुभुलाहट की झलक थी। “रात को, जब घोड़ों के लिये बिचाली डालने का वक्त होता है बस मुह उठाये चले आते हैं। लोग अपनी सपत्ति के मोह में छुटकाग नहीं पा सकते। ये सब घोड़ों के मालिक हैं। आकर पूछते हैं ‘मेरे कुम्भैत के लिये बिछा दी पुआल ?’, ‘और मेरे समद का ?’, ‘मेरी घोड़ी तो ठीक से है न ?’ पर आप ही बताइये उसकी घोड़ी को होगा क्या ? आ-आकर अनुरोध करने हैं ‘लाओ मैं चारा डालने में मदद कर दूँ।’ और हरेक अपने घोड़े को ज्यादा घाम डालने की ताक में रहता है मुसीबत कर रखी है इन लोगो ने। ऐसा आदेश जारी करवा देना चाहिये कि यहाँ फालतू लोग न जमा हुआ करें।”

“सुना तुमने ?” अद्रेई ने दवीदोव को आख मारकर मिर हिलाया।

“भगा दो सबको यहाँ से।” मस्नी के साथ दवीदोव ने आदेश दिया। “तार्कि ड्यूटीवालों के अलावा यहाँ कोई न रहे। घाम कितनी डालने हो ? तौलकर डालते हो ?”

“नहीं। नहीं तौलता। अदाज में आधा-आधा पूद के हिसाब से डालता हूँ।”

“बिचाली सबके लिये डालते हो ?”

“अरे आप भी क्या कहते हैं।” कोद्रात ने टोपी भाड़ी, उसकी सावली गर्दन और पुराने अगखे के कालर पर रंगे भड़े। “हमारा प्रबन्धक ओस्त्रोव्नोव, याकोव लुकीच जो है न आज शाम को आया था और बोला ‘घोड़ों को जूठन की बिचाली बिछाया करो।’ यह कहा की बात हुई ? वह सबसे बढ़िया किमान माना जाता है और ऐसी बेवकूफी भरी बात कहता है।”

“तो क्या हुआ ?”

“अरे दवीदोव, तुम समझते नहीं। जूठन भी तो चारा है। भेड़-वकगिया सब खा डालेंगे और वह कहता है बिचाली डाल घोड़ों को।

मैं उससे कहनेवाला था पर वह बोला . 'तू कौन होता है मुझे सिखाने-वाला !' "

" हा , जूठन मत बिछाना । ठीक है ! कल हम उसकी दुम मरोड देगे । " दवीदोव ने उसे वचन दिया ।

" हा , एक बात और है कुए के पासवाले ढेर मे क्यो घास देने लगे है । किसलिये वहा मे ले रहे है , मैं पूछता हूँ ? "

" मुझे याकोव लुकीच ने बताया कि यह घास इतनी अच्छी नहीं है । वह खराब घास मर्दियो मे खिलाना चाहता है और बढियावाली जुताई के समय । "

" अगर यह बात है तो ठीक है , " कोद्रात ने सहमति व्यक्त की ।
" पर जूठन के बारे मे उमे जरूर कह दीजियेगा । "

" कह दूंगा । अच्छा लो , लेनिनग्राद की मिगरेट पियो " दवी-दोव खासकर बोला । " कारखाने के माधियो ने भेजी है घोडे तो सब ठीक है ? "

" धन्यवाद । माचिम दीजिये घोडे सब ठीक है । कल रात रहवाल चालवाले हमारे घोडे की , जो पहले लाप्शीनोव का था , तबीयन कुछ गिरी गिरी थी , ठीक से देख-भाल नहीं हुई थी उसकी । पर बाकी सब ठीक है । एक और शैतान की दुम , लेटता नहीं , कहलै है रात-रात भर खड़ा रहता है । कल अगली टागो मे नयी नाले जडेगे । फिम-लन बहुत थी , बर्फ ने नाले घिस डाली । अच्छा , अब मैं चलता हूँ । अभी सबके लिये बिचाली नहीं बिछायी है । "

रजम्योल्लोव दवीदोव को घर तक छोडने के लिये साथ चल पडा । बाते करने-कर्ते वे उस गली तक पहुच गये जहा दवीदोव ने मकान किगये पर ले रखा था । पर मोड पर अट्रेट निजी खेती करनेवाल किमान लुका चेबाकोव के अहाते के सामने रुक गया , दवीदोव का कधा छूकर वह फुसफुसाया

" देखो ! "

फाटक के पास , तीन कदम की दूरी पर किसी आदमी की काली आकृति खडी थी । रजम्योल्लोव ने दौडकर फाटक के पीछे खडे व्यक्ति को बाये हाथ मे पकड लिया और दाये मे रिवाल्वर कसकर पकड लिया ।

" लुका , तुम हो ? "

" अरे यह आप है , अट्रेई स्तेपानाविच ? "

“तुम्हारे दाये हाथ मे क्या है ? लाओ इधर दो ! जल्दी से दो !”

“अरे यह आप है ? कामरेड रजम्योल्नोव !”

“कह रहा हूँ दे दो ! मार दूँगा !”

दबीदोव अघेरे मे आखे मिचमिचाता आवाजो की ओर बढ़ा।

“तुम क्या माग रहे हो उसमे ?”

“दे दो, लुका ! गोली मार दूँगा नहीं तो !”

“अरे ले लीजिये, क्यों गुस्सा कर रहे है आप ?”

“देखा क्या लेकर फाटक पर खड़ा था ! तुम रात को छुरी लेकर क्या कर रहे थे ? तुम किस की बाट जोह रहे थे ? दबीदोव की तो नहीं ? मैं पूछता हूँ कि क्यों छुरी लिये खड़े थे ? हत्यारा बनन की इच्छा है क्या ?”

मिर्फ अद्रेई की पैनी शिकागी आखे ही अघेरे मे फाटक के पाम खड़े व्यक्ति के हाथ मे छुरी की सफेद धार को देखने मे ममर्थ थी। वही उमे निहत्था करने के लिये लपका। और निहत्था कर भी दिया। पर जब वह स्तब्ध खड़े लुका से हाफते हुए पूछताछ करने लगा तो उसने फाटक खोलकर बदले-बदले स्वर मे कहा

“अगर आप बात को यह मोड़ दे रहे है तो मैं चुप नहीं रह सकना। अद्रेई स्नेपानोविच आप मझे पर न जाने क्या शक कर बैठे। चलिए मेरे साथ।”

कहा ?”

“कोठरी मे।”

“किमलिये ?”

“आप चलकर देख लीजिये और आप सब समझ जायेंगे कि क्यों मैं छुरी लिय गली मे भाक रहा था ”

“चलो देख लेते है,” दबीदोव ने लुका के अहाते मे घुसकर सुभाव दिया। “किधर जाना है ?”

“आप मेरे पीछे-पीछे आइये।”

कोठरी मे, उपलो के बिखरे ढेर के पाम तिपाई पर लालटेन जल रही थी, उसके पास लुका की सुदर, भरे चेहरेवाली पत्नी उकड़ बैठी थी। पराये लोगो को देखकर वह सहमकर उठी, उसके पीछे दीवार के पास पानी मे भरी दो बालटिया और चिलमची रखी थी। कोठरी के कोने मे पुआल की ताजी बिचाली पर खुर पटकता हट्टा-कट्टा सूअर

बड़ी नाद में भरी जूठन को चपड-चपड खा रहा था।

“देखिये बात क्या है ” सूअर की ओर इशारा करके लुका सहमे स्वर में अटक-अटककर बोला। “चुपके में सूअर को काटना चाहता था लुगाई उसे खिला रही है, मैं उसे पटककर काटना ही चाहता था कि गली में कुछ शोर-सा मुनायी पडा। मैंने सोचा कि बाहर निकलकर देख आता हूँ, अगर किसी ने कुछ मुन लिया तो मुसीबत हो जायेगी। बम जैसे था—आस्तीने चढाये, पेशबद बाधे, हाथ में छुरी लिये फाटक पर चला गया। और ये आप लोग वहाँ निकले। आपने मेरे बारे में क्या सोच लिया? भला आदमी को मारने के लिये कोई आस्तीने चढाकर, पेशबद बाधकर जाता है?” पेशबद उतारते हुए लुका के होठों पर भेपी-भेपी मुस्कान छा गयी और उमने दबे-दबे गुस्से में पत्नी से चिल्लाकर कहा

“क्यों टूट की तरह खड़ी है? भगा सूअर को यहाँ में ”

“तुम इसे मत काटो,” रजम्योल्लोव ने भेप भरे स्वर में कहा। “आज सभा हुई थी, ढाँर काटने की मनाही कर दी गयी है।”

“अरे नहीं काटूँगा। आपने मेरी इच्छा मार दी ”

दवीदोव अपने घर तक अट्रैड की हसी उडाता रहा

“फार्म अध्यक्ष की हत्या का प्रयास विफल कर दिया। प्रतिक्कानिकारी को निहत्या कर दिया। तीस मार खा कही का! हा-हा-हा। ”

‘कम से कम सूअर की तो जान बचा दी ’ रजम्योल्लोव मजाक का जवाब मजाक में दे रहा था।

१७

अगले दिन ग्रेम्याची की पार्टी-इकाई की बद बैठक में ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म के सभी सदस्यों के छोटे-बड़े सभी मवेशियों के सामूहिकीकरण का निर्णय लिया गया। मवेशी के अलावा मुर्गे-मुर्गियों, बत्खों आदि का भी सामूहिकीकरण करने का निर्णय लिया गया।

शुरू में दवीदोव ने छोटे मवेशी और पक्षियों के सामूहिकीकरण का कडा विरोध किया, पर नागूल्लोव ने दृढता से कहा कि अगर सामू-

हिक् किसानों की सभा में सभी जानवरों के सामूहिकीकरण का फैसला नहीं लिया गया तो बसत की बोवाई नहीं हो पायेगी क्योंकि तब तक मुर्गे-मुर्गियों समेत सारे ढोर काट दिये जायेंगे। रजम्योलोव ने उसका समर्थन किया और दबीदोव भी कुछ हिचकिचाकर सहमत हो गया।

इसके अलावा मवेशियों की निरकुश कटाई को रूकवाने के लिये कड़ा प्रचार अभियान छेड़ने का निर्णय भी लिया गया। इसके लिये पार्टी के सभी सदस्यों को उसी दिन घर-घर जाकर प्रचार करने का दायित्व अपने ऊपर लेना था। जहाँ तक मवेशी को काटनेवालों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही का सवाल था तो फिलहाल किसी के खिलाफ यह न करने और प्रचार अभियान के परिणामों तक देखने का फैसला किया गया।

‘अब ढोर-डगर वगैरह सुरक्षित रहेंगे। नहीं तो बसत तक गाव में एक भी बछड़े की रमाहट और मुर्गे की बाग भी न सुनायी देगी,’ बैठक की कार्यवाही के नोटों को फाइल में रखते हुए नागूल्लोव खुशी के साथ बोला।

सामूहिक फार्म की सभा ने मवेशियों के सामूहिकीकरण के निर्णय को सहर्ष स्वीकार कर लिया क्योंकि बैल-घोड़ों और दुधारे पशुओं का पहले से ही सामूहिकीकरण किया जा चुका था और यह निर्णय केवल बछड़ों, भेड़-बकरीयों और मूअरों से संबंधित था पर मुर्गे-मुर्गियों के मामले पर गर्मागर्म बहस छिड़ गयी। विशेष रूप से औरते इसके विरुद्ध थी। अतएव उनका प्रतिरोध भी तोड़ दिया गया। काफी हद तक इसमें नागूल्लोव का हाथ रहा। वही तो अपने पदक पर अपनी लंबी-चौड़ी हथेलियों को रखकर बोला था

“मेरी प्यारी लुगाइयो! आप क्यों बिना बात मुर्गियों और बत्तखों की पूछ पकड़ रही है! अरे काठी में नहीं टिक सकी तो भला दुम पर कहा टिक पाओगी! मुर्गियों को भी मिलकर रहने दो। बसत में इकूबेटर मगवा लेगे और मुर्गियों के बजाये वह मैकडो अंडों को सेकर चूजे देगा। हा-हा ऐसी मशीन हाती है—इकूबेटर, वह बहुत बढ़िया चजे मेता है। कृपा करके आप लोग अपनी जिद छोड़ दे! मुर्गिया तो आप ही की होंगी पर रहेगी आम दड़बे में। मुर्गिया किसी की जायदाद नहीं होनी चाहिये, मेरी-प्यारी मौसियाँ! और मुर्गियों से आपको फायदा क्या? आजकल तो वे अंडे देती नहीं। और बसत

मे उनसे आपको सिवाये परेशानी के कुछ नहीं मिलेगा। कभी वह, मतलब मुर्गी, सागबाड़ी में घुसकर पनीरी खराब कर देगी, कभी ऐसे स्थान पर अड़ा दे देगी कि तुम्हें मिलेगा नहीं, कभी वह बीमारी से मर भी सकती है। उसके साथ तो कुछ भी हो सकता है। और हर बार आप लोगों को दडबे में घुसकर उन्हें टटोलकर देखना पड़ता है कि कौनसी अड़ा देगी और कौनसी बाध है। दडबे में तो मुर्गियों की जुए या कोई बीमारी आपको लग सकती है। उनके साथ तो बस परेशानी ही परेशानी देखनी पड़ती है। और सामूहिक फार्म में वे कैसे रहेगी? बहुत मजे में। देख-भाल उनकी अच्छी होगी, किमी रड्डू, बुड्डू को, अरे दादा अकीम बेमल्लेबनोव को ही उनकी देख-रेख का काम सौंप देगे, रेंगने दो उसे दिन भर दडबे में। काम बाँट दिया और हल्का है, खाम तौर से बुड्डू के लिये। ऐसे काम से कभी नाल नहीं उतर सकती। मेरी प्यारियों, हो जाओ राजी।”

औरते हसकर, आहें भरकर कानाफूसी करके हो गयी राजी।

मभा के फौरन बाद नागूल्लोव और दवीदोव घर-घर का फेंग लगाने चल पड़े। पहले ही टोले में साफ हो गया कि हर घर में मवेशी काटे गये। दोपहर को वे बुड्डू श्चुकार के यहाँ पहुँचे।

“बड़ा सक्रिय आदमी है, खुद कहता था कि मवेशी को मभालकर रखना चाहिये। ऐसा आदमी कभी नहीं काटेगा,” श्चुकार के अहाने में घुसते हुए नागूल्लोव विश्वास के साथ बोला।

‘सक्रिय आदमी’ घुटने उठाकर पलंग पर लेटा हुआ था। उसकी कमीज मुँसी दाढ़ी तक उठी हुई थी और पतले पीले-से सफेद बालों से ढके पेट पर कोई छह-एक लीटर की गुजायशवाली हडिया औंधी रखी थी। हडिया के दोनों ओर जोको की तरह दो लुटियाये चिपकी हुई थी। बुड्डू श्चुकार ने दवीदोव और नागूल्लोव की ओर देखा तक नहीं। मुँदों की तरह छाती पर रखे उसके हाथ काप रहे थे, दर्द की भयंकर पीड़ा में फटी आँखों की पुतलियाँ धीरे-धीरे घूम रही थी। नागूल्लोव को लगा कि घर में सचमच ही मुँदें जैसी दुर्गंध भरी थी। श्चुकार की मोटी पत्नी अगीठी के पास खड़ी थी और पलंग के पास चमगादड़ की तरह काली, फुर्तीली मामिचीखा दादी कुछ कर रही थी। वह आम-पाम के पूरे इलाके में नाल चढ़ाने, हाथ-पाव के जोड़ बिठाने, खून रोकने का टोटका करने और बुनने की स्टील की सलाई

मे गर्भपात कराने के लिये प्रसिद्ध थी। वही इस समय बेचारे श्चुकार बुड्डे को 'स्वास्थ्य-लाभ' करा रही थी।

अदर घुमते ही दबीदोव की आखे आश्चर्य में फैल गयी।

"नमस्ते, बाबा! यह तुम्हारी तोद पर क्या है?"

"पे ५५ ट। दु ५५ ख रहा है।" बडी मुश्किल से बुड्डे श्चुकार ने उत्तर दिया और पिल्ले की तरह गिरियाते हुए बोला "उ ५५ तार दे हडिया। उतार दे, चुडैल। ओह, मेरा पेट फाड देगी। ओफ, प्यारो, बचाओ मुझे।"

"सन्न कर। थोडा सन्न कर। अभी ठीक हो जायेगा," मामि-चीखा पेट में कसकर चिपकी हडिया को हटाने का निष्फल प्रयास करते हुए फुसफुसाकर सात्वना दे रही थी।

पर श्चुकार बुड्डा अचानक घायल हाथी की तरह चिघाडा और पैरों में ओभिन को धकेलकर उमने दोनों हाथों में हडिया को कसकर पकड लिया। तब दबीदोव भट से उसकी महायता को आगे आया उमने पलैडी में बेलन उठाकर हडिया की औधी पेदी पर दे मारा। फूटी हडिया स म् करके हवा निकली श्चुकार बुड्डे का गहरी हिचकी आयी और वह दर्द में छुटकारा पाकर जल्दी-जल्दी सास लेने लगा, लाटियायें उतारने में उसे कोई परेशानी नहीं हुई। फूटी हडिया के गीकरो के बीच बुड्डे की फूली नीली नाल को देखकर दबीदोव को हमी का दौरा पडा और वह बेच पर ढह गया। उसके गालों पर आसू बह रहे थे, टोपी गिर पडी और काले बालों की लटे आखों पर लटक गयी।

बुड्डा श्चुकार भी जीवटवाला निकला। जैसे ही मामिचीखा दादी ने अपनी फटी हडिया का गना शुरू किया वह कमीज को ठीक करके कृछ उठा।

अरे नामपीटे ने मेरा बर्तन फोड दिया।" बुड्डिया सिर पीट-पीटकर म्यापा कर रही थी। 'तुम जैसो का इलाज करने में फायदा क्या है।"

'गफूचक्कर हो जा बुड्डिया। फौरन सिर पर पाव रखकर भाग जा यहा से।" श्चुकार दरवाजे की ओर इशारा करके बोला। "तू तो मेरी जान लेने पर उतर आयी थी। तेरे सिर पर फोडनी चाहिये थी हडिया। छूमतर हो जा, नहीं तो तेरा खून कर बैठूंगा। मैं कुछ भी कर सकता हूँ।'

“कैसे हो गया तुम्हें यह?” घडाम से दरवाजा बद करके मामिचीखा के जाते ही नागूल्लोव ने पूछा।

“अरे बेटो, कुछ मत पूछो मरते-मरते बच गया। दो दिन से घर में घुमा ही नहीं, अहाते में पतलून पकड़े घूमता रहा। ऐसे जबर्दस्त दस्त लगे थे कि कुछ पूछो मत। मैं तो ऐसे चू रहा था जैसे बरसात में फूटा छप्पर, हर पल ”

“मास ठूसा था?”

“मास ”

“बछिया को काट डाला?”

“नहीं रही अब बाँछिया हजम नहीं हुई वह मुझे ”

मकार ने नफरत के साथ बुढ़े को देखा और दात भीचकर बोला

“तुम्हें बुढ़े खूमट के पेट पर हडिया नहीं बाल्कि मन भर का लोहे का देग चढाना चाहिये था। ताकि वह अर्ताडियो समेत तुम्हें चूम लेता। जब तुम्हें फार्म में निकाल देगे तब देखना कैसे दस्त लगेंगे। तूने क्यों काटी?”

“मकार प्यारे, बस, मत मारी गयी बढिया नें करवाया है यह तुम तो जानते हो कि गत की कायल की कूक सबमें लबी होती है आप दया करो कामरेड दवीदोव। हम तो दोस्त थे, आप मुझे सामूहिक फार्म में मन निकालो। मैं तो अपनी सपत्ति के मोह की मजा भुगत चका हूँ ’

“अरे, इसके मुँह लगन का क्या फायदा?” नागूल्लोव हाथ भाडकर बोला। ‘दवीदोव, चलो। और तू बीमार की औलाद।’ बद्रूक के तेल में नमक मिलाकर पी ले, भट में ठीक हो जायेगा।”

बुढ़ा श्चुकार बुग मान गया, कापते होठों में वह बोला

“मजाक उड़ा रहा हूँ मेरा?”

“सच कहता हूँ। पुरानी फौज में हम पेट का ऐसे ही इलाज करते थे।”

“मैं भला लोहे का हूँ? जिम चीज में बेजान बद्रूक को साफ करते हैं, उसे मैं भी पियूँ? नहीं पियूँगा। चाहे मृगजमुखी के खेत में मरना ही क्यों न पड़े, पर बद्रूक का तेल नहीं पियूँगा।”

अगले दिन मरने का नाम भूलकर बुढ़ा श्चुकार गाव में मटरगश्ती कर रहा था। जो भी मिलता उसे वह बताता कि उसके पास दवीदोव

और नागूल्लोव आये थे, बोवाई से पहले औजागे की मरम्मत और फार्म के दूसरे मामलो पर सलाह-मशविरा करने। अपनी दास्तान के अंत में बुद्धा सिगरेट सुलगाकर कुछ देर चुप रहता और उमास लेकर कहता

“कुछ तबीयत ढीली हो गयी थी मेरी और वे दौड़े-दौड़े मुझे देखने आये। मेरे बिना उनका काम नहीं चलता। तरह-तरह की दवाएँ दे रहे थे। कहते थे ‘दादा जी अपना इलाज ढग में करवा लो, अगर तुम्हें कुछ हो गया तो तुम्हारे बिना हम कहीं के न रहेंगे।’ सचमुच, मेरे बिना वे क्या करेंगे भगवान की कसम! बात-बात पर मुझे पार्टि इकाई में बुलवाते हैं, कुछ काम की सलाह लेने के लिये। तुम तो जानते ही हो मैं बोलता कम हूँ पर जब बोलता हूँ तो पतें की। मेरी बात अचूक होती है।” और वह सामने खड़े व्यक्ति की ओर अपनी विजयपूर्ण आँखें उठाकर यह भापने का प्रयास करता कि उसकी बात का मुनेनेवाले पर क्या असर हुआ।

१८

और ग्रेम्याची में फिर खलबली मच गयी मवेशी काटना बंद हो गया। पूरे दो दिन तक भेड़ों-बकरियों को हाककर, खींचकर, मृर्गियों को बोरियों में भरकर सामूहिक बाड़ों और दडबों में लाया जाता रहा। गाव भर में पशु-पक्षियों की चिल्ल-पो गूँज रही थी।

अब तक सामूहिक फार्म में एक मौ साठ घगने शामिल हो गये थे। तीन टोलियों का गठन किया गया। सामूहिक फार्म के प्रबन्ध-मंडल ने याकोव लुकीच को आदेश दिया कि वह उन गरीबों को कुलकों से जन्त किये गये कपड़े-जूते आदि बाँट दे जिनको उनकी जरूरत है। पहले से जरूरतमंदों की सूची बनायी गयी। पता चला कि प्रबन्ध-मंडल सबकी आवश्यकताएँ पूरी करने में असमर्थ है।

तीत के अहाने में जहाँ याकोव लुकीच कुलकों से जन्त किये गये कपड़े बाँट रहा था रात तक लोगों की आवाजे गूँजती रही। यही, भंडार के पास बर्फ पर ही जूते उतारकर कुलकों के बढिया बूट, जाकेटे, कोट ओवरकोट, ब्लाइज आदि पहनकर देखे जाते। वे सौभाग्यशाली

लोग जिनको आयोग ने अग्रिम भुगतान के रूप में कपड़े-लत्ते देने का फैसला किया था, वही भंडार की ड्योढ़ी पर अपने चिथड़े उतारकर पोटली में बांध लेते और खुशी से मुस्कराते हुए नये कपड़े पहन लेते। और कोई चीज लेने से पहले क्या-क्या बातें होती, तरह-तरह की सलाहें दी जाती, तू-तू मै-मै होतीं। दबीदोव ने ल्युबीशिकन को कोट, पतलून और बूट देने का आदेश दिया। नाक-भौ चढ़ाकर याकोव लुकीच ने मट्ठक से कपड़ों का ढेर निकाला और ल्युबीशिकन के पावों पर पटक दिया।

“मन-पसंद चुन ले।”

भूतपूर्व गार्ड सैनिक ल्युबीशिकन की मूछें फड़की, हाथ काप उठे और कोट चुनने में तो उसने खून-पसीना एक कर दिया। कभी कपड़े को दात से खींचकर देखता, कभी रोशनी की ओर करके देखता कि कहीं कीड़ा तो नहीं लग गया, कभी दमक मिनट तक कपड़े को अपनी काली उर्गलियों में मसलता रहता। बाकी लोग चिल्ल-पो मचा रहे थे

‘ले-ले, तेरे बाद तेरे बच्चों के काम आयेगा।’

“अरे तेरे आखें भी हैं या नहीं! देखता नहीं पलुटा हुआ है।

“बक-बक मत कर।”

“तू खुद क्यों नहीं ले लेता।”

“ले ले, पावेल।”

“नहीं ले, दूसरावाला पहन कर देख।”

ल्युबीशिकन का चेहरा ईंट की तरह लाल हो गया। वह अपनी काली मूछ के सिरे को मुंह में डालकर चबाता, सहमी-सहमी नजर से लोगों की ओर देखता और दूसरा कोट चुनने लगता। सभी तरह में बढ़िया कोट चुनता, अपनी लम्बी बांहें डालता आस्तीनों में, पर वे कोहानियों तक ही आती, कंधों पर सिलाई उखड़ने लगती। और फिर से भेपकर मुस्कुराता और कपड़ों के ढेर को पलटने लगता। जैसे मेले में ढेरो खिलौने देखकर बच्चे की आखें मचल जाती हैं वैसे ही उसका हाल था, होठों पर ऐसी भोली, बाल-मुलभ मुस्कान थी कि बस किसी को सात फुटे ल्युबीशिकन के मिर पर हाथ फेरने की कसर बाकी थी। दोपहर तक भी वह चुन न पाया। पतलून और बूट पहन लिये और हवा गटककर मुंह चढ़े याकोव लुकीच से बोला

“अब कल आऊंगा अपने नाप का ढूंढने।”

ल्युबीस्कन नयी पट्टीदार शलवारनुमा पतलून और चरमराते बूटों में वहां से निकला। उसकी उम्र एकदम दस साल कम लगने लगी। वह जान-बूझकर बड़ी सड़क की ओर मुड़ गया हालांकि उसका घर दूसरी तरफ था। रास्ते में अकसर रुक जाता, कभी सिगरेट पीने के लिये, तो कभी किसी से गप-शप के लिये। घर पहुंचने में उसने कोई तीन घंटे लगा दिये और शाम तक पूरे ग्रेम्याची में चर्चे फैल गये। “अरे ल्युबीस्कन को ऐसे कपड़े पहना दिये जैसे परेड में जा रहा हो। दिन भर कपड़े चुनता रहा... हर चीज उस पर नयी थी, पतलून तो त्योहारों पर पहने लायक है। मारम की चाल से जा रहा था, पाव तले ज़मीन महसूस नहीं कर रहा था।”

द्योम्का उशाकोव की बीबी तो सड़क के ऊपर झुककर स्तब्ध रह गयी, बड़ी मुश्किल से उसे वहां से हटाया गया। उसने चुन्नटदार ऊनी लहंगा पहना जो कभी तीन की लुगाई का था, पैरों में नयी जूतिया पहनी, सिर पर बेल-बूटेदार शाल ओढ़ा, और सिर्फ़ तभी लोगों ने देखा। सिर्फ़ तभी उनका ध्यान इस ओर गया कि द्योम्का की बीबी का चेहरा बड़ा मलोना है, वह कितनी सुडौल औरत है। और वह बेचारी कैसे स्तब्ध न होती सड़क में भरी सामूहिक दौलत को देखकर, अपनी जिंदगी में उस बेचारी को न कभी ढंग का खाने को, न कभी कोई नया कपड़ा पहनने को नसीब हुआ था? जब याकोव लुकीच ने सड़क से औरतों के कपड़ों का पूरा ढेर निकाला तो भला आधा पेट खाने। दुनिया भर की मुसीबते भेलने के कारण उमके बदरंग हांठ सफेद पड़े बिना रह सकते थे? वह एक के बाद एक बच्चे पैदा करती, उन्हें मड़े-गले पोतड़ों में, भेड़ की घिसी खाल में लपेटती रही थी। और खुद बेचारी, दुःख और निरंतर अभावों से अपनी मुदरता, सेहत और ताज़गी खोकर गर्मियों में इकलौते छलनी बने लहंगे में घूमती थी, और सर्दियों में अपनी चिल्लड़ों से भरी इकलौती शमीज़ को धोकर बच्चों के साथ अलावघर पर नगी बैठती थी, क्योंकि पहनने को और कुछ न था।...

“प्यारो! .. मेरे प्यागे! .. ज़रा ठहरो, मैं शायद यह लहंगा न भी लूं.. इसके बदले .. मुझे बच्चों के लिये कुछ... मीशा के लिये .. दून्या के लिये...” वह सड़क का ढक्कन कसकर पकड़े हुए

बुदबुदाये जा रही थी, आखे उसकी कपडों के रंग-बिरंगे ढेर पर गड़ी थी।

सयोगवश वहा आ निकले दवीदोव का दिल यह दृश्य देखकर पमीज गया वह भीड़ को चीरकर सटूक के पाम गया और उसमे पूछा

“तुम्हारे कितने बच्चे है?”

“सात ” द्योम्का की पत्नी ने फुसफुसाकर उत्तर दिया, उसके मन मे कुछ ऐसी मधुर आशा उठी कि वह आखे उठाने की भी हिम्मत न कर पायी।

“तुम्हारे पास बच्चों के लिये कुछ है?” दवीदोव ने याकोव लुकीच से धीमे स्वर मे पूछा।

“है।”

“इम औरत को बच्चों के लिये जो यह मागे वह दे दो।”

“इतने ज्यादा से तो इसका पेट फट जायेगा।”

“यह क्या बदतमीजी है? निकालो?” दवीदोव ने गुस्मे मे अपने टूटे दातोंवाला मुह खाला और याकोव लुकीच भट मे सटूक पर भुक् गया।

द्योम्का उगाकोव जो आम तौर पर बातूनी और तौखी जवान-वाला था अपनी पत्नी के पीछे खड़ा माम गोककर सूखे होठों पर जीभ फेर रहा था। पर दवीदोव के अंतिम शब्द सुनकर उसने उसकी आंर नजर डाली और द्योम्का की भेगी आखों मे अचानक आसू फूट पड़े, जैसे पके फल में रस। वह बाये हाथ मे भीड़ को चीरता और दाये हाथ मे आखों को ढककर भाग खड़ा हुआ। पैड़ी मे कूदकर वह शर्म के मागे लोगो से अपने आसुओं को छिपाता हुआ वहा से चला गया। पर हथेली की काली ढाल के नीचे से ओस की बूंदों की तरह निर्मल और चमकीले आसू गालों पर लुढ़के जा रहे थे।

शाम तक बुड्ढा श्चुकार भी आ घमका। वह सामूहिक फार्म के दफ्तर मे दौड़ा-दौड़ा आया और सीधा दवीदोव के पास गया

“नमस्ते, कामरेड दवीदोव। आपको सकुशल देखकर बड़ी खशी हुई।”

“नमस्ते।”

“मुझे फार्म दे दो।”

“कैसा फार्म ?”

“कपड़े पाने का फार्म।”

“तुम्हें किस खुशी में कपड़े दे ?” दबीदोव के पास बैठे नागूलनोव ने अपनी भौंहे तानकर पूछा। “इसलिये कि तुमने बछिया काट डाली ?”

“मकार प्यारे, तुम्हें पता है कि पुरानी बात को याद करनेवाले का क्या होता है ? तुम पूछने हो किमलिये ? जब तीत को बेदखल कर रहे थे तो किसको कष्ट भोगना पड़ा ? मुझे और कामरेड दबीदोव को। उनका तो मिर्फ सिर फोड़ा गया, यह तो मामूली-सी बात है पर कुत्ते ने भेड़ की खाल के मेरे ओवरकोट की क्या गत बनायी ? ओवरकोट के चिथड़े ही बचे हैं। मैंने तो मोवियत सत्ता के लिये कष्ट उठाये और तुम कहते हो कुछ नहीं मिलना चाहिये मुझे। बेहतर तो यही होता कि तीत मेरा सिर फोड़ देता पर ओवरकोट न छेड़ता। ओवरकोट तो बुढ़िया का है या नहीं ? अगर वह अपने ओवरकोट का रोना रो-रोकर मुझे कब्र में धकेल दे, तब क्या होगा ? हा-हा, बात तो यही है।”

भागें न होने तां कोट तुम्हारा साबूत होता।”

“कैसे नहीं भागा होता ? तुमने सुना है मकार, कि तीत की चुड़ैल बीबी ने क्या करतूत की ? उसने मुझ पर कुत्ता छोड़ दिया, और मचाने लगी दृष्ट। पकड़ इसे ! यही उनमें सबसे बुरा आदमी है।” कामरेड दबीदोव इसकी गवाही दे सकते हैं।”

“हालांकि तुम बुद्धि हो, पर बकते हो खस्सी घोड़ की तरह।”

“कामरेड दबीदोव, आप ही गवाही दे दें।”

“पर मुझे तो ऐसा कुछ याद नहीं आता।”

“ईसा मसीह की कमर ! वह यही चिल्ला रही थी। मैं बेशक, डर के मारे भाग खड़ा हुआ। वह कुत्ता अगर आम कुत्तों की तरह हाता तां बात दूसरी थी पर वह तो पूरा शेर, अरे उसमें भी खूबवार था।”

“किसी ने तुम्हारे ऊपर कुत्ता नहीं छोड़ा था सब तुम्हारे मन की उपज है।”

“मकार, मेरे बहादुर, तुमको कैसे याद होगा। तुम तो खुद तब इतने डर गये थे कि तुम्हारे चेहरे पर हवाइया उड़ रही थी, तुम्हें भला कैसे याद होगा। तब मेरे मन में खयाल आया था ‘अभी

मकार भागेगा मिर पर पाव रखकर।' और मुझे तो कुत्ते ने ऐसा घसीटा, ऐसा घसीटा कि मुझे अब तक एक-एक ब्योरा याद है। अगर कुत्ता बीच में न आता तो तीत को मैं जिदा न छोड़ता, भगवान की सौगंध! मैं बड़ा खतरनाक आदमी हूँ।"

नागूल्लोव ने ऐसा मुह बनाया मानो उसके दात में दर्द हो और दवीदोव से बोला

"इसे चिट देकर, पिड छुड़ाओ।"

पर इस बार बुढ़े श्चुकार का जी कुछ ज्यादा ही बतियाने को कर रहा था।

"मकार प्यारे! जवानी में घूसेबाजी में मेरा कोई सानी नहीं था "

"अच्छा ज्यादा मत बक-बक करो, बहुत मुन चुक हैं तुम्हारी गप्पे। तुम्हें पसेरी देग देने की चिट न लिख दे? नहीं तो पेट का कैसे इलाज करांगे?"

बुढ़ा श्चुकार बुरा मान गया उसने चिट ली और बिना कुछ कहे चला गया। पर याकोव लुकीच के हाथों से भेड की बढ़िया खाल का ढीला-ढाला कोट पाकर उसकी उत्तम मनोदशा बहाल हो गयी। उसकी आंखों में आनंद और विजय की झलक थी। जैसे चुटकी में नमक लेते हैं वैसे ही वह लम्बे कोट के दामन को पकड़ता और उसे उस अंदाज में ऊपर उठाता जैसे पानी के डबरे को पार करते समय औरगे अपने लट्ठों को उठाती हैं। वह कज्जाको को चटकार ले-लेकर बताना

"देखो, कैसा बढ़िया कोट है! खून-पसीना एक करके पाया है। सबको मालूम है कि जब हम तीत को बेदखल कर रहे थे, तो वह लोहे की छड़ लेकर कामरेड दवीदोव पर टूट पड़ा। मैंने सोचा मारा गया मेरा दोस्त!" और झट से हीरो की तरह उसकी मदद को दौड़ा। अगर मैं न होता तो ममभो, दवीदोव का काम तमाम हो गया होता।"

"पर लोग तो कह रहे थे कि तुम कुत्ते से डर के भागे और गिर पड़े और वह सूअर की तरह तुम्हारे कान नोचने लगा " उसकी बात सुननेवालों में से कोई बोला।

'बकवास है यह! लोग भी कैसे है कि सच्चाई को कैसे तोड़-

मरोड देने है। कुत्ता कहा से बीच में आया? कुत्ता तो बेवकूफ और नीच जानवर है। वह कुछ समझता थोड़े ही है " और बुढ़ा श्चुकार बड़ी कुशलता से बात बदल देता।

रात घिर आयी

१६

ग्रेम्याची से बहुत दूर, स्तेपी के टीलो, बीहड़ों, घाटियों, घने वनों के उस पार सोवियत संघ की राजधानी है। वह बिजली की रोशनी में नहायी है। टिमटिमाती बत्तियों का नीलाभ प्रकाश ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं के ऊपर छाया हुआ है, चाद-नारे व्यर्थ ही चमक रहे हैं।

ग्रेम्याची से डेढ़ हजार किलोमीटर दूर स्थित पत्थर से जड़े मास्को में रात को भी जीवन नहीं रुकता। इजनों की मीटिया चिघाड़ती हैं, विशाल हार्मोनियम की तरह मांटरो के भोगू मरगम निकालते हैं, ट्रामे खड़खड़, टनटन करती हैं। और लेनिन समाधि के पीछे क्रेमलिन के प्राचीर के उस पार आलोकित आकाश की पृष्ठभूमि में लाल ध्वज शीतल हवा में फड़फड़ाता है। सर्चलाइटों के नीचे में पड़ने पड़ने में वह दमकता है, बहते लाल रक्त की तरह चमकता है। ऊँचाई पर हवा भवर की तरह घूमती है, पल भर को लटके ध्वज को फिर फड़फड़ाने लगती है, वह कभी पश्चिम की ओर मुड़ता है तो कभी पूरब की ओर, वह विद्रोहों की लाल ज्वाला की तरह दमकता है, मर्घर्ष का आह्वान करता है।

दो साल पहले कोद्रात माइदानिकोव जो उस समय मास्को में सोवियतों के अखिल रूसी अधिवेशन में भाग ले रहा था रात के समय लाल चौक पर गया था। लेनिन की समाधि और आकाश में विजयपूर्वक फड़फड़ाते लाल ध्वज को देखकर उसने भट से अपनी टोपी उतार दी। नगे सिर, अगरखा खोले वह बड़ी देर तक एक ही स्थान पर मौन खड़ा रहा।

ग्रेम्याची में तो रात को मूक नीरवता छा जाती है। गाव के बाहर राजहम के परो की तरह कोमल तार्जी बर्फ से ढके मुनसान टीले

चमकते हैं। घाटियों और सन के खेतों में भाड़ों पर घनी-नीली परछाइयाँ घिर आती हैं। सप्तर्षि भुक्कर क्षितिज को छूने लगता है। ग्राम-सोवियत के पास लगा पाप्लर वृक्ष काले आकाश को चूमती मीनार-सा लगता है। नदी में गिरते चश्मे की धारा तिलस्मी कल-कल करती है। नदी के बहते पानी में गिरते तारों की परछाइयाँ प्रतिबिम्बित होती हैं। रात की छद्म नीरवता में कान लगाकर सुनने से टहनी को अपनी पीले दांतों में कुतरते खरगोश की आवाज सुनायी पड़ती है। चादनी में चेरी के पेड़ के तनों पर जमी राल की बूंदें कह-रूबे के मानिंद चमकती हैं। तोड़ने पर राल का टुकड़ा पके अलूचें जैसा लगता है। कभी-कभार टहनियों से बर्फ का कोई टुकड़ा गिरता है और रात की नीरवता में उसकी बिल्लौरी टकार विलीन हो जाती है। चेरी की टहनियों पर स्लेटी धारीदार मज्जरिया निर्जीव लटकी होती है। बच्चे उन्हें 'कोयल के आमू' कहते हैं।

नीरवता छायी है

और अब पौ फटन पर ही जब उत्तर में, काली घटाओं के पीछे में अपने शीत पंखों में बर्फ उड़ाती मास्का की हवा आयेगी, ग्रेम्याची में प्रातःकालीन जीवन का कोलाहल फैलेगा कुजों में पाप्लर वृक्षों की पत्र-विहीन टहनियों की खड़-खड़ होगी, जाडू बितान के लिये गाव के पास रुके तीतरों की च-चे सुनायी पड़ने लगेगी, जो रात को खालिहानों में दाना चुगने आते हैं। दिन बिताने के लिये वे रेतील टीलों की ढलानों पर उगी जंगली भाड़ियों में जाकर छिप जायेंगे और बर्फ पर बस उनके पंजा के चिह्न रह जायेंगे। मा का थन चूमन की मांग करते बछड़े रभाने लगेगे, मामूहिकीकृत मुर्गे गला फाड़-फाड़कर बाग देने लगेगे, गाव में उपलों के धुएँ की तीखी कड़वी गंध फैलने लगेगी।

पर अभी तो रात छायी हुई है। पूरे गाव में शायद अकेला कोदरान माटुदान्तिकाव ही नहीं सो रहा था। उसके मह में दसी तबाक् का कड़वा स्वाद भरा था। मिर्ग सीसे की तरह भारी था धूम्रपान के कारण जी मिचला रहा था।

आधी रात का समय था। कोदरान की आखा के सामने बिजली की जगमगाहट में डूबे मास्को का हर्षदायी दृश्य नाच रहा था, उसे क्रैमलिन के ऊपर, असीम विश्व के ऊपर प्रचंड शक्ति से फड़फड़ाती

लाल पताका भी दिखायी दे रही थी। इस विश्व में सोवियत संघ की सीमाओं के बाहर रहनेवाले, कोद्रात जैसे सामान्य मेहनतकशों के अविश्वसनीय आसू बहने हैं। उन्हें बचपन में कहे गये मा के शब्द याद आ गये जो उसने नन्हे कोद्रात का रोना बद कराने के वास्ते कहे थे

“मेरे लाल कोद्रात, मत रो भगवान को नाराज मत कर। जैसे भी दुनिया भर के गरीब लोग रोज रोते हैं, भगवान से अपनी मुसीबतों की शिकायत करते हैं, मागी मर्पति हड़पनेवाले अमीरों की प्रभु से शिकायत करते हैं। पर भगवान ने गरीबों को धीरज रखने का उपदेश दिया है और भगवान को गुस्सा आ जाता है कि गरीब और भखे दिन-रात रोते ही रहते हैं और वह उनके आसूओं को इकट्ठा करके उनसे कोहरा बनाता है और नीले सागर को उसमें लपेट देता है। और समुद्र में जहाज भटक जाते हैं। वे चट्टानों में टकराकर डूब जाते हैं। यह नहीं तो भगवान आसूओं की ओम बना देते हैं। एक रात तो नमकीन ओम सारी धरती के अनाज के खेतों पर बरस जायेगी आमों के कड़वे नमक में खड़ी फसले जल जायेगी और दुनिया में भीषण अकाल पड़ जायेगा और भखमरी फैल जायेगी मतलब यह कि गरीबों का हरगिज नहीं रोना चाहिये नहीं तो फिर पर मुसीबत आ पड़ेगी समझे मेरे लाडले ?” और मम्मी ने बोली ‘भगवान से प्रार्थना कर’ तेरी प्रार्थना जल्दी पहुँच जायेगी भगवान के हाथों तक।

मा क्या हम गरीब हैं ? पिता जी भी गरीब हैं ? नन्हा कोद्रात अपनी धार्मिक मा से पूछता।

हां गरीब हैं।

कोद्रात पुरानी देव-प्रतिमा के सामने घटना पर गिर पड़ता और अच्छी तरह से आसू सुँघाकर प्रार्थना करने लगता कि कहीं गुस्सेल भगवान उसकी गीली आँखें न देख ले।

कोद्रात लेटे लेटे अपनी स्मृति को ऐसे टटोल रहा था जैसे बहेलिया अपने फंदों को। उसके पिता दोन के कज्जाक थे और वह अब सामूहिक फार्म का किसान है। स्तेपी को अनंत राहों की तरह लम्बी रातों में वह बहुत-सी बातों के बारे में सोच चुका है। कोद्रात के बाप ने सैनिक सेवा के दौरान अपने दम्पति के साथ इवानोवो-वोजनेमस्की के हड़ताली वपड़ा मजदूरों को कोडो में तलवारों में मार-पीटकर मिल-मालिकों

के हितों की रक्षा की। बाप मर गया, कोद्रात बड़ा हो गया और सन् १६२० में उसने अपनी सोवियत सत्ता की रक्षा करते हुए, मिल-मालिकों और उनके भड़ैतों से इवानोवो-वोजनेसेस्क के उन्हीं कपड़ा-मजदूरों की सत्ता की रक्षा करते हुए श्वेत-पोलो और ब्रागेल के सैनिकों को खूब मारा-काटा।

भगवान पर से कोद्रात का विश्वास उठ गया, वह कम्युनिस्ट पार्टी में आस्था रखता है जो विश्व भर के श्रमजीवियों को मुक्ति की ओर ले जा रही है। वह अपने सारे पशु-पक्षियों को सामूहिक फार्म में ले गया। वह तो इसके पक्ष में है कि सिर्फ उसी को रोटी खाने और जमीन पर पाव रखने का अधिकार होना चाहिये, जो काम करता है। उसके रोम-रोम में सोवियत सत्ता पर असीम आस्था भरी थी। पर कोद्रात को रातों नींद नहीं आती इसलिये नहीं आती कि उसके मन में अपनी सपना, अपने मवेशियों का दुख लुक-छिपकर कसक उठना हालांकि उसने स्वेच्छा से उनसे इकार किया दिल पर कुड़नी मारकर बेठी कसक से मन में विषाद-मा भर जाता

पहले मृगह से शाम तक वह व्यस्त रहता था पौ फटने ही गाय-बैलो, भेड़ों और घोड़ों को चारा डालता, पानी पिलाता, दोपहर को फिर खलिहान से घास और भूगा ढोकर लाता, रास्ते में यह खयाल रखता कि एक भी तिनका बेकार न जाये, रात से पहले फिर सफाई करता। और रात को भी कई-कई बार जाकर मवेशी के बाड़े में ढोंगों को देखता नाद में गिरी घास को ममेटकर वापस डालता। उसे अपने काम में आनंद मिलता। पर अब कोद्रात के बाड़े में मनहूस मल्ला-टा छाया रहता है। अब देख-भाल के लिये कुछ नहीं रहा। नादे खाली पड़ी हैं, बाड़े का फाटक खुला रहता है, और रात भर में एक बार भी मुर्गों की बाग नहीं सुनायी पड़ती, समय का अदाजा लगाने के लिये कुछ भी नहीं है।

जब सामूहिक फार्म के अस्नबल में इयूटी देने की बारी होती है तभी उसकी ऊब मिटती है! दिन में वह जल्दी से घर में जाने की ताक में रहता है ताकि काटने को दौड़ते खाली बाड़े और पत्नी की विषाद भरी आँखों को देखने से बच सके।

इस समय वह उसकी बगल में लेटी निश्चिन्त सो रही है। अलाव-घर के ऊपर बनी टाइल पर गिब्रस्तीशका नींद में हाथ-पाव चलाती,

बडबडा रही है “बापू, धीरे चलाओ। धीरे-धीरे।” नींद में वह शायद बच्चोवाले उज्ज्वल मपने देखती है। उसको जीवन की कोई चिंता नहीं सताती। वह तो दियासलाई की खाली डिब्बिया से ही खुश हो जाती है। वह उससे अपने कपड़े के गुठ्ठे के लिये स्लेजगाड़ी बनाती है। इस स्लेज से वह शाम तक खेलती रहती है और अगले दिन उसे मन बहलाव की कोई नयी चीज मिल जाती है।

पर कोद्रात के अपने ही विचार है। वह उनमें उसी तरह फसा है जैसे जाल में मछली “कब छोड़ेगा तू मेरा पिंड, मलाल मेरे? कब तू मरेगा, पापी लोभ?” समझ में नहीं आता। घोड़ों के थानों के पास से गुजरता हूँ, पराये घोड़ों को देखकर कुछ नहीं होता पर अपनेवाले के पास पहुँचते ही, उसकी पीठ को, उसके दग्रे कान को देखते ही मेरे दिल में क्यों टीस उठती है, वह मुझे उस पल अपनी लुगाई से भी प्यारा लगता है। और उसे छाटकर मीठा चारा डालने की फिराक में रहता हूँ। और दूसरों का भी तो यही हाल है। हर एक अपनेवाले के पास मडराता रहता है, परायों की क्या चिंता उसे? पर अब पराये कहा रहे, सब हमारे हैं पर फिर भी ढांगे की देख-भाल नहीं करना चाहते, बहुतों के लिये वे पराये हो गये कल कुम्भेन्कोव की ड्यूटी थी, घोड़ों को पानी पिलाने खुद नहीं ले गया बल्कि एक छोकरे को भेज दिया और वह एक घोड़े पर चढ़कर मारे भुड़ को नदी तक सगपट दौड़ाता ले गया। किसी ने पिया पानी, किसी ने नहीं पिया, इसकी कोई परवाह नहीं, वापस भी अस्तबल तक दौड़ाता ले आया घोड़ों को। पर किसी में कुछ कहो तो गुर्गकर कहेंगे ‘तू अपने काम में मतलब रख’। इसका कारण यह है कि मुझे हर चीज बड़ी मुश्किल में मिली। जिसकी पाचो उगलिया घी में रही उसको इनना मलाल नहीं कल दबीदोव को यह बताना नहीं भूलना चाहिये कि कुम्भेन्कोव ने घोड़ों को पानी कैसे पिलाया था। ऐसी देख-भाल से तो घोड़े बसत तक पाटे को हिलाने तक के काबिल नहीं रहेंगे। कल सुबह से जाकर देखना चाहिये कि मूर्गिया कैसी है, लुगाइया कह रही थी कि भीड़-भडक्के की वजह से कोई सातेक मूर्गिया मर गयी है। ओफ, कितना कठिन है यह सब। क्यों मारी मूर्गियों को एक दडबे में ठूस दिया गया? कम से कम एक घर में एक-एक मूर्गा तो छोड़ देते घड़ी का काम करने के लिये कोआपरेटिव दुकान में कुछ नहीं

है और गिब्रस्तीष्का के पास पाव मे पहनने को कुछ नहीं। कही से चप्पलो का ही इतजाम हो जाये। दवीदोव से कहते हुए अच्छा नहीं लगता नहीं, यह जाडा तो घर मे ही निकाल देगी और गर्मियों मे तो कोई जरूरत नहीं रहेगी।" कोद्रात पचवर्षीय योजना पूरी कर रहे देश के सामने मुह बाये खडे अभावो के बारे मे सोच रहा था और टाट के कबल से ढकी अपनी मुट्टियो को भीचकर उसने मन ही मन घृणा के साथ पश्चिम के उन मजदूरों को सबोधित किया जो कम्युनिस्टो के समर्थक नहीं है "अपने मिल-मालिको से अच्छी तनखाह लेकर तुमने हमे बेच दिया। भर-पेट जिदगी के बदले, भाइयो, तुमने हमारे साथ गद्दारी कर डाली। अभी तक क्यों नहीं है तुम्हारे यहा सोवियत सत्ता? क्यों तुम अभी तक पीछे हो? अगर तुम्हारी जिदगी दूभर होती तो तुम कब के क्रांति कर बैठे होते, पर लगता है कि अभी तुम्हारी दुम नहीं मरोड़ी गयी है, तुम अभी तक हिचकिचा रहे हो, लगडा रहे हो, कदम मिलाकर नहीं चल रहे पर देख लेना, तुम्हारी ऐसी दुम मरोड़ी जायेगी कि नानी याद आ जायेगी या तुम यह नहीं देखते सीमा के उस पार मे कि हम कितनी मुश्किल मे देश का उत्थान कर रहे है? हम कैमी-कैमी कमियो को भेल रहे है अधनगे है पर दान भीचकर काम कर रहे है। बना-बनाया लेते हुए गर्म नहीं आयेगी तुम्हे, भाइयो। मेरा ब्रम चलता तो ऐसा ऊचा खबा बनाता कि तुम सब देख सकते, और मैं इस खबे पर चढ़कर तुमको चुन-चुनकर गालिया देता।" कोद्रात को नींद आ गयी। उसके होठों मे दबी मिगरेट गिर पडी और उसने कोद्रात की डकलौती कमीज मे एक बडा, काला-सा छेद कर दिया। जलन के कारण उसकी आख खुल गयी। वह कमीज पर बने छेद को मीने क लिय उठा और अंधेरे मे फुसफुसाकर गालिया देता हुआ मुई दूढ़ने लगा, नहीं तो सुबह आल्ना ने अगर यह छेद देख लिया तो कम-मे-कम दो घटे तक उसकी चखचख बद नहीं होगी पर उसे मुई मिली ही नहीं और वह फिर से मो गया।

भोर के समय उसकी आख खुली, वह शौच के लिये बाहर निकला तो उसे अचानक बडा अजीब-सा शोर सुनायी पडा सामूहिकीकृत, एक ही दडबे मे बद मुर्गे समवेत स्वर मे बाग दे रहे थे। कोद्रात कोई दो मिनट तक अपनी सूजी आखो को आश्चर्य मे फाडकर मुर्गों की निर-

तर बाग को सुनता रहा, जब किसी मुर्गे की देर में शुरू हुई 'कुकड़े-कू' रकी, वह उनीद में मुस्करा दिया। "क्या गजब का शोर मचाते हैं शैतान की औलाद! बिल्कुल बैड की तरह। जो उनके अड़े के पास रहता है उसकी तो नींद हगम हो जायेगी। पहले तो गाव के कभी एक कोने में बाग लगती थी तो कभी दूर में। कोई मजा नहीं आता था यह हुई न जिदगी!" और नींद पूरी करने के लिये सोने चला गया।

* * *

सुबह नाश्ता करके वह मुर्गियों के बाड़े की ओर चल दिया। उसे देखकर बूढ़े अकीम बंसल्लेबनोव ने गुम्मे में चिल्लाकर पूछा

"तू सुबह-सवेरे यहाँ क्या कर रहा है?"

"तुम्हें और मुर्गियों को देखने आया हूँ। क्या हाल-चाल है बाबा?"

"अच्छी-खासी जिदगी कट रही थी पर अब मन पूछो!"

"क्यों, क्या हो गया?"

"मुर्गियों की नौकरी ने जीना हगम कर दिया!"

"यह कैसे?"

"तू एक दिन यहाँ रुककर देख, तब समझ जायेगा। नामाकूल मुर्गे दिन भर आपस में लड़ते रहते हैं, उन्हें अलग करने-करते तो मेरी टांगें टूट गयीं। मुर्गियों को ही लो, देखने में लग सकता है कि जनार्ण जात है पर ये भी दिन भर एक-दूसरी की कलगी नोचती रहती हैं। भाड़ में जाये ऐसी नौकरी! आज ही दवीदोव के पास जाकर मेरी छुट्टी करने को कहूँगा, शहर की मक्खियों की देख-रेख के लिये भेजने को कहूँगा।"

"बाबा, धीरे-धीरे वे एक दूसरे के आदी हो जायेंगे।"

"जब तक वे आदी होंगे, बुढ़ा कब में उतर चुका होगा। भला यह मर्दों का काम है? आखिर को मैं तो कज्जाक हूँ। तुर्कों में लड़ाई पर जा चुका हूँ। पर यहाँ मुझे मुर्गियों का इमाडर बना दिया गया। नौकरी शुरू किये दो ही दिन हुए हैं पर बच्चे मेरा पीछा नहीं छोड़ते। जब घर जाता हूँ वे मुझे देखकर चिल्लाने लगते हैं 'बुढ़ा मुर्गी-

छेड़ ! अकीम बाबा मुर्गी-छेड़ !' मुझे सबका मान-सम्मान प्राप्त था , पर बुढ़ापे में मुर्गी-छेड़ की उपाधि लेकर मरूं क्या ? नहीं , मैं बिलकुल नहीं चाहता !”

“ अरे छोड़ो भी , अकीम बाबा । बच्चों से क्या लेना ?”

“ अरे अगर बच्चे ही कहते तो कोई बात नहीं पर कई लुगाइयां भी उनके साथ हो गयीं । कल दोपहर को खाना खाने घर जा रहा था । कुएं पर नास्तेन्का दोनेत्स्कोवा पानी खींच रही थी । पूछती है : ‘ बाबा , मुर्गियों की संभाल कर पा रहे हो ? ’ मैं बोला , ‘ हां-हां । ’ — ‘ बाबा , मुर्गियां अंडे भी दे रही हैं या नहीं ? ’ मैं बोला , ‘ हां कुछेक दे रही हैं पर इतने ज्यादा नहीं । ’ और वह कल्मीक घोड़ी पता है क्या बोली हंसकर ? ‘ देखना , जुताई तक वे एक टोकरी अंडे दे दें नहीं तो तुमसे करवायेंगे मुर्गों का काम । ’ ऐसे मज़ाक़ मुनने के लिये मैं बुढ़ा हो गया हूं । और यह नौकरी मुझे बिलकुल पसंद नहीं ! ”

बूढ़ा कुछ और भी कहना चाहता था पर बाड़ के पास दो मुर्गे भिड़ गये , एक की कलगी से खून की धारा फूट पड़ी और दूसरे की गल-थैली से मुट्ठी भर पंखों का ढेर उड़ा । बुढ़ा अकीम मटी उठाकर उनकी ओर मरगपट दौड़ पड़ा ।

सामूहिक फ़ार्म के दफ़्तर में काफ़ी मुबह होने के बावजूद बड़ी भीड़ थी । अहाते में ओमारे के मामने दो घोड़ोंवाली स्लैज दबीदोव की प्रतीक्षा में खड़ी थी जो इलाक़ाई केन्द्र जा रहा था । लाप्सीनोव-वाला रहवाल भी खड़ा सुम से बर्फ़ खोद रहा था , और ल्युबीशकिन उसकी जीन की पेटी कम रहा था । वह भी तुब्यान्स्की जाने की तैयारी कर रहा था , उसे वहां के सामूहिक फ़ार्म के अधिकारियों से ओमाई-मशीन के बारे में बात करनी थी ।

कोद्रात ने पहले कमरे में प्रवेश किया । हाल ही में क़स्बे से आया लेखापाल मेज़ पर बैठा बहियों को उलट-पलट रहा था । उसके सामने बैठा याकोव लुकीच कुछ लिख रहा था , इधर वह टूट-सा गया था । वही वे सामूहिक-किसान खड़े थे जिनको घास लानी थी । तीमरी टोनी का नायक चेचक के दागवाला आगाफ़ोन दुबत्सोव और अर्काशा बदलू गांव के एकमात्र लोहार इप्पोलीत शाली के साथ कोने में खड़े किसी विषय में बहस कर रहे थे । बराबर के कमरे में रज़म्योत्सोव का तेज़ , हंममुख स्वर सुनायी पड़ रहा था ।

वह अभी-अभी आया था और हंसता हुआ, जल्दी-जल्दी दबीदोव को बता रहा था :

“ मुबह-सवेरे मेरे पास चार बुढ़ियायें आयीं। मिखाईल इग्नात्योनोक की मां, उल्याना नानी उनकी चौधरानी है। तुम जानते हो उसे? नहीं? अरे ढाई मन की बुढ़िया है नाक पर मस्सेवाली। हां, तो वे आयी। उल्याना नानी आग-बबूला थी, उसकी नाक का मस्मा तक फुदक रहा था गुस्से में। आते के साथ ही बोली: ‘अरे तू ऐसे-वैसे, तेरी ऐसी की तैसी!’ लोग सोवियत में मेरा इंतज़ार कर रहे हैं, वह मुझे चुन-चुनकर गालियां दे रही है। मैं भी उससे सस्ती से बोला: ‘बक-बक बंद कर, नहीं तो सत्ता के अपमान के लिये कस्बे भिजवा दूंगा। तुम्हें क्या पागल कुत्ते ने काट लिया है?’ वह बोली: ‘तुम लोगों ने बुढ़ियाओं का यह क्या मखौल बनाने की मोची है? तुम में हमारे बुढ़ापे का मज़ाक उड़ाने की हिम्मत कैसे हुई?’ बड़ी मुश्किल से पूरी बात उगलवा सका उससे। हुआ यह कि उन्होंने किसी से सुना कि सभी बुढ़ियाओं को, जो काम करने में असमर्थ हैं, जिनकी उम्र साठ से ऊपर हो गयी है बसंत में मामूहिक फ़ार्म का बोर्ड...” रज़म्योलोव ने बड़ी मुश्किल से हसी रोककर बात पूरी की: “मानो अंडे सेने की मशीनों की कमी के कारण बुढ़ियाओं से यह काम करवाना चाहता है। बस वे बिगड़ गयी। उल्याना नानी चीखकर बोली, जैसा कोई उसका गला काट रहा हो: ‘कैसे तुम्हारी हिम्मत हुई मुझे अंडों पर बिठवाने की? ऐसे कोई अंडे नहीं हैं जिन पर मैं बैठ सकूँ! मैं तुम सबको बेलन से पीटकर खुद नदी में डूब मरूंगी!’ बड़ी मुश्किल से उन्हें समझा पाया। मैं बोला ‘नहीं डूबो, उल्याना नानी, हमारी नदिया में तो तुम्हारे डूबने लायक पानी है भी नहीं। यह सब भूठ है, कुलकों की मनगढ़ंत है।’ देखा कामरेड दबीदोव, दुश्मन भूठ फैला रहे हैं, हमारे काम में अड़ंगा डालना चाहते हैं। मैं पूछने लगा कि कहां से यह अफ़वाह उन्होंने सुनी, पता चला कि वोयस्कोवोय से परसों गांव में एक नन आयी थी, रात को तिमोफ़ेई बोर्चोव के यहा टिकी थी, उसी ने बताया था कि इसीलिये मुर्गियां इकट्ठी की जा रही हैं ताकि उन्हें शहरवालों के शोरबे में डालने के लिये भेजा जा सके और बुढ़ियों के लिये ऐसी कुर्शियां, खाम ढंग की, बनायेंगे उन पर फूस बिछा देंगे और उन पर बिठाकर उनको अंडे सेने के लिये

मजबूर करेगे और जो बुढ़िया शोर मचायेगी उसे कुर्सी से बाध देगे।”

“कहा है यह नन इस समय?” वहा बैठे नागूल्लोव ने भट से पूछा।

“रफूचक्कर हो गयी। वह बेवकूफ थोड़े ही है भौककर आगे चली जाती है।”

“ऐसी काली कौबियो को गिरफ्तार करके उचित जगह भेज देना चाहिये। मेरे हाथ नहीं आयी। मैं तो उसका लहगा उठाकर ऐसे कोड़े लगाता और तुम मोवियत के अध्यक्ष हो और जिसका जी चाहता है वही तुम्हारे गाव में टिक जाता है। यह भी कोई बात हुई।”

“सब पर कहा नजर रखी जा सकती है।”

दबीदोव ओवरकोट के ऊपर भेड की खाल का लबादा पहने मेज पर बैठा था। वह जाने से पहले बसत में खेती कार्यों की सामूहिक फार्म की सभा में अनुमोदित योजना पर एक नजर डाल रहा था, उसने कागजों में सिर उठाये बिना कहा

“हमारे बारे में भूठ फैलाना तो दुश्मन की पुरानी रीत है। वह हगमी तो हमारे सारे निर्माण पर कीचड़ उछालना चाहता है। पर कभी-कभी तो हम खुद ही हममें उसकी मदद करते हैं, मुर्ग-मुर्गियों को ही लो ”

‘यह कैसे?’ नागूल्लोव ने नथुने फुलाकर पूछा।

“मेरे कि हमने पक्षियों का सामूहिकीकरण करने का फैसला किया।

‘तुम गलत कहते हो।’

“बिलकुल ठीक कह रहा हूँ, फैक्ट। हमें मामूली बातों के भ्रमल में नहीं पड़ना चाहिये था। हमने बीजों का प्रबंध अभी किया नहीं और मुर्गे-मुर्गियों के चक्कर में फस गये। क्या मूर्खता है। मेरा तो जी सिर के बाल नोचने को करता है और इलाकाई सर्माति में बीजों के मामले पर मेरी खूब खिचाई की जायेगी, फैक्ट। सचमुच ही बड़ा अप्रिय फैक्ट है।’

“तुम यह बताओ कि क्यों मुर्गे-मुर्गियों को सामूहिकीकृत नहीं करना चाहिये? सभा तो राजी हो गयी थी?”

“अरे बात सभा की नहीं है।” दबीदोव नाक-भौ मिकोडकर बोला। “तुम समझते क्यों नहीं कि मुर्गियों की बात मामूली है पर

हमें तो मुख्य बातें करनी हैं—सामूहिक फार्म को मजबूत बनाना है, शत-प्रतिशत लोगों को उसमें शामिल करना है, और बोवाई भी तो आखिर करनी है। और मैं, मकार, पूरी गंभीरता से कहता हूँ कि माली मुर्गियों के मामले में हमने राजनीतिक भूल की है, सचमुच हमने गलती की है। कल रात को मैंने सामूहिक फार्मों के गठन के बारे में कुछ बातें पढ़ी थीं और समझ गया कि गलती कहा हुई आखिर हमारे यहाँ सामूहिक फार्म है यानी सहकारी संगठन, पर हम उसे कम्यून बनाने लगे। ठीक है न? यह अतिव्यापथी प्रवृत्ति ही तो है। तुम ही सोचो। तुम ही ने तो यह करवाया। तुम्हारी जगह अगर मैं होता तो बोल्शेविकों के लिये लाक्षणिक साहस के साथ इस भूल को स्वीकार कर लेता और मुर्गे-मुर्गियों आदि को अपने-अपने घर ले जाने का आदेश दे देता। क्यों? और अगर तुम यह नहीं करोगे तो लौटने ही मैं अपनी जिम्मेदारी पर यह कर दूँगा। अच्छा, मैं चला।”

उसने टोपी पहनी, कुलको में जब्त भेड़ की खाल के लबादे का फिनाल की बूँ छोड़ता ऊँचा कालर उठाया और फाइल के तर्फें बाधता हुआ बोला

तर्ह-तर्ह की नन्ने-मठवासिनी घूमती रहती है और हमारे बारे में न जाने क्या-क्या बकती रहती है। औरतो बुढ़ियाओं को हमारे खिलाफ उकसाती है। और सामूहिक फार्म तो अभी इतने कच्चे हैं और इतने सस्ते जरूरी हैं। सब हमारे पक्ष में होने चाहिये। बुढ़ियायें भी और औरने भी। सामूहिक फार्म में औरतों की भी अपनी भूमिका है, फैक्ट।” और यह कहकर वह लम्बे-लम्बे, भारी डग भरता बाहर चला गया।

‘चलो, मकार, मुर्गियों की छुट्टी करने। दबीदोव ठीक ही कह रहा था।

रजम्योल्नोव बड़ी देर तक उत्तर की प्रतीक्षा में नागूलनोव को नाकना रहा वह खिड़की के दासे पर, ओवरकोट के बटन खोले बेठा, हाथों में टोपी घुमाता कुछ बुदबुदा रहा था। इसी तरह कोई तीनों मिनट बीत गये। मकार ने झटके से मिर उठाया, रजम्योल्नोव में उनकी नज़रें मिली और वह बोला

“चलो। हम लोग चूक गये। बिल्कुल ठीक है यह बात। टूटे दातोवाला दबीदोव शैतान तो बिल्कुल ठीक बोला ” और उसके

होठो पर भेष भरी मुस्कान फैल गयी।

दबीदोव स्लेजगाडी में बैठ रहा था, उसके पास कोद्रात माइदान्स्कोव खड़ा था। वे किसी विषय में बात कर रहे थे। कोद्रात हाथ हिला-हिलाकर बड़े जोश में कुछ कह रहा था, गाडीवान बेचैनी से लगाम पकड़े बैठा था। दबीदोव अपने होठ काटता उसकी बातें सुन रहा था।

ओसारे से उतरते हुए रज्म्योल्लोव ने दबीदोव को यह कहते सुना

“तुम चिंता मत करो। शांत हो जाओ। सब हमारे हाथों में है, सब ठीक कर देंगे, फैक्ट! जर्मनी की व्यवस्था लागू कर देंगे, टोली नायको पर निजी जिम्मेदारी लाद देंगे। अच्छा, अब मैं चला।”

घोड़ों की पीठ पर चटककर चाबुक पड़ा। स्लेजगाडी बर्फ पर निगलन छोड़ती हुई फाटक के बाहर चली गयी।

मुर्गी-फार्म के अहाते में सैकड़ों मुर्गियाँ रगबिरगी गिट्टी की तरह बिखरी हुई थीं। बुढ़ा अकीम सटी लेकर अहाते में घूम रहा था। हवा उसकी सफेद दाढ़ी से खेल रही थी, माथे पर पसीने की बूंदों को सुखा रही थी। ‘मुर्गी-छेड़’ नमड़े के बूटों से मुर्गियों को धकेलना चल रहा था, उसके कंधे पर चुंगे से भरा भोला लटका था। बूढ़ा भंडार में कोठरी की तरफ एक रेखा में चुंगी डालना चल रहा था। उसके पैरों में ढेरों मुर्गियाँ फुदक रही थीं, उनकी ‘कु-क-ड कू’ निरंतर सुनायी पड़ रही थी।

खूंटों से घिरे खलिहान में चूने के ढेरों की तरह हंसों के झुंड थे। वहां में पक्षों की फड़फड़ाहट, कै-कै, चै-चै सुनायी पड़ रही थी। कोठरी के पाम लोगों का झुंड घेरा बनाकर खड़ा था। उनकी पीठें और चूतड़ ही दिखायी दे रहे थे। मिर भुकाये वे घेरे में कुछ देख रहे थे।

रज्म्योल्लोव ने पाम जाकर पीठों के ऊपर से घेरे के अंदर देखने का प्रयास किया। लोग हाफते, घुरघुराते दबी आवाज में एक-दूसरे से कह रहे थे

“लालवाला जीतेगा।”

“अरे जाने भी दो! देखते नहीं उसकी कलगी लटक गयी है।”

“अरे क्या जबरदस्त चोट की है।”

“गलथैली फाड़ ली, निढाल हो गया ”

बुढ़े श्चुकार की आवाज सुनायी पड़ी

“ धकेल मत ! मत धकेल ! वह खुद गुरू करेगा ! नहीं धकेल ,
म्साले ! मैं तेरा थोबड़ा धकेलू ! ”

घेरे में डैने फैलाकर दो मुर्गे चक्कर काट रहे थे , एक-सुर्ख-
लाल और दूसरा कौए की तरह काला । उनकी नुची कलगिया जमे
खून में काली थी , पैरों में काले और लाल पखों का ढेर बिखरा पड़ा
था । लड़ाके थक गये थे । वे ऐसे घूम रहे थे मानो कुछ चुग रहे हों ,
पर उनकी चौकन्नी आंखें एक-दूसरे पर टिकी थी । उनकी बनावटी
उदासीनता जल्दी ही खत्म हो गयी कालावाला अचानक फुदककर
उड़ा , लालवाला भी फुदका । हवा में वे एक-दूम्मे को टक्करे मारने
लगे

बुढ़ा श्चुकार दुनिया की मुश्किलें भूलकर देख रहा था । उसकी नाक
की नोक पर गेट भूल रही थी , पर उसे इसका होश न था । उसका
मारा ध्यान लाल मुर्गे पर टिका था । लालवाले को जीतना चाहिये
था । बुढ़ा श्चुकार देसीद घुलने के साथ शर्त बदल रहा था । अचानक किसी
के हाथ ने श्चुकार को इस तनावपूर्ण अवस्था से निकाला वह रुखाई
के साथ कोट का कालर पकड़कर बुढ़े को घेरे के बाहर खींच रहा था ।
श्चुकार ने मुड़कर देखा , उसका चेहरा भयकर क्रोध में विकृत था ,
वह मुर्गे की तरह अपने शत्रु पर टूटने को आतुर था । पर क्षण भर
में चेहरे का भाव बदल गया , वह हसमुख हो गया यह नागूल्लोव
का हाथ था । नागूल्लोव ने गुस्से में दर्शकों को धकेलकर मुर्गों को
खदेड़ा और गेष के साथ बोला

“ मुर्गों को लड़ाने के सिवा और कोई काम नहीं जाओ , लोफरो
अपन-अपन काम पर ! अगर कुछ करने को नहीं तो अस्तबल में
बिचाली डालो । सागबाडिया में गोबर डालने जाओ । और दो
जने घर-घर जाकर लुगाटयों से कह दो कि अपनी-अपनी मुर्गिया
ले जाये । ”

“ क्या मुर्गियों का सामूहिक फार्म बंद हो रहा है ? ” मुर्गों की
लड़ाई के एक शौकीन लोमड़ी की खाल की टोपीवाले निजी किसान
ने पूछा जिसे लोग हमामची कहकर पुकारते थे । “ लगता है उनकी
चेतना अभी सामूहिक फार्म लायक नहीं हुई । क्या समाजवाद में मुर्गे
लड़ेंगे या नहीं ? ”

नागूल्लोव ने आंखें तरेरकर उसको ऊपर से नीचे तक देखा, उसका चेहरा तमतमा गया।

“तू जबान संभालकर मज़ाक़ कर! समाजवाद के लिये सबसे नेक लोगों ने अपनी जान कुर्बान की है और तू, कुत्ते का गू उसका मज़ाक़ उड़ाता है? भाग यहां से दुश्मन, नहीं तो अभी तुझे उस दुनिया का टिकट कटा दूंगा। भाग, बिच्छू, यहां से जब तक मैंने तुझे मुर्दा नहीं बनाया! मुझे खूब मज़ाक़ करना आता है!”

वह मौन खड़े कज़्जाकों के पाम में चल पड़ा, अंतिम बार मुर्गे-मुर्शियों में भरे बाड़े पर नज़र डालकर वह धीरे-धीरे, कंधे झुकाये फाटक की ओर जा रहा था।

२०

इलाक़ाई पार्टी समिति में मिगरेट का नीला धुआ भरा था, टाइप-राइटर ठक-ठक कर रहा था, डच अगीठी की गर्मी भरी थी। दोपहर के दो बजे ब्यूरो की मीटिंग होनेवाली थी। इलाक़ाई समिति का सचिव हडबडी में था। उसका सफ़ाचट चेहरा पसीने से तर था, घुटन के कारण उसने ऊनी कमीज़ का कालर खोल रखा था। दवीदोव को कुर्सी पर बैठने का इशारा करके उसने अपनी फूली, गोरी गर्दन खूजलायी और बोला।

“वक्त मेरे पास कम है, यह तुम ध्यान में रखना। हा तो क्या हाल है तुम्हारे यहां? सामूहिकीकरण कितने प्रतिशत हुआ? मौ फ्री सदी कब करनेवाले हो? संक्षेप में बोलो।”

“शीघ्र ही करनेवाले है। पर बात प्रतिशत की नहीं है। आतर्गिक स्थिति का क्या करें? मैं बसंत में खेती के कामों की योजना लाया हूँ, देख लो।”

“नहीं-नहीं!” सचिव आशंका के साथ बोला, उसने अपनी विषण्ण आँखें व्याकुलता से मिचमिचायी और रूमाल में माथे का पसीना पोंछकर बोला: “तुम यह इलाक़ाई कृषि संघ में लुपेतोव के पाम ले जाओ। वही देखकर अनुमोदन कर देगा, मेरे पास वक्त नहीं है, मंडल समिति में एक कामरेड आये हैं, ब्यूरो की मीटिंग होगी। अच्छा, यह बताओ

कि तुमने क्यों कुलकों को हमारे पास भेज दिया ? बड़ी मुसीबत है तुम्हारे साथ तो .. मैंने तो तुम्हें साफ़-साफ़ रूसी भाषा में कहा था , चेतावनी दी थी : ' इसकी जल्दी मत करना क्योंकि हमारे पास सीधा निर्देश नहीं आया है । ' और कुलकों के पीछे पड़ने के बजाये , सामूहिक फ़ार्म बनाने से पहले ही उनको बेदखल करने के बजाये तुमको व्यापक सामूहिकीकरण पूरा करना चाहिये था । और बीजों का क्या हाल है ? तुम्हे फ़ौरन बीज तैयार करने के बारे में इलाकाई समिति का निर्देश मिला था ? अभी तक क्यों यह निर्देश पूरा नहीं किया गया ? आज ही ब्यूरो की मीटिंग में मुझे नागुल्नोव और तुम्हारा सवाल उठाना पड़ेगा । मुझे यह माग करनी पड़ेगी कि तुम्हें सज़ा दी जाये । यह तो शर्म की बात है ! देखो दवीदोव ! इलाकाई समिति के महत्वपूर्ण निर्देश को न पूरा करने से तुम्हारे लिये बड़े अप्रिय परिणाम हो सकते हैं ! अब तक तुमने कितने बीज जमा किये हैं ? ठहरो मैं अभी रिपोर्ट देखता हू ... " सचिव ने दराज़ में चार्ट निकाला , आखें मिचमिचाकर उस पर नज़र दौड़ायी और उसका चेहरा एकदम लाल हो गया । ' देख लो ! एक भी पूद नहीं जमा किया ! तुम चुप क्यों हो ? "

" पर तुम मुझे बोलने ही कहा दे रहे हो । यह सच है कि बीजों का काम अभी शुरू नहीं किया । आज ही लौटकर शुरू कर देंगे । अब तक रोज़ सभाये बुलाते रहे . सामूहिक फ़ार्म की स्थापना के प्रबन्ध-मडल का , टोलियों का गठन किया । काम बहुत अधिक है , जैसा तुम चाहते हो वैसा कैसे कर सकते हैं , जादू की छड़ी तो है नहीं कि घुमाया और सब हो गया — सामूहिक फ़ार्म भी बन गया , कुलको का भी सफ़ाया हो गया , बीज भंडार भी .. यह सब हम पूरा कर देंगे और तुम रिपोर्ट लिखने में जल्दबाज़ी मत करो , वक्त आने पर लिख देना । "

" कैसे नहीं करूँ जल्दबाज़ी अगर मडल और प्रदेशवाले दबाव डाल रहे हैं , सांस नहीं लेने दे रहे । बीज भंडार पहली फ़रवरी तक बन जाना चाहिये और तुम ... "

" और मैं उसे पंद्रह तारीख तक बना डालूंगा , फ़ैक्ट ! आखिर फ़रवरी में तो बोवाई करेंगे नहीं । आज प्रबन्ध मडल के एक सदस्य को तुब्यान्स्की भेजा है ओसाई-मशीन के लिये । वहां के फ़ार्म का अध्यक्ष ग्नेदीख भी बड़ा चालू है । हमारे पत्र के उत्तर में कि कब उनकी ओसाई-

मशीन खाली होगी उसने लिखा 'भविष्य में।' बड़ा हाज़िर-जवाब बनता है।"

"तुम मुझे ग्नेदीख के बारे में नहीं, अपने सामूहिक फ़ार्म के बारे में बताओ।"

"हमने ढोर काटे जाने के विरुद्ध अभियान चलाया। अब नहीं काटे जा रहे। हाल ही में हमने मुर्गे-मुर्गियों, भेड़-बकरियों आदि को इस डर से सामूहिकीकृत करने का फ़ैमला किया कि कही उन्हें भी न काट दें .. पर आज मैंने नागूलोव को कह दिया है कि वह मुर्गियों को वापस बांट दे।"

"क्यों?"

"मैं मानता हूँ कि भेड़-बकरियों और मुर्गियों का सामूहिकीकरण ग़लत है और सामूहिक फ़ार्म को अभी इसकी ज़रूरत नहीं है।"

"सामूहिक फ़ार्म की सभा ने ऐसा निर्णय लिया था?"

"हां।"

"तब क्यों ऐसे कर रहे हो?"

"मुर्गी-पालक नहीं है, किसानों का उत्साह फीका पड़ गया, फ़ैक्ट। छोटी-छोटी बात पर उन्हें परेशान करने की ज़रूरत नहीं है। मुर्गियों को सामूहिकीकृत करने की आवश्यकता नहीं है, आखिर हम सामूहिक फ़ार्म का निर्माण कर रहे हैं कम्यून का नहीं।"

"बहुत अच्छा सिद्धांत दूढ़ निकाला! पर वापस करने की क्या ज़रूरत है? बेशक, मुर्गियों को नहीं छेड़ना चाहिये था पर एक बार कर ही बैठे तो पीछे लौटने की ज़रूरत नहीं। तुम लोग तो एक जगह खड़े पाव पटक रहे हो। कमर कमनी चाहिये! बीज भंडार नहीं बनाया, सौ फी मदी सामूहिकीकरण नहीं किया, औज़ारों की मरम्मत नहीं हुई "

"आज लोहार से बात कर ली है।"

"मैं भी तो यही कह रहा हूँ, गति नहीं है। तुम्हारे यहां ज़रूर प्रचार दल भेजेंगे, वह सिखा देगा तुम्हें काम करना।"

"भेज देना। बहुत अच्छा होगा, फ़ैक्ट।"

"और जिस काम में जल्दी नहीं करनी चाहिये थी वह तुमने भट से कर डाला। लो, सिगरेट पियो," सचिव ने सिगरेट-केस बढ़ाते हुए कहा। "अचानक कुलों से भरे छकड़े आ टपके। ग० प० उ० से ज़खारचेन्को का फ़ोन आया कि वह उनका क्या करे। वह बोला: 'मंडल से कोई निर्देश मिला नहीं इसके बारे में। उन्हें भेजने के लिये

रेलगाड़ी चाहिये। कैसे भेजूं, कहां भेजूं?’ देखा तुम लोगों ने क्या कर डाला! न कोई सलाह ली, न फ़ैसला किया हमारे साथ ..”

“मुझे उनके साथ क्या करना चाहिये था?”

दबीदोव तैश में आकर बोला। जब वह गुस्से में होता तो जल्दी-जल्दी तीखी आवाज़ में बोलने लगता, उसकी जीभ दांतों की खुड्डी में फंस-फंस जाती। अब भी वह कुछ तुतलाते हुए अपनी पतली तीखी आवाज़ में जोर-जोर से बोल रहा था:

“क्या मैं उन्हें अपनी गर्दन पर बिठाये घूमता? उन्होंने ग़रीब खोप्रोव और उसकी बीवी का खून कर दिया?”

“जांच मे इसकी पुष्टि नहीं हुई,” मचिव उसे टोककर बोला, “वहां दूसरे कारण भी हो सकते थे।”

“जांच करनेवाला अनाडी था इसीलिये नहीं हुई पुष्टि। दूसरे कारणों के बारे में बात में कोई जान नहीं! कुलको की ही करतूत थी! वे हर तरह से हमारे काम में अड़ंगा डाल रहे थे, सामूहिक फ़ार्म के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे, इसीलिये निकाल दिया हमने उन्हें। एक बात मेरी समझ में नहीं आती कि तुम क्यों बार-बार इस की चर्चा कर रहे हो? मानो तुम इससे क्षुब्ध हो ..”

बेतुकी बात करते हो! तुम ज़रा ज़बान संभालकर बोलो! ऐसे मामलों में जब योजना और योजनाबद्ध काम के स्थान पर छापेमारो की तरह मनमानी से काम किया जाता है, मैं इसके खिलाफ़ हूं। और तुम पहले आदमी हो जिमने अपने गांव मे कुलकों को निकालकर हमे बड़ी मुश्किल स्थिति में डाल दिया। तुम अपनी ही क्यो सोचते हो, अपने छकड़ों से तुमने उन्हें इलाक़ाई केन्द्र तक ही क्यों भेजा? क्यों सीधा स्टेशन तक, मंडल मुख्यालय तक नहीं भेजा?”

“छकड़ों की हमें ज़रूरत थी।”

“मैं भी तो यही कहता हूं—तुम अपनी ही सोचते हो! अच्छा, चलो ख़त्म करें। और निकट भाविष्य के लिये तुम्हारा काम है: बीजों का पूरा भंडार बनाना, बोवाई के लिये औज़ारों की मरम्मत, सौ फ़ी सदी सामूहिकीकरण। तुम्हारा फ़ार्म स्वतंत्र होगा। वह बाक़ी इलाक़ों से दूर है, खेद की बात है, इसलिये वह ‘विराट’ कृषि संगठन में शामिल नहीं हो सकेगा। मंडलवालों को भी समझना बड़ा मुश्किल है। कभी कहते हैं विराट फ़ार्म स्थापित करो तो कभी उनको छोटे-छोटे

मे बाट दो। सिर चकराता है।”

सचिव मिर पकड़कर बैठ गया, पर कुछ देर बाद बिल्कुल दूसरे लहजे में बोला

“जाओ, कृषि सघ में योजना का समन्वय करवा लो, फिर कैंटीन में खाना खा लेना, अगर नहीं मिला खाना तो मेरे घर चले जाना, मेरी पत्नी तुम्हें खिला देगी। ठहरो! चिट लिख देता हूँ।”

उमने जल्दी से कागज के टुकड़े पर कुछ लिखा और दवीदोव को थमा दिया और मेज पर पड़े कागजों पर नजर गड़ाकर उमकी ओर ठंडा, पसीने से गीला हाथ बढ़ाया और बोला

“और फौरन लौट जाना। अलविदा। ब्यूरो की मीटिंग में मैं तुम्हारा सवाल उठाऊंगा। चलो नहीं उठाऊंगा। पर तुम जरा कम लो कमर। नहीं तो कार्यवाही करनी पड़ेगी।”

दवीदोव ने बाहर निकलकर कागज का पुर्जा खोला। नीली पेसिल से उम पर चौड़ी लिखाई में लिखा था

लीजा! मैं यह पुर्जा लानेवाले को तत्काल और निर्विवाद रूप में खाना प्रदान करने का दो टुक प्रस्ताव रखता हूँ।

ग० कोर्चजीन्की।’

नहीं, ऐसे अधिकार-पत्र को ले जाने से तो खाना न खाना ही बेहतर होगा’ डलाकाई कृषि सघ की ओर जाते हुए भूखे दवीदोव न उदासी के साथ फैसला किया।

२१

याजना के अनुसार इस वर्ष क बसंत में ग्राम्याची में ८७२ हेक्टेयर की जुताई करनी थी जिनमें से ११० हेक्टेयर अछूती भूमि थी। पतझड़ में निजी आधार पर ६४३ हेक्टेयर जोती जा चुकी थी, २१० हेक्टेयर पर रबी की रई बोयी गयी थी। जोतो को अनाज और तिलहन की बोवाई के लिये इस प्रकार बाटा गया था गेहूँ-६६७ हेक्टेयर, रई-२१०, जौ-१०८, जई-५०, ज्वार-६५, मकई-१६७, मूजमुखी-४५ और मन-१३ हेक्टेयर। कुल मिलाकर १३२५

हेक्टेयर का क्षेत्र हुआ, इसके अतिरिक्त ग्रेम्याची के दक्षिण में उभाचीना घाटी तक फैली ६१ हेक्टेयर रेतीली जमीन पर पलेज बनाने का फैसला किया गया।

बारह फरवरी को उत्पादन के प्रश्नों पर मभा हुई जिसमें सामूहिक फार्म के चालीस से अधिक सक्रिय सदस्यों ने भाग लिया। प्रमुख प्रश्न थे बीज भंडार की स्थापना, कृषि-कार्यों के कोटे का निर्धारण, बोवाई तक उपकरणों की मरम्मत और बसंतकालीन कृषि-कार्यों के लिये चारे का प्रबंध।

याकोव लुकीच की सलाह पर दबीदोव ने प्रति हेक्टेयर गेहूँ के सात पौद यानी कुल मिलाकर ४६६६ पौद बीज बोने का प्रस्ताव रखा। बस यह सुनते ही चिल्ला-पो मच गयी। हरेक दूसरे की बात सुनने के बजाये अपनी ही चिल्ला रहा था, शोर-शराबे में तीनवाले मकान की खिड़कियों के काच कपकपाकर भँकार रहे थे।

“बहुत ज्यादा है।”

“कहीं पेट न फट जाये।”

“हमारी बालुई मिट्टी में कभी इतना नहीं डाला गया।”

अरे मूर्खिया तब हम पड़ेगी यह देखकर।

“ज्यादा से ज्यादा पाच पौद।

‘चलो साढ़े पाच ही सही।”

“हमारे यहाँ ऐसी जमीन बित्ता भर है जहाँ सात पौद की जरूरत है। तुम्हारी योजना क्या कहती है जातने को?”

“या पान्युशकिन की बैरक के पास की जमीन।”

“तुम भी क्या कहते हो। सबसे बढ़िया घासवाली जगह को जोतना चाहते हो? दिमाग से भी काम लो।”

“आप अनाज की बात करे, हेक्टेयर पर कितने किलो की जरूरत है।”

‘तुम अपने किलो-विलो से हमारा दिमाग मत खराब करो। पौद के तौल से बताओ।’

‘नागरिको। नागरिको, शांत रहो। नागरिको तुम्हारी। चुप भी रहो, पागल हो गये हो क्या? मुझे भी एक शब्द कहने दो।” दूसरी टोली का नायक ल्युबीशकिन चिल्ला-चिल्लाकर बोला।

“अरे तुम एक क्या, सारे शब्द कह डालो।”

“अरे क्या लोग हैं, तुम्हारी दुम में खटखटा! पूरे ढोर हैं... इग्नान्त! क्यों तू सांड की तरह चिंघाड़ रहा है? चेहरा तक तेरा नीला पड़ गया...”

“तेरे मुंह से भी तो पागल कुत्ते की तरह भाग लटक रहा है!”

“ल्युबीशिकन को बोलने दो!”

“इतना शोर है, कान फटे जा रहे हैं!”

सभा में लोग पागलों की तरह चिल्लाये ही जा रहे थे। और जब सबसे ज्यादा गला फाड़नेवालों के गले कुछ बैठ गये, दबीदोव गुस्से में चिल्लाया:

“भला कौन तुम्हारी तरह मलाह करता है?... क्यों शोर मचा रहे हो? हरेक को बारी-बारी से बोलना चाहिये और बाक़ी लोगो को चुप रहना चाहिये, फ़ैक्ट। यह कोई गुडागर्दी की जगह है? कुछ तो समझना चाहिये!” और संयमित स्वर में बोलने लगा। “संगठित रूप से सभा करना आप को मज़दूर वर्ग से सीखना चाहिये। हमारे खाते में या क्लब में सभा बड़े संगठित ढंग से होती है। एक बोलता है, बाक़ी चुपचाप सुनते हैं, आप लोग सब एक साथ चिल्लाते हैं, कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता!”

“अब जो कोई बीच में बोला उसके मिर पर यह सोंटा बजा दूंगा, भगवान की क़सम! जान से मार दूंगा।” ल्युबीशिकन ने बलूत का मोटा सोंटा घुमाकर कहा।

“तब तो तू सभा ख़त्म होते-होते हम सबके मिर फोड़ डालेगा,” द्योम्का उशाकोव बोल पड़ा।

सब हंम पड़े और मिगरेट पीकर गंभीरता के साथ बोवाई के लिये बीजों की मात्रा के प्रश्न पर विचार-विमर्श करने लगे। पता लगा कि चीखने-चिल्लाने की कोई आवश्यकता ही नहीं थी... याकोव लुकीच ने सबसे पहले बोलने की अनुमति मांगी और फ़ौरन सारा वाद-विवाद समाप्त कर दिया।

“आप बेकार ही में चिल्ला रहे थे। पता है क्यों कामरेड दबीदोव ने सात पूद का सुभाव दिया? सीधी-सी बात है, यह हमारी आम गाय है। मशीन से ओसाई करेंगे? करेंगे। बेकार बीज निकलेंगे? ज़रूर निकलेंगे। और हो सकता है बहुत ज्यादा बेकार निकलें क्योंकि कुछ आलसियों के यहा के बीजों और थोथे अनाज में कोई फ़र्क़ नहीं

है। वे खाने के अनाज के साथ ही रखे जाते हैं। बोवाई भी वे जैसे-तैसे करते हैं। और अगर कुछ बीज बचे भी तो बेकार थोड़े ही जायेगे ? मुर्गियों और ढोरो को खिलाने के काम आयेगे। ”

सात पूद प्रति हेक्टेयर के हिसाब से बोने का हो गया फैसला। पर जब हल स जुताई के कोटे का सवाल उठा तो लोगो की गय इतनी परस्पर विरोधी निकली कि दबीदोव का मिर चकरा गया।

“तुम कैसे पहले ही से मेरे हल का कोटा तय कर सकते हो अगर तुम्हे यही मालूम नहीं कि बसत कैसा होगा ?” तीसरी टोली का नायक, चेचक के दागोवाला, हट्टा-कट्टा आगाफोन दुबत्सोव, दबीदोव पर टूट पड़ा। “क्या तुम जानते हो कि बर्फ किस तरह पिघलेगी और पिघलने के बाद जमीन गीली होगी या सूखी ? तुम क्या जमीन के भीतर तक देख सकते हो ?”

“तो तुम क्या सुभाव दोगे, दुबत्सोव ?” दबीदोव ने पूछा।

‘मैं कागज बेकार न करने का यानी अभी कुछ न लिखने का सुभाव दूंगा। बोवाई के बाद देखा जायेगा।”

“तुम तो टोली नायक हो, योजना का ऐसी नासमझी में तुम कैसे विरोध कर सकते हो ? या तुम्हारे विचार में उसकी जरूरत नहीं है ?

पहले में कुछ कहना असभव है।” अचानक याकोव लुकीच दुबत्सोव का पक्ष लेकर बोला। “और कोटा कैसे तय किया जा सकता है ? उदाहरण के लिये तुम्हारे हल के लिये तीन जोड़ी बढ़िया बैल हैं और मेरे पास कमजोर। भला मैं तुम जितनी जुताई कर सकता हूँ ? कभी नहीं।”

कोद्रात माइदानिकोव बीच में बोल पड़ा

“हमारे प्रबधक, ओम्ब्रोव्जोव के मुह में ऐसी बातें सुनकर हमें आश्चर्य होता है। पर कोटे के बिना तुम कैसे काम करोगे ? भगवान की मर्जी से ? मैं हल की मूठ से हाथ नहीं हटाऊंगा और तुम नेटकर धूप सेकोगे, पर पैसे हमको एक जितने मिलेंगे ? जय हो तुम्हारी याकोव लुकीच !”

“आपकी भी कोद्रात ! पर यह तो बताओ कि जमीन और बैलों की शक्ति का तुम कैसे हिसाब लगाओगे ? तुम्हारे पास मुलायम जमीन और मेरे पास कड़ी जमीन है, तुम्हारे पास तलहटी में और मेरे पास

टीले पर। अगर तुम इतने अक्लमद हो तो मुझे भी बताओ।”

“कड़ी जमीन के लिये एक कोटा और मुलायम के लिये दूसरा। बैलो की भी बराबर की जोड़िया बनायी जा सकती है। सब कुछ ध्यान में रखा जा सकता है, तुम बेकार की बाने मत करो।”

“उशाकोव बोलना चाहता है।”

“बोलो।”

“भाइयो! मैं तो यह कहना चाहता हूँ कि ढोरो को हमेशा की तरह बोवाई से एक महीना पहले ठोस चारा देना शुरू कर देना चाहिये जैसे बढ़िया घास, मकई और जौ। पर सवाल यह है कि हमारे पास चारे की स्थिति क्या होगी? अनाज-वसूली के बाद फालतू कुछ बचा नहीं।”

“मवेशी के बारे में बाद में बात होगी। अभी तो हम दूसरी बात कर रहे हैं, फैक्ट। जुताई का दैनिक कोटा निर्धारित करना है। एक हल, एक बोवाई मशीन को कितने हेक्टेयर कड़ी जमीन पर काम करना चाहिये।”

“बोवाई मशीनें भी तरह-तरह की होती हैं। मैं ग्यारह पक्तियोंवाली में उतना नहीं कर पाऊंगा जितना मंत्रह पक्तियोंवाली में।”

“ठीक है। तुम अपना सुझाव दो। और नागरिक आप क्यों हमेशा चुप रहते हैं? आप सक्रिय सदस्य माने जाते हैं पर आज तक मैंने आपकी आवाज भी नहीं सुनी।”

देमीद घुन्ने ने दवीदोव की ओर आश्चर्य के साथ देखा और भारी आवाज में बोला

‘मैं सहमत हूँ।’

‘किसे?’

‘यही कि जुताई करनी चाहिये और बोआई भी।’

“और कुछ?”

“बस यही।”

“यही।”

“उह।”

“हो गयी दिल खोलकर बातचीत,” दवीदोव मुस्कराकर कुछ और भी बोला पर ठहाको के बीच उसकी बात सुनायी नहीं पड़ी।

फिर घुन्ने की जगह बुड्ढा श्चुकार बोला

“कामरेड दबीदोव, हमारे गाव मे सब इसे घुन्ना कहते है। सारी जिदगी चुप रहता है, कडी जरूरत पडने पर ही बोलता है, इसीलिये बीबी इसे छोडकर चली गयी। कज्जाक यह बेवकूफ नही है, पर कुछ पगला-सा है, अगर प्यार के साथ कहे तो दिमाग का कोई पेच कुछ ढीला-सा है। मुझे याद है कि जब यह छोकरा था तो सुस्त-सा, बेकार-सा था। बिना निकर के घूमता था, और उममे कोई प्रतिभा नजर नही आती थी। और अब बडा होकर चुप रहता है। पुराने शामन के जमाने मे तूब्यान्स्की के पादरी ने इसके लिये तो उसे धर्म-समाज तक से निकाल दिया था। पाप-स्वीकृति के समय पादरी ने इसके सिर को काले कपडे मे ढक दिया और पूछा ‘बच्चे मेरे, तुम चोरी करने हो?’ यह चुप रहा। ‘पर-स्त्री सभोग करने हो?’ यह फिर कुछ न बोला। ‘मिगरेट पीते हो?’ लुगाइयो से इस्क लडाते हो?’ यह फिर कुछ नही बोला। उल्लू, यही कह देता, ‘हा पापी हूँ फादर।’ और पापो मे इसकी फौरन मुक्ति हो जाती ”

“बद कर अपनी बक-बक।” पीछे मे कोई हमकर बोला।

“अभी एक सेकड मे खन्म करना हूँ। हा, तो यह चुप बैठा रहा, ऐसे आखे फाडे जैसे बकरा नये फाटक को ताकता है। पादरी का सब्र टूटने लगा पर फिर भी उसने कापते हुए पूछा ‘तुम्हे कभी पडोमी की पत्नी या उसका गधा, या कोई और पशु पाने की इच्छा तो नही हुई?’ इजील मे लिखी और भी बाते पूछने लगा। देमीद फिर कुछ न बोला। और बोल भी क्या सकता था? मान लो कि वह किसी परायी पत्नी की चाह रखता भी, तो भी इसके हाथ कुछ न लगता। मडियल मे मडियल लुगाई तक इसे न ”

‘बाबा बद करो। तुम्हारी कहानी का हमारी बात मे कोई वास्ता नही, दबीदोव सम्झती मे बोला।

“अभी उसका वास्ता हो जायेगा। अभी तो मैंने भूमिका बांधी है। एक सेकड सब्र करो। काट दी न बात तुमने मेरी तेरी ऐसी की तैसी! भूल गया अपनी बात। याद नही आ रहा। ते-तेरी। ऐसी याददास्त मे तो। हा, आ गया याद।’ बुड्डे श्चुकार ने अपनी गजी टाट को ठोका और मशीनगन की तरह पटापट बोलने लगा “हा, परायी औरत के मामले मे देमीद के हाल-चाल ढीले ही थे, और गधे या किसी और पवित्र जीव को पाने की उसे क्या पडी ?

उसे इच्छा हो भी सकती थी क्योंकि घर पर उसके घोड़ा तक नहीं है। पर मैं आप से पूछता हूँ नागरिको, हमारे यहां गधे कहां से आये? बाबा आदम के जमाने से ही यहां गधे नहीं होते! शेर हों या गधे, ऊंटों के बारे में भी यही कहा जा सकता है ...”

“आज तुम चुप भी होगे?” नागूल्लोव ने पूछा। “अभी यहां से निकाल दूंगा तुम्हें।”

“मकार प्यारे, पहली मई को स्कूल में तुम दोपहर से लेकर सूरज डूबने तक विश्व क्रांति के बारे में बोलते रहे थे। बड़ा नीरस और उबाऊ भाषण था तुम्हारा, एक ही बात को सौ-सौ बार दोहरा रहे थे। मैं तो चुपचाप बेंच पर लेटकर सो गया पर तुम्हें नहीं रोका, और तुम हो कि मेरी बात काट रहे हो ...”

“करने दो बूढ़े को बात पूरी। वक्त अभी बहुत है हमारे पास,” चुटकुलों और मजेदार क्रिस्सों का बड़ा शौकीन रज़म्योल्लोव बोला।

“हां, तो इसीलिये शायद देमीद चुप रहा, किसी को कुछ मालूम नहीं। पादरी दांतों तले ऊंगली चबा रहा था। उसने देमीद के सिर पर ढके कपड़े में अपना सिर घुसेड़कर पूछा: ‘तू कहीं गूंगा तो नहीं है?’ देमीद तब उससे बोला: ‘नहीं, पर तुम्हारी बातें सुन-सुनकर ऊब गया मैं!’ पादरी को ऐसा गुस्सा आया, बताने को शब्द नहीं मेरे पास, उसका चेहरा हरा हो गया, वह धीरे से, ताकि आप-पास खड़ी बुढ़ियां न सुन सकें, फुफकारकर बोला: ‘तेरी! .. तो क्यों तू लट्टे की तरह चुप है?’ और इसकी आंखों के बीचवाली जगह पर शमादान दे मारा!”

ठहाको को चीरती देमीद की भारी आवाज गरजी:

“भूठ बोलते हो! नहीं मारा था।”

“मच? नहीं मारा था?” बुढ़े श्चुकार ने हैरानी के साथ पूछा। “क्या फ़र्क पड़ता है, शायद मारना चाहता था ... बस तभी पादरी ने इसे धर्म-समाज से निकाल दिया। ठीक है, नागरिको, रहने दो देमीद को चुप, पर हम तो बोलेंगे, हमें इससे क्या लेना। हालांकि भली बात, जैसी मेरी, चांदी की होती है पर मौन तो सोना होना है।”

“तुम अपनी सारी चांदी सोने में क्यों नहीं बदल लेते! कम से कम दूसरों को तो चैन मिलता ...” नागूल्लोव ने सलाह दी।

रुक-रुककर ठाठके लग रहे थे। बुढ़े श्चुकार की कहानी ने कामकाजी वातावरण को लगभग भंग ही कर दिया था पर दबीदोव ने चेहरे की मुस्कान बुझाकर पूछा।

“काम के कोटे के बारे में तुम क्या चाहते थे? अब काम की बातें करो!”

“मैं?” बुढ़ा श्चुकार आस्तीन से माथे का पसीना पोंछकर पलकें झपकने लगा। “मैं इसके बारे में कुछ नहीं कहना चाहता था ... मैं तो देमीद के प्रश्न पर रोशनी डाल रहा था ... कोटे की बात कहां से आ गयी ...”

“इस सभा में अब तुम्हें मुंह नहीं खोलने दिया जायेगा! सभा में काम की बात करनी चाहिये, हसी-मजाक तो बाद में भी किया जा सकता है, फ्रैक्ट!”

“एक हल से एक देस्यातीना प्रतिदिन का कोटा ठीक रहेगा,” एक कृषि मलाहकार, सामूहिक फ़ार्म का सदस्य इवान बाताल्शिकोव बोला।

पर दुबत्सोव रोष के साथ चिल्लाया:

“तुम पागल हो! अपनी दादी को देना भांसा! एक दिन में देस्यातीना जोतना असंभव है! खून-पसीना एक करके भी इतना नहीं कर पाओगे!

“मैं पहले जोत चुका हूं। हो सकता है इससे कुछ कम हो ...”

“वही तो मैं कहता हूँ, कम ही होगा!”

“आधा देस्यातीना फ्री हल। यह सस्त ज़मीन पर।”

लम्बी बहस के उपरांत उन्होंने जुताई का निम्न दैनिक कोटा निर्धारित किया। एक हल से सस्त ज़मीन — ०.६० हेक्टेयर, भुरभुरी ज़मीन — ०.७५ हेक्टेयर।

और बोवाई का कोटा यह नियत किया गया। ग्यारह पंक्तियों-वाली मशीन से — $3\frac{1}{4}$ हेक्टेयर, तेरह पंक्तियोंवाली से — ४ और सत्रहवाली से $4\frac{3}{4}$ हेक्टेयर।

ग्रेम्याची में कुल मिलाकर बैलो की १८४ जोड़ियाँ और ७३ घोड़े थे इसलिये बोवाई की योजना कठिन नहीं थी। याकोव लुकीच ने भी यही कहा:

“अगर कमर बाधकर काम करेंगे तो जल्दी बोवाई हो जायेगी।

बसंत में बैल-घोड़ों के हिस्से औसतन साढ़े चार देस्यातीना ज़मीन आयेगी। यह तो कोई मुश्किल नहीं है! इसमें कोई गक नहीं।”

“और तूब्यान्स्की में एक जोड़ी के हिस्से आठ देस्यातीना पड़ेगा,” ल्युबीशकिन ने बताया।

“अब जो चाहे करें वे! पिछली पतझड़ में हमने पाला पड़ने से पहले खेत जोत डाले थे और वे जलावन की लकड़ी के बंटवारे में ही लगे रहे। बेकार में वक्त गंवाने रहे।”

उन्होंने तीन दिन के दौरान बीज भंडार जमा करने का फ़ैसला किया। फिर लोहर इप्पोलीत शाली की घोषणा सुनी जिसे सुनकर कोई खुशी न हुई। वह बड़े जोर-जोर से बोल रहा था क्योंकि खुद ऊंचा सुनता था। वह कालिख से सनी अपनी टोपी को काले, काम के समय लगी चोटों के निशान से ढके हाथों में मसोम रहा था। इतने सारे लोगों के सामने बोलते हुए उसे घबराहट हो रही थी:

“सब चीज़ों की मरम्मत की जा सकती हैं। अपनी तरफ़ से मैं कोई कसर नहीं छोड़ूंगा। पर चाहे जो भी करना पड़े लोहे का फ़ौरन प्रबंध हो जाना चाहिये। हल की फाल वगैरह के लिये एक भी टुकड़ा नहीं लोहे का। काम करने के लिये कुछ नहीं है। कल से बोवाई मशीनों की मरम्मत शुरू कर रहा हूँ। मुझे एक मददगार और कोयले की भी ज़रूरत है। हाँ, और मुझे सामूहिक फ़ार्म में तनखा कितनी मिलेगी?”

दवीदोव ने उसे भुगतान के बारे में विस्तार में बताया और याकोव लुकीच को कल ही इलाकाई केन्द्र जाकर लोहा और कोयला लाने को कहा। चारे का प्रश्न बड़ी ज़ल्दी हल हो गया।

फिर याकोव लुकीच ने बोलने की अनुमति मांगी।

“भाइयो, हमें बड़े ध्यान के साथ इस बात पर विचार करना चाहिये कि क्या, कहा और कैसे बोलें, और किसी अनुभवी, ज्ञानी को काश्तकार चुनना चाहिये। सामूहिक फ़ार्म में पहले हमारे यहाँ पांच कृषि सलाहकार रह चुके हैं पर काम उनका दिखायी नहीं देता। किमी बूढ़े कज़ाक को काश्तकार चुनना चाहिये जो अपनी पाचों उंगलियों की तरह हमारी ज़मीन के चप्पे-चप्पे को जानता हो। जब तक नयी चकबंदी नहीं हो जाती तब तक वह हमारे बड़ा काम आयेगा! मैं तो यह मानता हूँ: अब लगभग सारा गांव सामूहिक फ़ार्म में शामिल हो गया। धीरे-धीरे लोग शामिल होते ही जा रहे हैं। कोई तीन-चार दर्जन

घर ही ऐसे बचे हैं जो अलग खेती करते हैं, ये भी आज नहीं तो कल शामिल हो ही जायेंगे। इसलिये हमें विज्ञान के आधार पर खेती करनी चाहिये, जैसा वह कहता है वैसे ही। मेरे कहने का मतलब यह है कि जो दो सौ देस्यातीना हम जोतनेवाले हैं उनमें से आधे पर खेसॉन विधि से काम करना चाहिये। इस बसंत में एक सौ दस देस्यातीना अच्छी जमीन जोतनेवाले हैं न, तो चलो उमी पर खेसॉन विधि को आजमाकर देखें।”

“हमने इसके बारे में सुना तक नहीं।”

“यह खेसॉन किस बला का नाम है?”

“तुम हमें जरा विस्तार से समझाओ,” मन ही मन अपने इतने अनुभवी प्रबोधक के ज्ञान पर गर्व करते हुए दवीदोव बोला।

“इस विधि को अमरीकी विधि भी कहते हैं। यह बड़ी दिलचस्प है और बड़ी अक्ल की है। उदाहरण के लिये इस साल उम पर आप मकई या सूरजमुखी बोते हैं, आम बोवाई की तुलना में खेत में आधी पक़्तिया होगी इसलिये फसल भी पचास प्रतिशत कम होगी। मकई के भुट्टे तोड़ लो, या सूरजमुखी के फूल उतार लो पर खूटिया छोड़ दो और इसी पतझड़ में खूटियों के बीच की जमीन में रबी का गेहूँ बो दो।”

“पर उसे बोयेंगे कैसे? बोवाई की मशीन तो खूटिया तोड़ देगी?” मह खोलकर ये बातें सुनते कोद्रात माइदान्स्कोव ने पूछा।

“क्यों तोड़ देगी? पक़्तियों के बीच तो फासला बड़ा है, वह खूटियों को नहीं छुएगी। हा, तो खूटियों के बीच की जगह में बर्फ जमा हो जायेगी। बसंत में वह धीरे-धीरे पिघलेगी और जमीन को काफी नमी मिलेगी। और बसंत में जब गेहूँ उग आयेगा, ये खूटिया हटाकर निगई कर दी जायेगी है। बड़ी रोचक विधि है। हालांकि मैंने इसे खुद तो पहले आजमाया नहीं पर इस साल इरादा रखता था। सौ फी मदी खरी है यह विधि।”

“यह हुई न बात। मैं ममर्थन करता हूँ। दवीदोव मेज के नीचे पैर दबाकर नागूलोव से फुसफुसाकर बोला “देखो? और तुम इस आदमी के खिलाफ थे ”

“मैं अब भी हूँ ”

“यह तो हठधर्मी है। अडियल टट्टू की तरह ”

सभा में याकोव लुकीच का प्रस्ताव मान लिया गया। इसके बाद और भी ढेरों छोटे-मोटे प्रश्नों का निपटारा किया गया। सभा समाप्त होने के बाद दवीदोव और नागूलनोव ग्राम-सोवियत की ओर जा ही रहे थे कि उसके अहाते से चमड़े की जैकेट के बटन खोले मंभले क्रद का एक युवक निकला और तेज़ी से उनकी ओर आने लगा। तेज़ हवा के थपेड़ों का सामना करते हुए चारखाने की शहरी टोपी पहने वह तेज़ी से उनके पास आ रहा था।

“शहर से कोई आया है,” नागूलनोव ने आंखें मिचमिचाकर कहा।

युवक ने पास आकर फ़ौजियों की तरह सेल्यूट किया।

“आप ग्राम-सोवियत से तो नहीं हैं?”

“आप किस से मिलना चाहते हैं?”

“यहां की पार्टी इकाई के सचिव या सोवियत के अध्यक्ष से।”

“मैं इकाई-सचिव हूं और यह सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष।”

“बहुत अच्छा। कामरेड, मैं प्रचार दल का हूं। अभी-अभी पहुंचे हैं, सोवियत में आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

नकचिपटे, गेहुग, चेहरेवाले युवक ने दवीदोव पर नज़र दौड़ायी और मुस्कराकर पूछा:

“कामरेड, तुम दवीदोव तो नहीं हो?”

“हां, दवीदोव हूं।”

“मैंने तुम्हें पहचान लिया। दो-एक हफ़्ते पहले मंडल की पार्टी समिति में हम मिले थे। मैं शहर में तेल पेरने की मिल में काम करता हूं।”

तभी दवीदोव समझा कि जब यह युवक पास आया तो क्यों उसके नथुनों में सूरजमुखी के तेल की मोहक, मधुर सुगंध भर गयी। युवक की चमड़े की जैकेट में यह सुगंध सदा के लिये रम गयी थी।

ग्राम-सोवियत के ओमारे पर दवीदोव की ओर पीठ किये नाटे क्रद का एक आदमी खड़ा था। उसने नीची कुबानी टोपी और भेड़

की खाल का काला ओवरकोट पहन रखा था। कुबानी टोपीवाले आदमी के कंधे और पीठ इतनी चौड़ी थी कि उसके पीछे से दरवाजे की चौखट तक नहीं दिखायी दे रही थी। वह अपनी छोटी, मजबूत टांगों को चौड़ा करके खड़ा था, उसकी तुलना स्टेपी में उगनेवाले शक्तिशाली एल्म वृक्ष से की जा सकती थी। लगता था कि रीछ जैसी भारी भटकम काया के बोझ से उसके घिसी एंडियो-वाले बूट ओसारे के फर्श में घसते जा रहे हैं।

“यह हमारे प्रचार-दल के नायक, कामरेड कोन्द्रात्को है,” दवीदोव के साथ-साथ चलते युवक ने कहा। और उसके होठों पर मुस्कान को देखकर वह फुसफुसाया “आपस में हम मजाक में ‘पापा क्वाद्रात्को *’ कहकर पुकारते हैं। वह लुगान्स्क के रेलवे इंजन कारखाने में खरादी है। उम्र में तो बाप के बराबर है पर छोरा चोखा है।”

तभी कोन्द्रात्को ने वार्तालाप सुनकर दवीदोव की ओर अपना लाल चेंहरा मोड़ा, उसकी भूरी लटकी मूछों के नीचे श्वेत दनावली चमकी। वह मुस्कराते हुए उक्राइन भाषा में बोला

“लगता है तुम्ही सोवियत सत्ता के प्रतिनिधि हो? नमस्ते, भाइयो।”

“नमस्ते, कामरेड। मैं सामूहिक फार्म का अध्यक्ष हूँ और यह पार्टी इकाई का सचिव।”

“बहुत अच्छा। आइये अदर चले, मेरे लडके बड़ी देर से बाट जोह रहे हैं। चूँकि मैं इस प्रचार-दल का मुखिया हूँ, इसलिये आइये आपके साथ दो बातें हो जायें। नाम मेरा कोन्द्रात्को है और अगर मेरे जवान आपको कहेंगे कि मेरा नाम क्वाद्रात्को है तो आप कृपया उन पर विश्वास न करें, वे इतने शैतान हैं कि कुछ पूछिये मत।” वह आड़ा होकर दरवाजे में घुसता हुआ अपनी गरजती आवाज में बोला।

ओसिप कोन्द्रात्को बीस वर्ष से अधिक समय से दक्षिणी रूम में काम कर रहा था। उसने पहले तगनरोग फिर रोस्तोव-ऑन-दोन, मरिऊपोल और अतत लुगान्स्क में काम किया, वही युवा सोवियत

* रूमी में क्वाद्रात का अर्थ होता है चौकोर। - अनु०

सत्ता को अपने चौड़े कंधों का सहारा देने के लिये लाल गारद में भरती हुआ। इतने वर्षों में रूसियों के बीच रहने के कारण वह अपनी उक्राईनी बोली की शुद्धता खो बैठा था पर उसकी शेवचेन्को जैसी, लटकी मूछों को देखकर उसके उक्राईनी मूल का पता लगाया जा सकता था। सन् १९१८ में वोरोशीलोव की कमान में दोनेत्स्क के खनिकों के साथ वह प्रतिक्रांतिकारी विद्रोहों की आग में धधकते कज्जाक गावों से कूच करता त्सारीत्सिन पर चढ़ाई करने गया था और बाद में, जब गृहयुद्ध के, अतीत की धरोहर बने वर्षों की चर्चा होती, जिनकी प्रतिध्वनि उसके सभी सहभागियों के दिलों-दिमाग में अमर बन गयी, कोन्द्रात्को विनम्र गर्व के साथ कहता “हमारा क्लीमेन्ती वोरोशीलोव लुगान्स्क का ही है हम एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं, क्या पता फिर कभी मिलने का मौका मिले। वह मुझे फौरन पहचान लेगा। त्सारीत्सिन के पास जब हम श्वेतों से लड़ रहे थे वह मुझसे हर बार मिलने पर मजाक करता ‘क्या हाल-चाल है तुम्हारे, कोन्द्रात्को? तुम अभी जिंदा हो बड़े भेड़िये?’ मैं कहता ‘जिंदा हूँ, क्लीमेन्ती येफ्रेमोविच, अभी मरने की फुर्सत नहीं, देखते हैं कैसे हम दुश्मन का सफाया कर रहे हैं? पागलों की तरह!’ अगर हमारी मुलाकात हुई तो वह फौरन मुझमें लिपट जायेगा, कोन्द्रात्को विश्वास के साथ अपनी बात पूरी करता।

युद्ध के बाद वह फिर लुगान्स्क पहुँचा, वहाँ यातायात सुरक्षा सेवा में काम किया, फिर उसे पार्टी-कार्य के लिये भेजा गया और बाद में वह फिर से कारखाने में काम करने लगा। वही से पार्टी ने उसे सामूहिकीकरण करनेवाले गावों की सहायता के लिये लामबंद किया। पिछले वर्षों में कोन्द्रात्को पर मोटापा छा गया था। अब उसके साथी उसी ओसिप कोन्द्रात्को को नहीं पहचान पायेंगे जिसने सन् १९१८ में त्सारीत्सिन के पास की लड़ाई में चार कज्जाकों और कुबान दस्ते के रिमालदार मामालीगा को गाजर-मूली की तरह काटा था, उसी मामालीगा को जिसे खुद ब्रागेल ने अपने हाथों से बहादुरी के लिये मोने के कामवाली चादी की तलवार दी थी। ओसिप पर बुढ़ापा छाने लगा था, चेहरे पर नीली-बैंगनी नसों का जाल उभर आया था जिस प्रकार सरपट दौड़ और थकान से घोड़ा भाग से ढक जाता है वैसे ही समय ने ओसिप के बाल सफेद कर दिये थे, उसकी लटकी

मूँछों पर भी विश्वासघाती सफ़ेदी कब्ज़ा कर बैठी थी। पर मनोबल और शक्ति ने ओसिप कोन्द्रात्को का साथ नहीं छोड़ा था, और जहाँ तक निरंतर बढ़ते मोटापे की बात है तो इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। जब उसकी उम्र और बढ़ते मोटापे की ओर इशारा किया जाता वह कहता: “तरास बूल्बा तो मुझसे भी मोटा था, पता है कैसे लड़ता था पोलींडवालों से? अगर फिर से लड़ना पड़ा तो भी मैं किसी श्वेत अफ़सर के आसानी से दो टुकड़े कर सकता हूँ! और मेरी उम्र पचाम की हुई तो क्या? मेरे पिता जी ज़ार के ज़माने में सौ साल जिये थे, मैं तो अब अपनी सोवियत सत्ता में डेढ़ सौ साल जियूंगा!”

कोन्द्रात्को ने आगे-आगे ग्राम-सोवियत के कमरे में प्रवेश किया।

“कृपा करके चुप हो जाओ, नौजवानो! यह सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष और यह पार्टी इकाई के सचिव हैं। सबसे पहले हमें यहाँ के हाल-चाल का पता लगाना है तब हम फ़ैसला कर सकेंगे कि हमें क्या करना है। चलो, बैठ जाओ।”

प्रचार-दल के कोई पंद्रह लोग आपस में बातचीत करते हुए बैठने लगे। दो लोग गायद घोड़ों के पास बाहर चले गये। अपरिचित चेहरों में दवीदोव ने तीन इलाक़ाई कार्यकर्ताओं को पहचाना: ये थे कृषिशास्त्री, माध्यमिक स्कूल का शिक्षक और डाक्टर। बाक़ी मंडल से आये थे, उनमें से कुछेक फ़ैक्टरियों के मजदूर लगते थे। लोग अभी कुर्सियाँ खिसकाकर, गला खंखारते हुए, बैठ रहे थे, कोन्द्रात्को दवीदोव के कान में बोला:

“हमारे घोड़ों को घास डालने को कह दो और यह भी कहलवा दो कि गाड़ीवान कही जायें नहीं,” और आंख मारकर बोला: “घोड़ों के लिये जई-वई नहीं मिल सकती?”

“जई नहीं है, बस बीज बचे हैं,” दवीदोव ने उत्तर दिया, उसके रोम-रोम में सिहरन दौड़ गयी, उसे अपने से घृणा होने लगी।

चारे के लिये सौ पूद से अधिक जई थी पर उसने मना इसलिये किया कि बची जई को आंख की पुतली की तरह बसंत के कृषि-कार्यों के लिये मंभालकर रखा जा रहा था। याकोव लुकिच रो-रोकर घोड़ों को (सिर्फ़ प्रबंध-मंडल के घोड़ों को!) एक-एक खप्पर अनमोल अनाज देता, वह भी लम्बी कठिन यात्राओं के लिये।

“यही है टुटपुंजियों की मनोवृत्ति! मुझ पर भी हावी होने लगी .”

दवीदोव ने सोचा। “पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था, फ़ैक्ट! मारो गोली... दिलवा दूँ जई? नहीं, अब एक बार मना करने के बाद अच्छा नहीं लगता।”

“जौ ही दिलवा दो?”

“जौ भी नहीं है।”

जौ सचमुच नहीं था पर दवीदोव कोन्द्रात्को की मुस्कराती, अर्थपूर्ण नज़रों को देखकर भेंप गया।

“सच कहता हूँ जौ नहीं है।”

“तुम बहुत बढ़िया किसान बन सकते थे... क्या पता कुलक तक बन जाते...” हंसते हुए कोन्द्रात्को बोला पर दवीदोव की भौंहें सिकुड़ते देखकर उसने उसे अपनी बांहों में भर लिया और उसे हल्का-सा उठाकर बोला: “अच्छा बस-बस! मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। नहीं है तो नहीं सही! अपने लिये बचाकर रखो ताकि ढोरों को खिलाने के लिये कुछ हो... अच्छा भाइयो, अब काम की बात करें! मुर्दों की तरह चुप रहो!” दवीदोव और नागूलनोव को संबोधित करके बोला: “आशा है कि आपको यह तो मालूम ही है कि हम काम में आपकी यथा-संभव मदद करने आये हैं। तो बताइये कि आपके यहां काम कैसे चल रहा है?”

सामूहिकीकरण और बीज भंडार जमा किये जाने के बारे में दवीदोव की ब्योरेवार रिपोर्ट सुनकर कोन्द्रात्को बोला:

“हम सब की यहा ज़रूरत नहीं है,” उसने कगहकग़ जेब से डायरी और स्थानीय नक्शा निकाला और उस पर उंगली सरकाकर बोला: “हम तुब्यान्स्की जायेंगे। मैं देखता हूँ वह गांव ज़्यादा दूर नहीं है। और आपके यहां चार लोगों की टोली छोड़ देंगे, वे काम में आपकी मदद करेंगे। और जहां तक जल्दी से बीज भंडार जमा करने की बात है तो मैं आपको यह सलाह देना चाहता हूँ: शुरू में आप सभा बुलाये, किसानों को सब कुछ अच्छी तरह समझा दें और सिर्फ़ इसी के बाद अपना व्यापक अभियान छेड़ें,” वह धीरे-धीरे विस्तार से बोल रहा था।

दवीदोव को उसकी बातें सुनकर बड़ा आनंद आ रहा था, कभी-कभी वह उक्राईनी भाषा में अच्छी तरह परिचित न होने के कारण कुछ बातों को स्पष्ट रूप से समझ नहीं पा रहा था, पर वह अच्छी

तरह महसूस कर रहा था कि कोन्द्रात्को बीज के लिये अनाज जमा करने के अभियान के बारे में बिलकुल सही बात कह रहा है। और कोन्द्रात्को ने उसी तरह आराम से वह नीति समझायी जो गांव के उन निजी खेती करनेवाले और समृद्ध किसानों के सबंध में चलायी जानी थी अगर वे अडियल रुख अपनाये या सामूहिक फार्म द्वारा बीज के लिये अनाज जमा करने के काम का किसी न किसी तरह प्रतिरोध करने का प्रयास करे, उसने सबसे अधिक कारगर विधियों के बारे में बताया जो अन्य ग्राम-सोवियतों में प्रचार-दल द्वारा अर्जित अनुभव पर आधारित थी। वह बड़ी नम्रता से बोल रहा था, उसकी बातों में इसकी झलक तक नहीं थी कि वह उन्हें कोई निर्देश देना चाहता हो या मिथाना चाहता हो, बीच-बीच में वह कभी दवीदोव की राय पूछता तो कभी रजम्योत्लांव की और कभी नागूल्लोव से सलाह मागता। यह काम इस तरह करना चाहिये। और आप ग्रेम्याची के लोगों का क्या विचार है? मैं भी ठीक यही सोचता हूँ।"

और मुस्कगता दवीदोव खरादी कोन्द्रात्को के लाल नीली नसों से ठकें चेहरे का, उसकी धमी आखों की जेतानी भरी चमक को देखते हुए सोच रहा था 'बड़े दिमागवाला है तू गैतान'। हमारी पहल को दबाना नहीं चाहता, मानो हमारी सलाह पर चलना चाहता है, पर इसके सही दृष्टिकोण पर आपत्ति तो करके देखो, चारों खाने चित्त कर देगा। कमसे कम, मैं ऐसे लोगों को देख चुका हूँ।"

एक और मामूली घटना ने कामरेड कोन्द्रात्को के प्रति उसके प्रेम को और गहरा बना दिया। खाना होने से पूर्व कोन्द्रात्को ने तीन साथियों के साथ ग्रेम्याची में रुके टोली नायक को एक ओर बुलाया, उनके बीच यह बातचीत हुई

"तुमने ऊपर से क्यों रिवाल्वर लटका रखा है? भट से उतार दो।"

"पर, कामरेड कोन्द्रात्को, आखिर कुलको से वर्ग-सघर्ष जो चल रहा है "

"तुम मुझे क्या समझा रहे हो? कुलक है तो क्या हुआ? तुम प्रचार करने आये हो, और अगर कुलको से डरते हो तो रिवाल्वर अपनी जेब में रख सकते हो पर ऊपर लटकाने की हिम्मत मत करना। बड़ा आया है अक्लमद कहीं का। बच्चों की तरह रिवाल्वर लटकाकर

शेखी बघारता है ... फ़ौरन इसे जेब में छिपा लो, नहीं तो कुलकों का कोई चमचा कहेगा : भले लोगो, देखो तो कैसे आये हैं प्रचार करने, पिस्तौलें लटकाकर !” और दांत भीजकर बोला : “बेवकूफ़ कहीं का ...”

स्लेजगाड़ी में बैठते हुए उसने दवीदोव को पास बुलाया और उसके ओवरकोट के बटन से खेलता हुआ बोला :

“मेरे जवान जी जान से काम करेंगे ! आप भी इसी तरह काम करें ताकि जल्दी हो जाये पूरा। मैं तुब्यान्स्की में हूंगा, अगर कुछ हो जाये तो खबर कर देना। वहां पहुंचकर शायद आज ही नाटक दिखाना पड़ेगा। देखने लायक है कि कैसे मैं कुलक की भूमिका निभाता हूं ! मेरी काया तो स्टेज पर जीते-जागते कुलक की तस्वीर प्रस्तुत करने का मौका देती है ... देखो तो बुढ़ापे में कोन्द्वात्को को क्या करना पड़ रहा है ! और जई के बारे में मत मोचो, मैं बुरा बिलकुल नहीं माना.” और मुस्कराकर उसने स्लेज की सीट पर पीठ टिका दी।

“इसका तो दिमाग़ भी इतना बड़ा है जितने कि इसके कंधे और टांगें !” रज़म्योल्नोव खिलखिलाकर हंस रहा था। “बिलकुल ट्रैक्टर है ! .. वह अकेला ही तीन जोड़ी बैलों से ज्यादा हल खींच सकता है। हैरानी होती कि ऐसे लोग किस मिट्टी के बने होते हैं, क्यों, तुम्हारा क्या खयाल है, मकार ?”

“तुम बुढ़े श्चुकार की तरह बातूनी बनते जा रहे हो।” वह भुंभुलाकर बोला।

२३

याकोव लुकीच के घर में येमाऊल पोलोवत्सेव सरगर्मी से वसत में विद्रोह की तैयारियां कर रहा था। सारी-सारी रात मुशों की बांग तक वह अपने कमरे में बैठा कुछ लिखता रहता, कापिंग पेंसिल से कोई नक्शे बनाता रहता, पढ़ता रहता। कभी-कभी जब याकोव लुकीच उसके कमरे में झांकता तो उसे मेज़ के ऊपर चौड़े माथेवाला सिर झुकाये पोलोवत्सेव होंठ हिलाकर कुछ पढ़ता दिखायी पड़ता। पर कभी-कभी याकोव लुकीच उसे गहरे सोच में डूबा पाता। ऐसे क्षणों में पोलोवत्सेव प्रायः मेज़ पर कोहनियां टिकाकर अपने झड़ते सफ़ेद-से

बालों में उंगलियां घुसेड़े बैठा होता। उसके भिंचे जबड़े ऐसे चलते मानो वह किसी अत्यंत कड़ी चीज को चबा रहा हो, आंखें अधमुंदी होतीं। दो तीन बार पुकारे जाने के बाद ही वह मिर उठाता, उसकी छोटी, जड़ पुतलियों में झुंझलाहट चमकती। वह गुरगुर कर पूछता: “बोल क्या चाहिये?” ऐसे क्षणों में याकोव लुकीच उससे बहुत डरता और अपनी इच्छा के विपरीत उसका और भी आदर करने लगता।

गांव की, सामूहिक फ़ार्म की घटनाओं के बारे में पोलोवत्सेव को रोज़ सूचना देना याकोव लुकीच का कर्तव्य हो गया। वह बड़ी ईमानदारी से अपना कर्तव्य निभाता पर रोज़ पोलोवत्सेव को हताश करनेवाली ख़बरें लाता, जिनसे उसके गालों पर झुर्रियां गहरी ही होती जाती।

जिस दिन ग्रेम्याची से कुलकों को निर्वासित किया गया उस रात पोलोवत्सेव बिल्कुल भी नहीं सोया। उसके भारी क़दमों की दबी-दबी चाप भोर तक सुनायी देती रही। और याकोव लुकीच जब दबे पांव उसके कमरे के दरवाज़े के पास जाता तो उसे दांत पीमकर यह बड़बड़ाने सुनता:

‘जीना हराम कर दिया! जड़ें काट रहे हैं मारना चाहिये! सबको मार डालना चाहिये! बेरहमी से!’

चुप होकर, नमदे के बूटों में अपने पैरों को संभाल-संभालकर रखते हुए फिर चहलक़दमी करने लगता, बदन खुजाने की आवाज़ सुनायी पड़ती, वह आदतन अपनी छाती खुजाता और फिर दबी-दबी आवाज़ में कहता:

“मारो! काटो!...” और आर्द्र स्वर में बोलता:

“हे प्रभु, सर्वशक्तिमान, सर्वदृष्टा, न्याय के रक्षक!... मदद करो!... कब आयेगी वांछित घड़ी?... प्रभु, बना डालो इन्हें अपने कोप का भाजन!”

चिंतित याकोव लुकीच ने पौ फटने पर कमरे के दरवाज़े में छेद पर फिर कान लगाया: पोलोवत्सेव प्रार्थना बुदबुदाना, घुटने टेककर कराहता हुआ सिर नवा रहा था। फिर बत्ती बुझाकर लेट गया और उनीद में एक बार फिर फुसफुसाकर बोला: “एक-एक को मार डालना चाहिये!” और कराह पड़ा।

कुछ दिन बाद याकोव लुकीच को रात के समय खिड़की खटखटाने की आवाज़ सुनायी पड़ी, वह दालान में निकला।

“कौन है?”

“खोलो दरवाजा।”

“कौन है यह?”

“अलेक्सान्द्र अनीसीमोविच मे मिलना है ” कोई बाहर से फुम-फुमाया।

“किनसे? यहाँ ऐसा कोई नहीं रहता।”

“उन्हे कह दो कि मैं चोर्नी के पाम में आया हूँ, चिट्ठी लेकर।”

याकोव लुकीच ने कुछ रुककर दरवाजा खोल दिया “जो होना होगा सो होगा।” हड से सिर ढके एक नाटे कद के व्यक्ति ने प्रवेश किया। पोलोवत्सेव उसे अपने कमरे में ले गया और दरवाजा कसकर बंद कर दिया। कमरे से कोई डेढ़ घंटे तक दबे स्वर में, मजीब वार्तालाप सुनायी देता रहा। इतने में याकोव लुकीच के बेटे ने सदेशवाहक के घोंडे को घास डाली, जीन की पेंटी ढीली की और लगाम उतार दी।

फिर तो रोज घुड़सवार हक्कारे आने लगे पर अब वे आधी रात को नहीं बल्कि पौ फटने में पहले आते, रात के कोई तीन-चार बजे। शायद वे पहलेवाले की अपेक्षा काफी दूर स्थानों में आते थे।

इन दिनों याकोव लुकीच बड़ी अजीब-सी दोहरी जिदगी जी रहा था। सुबह सवेरे वह सामूहिक फार्म के दफ्तर जाता, देवीदोव और नागूल्लोव के साथ, बढड्यो और टोली-नायको के साथ बातें करता। ढोरो के लिये बाड़े बनाने, अनाज के बीजों की तैयारी, कृषि उपकरण की मरम्मत की चिन्ता उनमें किसी और बात के बारे में सोचने का वक्त नहीं देती। कामकाजी याकोव लुकीच ने अनायाम ही अपने को मनपसंद काम की हडबडी और ढोरो चिन्ताओं से घिरा पाया, बस फर्क यही था कि अब वह अपनी निजी समृद्धि की खातिर नहीं बल्कि सामूहिक फार्म के भले के लिये गाव-शहर की दौडधूप में व्यस्त रहता। पर वह अपने मनहूस विचारों से ध्यान बटाने के वास्ते इसके लिये भी राजी था। वह काम में रुचि लेता, वह उसे सहर्ष करता, दिमाग में तरह-तरह की योजनाएँ उत्पन्न होतीं। बाड़ों को गर्म बनाने, स्थायी अम्तबल के निर्माण में उत्साह से जुट गया, सामूहिकीकृत खतियों को स्थानान्तरित करने और सामूहिक फार्म की नयी खेती के निर्माण का निर्देशन करता। और शाम को जैसे ही काम की दौडधूप थम जाती और घर जाने का समय आता तो यही सोचकर याकोव लुकीच का दिल हौल

जाता कि वहा कब्र पर बैठे गिद्ध की तरह मनहूस और एकाकी, भयावह पोलोवत्सेव उसकी बाट जोह रहा है। उसका अग-अग शिथिल हो जाता, शरीर में असहनीय थकान छा जाती वह घर पर लौटता और रात का खाना खाने में पहले पोलोवत्सेव के पास जाता।

“बोलो,” वह आदेश देता और मिगरेट मुलगाकर आनुरता से उसकी बात सुनने की प्रतीक्षा करने लगता।

और याकोव लुकीच उसे सामूहिक फार्म की दौड़धूप में बीते दिन के बारे में विस्तार से बताता। पोलोवत्सेव प्रायः बिना कुछ बोले चुपचाप उसकी बातें सुनता, बस एक बार जब याकोव लुकीच ने उसे बताया कि कुलको के कपड़े और जूते गरीबों को बांट दिये गये हैं वह तिलमिल-लाकर गुस्से में बोला

“बसत में उन सबके गले काट देगे जिन्होंने लिये हैं। उन सभी के उन सभी हरामियों के नामों की फेहरिस्त बना लो। मुना? ‘फेहरिस्त मेरे पास है, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच।’”

“इस समय तुम्हारे पास है?”

हा मेरे पास ही है।”

“इधर लाओ।”

उसने सूची लेकर करीने से उसकी नकल उतारी, लोगों के पूरे नाम और उन्हें मिली चीजों का ब्योरा लिखा और जिन लोगों को कपड़े या जूते मिले उनके नाम के आगे उसने काटे का निशान बना दिया।

पोलोवत्सेव ने बातचीत करके याकोव लुकीच खाना खाने जाता और सोने में पहले फिर उसके पास आकर अगले दिन के लिये निर्देश पाता।

पोलोवत्सेव के कहने पर ही ८ फरवरी को याकोव लुकीच ने दूसरी टोली के कार्य-निरीक्षक को बैलों के बाड़ों के लिये रेत लाने के वास्ते चार छकड़े और लोगों को नदी पर भेजने का आदेश दिया। रेत आ गयी। याकोव लुकीच ने बैलों के बाड़ों के कच्चे फर्श को खूब अच्छी तरह साफ करके उस पर रेत बिछाने का आदेश दिया। जब काम समाप्त हो रहा था तब दवीदोव दूसरी टोली के बाड़ों में आया।

“तुम रेत से यह क्या कर रहे हो?” उसने टोली के बैल-पालक देमीद घुले से पूछा।

“ बिछा रहे हैं। ”

“ किसलिये। ”

सन्नाटा।

“ मैं पूछ रहा हूं, किसलिये? ”

“ पता नहीं। ”

“ किसने यहां रेत डालने को कहा है? ”

“ प्रबंधक ने। ”

“ किसलिये बोला था वह? ”

“ सफ़ाई के लिये ... कुतिया की औलाद, नयी-नयी बातें सोचता रहता है! ”

“ यह तो बहुत अच्छी बात है, फ़ैक्ट! सचमुच, अब सफ़ाई रहेगी, नहीं तो यहां गोबर के ढेर और बदबू ही रहती है, बैलों को गंदगी से कोई बीमारी भी लग सकती है। उन्हे भी सफ़ाई की ज़रूरत है, ढोरो के डाक्टर तो यही कहते हैं। तुम बेकार ही बड़बड़ा रहे हो। देखो तो कितना अच्छा लग रहा है बाडा, साफ़-सुथरा, रेत बिछी है, क्यों? तुम्हारा क्या ख़याल है? ”

पर घुन्ने से दवीदोव का वार्तालाप जुड़ा नहीं, वह बिना कुछ बोले चोकर की कोठरी में चला गया और दवीदोव मन ही मन अपने प्रबंधक की पहलकदमी का अनुमोदन करता खाना खाने चला गया।

सांभ ढलने से पहले ल्युबीशकिन दौड़ा-दौड़ा उसके पास आया और गुस्से में बोला :

“ मतलब आज से बैलों को बिचाली की जगह रेत डाल रहे है? ”

“ हां, रेत। ”

“ अरे इम ओस्त्रोव्नोव को क्या हो गया? क्या उसे पागल कुत्ते ने काटा है? कौन ऐसे करता है? और तुम कहां देख रहे हो कामरेड दवीदोव?... क्या तुम ऐमी मूर्खता का समर्थन करते हो? ”

“ ल्युबीशकिन, तुम परेशान मत होओ ' बात सफ़ाई की है और ओस्त्रोव्नोव ने ठीक ही किया है। सफ़ाई से बीमारी का डर नहीं रहेगा। ”

“ यह भी कैसी सफ़ाई है, इसे क्या चाटना है?! बैल कहां लेटेगा? देखते नहीं कितना ज़बरदस्त पाला पड़ रहा है! पुआल पर तो गर्मी रहती है, और रेत पर तुम ज़रा लेटकर तो देखो! ”

“नहीं, भई, तुम कृपया यह सब छोड़ दो! मवेशी की देखरेख का पुराना तरीका त्याग दो! हमें सब कुछ वैज्ञानिक आधार पर करना चाहिये।”

“भला, यह कैसा आधार है? अरे!..” ल्यूबोव्सकिन अपनी टोपी को पिंडली पर चाबुक की तरह पटककर बाहर दौड़ गया। उसका चेहरा तमतमाकर लाल हो गया था।

और अगले दिन सुबह तेइस बैल फर्श से नहीं उठ सके। रात को जमकर पत्थर बनी रेत बैलों के मूत्र को नहीं सोख पायी, बैल गीले फर्श पर ही पसर गये और सुबह तक जमी बर्फ से चिपक गये .. कुछेक पत्थर बनी रेत पर खाल के चिथड़े चिपके छोड़कर उठ गये, चार की फर्श से चिपकी पूंछें टूट गयी और बाक्री अकड़कर बीमार पड़ गये।

याकोव लुकीच ने पोलोवत्सेव के आदेश को पूरा करने में कुछ ज्यादा ही लगन दिखा दी और प्रबंधक का पद खोते-खोते बचा। इसकी पूर्वसंध्या को पोलोवत्सेव ने कहा था: “इस तरीके में इनके बैलों को ठंड से मरवा दो। ये बेवकूफ कर लेंगे यक़ीन कि तुमने यह सफ़ाई की खानिग किया था। पर देखो घोड़ों का तुम ख़याल रखना ढग से ताकि वे हरदम तैयार रहें।” और याकोव लुकीच ने यह आदेश पूरा कर दिया।

सवेरे दवीदोव ने उसे अपने कमरे में बुलाया और दरवाज़े की कुडी चढ़ाकर आंखें मिलाये बिना पूछा:

“यह तुमने क्या किया?..”

“गलती हो गयी, प्यारे कामरेड दवीदोव! मैं तो . भगवान की क़सम . अपने बाल नोचने को तैयार हूं .”

“यह तूने क्या किया, बिच्छू!” दवीदोव के चेहरे का रंग उड़ गया, उसने याकोव लुकीच की ओर क्रोध के कारण आंसुओं से भरी आंखें पलटी। “तोड़-फोड़ करता है? तुझे पता नहीं कि थान में रेत नहीं बिछानी चाहिये? नहीं जानता था कि बैल फर्श से चिपक जायेंगे?”

“मैं तो बैलों के भगवान गवाह है, मैं नहीं जानता था!”

“बंद कर मुंह! मैं कभी विश्वास नहीं करूंगा कि तेरे जैसा तजुर्बेवाला आदमी नहीं जानता था!”

याकोव लुकीच रो पड़ा, वह नाक सड़ोप-सड़ोपकर बस यही बुद-बुदाये जा रहा था :

“सफ़ाई रखना चाहता था .. ताकि गोबर न जमा हो ... मालूम नहीं था, सोचा नहीं कि ऐसा हो जायेगा ...”

“जाओ, उशाकोव को चार्ज दे दो। तुम्हारे पर मुकदमा चलायेंगे।”

“कामरेड दवीदोव ! ”

“निकल जाओ यहा मे !”

याकोव लुकीच के जाने के बाद दवीदोव ने शात होकर मारी घटना के बारे में फिर से सोचा। उसे अब लग रहा था कि याकोव लुकीच पर तोड़-फोड़ का सदेह करना बेढब लगता है। आखिर ओस्ट्रो-व्नों कुलक तो था नहीं। अगर कोई उसे कभी-कभी कुलक कहता भी था तो इसका कारण व्यक्तिगत चिढ़ थी। एक बार प्रबधक के पद पर ओस्ट्रोव्नों की नियुक्ति के कुछ समय बाद ल्युबीस्किन ने बात ही बात में कहा था : “ओस्ट्रोव्नों खुद भूतपूर्व कुलक है !” दवीदोव ने तब फ़ौरन जाच करके पता लगाया कि बहुत साल पहले याकोव लुकीच सचमुच में काफ़ी अमीर किसान था पर एक बार फ़सल मारी जाने के कारण वह तबाह होकर मंभोला किमान बन गया। दवीदोव काफ़ी सोच-समझकर इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि बैलों की दुर्गति में याकोव लुकीच का दोष नहीं, बैलों के बाड़े में उसने रेत बिछाने का आदेश या तो सफ़ाई की इच्छा में दिया होगा या नवाचार की अपनी उत्कठा के कारण। “नहीं, अगर वह तोड़-फोड़ करनेवाला होता तो इतनी लगन से काम न करता और फिर उसके अपने बैलों की जोड़ी को भी नुकसान हुआ है इसमें,” दवीदोव ने सोचा। “नहीं, ओस्ट्रोव्नों विश्वसनीय सामूहिक किसान है और रेतवाली घटना, दुखद भूल मात्र है।” उसे याद आया कि याकोव लुकीच ने कितनी कुशलता और प्रेम से गर्म बाड़ो का प्रबध किया, चारे की कितनी क़िफ़ायत करता था, एक बार जब सामूहिक फ़ार्म के तीन घोड़े बीमार पड़ गये वह शाम से सवेरे तक अम्सबल में रहा, उसने खुद अपने हाथों से घोड़ों को अलसी के तेल का एनीमा लगाया ताकि उनको दर्द से राहत मिले, और फिर उसी ने तो सबसे पहले घोड़ों की बीमारी के दोषी—पहली टोली के साईस कुभेन्कोव को सामूहिक फ़ार्म से निकालने का प्रस्ताव रखा, जिसने पूरे हफ़्ते घोड़ों को सिर्फ़ रई की पुआल खिलायी। दवीदोव

ने गौर किया कि घोड़ों का खयाल याकोव लुकीच से अधिक और कोई नहीं करता। यह सब याद करके दवीदोव को शर्म आने लगी कि उसने बेकार ही गुस्सा किया। वह अपने को प्रबंधक के समक्ष दोषी महसूस करने लगा। उसे यह सोचकर बड़ा अटपटा लगा कि वह एक अच्छे सामूहिक किसान, फ़ार्म के प्रबंध-मंडल के गणमान्य सदस्य पर इतनी बुरी तरह चिल्लाया और तो और उम पर तोड़-फोड़ का संदेह तक कर बैठा जबकि वह सिर्फ़ असावधानी का ही दोषी था। “क्या बकवास है!” दवीदोव बालों को सहलाकर उठा और कमरे से बाहर निकला।

याकोव लुकीच चाबियों का गुच्छा पकड़े, लेखापाल से बात कर रहा था, उसके होंठ कांप रहे थे। ..

“ओस्त्रोव्नोव, मुनो इधर. तुम चार्ज मत माँपो, काम जारी रखो। पर फिर कभी ऐसी बात हुई. तो, समझ लो। अच्छा, इला-काई केन्द्र से जानवरो के कपाउडर को बुलवा लो और टोली-नायकों से कह देना कि घायल बैलों से काम नहीं करवाये।”

सामूहिक फ़ार्म की क्षति पहुँचाने की याकोव लुकीच की पहली कोशिश सफल रही। पोलोवत्सेव ने कुछ समय के लिये ओस्त्रोव्नोव को छुट्टी दे दी क्योंकि वह दूसरे काम में व्यस्त था उसके पास हमेशा की तरह रात को एक नया आदमी आया। उसने छकड़ा रवाना किया और घर में प्रवेश किया। पोलोवत्सेव फौरन उमे अपने कमरे में लिवा ले गया और आदेश दिया कि कमरे में कोई घुमे नहीं। वे बड़ी देर तक बातें करते रहे और अगले दिन सुबह को पोलोवत्सेव ने याकोव लुकीच को अपने पास बुलाया। वह बड़ा खुश नज़र आ रहा था।

“आओं मेरे प्यारे, याकोव लुकीच, इनसे मिलो, यह हमारे संघ के सदस्य, हमारे जुभाऊ साथी सेकेंड लेफ़्टिनेंट वात्सलाव आवगुस्तोविच ल्यात्येव्स्की है, कज़्ज़ाक फौज के ख़ोरूभी के बग़बग़ है इनका ओहदा। तुम इनका जी-जान में खयाल रखना। और यह घर का मालिक, कदीमी कज़्ज़ाक है पर आजकल सामूहिक फ़ार्म का प्रबंधक है. मतलब अब सोवियत कर्मचारी है ..”

सेकेंड लेफ़्टिनेंट ने पलंग से उचककर याकोव लुकीच की ओर चौड़ा गोरा हाथ बढ़ाया। देखने में वह कोई तीस-एक वर्ष का लगता था, चेहरा पीला-सा और बदन छरहरा। उसके पीछे की ओर कड़े काले

घुंघराले बाल साटन की कमीज के खड़े कालर तक लटके थे। तने हंसमुख होंठों के ऊपर हल्की छल्लेदार मूँछें थी। बायीं आंख शायद गोला फटने से लगी अंदरूनी चोट के कारण अधखुली रह गयी थी। आंख के नीचे की सूखी, मृत चमड़ी पतझड़ में झड़े निर्जीव पत्ते की तरह सिकुड़ी हुई थी। पर यह अधखुली आंख भूतपूर्व सेकेंड लेफ्टिनेंट त्यात्येवस्की के हंसमुख, चंचल चेहरे को बिगाड़ने के बजाये और अधिक चंचल बना देती थी। लगता था कि वह बस अभी अपनी बादामी आंख मारकर खिलखिलाकर हंस पड़ेगा। उसने जान-बूझकर ढीले-ढाले कपड़े पहन रखे थे, वे उसको उठने-बैठने में कोई दिक्कत नहीं देते थे और उसकी बांकी चाल को भी नहीं छिपाते थे।

उस दिन पोलोवत्सेव असामान्य रूप से हंसमुख और याकोव लुकीच तक पर बड़ा कृपालु लग रहा था। शीघ्र ही औपचारिकता की बाते छोड़कर उसने ओस्त्रोव्जोव की ओर अपना चेहरा घुमाया और बोला

“सेकेंड लेफ्टिनेंट त्यात्येवस्की कोई दो हफ्ते के लिये तुम्हारे यहाँ रहेंगे और मैं आज अघेरा होते ही चला जाऊँगा। वात्सलाव आवगुस्तो-विच की हर जरूरत पूरी करना, इनके हुक्म को मेरा हुक्म मानकर पूरा करना। समझे? यह हुई न बात याकोव लुकीच मेरे!” और ओस्त्रोव्जोव के घुटने पर हाथ रखकर बोला “जल्दी ही शुरू करने-वाले हैं। बस थोड़ा-सा और सन्न करो। हमारे लोगों को कह देना कि कुछ धीरज रखे। अच्छा अब जाओ, हमें अभी और भी बातें करनी हैं।”

लगता है कि कोई असामान्य बात हो गयी है जो पोलोवत्सेव को दो सप्ताह के लिये ग्रेम्याची में जाने को विवश कर रही है। याकोव लुकीच कारण जानने को बड़ा आतुर था। इस लक्ष्य से वह उसी हाल में गया जहाँ से कभी पोलोवत्सेव ने दवीदोव के साथ उसकी बातचीत को चोरी में सुना था। उसने पतले पार्टीशन पर कान टिकाया। कमरे की दीवार के पीछे हो रहा वार्तालाप उसे बड़ी मुश्किल से सुनायी पड़ रहा था

त्यात्येवस्की: “बेशक, आपको बीकादोरोव से संपर्क करना चाहिये हिज़ एक्सीलेंसी निःसंदेह, मिलने पर आपको बता देंगे कि योजना. इससे अच्छी बात क्या हो सकती! साल्स्की मडल में. बस्तरबंद ट्रेन. हार का मुँह देखने की हालत में...”

पोलोवत्सेव: “श-श ५५!”

ल्यात्येवस्की : “ आशा है , कोई हमें सुन तो नहीं रहा ? ”

पोलोवत्सेव : “ फिर भी ... पूरी गोपनीयता रहनी चाहिये ... ”

ल्यात्येवस्की (और भी धीरे बोलने लगा और याकोव लुकीच को उसकी बातों के कुछ अंश ही सुनायी पड़ रहे थे) : “ पराजय ... बेशक ... अफ़गानिस्तान ... उनकी मदद से बचने की ... ”

पोलोवत्सेव : “ पर पैसे ... १०५०३० . ” (इसके बाद बड़बड़ के अलावा कुछ नहीं सुनायी दिया) ।

ल्यात्येवस्की : “ एक रास्ता यह है : सीमा पार करने ... मीन्क में . वचकर ... मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि सीमा रक्षक ... हेडक्वार्टर के विभाग में जरूर मिलेंगे ... कर्नल हैं , मैं जानता हूँ नाम ... छिपने की जगह ... अरे यह तो बड़ी ज़बरदस्त मदद होगी ! ऐसा संरक्षण ... आखिर बात वित्तीय महायता की नहीं ... ”

पोलोवत्सेव : “ और खास राय ? ”

ल्यात्येवस्की : “ मुझे पूरा विश्वास है कि जनरल दोहरायेगे ... बहुत ! मुझे मुह-ज़बानी कहने का आदेश मिला कि ... मामला बहुत गंभीर है . मौक़े को हाथ में न जाने देना चाहिये ... ”

उनकी आवाज़ें फुसफुसाहट में बदल गयी और याकोव लुकीच , ज़ां उनके वार्तालाप के अंशों में कुछ समझ न पाया , उसांस छोड़कर सामूहिक फ़ार्म के दफ़्तर चला गया । और फिर से , जब वह तीत के मक़ान के पास पहुँचा और उसकी नज़रे वहाँ लंगे बोर्ड पर पड़ी , जिस पर लिखा था . ‘ ग्रेम्याची के सामूहिक फ़ार्म का प्रबंध-मंडल ’ , उसे रोज़ की तरह अपने दोहरे अस्तित्व का भान हुआ । और फिर उसे सेकेंड लेफ़्टिनेंट ल्यात्येवस्की और पोलोवत्सेव के ये विश्वासपूर्ण शब्द याद आ गये . “ जल्दी ही शुरू करनेवाले हैं ! ” उसने विद्वेष और अपने पर खीज के साथ सोचा : “ जल्दी आ जाये वह दिन ! नहीं तो मैं उनके और सामूहिक फ़ार्म के बीच वैसे ही पिस जाऊंगा जैसे दो पाटो के बीच गेहूँ . ”

रात को पोलोवत्सेव ने अपने घोड़े पर ज़ीन कसी . खुरजीं में अपने सारे कागज़ात और खाने-पीने की चीज़ें रखीं और विदा ली । याकोव लुकीच को खिड़की के पास से गुज़रते पोलोवत्सेव के घोड़े की मचलती टाप सुनायी पड़ी ।

नया मेहमान बड़ा बेचैन और फ़ौजियों की तरह बेतक़ल्लुफ़ निकला ।

दिन भर वह हंसता-मुस्कराता घर में घूमता रहता, घर की औरतों से ठिठोली करता, सिगरेट के धुएँ से बेहद चिढ़नेवाली बुढ़िया को चैन न लेने देता। वह निश्चित होकर घूमता, उसे इसका कोई डर न लगता कि कहीं कोई पराया याकोव लुकीच के यहां न आ जाये। याकोव लुकीच ने उसे चेता तक दिया :

“आप थोड़ी सावधानी बरतें ... साहब, क्या पता कोई आ जाये और आपको देख ले।”

“मेरे क्या माथे पर लिखा है कि मैं साहब हूँ?”

“नहीं, पर यह तो पूछ सकते हैं कि आप कौन हैं, कहां से आये हैं ..”

“मेरी जेब मे ढेरों जाली कागजात हैं, अगर कोई परेशानी हुई तो यह वाला पर्चिय-पत्र दिखा दूंगा .. इसे दिखाकर तो कही भी जाया जा सकता है!” और उसने मुस्कराते हुए अदर की जेब से काली माउसर पिस्तौल निकाली।

बाके सेकेंड लेफ्टिनेंट का हंसमुख स्वभाव याकोव लुकीच को उम दिन से विशेष रूप से खलने लगा जब एक बार शाम को दफ्तर में लौटने पर उसे अधेरे गलियारे में दबी आवाजें, हल्की-सी हंसी और खटर-पटर सुनायी पड़ी, उसने दियामलाई जलायी। चोकर की पेटी के पीछे, कोने में उसे ल्यात्येवस्की की इकलौती आख चमकती नज़र आयी और पाम ही में भेपकर लहगा और मिर पर खिसके रूमाल को ठीक करती बहू का तमतमाया चेहरा दिखायी दिया। याकोव लुकीच बिना कुछ कहे रूमोई में घुसने लगा पर ल्यात्येवस्की ने इयोदी पर रोककर उसका कंधा थपथपाया और फुसफुसाकर बोला :

“तुम कुछ मत कहना .. बेटे को अपने परेशान मत करना। तुम्हें मालूम है हम फ़ौजियों का नियम? भट से निशाना भेद दो! जवानी में किसने यह नहीं किया ... अच्छा लो सिगरेट पियो तुम खुद तो बहू के साथ ऐसा-वैसा नहीं करते? बड़े घाघ हो!”

याकोव लुकीच इतना चकित था कि उसने सिगरेट ले ली और ल्यात्येवस्की की माचिस से सिगरेट सुलगाकर ही रूमोई में घुसा। और वह याकोव लुकीच को तमीज़ सिखाने के अंदाज़ में, उबामी को दबाने हुए बोला :

“जब तुम पर कोई कृपा की जाती है, उदाहरण के लिये

माचिस दी जाती है तो धन्यवाद कहना चाहिये। तू, मूढ गवार, और कहलाता है प्रबधक। पुराने जमाने में तो मैं तुझे अर्दली की भी नौकरी न देता।”

“कहा से आ गयी मेरे मिर पर यह बला।” याकोव लुकीच ने सोचा।

ल्यात्येवस्की की धृष्टता से उसके मन में अवसाद भर गया। बेटा सेम्योन घर पर नहीं था, वह पशु चिकित्सक को बुलाने के लिये कम्बे में गया हुआ था। याकोव लुकीच ने उसे कुछ भी न बताने का निश्चय किया, पर उसने बहू को कोठरी में बुलाया और उसे घोड़े की रास में पीटकर सबक सिखाया। चूँकि उसने चेहरे पर नहीं बल्कि पीठ और उसमें गीचे पिटायी की इसलिये पिटाई के निशान दिखायी नहीं देने थे। सेम्योन तक को कुछ पता न पड़ा। कम्बे से वह गत को लौटा, पत्नी न उसे खाना परोसा और बेच के गेन किनारे पर बैठ गयी, सेम्योन ने आश्चर्य के साथ पूछा

“क्यों तू मेहमान की तरह बैठी है?”

“फुसी निकल आयी है” सेम्योन की बीबी का चेहरा लाल हो गया, वह खड़ी हो गयी।

‘तू प्याज और गोट्टी चबाकर उसकी पुलटिस बाध ले, फौरन ठीक हो जायेगी’ वही पाम में बैठा रस्मी बतता याकोव लुकीच हमदर्दी के साथ बोला।

बहू ने उसकी ओर शेरनी की नजर से देखा पर शात स्वर में बाली

“शुक्रिया, पिता जी ऐसे ही ठीक हो जायेगी”

कभी-कभी ल्यात्येवस्की को सीलबद लिफाफो में मदेश मिलते थे। वह उन्हें पढ़कर फौरन अगीठी में जला देता था। अतः वह रातों को शराब पीने लगा, याकोव लुकीच की बहू से अब छेड़-छाड़ नहीं करता था, उदास-सा रहने लगा और अकमर याकोव लुकीच या सेम्योन से ‘अद्धा’ लान को कहता और हाथ में दस-दस के करारे नोट पकड़ा देता। पीकर वह राजनीति की बातें करने लगता, हर चीज का अपने ही ढंग में वस्तुगत मल्याकन, व्यापक सामान्यीकरण करने लगता। एक बार उसने याकोव लुकीच को बड़ी नाजुक स्थिति में डाल दिया। अपने कमरे में बुलाकर उसने याकोव

लुकीच को बोद्का पिलायी और धृष्टता से आंख मारकर पूछा:

“सामूहिक फ़ार्म का भट्ठा बिठा रहे हो?”

“नहीं-नहीं, मुझे क्या पड़ी है इसकी जरूरत,” कृत्रिम आश्चर्य के साथ याकोव लुकीच बोला।

“तो काम करने का तुम्हारा क्या तरीका है?”

“आपका मतलब?”

“कैसा काम करते हो? आखिर तुम तो तोड़-फोड़ करनेवाले हो .. तो तुम क्या करते हो, घोड़ों को कुचले के सत से जहर देते हो, औज़ार खराब करते हो या कुछ ऐसा-वैसा करते हो?”

“मुझे घोड़ों को कुछ न करने का हुक्म मिला है, उल्टे उन्हें...” याकोव लुकीच ने क़बूल कर लिया।

इधर अरसे से वह बिलकुल भी नहीं पी रहा था इसलिये बोद्का के गिलास ने उस पर तेज़ असर किया, उसका जी दिल खोलकर बात करने को हुआ। उसे इस बात की शिकायत करने की इच्छा हुई कि एक ही समय में गाव की सामूहिकीकृत व्यवस्था का निर्माण और सहार करते हुए उसकी आत्मा कितनी दुखती है, पर ल्यात्येवस्की ने उसे बोलने नहीं दिया, अपना गिलास खाली करके उमने फिर से भरा, पर याकोव लुकीच को उसने नहीं डाली, और पूछा:

“अच्छा यह बता, तू काठ के उल्लू, क्यों तूने हमारे दामन को पकड़ रखा है? मैं पूछता हूँ, क्यों? आखिर किसलिये? पोलोवत्सेव और मेरे पास कोई चारा नहीं है, हम मौत को बुलावा दे रहे हैं... हां-हां, मौत को! या हम जीत जायेंगे, हालांकि, तुझे मालूम है लुच्चे, जीतने की संभावना रत्ती भर की है... एक प्रतिशत के सौवें भाग जितनी, इससे अधिक नहीं! पर हमें तुम बदल नहीं सकते, जैसा कि कम्युनिस्ट कहते हैं, बेड़ियों के सिवा हमारे पास और कुछ नहीं। और तुझे क्या लेना-देना इससे? मेरे खयाल से तू बलि का बकरा है। उल्लू, रहता मजे से... मान लो कि मैं इसमें विश्वास नहीं करता कि तुम जैसे टुच्चे समाजवाद का निर्माण कर सकेंगे, पर फिर भी... तुम लोग दुनिया के दलदल में कुछ उथल-पुथल तो कर ही सकते हो। जब विद्रोह होगा, तो सफ़ेद बालोंवाले शैतान, तुझे गोली मार देंगे या सीधे-सीधे क़ैद कर लेंगे और अर्खांगेलस्क प्रांत में निर्वासित कर देंगे। वहा तू कम्युनिज़्म के दूसरे अवतार तक पेड़ काटता रहेगा... अरे,

तू काठ के उल्लू ! मैं तो समझता हूँ कि क्यों बगावत करनी चाहिये , आखिर मैं कुलीन हूँ ! मेरे बाप की करीब पांच हजार देस्यातीना जोतें थी और लगभग आठ सौ देस्यातीना जंगल । मुझे और मेरे जैसे दूसरे लोगों के लिये अपने देश से जाकर परदेस में पसीना बहाकर दो जून की कमाना कड़वे अपमान की बात है । और तू ? तू है क्या ? अनाज उगानेवाला और अनाज खानेवाला ! गोबर में पनपनेवाला गुबरैला ! गृह-युद्ध में तुझ जैसे कुतिया की औलाद कज़ाकों को क्या कम मारा गया ! ”

“ पर हमारा तो जीना दूभर हो गया है ! ” याकोव लुकीच ने आपत्ति की । “ टैक्सो से दम घोट रहे हैं , ढोर छीन रहे हैं , आदमी अपनी मर्जी से नहीं रह सकता , नहीं तो हमें कुलीनों और आप जैसे दूसरों की क्या ज़रूरत पड़ी थी । नहीं तो मैं कभी भी ऐसा पाप अपनी आत्मा पर न लेता ! ”

“ देखो तो सही , इसे टैक्स अच्छे नहीं लगते ! मानो दूसरे देशों में किसान टैक्स नहीं चुकाते । अरे , इससे भी ज्यादा देते हैं ! ”

“ यह नहीं हो सकता । ”

“ मेरी बात पर यकीन कर । ”

“ आपको कैसे पता कि वहां लोग कैसे रहते हैं और कितना चुकाते हैं ? ”

“ वहां रह चुका हूँ , सब जानता हूँ । ”

“ मतलब आप विदेश में आये हैं ? ”

“ तुझे इससे क्या लेना ? ”

“ ऐसे ही कौतूहलवश पूछ रहा हूँ । ”

“ बहुत ज्यादा जानेगा तो बड़ी जल्दी बड़ा हो जायेगा । जा और वोद्का ले आ । ”

याकोव लुकीच ने सेम्योन को वोद्का लाने भेज दिया और खुद एकात की इच्छा से खलिहान में जाकर दो-एक घंटे तक पुआल के ढेर के पास बैठा मोचता रहा : “ काना शैतान ! इसकी बातों से तो मिर चकरा रहा है । या तो यह मेरी जाच कर रहा है कि क्या इनके खिलाफ तो नहीं हो जाऊंगा , मैं अगर कुछ कहता तो यह अलेक्सांद्र अनीसीमोविच को बता देता और वह आकर खोप्रोव की तरह मेरा काम तमाम कर देता । या क्या पता यह सचमुच ही ऐसा मोचता हो ? कहते तो हैं

न कि शराब पीकर दिमाग की बात ज़बान पर आ जाती है ... क्या पता पोलोवत्सेव से नाता तोड़ने में ही भला हो? सामूहिक फ़ार्म में ही चुपचाप दो-एक साल सह लूं। यह भी हो सकता है कि सामूहिक फ़ार्मों की बुरी हालत देखकर सरकार उन्हें बंद ही कर दे? तब तो मैं फिर से आदमी की ज़िंदगी जी सकता हूं ... हे प्रभु! प्रभु मेरे! अब क्या करूं? मेरा सिर ज़रूर कट के रहेगा ... पर अब तो कोई फर्क नहीं पड़ता ... चाहे उल्लू को ठूँठ पर दे मारो या ठूँठ को उल्लू पर, पर उल्लू का तो हाल एक ही होना है ...”

खलिहान में बाड़ को लांघकर हवा घुसी और मनमानी करने लगी। वह फाटक के पास बिखरी पुआल को ढेर के पास ले आयी, उसे कुत्तों द्वारा खोदे गये गड्ढों में भर दिया। पुआल के ढेर पर पड़े बर्फ़ के चूरे को फूंककर उड़ा दिया। हवा बहुत तेज़ और ठंडी थी। याकोव लुकीच बड़ी देर तक यह पता लगाने का प्रयास करता रहा कि वह किस दिशा से चल रही है पर असफल रहा। लगता था कि हवा पुआल के ढेर के चारों ओर घूम रही है, बारी-बारी से सभी दिशाओं से आ रही है। पुआल के ढेर में हवा से चिंतित चूहे कुलबुलाने लगे। वे चूँ-चूँ करते अपनी गुप्त पगडंडियों पर दौड़ रहे थे, कभी-कभी वे पुआल के ढेर में पीठ धंसाकर बैठे याकोव लुकीच के बिलकुल पास से गुज़रते। हवा की सांय-साय, पुआल की खड़-खड़, चूहों की चीं-चीं और ढेंकली की चर्-मर् सुनते-सुनते याकोव लुकीच को नींद-सी आ गयी: रात्रि के सभी स्वर उसे कहीं दूर से सुनायी पड़ते अजीब-से, उदास संगीत की तरह लग रहे थे। अपनी अधबुली, पानी से भरी आंखों से वह तारा-जडित आकाश को देख रहा था, उसके फेफड़ों में पुआल और स्तेपी की हवा की सुगंध भर रही थी। उसे यह दुनिया सुंदर और सरल लग रही थी।

पर आधी रात को वोयस्कोवोय गांव से घुड़सवार पोलोवत्सेव का संदेश लाया। लिफ़ाफ़े पर लिखा था ‘अर्जेंट’, ल्यात्येवस्की ने पत्र पढ़ा और रसोई में सोते याकोव लुकीच को जगाया:

“लो, पढ़ो।”

याकोव लुकीच ने आंखें मसलकर ल्यात्येवस्की के नाम आये पत्र को लिया। डायरी से फाड़े गये पन्ने पर पेन से पुरानी बर्तनी में स्पष्ट लिखावट में लिखा था:

“श्रीमान लेफ्टिनेट महोदय !”

हमें इसके विषय में विश्वसनीय सूचना मिली है कि बोल्शेविकों की केन्द्रीय समिति कृषक जनता से मानो सामूहिक फार्मों में बोवाई के लिये अनाज जमा कर रही है। पर वास्तव में यह अनाज विदेश में बेच दिया जायेगा और सामूहिक फार्मों के सदस्यों समेत सभी किसानों को भयकर भुखमरी का सामना करना पड़ेगा। मोवियन सत्ता अपने निकट और अवश्यभावी पतन को महसूस करके रूस को पूरी तरह तबाह कर रही है। मैं आपको ग्रेम्याची में, जहाँ इस समय आप हमारे सघ का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जनता के बीच तथाकथित बीजों के संग्रह के विरुद्ध आंदोलन छेड़ने का आदेश देता हूँ। मेरे इस पत्र में या० तु० को अवगत करा दें और उसे तत्काल प्रचार कार्य शुरू करने का आदेश दें। हर कीमत पर बीजों के लिये अनाज जमा करने के काम में बाधा डालना अत्यन्त आवश्यक है।”

सुबह याकोव लुकीच घर से सीधा हमामची और ‘दोन मुक्ति सघ’ में उसके द्वारा भरती किये गये लोगों के घर गया।

२४

प्रचार-दल के मुखिया कोन्द्रात्को द्वारा ग्रेम्याची में छोड़ी गयी तीन लोगों की टोली बीज जमा करने के काम में जुट गयी। उन्होंने एक कुलक के खाली मकान में अपना मुख्यालय बनाया। सुबह में युवा कृषि-शास्त्री वेत्यूत्नेव याकोव लुकीच के साथ मिलकर बोवाई की योजना की तैयारी और समन्वय करता, वहाँ आनेवाले कज्जाको को कृषि से संबंधित प्रश्नों का उत्तर देता बाकी समय वह भंडार में आनेवाले बीजों के उपचार और सफाई पर नजर रखता। कभी-कभी जैसे कि खुद कहता ‘वेटरनरी करन’ के लिये—किमी की बीमार गाय या भेड़ का इलाज करने जाता। अपनी ‘फीम’ के रूप में वह बीमार पशु के मालिक के यहाँ खाना खाता, पर कभी वह अपने साथियों के लिये दूध की हडिया या देगची भर उबले आलू ले आता। बाकी दो—मडल की सरकारी चक्की का मजदूर पोफीरी लुब्नो और वनस्पति तेल मिल का कोम्सोमोल कार्यकर्ता इवान नाइद्योनोव—मुख्यालय में ग्रेम्याची के

निवामियो को बुलाते, खत्ती के प्रधान की सूची में देखकर पता लगाते कि वहाँ बुलाये गये अमुक नागरिक ने कितना बीज दिया और यथा-सम्भव प्रचार कार्य करते।

पहले ही दिन से स्पष्ट हो गया कि बीज भंडार बनाने में बड़ी कठिनाइयाँ आयेगी और इस काम में काफी समय लगेगा। बीज जमा करने में तेजी लाने से सबधित, टोली और स्थानीय पार्टी ईकाई के सभी कदमों का अधिकांश सामूहिक किसानों और निजी खेती करनेवाले कृषकों द्वारा जबरदस्त प्रतिरोध किया जा रहा था। गाँव में अफवाह फैल रही थी कि अनाज विदेश भेजने के लिये जमा किया जा रहा है, कि इस साल बोवाई नहीं की जायेगी और किसी भी क्षण युद्ध छिड़ने-वाला है। नागूलोव रोज सभा बुलाता, प्रचार-टोली की मदद से लोगों को समझाता-बुझाता, बेसिरपैर अफवाहों का खंडन करता, 'सोवियत विरोधी प्रचार' करनेवालों को कठोरतम दंड की धमकी देता पर अनाज अत्यंत धीमी गति में जमा हो रहा था। कज्जाक ग्राम-सोवियत या प्रचार-टोली के मुख्यालय के बुलावे से बचने के लिये मुबह में ही घर में निकल जाते, कभी जंगल में जलावन की लकड़ी लाने के बहाने या घाम-फूस लाने के लिये या कभी पड़ोसी के साथ जाकर कहीं सुरक्षित जगह पर छिपकर आशुकापूर्ण दिन बिताते। और तो न तो सभाओं में आना ही छोड़ दिया और जब ग्राम-सोवियत का चपगमी घर पर आना तो यह कहकर अपना पिंड छुड़ाती 'मेरा मालिक घर पर नहीं है और मैंने कुछ नहीं मालूम।

माना किसी का शक्तिशाली हाथ अनाज को रोके हुए था।

प्रचार-टोली के मुख्यालय में प्रायः इस प्रकार की बातें सुनने में आती

"बीज के लिये अनाज जमा कर दिया?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"अनाज नहीं है।"

"कैसे नहीं है?"

"सीधी-माधी बात है। सोचा था कि बोवाई के लिए कुछ बचाकर रख लूँगा, पर अनाज वसूलीवालों को फालतू दे दिया, और अपने

खाने के लिये कुछ बचा नहीं इस लिये बीज के लिये बचा अनाज खा डाला । ”

“ तो क्या तुम बोने की नहीं सोच रहे थे ? ”

“ सोच तो रहा था पर है नहीं कुछ बोने को ”

बहुत-से लोग कहते कि अनाज वसूली के समय उन्होंने बीज भी दे दिये । दफ्तर में दबीदोव और मुख्यालय में इवान नाइद्योनोव सूचियो और वसूली केन्द्र की रसीदों की जाच करने और गलत जानकारी देनेवाले का भडाफोड करने हिमाब में तो बोने के लिये बीज उनके पास होने चाहिये थे । कभी-कभी इसका हिमाब लगाने के लिये मन् उनतीस की फमल और वास्तव में वसूली केन्द्र को दिये गये अनाज की मात्रा के घटाया जाता तो पता लगता कि अनाज जरूर बचा होना चाहिये । पर अपनी बात पर अडे लोग तब कहते

“ हा , गेहूँ बचा था , मैं मना थोड़े ही कर रहा हूँ । पर आप तो जानते ही हैं कामरेड , घर-गृहस्थी में क्या होता है ? हम तो बिना नापे-तौले रोटी खान के आदी हैं । हमने हरेक के हिस्से महीने में एक-एक पूद के हिमाब में अनाज रखा था , पर , उदाहरण के लिये मुझे ही लो , दिन में डेढ़-दो सेर खा जाता हूँ । इसीलिये ज्यादा खा जाता हूँ कि साथ में और कुछ खाने को नहीं । वस यही कारण है कि खत्म हो गया । नहीं अनाज मेरे घर में , चाहे तो तलाशी ले लीजिये । ”

नागूल्नोव पार्टी-इकाई की सभा में उन समृद्ध गाववासीयों के यहाँ तलाशी लेने का प्रस्ताव रखना चाहता था जिन्होंने बीज नहीं जमा कराये , पर दबीदोव , लुब्नो , नाइद्योनोव और रजम्योल्नोव ने इसका विरोध किया । और इलाकाई पार्टी समिति के निर्देश में भी तलाशी लेने की मनाही की गयी थी ।

प्रचार-टोली और फार्म का प्रबन्ध-मंडल तीन दिन में सामूहिक किमानों में केवल ४८० पूद और निजी खेती करनेवालों में मिर्फ ३५ पूद जमा कर पाये थे । फार्म के सक्रिय सदस्यों ने अपने हिस्से का साग अनाज दे दिया था । कोद्रात माइदान्स्कोव , ल्युबांशिकन , दुबत्सोव , देमीद घुन्ना , बुड्वा श्चुकार , अर्काशा बदन् , लोहार शाली अद्रेई रजम्योल्नोव और अन्य पहले ही अनाज जमा करवा चुके थे । अगले दिन सुबह-सवेरे दो स्लेजों के साथ याकोव लुकीच और उसका बेटा मेम्योन साभी खेती पर आये । याकोव लुकीच फौरन दफ्तर चला गया

और सेम्योन स्लेजो से अनाज की बोरिया उतारने लगा। द्योम्का उशाकोव उन्हें लेकर तौल रहा था। सेम्योन ने चार बोरिया खाली कर दी पर जब उसने पाचवी खोली द्योम्का उस पर बाज की तरह भपटा

“तेरा बाप ऐसा बीज बोने की सोचता था?” उसने मुट्ठी में अनाज भरकर सेम्योन के मुह के सामने की।

“कैसा, ऐसा?” सेम्योन तिलमिलाकर बोला। “अपनी भेगी आखो से तुझे गेहूँ शायद मक्का लग रहा है।”

“नहीं, मक्का नहीं।” मैं भेगा हूँ तो क्या, पर तुझ लुच्चे से पैनी है मेरी आखें। तू और तेरा बाप एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो, सब मालूम है। यह क्या है? बीज है? नहीं, तू इधर देख, मुह क्यों फेरना है। बिच्छू की औलाद, तूने मेरे साफ अनाज में क्या मिला दिया?”

द्योम्का सेम्योन के चेहरे के सामने अपनी हथेली हिला रहा था, उस पर मिट्टी और मटरी मिले अनाज की नन्ही-मी ढेरी थी।

“मैं अभी लोगो को बुलाता हूँ ”

“अरे चिल्लाओ मत।” सेम्योन डरकर बोला। “शायद गलती से यह बोरी आ गयी है अभी जाकर दूसरी ले आता हूँ तुम भी बड़े अजीब हो। क्यों तुम घोड़ी की तरह बिदकते हो? कह तो दिया अभी बदल लाना हूँ, गलती से आ गयी यह बोरी ”

द्योम्का ने चौदह में से छ बोरिया वापस कर दी। और जब सेम्योन ने उससे खराब अनाजवाली एक बोरी को कंधे पर रखने में मदद देने को कहा तो द्योम्का ने तराजू की ओर मुह मोड़ लिया मानो उसने मुना ही न हो।

“मतलब मदद नहीं करोगे?” सेम्योन ने कापती आवाज में पूछा।

“घर पर उठाने समय तो हल्की लगी होगी और यहाँ एक दम भारी हो गयी? खुद उठा, भूतनी के।”

सेम्योन ने बोरी को आड़ा करके उठाया और चल दिया, उसका चेहरा बोझ उठाने के कारण लाल हो गया।

इसके बाद के दो दिनों में और कहीं से अनाज नहीं आया। पार्टी इकाई की सभा में घर-घर का फेर लगाने का निर्णय लिया गया। इसकी पूर्ववेला में दवीदोव पडोस के इलाके के बीज चयन फार्म में योजना के अतिरिक्त गेहूँ के कुछ बीज लाने गया था। उस किस्म का

गेहू आमानी से सूखे को सह सकता था और पिछले साल प्रायोगिक खेत में सूखे के बावजूद उमकी बड़ी उम्दा फसल हुई थी। याकोव लुकीच और टोली नायक आगाफोन दुबत्सोव बीज चयन फार्म में आयातित 'कैलिफोर्नियाई' और स्थानीय 'बेलोजेर्नकाया' किस्मों से मिले सकर जाति के गेहू की बड़ी तारीफ करते थे, और दवीदोव ने जो राते कृषि पत्रिकाये पढ़ने में बिताता था, नया गेहू लाने के लिये बीज चयन फार्म जाने का फैसला कर ही डाला।

वह ४ मार्च को वहां से लौटा और इससे एक दिन पहले यह घटना हुई मकार नागूल्लोव जिसे दूसरी टोली मौपी गयी थी सुबह से ल्यूबी-शिकन के साथ लगभग तीस घरों का चक्कर लगा चुका था और शाम को जब रजम्योल्लोव और मचिव ग्राम-सोवियत से चले गये, उसने उन लोगों को बुलवाया जिनके घर वह दिन में नहीं जा पाया था। चार लोगों को बिना किसी परिणाम के उसने छोड़ दिया। वे बस यही कहते "बीज के लिये अनाज नहीं बचा। सरकार से दिलवा दो।" गुरू में नागूल्लोव ने शांत स्वर में उन्हें समझाया-बुझाया फिर मेज पर मुक्के पटक-पटककर बोलन लगा।

'आप कैसे कह सकते हैं कि अनाज नहीं है? उदाहरण के लिये तुम्हीं को ले, कॉन्स्तानतीन गवरीलोविच, पनझड में तो तुम्हारी फसल तीन सौ पूद की हुई थी।'

"मेरे बजाये तुमने सरकार को अनाज दिया था?"

"कितना दिया तुमने?"

'एक सौ तीस।'

"बाकी कहा है?"

"तुम्हें नहीं मालूम? खा डाला।"

"भूठ बोलते हो। इतनी रोटी खाकर तो तुम्हारा पेट फट जाता। घर में तुम छह जने हो, भला इतना अनाज खा सकते हो? जाओ चुपचाप ले आओ, नहीं तो सामूहिक फार्म से निकाल देगे।"

"निकाल दो, जो मर्जी हो करो पर अनाज नहीं है, ईसा मसीह की सौगंध। सरकार से ब्याज पर ले लो।"

"तुम्हारी आदत हो गयी है सोवियत सत्ता को चूसने की। बीज बोने और घास काटने की मशीन खरीदने के लिये जो कर्ज लिया था

वह लौटा दिया तुमने? देखो तो सही! ये पैमे हज़म कर लिये, अब अनाज भी हड़पना चाहते हो?"

"अब तो बीज बोने की और घास काटने की मशीनें सामूहिक फ़ार्म की हो गयी, मैंने उनका फ़ायदा नहीं उठाया, तुम्हें ताना मारने का हक़ नहीं!"

"तुम अनाज लाओ नहीं तो देखना! भूठ बोल-बोलकर शर्म नहीं आती!"

"मैं तो खुशी से दौड़ा-दौड़ा ले आना अगर होता मेरे पास."

लाख कोशिश करने, समझाने-बुझाने, डर दिखाने के बावजूद नागूल्नोव को उन्हें छोड़ना पड़ा।

वे कमरे से निकले, कुछेक मिनट तक बरगमदे में उनका वार्तालाप सुनायी दिया और फिर वे चले गये। कुछ देर बाद निजी खेती करनेवाला ग्रिगोरी हमामची कमरे में घुसा। शायद उसे कुछ देर पहले बाहर निकले किमानो से बातचीत का परिणाम मालूम पड़ चुका था, उसके होठों के कोनों में आत्मविश्वास और चुनौतीपूर्ण मुस्कान फैली थी। नागूल्नोव ने कापते हाथों में मेज़ पर रखी सूची को फैलाया और फटे स्वर में बोला:

"बैठो, ग्रिगोरी मतवेइच!"

"निमंत्रण के लिये धन्यवाद।"

हमामची टांगे फैलाकर बैठ गया।

"ग्रिगोरी मतवेइच, यह क्या कर रहे हो, तुम बीज क्यों नहीं ला रहे हो?"

"मुझे क्या पडी है उन्हें लाने की।"

"आम सभा का फ़ैसला जो है, सामूहिक फ़ार्म के सदस्यों और निजी खेती करनेवाले किमानो को एक जगह बीज जमा करने है। तुम्हारे पाम है?"

"क्यों नहीं, ज़रूर है।"

नागूल्नोव ने सूची देखी. हमामची के नाम के सामने 'सन् १९३० में खरीफ़ की बोवाई का अनुमानित क्षेत्र' वाले खाने में ६ का अंक लिखा था।

"इस साल तुम छह हेक्टेयर बोनेवाले थे?"

"ठीक कहा।"

“मतलब तुम्हारे पास ब्यालीस पूद बीज है?”

“एक रक्ती भी कम नहीं, छने और बिने, ठोम सोने की तरह।”

“अरे तुम तो पूरे शेर निकले।” राहत की माम लेकर नागूल्लोव ने उसे शाबाशी दी। “कल उसे माभी खत्ती मे ले आना। चाहो तो अपनी बोरियो मे रख सकते हो। अलग खेती करनेवालो मे, अगर वे बीज नहीं मिलाना चाहते, उन्ही की बोरियो मे ही लेते है। लाकर भडारी को तौलकर सौप देना, वह बोरियो पर मील लगा देगा और तुम्हे रमीद दे देगा, और बमत मे तुम्हे अपना अनाज मही-मलामत वापस मिल जायेगा। नहीं तो बहुत-से लोग शिकायत करते है कि बचा न पाये, मारा खा गये। खत्ती मे तो वह मही मलामत रहेगा।”

अरे, तुम छोडो ये बाते कामरेड नागूल्लोव।’ हमामची ने लापरवाही मे मुस्कराकर अपनी स्लेटी मूछो पर हाथ फेग। “तुम्हारी यह चाल नहीं चलेगी। अनाज मै तुम्हे नहीं दूंगा।”

“अच्छा यह तो बताओ कि क्यों?”

“क्योंकि मेरे पास वह मही-मलामत रहेगा। और अगर तुम को दे दू तो बमत मे खाली बोरिया तक नहीं मिलेगी। हमें भी अब अकल आ गयी है, अब हमें भासा नहीं दे सकते।”

नागूल्लोव की भौहे तन गयी चेहरे का रंग उड गया।

“तुम कैसे सोवियत सत्ता पर शक कर सकते हो? मतलब तुम्हे उस पर विश्वास नहीं?”

“हा-हा, नहीं है विश्वास। तुम लोगो की बहुत बक-बक मुन चुके है।”

“कौन बका था? क्या बका?” नागूल्लोव का चहरा फक पड गया, वह धीरे-धीरे उठने लगा।

पर हमामची मानो उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा था, वह बैठा हुआ अपन मफेद मुघड विरले दातो को चमकाकर मुस्कराये जा रहा था, वह क्रोध के कारण बस कपकपाये स्वर मे बोला

“अनाज जमा करके फिर उसे जहाजो मे भरकर विदेशो को भेजोगे न? मोटे खरीदने के लिये ताकि पार्टीवाले अपनी बाल कटी लुगाइयो के साथ उन पर बैठकर सैर करे? हमें मालूम है कि क्यों तुम हमारे गेहू को लेना चाहते हो। यही है क्या बराबरी।”

“क्या तुम पागल हो गये हो? क्या बक-बक करते हो।”

“जब तुम छाती पर बैठे हो तो कोई भी पागल हो सकता है! एक सौ सोलह पूद अनाज वसूली में ले लिये! और अब बाक़ी, बीज के लिये बचा अनाज भी मांग रहे हो, मेरे बच्चों को भूखों मारना चाहते हो!”

“चुप! भूठ मत बोल, बिच्छू!” मेज़ पर धूसा पटककर नागूलनोव चिल्लाया।

मेज़ मे गिनतारा फ़र्श पर गिर पड़ा, स्याही की दवात उलट गयी। घनी, चमकीली बैंगनी धारा कागज़ पर रेंगती हुई हमामची के भेड़ की उल्टी खाल के ओवरकोट के पल्ले पर टपक पड़ी। हमामची हथेली से स्याही को झाड़कर खड़ा हो गया। आंखें तरेरकर वह गुस्से को काबू में करते हुए गुर्गिया:

“तू मेरा मुंह बंद मत कर! तू अपनी बीवी लूस्का से कर धूसे पटककर बात, मैं तेरी लुगाई नहीं हू! अब सन् बीस का ज़माना नहीं है, समझा? अनाज मैं नहीं दूंगा... मेरा ठेंगा चूस!...”

नागूलनोव ने मेज़ के ऊपर से झुककर उसकी ओर हाथ बढ़ाया, पर लड़खड़ाकर सीधा खड़ा हो गया।

“तू किस से सुनी बातें बक रहा है? दुश्मन, यह तू क्या बक-बक कर रहा है? समाजवाद की हंसी उड़ाता है, मांप!.. मैं अभी वह शब्द नहीं दूँद पा रहा था, क्रोध से उसका दम घुटा जा रहा था, पर किसी तरह अपने को संभालकर उसने हथेली से चेहरे का पसीना पोंछा और बोला: “अभी मुझे कागज़ लिखकर दे कि कल ही अनाज जमाकर देगा और कल ही तुझे वही भिजवा दूंगा जहां तुझे होना चाहिये। वहां तुझ से सब उगलवा लेंगे कि किम की बातें तू दोहरा रहा है।”

“गिरफ्तार तुम मुझे कर सकते हो पर लिखकर मैं कुछ नहीं देनेवाला और कोई अनाज-वनाज भी नहीं दूंगा!”

“मैं कहता हूँ लिख!”

“मुझे कोई जल्दी नहीं पड़ी, तुम भी इंतज़ार करो कुछ...”

“चुपचाप लिख दे...”

हमामची उठकर बाहर जाने लगा, गुस्से में उसका खून खौल रहा था और वह उस पर काबू न कर पाया, दरवाज़ा खोलते ही वह बोला:

“अभी जाकर यह अनाज सूअरो को डाल दूंगा। तुम परायी रोटी तोड़नेवालो को देने से तो अच्छा ही है कि वे ही ठूस ले।”

“सूअरो को? बीज का अनाज?”

नागूल्लोव लपककर दरवाजे के पास पहुच गया, जेब से रिवाल्वर निकालकर उसके कुदे में उसने हमामची की कनपटी पर चोट की। हमामची लडखड़ाया और दीवार के सहारे टिककर, सफेदी को पीठ से पोछता हुआ धीरे-धीरे फर्श पर ढह गया। कनपटी पर घाव से बालो को रगता गाढ़ा खून रिस रहा था। नागूल्लोव आपे में बाहर हो चुका था, उसने जमीन पर पड़े हमामची को कई बार ठोकर मारी और एक तरफ हट गया। हमामची ने पानी से बाहर निकली मछली की तरह एक-दो बार मुह खोला और दीवार का सहारा लेकर उठने लगा। खड़े होते ही घाव से खून की तेज धारा फूट पड़ी। वह चुपचाप आस्तीन में खून पोछ रहा था, उसकी पीठ में सफेदी का चूना भड़ रहा था। नागूल्लोव जग को मह में लगाकर कुनकुना पानी पी रहा था जग के सिरे पर उसके दात किटकिटा रहे थे। उसने कनखियों में हमामची को खड़ा देखा, पास जाकर उसने कसकर हमामची की कोहनी पकड़ी, धक्का देकर उसे मेज के पास लाया और पेमिल थमाकर बोला

“लिख।”

“मैं तो लिख दूंगा, पर अभियोक्ता को इसकी खबर दे दूंगा पिस्तौल की नोक पर तो मैं कुछ भी लिख दूंगा सोवियत सत्ता में पीटने की मनाही है पार्टी भी इसमें लिये तुम्हें पुचकारेगी नहीं।” निढाल होकर तिपार्टी पर बैठते हुए हमामची भरपूर स्वर में बुदबुदा रहा था।

नागूल्लोव सामने पिस्तौल तानकर खड़ा हो गया।

“आहा, तू क्रांति का दुश्मन अब सोवियत सत्ता और पार्टी की दुहाई दे रहा है। तेरा फैमला लोक अदालत नहीं, मैं ही अभी कर देता हूँ। अगर नहीं लिखेगा तो जहरीले साप की तरह तुम्हें गोली मार दूंगा और फिर चाहे दस माल भी जेल बाटनी पड़े तो भी कोई फिक्र नहीं। मैं तुम्हें सोवियत सत्ता पर कीचड़ नहीं उछालने दूंगा। लिख ‘हलफनामा’। लिख लिया? आगे लिख ‘मैं, भूतपूर्व सक्रिय श्वेत-गार्ड, जिसने हथियार उठाकर लाल सेना से लड़ाई की थी, अपने शब्द

वापस लेता हूँ ' लिख लिया ? ' अपने शब्द जो अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोलशेविक) ' - बोलशेविक ब्रेकेट में लिख लिया ? ' और सोवियत मत्ता को अपमानित करते हैं। मैं उनसे माफी मागता हूँ, हालांकि मैं उनका छिपा दुश्मन हूँ पर वचन देता हूँ कि आगे ' "

" नहीं लिखूंगा ! तुम क्यों ज़ोर-जबरदस्ती कर रहे हो ? "

" नहीं, तू जरूर लिखेगा ! तू क्या सोचता था ? तू सोचता था कि मैं, श्वेत-गार्ड से लड़ाई में घायल, अपाहिज होनेवाला, तेरी बातों को एक कान से सुनकर दूसरे में निकाल दूंगा ? तू मेरे मामले में सोवियत मत्ता पर कालिख पोतेगा और मैं चुप रहूंगा ! लिख, नहीं तो जान निकाल दूंगा ! "

हमामची मेज पर झुक गया और उसके हाथ की पैमिल फिंगर से कागज पर चलने लगी। पिस्तौल के घोड़े से उगली हटाये बिना नागूल्नोव डमला बोल रहा था

" ' हालांकि मैं छिपा दुश्मन हूँ पर अभी मेहनतकशों को प्यारी और मेहनतकश जनता का खून बहाकर स्थापित की गयी सोवियत मत्ता के खिलाफ फिर कभी न कुछ बोलूंगा, न लिखूंगा और न ही कुछ करूंगा। मैं उसे गालियाँ नहीं दूंगा उसे परेशान नहीं करूंगा और चुपचाप विश्व क्रांति की प्रतीक्षा करूंगा जो विश्वव्यापी पैमाने पर उसके हम सभी दुश्मनों का सफाया कर देंगे। मैं यह भी वचन देता हूँ कि कभी भी सोवियत मत्ता के गस्ते आँडा नहीं आऊंगा और फसल नहीं छिपाऊंगा तथा कल ३ मार्च मन् १९३० को माफ़ी ख़त्ती में ' "

तभी कमरे में चपरासी के साथ सामूहिक फार्म के तीन सदस्यों ने प्रवेश किया।

" जग बाहर इतज़ार करो ! नागूल्नोव चिल्लाया और आगे बोला " ' ' गेहूँ के बयालीम पौद बीज जमा करवा दूंगा। ' नीचे दस्तखत कर ! "

हमामची जिसके चेहरे की लाली लौट आयी थी हस्ताक्षर करके खड़ा हुआ और बोला

" तुम्हें इसका जवाब देना होगा, मकार नागूल्नोव ! "

" हम दोनों में से हरेक को अपने किये का जवाब देना होगा पर अगर कल अनाज नहीं जमा किया तो जान से मार दूंगा ! "

नागूल्नोव ने हलफनामे को तह करके अपनी खाकी कमीज की

ऊपरवाली जेब में रख लिया, गिवाल्वर को मेज पर पटक़ा और हमामची को दरवाजे तक छोड़ आया। आधी रात हो गयी थी पर वह ग्राम-सोवियत से नहीं गया। चपरामी को भी वही रहने का आदेश दिया। चपरामी की मदद से उसने बीज देने से इकार करनेवाले और तीन किमानो को बगल के खाली कमरे में बद कर दिया। आधी रात के बहुत बाद वह ग्राम-सोवियत की मेज पर ही, दिन भर की थकान से निढाल होकर अपना भारी मिर चौड़ी हथेलियों पर रखकर सो गया। पौ फटने तक उसे सपने में मुदर-मुदर कपड़े पहने लोगो की भीड़ दिखायी दे रही थी, जो बाढ़ के पानी की तरह स्तेपी में हिलोरे ले रही थी। भीड़ के बीच घुड़सवारों का रिमाला चल रहा था। रग-बिगग घोड़े स्तेपी की नर्म जमीन को अपने खुगों से खोदते चल रहे थे पर न जाने क्यों उनकी टापे ऐसे गरज रही थी, मानो टीन की चादरो पर रिमाले दौड़ते जा रहे हों। मकार बिलकुल पास ही में अपने रुपहले बाजों में बैड़ अचानक 'इटरनेशनल' की धुन बजाने लगा और हमेशा की तरह भावुकता से मकार का गला रुध गया। वहां से गुजरते अश्वारोही दस्ते की पिछली कतार में उसे अपना मित्र मीन्का लोबाच दिखायी पड़ा जिसे मन् १९२० में काखोव्का के पास ब्रागेल के मैनिको ने मार डाला था, पर मकार को कोई आश्चर्य नहीं हुआ, उल्टे उमे खुशी हुई और वह लोगो को धकेलता हुआ अश्वारोही दस्ते की ओर दौड़ पड़ा। 'मीन्का! मीन्का! रुक!' वह चिल्लाये जा रहा था पर उसे खय अपनी आवाज नहीं मुनायी दे रहा थी। घोड़े पर बैठे मीन्का ने मुड़कर मकार की ओर किसी अपरिचित की तरह उदासीनता-पूर्ण आखों से देखा और अपने घोड़े को एड़ लगा दी। तभी मकार को अपना भूतपूर्व अर्दली त्यूल्लिम दिखायी पड़ा। वह भी मन् बीस में ही ब्रोदी के पास पोलिश गोली से मारा गया था। त्यूल्लिम मुस्कराता हुआ अपने घोड़े को दौड़ाता मकार के पास आ रहा था, उसके दाये हाथ में मकार के घांड़े की लगाम थी। और उमका मुडौल सिर और सफेद टागोवाला घोड़ा गर्दन को धनुष की तरह तानकर गर्व से सिर उठाये दौड़ रहा था।

सारी रात चली वसत की तेज हवा से चरमराते कपाटो की चू-चर्च मकार को सपने में सगीत और छन के टीन की खड़-खड़ घोड़ो की टाप लग रही थी। रजम्योल्लोव प्रात कोई छह बजे ग्राम-सोवियत

में आया, नागूल्लोव अभी सो रहा था। मकार के पीले गाल पर मार्च के सूर्योदय की बैंगनी-सी लालिमा पड़ रही थी, होंठों पर तनाव और आतुरतापूर्ण मुस्कान ठिठकी हुई थी, आंतरिक तनाव और उथल-पुथल के कारण उसकी भौंहों पर बल पड़ रहे थे। रज़्म्योल्लोव ने मकार को भंभोड़कर लताड़ा :

“ कारस्तानियां करके चैन से सो रहे हो ? अच्छे-अच्छे सपने देखकर खीसे निपोंर रहे हों ! हमामची को क्यों पीटा ? वह पौ फटते ही बीज लाया और उन्हें जमा करके फ़ौरन इलाक़ाई केन्द्र चला गया। ल्युबी-श्किन आया दौड़ा-दौड़ा मेरे पास और बोला कि हमामची तुम्हारे खिलाफ़ मिलीशिया में रपट लिखाने गया है। अब देखना मज़ा ! दवीदोव आकर क्या कहेगा ? अरे, मकार-मकार ! .”

नागूल्लोव ने मेज़ पर सोने के कारण मूजे चेहरे पर हाथ फेरा और विचारमग्न मुद्रा में मुस्कराकर बोला :

“ अरे यार अंद्रेई ! अभी मैंने ऐसा बढिया सपना देखा था ! बहुत ही दिलचस्प !”

“ तुम अपने सपनों की बात छोड़ो ! हमामची के बारे में रिपोर्ट दो !”

“ ऐसे जहरीले नाग के बारे में मैं बोलना तक नहीं चाहता ! तुम कहते हो कि वह अनाज़ ले आया ? मतलब अमर हुआ उस पर ... बयालीस पूद बीज का अनाज कोई मामूली बात नहीं है। अगर हरेक क्रांतिविरोधी से एक ही चोट में चालिम पूद अनाज निकलता तो मैं जिंदगी भर घूमघूमकर उन्हें मारता रहता ! जैसी बातें उमने कही थी उनके लिये तो ऐसी पिटाई तो कुछ भी नहीं ! खैर मनाये कि मैंने उसकी टांगें नहीं चीरीं !” और आखों में क्रोध की चमक के साथ उसने अपनी बात पूरी की : “ वह हरामज़ादा जनरल मामोन्तोव का दुमछल्ला था। जब तक काले सागर में डुबकी नहीं लगवायी तब तक हम से लड़ता रहा। और अब भी रोड़े अटकाने से बाज़ नहीं आता, विश्व क्रांति के ध्येय को नुकसान पहुंचाता है। मोवियत मत्ता और पार्टी के बारे में कैसी-कैसी बातें कहता रहा था। मेरे तो गुप्से के मारे रोंगटे खड़े हो गये।”

“ कुछ भी हो पर तुम्हें उसे पीटना नहीं चाहिये था, बेहतर तो यही था कि गिरफ़्तार कर लेते।”

“नहीं, गिरफ्तार नहीं, उसे गोली मार देनी चाहिये थी!” नागूल्लोव ने निराशा के साथ हाथ भाड़ा। “समझ में नहीं आता कि क्यों मैंने उसका काम तमाम नहीं किया? मुझे बस इसी का अब दुख है।”

“अगर तुम्हें बेवकूफ कहूं तो बुरा मान बैठोगे पर बेवकूफी तो तुम में कूट-कूटकर भरी है! देखते रहना, दबीदोव आकर तुम्हें ऐसा सबक सिखायेगा।”

“सेम्योन मेरा ही पक्ष लेगा वह तेरी तरह ठूठ नहीं है!”

रज़म्योल्लोव ने हंमते हुए उंगली मोड़कर मेज़ ठोकी, फिर मकार का माथा और बोला :

“आवाज़ तो दोनों की एक ही जैसी है!”

पर मकार ने गुस्से में उसका हाथ भटका और ओवरकोट पहनने लगा। दरवाजे के पास पहुँचकर वह बिना मुड़े बोला :

“अरे तू अक्लमंद! बराबर के कमरे से टुटपुजियों को छोड़ दे तार्कि फ़ौगन अनाज जमा करा दें नहीं तो अभी हाथ-मुँह धोकर लौटने पर फिर से बंद कर दूंगा।”

आश्चर्य में रज़म्योल्लोव की आँखें फैल गयीं . वह बगल के कमरे की ओर दौड़ा जहाँ ग्राम-मोवियत के पुराने कागज़ान और पिछले साल की इलाक़ाई कृषि प्रदर्शनी में दिखायी गयी अनाज की बालियाँ रखी थी। रज़म्योल्लोव ने दरवाज़ा खोला, कमरे में उसे सामूहिक फ़ार्म के तीन सदस्य : क्राम्नोकूतोव, अतीप ‘कौआ’ और नाटा अपोल्लोन पेस्कोवात्स्की दिखायी दिये। पुराने अख़बार बिछाकर उन्होंने बड़े आराम से रात काटी थी, रज़म्योल्लोव को देखकर वे खड़े हो गये।

“नागरिको, मैं आपसे .” रज़म्योल्लोव ने मुँह खोला पर बूढ़े कज़्ज़ाक़ क्राम्नाकूतोव भट से उसकी बात काटकर बोला :

“अरे, अंद्रेई स्तेपानोविच, अब क्या कहें, दोष हमारा ही है... हमें छोड़ दो अभी अनाज ले आते हैं... रात को हमने सलाह-मशविरा करके अनाज जमा कराने का फ़ैसला कर लिया है... अब क्या छिपायें आप से, गेहूँ दबाकर रखना चाहते थे...”

रज़म्योल्लोव, जो अभी-अभी नागूल्लोव की नासमझी के लिये माफ़ी मागना चाहता था, संभलकर भट से बोला :

“कब से यह कर देना था आपको! आखिर आप तो फ़ार्म के

सदस्य हैं ! शर्म आनी चाहिये बीज छिपाते हुए !”

“कृपा करके हमें छोड़ दो, अब जो हो गया सो हो गया...”
काली चमकीली दाढ़ी की पृष्ठभूमि में खीसें निपोरकर अंतीप ‘कौआ’
सहमकर मुस्कराया।

पूरा दरवाजा खोलकर रज्जम्योल्लोव मेज़ के पास चला गया। उसके
मन में यह विचार कौधा : “कहीं मकार सचमुच ही ठीक तो नहीं
कहता ? अगर ज़रा जोर डाला जाये तो एक ही दिन में सब जमा करवा
देँ बीज !”

२५

दवीदोव बीज चयन केन्द्र में अपनी सफलता पर हर्ष के साथ लौटा।
वह अपने साथ बढ़िया गेहूँ के बारह पूद बीज लाया था। मकान मालकिन
ने उसे खाना परोसते हुए बताया कि उसकी अनुपस्थिति में नागूल्लोव
ने गिगोरी हमामची को पीटा और तीन किसानों को रात भर ग्राम-
मोवियत में बंद रखा। लगता था कि इसके बारे में सारे ग्रेम्याची में
ख़बर फैल गयी थी। दवीदोव ने जल्दी-जल्दी खाना खाया और चिंता
के साथ फ़ार्म के कार्यालय चला गया। वहाँ मकान मालकिन की बात
की पुष्टि हो गयी और नये ब्योरे भी उसे पता चले। नागूल्लोव के
व्यवहार का सब भिन्न-भिन्न मूल्यांकन कर रहे थे : कुछ उसका अनुमोदन
कर रहे थे, कुछ लोग धिक्कार रहे थे और कुछ चुप थे। उदाहरण के
निये ल्युबीशिकन दृढ़ता के साथ नागूल्लोव का पक्ष ले रहा था और
याकोव लुकीच हाँठों को सिकोड़े ऐसे खड़ा था मानो उसे खुद नागूल्लोव
की मज़ा भुगतनी पड़ी हो। शीघ्र ही मकार भी फ़ार्म के कार्यालय में
आ गया। देखने में वह मामान्य में अधिक कठोर लग रहा था, उसने
संयमित स्वर में दवीदोव का अभिवादन किया, पर उसकी आँखों में
चिंता और आतुरता की झलक थी। जब वे दोनों अकेले रह गये दवी-
दोव का संयम टूट गया, तीखे स्वर में उसने पूछा :

“तुम्हारे बारे में यह क्या ख़बर है ?”

“जब तुम्हें मालूम है तो क्यों पूछ रहे हो ...”

“ऐसी विधियों में तुम बीज जमा करने के अभियान का प्रचार
कर रहे हो ?”

“वह मेरे साथ ऐसी नीच बातें क्यों करता है? मैंने दुश्मन में, श्वेत माप में बेइज्जती सहने की सौगंध नहीं खायी है।”

“पर तुमने यह मोचा है कि दूसरों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा, राजनीतिक दृष्टि में यह कैसा लगेगा?”

“तब सोचने का समय नहीं था।”

“यह भी कोई जवाब हुआ! तुम्हें शासन की मानहानि के लिये उसे गिरफ्तार करना चाहिये न कि पीटना। यह करतूत कम्युनिस्ट के लिये शर्मनाक है, फैक्ट! और आज ही हम पार्टी-इकाई में तुम्हारे बारे में प्रश्न उठायेगे। तुमने अपनी करतूत में हमें कितना नुकसान पहुंचाया है! हमें उसकी भर्त्सना करनी चाहिये। सामूहिक फार्म की सभा में भी इलाकाई पार्टी सर्मति की अनुमति की प्रतीक्षा किये बिना मैं इसी के बारे में बताऊंगा, सच कहता हूँ। क्योंकि अगर हम चुप रहें तो किसान सोचने लगेगे कि हम सब तुम्हारे साथ हैं और इस काम में तुमसे सहमत हैं। नहीं भड़या! हम तुम्हारी हिमायत नहीं करेंगे और तुम्हारी भर्त्सना करेंगे। तुम कम्युनिस्ट हो पर तुम्हारी करतूत जार की पुलिस जैसी है। कितनी शर्म की बात है! शैतान उधड़े तेरी चमड़ी तेरी करतूत के लिये।”

पर नाग्ल्न्डोव अक्खंड बैल ही तरह अड गया। दवीदोव उसे एक कम्युनिस्ट के लिये ऐसी करतूत की अवाछनीयता और राजनीतिक दृष्टि में उसकी हानिकरता के बारे में समझाने की कोशिश कर रहा था पर दवीदोव की हर दलील का वह बस यही उत्तर दे रहा था

“मैंने उसे पीटकर ठीक ही किया है। पीटा कहा बस एक ही बार मारा, उसकी तो अच्छी धुनाई करनी चाहिये थी। मेरा पिंड छोड़ो! मुझे अब तुम क्या सुधारोगे, देर हो गयी। मैं छापेमार रह चुका हूँ और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि तरह-तरह के दुश्मनों से अपनी पार्टी की कैसे रक्षा करूँ।”

“मैं यह थोड़े ही कह रहा हूँ कि यह हमामची अपना आदमी है, भाड़ में जाये वह! मैं तो बस यही कह रहा हूँ कि तुम्हें उसे पीटना नहीं चाहिये था। बेइज्जती से पार्टी की रक्षा के लिये कोई दूसरा तरीका भी चुन सकते थे। अच्छा, जाओ, कुछ शांत होकर सोचो तो और शाम को पार्टी-इकाई की सभा में आकर तुम ही कहोगे कि मेरी बात सही थी।”

शाम को पार्टी-इकाई की सभा में पहले जैसे ही मुह फुलाये मकार आया दवीदोव ने उससे पूछा

“ सोचा ? ”

“ सोच लिया । ”

“ क्या ? ”

“ कम की मैंने उस कुत्ते की औलाद की पिटाई । गोली मार देनी चाहिये थी । ”

प्रचार-टोली ने पूरी तरह दवीदोव का समर्थन किया और नागूल्लोव की कड़ी प्रताड़ना के पक्ष में वोट दिये । अद्रेई रजम्योल्लोव ने मतदान में भाग नहीं लिया, वह पूरे वक्त चुप था पर जब सभा के बाद जाने से पहले मकार बड़बड़ाकर बोला “ मैं अपनी गलती नहीं मानता, ” रजम्योल्लोव उछल के खड़ा हुआ और मा-बहन की गालिया देता कमरे से बाहर भाग गया ।

अधेरी ड्योढी में मिगरेट मुलगाते समय दियासलाई के धुधले प्रकाश में नागूल्लोव के मुग्भाये चेहरे का घूरकर दवीदोव मुलह करने के अदाज में बोला

“ तुम, मकार, बेकार ही में हमारी बातों का बुरा मान रहे हो । ”

“ मैं नहीं मान रहा बुरा । ”

“ तुम पुरानी, छापामार विधियों में काम लेते हो, पर अब जमाना बदल चुका है, अब छापे नहीं मारे जा रहे बल्कि स्थैतिक युद्ध हो रहा है हम सब पर छापेमारी का रोग चढ़ा था, खासकर हम नौसैनिकों को, बेशक मुझे भी । हालांकि तुम्हारी नसे कमजोर हैं पर मकार प्यारे, अपने पर लगाम लगाने की जरूरत है, क्यों ? तुम जवान पीढ़ी को तो देखो हमारी प्रचार-टोली का कोम्मोमोल छोकरा वान्युशका नाइझोनोव क्या करिश्मे कर दिखाता है ! उसके मुहल्ले से सबसे अधिक बीज आये हैं, लगभग सारे लोग जमा कर चुके हैं । देखने में तो वह कोई खास चतुर नहीं लगता, चेहरे पर चित्तिया है, कद भी ऊँचा नहीं पर काम हम सबसे बढ़िया करता है । घर-घर जाकर बतियाता है, कहते हैं कि वह लोगों को कहानियाँ सुनाता है और लोग पिटाई के बिना, ठंडे कमरे में बंद किये बिना अनाज ले आते हैं, सच कहता हूँ । ” दवीदोव के स्वर में मुस्कान और

स्नेह की झलक थी जब उसने नाइद्योनोव की चर्चा छोड़ी और नागूल्लोव को अपने मन में चतुर कोस्मोमोल सदस्य के प्रति ईर्ष्या का-सा भाव उमड़ता महसूस हुआ। “तुम कौतूहल के नाते ही कल उसके साथ फेर लगा आओ, देखो कि कैसे वह अपना काम पूरा करता है,” दवीदोव कह रहा था, “सच कहता हूँ, इसमें तुम्हारे लिये शर्म की कोई बात नहीं। भइया, कभी-कभी हम नौजवानों से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं। वह हमसे काफी भिन्न लगते हैं, वे हमसे कुछ चतुर हैं।”

नागूल्लोव उस समय तो कुछ नहीं बोला, पर सुबह उठने के साथ ही उसने वान्या नाइद्योनोव को ढूँढ़ा और बात ही बात में बोला

“आज मैं खाली हूँ, तेरे साथ जाना चाहता हूँ मदद देने के लिये। तुम्हें गी तीसरी टोली में कितना अनाज बकाया है?”

“बस नाम-मात्र का रह गया है, कामरेड नागूल्लोव। चलिये एक में दो भले, मन भी लग जायेगा।”

वे दोनों साथ-साथ चल पड़े। नाइद्योनोव तेजी में, बतख की तरह हिलता हुआ चल रहा था। उसकी चमड़े की जैकेट में सूरजमुखी के तेल की खुशबू आ रही थी, जैकेट के बटन खुले थे, चारखाने की टोपी आखों तक झुकी थी। नागूल्लोव बगल में कौतूहल के साथ कोस्मोमोल सदस्य के चर्चियों में ढके नामान्य-से चेहरे को देख रहा था जिसे कल दवीदोव ने बड़े स्नेह के साथ वान्युस्का कहा था। इस चेहरे में काट अत्यंत प्रिय आकर्षक बात थी शायद स्लेटी आखें या दहना के साथ आगे की निकली किशोरमुलम ठांडी

जब वे भूतपूर्व ‘सुर्गीछेड’ बृद्धे अकीम वेमख्लेबनोव के घर में घुसे, उसका सारा परिवार नाश्ता कर रहा था। बड़ा मेज के सामने-वाले कोने पर बैठा था, उसके पास कोई गालीम-एक साल का उसका बेटा बैठा था जिसका नाम भी अकीम था। उसके शायी ओर पत्नी और बूढ़ी विधवा सास बैठी थी। दो सयानी बेटियाँ उनके सामने बैठी थी और मेज के दोनों ओर मक्खियों की तरह बच्चे चिपके बैठे थे।

“नमस्ते।” नाइद्योनोव ने अपनी चीकट टोपी उतारकर बाल सहलाये।

“नमस्ते, अगर मजाक नहीं कर रहे,” सरल और हसमुख अकीम छोटें ने हल्के से मुस्कराकर उत्तर दिया।

मजाक भर अभिवादन को सुनकर नागूल्लोव तो भौंहे सिकोड़कर

सस्ती से कहने ही वाला था “हमारे पास मज़ाक का वक्त नहीं है। अभी तक अनाज क्यों नहीं जमा कराया?” पर वान्या नाइद्योनोव ने मेज़बानों के चेहरों के ठंडे भाव पर मानों ध्यान ही न दिया। वह मुस्कराकर बोला

“आपके घर में धन-धान्य हो।”

सूखा “शुक्रिया” कहकर या “अपना खाता हूँ, तुम्हें क्या लेना” जैसा भद्दा मज़ाक करके अकीम उन्हें मेज़ पर बिठाये बिना ही टालने को मुँह खोल भी न पाया कि नाइद्योनोव झट में बोला

“अरे आप फिक्क न करे। कोई ज़रूरत नहीं। पर चलो नाश्ता करने में क्या हर्ज है। सच कहूँ तो मैंने आज नाश्ता नहीं किया। कामरेड नागूलनोव तो यही के हैं, वह तो बेशक पेट में कुछ डाल आये होंगे, पर हम तो रोज़ खाना भी नहीं खाते ‘स्वर्ग की चिड़ियों’ की तरह।”

“मतलब न बोते हो न काटते हो पर पेट भरा रहता है?” अकीम ने हसकर पूछा।

“पेट भरा हो या नहीं पर मुँह पर मुस्कान हमेशा रहती है,” ये शब्द कहकर नाइद्योनोव ने झट में जैकेट उतारी और मेज़ पर बैठ गया।

मेहमान की बेतकल्लुफी को देखकर बूढ़े अकीम के मुँह से आह निकली और छोटा अकीम हँस पड़ा

“यह हुई फौजियो जैमी बान! बड़ी किस्मतवाला निकला तू लडके, मैं तो अपना खाता हूँ तुम्हें क्या लेना” कहकर टालनेवाला था तुम्हें पर तू मुझसे भी चट निकला! लडकियो! इसे चम्मच दे दो।”

एक लडकी उठी और पेशबंद में मुँह छिपाकर खिलखिलायी और चम्मच लेने चली गयी। पर चम्मच उमने नाइद्योनोव को ऐसे दी जैसे पुरुष को—भुक्कर—दी जाती है। मेज़ पर हसी-मजाक का वातावरण छा गया। अकीम छोटे ने नागूलनोव को उनके साथ बैठने को कहा पर वह मना करके मदूक पर बैठ गया। सुनहरी भौंहोवाली अकीम की पत्नी ने मुस्कराकर मेहमान की ओर डबलरोटी का टुकड़ा बढ़ाया, चम्मच देनेवाली लडकी अदर के कमरे में जाकर साफ़ नैपकिन ले आयी और उसे नाइद्योनोव के घुटनों पर बिछा दिया। अकीम छोटा कौतुक और

प्रशंसा भाव के साथ चिन्नीदार चेहरेवाले इस निर्भीक लड़के को देख रहा था, जो उनके गाव के लड़को जैसा नहीं था, और बोला

“देखा कामरेड, तुम मेरी बेटी को पसंद आ गये। बाप को इसने कभी साफ नैपकिन दिया नहीं पर तुम्हें बैठते ही दे दिया। अगर रिश्ता भिजवाओगे तो मैं फौरन हा कर दूंगा।”

बाप के मजाक से लड़की का चेहरा लाल हो गया, हाथ से मुह ढककर वह उठी और नाइद्योनोव हसी में और रग घोलते हुए बोला

“यह शायद चितकबरे में शादी नहीं करेगी। मैं तो अघेरे में ही शादी का मुभाव दे सकता हूँ, तब मैं बड़ा मुदर लगता हूँ और लड़कियां तभी मुझे पसंद कर सकती हैं।”

उबले फलों का मत परोसा गया। बातचीत बद हो गयी। बस मुंहों की चपड़-चपड़ और देगची में चलती लकड़ी की चम्मचों की आवाजे सुनायी दे रही थी। जब किमी बच्चे की चम्मच उबली नाशपाती की खोज करती देगची में चक्कर लगाने लगती तभी नीरवता भग होती। तब बूढ़ा अकीम अपनी चम्मच को चाटकर दोषी बच्चे के माथे पर टन्न में बजाता और कहता

‘मत ढूँ’

गिरजे जैसी शांति छा गयी है, ‘घर की मालकिन बोली।

‘गिरजे में भी हमेशा शांति नहीं हानी, भगपेट दलिया और फलों का मत खाकर वान्या बोला। “हमारे यहाँ ईस्टर पर ऐसी घटना हुई कि हमने-हमने पेट में बल पड़ जायेगे।”

मालकिन न मेज से बर्तन उठाने बद कर दिये। अकीम छोटे ने मिगरेट मुलगायी और बेच पर बैठकर किस्मा मुनन को तैयार हो गया बूढ़ा अकीम तक डकारे लेता मलीब का चिन्ह बनाता नाइद्योनोव को कान लगाकर मुनन लगा। बेसब्री के साथ बैठे नागूल्लोव ने मोचा ‘श्राविर कब यह अनाज की बात छोड़ेगा? लगता है यहाँ हमारी दाल नहीं गलेगी। दोनों अकीमों को समझाना आसान नहीं, पूरे गाव में टन्न जैसा जैतान नहीं मिलेगा। और इनको डराया-धमकाया भी नहीं जा सकता क्योंकि छोटा अकीम लाल सेना में नौकरी करता था और पूरी तरह हमारा ही आदमी है। और अनाज वह इसलिये नहीं लायेगा कि उसे सपत्ति में मोह है, ऊपर से कजूस भी है। यह तो सर्दियों में भी मागने पर बर्फ न देनेवालों में है, मैं तो जानता हूँ।”

इतने में वान्या नाइद्योनोव कुछ रुककर बोला

“मैं, तात्सीन्स्की इलाके का हूँ, और हमारे यहाँ एक बार ईस्टर पर यह घटना हुई। प्रार्थना के लिये पूजापाठी लोग गिरजे में जमा थे, भीड़ से दम घुटा जा रहा था, तिल धरने की जगह नहीं थी। पादरी और उपयाजक बेगक भजन गा रहे थे, पाठ कर रहे थे और गिरजे के जगले के पास लड़के खेल रहे थे। हमारी बस्ती में एक बछिया थी, इतनी मरखनी कि पूछो मत, बस छेड़ने की देर थी कि भट से मींग मारन दौड़ पड़ती। तो यह बछिया आराम में जगले के पास चर रही थी, पर लड़को ने उसे इतना छेड़ा कि वह उनमें से एक के पीछे दौड़ पड़ी, लगता था कि बस अभी उसे मींग मार देगी। वह लड़का गिरजे के अहाते में घुस गया, बछिया उसके पीछे-पीछे, लड़का गिरजे की सीढ़ियों पर चढ़ा, बछिया ने भी पीछा नहीं छोड़ा। गिरजे के दरवाजे पर जमघट लगा था। बछिया ने दौड़कर उस लड़के के चूतड़ों पर ऐसे मींग मारे कि वह लुढ़ककर एक बुढ़िया के पैरों में जा पड़ा। बुढ़िया गिर पड़ी, उसका सिर फर्श से टकराया। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगी ‘बचाओ-बचाओ, भले लांगो! मार डाला मुझे!’ बुढ़िया के बुढ़े ने लड़के की पीठ पर छड़ी दे मारी। ‘भाड़ में जा शैतान की औलाद!’ उधर बछिया ने रभाकर बूढ़े को मींगों से टक्कर मारी। बस तहलका मच गया। जो लोग वेदी के पास खड़े थे वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्या हुआ, दरवाजे में गुल-गपाड़ा मुनायी पड़ रहा था, वे प्रार्थना-वार्थना भूल-भालकर एक-दूसरे में पूछने लगे ‘यह क्या शोर मच रहा है?’ क्या हुआ?’”

वान्या ऐसा मुह बना-बनाकर अपने गाववालों की कानाफूसी का दृश्य दिखा रहा था कि अकीम छोटा अपनी हसी को रोक न पाया और खिलखिलाकर हँस पड़ा

“कमाल कर दिया बछिया ने।”

मुस्कराकर अपने सफेद दात चमकाकर वान्या ने आगे बताया

“एक मनचले ने मजाक में कह दिया ‘शायद पागल कुत्ता घुस आया है, भागना चाहिये यहाँ से।’ उसके पास ही एक गर्भवती औरत खड़ी थी, वह डर के मारे गला फाड़कर चिल्लायी ‘ओ, मेरी अम्मा! वह तो सब को काट खायेगा!’ पीछेवाने आगेवालों को धकेल रहे थे, शमादान उलट गये, धुआँ फैलने लगा अधेरग छा गया। तभी

कोई चिल्लाया 'आग लग गयी।' बस मच गया हड़कप। कोई चिल्लाता 'पागल कुत्ता।' , कोई चीखता 'आग लग गयी।' कोई चिल्लाता 'कयामत का दिन आ गया।' दूसरे ने पूछा 'क्या? कयामत आ गयी? बीबी! जल्दी घर चल।' बस सब लोग बगलवाले दरवाजे की ओर पिल पड़े, ऐसी धमाचौकड़ी मच गयी कि कोई भी न निकल पा रहा था। मोमबत्ती का स्टाल उलट गया, मिक्के बिखर गये, मोमबत्तीवाला गिरकर चिल्लाने लगा 'बचाओ, लूट रहे हैं।' लुगाइया भेड़ों की तरह गर्भगृह में घुस गयी, उपयाजक उनके मिरों पर धूपदानी मार-मारकर चिल्ला रहा था 'कहा घुस रही हो चुड़ैलों! तुम्हें मालूम नहीं कि लुगाइयों को यहाँ आने की मनाही है।' और बस्ती का चौधरी - खूब मोटा-ताजा था, तोड़ पर चैन लटकाये रहता था - दरवाजे की ओर बढ़ना चाहता था। लोगों को धकेल-धकेलकर चिल्लाये जा रहा था 'रास्ता दो! रास्ता दो, हर्गामियों! यह मैं हूँ बस्ती का चौधरी।' पर उसे कौन रास्ता देता जब कयामत का दिन ही आ गया।"

हमी के बीच वान्या न किस्मा पूरा किया

"हमारी बस्ती में एक घोड़ा चोर था, अर्खीप चोखोव। हर हफ्ते किसी न किसी का घोड़ा चुरा लेता पर कोई भी उसे रगे हाथ नहीं पकड़ पाया। अर्खीप गिरजे में अपने पाप धोने आया हुआ था। और जब कोई चीखा 'कयामत आ गयी! सब मर जायेंगे।' तो अर्खीप खिड़की की ओर लपका, खिड़की उसने तोड़ डाली पर बाहर में मीकचे लगे थे। सब लोग दरवाजों के पास धक्का-मुक्की कर रहे थे, वह उधर गिरजे में दौड़ रहा था, बीच-बीच में रुककर हाथ उठाता और कहना 'देखो तो कहा मैं पकड़ा गया।' अब की बार तो मैं मचमुच पकड़ा गया।'"

अकीम छोटा, उसकी बीबी और बेटियाँ हसते-हमते लोट-पोट हो गये, उनकी आँखों में आँसू निकल आये। बूढ़ा अकीम तक अपना पोपला मुँह खोले हँस रहा था, बस अकेली बुढ़िया आधी बात समझ पायी, वह कुछ ऊँचा सुनती थी, अचानक न जाने क्यों वह रो पड़ी और आँसुओं से सूजी अपनी लाल आँखों को पोंछकर वह बोली

"मतलब बिचारा, तीरथजात्री मारा गया। उसका क्या कर दिया?"

“ किमका, दादी जी ? ”

“ अरे उश शत का ? ”

“ किम सत का, दादी ? ”

“ अरे उश का जिशके बारे मे तू अभी बता रहा था गाधु का ? ”

“ किस साधु का ? ”

“ बेटा, मुझे नही मालूम ऊचा शुनती हू, बेटा. बहरी हो गयी ठीक से शुनायी नही देता ”

बुढिया की बाते सुनकर फिर ठहाके लग गये। अकीम हमी से लोट-पोट होकर बोला

“ चोर भी क्या पकडा गया। तेरा किस्सा सुनकर मजा आ गया लडके। ” बान्या का कधा थपथपाकर उसने तारीफ की।

बान्या ने बडी जल्दी से बात का रुख पलट दिया, उसने निश्वास छोडकर कहा

“ यह तो बेशक मजेदार किस्सा है पर आजकल जो कुछ हो रहा है उसमे हमी नही आती आज मैने अखबार मे एक चीज पढी जिसमे दिल दहल गया ”

“ दिल दहल गया ? ” नये चटपटे किस्मे को सुनने के लिये तैयार बैठे अकीम ने पूछा।

“ हा। इसमे दहल गया कि पूजीवादी देशो मे आम आदमी पर पाशविक अत्याचार किये जाते है। मैने पढा कि रूमानिया मे दो कोम्सो-मोल सदस्य किसानो की आखे खोल रहे थे, वे कहते थे कि जमीदारो से जमीन छीनकर आपस मे बांट लो। रूमानिया मे किमान बडी गरीबी मे रहते है। ”

“ हा गरीबी मे रहते है मैने खुद अपनी आखो मे देखा है जब मन् सत्रह मे रूमानियाई मोर्चों पर था, ” अकीम ने पुष्टि की।

“ हा, तो वे पूजीवाद को उखाड फेकने और रूमानिया मे सोवियत व्यवस्था स्थापित करने के लिये प्रचार कर रहे थे। पर जालिम पुलिस ने उन्हे पकड लिया. एक को पीट-पीटकर मार डाला और दूसरे को यंत्रणाएँ देने लगे। उसकी आखे फोड दी, सिर के बाल एक-एक करके उखाड दिये। और फिर लोहे की पतली सलाई को तपाकर लाल किया और नाखनो के नीचे घुमेडने लगे ”

“बूचड कही के।” अकीम की बीवी आह भरकर बोली, “नाखूनो के नीचे?”

“हा, नाखूनो के नीचे और पूछने है ‘बता अपने माथियो के नाम और कोम्मोमोल से नाता तोड ले।’—‘नही बताऊगा तुम्हे पिशाचो, कोम्मोमोल का मरते दम तक साथ नही छोडगा,’ वह कोम्मोमोल मदम्य बोला। तब पुलिसवालो ने उसके कान काट दिये नाक काट दी और पूछा ‘बतायेगा?’—‘नही, मर जाऊगा तुम कातिलो के हाथ पर हरगज नही बताऊगा। कम्युनिज्म जिदाबाद।’ तब उन्होंने उसे हाथो के बल छत से लटका दिया और उसके नीचे आग जला दी ”

“देखो तो सही, कैसे कसाई है। कैसी मुमीबत टट पडी बेचारे पर।” अकीम आक्रोश के साथ बोला।

“वे उसे जिदा भन रहे थे, और वह खून के आसू बहाता रहा पर अपने किसी माथी का नाम नही बताया, वस यही दोहराना रहा ‘मर्वहाग क्राति और कम्युनिज्म जिन्दाबाद।’”

शाबाश। माथियो को नही बेचा उमने। ऐसे ही होना भी चाहिये। मिर ऊचा करके मर जाओ पर मित्रो पर आत्र न आये। वाटबल मे भी तो लिखा है कि अपने मित्रो के लिये जान दे दो । बढा अकीम मेज पर घूसा पटककर आतुरता से बोला आगे आगे क्या हुआ ?”

“वे उसे तरह-तरह की यातनाये देने लगे पर वह चुप रहा। सुबह से शाम तक यही मिलमिला चलता। वह बेहोश हो जाना तो पुलिसवाले उस पर ठडा पानी उडेलकर फिर से यातनाये देने लगते। जब उन्होंने देखा कि ऐसे वे कुछ नही कर पा रहे तो उन्होंने जाकर उसकी मा को गिरफ्तार कर लिया और थाने मे ले आये। उसकी मा से बोले ‘देख, कैसे हम तेरे बेटे को अकल मिखायेगे। कह दे इसे कि मान ले बात हमारी नही तो मारकर इसकी बोटिया कुत्तो को डाल देगे।’ मा बेचारी बेहोश होकर गिर पडी, जब उसे होश आया तो दौडकर अपने बच्चे से लिपट गयी उसके खून मे लथपथ हाथो को चूमने लगी

बान्या चुप हो गया, उसके चेहरे का रंग उड गया था। उसने वहा बैठे लोगा पर तजर दौड़ायी लडाकियो क मूह खूले थे आखो मे आसू

उमड़ आये थे। अकीम की पत्नी पेशबंद में मुंह छिपाकर सुड़मुड़ कर रही थी, सुबकियां ले-लेकर वह फुसफुसाती: 'बिचारी मां .. उसके मन पर क्या बीत रही होगी ... अपने बच्चे को इस हाल में देखकर ... हे भगवान ! ..' अकीम छोटे ने आह भरी और जल्दी-जल्दी कागज़ में तंबाकू लपेटकर सिगरेट बनाने लगा। बस संदूक पर बैठा नागूल्लोव ही देखने में शांत लग रहा था पर उसका भी गाल फड़का और मुंह टेढ़ा हो गया ..

" .. उसकी मा बोली, 'बेटे मेरे, मेरे लाल ! अपनी मा की खातिर मान ले इन पापियों की बात .' मां की आवाज़ सुनकर वह बोला: 'नहीं, अम्मा प्यारी ! मैं साथियो से गद्गारी नहीं करूंगा, अपने आदर्श के लिये मर जाऊंगा, तुम मरने से पहले मुझे एक बार चूमो, तब मैं हंसते-हंसते मौत को स्वीकार कर लूंगा ...' "

वान्या ने कांपती आवाज़ में पुलिस के जल्लादों के हाथों मारे गये रूमानियाई कोम्सोमोल सदस्य की कहानी पूरी की। कुछ देर के लिये शांति छा गयी, फिर मालकिन ने पूछा .

" बिचारे की उम्र क्या थी ? "

" सत्रह , " वान्या ने भट्ट मे उत्तर दिया और अपनी टोपी पहनकर बोला , " हा , मज़दूर वर्ग का वीर , हमारा साथी , रूमानियाई कोम्सोमोल सदस्य शहीद हो गया। उसने अपनी जान दे दी ताकि मेहनतकशों का जीवन बेहतर हो जाये। हमारा कर्तव्य उन्हें पूजीवाद को उखाड़ फेंकने , मज़दूरों और किसानों की सत्ता स्थापित करने में मदद देना है। और इसके लिये सामूहिक फ़ार्मों की स्थापना और उन्हें मज़बूत बनाने की आवश्यकता है। पर हमारे यहाँ अभी भी ऐसे किसान हैं जो अपनी नासमझी के कारण ऐसे पुलिसवालों की मदद करते हैं और सामूहिक खेती में बाधा डालते हैं — बीज के लिये अनाज नहीं देते ... हाँ , नाश्ते के लिये धन्यवाद ! अच्छा अब काम की बात करे जिसके लिये हम आपके यहाँ आये हैं। आपको अभी जाकर बीज के लिये अनाज जमा करा देना चाहिये। आप लोगों को पूरे मतहत्तर पूद जमा करवाने हैं। चलो , मालिक , ले जाओ ! "

" पर-पर ... अनाज तो इतना होगा भी नहीं ... " इतनी तेज़ी से पलटी बात से भौंचक्का अकीम छोटा हड़बड़ा गया पर पत्नी ने उसकी ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखा और रोककर बोली :

“छोड़ दो यह सब। जाओ बोरियो में भरकर दे आओ।”

“सत्तर पूद नहीं होगा छना भी नहीं है,” अकीम ने प्रतिरोध करने का क्षीण प्रयास किया।

“जाओ बेटा, दे आओ। जब जरूरत है तो दे देना चाहिये, क्यों बेकार में अड़ रहे हो,” बूढ़े अकीम ने बहू का समर्थन किया।

“हम घमडी नहीं हैं, छानने में मदद कर देगे तुम्हारी,” वान्या तत्परता के साथ बोला। “तुम्हारे यहाँ छाज तो होगा?”

“है पर कुछ टूटा हुआ है ”

“तो क्या हुआ? ठीक कर देगे। लाओ जल्दी से। तुम्हारे यहाँ तो हमने गणशप में ही देर कर दी इतनी ”

आधे घंटे बाद अकीम छोटा सामूहिक फार्म के बाड़े में दो बैल गाड़ियाँ ले आया और वान्या भूमी की कोठरी में छने ठोस, मुनहरे गेहूँ में भरी बोरियाँ उठाकर खत्ती के दरवाजे के पास रख रहा था। उसका चेहरा मोतियों की तरह पसीने की बूंदों में ढका था।

“तुम क्यों अनाज भूमी की कोठरी में रखते हो? खत्ती इतनी बड़ी है, पर अनाज इतनी लापरवाही में रखा था?” उसने आख मारकर अकीम की एक बेटी में पूछा।

“यह पिता जी ने सुझाया था ” भेपकर उसने उत्तर दिया।

जब बेसव्लेबनोव अपने हिस्से का सतहत्तर पूद अनाज लेकर सामूहिक खत्ती के लिये रवाना हो गया और वान्या व नागूलनोव उन लोगों में विदा लेकर अगले घर के लिये चल पड़े तो नागूलनोव ने वान्या के थके चेहरे को हर्षपूर्ण आतुरता में घूरकर पूछा

“कोम्सोमोल सदस्य के बारे में तुमने गढ़ा था किस्सा?”

“नहीं, बहुत पहले एक पत्रिका में ऐसी घटना के बारे में पढ़ा था।”

“पर तुम तो कह रहे थे आज पढ़ा था ”

“फर्क क्या पड़ना है? सबसे बड़ी बात तो यही है कि ऐसी घटना हुई थी, दुःख तो इसी का है कामरेड नागूलनोव।”

“पर तुमने अपनी तरफ से कुछ जोड़ इसे मर्मस्पर्शी बनाने के लिये?”

“इसका इतना महत्व नहीं है।” वान्या ने झुझलाकर कहा और टड से मिहरकर उसने जैकेट के बटन बदल दिये। वह बोला “सबसे

बड़ी बात तो यह है कि लोगो ने जल्लादो और पूजीवादी व्यवस्था के प्रति घृणा और हमारे सेनानियो के प्रति सवेदना का अनुभव किया। प्रमुख बात तो यह है कि बीज मिल गये हमे और वैसे भी मैने अपनी तरफ से लगभग कुछ भी नही जाडा। हा, फलो का मत बहुत बढ़िया था। बेकार ही, कामरेड नागूलनोव, आपने मना कर दिया।”

२६

दस मार्च की शाम मे ग्रेम्याची पर कोहरा छा गया, मंवेरे तक घरो की छतों मे बर्फ पिघलकर टपकती रही, दक्षिण मे स्तेपी की पहाडियो के पार से ऊष्म और नम हवा के तेज झोंके आ रहे थे। रात ने रेशमी कोहरे का पर्गधान पहनकर, नीरवता और वामती पवन की मादक महक के साथ ग्रेम्याची मे वसंत का स्वागत किया। प्रातः सूर्योदय के काफी देर बाद गुलाबी कोहरा उठ गया, नीला आकाश और मृज्ज चमकने लगे। दक्षिणी पवन सैलाब की तरह बहने लगा। हिम के मोटे कण खड़खड़ करके पिघलने लगे छत्ते स्लेटी हो गयी मटक काले धब्बों मे ढक गयी और दोपहर तक आर्मो की तरह निर्मल जल की असख्य धाराएँ टीलों मे खड्डो और बीहडों की ओर दौड़ने लगी, कलकल करती व निचाई पर स्थित कुजों, बागों मे भरकर चेरी वृक्षों की कडवी जड़ों को चूमती नदी के तट पर सरकडों को डूबोती हिलोरे लेने लगी।

कोई तीन दिन बाद चारों ओर से हवाओं के लिये खुले टीलों की ढलानों पर ऊपर से लेकर नीचे तक गीली मिट्टी चमकने लगी, टीलों, पहाडियो मे बहने जल की धारा अब मटमैली हो गयी थी उसकी तेज लहरें पील फेन के घने गुच्छों, खेतों मे अनाज के पौधों की जड़ों और जंगली घास को बहाये ले जा रही थी।

ग्रेम्याची मे नदी में बाढ़ आ गयी। कहीं ऊपर से धूप की गर्मी मे, मानो घुन लगे अनाज की तरह छिद्रों मे ढके नीले हिम खड्ड तैरने चल आ रहे थे। नदी के मोड़ों पर किनारे के पास व घूम-घमकर एक दूसरे से रगड़ने लगते जैसे अडजनन के काल मे मछलिया। कभी-कभी तेज धारा उन्हें ऊंचे किनारे पर पटक देती, तो कभी वे बाढ़ के पानी

के साथ बागों में घुसकर पेड़ों के तनों को खुरचने, नन्हें पौधों को कुचलने लगते।

गाव के बाहर हिम में मुक्त काले खेत पुकार रहे थे। पतझड़ में जुते खेतों में हल में पलटी चिकनी, काली मिट्टी से भाप उठ रही थी। दापहर का स्तपो में भव्य नीरवता छा जाती। खेता के ऊपर मूरज, दूधिया धुंध, नीले आकाश को चीरती मारमो की चहकनी डारे उड़ती थी।

पंद्रह मार्च तक ग्रैम्याची में बीज भंडार बनाने का काम संपन्न हो गया। अलग खेती करनेवाले किसानों ने अपने बीज अलग खेती में जमा करवाये जिसकी चाबी सामूहिक फार्म के प्रबंध कार्यालय में मरगलिन थी। फार्म के मदम्यो ने छह माभी खेतियों को खचाखच भर दिया था। बीजों की ओसाई रात को भी तीन लालटेनों की रोशनी में जारी रहती। इप्पोलीत शाली के लोहरखाने में रात तक धौकनी चलती रहती, हथौड़े की चोट में आग के मुनहरे कण फूटते और निहाई भकार करती। शाली ने १५ मार्च तक सभी कृषि यंत्रों की मरम्मत पूरी कर डाली। और १६ मार्गख की शाम का स्कूल में दबीदोव ने सामूहिक फार्म के किसानों की सभा में उसे अपने लेनिनग्राद में लाये औजार पुरस्कार स्वरूप भेंट किये और बोला

“हमारे प्यारे लोहार, कामरेड इप्पोलीत शाली को, सामूहिक फार्म के सभी मदम्यो के लिये अनुकरणीय, वास्तव में अग्रणी श्रम के लिये हमारे प्रबंध-मंडल ने ये औजार भेंट करने का निर्णय लिया है।

अग्रणी लाहार का पुरस्कार दन के समाराह में वह दाड़ी बनाकर धली जर्मी पहनकर आया था। उसने मेज पर बिछे लाल कपड़े पर रखे औजार उठाये और अद्वेई रज्म्योत्नोव ने सकोच से लाल इप्पोलीत को मंच पर धकेला।

‘आज तक कामरेड शाली ने मरम्मत का काम शत-प्रतिशत पूरा कर लिया है, सच कहता हूँ, नागरिको! कुल मिलाकर इसने चौवन हलों के फाल, बारह बीज बोने की मशीने और बहुत-से अन्य यंत्र काम के लिये तैयार किये हैं। हमारे प्यार कामरेड, पुरस्कारस्वरूप हमारा सप्रेम उपहार स्वीकार करें और तुम आगे भी ऐसे ही जोश में काम करते रहो, ताकि हमारे सामूहिक फार्म के सब के सब औजार

हमेशा बढ़िया हालत में रहे। और आप बाकी लोगों को इसी तरह उत्साह के साथ खेत में काम करना चाहिये।”

इन शब्दों के साथ दवीदोव ने लाल साटन के तीन मीटर के टुकड़े में पुरस्कार लपेटा और शाली को सौंप दिया। ग्रेम्याची के निवासियों ने तालिया बजाकर प्रशंसा करना अभी सीखा नहीं था पर जब शाली ने कापते हाथों से लाल बडल ग्रहण किया, स्कूल शोर-गुल से भर गया

“इसके काबिल है! खूब काम किया इसने।”

“बेकार पड़ी चीजों को काम लायक बना डाला।”

“औजार भी मिले, ऊपर से लुगाई के लिये कपड़ा भी मिल गया।”

“इप्पोलीत, अब तो मुह मीठा करवा दे, काले साड़।”

“इसे हाथों में उछालो।”

“जाने भी दो! यह बेचारा हथौड़े को पकड़कर कितना उछल चुका है।”

इसके बाद इतना शोर मचा कि कुछ मुनायी ही नहीं दे रहा था पर बुढ़ा श्चुकार लुगाइयों जैसी तीखी आवाज में जोर में चिल्लाया

“अरे तू चुप क्यों खड़ा है? बोल! जवाबी भाषण तो दे! देखो तो सही ऐसे खड़ा है जैसे ठूठ और पत्थर की औलाद हो।”

सबने श्चुकार की बात का समर्थन किया, वे लोग गभीरता के साथ और मजाक में चिल्लाने लगे

“अरे देमीद घुन्ने को कह दो कि इसके बजाये वह बोल दे।”

“टप्पोलीत! बोल जल्दी कुछ नहीं तो गश् खाकर गिर पड़ेगा।

“अरे देखो तों इसके घुटने आपस में बज रहे हैं।”

“खुशी के मारे क्या जीभ ही गटक गया?”

“भाषण देना कोई हथौड़ा चलाना थोड़े ही है।”

पर अद्रेई रज्म्योल्लोव, जिसे मभा-समारोह बड़े पसंद थे और जो आज के समारोह का संचालन कर रहा था, लोगों को चुप कराकर बोला

“अरे आप लोग कुछ शांत रहे! क्यों ऐसे चिढ़ाड़ रहे हैं? क्यों बसंत का नशा चढ़ रहा है? सम्य लोगों की तरह ताली बजाओं पर चिल्लाने की कोई जरूरत नहीं है। कृपया चुप बैठिये और इसे चैन से बोलने दीजिये।” टप्पोलीत की ओर मुड़कर उसने चुपके में मुट्ठी भीचकर उसे बगल में टहोका मारा और फुसफुसाया “छाती में खूब

हवा भर ले और बोल पड। इप्पोलीत, कृपा करके लम्बा-चौड़ा भाषण देना, विद्वानों की तरह। आज के समारोह के तुम हीरो हो इसलिये तुम्हें अच्छा-खासा, लम्बा भाषण देना होगा।”

इप्पोलीत शाली को कभी इतना सम्मान नहीं मिला था, अपनी जिदगी में कभी भी उसने ‘लम्बा-चौड़ा’ भाषण नहीं दिया था, अपने काम के लिये उसे गाववासीयों से ज्यादा से ज्यादा एक गिलास बोर्दो मिल जाती। प्रबन्ध-मंडल के उपहार और इतनी धूमधाम के कारण वह अब पूरी तरह सकपका गया था। छानी में लाल बडल को चिपकाये उसके हाथ काप रहे थे, लोहारखाने में हमेशा इतनी दृढ़ता के साथ खड़ी होनेवाली टांगों में कपकपी दौड़ रही थी हाथों में बडल को गाने उसने आस्तीन में आँख में आये आँसू और इस विशेष अवसर पर रगड़-रगड़कर धूल मट्ट को पाछा और भर्गयी आवाज में बाला

“औजारों की हमें बेशक जरूरत है हम शुक्रगुजार हैं प्रबन्ध-मंडल के भी और उनकी इस बहुत-बहुत धन्यवाद। और मैं चर्कि मैं लोहारखाने का दीवाना हूँ तो मैं तो मैं हमेशा आज की तरह—सामूहिक फार्म का सदस्य हूँ मैं दिल खोलकर और साटन बेशक मेरी लुगाई के काम आ जायेगी ” उसने कक्षा के कमरे में ठसाठस भरी भीड़ में पत्नी को खोजने के लिये खोयी-खोयी-सी नजर डाली उसे आशा थी कि वह उसकी मदद कर देगी, पर इप्पोलीत को अपनी पत्नी नहीं दिखायी दी और उसने गहरी सांस लेकर अपना अल्प भाषण इस प्रकार समाप्त किया

साटन में औजारों के लिये और हमारे काम के लिये आपको कामरेड दवीदोव और सामूहिक फार्म को बहुत-बहुत शुक्रिया। ”

यह देखकर कि शाली का भावुक भाषण समाप्त हो रहा है रजम्यो-ल्लोव पसीने से तर लोहार को व्यर्थ ही दशारे करने लगा। लोहार उन पर ध्यान नहीं देना चाहता था। भुक्कर लोगों का अभिवादन करके, माते बच्च की तरह हाथों में बडल का उठाये वह मंच से उतर गया।

नाग्ल्लाव ने झट से टोपी उतारकर हाथ में दशारा किया और दो बालालाइकाओ और एक वायोलिन के आर्केस्ट्रा ने ‘इंटरनेशनल’ गान की धून छेड़ दी।

टोलियो के नायक दुबल्नोव, ल्युबीशिकन, द्योम्का उशाकोव रोज घोड़ो पर मवार होते और स्तेपी में जाकर देखते कि जमीन जुताई और बोवाई के लिये तैयार तो नहीं हुई। स्तेपी में वसंत की सूखी हवाये बह रही थी। मौसम अच्छा था और पहली टोली अपने क्षेत्र की रेतीली जमीन पर जोताई की तैयारी करने लगी थी।

प्रचार-दल की टोली वोयस्कोवोय गाव में बुला ली गयी थी पर नागूलनोव के अनुरोध पर कोन्द्रात्को वान्या नाइद्योनोव को बोवार्ट पूरी होने तक ग्रैम्याची में ही छोड़ दिया था।

जिम दिन शाली को पुरस्कार दिया गया था, उसके अगले दिन नागूलनोव ने लूशका से तलाक ले लिया। वह गाव के आचल में अपनी चचेरी मौमी के यहाँ रहने के लिये चली गयी। कोई दो दिन तक उसने किसी को अपना मुँह न दिखाया। एक बार सामूहिक फार्म के दफ्तर के पास दवीदोव से उसकी भेट हुई, उसे रोककर वह बोली

“अब मैं कैसे जियू कामरेड दवीदोव, कोई सलाह दीजिये।”

“यह भी कोई पूछने की बात है! अरे हम शिशुशाला खोलने की सोच रहे हैं, जाओ वहाँ करो काम।”

“माफ कीजिये! अपने बच्चे पैदा किये नहीं, अब क्या दूसरा के पालूगी? आप भी कैसी बात करते हैं।”

“तो जाओ टोली में काम करो।”

“मैं काम करने लायक औरत नहीं हूँ खेत में काम में मुझे चक्कर आने लगते हैं।”

“बड़ी आयी नाजुक कट्टी की! जा गुलछरें उड़ा पर रोटी नहीं मिलेगी। हमारा नियम है ‘जो काम नहीं करता, उसे रोटी नहीं मिलती।’

लूशका न गहरी सास ली और नुकीली जूती में नम रेत को कुगदने हुए मिर भुकाकर बोली

“मेरे यार, तिमोफेई नकटे ने उत्तरी देस के कोतलास शहर में चिट्ठी भेजी है जल्दी ही आनेवाला है।”

“यह उसके बस की बात नहीं है।” दवीदोव मुस्कराकर बोला।

“अगर आ भी गया तो हम उसे और भी दूर भेज देगे।”

“मतलब, उमे माफी नही मिलेगी?”

“नही। उसकी बाट मत जोह और आवारागर्दी छोड दे। काम करना चाहिये, सच कहता हूँ।” दबीदोव तीखे स्वर मे बोला और चलने लगा पर लूशका ने हल्के से भेपकर उसे गोक लिया। उसने स्वर मे उपहास और चुनौती के पुट के साथ कहा

“मुझे कोई दूल्हा-वूल्हा नही दिलवा सकते?”

दबीदोव गुस्से मे उसे घूरकर बुदबुदाया

“मैं ऐसा काम नही करता। जाओ अब।”

“एक मिनट रुकिये। एक बात और पूछना चाहती हूँ।”

“बोल।”

‘आप मुझे अपनी पत्नी नही बना सकते?’ लूशका के स्वर मे खुली चुनौती और उपहास गूजा।

अब दबीदोव के भेपने की बारी थी। उसका पूरा चेहरा शर्म मे लाल हो गया, उसके होठ हिले पर आवाज नही निकली।

‘आप मेरी तरफ देखिये तो, कामरेड दबीदोव’ लूशका विनम्रता का जामा ओढकर बोली, ‘औरत मैं मुदर हूँ, प्यार करने लायक हूँ। आप देखिये तो मेरी आखे कितनी मुदर हैं और भौंहे भी मेरी टांगे भी और बाकी सब भी। उसने चुटकी मे लेकर अपने हरे ऊनी लहंगे को हल्का-सा उठाया और भटकाकर अवाक् दबीदोव के सामन घमी। ‘क्यों, क्या बुरी हूँ? आप साफ-साफ कह दे

दबीदाव खीज के साथ अपनी टोपी को गद्दी पर खिसकाकर बाला

‘लडकी तू चगी है। और तेरी टांग भी मुदर है पर इन टांगा मैं तू गलत रास्ते जा रही है यह बात पक्की है।’

“जहाँ मर्जी होती है वही जाती हूँ। मतलब यह कि आप पर मैं कोई आशा न रखूँ?”

“हा बेहतर तो यही होगा।”

“आप यह मत मोच बैठियेगा कि मैं आप पर भगनी हूँ या आपको फसाना चाहती हूँ। मुझे बस आप पर दया आ गयी, मोचा ‘जवान मर्द है, शादीशुदा नही है, छडा है, लुगाइयो मे रुचि नही लेता’ जब आप मुझे देखते हैं आपकी आंखो मे भूख होती है, बम आ गयी मुझे दया आप पर”

“तू यह क्या बकबक कर रही है... अच्छा, अलविदा! तेरे साथ गप्पें लड़ाने का वक्त नहीं है मेरे पास,” और मज्जाक में जोड़ दिया: “जब बोवाई पूरी कर लेंगे, तब झपट सकती हो भूतपूर्व मल्लाह पर, पर पहले मकार से अनुमति ले लेना!”

लूशका खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली:

“मकार विश्व क्रांति के बहाने मुझे टालता रहा और आप बोवाई के। नहीं, माफ़ कीजिये! मुझे आप जैसों की ज़रूरत नहीं! मुझे तो दहकते प्यार की ज़रूरत है, आप से क्या मिलेगा?... आप का खून तो अधिक काम के कारण ठंडा पड़ गया, फूटे बर्तन में भी कभी पानी उबला है!”

दवीदोव खोयी-खोयी मुस्कान के साथ दफ़्तर की ओर चल पड़ा। पहले उसने सोचा: “किसी तरह इसे किसी काम में लगाना चाहिये नहीं तो ग़लत राह पकड़ लेगी। सब काम में व्यस्त हैं और यह मज-धज कर घूम रही है, ऊपर से ऐसी बातें करती है...” पर फिर उसने मन ही मन कहा: “भाड़ में जाये! बच्ची थोड़े ही है, खुद समझना चाहिये। मैंने क्या परोपकार का ठेका ले रखा है? काम सुभाया था—नहीं करना चाहती तो जाये भाड़ में!”

उसने नागूल्लोव से बस यही पूछा:

“तलाक़ दे दिया?”

“कृपा करके कोई सवाल मत पूछो!” अपनी लम्बी उंगलियों के नाखूनों को बड़े गौर से देखते हुए मकार बुदबुदाया।

“मैं ऐसे ही ”

“और मैं भी ऐसे ही!”

“भाड़ में जाओ! कुछ पूछ भी नहीं सकता!”

“पहली टोली को खेत में जाना चाहिये पर वे टाल-मटोल कर रहे हैं।”

“तुम लूशका को सही गस्ते पर लगाने की सोचते तो अच्छा होता, अब वह अंट-शंट हरकतें करने लगेगी!”

“मैं कोई पादरी थोड़े ही हूँ! पिंड छोड़ो मेरा! मैं पहली टोली के बारे में कह रहा हूँ कि कल उसे खेत में काम शुरू कर देना चाहिये..”

“पहलीवाली कल शुरू कर देगी... पर तुम क्या सोचते हो, तलाक़ दे दिया और हो गयी छुट्टी? औरत को क्यों कम्युनिस्ट भावना

मे सीख नहीं दी? तुम्हारे साथ तो मुमीबत ही मुमीबत है, फैक्ट।”

“कल मैं खुद जाऊंगा पहली टोली के साथ खेत में क्यों तुम गोखरू की तरह चिपक गये? ‘नहीं सिखाया, नहीं सिखाया।’ की रट लगा दी। मैं उसे क्या सिखाता जब खुद निरा बुद्धू हूँ? तलाक दे दिया, और क्या चाहिये तुम्हें? तुम भी दाद की खाज की तरह हो मेम्यान।” दधर हमामची की वजह से मेरा हाल खराब है ऊपर से तुम भूतपूर्व बीवी को मढ़ रहे हो ”

दवीदोव उत्तर देना ही चाहता था कि दफ्तर के अहाते में कार का हॉर्न बजा। हिचकोले खानी, डबरे में पिघली बर्फ में भरे पानी के छोटे उडानी इलाकाई मर्मिति की ‘फोर्ट’ कार आकर रुकी। दरवाजा खोल कर इलाकाई नियंत्रण आयोग का अध्यक्ष समोखिन कार से उतरा।

“यह मेरे मामले की जांच करने आया है ” नागूलोव ने नाक-भौ सिकोड़ी और दवीदोव की ओर क्रुद्ध नजर डालकर बोला “देखो, तुम मेरी लुगाई के बारे में मुह मत खोलना, नहीं तो मेरा भट्ठा फिठवा दोगे। पता है यह समोखिन कैसा है? पूछने लगेगा कि ‘क्यों तलाक दिया, किन परिस्थितियों में?’ इसके लिए किमी कम्युनिस्ट का तलाक सीन में खजर की तरह है। मानो पादरी हो न कि इम्पेक्टर। इस बड़ी खोपड़ीवाले शैतान को देखकर मुझे उल्टी आती है। और यह हमामची! जान से मार डालता तो अच्छा ही होता ”

समोखिन ने कमरे में प्रवेश किया तिरपाल के बैग को हाथ में पकड़े-पकड़े, दुआ-मलाम किये बिना वह कुछ-कुछ मजाक के लहजे में बोला

“क्यों, नागूलोव, शगरत कर डालो? और तुम्हारी वजह से मुझे ऐसे कीचड़ में यहाँ आना पड़ा। आर यह कामरेड कौन है? दवीदोव तो नहीं? अच्छा, नमस्ते।” नागूलोव और दवीदोव से हाथ मिलाकर वह मेज के पास बैठ गया। “कामरेड दवीदोव, तुम हमें आध-एक घंटे के लिये अकेला छोड़ दो, मुझे दस गावदी से एक-दो बातें करनी हैं।”

“ठीक है, कर लीजिये।”

दवीदोव जानें के लिये उठा उसे यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि नागूलोव जिसने अभी कुछ देर पहले ही उससे तलाक की चर्चा

न करने का अनुरोध किया था, यह सोचकर कि 'जो होगा, सो होगा', फटाक से बोला

"यह सच है कि एक प्रतिक्रातिकारी की पिटाई की, पर, समोखिन, यही नहीं "

"और क्या कर डाला?"

"आज बीवी को घर से निकाल दिया।"

"अरे ss!" चौड़े माथेवाला दुबला-पतला समोखिन घबराकर बोला और जोर-जोर से फुफकारते हुए, बिना कुछ बोले बैग में कागजों को उलटने-पलटने लगा

२७

याकोव लुकीच को रात को नींद में कदमों की आहट, फाटक के पाम खटर-पटर सुनायी दी, पर वह जाग नहीं पा रहा था। और जब बड़ी मुश्किल से वह जागा तो उसे किसी के भारी बोझ से अहाने की बाड़ का तन्ना चरमगने और धातु की कोई चीज खटकने की आवाज सुनायी पड़ी। जल्दी से खिड़की के पाम जाकर कपाट में बने छेद पर उसने आख टिकायी। याकोव लुकीच को पौ फटने के पहले के घने अधकार में कोई बाड़ फाड़ता नजर आया। रात में चमकी सफेद टोपी को देखकर उसने पोलोवत्सेव को पहचान लिया। कंधों पर कोट डालकर और अगीठी पर सूखने नमदे के बूटों को पहनकर बाहर निकला। पोलोवत्सेव घोड़े को अदर लाकर फाटक को बद कर चुका था। याकोव लुकीच ने उसके हाथ में लगाम ली। घोड़ा अयाल तक भीगा था, वह लडखड़ा रहा था। पोलोवत्सेव ने अभिवादन का उत्तर दिये बिना, फटे स्वर में फुसफुसाकर पूछा

"वह ल्यत्येवस्की यही है?"

"मो रहे है। बड़ी मुसीबत है उनकी वजह में हर वक्त वोद्का पीते रहते है "

"भाड़ में जाये। हरामजादा लगता है घोड़े को मैंने हद में ज्यादा थका डाला "

पोलोवत्सेव का स्वर बहुत धीमा था, याकोव लुकीच को उसमें

किमी टूटपन, गहरी आशका और थकान की झलक महसूस हुई। कमरे में पोलोवत्सेव ने बूट उतारे, खुरजी में कज्जाकोवाली नीली शलवारनुमा पतलून निकालकर कमर तक गीली अपनी पतलून बदली और उसे अगीठी के पास सूखने के लिये टांग दिया।

याकोव लुकीच कमरे की दहलीज पर खड़ा अपने अफसर की मुस्त हरकतों को देख रहा था, वह अगीठी के चबूतरे पर बाहों में घुटनों को भरकर अपने तलवे सेक रहा था। पल भर के लिये वह तद्रा में जड़ हो गया। शायद उसे बेहद नींद आ रही थी पर उसने जोर लगाकर आँखें खोली और शराब के नशे में धुत्त मोये ल्यत्येवस्की को देर तक ताकता रहा। फिर उसने पूछा

“कब से पीना शुरू किया?”

“पहले ही दिन से। बहुत ज्यादा पीता है। मुझे लोक-लाज का डर लगता है। गोज़ बोद्का लानी पड़ती है। लोगों को शक हो सकता है।”

‘हरामजादा!’ दात भीचकर प्रचंड घृणा के साथ पोलोवत्सेव बोला। और फिर से बैठे-बैठे ही अपना बड़ा सफेद बालोवाला सिर हिलाते हुए नींद में डूब गया।

पर कुछ मिनट बाद नींद को भटककर उसने फर्श पर पैर रखे और आँखें खोली।

‘तीन दिन से नहीं सोया हूँ। नदियों में बाढ़ आयी हुई है। तुम्हारी ग्रेम्याचीवाली को तैरकर पार करना पड़ा।’

‘आप लेट जाइये, अलेक्सांद्र अनीसीमोविच।’

“लेट जाऊंगा। तबाकू दो। मेरा गीला हो गया है।”

दो गहरे कश खींचकर पोलोवत्सेव की जान में जान आ गयी। उसकी आँखों में नींद उड़ गयी, आवाज मभल गयी।

“बताओ, क्या हाल-चाल है यहाँ के?”

याकोव लुकीच ने संक्षेप में उसे बताया और फिर खुद पूछा

‘आपकी क्या सफलताये है? जल्दी शुरू हागा?’

“बस एक-दो दिन में या कभी भी शुरू नहीं करेंगे। कल रात को तुम्हारे साथ वोयस्कोवोय जायेंगे। वहाँ से शुरूआत करनी चाहिये, कम्बे के पाम है। आजकल वहाँ प्रचार दल है। उसी में शुरू करेंगे। वहाँ मुझे तुम्हारी जरूरत पड़ेगी। वहाँ के कज्जाक तुम्हें जानते हैं।

तुम्हारी बात का उन पर असर होगा।” पोलोवत्सेव चुप हो गया, बड़ी देर तक वह उसके घुटनों पर चढ़े काले बिल्ले को अपनी चौड़ी हथेली से सहलाता रहा, फिर फुसफुसाया, उसके स्वर में इतना स्नेह था कि उसे पहचानना कठिन था: “पूसी! पूसी रानी! मेरे बिल्ले! तुम कितने काले-कलूटे हो! लुकीच, मुझे बिल्लिया बहुत अच्छी लगती है! घोडा और बिल्ली सबसे साफ-सुथरे जानवर होते हैं... मेरे घर में माइबेरियाई बिल्ला था, बहुत बड़ा और भबरीला... हमेशा मेरे साथ मोता था... उसका रंग कुछ...” पोलोवत्सेव ने सोच में डूबकर आंखें मिचमिचायीं, फिर मुस्कराकर उंगलियां हिलाते हुए बोला, “कुछ-कुछ धुएं जैसा सलेटी, सफ़ेद चित्तियोंवाला। बहुत बढ़िया बिल्ला था! और, लुकीच, तुम्हें अच्छी लगती हैं बिल्लियां? और कुत्ते मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते, कुत्तों से मुझे घृणा है! बचपन की बात है, तब मेरी उम्र कोई आठ साल की रही होगी। घर पर एक छोटा-सा पिल्ला था, मैं उसके साथ खेल रहा था, गायद खेल-खेल में मैंने उसे दर्द पहुंचाया और उसने मेरी उगली काट ली, खून निकल आया। मुझे ऐसा गुस्सा आया कि लकड़ी उठाकर उसकी पिटाई करने लगा। वह भागता और मैं उसका पीछा करके पीटे जाता... इतना मज़ा आ रहा था! वह खत्ती के नीचे घुसा—मैं भी उसके पीछे-पीछे, वह दहलीज़ की पैड़ी के नीचे घुसा मैंने उसे निकालकर पीटना जारी रखा। उसकी ऐसी धुनायी की कि उसका पेशाब निकल गया और वह चीखने की जगह सुबकिया-सी लेने लगा... और तब मैंने उसे गोद में उठा लिया...” पोलोवत्सेव भेंपकर दोषी की तरह मुस्कगया। “उसे गोद में लेकर मैं दया के साथ रो पड़ा! तब मुझे फ़िट पड़ गया... मा दौड़ी-दौड़ी आयी और मैं बग्घी के मायबान के पास ज़मीन पर पिल्ले के साथ पड़ा टांगें मार रहा था... तब से मुझे कुत्तों से नफ़रत हो गयी। पर बिल्लियों से बेहद प्यार है। और बच्चों से भी, नन्हें-मुन्नो से। इतना प्यार है कि दिल में कसक-सी होती है। बच्चों के आंसू नहीं देख सकता, मन में उथल-पुथल हो जाती है... और तुम्हे, बुड्डे, बिल्लिया अच्छी लगती है या नहीं?”

अपने अघेड़ उम्र के कांड्यां अफ़सर के मुंह से जो जर्मनी से युद्ध के समय से ही अपने कज़्ज़ाक सैनिकों के प्रति पाशविक व्यवहार के लिये कुख्यात था ऐसी मानव सुलभ सीधी सरल बातें सुनकर याकोव

लुकीच अवाक् रह गया और उसने बस सिर हिलाकर नकारात्मक उत्तर दिया। पोलोवत्सेव कुछ देर चुप रहा और चेहरे पर गभीर भाव लाकर उसने रूखे, कामकाजी लहजे में पूछा

“ डाक आ रही है ? ”

“ आजकल तो बाढ़ आयी हुई है, घाटियों में पानी भरा है, सड़के कटी हुई है। कोई डेढ़ हफ्ते में डाक नहीं आ रही। ”

“ गाव में स्तालिन के लेख के बारे में कोई खबर है ? ”

“ किस लेख की ? ”

“ अखबारों में सामूहिक फार्मों के बारे में उसका लेख छपा था। ”

“ नहीं, यहाँ तो कोई खबर नहीं आयी। लगता है ये अखबार हम तक नहीं पहुँचे। उसमें क्या लिखा था, अलेक्सांद्र अनीमीमोविच ? ”

“ ऐसे ही, बेकार की बातें तुम्हारे काम की कोई बात नहीं थी। अच्छा, जाकर सो जाओ। घोड़े को तीन घंटे बाद पानी पिला देना। और कल रात को सामूहिक फार्म के दो घोड़े ले लेना और जैसे ही अधेरा छा जायेगा फौरन वोयस्कोवोय चल देगे। तुम बिना जिन के जाओगे, पास ही तो जाना है। ”

सबेरे पोलोवत्सेव बड़ी देर तक ल्यत्येवस्की से बातें करता रहा जिसका नशा उतर चुका था। बातचीत के बाद ल्यत्येवस्की जब रमोई में निकला तो उसका चेहरे का रंग उड़ा हुआ था और वह क्रुद्ध था।

“ तबीयत मुधारने के लिये शराब तो नहीं चाहिये ? ” याकोव लुकीच ने खुशामदी भाव के साथ पूछा, पर ल्यत्येवस्की उसके मिर के ऊपर में कही देखते हुए, शब्द तौल-तौलकर बोला

‘ अब किमी चीज की जरूरत नहीं, ’ और कमरे में जाकर पलंग पर औधा लेट गया।

रात को सामूहिक फार्म के अस्तबल में इवान बातार्लिस्कोव की झूटी थी जिसे याकोव लुकीच ने ‘ दोन मुक्ति मघ ’ में भरती किया था। पर याकोव लुकीच ने उसे भी नहीं बताया कि वे कहाँ और किस-लिये जा रहे हैं। ‘ हमारे काम के लिये यही पास ही में जाना है, ’ यह कहकर उसने बातार्लिस्कोव को टाल दिया। और उसने बेहिचक दो सबसे बढ़िया घोड़े खोलकर उसे थमा दिये। याकोव लुकीच उन्हें पिछवाड़ों से ले जाकर कुज में बाध आया और पोलोवत्सेव को बुलाने चला गया। जब वह उसके कमरे के दरवाजे के पास आया तो उसने

ल्यत्येवस्की को चिल्लाकर कहते सुना “पर इमका तो अर्थ हमारी हार है, आप समझे तो।” उत्तर में पोलोवत्सेव अपनी भारी आवाज में मस्ती में कुछ बोला। याकोव लुकीच ने अनिष्ट के पूर्वाभास के साथ हल्के से दरवाजा खटखटाया।

पोलोवत्सेव जीन बाहर लाया और वे घोड़ों पर सवार होकर उन्हे मरपट दौड़ाने लगे। गाव के बाहर उन्होंने उथले स्थान पर नदी पार की। मारे रास्ते पोलोवत्सेव चुप रहा, उसने मिगरेट पीने की मनाही कर दी थी और सड़क पर नहीं बल्कि उसमें पचास-एक गज की दूरी बनाये रखकर चलने को कहा।

वोयस्कोवोय में उनकी प्रतीक्षा की जा रही थी। याकोव लुकीच के एक परिचित कज्जाक के घर में कोई बीस गाववासी जमा थे। ज्यादातर बूढ़े ही थे। पोलोवत्सेव ने सबसे हाथ मिलाया, फिर उनमें से एक के साथ खिड़की के पास जाकर पाच मिनट तक कानाफूसी करता रहा। बाकी लोग चुपचाप कभी पोलोवत्सेव की ओर देखते तो कभी याकोव लुकीच की ओर। और वह दहलीज के पास बैठा पगड़े लोगों, कम परिचित कज्जाकों के बीच घबराया-मा, अटपटा-सा महसूस कर रहा था।

अंदर में खिड़कियों पर टाट के पर्दे पड़े थे, बाहर से कपाट बंद थे, अहाते में घर के मालिक का दामाद पहरा द रहा था, फिर भी पोलोवत्सेव दबे स्वर में बोला

‘कज्जाक मज्जनो धड़ी पास आ रही है।’ आपकी गुलाम का काल समाप्त हो रहा है, बगावत शुरू करनी चाहिये। हमारा सैनिक संगठन तैयार है। परमों रात को शुरू कर रहे हैं। वोयस्कोवोय में पचास घुड़मवारों का दस्ता आयेगा, और पहली गोली चलते ही आपको दौड़कर प्रचार गोली के लोगों को दबाव लेना है ताकि एक भी जिंदा न बचने पाये। आपके दल की कमान मैं दफादार मार्शिन को सौंपता हूँ। चढ़ाई से पहले टोपियों पर मफेद फीते टाकने की मलाह दूंगा ताकि अंधेरे में अपने और पराये का भेद कर सके। हरेक के पास घोड़ा और कोई हथियार जैसे तलवार, रायफल या शिकारियों की बंदूक ही मही, तथा तीन दिन का खाना तैयार रहने चाहिये। जब प्रचार टोली और अपने स्थानीय कम्युनिस्टों से निबट लगे तो आपका दल उस दस्ते में शामिल हो जायेगा जो आपकी मदद के लिये आयेगा।

तब आपके दल की कमान दस्ते के कमांडर के पास चली जायेगी। उसके हुक्म पर उधर जाओगे जहा वह ले जायेगा। ” पोलोवत्सेव ने गहरी सास छोड़कर हथेली से माथे का पसीना पोछा और जोर से बोला “ मेरे माथ ग्रम्याची में मेरी रेजिमेंट का सैनिक, याकोव लुकीच ओम्ब्रोव्नोव आया है, आप सब उसे अच्छी तरह जानते है। वह आपको हमारे साथ मिलकर कम्युनिस्टों के जुग में दोन प्रदेश की मुक्ति के महान लक्ष्य की ओर बढ़ने की ग्रम्याची के अधिकांश निवासियों की तत्परता के बारे में बतायेगा। बोलो, ओम्ब्रोव्नोव। ”

पोलोवत्सेव की कड़ी नजर ने याकोव लुकीच को स्टूल से उठा दिया। वह झट से खड़ा हुआ, उसे अपना शरीर सीमे की तरह भारी और हलक दहकता लग रहा था, पर उसे बोलने का अवसर नहीं मिला। वहा उपस्थित सबसे वृद्ध कज्जाक गिरजा परिषद का मदस्य, युद्ध से पहले बोयस्कोवाय के गिरजे की पाठशाला का स्थायी प्राचार्य याकोव लुकीच के माथ ही उठा और उसका मुंह खुलने में पहले वृद्ध ने पूछा

‘ महामहिम यमाऊल साहिब क्या आप न मुना है कि आपके आने से पहले हमने आपसे में मलाह-मशविरा किया बड़ा दिलचस्प अखबार आया है ’

“ क्या ? तुम क्या कह रहे हो, दादा ’ ’ फटे-से स्वर में पोलोव-त्सेव ने पूछा।

मैं कह रहा हू कि मास्को में अखबार आया है और उसमें सारी पार्टी के चेयरमैन की चिट्ठी छपी है ”

“ सेक्रेटरी की। ” अगीठी के पास जमा झुंड में किसी ने ठीक किया।

“ मतलब सारी पार्टी के सेक्रेटरी कामरेड स्तालिन की। * यह रहा इसी महीने की दो तारीख का अखबार, ” बूढ़े ने धीरे-धीरे अपनी पतली आवाज में बोलते हुए कोट की अदर की जेब से करीने में तह किया हुआ अखबार निकाला। “ आपके आने से कुछ देर पहले हमने

* कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के निर्णयानुसार स्तालिन का लेख ‘मफलता-ओं में मिर चकरण’ २ मार्च १९३० को प्रकाशित हुआ था। - म०

इसे पढा, और यह अखबार हमारी और आपकी राहें जुदा कर देता है। हमारी यानी हलवाहो के जीवन की राह अब बदल गयी कल हमें इस अखबार की खबर पडी और आज सबेरे मैं अपने बुढ़ापे के बावजूद घोंडे पर सवार हो कस्बे गया। लेवशोव बीहड को तैरकर पार किया, आखो में आसू थे पर पार कर ही लिया। कस्बे में एक जान-पहचान के आदमी से भगवान की दुहाई देकर इसे खरीदा। पद्रह रूबल में। बाद में जब देखा तो इस पर दाम पाच कोपेक ही छपा है। मैंने तो लोग मुझे चदा करके, हर घर से दस-दस कोपेक जमा करके लौटायेगे, यही फैसला हुआ है। पर इस अखबार का असली दाम तो इससे भी बहुत अधिक है ”

“तू क्या कह रहा है, बुढ़े? क्या अट-शट बक रहा है? कही सठिया तो नहीं गया? किमने तुझे सबकी ओर में बोलने का अधिकार दिया है?” गुस्से से कापते स्वर में पोलोवत्सव ने पूछा।

तब नाटे कद का, कोई चालीस-एक साल का सुनहरी छितरी मूछो और चपटी नाकवाला कज्जाक दीवार के पास झुंड बनाकर खड़े लोगो के बीच से निकला और चुनौतीपूर्ण, क्रुद्ध स्वर में बोला

“कामरेड भूतपूर्व अफसर माहब, आप हमारे बूढ़ो पर आवाज मत उठाइये, पुराने जमाने में आप लोग क्या कम चिल्लाये थे इन पर। बस लद गये आपके दिन, अब बदतमीजी के बिना बात करनी चाहिये। सोवियत सत्ता में हम ऐसे व्यवहार के आदी नहीं रहे, समझे कुछ’ और हमारे बजुर्ग न ठीक ही कहा था कि हमन सलाह-मशविरा किया और अखबार ‘प्राव्दा’ में छपे इस लेख की वजह से हमने विद्रोह नहीं करने का फैसला किया है। हमारे और आपके रास्ते और पग-डडिया बट गयी। हमारे गाव के अधिकारियों ने बेवकूफिया की है किमी-किमी को बेवकूफ बनाकर सामूहिक फार्म में हाक दिया, बेकार ही में बहुत-से मझौले किसानो को बेदखल कर दिया, पर एक बात हमारे गाव के शासक नहीं समझे कि किसी लौडिया को तो उल्लू बनाया जा सकता है पर पूरी जनता को नहीं। हमारी सोवियत के अध्यक्ष ने हमारी जीभों पर लगाम लगा रखी थी, सभा में उसके खिलाफ बोलने तक की हिम्मत नहीं होती थी। इतनी सस्ती कर रखी थी कि कुछ पूछो मत, अच्छा मालिक तो अपने घोंडे तक का ख्याल रखता है पहले हम, बेगक सोचते थे कि केन्द्र के हुक्म पर

हमें पीसा जा रहा है, यही समझते थे कि कम्युनिस्टों की केन्द्रीय समिति से यह सब प्रचार हो रहा है। आपस में हम यही बातें करते थे कि ऊपरवालों के इशारे पर सब हो रहा है। इसीलिये हमने सिर उठाने की सोची और आप के 'संघ' में शामिल हो गये। समझे आप? पर अब तो स्तालिन इन स्थानीय कम्युनिस्टों को, जिन्होंने ज़बरदस्ती लोगों को सामूहिक फ़ार्म में ठूसा और बिना बात गिरजों को बंद कर दिया, बड़ी फटकार सुनाता है, पदों से हटा रहा है। अब हलवाहे चैन की सांस ले सकते हैं, चाहो फ़ार्म में भरती हो जाओ, नहीं चाहते तो अपनी अलग खेती करते रहो। बस इसीलिये हमने फ़ैसला किया कि आप चुपचाप हमें वे रसीदें लौटाये जिनपर हमने बेवक़्फी में दस्तख़त कर दिये थे और जहाँ चाहते हैं, जाइये, हम आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचायेगे क्योंकि खुद हमारा दामन भी मैला है.. "

पोलोवत्सेव खिड़की के पास गया, चौखट से पीठ टिकाकर खड़ा हो गया, उसके चेहरे का रंग उड़ा था, पर आवाज़ उसकी संतुलित और सख्त थी जब उसने सब पर नज़र डालकर पूछा :

"यह क्या है, कज़ाको? ग़दारी?"

"जैसा आप समझे, " एक और वृद्ध ने उसे उत्तर दिया, " जो चाहें कहें पर अब हमारे रास्ते अलग हो गये। अगर खुद देश का मालिक हमारी हिमायत कर रहा है तो हम क्यों ग़लत ग़ह चलें? मुझे बेकार ही मताधिकार से वंचित कर दिया गया, निर्वासित करना चाहते थे, पर मंग बेटा लाल सेना में है, मतलब मेरे अधिकार बहाल कर दिये जायेंगे। हम सोवियत सत्ता के खिलाफ़ नहीं बल्कि अपने गांव में गड़बड़ी के खिलाफ़ है, और आप हमें पूरी सोवियत सत्ता के खिलाफ़ मोड़ना चाहते थे। नहीं, हमें यह नहीं चाहिये! हमारी रसीदें वापस कर दीजिये, अभी तो प्यार से माग रहे हैं। "

एक और वृद्ध कज़ाक अपनी घुंघराली दाढ़ी को सहलाता हुआ बोला :

"हम चूक गये, कामरेड पोलोवत्सेव .. भगवान गवाह है, हमसे ग़लती हो गयी! बेकार ही मैं हमने आपसे नाता जोड़ा। पर चलो अभी भी कुछ बुरा नहीं हुआ, अब हमें समझ आ गयी है... पिछली बार आपने हमें सोने के पहाड़ दिलवाने के वायदे किये थे, आपको

सुनकर हम मन ही मन सोच रहे थे कि वायदे आपके हमारे कधो के लिये भारी पड़ सकते हैं। आप ने कहा था कि विद्रोह शुरू होते ही मित्र हमारे पलक झपकते ही ढ़ेरो हथियार और फौजी सामान भेज देंगे। हमारा काम बम कम्युनिस्टों को गोली मारना ही है। पर आपके जाने के बाद हम सोचने लगे कि हथियार तो वे ले आयेगे, माल मस्ता ही है पर अगर वे खुद हमारी धरती पर उतर गये तब ? एक बार उतर गये तो जाने का नाम न लेगे। उन्हें भी रूस की धरती से खदेड़ने के लिये फिर हथियार का महाराग लेना पड़ जायेगा। कम्युनिस्ट तो अपना ही खन है अपने ही लोग हैं पर वे न जान कौनसी बोली में बोलते हैं। और ऐसे अकड़कर रहेंगे कि मर्दियों में भी मुट्ठी भर बर्फ मागने की हिम्मत न करें। सन् बीस में मैं परदेस में रह चुका हूँ। गैलीपोली में फ्रांसीसी गेटो का स्वाद चखा, दिन-रात वहाँ में भागने के सपने देखता था। गेटो उनकी कदवी बहुत है। मैंने ढ़ेरो देशों के लोग देखे हैं पर रूसी जनता में प्रिय, दयालु कोई जनता नहीं है। कोस्तान्तीनोपोल और एथेस में मैं बदरगाहों में काम के समय अंग्रेजों और फ्रांसीसियों को जी भरकर देख चुका हूँ। जहरीले नाग की तरह फन उठाकर मेरे पास में गुजरते और मुझे देखकर उनका मुँह बिगड़ जाता क्योंकि मैं गंदे कपड़ों में होता दाढ़ी बढ़ी होती और मेरे शरीर में पसीने की बू आती, मुझे देखकर उनका जी मितलान लगता। वे तो अफसर की घोड़ी की तरह नीचे में लेकर ऊपर तक गज-धजें माफ-मथर रहते। बम उमीलिये घमड़ के साथ हम देखते। शराबखानों में उनके मल्लाह हमें छेड़ते और मुँकों मागते। पर हमारा दोन और कुवान के कज्जाक धीरे-धीरे परदेस के आदी हो गये और उनको मुहताड जवाब देने लगे। ' कज्जाक मुस्कगया, उसकी दाढ़ी की पृष्ठभूमि में नीली-सी छुरी की तरह उसकी दाढ़ावली चमकी। ' हमारा आदमी किसी अंग्रेज को रूसी घूसा सूघाता और वह चारों खान चित्त हो जाता। रूसी घूसे के सामने वे कमजोर हैं, हालांकि खुराक उनकी अच्छी है पर अदर में पिलपिले हैं। हम इन मित्रों की रग-रग पहचानते हैं। नहीं, हमें माफ करो, अपनी सत्ता में हम खुद किसी तरह मेल-मिलाप कर लेंगे, क्यों बिना बात के घर का कूड़ा घर के सामने डाले रसीदे आप हमें वापस कर दीजिये। "

" यह तो खिड़की में कूद जायेगा पर मैं रेत पर पड़े केकड़े की

तग्रह रह जाऊगा ! मारा गया ! मेरी मा, तूने मुझे बड़ी अशुभ घड़ी में पैदा किया ! क्यों इस पापी के जाल में फँस गया ? शैतान ने मत मार दी ! ” बैच पर उद्विग्न बैठा याकोव लुकीच मोच रहा था , उसकी नजरे पोलोवत्सेव पर टिकी थी । पर वह खिड़की के पास शांत खड़ा था , अब उसका चेहरा क्रोध और दृढ़ता में दहक रहा था । माथे पर नमो फूल गयी , हाथ खिड़की के दामे को कसकर पकड़े हुए थे ।

“ ठीक है , मर्जी आपकी है , कज्जाक , हमारा साथ नहीं देना चाहते । हम मिलत नहीं करेंगे । रसीदे मैं वापस नहीं दूँगा , मेरे साथ नहीं है हेडक्वार्टर में है । वैसे आप बेकार ही डरते हैं , मैं भला थोड़े ही जाऊँगा ग० प० उ० को बताने । ”

“ बात तो ठीक है , ” एक वृद्ध ने सहमति व्यक्त की ।

“ और आपको डरना ग० प० उ० में नहीं ” अब तक धीरे-धीरे बोलता पोलोवत्सेव पूरे जोर में चिल्लाया “ हमसे डरना चाहिये । हम गद्गारों की तरह सबको गोलियों में मार डालेंगे । हटो , रास्ता दो ! सब दीवार में सट जाओ ! ” और गिवाल्वर निकालकर , उसे हाथ में ताने दरवाजे की ओर चल पड़ा । भौचक्के कज्जाको ने रास्ता बना दिया और याकोव लुकीच ने पोलोवत्सेव में पहले दरवाजे पर पहुँचकर उसे कंधे में धक्का और गुलल में छूटे पत्थर की तरह डियोही मार जा पड़ा ।

अधेरे में उन्होंने घोंडे खोले और उन्हें मगपट दौड़ाने अहाते में चले गये । मकान से उत्तेजित स्वर सुनायी दे रहे थे पर किसी भी कज्जाक ने उन्हें पकड़ने का प्रयास नहीं किया

* * *

ग्रेम्याची पहुँचकर याकोव लुकीच तेज दौड़ में थककर चूर घोड़े को सामूहिक फार्म के अस्तबल में छोड़कर जब घर पहुँचा तो पोलोवत्सेव ने उसे अपने कमरे में बुलाया । उसने न अपना ओवरकोट उतारा था न टोपी । घर पहुँचते ही उसने ल्यत्येवस्की को चलने की तैयारी का आदेश दिया और उनके लौटने में पहले घूँसवार मदेशवाहक द्वारा

लाये गये पत्र को पढ़कर उसे अंगीठी में जलाया और खुरजी में अपना सामान ठूसने लगा।

जब याकोव लुकीच ने कमरे में प्रवेश किया वह मेज़ पर बैठा था। ल्यत्येवस्की अपनी आंख चमकाता पिस्तौल साफ़ कर रहा था, वह फुर्ती के साथ उसके तेल से चिकने पुर्जों को जोड़ रहा था। और पोलोवत्सेव ने किवाड़ की चरमराहट सुनकर माथे पर ढकी हथेली हटायी और याकोव लुकीच की ओर मुंह मोड़ा, उसने पहली बार येसाऊल की धंसी, लाल आंखों में आंसू टपकते देखे, आंसुओं से तर नाक का चौड़ा बांसा चमक रहा था...

“इसलिये रो रहा हूं कि हमारा ध्येय सिद्ध नहीं हुआ। इस बार...” पोलोवत्सेव जोर से बोला और मेमने की खाल की अपनी टोपी उतारकर उससे आंसू पोछे। “दोन की भूमि दरिद्र हो गयी, असली कज़्जाक नहीं रहे यहां, अब वह गद्गारों और लुच्चे-नफंगों में फल-फूल रही है... अभी तो जा रहे हैं, लुकीच, पर हम लौटकर आयेंगे! यह चिट्ठी मिली है तुब्यान्स्की और मेरे क़स्बे में भी कज़्जाकों ने बगावत करने से इंकार कर दिया। स्तानिन ने अपने लेख से उन्हें फुसला लिया। इस वक़्त वह मेरे हाथ लग जाता तो... लगता वह मेरे हाथ इस वक़्त...” पोलोवत्सेव के गले में गरगर की सी ध्वनि हुई, मुट्ठियां कमकर भिच गयीं। गहरी सास लेकर उसने मुट्ठियां खोली और उपेक्षा के साथ मुस्कराकर बोला. “कैसे लोग हैं! नीच!.. बेवकूफ़!.. वे नहीं समझते कि यह लेख धोखा है, चाल है! पर वे बच्चों की तरह इसमें विश्वास करते हैं। इन बेवकूफ़ों को राजनीति का मोहरा बनाया जा रहा है, नकेल ढीली की जा रही है ताकि दम न घुट जाये पर वे इसमें यक़ीन करते हैं. अच्छा, करने दो! पर जब समझेंगे तो हाथ मलकर रह जायेंगे, पर तब देर हो चुकी होगी। हम जा रहे हैं याकोव लुकीच। मेहमाननवाजी के लिये भगवान तुम्हारा भला करे। मेरी सलाह सुनो सामूहिक फ़ार्म से नहीं निकलना, हर तरह से उन्हें नुक़सान पहुंचाओ, और जो हमारे ‘संघ’ में थे उनको मेरी तरफ़ से कहना: हम कुछ देर के लिये पीछे हट रहे हैं पर हम हारे नहीं। हम फिर लौटकर आयेंगे, तब उन लोगों की शामत आ जायेगी जो हमारा साथ छोड़ेंगे, हमारे साथ, मातृभूमि और दोन प्रदेश को अंतर्राष्ट्रीय यहूदियों के जुए से मुक्ति दिलाने के ध्येय से

गद्दारी करेंगे। कज्जाक शमशीरों से मरकर उन्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी, यही कह देना उनसे ! ”

“ कह दूंगा , ” याकोव लुकीच फुसफुसाया ।

पोलोवत्सेव की बातों और आंसुओं ने उसे भावविभोर कर दिया पर मन में वह इस बात से खुश था कि इन खतरनाक मेहमानों से छुटकारा पा रहा है, कि इस सबका अंत कितना अच्छा हुआ, कि उसे अब अपनी संपत्ति और अपनी चमड़ी पर आंच आने का डर नहीं रहेगा ।

“ जरूर कह दूंगा , ” यह दोहराकर उसने साहस बटोरा और पूछा : “ आप कहां जा रहे हैं , अलेक्सांद्र अनीसीमोविच ? ”

“ तुम्हें यह जानने की क्या पड़ी है ? ” पोलोवत्सेव ने शंका के साथ पूछा ।

“ ऐसे ही , आपकी जरूरत पड़ सकती है या कोई आदमी आपसे मिलना चाहे । ”

पोलोवत्सेव मिग हिलाकर उठा ।

“ नहीं , यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता । पर कोई तीन हफ्ते बाद मेरा इंतज़ार करना । अलविदा , ” और उससे अपना ठंडा हाथ मिलाया ।

घोड़े को उमने खुद बड़े करीने से कमा , ल्यत्येवस्की ने अहांत में याकोव लुकीच से विदा ली और चलते-चलते उसके हाथ में दो नोट ठूस दिये ।

“ आप पैदल जायेंगे ? ” याकोव लुकीच ने उससे पूछा ।

“ नहीं , फाटक तक जाऊंगा , सड़क पर कार मेरी इंतज़ार कर रही है , ” लेफ़्टिनेंट ने मज़ाक में कहा और जब पोलोवत्सेव घोड़े पर चढ़ गया उमने रकाब की पेंटी पकड़ी और बोला “ ले चल राजा , दुश्मन के खेमों में , न रहूंगा मैं , पैदल भी तुझसे पीछे ! ”

याकोव लुकीच ने फाटक पर मेहमानों को विदा किया और हल्के मन से फाटक की कुंडी चढ़ायी , सलीब का निशान बनाया और ल्यत्येवस्की से मिले नोटों को जेब से निकाला , बड़ी देर तक , भोर के अंधेरे में देखने की कोशिश कर रहा था कि कितने के नोट हैं , उंगलियों में मसलकर जांच करने लगा कि कहीं जाली तो नहीं हैं ।

बीस मार्च को डाकिया स्तालिन के लेखवाले बाढ़ के कारण अटके समाचारपत्र लाया। 'मोलोत' की तीन प्रतियां दिन भर में हर घर में हो आयी, शाम तक वे चिक्कट चिथड़ों की तरह हो गयीं। ग्रेम्याची के अस्तित्व में किसी समाचार-पत्र ने कभी भी इतने श्रोताओं को जमा नहीं किया जितना कि उस दिन। घरों, गलियों, खलिहानों, खेतियों में लोग झुंड बनाकर उसे पढ़ रहे थे। एक आदमी जोर-जोर से पढ़ता और बाक़ी बड़ी शांति के साथ एक-एक शब्द को सुन रहे थे। हर जगह इस लेख को लेकर बहम हो रही थी। हरेक अपने ढंग से लेख की व्याख्या कर रहा था, अधिकांश मनोवांछा के अनुसार उसका अर्थ समझ रहे थे। लगभग हर बार नागुल्नोव या दवीदोव को देखकर न जाने क्यों हड़बड़ी में एक दूसरे को अस्वभाविक थमाने लगते और वह सफेद पक्षी की तरह जन-समूह का चक्कर लगाकर किसी की चौड़ी जेब में छिप जाता।

"अब, देखना, गले कपड़े की तरह सामूहिक फार्मों की धज्जियां उड़ जायेंगी," सबसे पहले विजगोल्लाम के साथ हमामची ने अपना अनमान प्रकट किया।

'गू वह जायेगा, माना रह जायेगा' "द्योम्का उशाकोव ने उसकी बात काटी।

"देखना कहीं उल्टा न हो जाये," हमामची न कटाक्ष किया और दूसरे स्थान पर जमा विश्वमनीय लोगों के कान में यह बात डालने के लिये चल दिया कि 'छोड़ो सामूहिक फार्म, अभी मौका मिल रहा है' "

"मभौलो को तो देखो—टांग उठाये खड़े हैं। एक पैर तो सामूहिक फार्म में है और दूसरे को उठाया, वापस अपनी निजी खेती में लौटने की फिगक में है," सामूहिक फार्म में शामिल मभौले किसानों को आपस में सजीवता से बात करते देख पावेल ल्युबीशिकन अर्काशा बदलू में बोला।

लुगाइया जो आधी बात समझी, आधी नहीं, अपनी ही अटकले लगाने लगी। गांव में सुनायी पड़ने लगा

"सामूहिक फार्म बढ़ रहे हैं।"

“मास्को से हुक्म आया है गाये वापस करने का।”

“कुलको को वापस लाकर सामूहिक फार्मों में भर्ती किया जा रहा है।”

“उन सब का मताधिकार बहाल किया जा रहा है जिनमें छीना गया था।”

“तुब्यान्स्की में गिरजा खोला जा रहा है और वहां जमा बीज का अनाज किसानों को खाने के लिये बाटा जा रहा है।”

महत्वपूर्ण घटनाये घटनेवाली थी। सबको इसकी अनुभूति थी। शाम को पार्टी इकाई की निजी बैठक में दवीदोव अधीरता के साथ बोला

“कामरेड स्तालिन का लेख बहुत मौके से लिखा गया है। मकार की तो वह भौह में नहीं मीधे आख में चुभता है। सफलताओं में मकार का सिर चकरा गया, और हमारे सिर भी कुछ-कुछ चकराने लगे। साथियों, अपने मुभाव दो, कौनसी गलतिया ठीक करनी है। चलो, मुर्गे-मुर्गिया तो हमने लौटा दी, वक्त पर अकल आ गयी पर भंडो और गायों का क्या करें? मैं पूछता हूँ, क्या करें उनका? अगर यह राजनीतिक आधार पर नहीं किया गया तो न जाने क्या हो जायेगा होगा यह कि यह ‘भागो, जान बचाओ!’, ‘सामूहिक फार्म में भागो!’ का संकेत बन जायेगा। और भाग खड़े होंगे लोग, दोर-डोर ले जायेंगे वापस और हम मुंह ताकते रह जायेंगे।”

नागूलोव, जो सभा में सबसे बाद में आया था, उठा और अपनी अश्रुपूर्ण लाल आखों में दवीदोव को घूरता हुआ बोलने लगा, दवीदोव को मकार के मुंह में शराब की तीखी गंध महसूस हुई

‘तुम कहते हो कि यह लेख मेरी आख में चुभता है?’ नहीं, आख में नहीं, मीधे दिल में। आग-पार हो गया है दिल के। और सिर मेरा तब नहीं चकराया जब हम सामूहिक फार्म का गठन कर रहे थे, बल्कि अब, इस लेख के बाद ”

“वोदका की बातल में चकरा रहा है तुम्हारा सिर,” वान्या नाइद्योनोव धीरे-से बीच में बोला।

रजम्योलोव आख मारकर मुस्करा दिया दवीदोव ने मेज पर सिर झुका लिया और मकार के नथुने फूल गये, उसकी आखों में क्रोध का उन्माद चमका

“तू, कल के लौड़े, तेरे होठों पर दूध सूखा नहीं और मुझे

सिखाता है, मेरी बात काटता है। जब तेरी नाल भी नहीं गड़ी थी मैं उम वक्त सोवियत सत्ता के लिये जूझ रहा था, पार्टी में शामिल था समझा। और आज मैंने पी है यह बकौल दवीदोव के 'फैक्ट' है। मैंने एक नहीं दो बोतले पी है। "

"यह कोई बड़ाई की बात है। इसीलिये तो अट-शट बक रहे हो " मुह चढ़ाकर रजम्योल्लोव बोला।

मकार ने उसकी ओर तिरछी नजर डाली, पर धीरे-धीरे बोलने लगा, हाथ को बेकार में हिलाना छोड़ कर उसे छाती पर रख लिया और अत नक उसे चिपकाये हुए बाँधता गया।

"तुम गलत कह रहे हो अर्देई, मैं अट-शट नहीं बक रहा हूँ। शगब मैंने डसालिय पी कि स्तालिन का लेख गोली की तरह मेरी मीन के आग-पार हो गया और मेरा खून खौल गया " मकार की आवाज कापी, और भी धीमी हो गयी। 'मैं यहाँ पार्टी इकाई का सचिव हूँ, ठीक? मैंने किस तरह सामूहिक फार्म के लिये प्रचार किया? ऐसे, हमारे कुछेक बैरियो को मैंने माफ-साफ कहा, हालांकि उनकी गिनती मझौलो में होती थी 'सामूहिक फार्म में भरती नहीं हो रहे? मतलब तुम सोवियत सत्ता के खिलाफ हो? सन् उन्नीस में हमसे जुड़े थे खिलाफ थे हमारे, और अब भी विरुद्ध हो? तब मुझसे भले की आशा न करना। मैं तुम्हें बिच्छू को गंसे कुचलूंगा कि कुछ पूछो मत। " मैं ऐसे कहता था? कहता था। पिस्तौल तक तानकर धमकाता था। मैं मुकुरता नहीं। यह भी सच है कि हरेक में मैं इस तरह बात नहीं करता था, पर कुछ से करता था जो अदर ही अदर हमारे बहुत खिलाफ थे। आप कृपया बेवकूफी की बातें न करें मैं इस समय नशे में नहीं हूँ। इस लेख को मैं नहीं पचा सका, डसालिय छह महीने में पहली बार पी डाली। कैसा है यह लख हमारे कामरेड स्तालिन ने यह लेख लिखकर मुझे, यानी मकार नागूल्नोव को ठोकर मार दी और मैं कीचड़ में औंधा जा गया ऐसा क्यों? साथियो! मैं तो स्वीकार करता हूँ कि मुर्गियो और दूसरे दोरो के मामले में मैंने अतिवामपथी रुख अपनाया था पर भाइयो मेरे भाइयो, क्यों मैंने ऐसा रुख अपनाया? और क्यों आप त्रोत्स्की को मेरे सिर मढ़ रहे हो, क्यों मुझे उसके साथ एक ही जुग में जोत रहे हो? क्या मैं उसकी लाइन पर चल रहा था? तुम दवीदोव,

हमेशा मुझे लताड़ते रहे कि मैं वामपथी त्रोट्स्कीवादी हूँ। पर मैं त्रोट्स्की जिनना पढ़ा-लिखा कहा हूँ और उसकी तरह किताबों के बल पर नहीं बल्कि अपने दिल में पार्टी में जुड़ा हूँ, पार्टी के लिये बहाये गये अपने खून में।'

"तुम काम की बात करो, मकार! क्यों तुम कीमती वक्त बर्बाद कर रहे हो? वक्त की कमी है। हमारी आम गलतियों को ठीक करने के लिये कोई सुझाव दो, ऐसे तो तुम त्रोट्स्की की तरह रूटे जा रहे हो 'मैं पार्टी में, मैं और पार्टी' "

"मुझे बोलने दो," भड़ककर मकार गुर्गिया और उसने अपने दाय हाथ का और भी जाग्र में मीने में चिपका लिया। मैं त्रोट्स्की पर थका हूँ। मुझे और त्रोट्स्की को एक पलड़े पर रखने को मैं अपनी व्रज्जती मानता हूँ। मैं गद्गार नहीं हूँ और आपको पहले मैं चेतावनी देता हूँ कि अगर अब किसी ने मुझे त्रोट्स्कीवादी कहा तो थोड़ा ताड़ दूंगा। एक भी हड्डी साबुत नहीं छोड़ूंगा। और मूर्गियों के साथ वामपथ पर त्रोट्स्की की खातिर नहीं गया, मैं तो विश्व क्रांति की जल्दी में था। उर्मालिये में सर्पात्त प्रेमी टटर्प्राजिया की गर्दन मगाड़न की जल्दी में था। विश्व पूजीवाद के सफाये के दिन की ओर एक-एक कदम बढ़ाना जा रहा था। क्यों चुप हों? और अब, कामरेड स्तालिन के लेख के अनुसार मैं क्या हूँ? इस लेख में देखो क्या लिखा है," मकार न ओवरकाट की जब मैं 'प्राब्दा' निकाला और उसे फैलाकर धीरे-धीरे पढ़कर सुनाने लगा "किस को इन विवृतियों, सामूहिकीकरण के आदोलन में नौकरशाही की मनमानी, किमानो को इन अभद्र धर्मकिया की आवश्यकता है? हमारे शत्रुओं के सिवाये और किसी को नहीं। इन विवृतियों का क्या परिणाम हो सकता है? हमारे शत्रुओं का लाभ और सामूहिकीकरण के आदर्शों का बदनामी। क्या यह स्पष्ट नहीं है कि इन विवृतियों के रचयिता जो अपने को वामपथी मानते हैं वास्तव में दक्षिणपथी अवसरवाद की पनचक्की पर पानी डाल रहे हैं?" इसका मतलब यह हुआ कि सबसे पहले मैं मनमानी करनेवाला नौकरशाह और रचयिता हूँ, कि मैंने सामूहिक फार्मों को बदनाम किया और दक्षिणपथी अवसरवादियों पर पानी डेला, उनकी पनचक्की चालू की। और यह सब भेड़ों और मूर्गियों की वजह से, अरे भाड़ में जाये वे! और उर्मालिये कि मैंने कुछेक भूत-

पूर्व श्वेत गार्डों को धमकाया जो सामूहिक फर्म में भरती होने में आना-कानी कर रहे थे। यह गलत है। बड़ी मुश्किल में हमने सामूहिक फार्म बनाया और यह लेख करे-कराये पर पानी फेर रहा है। मैं पोलैंड-वालो और ब्रागेल में लडाई में दस्ते का कमांडर था और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि एक बार हल्ला बोल दिया तो आधे रास्ते से कभी मत लौटो। ”

“तुम अपने दस्ते से बहुत आगे निकल चुके हो ” रजम्योल्नोव खीजकर बोला। पिछले समय वह हर बात में दवीदोव का समर्थन कर रहा था। “मकार, अब बस भी करो कृपा करके। काम की बात करनी चाहिये। जब तुम्हें केन्द्रीय समिति का सचिव चुना जायेगा तब चाहो तो अधाधुध चढाडया करना, पर अभी तो तुम माधारण सैनिक हो और अनुशासन का पालन करो नहीं तो तुम्हारी लगाम कम दोगे। ”

“अद्रेई, तुम मुझे मत टांको। मैं पार्टी के हरेक आदेश का पालन करता हूँ और आज इसलिये नहीं बोल रहा कि मैं उसका विरोध करना चाहता हूँ बल्कि इसलिये कि मैं उसका भला चाहता हूँ। कामरेड स्तालिन ने लिखा है कि स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर काम करना चाहिये, ठीक है न? पर दवीदोव तुम क्यों कहते हो कि लेख मीधे मेरी आख में चभा? उसमें तो यह नहीं लिखा है कि मकार नागूल्नोव रचयिता और नौकरशाह है? क्या पता कि इन शब्दों का मझ में कोई वास्ता ही न ही। और अगर कामरेड स्तालिन ग्रैम्याची में आते तो मैं उनसे साफ-साफ कहता ‘हमारे प्यारे साथी स्तालिन तुम, मतलब, इसके खिलाफ हो कि हमारे मझौले किसानों को डगया-धमकाया जाये? तुम को उन पर दया आती है, तुम उन्हें प्यार में समझाना चाहते हो? अगर वह, यह मझौला किसान, पहले श्वेत कज्जाक था और अब तक मपनि से बेहद मोह है उसे, तो मुझे बताओ कि मैं उसे कहा चाटूँ कि वह सामूहिक फार्म में शामिल हो जाये और सब के साथ विश्व क्रांति की बाट जोहे? यह मझौला तो सामूहिक फार्म में भरती होकर भी अपनी मपनि का मोह नहीं छोड़ सकता, हमेशा अपने ढोरो को अच्छा चारा डालने की ताक में रहता है, ऐसा है वह।’ अगर तब भी कामरेड स्तालिन ऐसे लोगों को देखकर फिर यही कहेंगे कि मैं विकृतियों का रचयिता हूँ और सामूहिक फार्मों की बेइज्जती की, तो मैं उनसे साफ-साफ कहूँगा ‘ठीक है, कामरेड स्तालिन, शैतान को उनकी

इज्जत बढ़ाने दो, पर मुझे माफ करो, मैं मोर्चों पर खोयी अपनी सेहत की वजह से यह नहीं कर सकता। आप मुझे चीन की सीमा पर भेज दो वहाँ मैं पाटी के बहुत काम आऊँगा और ग्रेम्यार्च मे अट्रैई रजम्यो-ल्लोव को सामूहिकीकरण करने दो। उसकी रीढ़ भी लचकीली है, भूतपूर्व श्वेत गार्डों के सामने भुक भी अच्छी तरह मकता है, आसू भी बहा सकता है यह इसी के बस की बात है। ”

“तुम मुझे मत छोड़ो, नहीं तो मैं भी छोड़ सकता हूँ ”

‘अच्छा, बस! आज के लिये काफी है।’ दबीदोव उठकर मकार के बिल्कुल पाम गया और ऐसी रुखाई में पूछा जो उसके लिये लाक्षणिक नहीं थी

कामरेड नागूल्नोव, स्तालिन का पत्र यह केन्द्रीय समिति की नीति है। तुम क्या उससे महमत नहीं हो? ”

‘नहीं।’

“अपनी गलतियाँ स्वीकार करते हो? उदाहरण के लिये मैं अपनी गलतियाँ स्वीकार करता हूँ। तथ्य के सामने तुम क्या कर सकते हो। मैं न केवल स्वीकार करता हूँ कि हमने भेड-बकरियों को, बछड़ों को सामूहिकीकृत करके गलती की बल्कि अपनी गलतियों को सुधारूँगा भी। हम सामूहिकीकरण के प्रतिशत के फेर में हृद में ज्यादा पड़ गये और सामूहिक फार्म को वास्तव में मजबूत बनाने के लिये कुछ नहीं किया। तुम यह मानते हो, कामरेड नागूल्नोव? ”

मानता हूँ।

‘तब फिर समस्या क्या है?’

‘लेख गलत है।’

दबीदोव कुछ देर तक मेज पर बिछे गंदे मेजपोश को हाथ में मलता रहा फिर उसने न जाने क्यों मद्धिम जलती लालटेन की बत्ती ऊँची कर दी, शायद अपनी उत्तेजना को शांत करने का प्रयास कर रहा था पर सफल न हुआ।

“तू, उल्लू! शैतान की दुम! कहीं दूसरी जगह ऐसी बातों के लिये तुझे पार्टी से ऐसे निकाल देते जैसे दूध से मक्खी! फैक्ट! तू क्या पागल हो गया है? या तो फौरन यह अपनी यह अपना विपक्ष बदल कर या फिर हम तेरे खिलाफ फैक्ट! अब तक हम बहुत सह चुके हैं तेरी बातें और अगर तू गंभीरता से यह कह रहा है तो

हम पार्टी की नीति के खिलाफ तुम्हारी बातों की इलाकाई पार्टी समिति को औपचारिक रूप से सूचना दे देंगे।'

"दे दो। मे खूद इलाकाई समिति में घोषणा कर दूंगा। हमामची और सब बातों के लिये इकट्ठा जवाब दे दूंगा।"

मकार की व्यथित आवाज को सुनकर दबीदोव कुछ शान हुआ पर उसका गुस्सा अभी भी ठंडा नहीं हुआ था। कंधे उचकाकर वह बोला

"मुनो मकार तुम जाकर सो जाओ, जब नशा उतर जायेगा तब हम तुमसे बात करेंगे। नहीं तो वही 'सफेद बछड़े' वाली कहानी का हाल हो रहा है 'हम दोनों जा रहे थे न?' - 'हां, जा रहे थे।' - 'हमें रास्ते में भेड़ की खाल मिली?' - 'हां, मिली थी।' - 'चलो आओ खाल को आधा-आधा बांट ले।' - 'कौनसी खाल की?' - 'अरे हम दोनों जा रहे थे न?' - 'हां, जा रहे थे।' बस यही अनंत मिलसिला चलता है। कभी तुम कहते हो कि अपनी गलतिया मानते हो, इसके पौरन बाद कहते हो कि लेख गलत है। तब तुम कौनसी गलतिया मानते हो जब तुम्हारे अनुसार लेख ही गलत है? तुम्हें सिर-पैर का ही फर्क नहीं पता। और फिर यह बताओ कि हमारे यहां कब से टर्काई के सचिव मभा में शराब पीकर आने लगे? यह क्या है नागल्नोव? यह पार्टी अनुशासन का उल्लंघन है। तुम पार्टी के पुराने सदस्य हो लाल छापेमार, 'लाल पताका' पदक से विभूषित हो और अचानक ऐसे हरकत करते हो। देखो तो नाइद्योनोव कोम्सो-मोल का सदस्य, तुम्हारे बारे में क्या मोच बैठेगा? और फिर इलाकाई नियंत्रण समिति को अगर यह खबर लग गयी कि तुम शराबखोरी कर रहे हो और वह भी ऐसे उत्तरदायी समय पर, कि तुम न केवल मझौले किसानों को बढ़क से धमकाते हो बल्कि अपनी गलतियों का बोल्शेविकों की तरह मूल्यांकन भी नहीं करते यहां तक कि पार्टी की नीति का विरोध करते हो तो पता है तुम्हारा क्या होगा? तुम्हें मालूम होना चाहिये कि तब तुम पार्टी टर्काई के सचिव तो क्या उसके सदस्य तक नहीं रहोगे। मैं ठीक कहता हूँ।" दबीदोव ने अपने बाल महलाये और चुप हो गया। यह महसूस करके कि उसकी बातों से मकार को वेदना हुई वह आगे बोला "लेख पर बहस करने का कोई फायदा नहीं। पार्टी को तूम अपनी मनमानी से नहीं मोड़ सकते, उसने ऐसे-

ऐसों के सींग तोड़कर अनुशासित किया कि उनके सामने तो तुम क्या हो? क्यों तुम यह नहीं समझते?"

"अरे छोड़ो भी इसे समझाना। यह घटे भर से गाल बजा रहा है, पर काम की एक बात नहीं कही। जाकर सोने दो इसे। जाओ, मकार। गर्म आनी चाहिये तुम्हें। शीशे में अपना मुह तो देखो, देखने ही डर जाओगे थोबड़ा सूजा है, आखे पागल कुत्ते जैसी है। क्यों तुम ऐसी सूरत लेकर यहाँ आये हो? जाओ।" रजम्योन्तोव ने झटके के साथ उठकर गुस्से में मकार का कंधा झिझोड़ा पर उसने धीरे-मे उसका हाथ कंधे में हटा दिया, उसकी गर्दन और भी झुक गयी

भौन के बोझिल क्षणों में दबीदोव मेज पर उगलिया बजाने लगा। बान्या नाउद्योन्तोव ने जो पूरे समय मकार को असमजसपूर्ण मस्कराहट के साथ देख रहा था, अनुरोध किया

"कामरेड दबीदोव, आइये बात पूरी करें।"

"हा तो साथियो" दबीदोव मजीब होकर बोला, "मेरा मुभाव यह है कि फार्म के सदस्यों को भेड़-बकरी सूअर और गायें वापस कर दी जाये पर जिन लोगों ने दो गायें दी थी उनको एक गाय सामूहिक फार्म के झुंड में ही छोड़ने के लिये मनाया जाये। कल सबेरे से ही मभा बुलाकर समझाने का काम शुरू कर देना चाहिये। अब जोर समझाने पर ही होना चाहिये। मुझे डर है कि लोग सामूहिक फार्म से निकलने लगेंगे और हमें तो आज-कल में बोवाई शुरू करनी है यहाँ तुम अपनी दिलेरी दिखाओ, मकार। लोगों को मना लो कि सामूहिक फार्म से न निकले, पर पिस्तौल के बल नहीं, तब हम जाने। अच्छा तो क्या मतदान हो जाये? मेरे प्रस्ताव पर करेंगे मतदान? कौन पक्ष में? मकार तुम निष्पक्ष रहे? ठीक है, यही लिख देगे एक निष्पक्ष रहा।"

रजम्योन्तोव ने अगले ही दिन में मैदानी गिलहरियों में मघर्ष शुरू करने का प्रस्ताव रखा। इस काम के लिये उन्होंने उनमें से कुछ सामूहिक किसानों को लामबंद करने का निर्णय किया जो खेत में व्यस्त नहीं थे। उनको पानी लाने के लिये कुछ बैल देने और गाव के स्कूल मास्टर श्पीन को बच्चों के साथ खेत में मदद के लिये बुलाने का भी फैसला किया गया।

पूरे समय दवीदोव मन-ही-मन सांच रहा था कि मकार के खिलाफ कुछ कार्यवाही की जाये या नहीं? स्तालिन के लेख के विरुद्ध कही गयी उसकी बातों, सामूहिक फार्म की स्थापना के दौरान की गयी 'वामपथी' त्रुटियों को दूर करने की उसकी अनिच्छा के लिये अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाये या नहीं? पर सभा के अंत में मकार के पसीने से तर मुदों जैसे मफेद चेहरे, कनपटियों पर फूली नसों को देखा तो उसने फैसला किया "नहीं, कोई जरूरत नहीं। खुद समझ लेगा। जोर-जबरदस्ती के बिना समझने दो। पगला है, पर है तो अपना ही आदमी। और फिर उसकी बीमारी दौरे पड़त है। नहीं मामला रफा-दफा कर देगे।"

और मकार सभा के अंत तक चुप बैठा रहा। वह अपनी उत्तेजना को प्रकट नहीं कर रहा था। दवीदोव न बस एक ही बार घुटनों पर रखे मकार के निश्चित हाथों में कपकपी दौड़ती देखी।

नागल्नाव का अपन घर ल जाआ, और देखना कि वह पिय नहीं " दवीदोव ने रजम्योलोव के कान में कहा और उसने हा में सिर हिला दिया।

दवीदोव अकेला घर लौट रहा था। लूका चेबाकोव के बाड़े के पास टूटी बाड़ पर कज्जाक बैठे थे, वहां से मरगर्म बातचीत सुनायी पड़ रही थी। दवीदोव मडक के दूसरे किनारे जा रहा था पास आकर उसे अंधेरे में किसी का अपरिचित भारी स्वर सुनायी पड़ा जो व्यग्रपूर्ण स्वर में जोर-जोर से कह रहा था

जितना भी दो, जितना भी चुकाओ—इनके लिये सब कम है।' और कोई दूसरा बोला "आजकल सोवियत मत्ता के दो पक्ष निकले हैं वाम और दक्षिण मतलब बाया और दाया। कब वह पक्षी बनकर हमारे पास में उड़कर भाट में जायगी?"

कहकहे लगे पर बड़ी जल्दी रुक गये।

'श SS! दवीदोव आ रहा है।" कोई घबराकर फुमफुसाया।

वही भारी स्वर फौर्न सुनायी पड़ा पर अब उसमें व्यग्र की झलक नहीं थी कृत्रिम गभीरता में वह बोला हा अगर बारिशें नहीं हईं तो बोवाई का काम जल्दी पूरा कर सकत है। जमीन बड़ी जल्दी सूखती जा रही है। अच्छा भाइयो अब चला जाय? फिर मिलेगे।"

खामने की आवाज और कदमों की आहट सुनायी पड़ी

अगले दिन सामूहिक फार्म से निकलने के तेइस प्रार्थना-पत्र आये। मुख्य रूप से मझौले किसान निकले जो सामूहिक फार्म में सबसे बाद में शामिल होनेवालों में थे। मझाओं में प्रायः चुप रहने, फोर्मैनो में हमेशा बहस करते और अनिच्छा में काम पर जाते। उन्हीं के बारे में नागूल्लोव कहता था “भला ये सामूहिक किसान हैं? ये तो धोबी के कुत्ते की तरह हैं, न घर के, न घाट के।” वे लोग फार्म में निकले जो वास्तव में टोलियो के लिये फालतू बोझ के समान थे, जो सामूहिक फार्म में या तो शासन के प्रकोप के डर के बचने के लिये या जनवरी में शुभ्र हुए सामूहिक फार्मों के शक्तिशाली अभियान के उत्साह में आकर भरती हुए थे।

प्रार्थना-पत्र लेते समय दवीदोव ने इनको भी समझाने-बुझाने का प्रयास किया, सोच-विचार करने, निकलने में जल्दी न करने की सलाह दी, पर वे अपनी बात पर अड़े रहे और दवीदोव अंततः हार मानकर बोला

“जाओ, नागरिकों पर याद रखो, अगर दुबारा फार्म में शामिल होना चाहोगे तो पहले हम सोचेंगे कि तुम्हें ले या नहीं।”

“शायद ही हम वापस आये। फिर से सामूहिक फार्म के बिना जीने की आशा करते हैं और फिर, दवीदोव, पहले भी लोग सामूहिक फार्मों के बिना रहते ही थे, भूखों नहीं मरते थे, अपने माल के खुद मालिक थे, पराये लोग हमें यह नहीं सिखाते फिरने थे कि कैसे जोते, कैसे बाँधें, किसी की चाकरी नहीं करते थे अब भी आगम में जा लेंगे सामूहिक फार्म के बिना।” सबकी ओर से कथई मृछोवाला, कल तक का सामूहिक किसान इवान बातार्त्सकोव बाला।

‘हम भी तुम्हारे बिना बड़ आगम में जा लेंगे। मिर का बोझ हल्का हो जायेगा,’ दवीदोव ने दो टूक उत्तर दिया।

“चलो अच्छा है कि प्रेम से अलग हो रहे हैं। अलग-अलग खुश रहेंगे। टोलियो में अपने द्वार ले जायें?”

“नहीं, यह सवाल हम प्रबन्ध-मंडल में तय करेंगे। कल तक इतज़ार करो।”

“इतज़ार का वक्त नहीं है हमारे पास। तुम सामूहिक फार्मवाले

क्या पता पचाशती के बाद बोवाई शुरू करोगे पर हमें तो अभी से खेत में जाना है। कल तक इतजार कर लेगे, अगर कल भी हमारे ढोर नहीं मिले तो हम खुद ले लेगे। ”

बार्ताल्शकोव के स्वर में धमकी की स्पष्ट झलक थी। उसको उत्तर देते हुए गुस्से में दबीदोव का चेहरा हल्का-सा लाल हो गया

“ मैं देख लूंगा कि तू कैसे फार्म के अस्तबल में कुछ लेगा। अब्बल तो लेने नहीं देगे और अगर ले भी लिया तो अदालत के कटघरे में खड़ा कर देगे। ”

“ अपने ही ढोर लेने के लिए ? ”

“ अभी वे सामूहिक फार्म का है। ”

इन भूतपूर्व सदस्यों से जुदाई का दबीदोव को कोई दुख न था पर देमीद घुलने की अर्जी से उसे बड़ा अवमादपूर्ण आश्चर्य हुआ। देमीद माफ़ ढलने से कुछ पहले आया, उसने बहुत पी रखी थी। हमेशा की तरह वह चुप था। बिना दुआ-मलाम किये उसने अखबार का एक टुकड़ा बढ़ा दिया जिस पर बस यही लिखा था “ सामूहिक फार्म में छोड़ दीजिये। ”

दबीदोव ने घुलने की छोटी-सी अर्जी को उलट-पलटकर देखा और असमजस व अमतोष के साथ पूछा

“ यह तुम क्या कर रहे हो ? ”

‘ जा रहा हूँ ’ घुल्ला जोर में बोला।

‘ किधर क्यों ? ’

‘ बस सामूहिक फार्म में जा रहा हूँ। ’

“ पर निकल क्यों रहे हो ? कहा जाओगे ? ”

देमीद ने कुछ बोले बिना बाहे फौला दी।

“ जिधर मन करे ? ” रज्ज्योन्तोव ने उसके इशारे का अनुवाद किया।

“ हा-हा ! ”

“ पर फिर भी तुम फार्म में निकल क्यों रहे हो ? ” चकित दबीदोव मौन कार्यकर्ता, एक गरीब के सामूहिक फार्म से निकलने का कारण जानना चाहता था।

“ लोग निकल रहे हैं उसकी देखा-देखी मैं भी। ”

“अगर लोग कुण मे कूदेगे तो तू भी कूदेगा ?” हौले-हौले मुस्कराते हुए रजम्योल्नोव ने पूछा।

“नही यह गायद ही करू।” घुन्ना जोर-जोर मे हमने लगा। उसकी हमी हूबहू खाली पीपे की घन्न-घन्न की तरह थी।

“अच्छा ठीक है, निकल जाओ,” दबीदोव उमास छोडकर बोला, “गाय अपनी ले जा सकते हो। तुम गरीब हो डमनिये चपचाप तुम्हे दे देगे। क्यों, रजम्योल्नोव, दे दे ?”

“हा, वापस कर देनी चाहिये,” रजम्योल्नोव राजी हुआ पर देमीद फिर हो-हो करता हम पडा

“अरे मझे उम गाय की जरूरत नही” फार्म को भेट करता हू। मैं गायद घर-जवार्ट बन जाऊ। क्यों कैसी खबर ह ? टैगनी हॉनी ह आपको ? और बिना विदा लिये बाहर चला गया।

दबीदोव खिडकी से भाका घुन्ना ओसारे के पास जड खडा था। ढलता लाल मूरज उसकी भालू जैसी पीठ, मुनहरे घुघराले बालो से ढकी उसकी शक्तिशाली गर्दन को आलोकित कर रहा था। सामूहिक फार्म के अहाते मे पिघलती बर्फ का पानी भरा था। ड्योही की पैडियों से लेकर खत्ती तक विशाल जोहड-सा बन गया था। बाड के किनारे-किनारे भुरभुरी बर्फ और कीचड म पगडडी बनी थी। लोग डबरे मे बचने के लिये बाड से मटक उसके खटो को पकड-पकडकर चलते थे। देमांद किंगी भारी मोच मे डवा खडा था। फिर वह लडखडाया सीधे पानी मे उतरकर धीरे-धीरे दाये-बाये भूलता खत्ती की ओर चल पडा।

कौतूहल के साथ ताकते दबीदोव ने घुन्ने को खत्ती के दरवाजे के पास पडे सब्बल को उठाकर फाटक की ओर जाते देखा।

“कही यह भालू हमारा मफाया तो करने की नही सोच रहा ?” खिडकी के पास आया रजम्योल्नोव मुस्कराकर बोला और हम पडा। उसे घुन्ने से स्नेह था और उसकी शारीरिक शक्ति का वह कायल था।

घुन्ने ने थोड़ा-सा फाटक खोला और बर्फ के ढेर पर पूरे जोर से सब्बल चलाया कि पहली बार ही मे बर्फ का कोई मन भर का तोंदा तोड डाला। बर्फ का चूरा फाटक पर ओलो की तरह बरसा और शीघ्र ही सब्बल से खुदी नाली मे अहाते मे भरा पानी तेजी से निकलने लगा।

“अरे यह फिर से फार्म में लौट आयेगा।” घुन्ने की ओर इशारा करके रजम्योल्नोव बोला। “गडबडी देखकर उमे ठीक किया और चला गया। मतलब यह कि दिल उसका हमारे फार्म में ही रह गया। मैं ठीक कहता हूँ?”

* * *

स्तालिन के लेखवाले समाचार-पत्र मिलने के बाद इलाकाई समिति ने ग्रेम्याची की पार्टी इकाई को लम्बा-चौड़ा निर्देश भेजा जिसमें ज्यादा-तियों के परिणामों के दूर करने के विषय में अस्पष्ट और धुंधली-सी हिदायतें दी गयी थीं। हर बात में महमूस हो रहा था कि पूरा इलाकाई प्रशासन किकर्तव्यविमूढ़ था, किसी भी इलाकाई अधिकारी के सामूहिक फार्मों में दर्शन नहीं हो रहे थे। सामूहिक फार्म से निकले लोगों की संपत्ति का कैसे निपटारा किया जाये, इस प्रश्न का न तो इलाकाई पार्टी समिति और न ही इलाकाई कृषि मंच कोई उत्तर दे रहा था। ‘सामूहिक कृषि अभियान में पार्टी की नीति की तोड़-मरोड़ में संघर्ष’ के विषय में केन्द्रीय समिति के प्रस्ताव की प्राप्ति के बाद ही इलाकाई समिति ने कुछ करना शुरू किया। ग्रेम्याची में फौरन बेदखल लोगों की सूची भिजवाने, सामूहिक किसानों को भेड़-बकरियाँ, मुर्गे-मुर्गियाँ लौटाने, मताधिकार में वंचित लोगों की सूची पर पुनर्विचार करने का निर्देश आने लगे। इसके साथ ही नागूल्नोव को २८ मार्च को प्रातः दस बजे इलाकाई पार्टी समिति के ब्यूरो और इलाकाई नियंत्रण समिति की संयुक्त बैठक के समक्ष उपस्थित होने का नोटिस भी आया।

३०

एक सप्ताह में ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म में लगभग सौ किसान परिवार निकल गये। सबसे अधिक दूसरी टोली से लोग गये, उसमें केवल उनतीस परिवार बचे। और इनमें से भी बकौल टोली नायक ल्यूबीशिकन के कुछ लोग “भागने के उम्मीदवार” थे।

गाव में एक के बाद एक घटनाएँ हो रही थीं। हर नया दिन दबी-

दोव के लिये नयी-नयी मुमीबते खडा कर रहा था। दो बार पत्र द्वारा पूछने पर कि निकलनेवालो को लहू पशु और कृषि औजार अभी वापस करने है या बोवाई के बाद, इलाकाई कृषि सघ और पार्टी समिति ने उत्तर के रूप में मल्ल आदेश भेजा जिसका सार यह था कि ग्रेम्याचीवाले हर तरह से सामूहिक फार्म को टूटने में बचाये, सामूहिक किसानों को फार्म से न निकलने देने का यथासंभव प्रयास करे और निकलनेवालों से हिसाब-किताब, उनकी संपत्ति की वापसी को पतझड़ तक स्थगित कर दे।

इसके कुछ समय बाद ग्रेम्याची में इलाकाई भूमि विभाग का अध्यक्ष, इलाकाई पार्टी समिति के ब्यूरो का सदस्य बेगलीख आया। उसने हडबडी में स्थिति में परिचय प्राप्त किया (उस दिन उसे और भी कई गांवों में जाना था) और कहा

“फार्म में निकलनेवालों को ढोर और औजार अभी हरगिज मत देना। पतझड़ तक रुकना, और तब देखा जायेगा।”

“पर लोग-बाग छाती पर चढ़ रहे हैं।” दवीदोव ने आपत्ति करने का प्रयास किया।

दृढ़ और कठोर बेगलीख मुस्कराकर बोला

“और तुम भी चढ़ जाओ। वैसे तो हमें बेशक उन्हें लौटा देना चाहिये था उनका माल पर मंडल समिति का निर्देश है कि केवल अपवाद के रूप में, वर्गीय आधार पर लौटाना चाहिये।”

“यानी?”

‘यह तो तुमको ‘यानी’ के बिना भी अच्छी तरह मालूम होना चाहिये! गरीब को लौटा दो और मझौले किसान में पतझड़ का बायदा करो। समझे?’

“बेगलीख, कहीं शत-प्रतिशत सामूहिकीकरण जैसा हाल तो नहीं होगा? तब भी इलाकाई समिति को निर्देश मिला था ‘चाहे जो हो जाये पर शत-प्रतिशत तक पहुंचा दो और जल्दी से जल्दी।’ इसके परिणामस्वरूप मिर चकरा गया मझौले किसान को मवेशी न लौटाने का मतलब तो वास्तव में उस पर दबाव डालने के बराबर है, है न? वह कैसे जुताई, बोवाई कैसे करेगा?”

“इसमें तुम्हें क्या लेना-देना। तुम उनके बारे में नहीं अपने सामूहिक फार्म के बारे में सोचो। अगर मवेशी लौटा दिये तो तुम कैसे करोगे

काम ? और फिर यह हमारा निर्देश नहीं बल्कि मडल समिति का है और हम क्रांति के सैनिकों का कर्तव्य उसके हर आदेश का अक्षरशः पालन करना है। अच्छा यह बताओ कि अगर तुम्हारे आधे मवेशी निजी खेती करनेवाले किसानों के पाम चले जायेंगे तो तुम योजना कैसे पूरी करोगे ? किसी बहम-बहम की कोई जरूरत नहीं ! मवेशी को दोनों हाथों से पकड़कर रखना। अगर बोवाई की योजना पूरी नहीं की तो मिर धड़ पर टिकेगा नहीं तुम्हारा ! ”

घोड़ागाड़ी में बैठते समय बात ही बात में बोला

“ कुल मिलाकर स्थिति आसान नहीं । ज्यादातियों के लिये, भइया, कीमत चुकानी पड़ेगी, किसी को बालि का बकरा बनाना पड़ेगा यही रीत है। इलाक़ेवाले अधिकारी नागूलनोव के बड़े खिलाफ़ है। उसने क्या कर डाला ? किसी मझौले किसान को पीटा, गिरफ्तार करता था लोगों को, पिस्तौल दिखाकर धमकिया देता था। मुझे समोखिन बता रहा था। उसने पूरी फाइल बना डाली है नागूलनोव के खिलाफ़। देखो तो कितना 'वामपंथी' निकला नागूलनोव। और अब पता है कैसे आदेश है ' पार्टी तक में निकाल मकने है ' अच्छा में चलता हूँ। द्वार द्वार मत देना ! ”

बेगलीख वोयस्कोवांय चला गया। हवा अभी उसकी घोड़ागाड़ी की लीक सुखा भी न पायी थी कि तीसरी टोली का नायक आगाफोन द्रबत्सोव दौड़ा-दौड़ा आया, वह घबराया हुआ था

‘ कामरेड दवोदोव ! मुझ में बैल और घाड़े छीन ले गये वे जा फार्म में निकल गये हैं। जन्नरदस्ती ले गये ! ’

“ कैसे ले गये ? ’ लाल-पीला होकर दवोदोव चिल्लाया।

“ बम ले गये ! रखवाले का भूसे की कोठरी में बद कर दिया और बैलों को खोलकर स्टेपी में ले गये हाककर। अठारह जोड़ी बैल और सात घोड़े। अब क्या करेंगे ? ”

‘ और तुम ? और तुम क्या कर रहे थे ? ’ कहा थे तुम ? क्यों ले जाने दिया ? बोलो ? ’

आगाफोन के चेचकरू चेहरे पर मफेद चकने पड़ गये, वह भी आवाज ऊची करके बोला

“ मैंने घुड़माल या बाड़े में रात-रात भर रहने का ठेका नहीं लिया है ! मेरे ऊपर चिल्लाने की जरूरत नहीं है। और अगर आप

इतने बहादुर बनते हैं, तो जाकर लौटा लाइये बैलों को। क्या पता वे आपको लाठी का मजा चखा दें।”

साभ्र ढलने से कुछ पहले ही वे स्तेपी की चरागाह में बैलों को वापस छीन पाये जहाँ उनके मालिकों ने कड़े पहरे में उन्हें रख रखा था। ल्यूबीशकिन, आगाफोन दुबत्सोव और तीमरी टोली के छह सामूहिक किसान घोड़ों पर सवार होकर स्तेपी को छानने निकल पड़े। बीहड़ की सामनेवाली ढलान पर चरते बैलों को देखकर ल्यूबीशकिन ने अपने छांटे-में दस्ते को दो हिस्सों में बाटा

‘आगाफोन, तू तीन लोगों के साथ दायी तरफ में घोड़ों को दौड़ाते जाओ और बायी तरफ से मैं आपको दबोचूंगा।” ल्यूबीशकिन ने अपनी काली मूछों पर हाथ फेरकर आदेश दिया “तैयार हो। मेरे पीछे-पीछे मरपट दौड़ते आओ।”

हाथापाई के बिना काम नहीं चला ल्यूबीशकिन के चचेरे भाई जखार ल्यूबीशकिन ने, जो फार्म में निकले और तीन लोगों के साथ बैलों की रखवाली कर रहा था, बैलों के पास अपना घोड़ा दौड़ाते आय मिखाईल इग्नान्यानाक की टांग पकड़कर उस घाड़ में गिरा दिया और पलक झपकते जमीन पर घर्माटकर उसक बदन पर ढेर नील डाल दिये और कमीज फाड़कर तर-तार कर दी। पास जाकर पावेल ल्यूबीशकिन घोड़े पर बैठ-बैठे अपने भाई का मोटे और लम्बे चाबुक से पिटाई करने लगा, इतने में बाकी लोगों ने चरवाहों को खदड दिया और बैलों को गाव की ओर हाककर ले चले।

इबीदोव ने रात को बैलों के बाड़ों और अस्तबलों पर ताला टागने और जगह-जगह सामूहिक किसानों की टॉलियों का पहरा बिताने का आदेश दिया।

मवेशों को रखवाली के इनने उपायों के बावजूद दो दिनों के दौरान फार्म में निकल लाए गए जान जाई बैल और तीन घोड़े भगाकर ले गये। डोरों को वे स्तेपी में दूरस्थ बीहड़ों में हाककर ले गये और किशोरा को चरवाहों की जगह भेज दिया क्योंकि बड़ों की अनुपस्थिति पर लोग ध्यान दे सकते थे।

मुबह में लेकर रात तक सामूहिक फार्म के दफ्तर और ग्राम-सोवियत में भीड़ लगी रहती। अब भूतपूर्व सदस्यों द्वारा सामूहिक फार्म की जमीन पर कब्जे का खतरा वास्तविक हो गया था।

“फौरन हमे नयी जमीन दो नही तो अपनी पुगानी जमीन को जोतना शुरू कर देगे।” भूतपूर्व सदस्य दबीदोव की छाती पर चढ़ रहे थे।

“आप घबराइये नही, नागरिको, आपके हिस्से की जमीन कही नही जायेगी। कल आपके लिये जमीन काटना शुरू कर देगे। ओस्त्रोव्नोव के पाम जाइये, वही यह काम करेगा, मच कहता हूँ,” दबीदोव ने उन लोगो को शांत कराने हुए कहता।

“पर हमे कहा दोगे जमीन? और कैसीवाली?”

“जहा खाली होगी।”

“पर क्या पता गाव से बहुत दूरवाली खाली हुई, तब?”

“कामरेड दबीदोव, तुम अपनी चालाकिया छोड दो। पास की जमीन सारी सामूहिक फार्म की हो गयी है, मतलब हमे दूरवाली जमीन मिलेगी? ढोर नही दे रहे हो, हमे खुद को या गायो को जोतकर हल चलाना पडेगा और हमी को सबसे दूरवाली जमीन मिलनी चाहिये क्या? यही है तुम्हारी इमाफ-पसद सरकार?”

दबीदोव लोगो को मनाता, समझाता कि वह जहा जिसने चाही वहा जमीन नही दे सकता, वह सामूहिक फार्म की जमीन को टुकडे-टुकडे नही कर सकता, पनभड मे की गयी चकबदी को नही तोड सकता। भूतपूर्व सदस्य शोर-शराबा करके चले जाते और कुछ ही मिनट म दमरे लागो का भड आतष और कमरे मे घसन ही कहता

“जमीन दो। यह भी क्या बात है? तुम्हे हमारी जमीन हथियाने का क्या हक है? तुम तो हमे फसल नही बोने दे रहे। और कामरेड स्तार्लिन ने हमारे बारे मे क्या लिखा था? हम भी उन्हे लिख सकते है कि तुम ढोर ही नही बल्कि जमीन भी नही दे रहे, हमारी सारी संपत्ति छीन ली। वह ऐसी बातो के लिये तुम्हारी तारीफ नही करनेवाले है।”

“याकोव लुकीच, कल सवेरे इन्हे गची जोहड के पामवाली जमीन बाट दो।”

“वह अछूती जमीन?” लोग चिल्लाते।

“परती है, अछूती थोडे ही है। वह जुत चुकी है कोई पंद्रह साल पहले,” याकोव लुकीच समझाता।

और लोग चिल्ल-पो मचा देते

“नहीं चाहिये हमें कड़ी जमीन।”

“हम उसे कैसे जोतेगे?”

“मुलायम मिट्टीवाली दो।”

“ढोर दे दो, तब जोत लेगे कड़ी मिट्टी।”

“अपने प्रतिनिधियों को मास्को, मीधे स्तालिन के पास भेजेगे शिकायत करने।”

‘तुम क्यों हमारा जीना हराम कर रहे हो?’

लगाइया तो चड़ी बन जाती। मर्द खुशी-खुशी उनको और उकसाने। उन्हें शांत करने के लिए बड़ी शक्ति की जरूरत होती। प्रायः दबीदोव का धीरज टूट जाता और वह चिल्लाकर कहता

‘क्या तुम चाहते हो कि सबसे बढ़िया जमीन तुम्हें दे दें? हरगिज नहीं। सोविथत सत्ता सारी सुविधाएँ सामूहिक फार्मों को देती है न कि उनको जो सामूहिक फार्मों के खिलाफ है। जाओ भाड़ में।’

कहीं-कहीं फार्म में निकले किसान अपनी पुरानी जोतों पर जुताई-बोवाई करने लगे, जो अब सामूहिक फार्म में चली गयी थी। ल्युबीशकिन ने उनका फार्म के खेतों में खदड़ दिया और याकोव लकीच ने लकड़ी का पैमाना लिया और दो दिन में स्तेपी में तथा राची जोहड के पास निजी किसानों को जमीन बांट दी।

पच्चीस तारीख को द्योम्का उशाकोव की टोली बालुई मिट्टी को जोतने गयी। दबीदोव ने सबसे मेहनती लोगों को वहाँ भेजा। अधिकांश वृद्ध बड़ी खुशी से टोलीयों में बोवाई, पाटा आदि लगाने के लिये राजी हुए। उन्होंने बोवाई हाथ में न करने का फैसला किया। जर्जर बूढ़े, भूतपूर्व ‘सुर्गिछेड’ अकीम बेसम्लेबनोव तक ने बोवाई मशीन पर सहायक का काम करने की इच्छा व्यक्त की। श्चुवार को दबीदोव ने फार्म-कार्यालय का सार्टम नियुक्त किया। पूरी तैयारी हो गयी थी। दो दिन तक निरंतर वर्षा के कारण बोवाई रुक गयी।

सामूहिक फार्म में लोगों का निकलना बंद हो गया। अब विश्वसनीय, भरोसेमंद लोग ही उसमें बचे थे। ग्रेम्याची में फार्म में निकलनेवालों में रजम्योलोव की लाडो-मरीना पोयाकोवा सबसे आखिरी थी। न जाने क्यों उनके सहजीवन में दरार पड़ गयी। मरीना धर्म की ओर खिंचने लगी, भगवान की बड़ी भक्ति बन गयी, चालीसे का उसने व्रत रखा, तीसरे सप्ताह रोज तुब्यान्स्की के गिरजे में प्रार्थना

करने गयी, पापस्वीकार किये और धर्मसमाज की दीक्षा ले ली। अंद्रेई के तानों को वह विनम्रता के साथ चुपचाप सह लेती, उसकी डांट का कोई उत्तर नहीं देती, हमेशा चुप रहती। वह 'अपनी शपथ भ्रष्ट' नहीं करना चाहती थी। एक बार काफ़ी रात गये घर लौटने पर अंद्रेई ने देखा कि अंदर के कमरे में देव प्रतिमा के सामने दीपक जल रहा है। वह झट से अंदर गया, छीके से दीपक उतारा, उसमें भरा तेल हथेली में उलटा और उसे अपने कड़े बूटों पर मल दिया और दीपक को एड़ी से चकनाचूर कर दिया।

"कितनी बार कह चुके हैं बेवकूफो से कि यह धर्म-वरम अफ़्रीम की तरह है। पर फिर भी कान पर जूँ तक नहीं रेंगी! लकड़ी की पूजा करने है, बेकार में तेल और मोमबत्तियाँ फूकते हैं मरीना, तेरी हड्डियाँ खुजला रही हैं। कोई वजह जरूर है अकमर गिरजे में जाने की."

वास्तव में वजह थी इसकी: मरीना ने २६ तारीख को सामूहिक फ़ार्म से निकलने की अर्जी दी, इसका कारण उसने यह बताया कि सामूहिक फ़ार्म में शामिल होना 'भगवान की खिलाफ़त करना है।'

"और अंद्रेई के साथ एक पलंग पर सोना भगवान के खिलाफ़ नही है? या यह मीठा पाप है?" मुस्कराकर ल्युबीस्कन ने पूछा।

इस बार मरीना चुप रही, उसे इस बात का तनिक भी भान नहीं था कि कुछ मिनट बाद उसकी विनम्रता का नामोनिशान तक न रहेगा और अपने होंठों से वह 'पवित्र शपथ' को भ्रष्ट कर देगी।

ग्राम-सोवियत में अंद्रेई गुप्से में दौड़ा-दौड़ा आया, उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। आस्तीन से माथे का पसीना पोंछकर वह दबीदोव और याकोव लुकीच के सामने ही उसकी अनुनय-विनय करने लगा:

"मरीना! मेरी प्यारी! मुझ पर रहम करो, नाक मत कटवाओ मेरी! तुम क्यों छोड़ रही हो फ़ार्म? क्या मैंने तुम्हें अपना लाइ-प्यार नहीं दिया? गाय तुम्हारी वापस कर दी... और क्या चाहिये? अब मैं कैसे तुम्हारे साथ प्यार बांटूंगा अगर तुम अलग से खेती करना चाहती हो? तुम्हारी मुर्गियाँ तुम्हें वापस कर दी, मुर्गा भी... और तुम्हारा प्यारा हम भी, जिसके लिये तुम मोती की तरह अनमोल आँसू बहानी थी, अब तुम्हारे ही बाड़े में लौट आये हैं... तुम्हें और क्या बला चाहिये? ले लो वापस अपनी अर्जी!"

“नहीं, हरगिज नहीं।” गुस्से में अपनी तिरछी आँखों को तरेरकर मरीना चिल्लायी। “मैं नहीं चाहती, नहीं चाहती, तुम लाख मनाओ। मैं नहीं चाहती सामूहिक फार्म में रहना। मैं तुम्हारे पाप की भागीदार नहीं बनना चाहती। मेरा छकड़ा और हल लौटा दो।”

“मरीना, होश में आओ। नहीं तो मैं तुम्हें त्याग दूंगा।”

“जा-जा भाड़ में। रडे, हरामी, कुत्ते। क्यों दीदे फाड़ रहा है भूतनी के? कौन खड़ा था कल रात को गली में मलाशा इग्नान्योन्कोवा के साथ? तू नहीं तो कौन था? हरामजादे, कुतिया की औलाद। त्याग दे, मैं तेरे बिना भी आराम में जी लूँगी। मैं देख रही हूँ तू कब से इसकी ताक में है।”

मरीना, मेरी लाडो, क्यों तुम ऐसे कह रही हो? कौनसी मलाशा के साथ? मैं कभी भी उसके साथ नहीं खड़ा हुआ था। और सामूहिक फार्म में इसका क्या वास्ता? अद्वेई अपना मिर पकड़कर बैठ गया, उसके पास बोलने को शायद कुछ बचा नहीं

“तुम इस हरामजादी के सामने नाक मत रगड़ो।” ल्यूबीशकिन क्षुब्ध होकर बीच में बोल पड़ा। “तुम इसके सामने क्यों गिर्दागिड़ा रहे हो, अपनी इज्जत का खयाल करो। तुम तो लाल छापेमार हो—क्यों इसकी चापलूमी करते हो? एक भापड़ रमीद कर दो। धुनाई कर दो इसकी, फौरन ठीक हो जायेगी।”

“तू क्यों परायी बात में टांग अड़ा रहा है, मपोले कही के? तू बजारे के अधपके बीज, कलम्हे। मैं तेरा मुँह नोच लूँगी। टोली नायक हुआ तो क्या मैं तुझमें उरती हूँ? तेरे जैसे सैकड़ों को छठी का दूध याद दिला चुकी हूँ।”

“मैं तुम्हें ऐसा मजा चखाऊँगा। मैं तेरी चर्बी पिघाल दूँगा।” कोने में दुबकते हुए ल्यूबीशकिन गरजा, वह हर तरह की अप्रिय आकस्मिकता के लिये तैयार था।

उसे तुब्यान्स्की की चक्की पर घटी घटना अच्छी तरह याद थी जब मरीना ने दोन पार के एक हट्टे-कट्टे कज्जाक को चांगे खाने चित्त कर दिया और सब के सामने उसे अपनी तीखी जबान से मिट्टी में मिला दिया। “चचा, लुगाई के ऊपर तेरा कोई काम नहीं।” दम लेकर वह तब बोली, “तेरी ताकत और पकड़ तो ऐसी है कि लुगाई के नीचे चुपचाप लेटे रहने में ही तेरा भला है।” और सिर के बाल

और रूमाल ठीक करते हुए चक्की की तराजू के पास चली गयी। ल्युबीशिकन को याद था कि मरीना से पिटे कज्जाक के गाल कैसे लाल दहक रहे थे जब वह जमीन पर बिखरे आटे और गोबर में सना खड़ा हुआ, टमलिये उमने बायी कांहनी मांडकर आगे की और चेताया

“तू हट परे, नही तो भगवान की कसम, तेरा भुरता बना दूंगा। भाग यहा से।”

“तूने यह कभी सूघा है?” मरीना ने पल भर के लिये अपना लहगा उठाया और उसकी किनारी को ल्युबीशिकन की नाक के सामने घमाया, उसके गुलाबी गोल घुटने और मक्खन की डली के रंग की उसकी गदरायी देह नजर आयी।

उसका क्रोध अपनी पराकाष्ठा पर था। दुनिया देख चुका ल्युबीशिकन नक मरीना की गोंगी, बलिष्ठ दह का देखकर एक कदम पीछे हट गया, सकपकाकर वह बडबडाया

“भूत चढ गया ह। हट चडैल। लुगाई नही, पूरी घोडी है। हट, टायन। और दुबककर चीखती-चिल्लाती मरीना के पाम स निकलकर थूकता, गालिया देता कमरे के बाहर चला गया।

दवीदोव मेज पर सिर रखकर, आखे मूदे, हो-हो करके हस रहा था। रज्म्योल्लोव धडाम से दरवाजा बंद करके ल्युबीशिकन के पीछे-पीछे चला गया, बस अक्केले याकोव लुकीच ने मार्जेंट की आग-बबूला विधवा को शात कराने का प्रयास किया

“अरे, चिल्ला क्यों रही है? बेशर्म। गर्म नही आती लहगा उठाने? तू कम से कम मुझ बुड्डे का तो खयाल करती।”

‘चुप!’ दरवाजे की ओर जाती मरीना उस पर चिल्लायी। ‘अच्छी तरह जानती हू इस बुड्डे को। पिछले साल प्रभु-प्रकाश के दिन, जब घास ला रहे थे, तू नही तो कौन था, जो मुझ पर डोरे डाल रहा था? भूल गया? तुम सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो।”

अहाते से वह बबडर की तरह गुजरी। याकोव लुकीच खिडकी में उसे देख रहा था, भेपकर गला खखारता हुआ मिर हिलाकर उसे धिक्कार रहा था

और आधे घंटे बाद उसने देखा कि मरीना अपने छकडे में खुद जुती, बडी आसानी से पहली टोली के अहाते में हल और पाटा लादकर

ले जा रही थी। बारिश के कारण खेत से आया द्योम्का उशाकोव उसके साथ-साथ सुरक्षित दूरी पर चलते हुए अनुनय-विनय कर रहा था, मरीना के पास जाते हुए उसे शायद डर लग रहा था

“मरीना! ओ, नागरिक पोयाकोव! सुनती हो? मरीना! मैं तुम्हें यह सामान नहीं दे सकता क्योंकि अभी मेरे रजिस्टर में दर्ज है।”

“छोड़ो भी, दे सकते हो।”

“ममझ तो पगली, यह सामाजिक औजार है। कृपा करके वापस ले जाओ, बेवकूफी मन करो। तू इनसान है या क्या? यह इकैनी नहीं तो क्या है? इसके लिये तुम्हें अदालत में जवाब देना पड़ेगा। दवीद!व के स्क्के के बिना मैं कुछ नहीं दे सकता।”

“अरे आराम से दे सकते हों।” मरीना बस यही जवाब देती।

द्योम्का की भेगी आँखें हताशा के साथ घूम रही थी, उसके हाथ अनुनय की मुद्रा में छाती में चिपके थे और पसीने में तर मरीना चुपचाप खड़खड़ाते छकड़े को खींचे ले जा रही थी। उसके गाल लाल दहक रहे थे

“इससे छकड़ा छीन लेना चाहिये ताकि अक्ल ठिकाने लगे, बहुत जबान चलाती है। पर छीना कैसे जाये? इसको छेड़ना तो भिड़ के छेने को छेड़ने की तरह है, जीना हराम हो जायेगा।” याकोव लुकीच ने मोचा और एहतियात के तौर पर बगल की गली में मड़ गया।

* * *

अगले दिन रज्म्योल्लोव मरीना के यहाँ से अपनी चीजे, बटूक, गोलियों की पेट्टी, कागजात अपने घर ले गया। मरीना से वियोग के कारण उसे बड़ा दुःख हुआ, वह तड़प रहा था और एकान्त में बचने लगा। इसीलिये वह नागूल्लोव से गपशप करने, उदामी भगाने के लिये चल पड़ा।

ग्रेम्याची पर रात गहराती जा रही थी। बारिशों से धुला अर्द्धचंद्र आकाश के पश्चिमी आंचल में चमकीली दराती की तरह लटका था। भरनो की मद कलकल ही गाव में भरती मार्च की रात की नीरवता को तोड़ रही थी। अपने विचारों में मग्न अर्द्ध रात को कड़े होते

कीचड़ में किच-किच करता धीरे-धीरे जा रहा था। नम हवा में वसंत की मादक गंधें बसी थीं। धरती की कसैली गंध, खनिहानों में गलती घाम की बूँदें, बागों में भरी नशीली सुगंध और बाड़ों के पास उगी हरी दूब की तीखी मोहक सुगंध।

अद्रेई रात की विविध गंधों को अपने फेफड़ों में खींच-खींचकर भर रहा था, पैरों तले डबड़ों में टिमटिमाने तारों की परछाइयों को देखता हुआ वह मरीना के बारे में सोच रहा था, उसे अपनी आँखों में विरह के दुःख के आँसू उमड़ते महमूम हाँ रहे थे।

३१

बूढ़े श्चुकार को फार्म-कार्यालय के माईम के पद पर अपनी स्थायी नियुक्ति पर अपार हर्ष हुआ। उसे कामकाजी यात्राओं के प्रयोजन से प्रबन्ध-मंडलवालों के लिये रखे गये भूतपूर्व कुलकों के दो घोड़े सौंपते हुए याकोव लुकीच ने कहा था

“इन्हें आँख की पुतली की तरह सभालकर रखना! वे हमेशा तद्रुस्त रहने चाहिये। सभालकर चलाना, ज्यादा दौड़ाना नहीं। यह मलेटी तीनवाला घोंडा खालिम नस्ल का है और कन्थई भी दोन की अच्छी नस्ल का है। जाना-जाना दूर का नहीं है, जल्दी ही इन्हें घोंडियों के बाड़े में छोड़ देंगे। तुम इनके लिए पूरी तरह जिम्मेदार हो।”

‘तुम भी कैसी बातें करते हो!’ बुढ़ा श्चुकार बोला। “भला मुझे क्या मालूम नहीं कि घोड़ों की कैसे देख-रेख करते हैं? अपनी जिदगी में मैं ढेरों पाल चुका हूँ। किसी के सिर पर भी उतने बाल न होंगे जितने घोड़ों से मेरा वास्ता पड़ चुका है।”

पर वास्तव में बूढ़े श्चुकार का पूरे जीवन में केवल दो मरियल घोड़ियों में ‘वास्ता पड़ा’। और उनमें से भी एक को वह गाय के बदले दे आया था। और दूसरी के साथ यह किस्सा हुआ। कोई बीस साल पहले उसने वोयस्कोवोय गाँव से नशे में धुत्त घर लौटते समय रास्ते में बजारों में उमड़े तीस रूबल में खरीदा। जब खरीदते समय उसने घोड़ी की जाँच की तो देखने में वह गोल-मटोल थी, रंग चूहे

जैसा और कान लटके हुए, एक आख कजी थी पर थी बड़ी चंचल। बुड्ढा श्चुकार दोपहर तक बजारे मे मोल-भाव करता रहा। कोई चालीस बार सौदा पक्का करने के लिये उन्होने हाथ मिलाये, पर हर बार फिर मे मोल-भाव करने लगते।

“घोड़ी नही, मोना है, मोना। ऐसी दौडती है कि तुम आखे बद करो तो जमीन न दिखायी दे। बिजली की तरह दौडती है। चिडिया की तरह उडती है।” थके-मादे श्चुकार का कोट खीच-खीचकर बजारा भगवान की कसम ले-लेकर तारीफो के पुल बाध रहा था।

“दाढे पूरी घिस चुकी है, आख कानी है, मुम घिसे, पेट लटका है मोना कहा, मुसीबतो का पिटारा है।” बुड्ढा श्चुकार घोड़ी के नुकम निकाल रहा था, वह चाहता था कि बजारा एक रूबल घटा दे, जिनकी वजह मे वे सौदा नही कर पा रहे थे।

“अरे, टमके दातो से तुम्हे क्या लेना? कम चारा खायेगी। पर घोड़ी जवान ह, भगवान की कसम। घोड़ी नही, बच्ची है, बच्ची, दात तो एक बार बीमारी की वजह से गिर गये। कानी है तो क्या हुआ? वैसे भी यह कानी नही, कजी है। और मुम भी नये आ जायेगे हा, घोड़ी मुदर नही, पर तुम इसके साथ बिस्तर मे तो सोओगे नही, तुम्हे तो हल मे जोतने के लिये चाहिये न, ठीक कहा न मैने? तुम ध्यान से देखो, इसका पेट क्यो मोटा है, ताकत की वजह मे। दौडती है तो जमीन कापती है, गिरती है तो तीन दिन नही उठती भले आदमी। तुम क्या तीस रूबल मे घुडदौड के लिये घोडा खरीदना चाहते हो? इतने पैसो मे तो जिन नही खरीद सकोगे, मरे का मास तो तुम्हे मुफ्त मे मिल जायेगा

भगवान की दया मे बजारा बडा भला आदमी निकला कुछ मोल-भाव करके उसने आखिरी रूबल भी घटा दिया और श्चुकार को घोड़ी की लगाम थमा दी, गहरे नीले कोट की आम्तीन से कत्यई माथा पोछते हुए उसने बनावटी सिसकी तक ले डाली।

श्चुकार के हाथ मे लगाम आते ही घोड़ी की चंचलता कही गायब हो गयी। वह बहुत खीचने पर मुश्किल से अपनी तिनके जैसी टांगो को उठाकर अनिच्छा के साथ उसके पीछे चल पडी। बस तभी बजारा हस पडा, अपने खडिया जैमी शुभ्र दतावली को उघाडकर वह पीछे से चिल्लाया

“अरे, भले आदमी ! दोन कज्जाक ! मेरी नेकी को मत भुलाना ! इस घोड़ी ने चालीस माल मेरी मेवा की, तुम्हारी भी इतनी ही करेगी, बस खिलाना उसे हफ्ते में सिर्फ एक ही बार, नहीं तो पागल हो जायेगी। मेरा बाप इस पर सवार होकर रोमानिया से आया था और उसे मास्को से भागते फ्रांसीसियों में यह मिली थी। बहुत कीमती है यह घोड़ी।”

वह बड़ी देर तक चिल्लाता हुआ और भी कुछ श्चुकार को कहता रहा, जो अपनी खरीद को खींचकर ले जा रहा था। तबू के पास और बजारे की टागो के बीच उछलते-फुदकने कौए की तरह काले बजारे बच्चे चिल्ल-पो कर रहे थे, बजारिने खिलखिलाकर हस रही थी। पर बुड्ढा श्चुकार उनकी ओर कोई ध्यान दिये बिना चलता जा रहा था, वह सोच रहा था “खुद मालूम है कैसा ढोर खरीदा है। अगर पैसे होते तो मैं भला ऐसी घोड़ी खरीदता। और यह बजारा भी बड़ा मजाकिया आदमी है, बड़ा हमसख मरी तरह ही चलो अब घोड़ी हो गयी अपनी। उतवार को वीवी के साथ कम्ब की हाट में जायंगे।

पर वह तुब्यान्स्की तक भी न पहुँचा पाया कि घोड़ी के साथ बड़ी अजीब बातें होने लगी जब मयोग में मुड़कर उमने पीछे देखा तो श्चुकार अवाक् रह गया उसके पीछे वह हट्टी-कट्टी घोड़ी नहीं, जो उमने खरीदी थी बल्कि पिचके पेट और बगलो में गहरे गड्ढोवाली मरियल घोड़ी आ रही थी। कोई आधे घंटे में ही वह पहले से आधी रह गयी थी। मलीब का निशान बनाकर वह पिशाच-मोचन मात्र बुद-बुदाने लगा, उसके हाथ से लगाम छूट गयी, उसका मारा नशा काफ़ूर हो गया। घोड़ी का फेग लगाकर ही उसे इतनी तेजी में उसके पतले होने का कारण पता चला। घोड़ी की सुतली के गुच्छे जैसी पूछ बड़े बेहूदा ढग से एक ओर ऊपर की तरफ उठी हुई थी और उसकी जड़ के पास में सू-सू करती, फुफकारती बदबूदार हवा और पतली लीद के छोट निकल रहे थे। “अर, यह देखो तो !” श्चुकार ने अपना सिर धुन लिया। और फिर घोड़ी की लगाम को पकड़कर दम गुनी शक्ति से उसे खींचता हुआ चल पड़ा। तुब्यान्स्की तक उसके पेट का ज्वालामुखी शान नहीं हुआ, सड़क पर गर्मनाक निशान छूटने जा रहे थे। शायद श्चुकार ग्रॅम्याची तक मही-मलामत पहुँच भी जाता अगर

वह घोड़ी की लगाम पकड़े पैदल ही चलता रहता। पर जैसे ही वह तुब्यान्स्की गाव के पहले घर के पास पहुँचा जहाँ उसका रिश्तेदार और बहुत-से परिचित रहते थे उसने घोड़ी पर सवार होने का, और चाहे दुलकी चान ही मंत्री, पर उस पर बैठकर जानें का फैसला किया। अचानक उसमें अपूर्व गर्व की भावना और मदद की तरह शेखी बघारने की उसकी इच्छा जाग उठी। वह दिखाना चाहता था कि देखो अब इचुकार अपनी गरीबी से छुटकारा पा गया और चाहे खराब ही सही पर अपने निजी घोड़े पर सवार होकर जा रहा है। सामनेवाले घर में परिचित कज्जाक को निकलते देख इचुकार बड़ी ज़ोर से घोड़ी पर चिल्लाया “रुक मरदुई! तुम्हें बस नाचने की लगी रहती है।” इन शब्दों के साथ उसने लगाम को भटका दिया और शान से खड़ा हो गया। उसकी घोड़ी जो शायद कभी अपने बचपन में नाचती-कूदती होगी, अब वास्तव में नाचने की मोच भी नहीं रही थी। वह मिर लटकाकर, पिछली टांगे जोड़कर खड़ी हो गयी। “इस कज्जाक के मामन में तो सवार होकर जाना चाहिये। देखने दो इसे।” इचुकार ने सोचा और उछलकर घोड़ी की कटीली गीढ़ पर पेट के बल चढ़ गया। बस अभी वह घटना हुई जिसकी बहुत दिनों तक तुब्यान्स्की के कज्जाक बाने करते रहे उसी स्थान पर इचुकार की इज्जत मिट्टी में मिल गयी जिसके चर्चे आज तक लोगों की जबानों पर है और शायद अगली पीढ़ी में भी नहीं भूलाये जायेंगे जैसे ही इचुकार की टांगे धरती में उठी और उसने घोड़ी की पीठ पर पेट के बल आड़े लेटे ठोक में सवार होने की कोशिश की कि घोड़ी लटखड़ायी, उसके पेट में गुड़-गुड़ हुई और वह पृष्ठ उठाकर उसी स्थान पर ढह गयी। हाथ फैलाये इचुकार मडक के किनारे धूल भरी भार्डीयो में जा गिरा। वह भट से उठ खड़ा हुआ और यह समझकर कि परिचित कज्जाक ने उसकी नाक कटती देख ली उसने स्थिति को सभालने की कोशिश की। वह चिल्लाकर घोड़ी को ठोकर मार-मारकर गालिया देने लगा। वह उठी और जैसे मानो कुछ हुआ ही न हो, मुग्गाइ घाम खाने लगी।

इचुकार को देखता कज्जाक बड़ा मज़ाकिया और हममुख था। वह बाड़ फादकर इचुकार के पास आकर बोला “नमस्ते, इचुकार! अरे, तुमने घोड़ी खरीदी है?” — “हाँ, खरीदी तो है पर चूक गया, बड़ी तेज-तर्रार है, जैसे ही इस पर बैठने लगे, जमीन पर लोट जाती

है। शायद अभी किमी ने इस पर सवारी नहीं की, सधी नहीं है।” कज्जाक ने दो बार चक्कर लगाकर घोड़ी की गौर से जाच की, मुह खोलकर उसके दातो को देखा और बड़े गभीर लहजे में बोला “हा, सचमुच अभी माधा नहीं गया इसे। पर घोड़ी है अच्छी नस्ल की। दातो को देखकर तो यही लगता है कि इसकी उम्र पचाम से कम नहीं, चूँकि यह खालिस नस्ल की है इर्मलिये जिदगी भर कोई इसे माध नहीं सका।” श्चुकार ने उसके ऐसे महानुभूतिपूर्ण व्यवहार को देखकर, माहस बटोरकर पूछा “अच्छा यह तो बताओ, इग्नात पोफीरिच कि यह इतनी जल्दी दुबली कैसे हो गयी? देखते-देखते पतली हो गयी, उससे बदबूदार हवा और लीद ऐसे निकल रही थी जैसे ज्वालामुखी फूटता है। सारे रास्ते छोटे छोड़ती आयी।” — “तुमने कहा खरीदी? बजारो में तो नहीं?” — “उन्ही से, तुम्हारे गाव के बाहर पडाव था उनका।” कज्जाक, जो घोड़ो और बजारो के बारे में बहुत कुछ जानता था बोला “इसीलिये तो पतली हो गयी कि तुम्हें बेचने से पहले उन्होंने उसमें हवा भर दी। जब कोई घोड़ा बुढ़ापे में दुबला हो जाता है वे उसे बेचने से पहले उसके चून्ड में छेदवाला सरकडा घुसेड देते हैं और बारी-बारी में फूक मारकर हवा भरते हैं जब तक कि वह फूलकर गोल-मटोल न हो जाये। और फिर जब उसे गुब्बारे की तरह फुला लेते हैं तो भट से सरकडा निकालकर राल में सना कपडा या भुट्टा ठूस देते हैं ताकि हवा न निकले। तुमने भी ऐसा ही फुलाया हुआ घोड़ा खरीदा है। रास्ते में शायद डाट कही गिर गयी और तुम्हारी घोड़ी पतली होन लगी तुम जाकर अपनी डाट ढूँढ लाओ हम भट से फिर फुला देंगे ” — “शैतान उन्हें फुलाये।” श्चुकार चिल्लाया और बजारो के पडाव की ओर दौड़ पडा पर टीले पर पहुँचकर उसने देखा कि नदी के किनारे न उनके तबू हैं न छकडे। जहाँ उनका पडाव था वहाँ से अभी तक जलते अलाव का नीला धुआ उठ रहा था और दूरी पर स्तेपी की सडक पर सफेद धूल उड़ रही थी। जैसे किसी परीकथा में होता है बजारे गायब हो गये। श्चुकार रो पडा। जब वह लौटकर आया तो इग्नात पोफीरिच फिर घर से बाहर आया और बोला “मैं इसके नीचे झुककर खडा हो जाता हूँ ताकि वह फिर से न गिर पडे अपनी शोखी की वजह से, और तुम सवार हो जाओ।” गर्म, दुख और पसीने में तर श्चुकार ने उसकी सेवा स्वीकार कर

ली और ले-देकर घोड़ी पर चढ़ गया। पर उसकी मुसीबतों का अंत यही नहीं होनेवाला था। घोड़ी इस बार नहीं गिरी पर उसकी चाल बिल्कुल असाधारण थी। वह पहले अपनी टांगें आगे फेंकती और फिर पिछली टांगों को हवा में ऊंचा उछालती। इस प्रकार वह श्चुकार को अगली गली तक ले गयी। इस खौफनाक दौड़ से उसके सिर से टोपी गिर गयी और कोई तीन-चार बार भयंकर झटकों से पेट में हिल उठी। 'हे भगवान ! इस तरह नहीं जा सकता !' श्चुकार ने मोचा और चलती घोड़ी में कूद गया। वह टोपी उठाने के लिये वापस मुड़ा पर गली में अपनी ओर लोगों को दौड़ते देखकर उल्टे पांव लौट पड़ा। अचानक इतनी चंचलता दिखानेवाली घोड़ी को गांव के बाहर ले गया। पवनचक्की तक बच्चे उसे घेरे चल रहे थे पर बाद में चले गये। पर श्चुकार में अब फिर से बजारे के 'सोने' पर बैठने का साहस नहीं था, वह टीलेवाले लम्बे रास्ते को लेकर गांव के पास से गुजरा, पर टीले पर घोड़ी खींच-खींचकर थक गया। उसने घोड़ी को अपने आगे-आगे हाकने का फैसला किया। तभी उसे पता चला कि इतनी मुश्किल में खरीदी घोड़ी की दोनों आंखें अंधी हैं। वह सीधी गड्ढों और नालियों की ओर जाती और लाघने के बजाये उनमें गिर पड़ती, हाफती हुई उठती और फिर से चल पड़ती। चलती भी थी वह बड़े अजीब ढंग में घेरे बनाती चल रही थी। नयी खोज से स्तब्ध श्चुकार ने घोड़ी को पूरी छूट दे दी, उसने देखा कि घोड़ी एक चक्कर पूरा करके दूसरा शुरू कर देती और उमी तरह बिना रुक अदृश्य मार्ग पर चला पड़ती थी। तब श्चुकार बिना किसी की सहायता के खुद समझ गया कि उसमें जो घोड़ी खरीदी है उसका मारा लम्बा और कठिन जीवन गंठ चलाने बीता। उमी में जुती-जुती वह अंधी और बूढ़ी हो गयी।

साभर ढलने तक वह घोड़ी को टीले पर चराता रहा, दिन में उसे गांव में जाते हुए शर्म आ रही थी, रात को वह उसे हाककर घर ले गया। मोटी और गुम्मील बीबी ने कैसे उसकी खबर ली, अपने बुरे मौदे के लिये दुबले-पतले श्चुकार पर क्या गुजरी, यह सब बकौल श्चुकार के तब के दोस्त लोकातेयेव मोची के अज्ञात अंधेरे के गिलाफ से ढका है। बस इतना ही पता है कि शीघ्र ही घोड़ी को खाज की बीमारी लग गयी, उसके सारे बाल झड़ गये और इसी भौंड़े रूप में वह परलोक सिंघार गयी। और उसकी खाल को बेचकर मिले सारे

पैसे श्चुकार ने अपने मित्र लोकातेयेव के साथ शराब पर उडा दिये।

याकोव लुकीच को यह आश्वासन देते हुए कि वह, यानी श्चुकार बुद्धा अपने जीवन मे ढेरो घोडे पाल चुका है, बुद्धे श्चुकार को भली-भाति मालूम था कि याकोव लुकीच उस पर विश्वास नही कर सकता क्योकि याकोव लुकीच को उसके जीवन की एक-एक बात मालूम थी। पर बुद्धे श्चुकार का स्वभाव ही ऐसा था शेखी बघारे बिना, भूठ बोले बिना उसका खाना नही हजम होता था। कोई अदृश्य निरकुश शक्ति उससे ऐसी-ऐसी बाते कहलवा देनी कि कुछ ही मिनट बाद वह उनमे सहर्ष मुकर जाता

हा, तो बुद्धा श्चुकार एकमाथ साईस और गाडीवान दोनो हो गया। यह मानना पडेगा कि वह अपने सीधे-माधे कर्तव्यो का पालन ठीक मे करता था। बस नागूल्लोव को, जो तेज मफर का शौकीन था एक बात उसकी अच्छी नही लगती थी, वह यह कि रास्ते मे रुकना बहुत पडता था। अहाते से निकले नही कि श्चुकार लगाम खीचता और पुचकारकर घोडो को रोक देता। नागूल्लोव पूछता "क्यो रुक गये?" बुद्धा श्चुकार उत्तर देता "घोडो की जरूरत के लिये" और तब तक सीटी बजाता रहता जब तक नागूल्लोव उसकी सीट के नीचे मे चाबुक निकालकर घोडे की पीठ पर न बजा देता।

"अब जार का जमाना नही हे कि गाडीवान पटरे पर बैठे और सवारी पीछे मुलायम गद्दी पर हिचकोले खाये। अब मै गाडीवान हू पर कामरेड दवीदोव के माथ-माथ गाडी मे बैठता हू। जब कभी मिगरेट पीने की इच्छा होती है तो उससे कहता हू 'जरा पकडना लगाम, मै मिगरेट मलगा लू', वह कहता हे, 'बडी खुशी मे'। लगाम सभालकर वह कई बार तो घटा-घटा भर चलाता रहता है और मै नवाब की तरह बैठा चारो तरफ का नजारा देखता रहता हू," बुद्धा श्चुकार कज्जाको के सामने शेखी बघारता। वह बडा अकडकर चलता और बातूनी भी कम हो गया था। बसत के पाले के बावजूद उसने घोडो के साथ अस्तबल मे सोना शुरू कर दिया था पर बुढिया एक सप्ताह बाद सब के सामने उसे इसलिये खूब पीटकर और कडी डाट पिनाकर घर ले गयी कि मानो रात को बुद्धे श्चुकार के पास जवान लुगाइया आती हो। लडको ने बुद्धे पर यह भूठा आरोप बुढिया की टांग खीचने के लिये लगाया था, पर श्चुकार कुछ नही बोला और चुपचाप घर

में सोने चला गया पर हर रात दो बार अपनी ईर्ष्यालु अर्द्धांगिनी के पहरे में घोड़ों को देखने जाता।

वह इतनी फुर्ती में घोड़ों को जोतता कि ग्रेम्याची की फायर-ब्रिगेड से मुकाबला कर सकता था। जब वह अस्तबल से निकले अशांत घोड़ों को सभालता हमेशा जोर में चिल्लाता “बद करो हिनहिनाना ! शैतानों की दुम ! यह भी घोड़ा है तुम्हारे बराबर में, घोड़ी नहीं !” उन्हें जोतकर गाड़ी में बैठकर आत्मतुष्टि के साथ बोलता “चलो, आज का फेरा लगाकर गैटी कमा ले। मुझे तो यारों, ऐसी जिदगी में मजा आने लगा है।”

* * *

मस्ताइम तारीख को दबीदोव ने यह जांच करने के लिये कि क्या मचमुच ही उसके आदेश के बावजूद पहली टोली के लोग सीतो के समानांतर पाटा चला रहे हैं, खेत में जाने का फैसला किया। लोहार इम्प्लीमेंट शाली ने उसे इसकी सूचना दी थी जो खेत में बोवाई मशीन ठीक करने गया था। उसने देखा था कि पाटे सीतो पर आड़े नहीं मीधे चल रहे थे। गांव लौटकर वह सीधा फार्म के कार्यालय में आया और दबीदोव से हाथ मिलाकर कड़ स्वर में बोला

‘पहली टोली सीतो की मीध में पाटा चला रही है। यह बिल्कुल गलत है। तुम जाकर ठीक से करने का हुक्म दो। मैंने उन्हें कहा था पर भेगा शैतान उशाकाव बोला तुम्हारा काम निहाई पर हथौड़ा चलाना और धौकनी फूकना है, इस काम में अपनी सूड़ मत घुमेडो, नहीं तो अभी उस पर हल चला देगे।’ मैंने जवाब दिया ‘धौकनी फूकने में पहले मैं तुम्हें भेगे को फूला दूंगा’ लडाईं होंते-होंते बची।”

बुड्डे श्चुकार को बुलाकर दबीदोव ने कहा

“जोतो घोड़े।”

बेसब्री के कारण वह खुद जोतने में उसकी मदद करने लगा। वे रवाना हो गये। आकाश धुंध से ढका था और दक्षिण-पश्चिम से बहती नम हवा बारिश की भविष्यवाणी कर रही थी। पहली टोली बालुई मिट्टी के सबसे दूरवाले खेत में काम कर रही थी। वह गांव में कोई दस किलोमीटर दूर पहाड़ी के पार ल्यूनी जोहड के पास था। टोली अनाज बोने के लिये खेत को जोत रही थी और उस पर अच्छी

तरह पाटा चलाने की जरूरत भी ताकि वर्षा का पानी समतल जमीन पर रुका रहे न कि सीतो से नीचे की ओर घाटी में बह जाये।

“जरा तेज चलाओ, बाबा।” घनघोर घटाओ को देखकर दवीदोव अनुरोध कर रहा था।

“मैं तो वैसे भी तेज चला रहा हूँ। देखते नहीं सलेटीवाला भाग से ढकने लगा है।”

टीले पर की कच्ची सड़क पर स्कूली बच्चे अपने वृद्ध शिक्षक श्पीन की अगुआई में पक्ति बनाकर चल रहे थे। उनके पीछे-पीछे चार बैलगा-डिया पानी के पीपे लेकर चल रही थी।

“बच्चे-कच्चे मार्मटो के शिकार पर निकल पड़े,” श्चुकार ने चाबुक से इशारा किया।

दवीदोव समयित मुस्कान के साथ बच्चों को देख रहा था। जब उसकी घोंडागाड़ी बच्चों के पास पहुँची तो उसने श्चुकार से अनुरोध किया “जरा रोकना,” और नजर दौड़ाकर कोई सात साल के नगे पाव और सुनहले बालोवाले बालक को चुना

“इधर आना जरा।”

“आने की क्या जरूरत है?” उसने बाप की साल पट्टीवाली टोपी को गुद्दी पर झुकाकर तडी में पूछा।

“कितने मार्मटो का सफाया किया?”

“चौदह का।”

“किसके बेटे हो?”

“देमीद उशाकोव का।”

“चलो बैठो मेरे साथ फेदोत मर करा दूँ। और तुम भी बैठो” दवीदोव ने सिर पर रुमाल बांधी लडकी की ओर उगली से इशारा किया। बच्चों को बिठाकर उसने चलने का आदेश दिया और लडके की ओर मुड़कर पूछा “तुम कौनसी कक्षा में हो?”

“पहली में।”

“पहली में? तब तो तुम्हें अपनी नाक साफ रखनी चाहिये।”

“नहीं होती साफ। मुझे जुकाम है।”

“अरे, कैसे नहीं होगी साफ? लाओ इधर नाक।” दवीदोव ने पतलून से अपनी उगलिया अच्छी तरह पोछी और उमास लेकर बोला

“किसी दिन फार्म के दफ्तर में आओ, मैं तुम्हें टाफी दूँगा,

चाकलेटवाली। कभी खायी है चाकलेट?"

"न-नहीं..."

"तब आना मेरे पास दफ़्तर में, मैं तुम्हें खिलाऊंगा।"

"मुझे टाफ़ी की ज़रूरत ही नहीं!"

"अच्छा! ऐसा भी क्यों फ़ेदोत?"

"मेरे दांत गिर रहे हैं, नीचेवाले तो गिर भी गये, देखो!" बालक ने अपना गुलाबी मुंह खोला, नीचे के दो दांत वास्तव में गायब थे।

"मतलब, फ़ेदोत, तुम्हारे मुंह में खुड़ी है?"

"खुद तुम्हारे मुंह में खुड़ी है!"

"हू... अरे, तुम्हारी नज़र तो बड़ी तेज़ है!"

"मेरे तो दांत निकल आयेंगे पर तुम्हारे नहीं निकलेंगे? आहा!..."

"यह तो ग़लत कह रहे हो, भैया! मेरे भी निकल आयेंगे, मच कहता हूं।"

"बड़ा भूठ बोलते हो! बड़ों के नहीं निकलते। और मैं तो ऊपर-वाले दांतों से काट सकता हूं, क़सम से!"

"अरे, तुम्हारे बस की बात कहाँ है!"

"लाओ उंगली! नहीं यक़ीन?"

दबीदोव ने मुस्कराते हुए अपनी तर्जनी बढ़ायी और आह करके भट से खींच ली: ऊपर के पोग पर दांतों के नीले निशान पड़ गये।

"अच्छा फ़ेदोत, अब लाओ, मैं तुम्हारी उंगली काटता हूँ," उसने प्रस्ताव किया, पर फ़ेदोत कुछ फ़िझका और अचानक चलती गाड़ी से कूद पड़ा। टिड्डे की तरह एक टांग पर फुदकते हुए वह चिल्लाया:

"तुम मुझे काटना चाहते हो! पर अब नहीं काट सकते!..."

दबीदोव जोर से हंस पड़ा। उसने लड़की को उताग और बड़ी देर तक फ़ेदोत की टोपी की सड़क पर चमकती लाल पट्टी को मुड़-मुड़कर देखता रहा। वह मुस्करा रहा था, दिल में उसे अजीब-सी गर्मी और आंखों में नमी महसूस हो रही थी। "इनके लिये हम अच्छे जीवन का निर्माण करेंगे, फ़्रैक्ट! आज यह नन्हा फ़ेदोत बाप की कज़्ज़ाक टोपी पहनकर घूमता है और कोई बीस साल बाद इसी धरती पर बिजली का हल चलायेगा... यह तो पक्का है कि इसे मेरी तरह मुसीबतें नहीं उठानी पड़ेंगी, जब मां की मृत्यु के बाद मुझे बहनों के कपडे धोने पड़ते, खाना बनाना पड़ता और भागकर कारख़ाने में

काम करने जाना पड़ता ... फ़ेदोत की पीढ़ी सुखी होगी, फ़ैक्ट !”
 असीम कोमल हरियाली से ढकती स्टेपी में नज़रें दौड़ाता हुआ दवी-
 दोव मोच रहा था। पल भर के लिये उसने कान लगाकर भरत पक्षियों
 की सुरीली सीटियां सुनी, दूरी पर उसे खेत में हल पर भुका हलधर
 और बैलों के पास सीता में ठोकरें खाता हंकवैया चलता दिखायी पड़ा।
 गहरी निःश्वास छोड़कर उसने सोचा : “मशीनें आदमी के लिये सारा
 भारी काम करेंगी ... तब के लोग शायद पसीने की बू से अपरिचित
 हो जायेंगे .. काश मैं देख सकता वह ज़माना ! नहीं तो ऐसे ही मर
 जाऊंगा, कोई फ़ेदोत मुझे याद तक नहीं करेगा। दवीदोव भड्या,
 इसमें कोई शक नहीं कि तू तब तक मर जायेगा ! संतान की जगह
 तू ग्रेम्याची का सामूहिक फ़ार्म छोड़ जायेगा। सामूहिक फ़ार्म कम्यून
 में बदल जायेगा और उसे पुतीलोव कारख़ाने के फ़िटर सेम्योन दवीदोव
 का नाम दे देगे . ” दवीदोव अपने विचारों के इस हास्यजनक मोड़
 पर मुस्करा दिया। उसने श्चुकार से पूछा :

“कितनी देर में पढ़चेंगे ?”

“बस दो बार पलक झपकते ही।”

“बाबा, तुम्हारे यहा कितनी ज़मीन बेकार पड़ी है, देखकर रंगटे
 खड़े हो जाते हैं ! दो पचसालों के बाद हम यहा ढेरो कारख़ाने बना
 डालेंगे। सब हमारे होंगे, सब हमारे हाथों में होंगे। बस थोड़ा जोर
 लगाकर और दस साल जी, लो और तुम्हारे हाथ में लगाम की जगह
 मोटर का चक्का होगा। बस एक्सीलेरेटर दबाने रहेंगे !”

बुढ़ा श्चुकार उसाम छोड़कर बोला :

“थोड़ी देर हो गयी ! अगर चालीस साल पहले मुझे मज़दूर
 बना दिया गया होता तो क्या पता मैं बिल्कुल हमरा ही आदमी होता ...
 किसानों ने भाग्य ने मेरा साथ नहीं दिया। बचपन से ही मेरी ज़िंदगी
 पटरी से उतर गयी, अभी हाल ही तक यही हाल था। मुझे मानो
 जीवन भर आधी उड़ाये ले जा रही थी, कभी दायी तरफ़ किसी चीज़
 से टकरा देती, कभी बायी, कभी ऊपर उठाकर ज़मीन पर पटक देती...”

“ऐसी भी क्या बात हुई ?”

“अभी पूरा किस्सा सुनाता हूं। घोड़ों को आराम से चलने दो और मैं
 तुम्हें अपना दुखड़ा रोना रो देता हूं। हालांकि तुम बड़े सल्ल आदमी हो पर
 तुम्हें मुझे समझना चाहिये और मुझसे सहानुभूति दिखानी चाहिये ... मेरे

साथ कितनी ही बार गभीर वारदाते हो चुकी है। शुरू से मुनाता हूँ मेरे पैदा होते ही दाई मेरी दिवगत माँ मे बोलती 'तेरा बेटा बड़ा होकर जनरल बनेगा। जनरल बनने के सारे लक्षण हैं माथा उमका छोटा है और मिर कटू की तरह बड़ा, पेट भी फूला और आवाज भी भारी है। खुश हो मतयोंना।' और दो हफ्ते बाद दाई की सब बातें गलत निकलने लगी पैदा मैं 'येव्दोकीय दिवस' को हुआ था पर मौसम बिल्कुल उल्टा था, मेरी माँ बताया करती कि उस दिन मुर्गी की प्यास बुझाने लायक पिघला पानी तो क्या मिलना जब गौरैया ही उड़ती-उड़ती बर्फ बनकर गिर जाती थी। ऐसे में मुझे तुब्यान्स्की ले गये, गिरजे में बपतिस्मा देने के लिये। पर खुद सोचो, भला ऐसी कड़ाके की सर्दियों में नन्हें-मे बच्चे को कुड में डुबकी दी जा सकती थी? उन्होंने पानी गर्म करना शुरू किया, पादरी और उमका चंचला नशें में धुत्त थे। एक ने कुड में गरम पानी भर दिया, दूसरे ने हाथ डालकर देखा नहीं और—'प्रभु यीशु, भगवान का दाम बपतिस्मा ले रहा है' कहकर मिर के बल मुझे खौलते पानी में ठूस दिया मेरी तो चमड़ी तक उतर गयी। जब मुझे घर लाये तो सारे बदन पर फफोले पड़े थे। बस, इसी वजह से मेरी नाल उतर गयी क्योंकि दर्द में बहुत ज़ोर लगा-लगाकर रोता था बस तब से मेरी बदकिस्मती की शुरुआत हो गयी। और यह सब डमलिये कि मैं किसानों के बीच पैदा हुआ। नौ साल की उम्र होने तक कुत्ते मुझे काटते रहे, हंस ने भी बड़ी चोंचें मारी और एक बार तो बछेड़े ने दुलती मारकर मेरी जान ही निकाल दी। और नौ साल पूरे होने के बाद तो मेरे साथ ऐसी-ऐसी बातें होने लगी कि कुछ पूछो मत। मुझे दसवा साल लगा था कि मैं काटे में फस गया।

"कैसे काटे में?" दबीदोव न आश्चर्य के साथ पूछा, वह श्चुकार की बातें ध्यान से सुन रहा था।

"जिससे मछली पकड़ते हैं। तब ग्रेम्याची में एक बहरा और जर्जर बुढ़ा रहता था, उसे सब कुपीर कहकर बुलाते थे। सर्दियों में वह फदे और जाल से तीतर पकड़ता और मारी गर्मिया नदी के किनारे मछली-मारी में निकाल देता। तब हमारी नदी गहरी थी, लाप्सीनोव की पनचक्की खड़ी थी वहां। उसके बाध के नीचे कार्प और बड़ी-बड़ी श्चूका मछलिया खूब होती थी, बस बुढ़ा बेद मजनु की भांडी

के पास अपनी बसिया लेकर बैठ जाता। उसके पास कोई सातेक थी बसिया—किमी पर केचुए का चाग होता तो किसी पर आटे का, किसी पर कोई छोटी-सी जिदा मछली वगैरह होती, शूका को पकड़ने के लिये। बस हम बच्चों को उसके काटे कुतरकर ले जाने का चस्का पड़ गया। बुढ़ा तो बिलकुल बहरा था, पत्थर की तरह, चाहे उसके कान में पेशाब कर दो पर फिर भी नहीं सुनेगा। हम नदी के किनारे बुढ़े के पास भाड़ियों में छिप जाते, और हम में से एक चुपचाप पानी में उतर जाता ताकि लहरे न उठे, डुबकी लगाता और बुढ़े की किनारे-वाली बसी की डोर पकड़कर दातो से उसे कुतर काटा ले आता। और बुढ़ा बसी निकालता और गुस्से में चिल्लाता 'फिर कुतर गयी ससुरी? हे भगवान।' वह सोचता कि यह शूका की करतूत है, और काटा खोकर उसे बड़ा गुस्सा आता था। वह तो दुकान में खरीदता था काटे, पर हमारे पास खरीदने के लिये पैसे कहा, बस हम बुढ़े के काटों का शिकार करते थे। एक दिन में एक काटा लाया कुतरकर और दूसरे की ताक में था। देखता हूँ बुढ़े ने बसी डाली पानी में और लगा दी मैंने डुबकी। मैंने बस धीरे में डोर पकड़कर कुतरने के लिए मुह में डाला ही थी कि बुढ़े ने भटके में बसी उठा ली। डोर तो मेरे हाथ से छूट गयी और काटा ऊपरवाले होठ में गड़गया। बस मैं चिल्लाने की कोशिश करता पर मुह में पानी भर डाला। बुढ़ा बसी खींचकर मुझ बाहर निकालने लगा। मैं तेज दर्द की वजह में टांगे चलाने लगा, काटे में फसा हुआ था और मैंने महसूस किया बुढ़ा मेरे नीचे पानी में कलछा ठमने लगा बस मुझ में न रहा गया मैं पानी में सिर निकाला और बड़ी जोर से चिल्ला पड़ा। बुढ़े को काटो तो खून नहीं मलीब का निशान बनाना चाहता पर हाथ न उठे, डर के मारे चेहरा देग के पेदे में भी काला। और डरता क्यों नहीं? खींच रहा था शूका को और बाहर निकला लडका। कुछ देर ऐसे ही खड़ा रहा और फिर सिर पर पाव रखकर भाग पड़ा। जूतिया पीछे छूट गयी। और मैं इस काटे के साथ घर पहुँचा। बाप ने काटा तो निकाल दिया पर मेरी ऐसी धुनायी की कि होश उड़ गये। पर फायदा क्या था इसका? होठ ठीक हो गया, पर तब से मेरा नाम शूकार पड़ गया। बस यह फूहड़ नाम मेरा पड़ नहीं छोड़ता अगले साल बसत में मैं हम के चूजे ले गया पवनचक्की के पास चराने के लिये। पवन-

चक्की घूम रही थी, पास ही मे मेरे चूजे दाना चुग रहे थे और उनके ऊपर चील मडरा रही थी। चूजे पीले थे, आकर्षक बस चील का दिल हो आया किसी को भपट्टा मारकर ले जाने को, पर मैं तो उनकी चौकीदारी कर रहा था और चील को 'शू-शू' करके भगा रहा था। मेरे यार-दोस्त दौड़े-दौड़े आये और हम पवनचक्की के पखो पर भूलने लगे बारी-बारी से पख पकड़ते जब वह कोई दो-एक गज ऊपर उठता तो हम हाथ छोड़ देते और जमीन पर कूदकर लेट जाते नहीं तो दूसरे पख से चोट लग सकती थी। और बच्चे तो तुम जानते ही हो, शैतान की दुम होते हैं। हमने एक खेल सोचा, जो सबसे ऊपर जाकर हाथ छोड़ेगा वह 'राजा' बनेगा और दूसरे उसे अपने ऊपर लादकर पवन-चक्की से खलिहान तक ले जायेंगे। स्वाभाविक है कि हम सब 'राजा' बनना चाहते थे। मैंने भी सोचा 'अभी सबसे ऊपर जाता हूँ।' और हम के चूजों के बारे में तो भूल ही गया। पख मुझे ऊपर उठा रहा था, मैंने मुड़कर देखा तो दिल धक से रह गया - चील चूजों पर भपट्टा मारने ही वाली थी। मैं बुरी तरह डर गया, चूजों के लिये मेरी चमड़ी उधेड़ दी जायेगी मैं चिल्लाया 'बच्चो! चील! चील को भगा दो।' उस चक्कर में यही भूल गया कि मैं पख पर लटका हूँ जब मुझ आयी तो मैं बहुत ऊँचा उठ चुका था। नीचे कदने हुए डर लग रहा था, ऊपर जाते हुए और भी ज्यादा। क्या करूँ समझ में नहीं आ रहा था। मैं अभी सोच ही रहा था कि पख ऊपर जाकर सीधा खड़ा हो गया और मैं उस पर उल्टा लटक गया। और जब पवनचक्की का पख नीचे आने लगा मेरा हाथ छूट गया। पता नहीं मैं कितने पल में जमीन तक पहुँचा पर मुझे तो लगा कि बहुत देर लग गयी, और स्वाभाविक है धड़ाम से गिरा। घबराकर खड़ा हो गया, देखता क्या हूँ, कलाई पर जोड़ उतर गया। हड्डी बैठानेवाली ने तो उसे ठीक कर दिया, पर फायदा क्या हुआ? अगले साल फिर यही हो गया, और तो और रीपर ने मेरा कीमा बना दिया। मेट पीटर दिवस के बाद मैं अपने बड़े भाई के साथ बाजरे की फसल काटने गया। मैं घोड़े चला रहा था और भाई रीपर से कटी बालिया गिराता जा रहा था। मैं घोड़ों को हाक रहा था, उनके ऊपर डाम भिनभिना रहे थे, आममान सफेद तपा सूरज भयकर गर्मी बरसा रहा था, मैं गर्मी से बेहाल था, ऊँघकर सीट से गिर पड़ता। अचानक देखता हूँ कि बगलवाली सीता में बहुत बड़ा

सारंग पक्षी चाबुक की तरह पमरा पड़ा है। मैंने घोड़े रोके, भाई बोला 'अभी पाचा भोकता हू।' पर मैं बोला 'भड्या, मुझे इसे जिंदा पकड़ने दो।' भाई बोला 'ठीक है।' और मैं कूद पड़ा और उसे पकड़ लिया, पर वह फूदककर दौड़ने लगा। मैंने खोलकर मेरे मिर पर मारने लगा, उछल-उछल मुझे घसीटे ले जा रहा था, और खुद डर के मारे (मतलब बहुत ज्यादा डर गया था।) मुझ पर अपनी पतली बीट छिड़कता मुझे ऐसे घसीटे ले जा रहा था जैसे शीश घोड़ी पाटा खींचती है। न जाने क्यों उसे अचानक पीछे मुड़कर दौड़ने की मूँधी। वह घोड़ों की टांगों में टकराकर एक तरफ हो गया, पर घोंडे डरपोक थे बिदककर मेरे ऊपर से कूदे और फुफ्फूराकर दौड़ पड़े। और मैं रीपर के नीचे आ गया भाई ने भट से लीवर दबाकर रीपर को ऊपर उठा दिया। मैं उसके बेलचे में जा फसा और रीपर की धार की ओर खिंचने लगा—उसके दाते दाये-बाये चल रहे थे। एक घोड़े की टांग उसमें आ गयी नमो कट गयी और मेरी तो ऐसी दुर्गत हुई कि कोई पहचान भी न पाता। भाई ने किमी तरह घोड़ों को रोका, एक को खोलकर मुझे उस पर आड़ा लिटाया और मवार होकर उसे बेतहाशा दौड़ाता गाव में ले गया। मैं बेहोश, बीट और मिट्टी में सना था और सारंग साना, उड़ गया। धीरे-धीरे मैं चगुन हो गया कोई छह महीने बाद मैं पड़ोमियों के यहाँ से लौट रहा था और गाव का माड मेरे रान्ते में खड़ा था। मैं उससे बचकर निकलने लगा और उमने खूबवार शेर की तरह पूछ घुमायी और मेरी ओर सींग मोड़ लिये। मुझे क्या उसके सींगों पर झूलकर जान गवाने का शौक था? मैं भाग खड़ा हुआ और उमने मेरा पीछा करके निचली पमली में गंगा सींग मारा कि मैं बाड के दूसरी ओर जा पड़ा। पमली तिनके की तरह चट में टूट गयी। अगर मेरे शरीर में सौ पमालिया होती तो बात दूसरी थी, बेकार ही में पमली कौन चाहेगा खोना इसकी वजह में मुझे फौज में नहीं लिया गया। और बाद में मैंने तरह-तरह के जानवरों में क्या-क्या नहीं भुगता, इसकी गिनती करना बड़ा मुश्किल है। लगता है मुझ पर बदकिस्मती की मुहर लगी है, कहीं भी जजीर से छूटा कोई कुत्ता हो, चाहे जहाँ हो मरदुआ पर मुझे काटने जरूर आ जायेगा या मैं उसके सामने अचानक पहुँच जाऊँगा। मेरी पतलून फाड़ देगा, दात गड़ा देगा, भला मुझे इससे क्या फायदा? उभाचीना घाटी में

लेकर सड़क तक बनबिलाव मेरा पीछा कर चुके हैं, स्तेपी में जगली मुअरो में भिड़त हो चुकी है। एक बार साड की वजह से मेरी पिटाई हो गयी और अपने बूटों में हाथ धोना पड़ा। एक बार रात को गाव में जा रहा था, और दोनेत्स्कोव के मकान के सामने फिर एक साड मेरी तरफ आ रहा था। चिघाडकर, पूछ घुमाता। मैंने सोचा, नहीं भई, तुम मुझे माफ करो, मैं अब अक्लमद हो गया हूँ, तुम्हारी जान से कोई वास्ता नहीं रखना चाहता। मैं मकान के पास-पास चलने लगा, साड मेरे पीछे-पीछे लग गया, मैं दौड़ पड़ा, वह भी मेरे पीछे-पीछे फुफ-कागता आ रहा था। मकान की एक खिड़की खुली थी। मैं चमगादड़ की तरह उसमें घुस गया, मैंने कमरे में नजरे दौड़ायी पर वहाँ कोई नहीं था। मैंने सोचा, लोगों को परेशान नहीं करूँगा, खिड़की से ही बाहर में चला जाऊँगा। साड सींगों से दीवार कुरेदकर चलता बना। मैं बस खिड़की से बाहर कूदने ही वाला था कि किसी ने मेरा हाथ पकड़कर गुद्दी पर काई कड़ी चीज मारी। यह बुद्धा दोनेत्स्कोव था जो शोर मचकर कमरे में आया और मुझे पकड़ा लिया। उसने पूछा 'तू क्यों घसा यहाँ लडके?' मैं बोला 'साड से बचने के लिये।'—'जानते हैं तुम साड को?' तू हमारी वह ओल्यूत्का से मिलने आया था न? और बस उसने मुझे पोटना शुरू कर दिया, शुरू में तो लगा मानों मजाक में मार रहा हो, फिर जोर-जोर से पीटने लगा मुझे। बुड्डे में अभी काफी ताकत थी, वह खुद भी बहू पर डोरे डालने के फेर में रहता था, बस गुस्से में आकर उसने मेरी दाढ़ तोड़ दी। फिर बोला 'फिर आयेगा ओल्यूत्का के पास?' मैं बोला 'नहीं, नहीं आऊँगा, पिड छोड़ मेरा।' तू अपनी ओल्यूत्का को गले में टाग ले मलीब की जगह। वह बोला 'चल उतार अपने बट नहीं तो और करूँगा धुनायी तेरी।' बस मैंने बट उतारकर फोकट में उसे दे दिया। इस तरह अपने इकलौते बट खाना भी बड़े मजे की बात है। मैं कोई पाँच साल तक इस ओल्यूत्का में खार खाये बैठा था, पर फायदा क्या? आगे भी ऐसी बहुत-सी बातें होती रहीं अरे यही उदाहरण लो जब हम आपके साथ तीत को बेदखल करने गये थे मैं पूछता हूँ क्यों उसके कुत्ते ने मेरे ही आँवरफोट चिथड़-चिथड़े कर दिया। कायदे से तो उसे मकार पर या ल्युबीशिकन पर भपटना चाहिये था पर नहीं, वह मरा, पूरे अहाते में चक्कर लगाकर मुझ पर ही भपटा। चलो

यही अच्छा हुआ कि उसने मेरा गला नहीं दबोचा नहीं तो श्चुकार की 'राम नाम सत्य है' हो जाती। अरे हमें सब पता है। ऐसा इसलिये हुआ कि मेरे पास लिवाल्वर नहीं था। अगर मेरे पास लिवाल्वर होता तो भगवान जाने क्या हो जाता ! क्रल्ल हो जाता ! गुस्से में मैं कुछ भी कर सकता हूं। तब मैं कुत्ते को भी मार देता, तीत की लुगाई को भी और तीत की थूथनी में भी सारी गोलियां ठूस देता ! बस क्रल्ल का मामला हो जाता और श्चुकार को जेल में ठूसा जा सकता था ... पर मुझे जेल की कोई ज़रूरत नहीं, मेरे शौक़ दूसरे हैं। हां ... बस देख लो, बन गया मैं जनरल। अगर वह दाई आज ज़िदा होती तो मैं उसे कच्चा चबा जाता ! बेकार में अपनी ज़बान मत चला ! नन्हे-मुन्नों को परेशान मत कर ! लो आ गया टोली का पडाव !”

३२

इयोढ़ी में भाड़ू मे बूटों की कीचड़ साफ करते समय ही रज़म्यो-त्नोव को नागूल्नोव के कमरे के अधखुले दरवाजे से रोगनी की तिरछी पट्टी पड़ती दिखायी दी। हौले से दरवाज़ा खोलते हुए अंद्रेई ने सोचा : “मकार नहीं सो रहा। क्यों उसे नीद नहीं आती ?”

पाच बत्तियोंवाला मिट्टी के तेल का लैम्प अखबार के जले शेड मे ढका था। उसका धुधला प्रकाश मेज़ के कोने में खुली किताब पर पड़ रहा था। मकार का बिखरे बालोंवाला सिर एकाग्रता से मेज़ के ऊपर झुका था, दायें हाथ पर उसका गाल टिका था और बाये की उंगलियां लट में उलभी हुई थी।

“नमस्ते, मकार ! क्यों नीद नहीं आ रही ?”

नागूल्नोव ने सिर उठाकर अप्रसन्नता से अंद्रेई की ओर देखा।

“कैसे आना हुआ ?”

“बस गप-शप करने के लिये। तुम्हें तकलीफ़ तो नहीं दी ?”

“दी या न दी, क्या फ़र्क़ पड़ता है, बैठो, तुम्हें भगाऊंगा थोड़े।”

“क्या पढ़ रहे हो ?”

“अपने लिये एक काम ढूढ़ लिया है,” मकार ने किताब को

हाथ से ढक लिया और रजम्योलोव की ओर देखा उसकी बात सुनने की प्रतीक्षा में।

“मैंने मरीना को छोड़ दिया। हमेशा के लिये ” अद्रेई उमास लेकर बोला और धम्म से स्टूल पर बैठ गया।

“कब का छोड़ देना था।”

“क्यों?”

“क्योंकि वह तुम्हारे लिये फालतू बोझ थी और अब जीवन ऐसा है कि अपने सिर में सब फालतू बोझ उतार देना चाहिये। आजकल हम कम्युनिस्टों के पास परायी बातों के चक्कर में फसने का वक्त नहीं है।”

“यह परायी बात कैसे हुई अगर हम दोनों के बीच प्यार था?”

“अरे यह भी कैसा प्यार था? गर्दन में लटका चक्की का पाट था न कि प्यार। तुम सभा का संचालन करते और वह तुम पर नजर रखती, बैठी-बैठी डाह करती रहती। भैया, यह प्यार नहीं सजा है।

“तुम्हारे कहने का मतलब है कि कम्युनिस्टों को लुगाइयो के पास फटकना तक नहीं चाहिये? खस्सी बकरी की तरह घूमना चाहिये क्या?”

‘और तुम क्या सोचते हो? जो पुराने जमाने में अपनी बेवकूफी से शादी कर चुके हैं उन्हें तो अपनी बीवियों के साथ दिन पूरे करने दो पर युवा जवानों को मैं आदेश निकालकर शादी करने की मनाही कर देता। वह कैसा क्रान्तिकारी बनेगा अगर उसे अपनी बीवी का दामन पकड़े रहने की आदत पड़ जायेगी? हम लोगों के लिये लुगाई वैसे ही हैं जैसे लालची मक्खी के लिये शहद। चिपककर रह जाओगे। मैं खुद भुगत चुका हूँ, खूब अच्छी तरह जानता हूँ। शाम को तुम कुछ पढ़ने बैठते हो, अपना विकास करना चाहते हो पर बीवी मीने चली जाती है। थोड़ा-सा पढ़कर तुम भी लट जाते हो पर वह करबट बदलकर मुह मोड़ लेती है। तुमको उसके ऐसे व्यवहार से बुरा लगता है, तुम या तो उससे झगड़ बैठते हो या चुपचाप सिगरेट पीते मन ही मन कुढ़ते रहते हो, नींद नहीं आती। नींद पूरी नहीं हुई और तुम भारी सिर कोई राजनीतिक भूल कर डालते हो। यह आजमायी हुई बात है। और अगर किसी के बच्चे हो गये, तो वह समझो पार्टी के किसी काम का न रहा। पलक झपकते बच्चे के लाड़-प्यार में फस जायेगा, उसके मुह से आता दूध की गंध का आदी हो जायेगा, और

बस गया काम से। वह खराब सेनानी, बेकार कार्यकर्ता होता है।
 जार के जमाने में रगल्टो को मिखाता था तब मैंने बहुत देखा लडके
 हमेशा हसमुख, समझदार होते पर अगर कोई जवान बीबी को घर
 पर छोड़कर रेजिमेंट में भरती हुआ, तो वह उसकी याद में आगे भर-
 भरकर निरा ठूठ बन जाता। उसके हर काम में बेवकूफी टपकती,
 दिमाग में उसके भुस भर जाता। तुम उसे सेवा के नियम बताते हो
 और वह बटनो जैसी आखो में तुम्हारा मुह ताकता है। लगता तो
 यह कि वह तुम्हें देख रहा है पर हरामजादे की आखें अदर की ओर
 मुड़ी अपनी बीबी को देख रही होती। गह भी भला कोई बात हुई ?
 नहीं, कामरेड प्यारे, पहले तो तुम अपनी मर्जी से जी सकते थे,
 पर अब अगर तुम पार्टी में भरती हुए हो, तो सब बेवकूफिया छोड़
 दो। विश्व क्रांति के बाद मेरी बला से तुम चाहे लुगाई के तलवे चाटो,
 पर अभी तुमको अपना रोम-रोम उस क्रांति को अर्पित करना चाहिये।”
 मकार ने खड़े होकर अगड़ाई ली, चटकाकर अपने चौड़े कंधे सीधे
 किये और रज्म्योल्लोव के कंधे को थपथपाकर हल्की-सी मुस्कान के
 साथ बोला “तुम शायद मेरे पास अपना दुखड़ा राने आये हो ताकि
 मैं तुम्हारा दुख बाटू तुमसे महानुभूति प्रकट करूँ, कहूँ कि अद्रेई,
 मुझे तुम पर तरस आता है, लुगाई के बिना तुम्हें बड़ा कैष्ट होगा।
 तुम बेचारे कैसे रह पाओगे लुगाई के बिना, कैसे सह पाओगे ये कष्ट ?
 यही मुनना चाहते थे न ? नहीं अद्रेई, चाहे कुछ और सही पर मेरे
 मुह में तुम यह नहीं मुन पाओगे ! मुझे तो खुशी है कि तुम अपनी
 मार्जेंट की विधवा से अलग हो गये। कब से उसके मोटे कूल्हे पर बेलन
 चलाने की जरूरत थी ! उदाहरण के लिये मुझे ही लो, लूश्का को
 तलाक देकर बड़े मजे में रह रहा हूँ। कोई मुझे परेशान नहीं करता,
 अब मैं पैनी मगीन की तरह हूँ जो कुलको, कम्युनिज्म के अन्य शत्रुओं
 से सघर्ष के लिये मुन्तेद है। और अब तो मैं पढ़-लिख सकता हूँ, अपना
 ज्ञान बढ़ा सकता हूँ।”

“तुम ऐसा भी क्या मीख रहे हो ? कैसी पाथियो का पाठ कर
 रहे हो ?” रज्म्योल्लोव ने सर्द लहजे में कटाक्ष किया।

मकार के शब्द उमें बड़े चुभे, दुख में उसके साथ महानुभूति प्रकट
 करने के बजाये, उल्टे उमने खुशी प्रकट की और अद्रेई के विचार में
 शादी के बारे में निरी बकवास कर रहा था। मकार की गंभीर, अटूट

विश्वास में कूट-कूटकर भरी बातें सुनते हुए, उसने सिहरकर सोचा :
 “कितनी अच्छी बात है कि भगवान् मरखनी गाय को सींग नहीं देता ,
 अगर मकार को शक्ति मिल जाती तो न जाने क्या कर बैठता । यह
 तो ऐसा आदमी है कि मारी जिदगी को मिर के बल खड़ा कर दे ।
 इसका बस चलता तो मारी मर्द जान को बाधिया करवा देता ताकि
 समाजवाद की ओर से ध्यान न बटे उनका ।”

‘तुम पूछते हो कि मैं क्या सीख रहा हूँ?’ मकार ने मवाल
 दोहराया और किताब बंद करके बोला “अंग्रेजी भाषा ।’

“क्या SS?”

“अंग्रेजी भाषा । यह किताब अंग्रेजी गाइड ही तो है ।”

नागुल्लोव न मनकता में अट्रैड की ओर देखा , उसे अट्रैड के
 चेहरे पर उपहास का भाव देखने का डर था , पर वह इस मचना में
 इतना अवाक् रह गया था कि नागुल्लोव उसकी फटी आखों में आश्चर्य
 के सिवा और कोई भाव नहीं देख पाया ।

“क्या तुम उनकी इस भाषा में लिख या बोल सकते हो?”

और नागुल्लोव छिपे गर्व के साथ बोला

“नहीं , अभी बोल नहीं सकता , यह इतनी जल्दी नहीं आता
 है पर कैपिटल अक्षरों में लिखे शब्द समझन लगा हूँ । आखिर चौथे
 महीन सीख रहा हूँ ।”

मुश्किल है?” रजम्योल्लोव ने मकार और पुस्तक की ओर
 अनभिप्रेत आदर के साथ देखा और लार गटककर पूछा ।

मकार ने उसकी पहचान के प्रति रजम्योल्लोव के कौतूहल को देखकर
 अपनी झिझक को उतार फेंका और खुलकर बोलने लगा

“इतनी मुश्किल कि कुछ पूछो मत । इनमें महीनों में मैं सिर्फ
 आठ शब्द याद कर पाया । वैसे तो यह भाषा कुछ-कुछ हमारी से
 मिलती-जुलती है । अंग्रेजी के बहुत-से शब्द हमारी भाषा से लिये गये
 हैं पर वे उन्हें बिगाड़कर बोलते हैं । ‘प्रोलेतारियात’ यानी सर्वहारा
 को वे ‘प्रोलिटेरियट’ बोलते हैं , ‘कम्युनिज्म’ को ‘कम्युनिज्म’ कहते
 हैं ‘रेवोल्यूत्सिया’ यानी क्रांति को ‘रेवोल्यूशन’ कहते हैं । वे मानो
 गुस्से में इन शब्दों का बिगाड़ते हैं पर भग्न उनसे बच सकते हैं ? इन
 शब्दों ने दुनिया भर में जड़ बना ली है , चाहो या न चाहो , पर उन्हें
 बोलना तो पड़ता ही है ।”

“अच्छा ... तो यह पढ़ रहे हो। मकार, पर इस भाषा की तुम्हें क्या जरूरत पड़ी?” अंततः रज़म्योल्नोव ने पृष्ठ ही लिया।

नागूल्नोव ने उत्तर में मुस्कराकर कहा :

“तुम भी अजीब बात करते हो, अंद्रेई ! तुम्हारी नासमझी पर आश्चर्य होता है ... मैं कम्युनिस्ट हूं, ठीक है न ? इंग्लैंड में भी तो होगी न सोवियत सत्ता ? तुम सिर हिला रहे हो, यानी होगी न ? पर हमारे यहां कितने रूसी कम्युनिस्ट हैं जो अंग्रेज़ी बोलते हैं ? मैं भी तो कहता हूं बहुत कम। और अंग्रेज़ बुर्जुआ ने भारत पर, लगभग आधी दुनिया पर कब्ज़ा कर लिया और काले, सांवले लोगों का खून चूस रहे हैं। यह भी भला कोई बात हुई ? वहां सोवियत सत्ता आयेगी पर बहुत-से अंग्रेज़ कम्युनिस्टों को यह मालूम नहीं होगा कि वर्गीय शत्रु का अमली चेहरा कैसा होता है और वे उसका पूरी तरह सफ़ाया नहीं कर पायेंगे। और तब मैं उन्हें सिखाने के लिये मुझे भेजने को कहूंगा क्योंकि मुझे उनकी भाषा का ज्ञान होगा और पहुंचते ही पूछूंगा, ‘आपके यहां रेवोल्यूशन हुआ है ? कम्युनिस्टीशन ? जू की तरह कुचल दो अपने पूंजीपतियों और जनरलों को ! रूस में मन् मन् मन्त्रह में हमने अपने भोलपन के कारण उन्हें छोड़ दिया और बाद में वे बिच्छू हमें डसने लगे। कुचल दो उन्हें ताकि गलतियों का फल न भुगतना पड़े ताकि सब आलगाइट हो !’” मकार ने नथुने फुलाकर रज़म्योल्नोव को आंख मारी और आगे बोला : “इसीलिये मुझे उनकी भाषा की जरूरत पड़ी है। समझे ? मैं रात-रात नहीं सोऊंगा, बची-खुची सेहत गंवा दूंगा पर ...” दांत पीसकर उसने बात पूरी की, “भाषा यह सीख लूंगा ! अंग्रेज़ी में बिना लल्लो-चप्पो के विश्व प्रतिक्रांतिकारियों से बात करूंगा ! मेरे नाम से थर-थर कांपेंगे ! मैं मकार नागूल्नोव उन्हें ... वह कोई ग़ैर-ग़ैर नट्यू खैरा नहीं है ! उन्हें पता होना चाहिये कि उससे दया की कोई आशा नहीं रखनी चाहिये। ‘खून चूसा अंग्रेज़ मजदूरों का, भारतीयों और दूसरे उत्पीड़ित राष्ट्रों का ? दूसरों की मेहनत का फल खाया ? खड़े हो जाओ दीवार के पास, अभी गोली मारता हूं तुम खून चूसनेवालों को !’ बस सबसे पहले यही शब्द सीखूंगा ताकि मैं फरटिं से यह कह सकू।”

वे कोई आधे घंटे तक इधर-उधर की बातें करते रहे, फिर अंद्रेई चला गया और नागूल्नोव अंग्रेज़ी की पुस्तक को खोलकर पढ़ने में मगन

हो गया। धीरे-धीरे होंठ हिलाता, पसीने से तर होता, अपनी घनी भौहें हिलाता वह ढाई बजे तक बैठा रहा।

अगले दिन सुबह-सवेरे उठकर उसने दो गिलास दूध पिया और सामूहिक फार्म के अस्तबल में गया।

“मुझे कोई तेज़ घोड़ा दो,” उमने अस्तबल के रखवाले से अनुरोध किया।

वह एक नाटा समंद घोड़ा लाया जो अपनी सहन शक्ति और तेज़ चाल के लिये प्रसिद्ध था। उमने पूछा, “कहीं दूर जा रहे हैं?”

“कस्बे। दबीदोव से कह देना कि आज रात तक लौट आऊंगा।”

“सवार होकर जायेंगे?”

“सवार होकर, जीन-काठी भी दे दो।”

मकार ने घोड़े पर जीन कसी, उसकी अगाड़ी उतारकर सुंदर लगाम पहनायी जो कभी तीत की रही थी, रकाब में अभ्यस्त पैर डाला और सवार हो गया। घोड़ा भट से दौड़ पड़ा पर फाटक से निकलते समय अचानक ठोकर खा गया, घुटने ज़मीन पर टिकें, गिरते-गिरते ब्रच गया, किसी तरह सतुलन बनाकर फुर्ती में खड़ा हो गया।

“लौट जाओ, कामरेड नाग्लोव, यह अपशकुन है!” फाटक के पास आता बुढ़ा श्चुकार एक ओर हटकर चिल्लाया।

बिना उत्तर दिये मकार घोड़े को सरपट दौड़ाता गांव की प्रमुख सड़क पर पहुंचा। ग्राम-सोवियत के पास कोई दो दर्जन उत्तेजित औरतें झूड़ बनाकर जोग-जोर में बकबक कर रही थी।

“कौव्वियो, हटो रास्ते में नहीं तो घोड़े से कुचल दूंगा।” मकार मज़ाक में चिल्लाकर बोला।

औरतें चुप होकर सड़क से हट गयी, और जब वह आगे जा चुका था तो उमे क्रोध में फुफकारती आवाज़ सुनायी पड़ी:

“कहीं तुम्हें पापी को ही न कुचल दिया जाये! देखता जा एक दिन तेरी शहमवारी का क्या अंत होगा...”

* * *

इलाक़ाई समिति के ब्यूरो की बैठक ग्यारह बजे शुरू हुई। उसकी कार्यसूची में पहले पांच दिनों में बोवाई की स्थिति के विषय में इलाक़ाई

भूमि विभाग के निदेशक बेगलीख की रिपोर्ट मुख्य प्रश्न थी। ब्यूरो के सदस्यों के अलावा बैठक में इलाकाई नियंत्रण आयोग का अध्यक्ष समोखिन और इलाकाई अभियोक्ता भी उपस्थित थे।

“तुम्हारा प्रश्न, अन्य प्रश्नों के साथ हल किया जायेगा, कही जाना नहीं,” मगठन विभाग के निदेशक खोमुतोव ने नागूलनोव को चेताया।

बेगलीख की आधे घंटे की रिपोर्ट बड़ी तनावपूर्ण शांति में सुनी गयी। उसके बावजूद कि मिट्टी तैयार थी, इलाके में कहीं-कहीं बोवाई अभी तक शुरू नहीं हुई थी, कुछ ग्राम-सोवियतों में पूरा बीज भंडार जमा नहीं किया गया था, बोयस्कोवोय ग्राम-सोवियत के क्षेत्र में सामूहिक फार्म के भूतपूर्व सदस्य लगभग सारे बीज वापस ले गये, ओल्खोवात्स्कोय में सामूहिक फार्म के प्रबन्ध-मंडल ने खुद फार्म में निकलनवाला को बीज बांट दिये। बेगलीख ने बोवाई की असतोषजनक स्थिति के कारणों की विस्तार से चर्चा की और अंत में बोला

“साथियों, इस में कोई शक नहीं कि बोवाई में हमारे पिछड़ाव, मैं तो पिछड़ाव नहीं बल्कि कहूंगा एक ही स्थान पर खड़ा रहने शून्य बिंदु पर रहने का कारण यह है कि कई ग्राम-सोवियतों के क्षेत्र पर सामूहिक फार्म उन स्थानीय अधिकारियों के दबाव के फलस्वरूप अस्तित्व में आये जो सामूहिकीकरण के प्रतिशत के चक्कर में आ गये, जैसा कि आपको पता है कहीं-कहीं तो लोगों को पिस्तौल दिखाकर भर्ती होने को मजबूर किया गया। अब ये कमजोर सामूहिक फार्म रेत की दीवार की तरह ढह रहे हैं, वही तो फार्म के सदस्य खेत में काम करने नहीं जाते और अगर जाते भी हैं तो बेगार टालते हैं।”

इलाकाई समिति के सचिव ने पेंसिल में जग के काच के ढक्कन को बजाकर चेताया

“आपका समय पूरा हो गया।”

“साथियों, बस अभी समाप्त करता हूँ। निष्कर्षों में अवगत कराने की अनुमति दीजिये जैसा कि मैंने आपको सूचित किया भूमि विभाग के सूत्रों के अनुसार इलाके में पहले पांच दिनों में केवल तीन सौ त्रिगामी हेक्टेयर पर बोवाई हुई है। मेरे विचार में सभी इलाकाई कार्यकर्त्ताओं को लामबंद करके सामूहिक फार्मों में भेजने की सख्त जरूरत है। मेरा मत तो यह है कि फार्मों के सदस्यों को निकलने से हर तरह से रोकना

चाहिये और सामूहिक फार्मों के प्रबन्ध-मंडलों व पार्टी इकाइयों के सचिवों को फार्म सदस्यों के बीच प्रचार करने और सामूहिक किमानों को व्यापक रूप से यह बताने को बाध्य करना चाहिये कि सरकार सामूहिक फार्मों को क्या-क्या गियायने देती है, बहुत-से स्थानों पर यह बिल्कुल भी नहीं बताया गया लोगों को। बहुत-से किमान अभी तक नहीं जानते कि सामूहिक फार्मों को कैसे-कैसे ऋण आदि दिये जा रहे हैं। इसके अलावा मैं यह सुझाव देना चाहता हूँ कि ज्यादातरियों के लिये दोषी लोगों के विरुद्ध फौरन कार्यवाही की जाये जिनके कारण हम बोर्दाई शुरू नहीं कर पा रहे और जिनको केन्द्रीय समिति के पंद्रह मार्च के प्रस्ताव के अनुसार पद भार में मुक्त करना चाहिये। मैं तत्काल उनके मामले पर विचार करके उनके विरुद्ध पार्टी विधान के अंतर्गत कड़ी कार्यवाही करने का सुझाव देता हूँ। वरम मैं यही कहना चाहता था।”

“बेगलीख की रिपोर्ट पर कोई कुछ कहना चाहता है?” इलाकाई समिति के सचिव ने वहाँ बैठे लोगों पर नजर दौड़ाकर पूछा, वह जान-बूझकर नागूलनोव से नजरे नहीं मिला रहा था।

“बोले बिना भी बात साफ है,” व्यूरो के सदस्य, इलाकाई मिलीगिया के हट्टे-कट्टे अधीक्षक ने कहा। उसकी चाल-ढाल सैनिकी जैसी थी, उसका चेहरा हमेशा पसीने से तर रहता और घावों के अनेक निशानों से ढका उसका उस्तर्ग फिरा मिर चमकता।

“क्या बेगलीख के निष्कर्षों के आधार पर हम निर्णय लेंगे?” सचिव ने पूछा।

बेशक।”

“अच्छा, अब नागूलनोव के मामले को ले,” बैठक के दौरान पहली बार सचिव ने नागूलनोव की ओर कुछ मेकंद के लिये खोयी-खोयी, परायी-सी नजर डाली। “आपको पता है कि वह ग्रेम्याची की पार्टी इकाई के सचिव के पद पर पार्टी के विरुद्ध कई गंभीर अपराध कर चुका है। इलाकाई पार्टी समिति के निर्देशों के विपरित सामूहिकीकरण और भंडार बनाने की प्रक्रिया के दौरान उग्र वामपंथी नीति चलाना था। उसने पिस्तौल से एक मझौले किमान को पीटा, सामूहिक फार्म के सदस्यों को ठंडे कमरे में बंद करता था। कामरेड समोखिन ने खुद ग्रेम्याची जाकर इस मामले की जांच की और पाया कि नागूलनोव

ने क्रांतिकारी कानूनो का घोर उल्लंघन किया, पार्टी की नीति को तोड़-मरोड़कर विकृत किया। कामरेड समोखिन, ब्यूरो को नागूल्नोव की अपराधपूर्ण गतिविधियों की जांच के परिणामों के बारे में बताओ।” सचिव ने अपनी सूजी पलके बंद की और कोहनीयों पर टिककर बैठ गया।

नागूल्नोव इलाकाई पार्टी समिति में पहुंचते ही समझ गया कि उसका मामला काफी बिगड़ गया है और वह नरमी की आशा नहीं कर सकता। सचिव ने बड़ी रूखाई से उसका अभिवादन किया और कन्नी काटने के लिये इलाकाई कार्यकारिणी के अध्यक्ष से कोई सवाल पूछने लगा।

“मेरे मामले का क्या होगा, कोर्चजीन्स्की?” मकार ने उससे सहमकर पूछा।

“ब्यूरो फैसला करेगा,” उसने अनिच्छा से उत्तर दिया।

और बाकी लोग भी मकार की प्रश्नसूचक आंखों को देखकर मुह मोड़ते और उसमें कन्नी काटते। शायद वे आपस में पहले से ही उसके प्रश्न को हल कर चुके थे, सिर्फ मिलीशिया का अधीक्षक बालाबिन मकार के साथ तपाक से हाथ मिलाते हुए, महानुभूतिपूर्ण मुस्कान के साथ बोला

“नागूल्नोव, माहस मत छोड़ो! तुमने गलती की तो क्या हुआ, भूल से ढेरों गलतियां कर बैठे तो क्या हुआ, आखिर हम सभी तो राजनीति में कच्ची गोर्लिया ही खेले हैं। तुम में भी बड़े-बड़े अक्लमद तक गलतियां कर बैठते हैं।” वह नदी के चिकने पत्थर जैसे अपने गोल-मटोल सिर को हिला-हिलाकर अपनी छोटी लाल गर्दन का पसीना पोछते हुए खेद के साथ अपने मोटे होठों को चटकाता बोल रहा था। “मुझे कड़ी फटकार मुनायेगे और सचिव के पद से हटा देगे,” समोखिन की ओर आशका के साथ देखता हुआ मकार सोच रहा था। यह नाटे कद का बड़ी खोपड़ीवाला आदमी, जो तलाको का जानी दुश्मन था, उसको सबसे अधिक चिंतित कर रहा था। और जब समोखिन ने ब्रीफकेस से मोटी फाइल निकाली मकार को आशका की पैनी चभन हुई। उसका दिल धक-धक धड़कने लगा, सिर में हथौड़े बजने लगे, कनपटिया दहक उठी और हल्की-सी मादक मतली आने लगी। दौरा पड़ने से पहले उसकी यही अवस्था होती थी। “बस अभी न पड़े!”

मन ही मन कांपकर वह ध्यान के साथ धीरे-धीरे बोलते समोच्चिन को सुनने लगा।

“इलाकाई पार्टी समिति ने नियंत्रण आयोग को इस मामले की जांच मौपी थी। मैंने खुद जाच की। स्वयं नागूल्लोव, उसकी गतिविधियों से पीड़ित ग्रेम्याची के सामूहिक फ़ार्म सदस्यों और निजी किसानों से की गयी पूछ-ताछ और गवाहियों के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं। “निःसंदेह कामरेड नागूल्लोव ने अपने को पार्टी के विश्वास के योग्य नहीं प्रमाणित किया और अपनी गतिविधियों से पार्टी को विशाल क्षति पहुंचायी। फ़रवरी के महीने में, सामूहिकीकरण के समय घर-घर जाकर उसने पिस्तौल दिखाकर लोगों को फ़ार्म में भरती होने को विवश किया। इस प्रकार उसने सामूहिक फ़ार्म में मात मंभौले किसानों का ‘आकर्षित’ किया। खुद नागूल्लोव भी इसमें डकार नहीं करता .”

“वे कट्टर श्वेतपंथी हैं!” नागूल्लोव ने कुर्मी से उठकर भराये स्वर में कहा।

“मैंने तुम्हें बोलने की अनुमति नहीं दी थी। चुपचाप बैठो!” मार्चिव ने उसे मल्ली से टोक दिया।

“... फिर बीज के लिये अनाज जमा करते समय उसने पिस्तौल में मार-मारकर एक मंभौले किसान को बेहोश कर दिया और वह भी ग्राम-मोवियत के चपरासियों और वहां उपस्थित सामूहिक किसानों के सामने। पीटा इसलिये कि उक्त किसान ने फ़ौरन बीज लाने से इंकार किया था .”

“शर्म आनी चाहिये!” अभियोक्ता ज़ोर से बोला।

नागूल्लोव ने गले पर हाथ फेरा, उसके चेहरे का रंग उड गया पर वह कुछ बोला नहीं।

“उसी रात, साथियो, ज़ार के किसी थानेदार की तरह इसने तीन फ़ार्म सदस्यों को ठंडे कमरे में बंद कर दिया और रात भर उन्हें बंद रखा, ऊपर से वह उन्हें पिस्तौल दिखाकर धमकी दे रहा था अगर वे फ़ौरन बीज नहीं जमा करायेगे।”

“उन्हें मैंने नहीं धमकाया था .”

“कामरेड नागूल्लोव, जो उन्होंने बताया था वही कह रहा हूं और कृपया मेरी बात न काटें। नागूल्लोव की माग पर ही मंभौले

किसान गायेव को बेदखल करके निष्कासित किया गया जिसको हरगिज बेदखल नहीं किया जाना था, क्योंकि उसकी संपत्ति इतनी नहीं थी कि उसे कुलक माना जा सकता हो और बेदखल उसे नागूल्लोव की हठ पर इसलिये किया गया कि सन् उन्नीस सौ अट्ठाईस में उसके पास खेत मजदूर था। पर यह कैसा खेत मजदूर था? साथियो, यह ग्रेम्याची गाव की ही एक लड़की थी जिसे गायेव ने सिर्फ एक महीने के लिये फमल की लुनाई के समय रखा था क्योंकि सन् उन्नीस सौ मत्ताईस के पतभङ्ग में उसके बेटे को लाल मेना में अनिवार्य सेवा के लिये बुलाया गया था और गायेव जिसके बहुत सारे छोटे बच्चे हैं यह काम अकेला नहीं कर सकता था। सोवियत कानून भाड़े के ऐंसे श्रम की मनाही नहीं करते हैं। गायेव ने इस खेत मजदूरगि को खेत मजदूर समिति के साथ समझौते के आधार पर रखा था और उसे पूरा भुगतान कर दिया, मैंने इस तथ्य की जाच की है। इसके अलावा नागूल्लोव अस्वस्थ यौन जीवन बिताता है, पार्टी सदस्य का चरित्र आकने में इसका भी कम महत्व नहीं है। नागूल्लोव ने पत्नी को तलाक दे दिया, तलाक क्या घर में निकाल दिया, कुत्ते की तरह निकाल दिया और वह भी सिर्फ इस आधार पर कि माना ग्रेम्याची के किसी लड़के से उसका इश्क था। अपने को आजाद करने के लिये इसने अफवाहों का फायदा उठाकर उसे निकाल दिया। आजकल वह कैसा यौन जीवन बिताता है मुझे नहीं पता पर साथियो, सारे तथ्य यही बताते हैं कि वह अनाचार कर रहा है। नहीं तो पत्नी को घर में क्यों निकालने की जरूरत पड़ी थी? नागूल्लोव की मकान-मालकिन ने मुझे बताया कि वह रोज रात को बड़ी देर में घर लौटता है, वह कहा जाता है, यह उसे पता नहीं, पर हमें तो, साथियो, पता है कि वह कहा जा सकता है। हम कच्चे नहीं हैं हमें तो जानते हैं कि बीबी को घर से निकालनेवाला और नयी-नयी औरतों की सर्गति का शौकीन आदमी कहा जा सकता है हमें तो जानते हैं। साथियो, बस यही उन कारनामों की (अपने अभियोग भाषण के इस स्थान पर समोखिन विद्वेष के साथ मुस्कराया) संक्षिप्त सूची ही है जो अल्प-अवधि में तीसमारखा इकाई सचिव नागूल्लोव ने कर डाले। इसका क्या परिणाम हुआ? और ऐसी कर्तूतों की जड़े कहा? यहाँ साफ-साफ कहा जाना चाहिये कि यह सफलताओं से सिर चकगना नदी जिसकी हमारे जन नेता स्तालिन ने इतनी विलक्षण व्या-

ख्या की थी बल्कि यह उग्रवामपथी मनोग्रन्थि, पार्टी की नीति पर चढ़ाई है। नागूल्नोव को न केवल पिस्तौल की नोक पर मझौले किसानों को बेदखल करके सामूहिक फार्म में हाकने की सूभी बल्कि उमने मुर्गे-मुर्गियों, भेड़ बक़रियों और दुधारू जानवरों को भी सामूहिकीकृत करने का निर्णय पाम करवा दिया। कुछ सामूहिक किसानों का कहना है कि वह फार्म में ऐसा निर्दयी अनुशासन लागू करना चाहता था कि खूनी जार निकोलाई के जमान में भी वैसा नहीं था।"

'मुर्गियों और ढोंगों के बारे में इलाकाई समिति ने कोई निर्देश नहीं दिया था,' नागूल्नोव धीरे-से बोला।

वह अब छाती पर बाये हाथ को रखकर खड़ा हो गया था।

"नहीं, तुम माफ़ करो।" सचिव चिहुककर बोला, "इलाकाई समिति ने दिया था निर्देश। दूसरों पर अपना दोष मढ़ने की कोशिश मत करो। श्रम सघ का विधान है, तुम दूध पीते बच्चे तो नहीं जो उस गमभूते नहीं।"

'ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म में आत्मालोचना को दबाया जाना है," समोखिन आगे बोला। "नागूल्नोव ने आतक का वातावरण बना दिया, किसी को मुँह नहीं खोलने देता। प्रचार कार्य करने के बजाय खेतहरो पर चिल्लाता है, पैर पटकता है, पिस्तौल में धमकाता है। इसीलिये ग्रेम्याची के फार्म में गडबड मची है। आजकल बड़ी मख्या में लोग फार्म से निकल रहे हैं, बोवाई अभी शुरू ही की है और इसमें कोई शक नहीं कि वे उसे पूरा नहीं कर पायेंगे। इलाकाई नियंत्रण आयोग, जिसका कर्तव्य पार्टी को भ्रष्ट तत्वों और तरह-तरह के अवसरवादियों से साफ़ रखना है जो हमारे महान् निर्माण कार्य में विघ्न डालते हैं, नागूल्नोव के सबध में उचित निष्कर्ष निकालेगा।"

"और कुछ?" सचिव ने पूछा।

"नहीं।"

"अब हम नागूल्नोव को बोलने का मौका देगे। वह हमें बताये कि कैसे वह इतना नीचे गिरा। बोलो, नागूल्नोव।"

समोखिन के भाषण के अंत में नागूल्नोव में खौलता क्रोध अचानक न जाने कहाँ गायब हो गया, उसका स्थान अनिश्चय और भय ने ले लिया। "ये मेरे साथ क्या कर रहे हैं? ऐसा कैसे किया जा सकता है? मरवाना चाहते हैं।" मेज के पाम आने समय उसके दिमाग में कौधा।

समोखिन के भाषण के समय जो खरी-खोटी बातें सुनाने की सोची थी वे सब दिमाग से उतर गयी। दिमाग में रिक्तता भर गयी, एक भी काम का शब्द नहीं सूझ रहा था। मकार की स्थिति बड़ी अजीब-सी थी

“साथियो, मैं क्रांति के काल में पार्टी में हूँ लाल सेना में रहा ”

“यह हम सबको मालूम है। तुम काम की बात करो।” बेमब्री से सचिव ने उसे टोका।

“मभी मार्चों पर मैं श्वेत सेना से लड़ा और प्रथम अश्वारोही सेना में भी मुझे पदक प्रदान किया गया ”

“अरे तुम काम की बात करो।”

“क्या यह काम की बात नहीं?”

“नागूल्नोव, तुम टाल-मटोल मत करो। अब अपनी सेवाओं की दुहाई मत दो।” कार्यकारणी के अध्यक्ष ने उसे टोका।

‘अरे कामरेड को बोलने भी तो दो। क्यों तुम लोग उसका मुँह बंद कर रहे हो?’ बालाबिन क्षोभ के साथ चिल्लाया। उसकी गोल चिकनी खोपड़ी पर रक्ताघात जैसे नीले चकत्ते पड़ गये।

“काम की बात करो।”

नागूल्नोव उसी तरह छाती पर बाया हाथ रखे खड़ा था और दाया हाथ धीरे-धीरे सूखे गले की ओर उठ रहा था। उसके मुँह पर हल्दी पड़ गयी बड़ी कठिनाई में वह आगे बोला

“मुझे बोलने दीजिये। मैं तो दुश्मन नहीं क्यों मेरे साथ ऐसा व्यवहार कर रहे हैं? मैं सेना में घायल हुआ कास्तोर्ना के पास भारी गोले के धमाके में भीतरी चोट लगी ” यह कहकर वह चुप हो गया उसके काले पड़े होठ फड़फड़ाते हुए हवा को अदर खींच रहे थे।

बालाबिन ने जल्दी से जग से गिलास में पानी भरा और मकार की ओर देखे बिना उसको थमा दिया।

कोर्चजीत्स्की ने नागूल्नोव पर नजर डाली और झट से मोड़ ली नागूल्नोव का हाथ गिलास को भीचकर बेतहाशा काप रहा था।

कमरे में छापी नीरवता में गिलास के काँच से टकराते उसके दातों की किटकिट माफ सुनायी दे रही थी।

“अरे तुम घबराओ नहीं, बोलो।” बालाबिन उद्विग्न होकर बोला।

कोर्चजीन्स्की ने नाक-भौ सिकोड़ी। उसके दिल में बिनबुलायी दया उपजी पर उसने अपने को सभाल लिया। उसको पक्का विश्वास था कि नागूल्नोव पार्टी के लिये हानिकारक तत्व है और उसे न केवल पद से हटाया जाना चाहिये बल्कि पार्टी से भी निकाल देना चाहिये। बालाबिन के सिवाये सब उससे सहमत थे।

मकार ने एक घूट में गिलास खाली कर दिया, दम लेकर वह बोलने लगा

‘जो कुछ समोखिन ने कहा वह मैं स्वीकार करता हूँ। सचमुच मैं ही यह सब किया। पर इसलिये नहीं कि मैं पार्टी का विरोध करना चाहता था, उस पर चढ़ाई करना चाहता था। यह समोखिन भूठ बोलता है। मेरे व्यभिचार के बारे में भी वह कुत्ते की तरह भूठ बकता है। यह सब उसका मन की उपज है। मैं लुगादयो से कभी काटता हूँ, मुझे उनकी फुर्त नहीं ”

“इसीलिये तुमने बीवी को भी घर से निकाल दिया?” सगठन विभाग के निदेशक खोमुतोव ने कटाक्ष किया।

“हां, इसीलिये,” मकार ने गभीरता के साथ उत्तर दिया। “पर यह सब मैं मैंने क्रांति की भलाई के लिये किया। क्या पता, मैं गलत सोचता था पता नहीं। आप लोग मुझसे ज्यादा पढ़े-लिखे हैं। आपने कोर्स पास किये हैं, आपको ज्यादा मालूम है। मैं अपना दोष नहीं कम कर रहा। जो चाहो फैसला करें। एक बात समझने का अनुरोध करता हूँ ” उसका फिर सास उखड़ गया। एक मिनट चुप रहकर वह आगे बोला “भाइयो, यह तो समझो कि मैंने यह सब पार्टी के खिलाफ बुरा उगाड़े में नहीं किया। और हमामची को इसीलिये पीटा था कि वह पार्टी को गोलिया दे रहा था और बीज सूअरों को डालना चाहता था ”

“किसी और को सुनाना ये किस्से।” समोखिन ने व्यग्र के साथ कहा।

“मैं वहीं बता रहा हूँ जो वास्तव में हुआ। अभी तक इसका मलाल है कि मेने इस हमामची को जान से क्यों नहीं मार दिया। मेरे पास और कुछ नहीं है कहने को।”

कोर्चजीन्स्की तनकर बैठा, उसकी कुर्मी चरमगयी। वह इस अप्रिय मामले को जल्दी से जल्दी निपटाना चाहता था। वह जल्दी-जल्दी बोला

“सब माफ है, साथियो। खुद नागूल्नोव स्वीकार कर रहा है अपना दोष। हालांकि गौण बातों के लिये अपनी सफाई देने की कोशिश कर रहा है, पर दलीले इसकी विश्वास नहीं जगाती। हरेक अपराधी अपने दोष को कम करने या उसे दूसरे के मिर मढ़ने का प्रयास करता है। मेरा मत तो यह है कि सामूहिकीकरण अभियान में पार्टी की नीति के घोर उल्लंघन और एक कम्युनिस्ट के लिये अशोभनीय अनैतिक आचरण के लिये नागूल्नोव को पार्टी से निष्कासित कर देना चाहिये। हम नागूल्नोव की पुगनी सेवाओं को ध्यान में नहीं रखेंगे, यह बीती बात हो गयी। दूसरे को सबक सिखाने के लिये हमें इसको दंड देना चाहिये। हरेक को, जो पार्टी को कलंकित करने, उसे दाये या बाये खींचने की कोशिश करता है हम बेरहमी से कुचल देंगे। नागूल्नोव और उस जैसे दूसरे लोगों के खिलाफ अधूरे कदमों में काम नहीं चलेगा। हम वैसे भी बहुत सह चुके हैं इसके नखरों को। पिछले साल ही कृषि सह-कारिता मंच की स्थापना के समय ही यह वामपथ की ओर लुढ़क रहा था, मैंने तभी उसे चेतावनी दी थी। और उसने कहना नहीं माना तो दोष इसी का है। क्यों, मतदान हो जाये? कौन नागूल्नोव को पार्टी से निष्कासित करने के पक्ष में है? जैसा कि आप समझते ही हैं मतदान में सिर्फ ब्यूरो के सदस्य भाग लेंगे। हा, तो चार पक्ष में है न? और कामरेड बालाबिन, तुम इसके विरुद्ध हो?”

बालाबिन ने जोर से मज पर हाथ पटका। कनपटियो पर नमो फूल गयी।

“मैं न सिर्फ विरुद्ध हूँ बल्कि मुझे कड़ी आपत्ति भी है। यह सगसर गलत निर्णय है।”

“तुम अपने मत को अपने तक ही सीमित रखो,” कोर्चजीन्स्की ने ठंडे लहजे में कहा।

“नहीं, तुम मुझे बोलने दो।”

“अब बोलने में देर हो चुकी है, बालाबिन। नागूल्नोव के निष्कासन का निर्णय बहुमत में पास हो चुका है।”

“यह आदमी के प्रति नौकरशाही रवैया है। माफ करो, पर मैं

इसे ऐसे नहीं छोड़नेवाला हूँ। मैं मडल समिति को लिखूंगा। पार्टी के पुगने सदस्य, 'लाल पताका' पदकवाले को निष्कासित कर डाला क्या आप पागल हो गये हैं, कामरेडों? क्या कोई दूसरा दंड नहीं बचा?।"

"उस विषय में बहस करने की कोई जरूरत नहीं है। आखिर, मतदान तो हो चुका।"

"ऐसे मतदान के लिये थोड़ा तोड़ना चाहिये।" बालाबिन का स्वर गुस्से में चीखने से पतला हो गया, उसकी गठी गर्दन ऐसे फूल गयी कि लगता था कि छूते ही उसमें से खून की धारा फूट पड़ेगी।

"थोड़े के बारे में जग जवान सभालकर बोलो," दुर्भावना के साथ मगठन विभाग का निदेशक खोम्तोव बोला। "हम तुम्हारी भी लगाम कम सकते हैं। यह मिल्नीशिया का दफ्तर नहीं पार्टी समिति है।"

"तुम्हारे बिना भी मालूम है। पर तुम मुझे बालन क्यों नहीं देख रहे?"

"क्योंकि मेरे विचार में यह फालतू है।" कोर्चजीन्स्की भी तैश में आ गया बालाबिन की तरह उसका भी चेहरा तमतमाकर लाल हो गया, उसने कुर्सी के हथिय कमकर पकड़ लिये। "यह मैं हूँ टलाकाई समिति का सचिव। मैं तुम्हें बोलने की अनुमति नहीं देता और अगर चाहते ही हो तो जाओ बाहर जाकर बोलो।"

बालाबिन, बेकार में मन खौला। तुम क्यों आग-बबूला हो रहे हो? लिखकर भेज दो अपनी राय मडल समिति को अब तो तुम गलत कर रहे हो। वोट पड़ चुके हैं, अब क्या फायदा घुसे चलाने का जब लड़ाई ही खत्म हो गयी। "कार्यकारिणी के अध्यक्ष ने मिल्नीशिया के अधीक्षक को शांत करने का प्रयास किया।

वह फुमफुमाकर कुछ कहने लगा बालाबिन को उसकी वर्दी की फमीज की आम्तीन खींचकर कोन में ले गया।

इतने में कोर्चजीन्स्की न, जो बालाबिन से हुई झड़प के कारण चिढ़ गया था मकार की आग क्रोध से चमकती आँखों में देखा और द्वेष को छिपाये बिना बोला

"खत्म हुई बात, नागल्नेव! ब्यूरो के निर्णय के अनुसार तुम हमारी कतारों में निष्कासित कर दिये गये हो। तुम जैमो की पार्टी

मे कोई जरूरत नहीं। रख दो यहा पार्टी-कार्ड।” और उसने ललौहे बालो से ढका अपना हाथ मेज पर पटका।

नागूल्लोव का चेहरा मुर्दे की तरह सफेद पड गया। उसके शरीर मे कपकपी दौड रही थी और जब वह बोला तो आवाज लगभग सुनायी ही नहीं दे रही थी

“पार्टी-कार्ड मैं नहीं दूंगा।”

“मजबूर कर देंगे।”

“नागूल्लोव, सीधे मडल समिति मे चले जाओ।” कोने से बाला-बिन चिल्लाया और कार्यकारिणी के अध्यक्ष से हो रही बात को अधूरा छोडकर धडाम मे दरवाजा बद करके चला गया।

“पार्टी-कार्ड मैं तुम्हे नहीं दूंगा।” मकार ने दांहराया। उसकी आवाज सभल गयी थी, माथे और उभरी हड्डियोवाले कपोलो मे नीलाभ सफेदी उतरने लगी। “और पार्टी को अभी मेरी और जरूरत पड़ेगी और मैं भी पार्टी के बिना नहीं जी सकता। पर तुम्हारा आदेश मैं नहीं मानूंगा। यह रहा कार्ड छाती की जेब मे लेकर तो देखो। गला चबा जाऊंगा।”

“हो गया शुरू दुखातक नाटक।” अभियोक्ता ने कधे उचकाकर कहा, “तुम जग शात रहो

उसके शब्दो की ओर कोई ध्यान दिये बिना मकार कॉर्चजीन्स्की की ओर देखता हुआ मानो विचारो मे डूबते-उतरने धीरे-धीरे बोल रहा था

“पार्टी के बिना मैं कहा जाऊंगा? और किमलिये? नहीं, पार्टी-कार्ड मैं नहीं दूंगा। मैंने अपना सारा जीवन सारा जीवन लगा दिया ” और अचानक बूढ़ो की तरह मेज को टटोलने लगा, शब्दो मे उलझता अस्पष्ट स्वर मे बुदबुदाने लगा बेहतर तो यही होगा कि तुम लडको को हुक्म दे दो मुझे तब तो मेरा टिकट कटा दो और कोई चारा ही नहीं बचा मुझे अब जीने की क्या जरूरत, जिदगी मे भी निष्कामित कर दो जब तक कुत्ता भौकता रहा तब तक उसकी जरूरत थी बूढा हो गया तो घर मे निकाल दिया ”

मकार का चेहरा मुखांटे की तरह जड था केवल होठ हिल रहे थे पर अंतिम शब्दो के साथ उसकी निश्चल आखो मे, पहली बार सयाने जीवन मे, अश्रुधारा फूट पडी। कपोलो को भिगोते हुए, बहुत

दिनो से बढ़ती दाढ़ी की कड़ी जड़ों में अटकते हुए आसू छाती पर कमीज को काली बिंदियों से ढक रहे थे।

“बस हो गया। इससे कोई फायदा नहीं होगा, कामरेड।” मचिव ने वेदना के साथ नाक-भौं सिकोड़कर कहा।

“तुम मेरे कामरेड नहीं हो।” नाग्लोव चिल्लाया, “तुम भूखे भेड़िये हो। और तुम सब जो यहाँ हो—जहरीले साप हो। मनमानी करते हो। चिकनी-चुपड़ी बातें बोलना सीख गये हो। खोमूतोव, तू क्यों खीसे निपोग रहा है स्सा ? मेरे आसुओ पर हम रहा है ? तुझे याद है सन् इक्कीस में जब फोमीन अपने गिरोह के साथ इलाके में उत्पात मचा रहा था तो तू मडल समिति में गया था, याद है ? याद है तुझे, कुतिया की दुम ? जाकर तूने पार्टी-कार्ड दे दिया और बोला खेती-बाड़ी करूँगा तू फोमीन में डरता था। इसीलिये तूने पार्टी-कार्ड पटक दिया और बाद में फिर से घुस गया पार्टी में केचुण की तरह। और अब तू मेरे खिलाफ वोट देना है ? और मेरे भीषण दुःख पर हमता है ?”

“बस हो गया, नाग्लोव कृपया शोर मत मचाओ। हमें और भी कई प्रश्नों पर विचार करना है, बिना भेपे सावले चेहरेवाला, मुदर खोमूतोव मुलह के अदाज में बोला, उसकी काली मूछों के नीचे अभी तक मुस्कान बची नहीं थी।

तुम्हारे साथ बस हो गया पर मैं अपने लिये न्याय पाकर रहूँगा। केन्द्रीय समिति तक जाऊँगा।”

“शाबाश। जाओ। वहाँ पलक झपकते सब हल हो जायेगा। कब से वहाँ तुम्हारी बात जोह रहे हैं खोमूतोव मुस्कराकर बोला।

मकार चुपचाप दरवाजे की ओर चल दिया, निकलते समय उसकी कनपटी चौखट में टकरायी, वह आह भगकर रह गया। क्रोध के अंतिम उबाल ने उसे निश्चिंत कर दिया था। वह अन्यमनस्क होकर फाटक तक गया और बाड़ में बंधे अपने घोड़े को खोला। न जाने क्यों वह खीचकर उस ल चला। कस्बे के छोर पर उसे सवार होने की इच्छा हुई पर न चढ़ सका चार बार उसने रकाब की ओर पैर उठाया और शराबियों की तरह लडखड़ाकर उसके हाथ में हुकना छूट जाता।

सिरेवाले मकान के पास चबूतरे पर बूढ़ा, पर शोख बाबा बैठा था। वह बड़े ध्यान के साथ मकार को घोड़े पर बैठने की कोशिश करता

देख रहा था। फिर उत्साहवर्द्धक मुस्कान के साथ बोला

“जवा मर्द को देखो। सिर पर अभी मूरज चमक रहा है और यह टाग भी नहीं उठा पाता। किम खुशी में मुबह में पी रखी है? या आज कोई त्योहार है?”

“त्योहार है, फेदोत दादा।” बाड के पीछे खड़ा उसका पड़ोसी बोला। “आज साइमन-आलमी का दिन है, शराबखानो की तीर्थयात्रा का।”

“अच्छा यह बात है,” बूढ़ा मुस्कगया, “क्या शराब से ताकतवर है कोई जवान? देखो तो जीन में कैसे उछल रहा है। हिम्मत न हार, कज्जाक।”

मकार ने दात पीसे और बट की नोक में रकाब को छूकर चिड़िया की तरह फुदक कर घोंडे पर बैठ गया।

उस दिन सवेरे यास्की गांव के सामूहिक फार्म में तेईस छकड ग्रेम्याची में आय। पवनचक्की के पाम हमामची की उनमें भेट हुई। वह कंधे पर रस्सी डालकर अपनी घोंडी को मत्पी में खोजने जा रहा था। आगेवाला छकडा उसके पाम पहुंचा।

नमस्ते कज्जाक नार्गार्वो कैम हो।

‘भगवान की दया है।’ दुमकटे घोंडो को चलाने काली दाढीवाले कज्जाक ने उत्तर दिया।

“कहा में छकडे आ रहे हैं?”

“यास्की में।”

“तुम्हारे घोंडो की दुमे क्यों नहीं है? क्यों तुमने उन्हे बेगमी में कतर दिया?”

“होय, रुक। शैतान की औलाद। पूछे काट दी फिर भी फुदक रही है तुम पूछ रहे हो कि दुमे क्यों नहीं है? सरकार के लिये काट दी। शहर की लुगाइयां उनमें मक्खिया उड़ायेगी भले आदमी, मिगरेट नहीं है तुम्हारे पाम? पिलवा दो, हमारे पाम तबाकू नहीं है।” कज्जाक कूदकर छकडे में उतर गया।

पीछेवाले छकड़े भी रुक गये। हमामची को अब मलाल हां रहा था उनसे बात छेड़ने का। उसने छकड़ो से उतरकर अपनी ओर आते कोई पांच लोगों को देखकर, जो चलते-चलते तबाकू लपेटने के लिये अखबार की पट्टियां फाड़ते आ रहे थे, अनिच्छा के साथ तबाकू की थैली निकाली।

“तुम तो मेरा मारा तबाकू खत्म कर दोगे” कज़म हमामची कराह कर बोला।

पता है, अब सब सामूहिक है? सब चीजे आम होनी चाहियें, दाढ़ीवाले ने मक्ली में कहा और मानो अपनी ही थैली में उसने मट्टी भर घर का उगा तबाकू निकाला।

सब धुआ उड़ाने लगे। हमामची ने झट से थैली पतलून की जेब में ठगने और सम्मरगता हुआ धिन व दया के साथ घोंडों की लगभग जड़ तक कटी पूंछों को देखने लगा। वसंत में खून की प्यासी मक्खियां घोंडों को भकोस रही थीं पसीने में तर कल्हों, जुग में रगड़ खाकर छिली गर्दनो पर बखटकें बैठ रही थीं। घोंडे अपनी आदत के अनुसार दुमों हिला रहे थे पर बालों में वचिन शर्मनाक ठूठों का कोई असर नहीं हो रहा था।

ये घोंडे किम तरफ अपनी पूछ उठा रहे हैं? हमामची ने कटाक्ष किया।

“सब उधर ही, सामूहिक फार्म की तरफ। क्या तुम्हारे यहाँ नहीं काटी गयी?”

“काटी थी, पर सिर्फ चार इंच।”

“यह हमारा अध्यक्ष को मझा था उस इसके लिये इनाम भी मिला पर जब डाम-मच्छर बढ़ जायेंगे तो घोंडों का हाल बुरा होगा। अच्छा चलते हैं। तबाकू के लिये धन्यवाद। मिगरेट पीकर दिल पिघल गया, नहीं तो मारा रास्त तबाकू के बिना नडप रहा था।

“तुम लोग किधर जा रहे हो?”

“ग्रेम्याची को।”

“मतलब हमारे यहाँ। किम काम में?”

“बीज लेने के लिये।”

“यह यह कैसे?”

“इलाके से हुक्म मिला है तुम्हारे यहां से चार सौ तीस पौंद बीज लेने का। चल, घोड़े!”

“मैं तो यह जानता था!” हमामची चिल्लाया। रस्सी को घुमाता हुआ वह गांव की ओर दौड़ पड़ा।

यास्क्रीवाले फार्म के दफ्तर तक भी न पहुंच पाये थे कि आधे गांव को पता चला गया कि वे बीज लेने आये हैं। हमामची को घर-घर जाकर खबर करने में आलस्य नहीं आया।

शुरू में लुगाइया गलियों के नुक्कड़ पर जमा होने लगी, भयभीत तीतरों के भुंड की तरह शोर मचाकर उन्होंने आसमान मिर पर उठा लिया।

“अरे हमारा अनाज ले जा रहे हैं!”

“बोने के लिये कुछ बचेगा नहीं!”

“कहां से आ पड़ा मुसीबत का पहाड़ हमारे मिर!”

“भले लोगों ने कहा था कि सांझी खत्ती में मत जमा करवाओ...”

“अगर कज्जाक सुनते भी हमारी बात!”

“जाकर कज्जाको से कहना चाहिये कि अनाज न दे।”

“अरे हम खुद ही नहीं लेने देंगी। चलो, लुगाइयो, खत्तियों की तरफ! लाठियां लेकर खड़ी हो जायेगी तालों के पास!”

फिर कज्जाक मर्द भी आ गये। उनके बीच भी ऐसी ही बातें हुई। गली-गली, कूचे-कूचे से बड़ी भीड़ बनाकर खत्तियों की ओर चल पड़े।

इसी बीच दबीदोव ने इलाकाई कृषि मघ के अध्यक्ष लूपेतोव की चिट्ठी पढ़ी, जो यास्क्रीवाले लाये थे।

“कामरेड दबीदोव,” लूपेतोव ने लिखा था, “तुम्हारे यहाँ ७३ क्विंटल गेहूं पड़ा है जो वसूली केन्द्र को नहीं भिजवाया गया था। मैं तुम्हें यह गेहूं (पूरे ७३ क्विंटल) यास्क्री के सामूहिक फार्म को देने का प्रस्ताव देता हूँ। उनके पास बीज की कमी है। राजकीय अनाज वसूली दफ्तर से मैं बात कर चुका हूँ।”

दबीदोव ने चिट्ठी पढ़कर, अनाज दे देने का आदेश दिया। यास्क्रीवाले फार्म के दफ्तर से खत्तियों की ओर चल पड़े, पर खत्तियों के पासवाली सड़क पर भीड़ उमड़ पड़ी थी। कोई दो सौ महिलाओं और पुरुषों ने छकड़ों को घेर लिया।

“कहां जा रहे हो?”

“हमारा अनाज लेने? कहां मे तुम आ टपके!”

“उल्टे मुड़ जाओ!”

“नहीं देंगे!”

द्योस्का उशाकोव भागा-भागा दवीदोव के पास आया। और वह दौड़ता हुआ खत्तियों के पास पहुंचा।

“क्या बात है, नागरिको? आप लोग क्यों जमा हुए हैं?”

“तुम क्यों हमारा अनाज यास्कींवालों को दे रहे हो? क्या हमने उनके लिये जमा करवाया था?”

“दवीदोव, तुम्हें किसने इसका हक दिया?”

“और हम क्या बोयेंगे?”

पामवाली खत्ती की सीढ़ी पर चढ़कर दवीदोव ने शान्ति से समझाया कि अनाज वह इलाकाई कृषि संघ के आदेश पर दे रहा है, बीजोवाला नहीं बल्कि वह जो अनाज वसूली में राज्य को देना बाकी था।

“नागरिको, आप चिंता न करें, हमारा अनाज मही सलामत रहेगा। आपको बेकार घूमने, गिरिया चबाने के वजाय खेत में काम करना चाहिये। यह मत भूलो कि टॉली नायक काम पर न आनेवालों के नाम लिख लेते हैं। जो नहीं जायेगा काम पर उस पर जुर्माना करेगे।”

कुछ मर्द चले गये। बहुत-से लोग दवीदोव की घोषणा से शांत होकर खेत में चले गये। भंडारी यास्कींवालों को तौलकर अनाज देने लगा। दवीदोव दफ्तर में चला गया। पर आधे घंटे बाद, अभी तक खत्तियों की चौकसी कर रही औरतों की मनोवृत्ति में अचानक बड़ा उग्र परिवर्तन आया। इसमें याकोव लुकीच का योग था, उसने कुछ मर्दों के कान में फुमफुमाकर कहा:

“दवीदोव भूठ बक रहा है! बीज ले जा रहे है! सामूहिक फार्म तो बोवाई कर लेगा, पर अलग खेती करनेवालों ने जो बीज जमा करवाये हैं वे यास्कीं के फार्म को दे देंगे।”

औरतों में खलबली मच गयी। हमामची, देमीद घुन्ना, बुड्डा दोनेत्स्कोव और कोई तीस लोग आपस में गलाह-मशविरा करके तराजू के पास गये।

“नहीं देंगे अनाज!” सबकी ओर से दोनेत्स्कोव बोला।

“तुम में कौन पूछता है।” द्योम्का उशाकोव ने दो टूक उत्तर दिया।

उनके बीच तू-तू मै-मै शुरू हो गयी। यास्कीवालो ने द्योम्का का पक्ष लिया। वही काली दाढ़ीवाला कज्जाक जिसे हमामची ने तबाकू दिया था, छकड़े पर तनकर खड़ा हो गया, पाच मिनट तक गुम्मे में मा-बहन की गालिया देता रहा और फिर चिल्ला-चिल्लाकर बोला

“आप लोग क्यों कानून तोड़ रहे हैं? क्यों आप हमारी बेइज्जती कर रहे हैं? हम अपना काम छोड़कर चालीस वेस्ता का रास्ता तय करके आये हैं और आप हमें सरकारी अनाज क्यों नहीं लेने दे रहे? १०५०३० तुम्हें सबक सिखायेगा। तुम्हें कुत्तों की औलादों, उतर्गी ध्रुव के पाम के बर्फीले उलाके में भेज दना चाहिये। कृत्ता की तरह न खद खाते हो न दमरो को खाने दें। क्यों तुम खेत में काम नहीं करने जानें? आज क्या कोई त्योहार है?”

“तुम्हें क्या लेना इसमें? तेरी दाढ़ी खूजला रही है? अभी खूजा देग। यह तो हम मिनटों में कर देंगे।” आम्सीने चढ़ाते हुए छोटा अकीम वेमल्लेब्रनोव चिल्लाकर बोला, वह छकड़े के पाम आ रहा था।

यास्की का दाढ़ीवाला कज्जाक छकड़े में कूदा। उसने अपनी बदरंग कलथई कमीज की आम्सीने नहीं चढ़ायी पर जबड़े पर ऐसे जबरदस्त प्रहार में अकीम की अगवानी की कि वह पवनचक्की की तरह अपने हाथों को हिलाता कोई पाच गज की दूरी पर जा गिरा।

ऐसी हाथापाई शुरू हो गयी, जैसी ग्रेंम्याची ने अरसे में नहीं देखी थी। यास्कीवालो की ऐसी धनायी हुई कि वह खेत में लथपथ, अनाज की बोर्गियों को पटककर, छकड़ों पर चढ़ गये और चाबको में मारकर घोड़ों को दौड़ा दिया। चीखती-चिल्लाती औरतों की भीड़ को चीरकर वे भाग गये।

बस फिर ग्रेंम्याची में दगा शुरू हो गया। लोग-बाग द्योम्का उशाकाव में खनियों की चाबी लेना चाहते थे जहां बीज रखे थे, पर चट द्योम्का हाथापाई के समय भीड़ में खिसक लिया और फार्म के दफ्तर में दौड़ा-दौड़ा आया।

“चाबियों का क्या करू, कामरेड दवीदोव? हमारे लोग यास्कीवालों को पीट रहे हैं और लगना है अब हमारी खबर लेने की फिर्माक में है।”

“लाओ मुझे दो चाबियाँ,” दबीदोव ने शांत स्वर में कहा।
चाबियाँ लेकर उसने जेब में रख ली और खतियों की ओर चल पड़ा। इतने में लुगाइया अद्रेई रजम्योल्तोव को ग्राम-मोवियत से बाहर खीच लायी और गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगी

“मीटिंग शुरू करो।”

‘औरतो! मेरी मौमियों! चाचियों! ताटियों! मेरी मलोनियों! यह मीटिंगो का वक्त नहीं है! बावार्ड करनी चाहिये न कि मीटिंग! तुम्हें क्या जरूरत पड़ गयी मीटिंग की?’ यह सैनिका का शब्द है। उसको मुँह पर लाने से पहले तीन माल खाइयों में बैठना पड़ता है। युद्ध के मोर्चे पर जाना पड़ता है, जुग पालनी पड़ती है। इसके बाद ही मीटिंग शब्द तुम अपनी जबान पर ला सकती हो,” औरतो को समझाने की काशिश में रजम्योल्तोव बोला।

पर वे उसे नहीं सुन रही थी। उसकी पतलून, आम्मीने और कमीज के पल्ले को खीच-खीचकर क्रुद्ध अद्रेई को घसीटती हुई स्कूल में जा रही थी। वे चिल्ला रही थी

हम नहीं बैठना चाहती खदको में।

मोर्चे पर नहीं जाना चाहती।

शुरू करो मीटिंग, नहीं तो हम खद शुरू कर देंगी।

कुतिया क पिल्ले भूट बोलता है। तू अध्यक्ष है। तू जब चाहे मीटिंग कर सकता है।’

अद्रेई ने औरतो को धकेलकर कानों में उगलिया ठूमी और बड़ी जोर से चिल्लाकर बोला

चप हो गईयो! थोड़ा पोछे हटो! तुम्हें किमलिये मीटिंग की जरूरत है।’

‘अनाज के लिये! हम तुम्हारे माथ अनाज की बात करेंगे।’

हारकर रजम्योल्तोव को कहना पड़ा

“मे सभा शुरू करता ह।

‘बोलने की अनुमति दो, विधवा येकातेरीना गुल्याशाया ने माग की।

बोल भी गैतान की दुम।’

तू गानी मन बक अध्यक्ष! नहीं तो मैं तुम्हें छठी का दूध याद दिला दूँगी। यह किसक हुक्म पर आपने हमारा अनाज खसोटने की

आज्ञा दी ? किसने यास्कीवालो को देने को कहा और ऐसी भी किस जरूरत के लिये ?” गुल्याशाया कूल्हो पर हाथ रखकर भटकते हुए उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी।

अद्रेई ने नाक में दम करती मक्खी की तरह उसे झिड़का।

“कामरेड दवीदोव ने तुम्हें अधिकृत रूप से समझा दिया था। और सभा मैंने ऐसी बेवकूफी भरी बातों के लिये नहीं बल्कि इसलिये बुलायी ” अद्रेई उसास लेकर आगे बोला “कि प्यारी बहिनो, हमें गिलहरियों में संघर्ष के लिये अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिये ”

अद्रेई की चाल चली नहीं।

“मार्मटो की फुर्सत नहीं हमें।”

“अनाज दो।”

“मरदुए, तुम्हें कौआ काटे। मार्मटो की बात करने लगा। और अनाज के बारे में कौन बोलोगे ?”

“उसके बारे में बोलने को कुछ नहीं है।”

“आहा, कुछ नहीं ? हमें लौटा दो हमारा अनाज।”

औरते गुल्याशाया की अगुआई में मंच की ओर बढ़ने लगी। अद्रेई मंच के सिरे पर खड़ा था। वह मुस्कराते हुए औरतों की ओर देख रहा था पर मन ही मन वह कुछ आशंकित था औरतों के पीछे खड़े कज्जाको के चेहरे कुछ ज्यादा ही सख्त थे।

“सर्दियों और गर्मियों में बूट पहनकर घूमते हो और हमारे पास चप्पल खरीदने तक के पैसे नहीं हैं।”

“कोमिस्सार बन गये हो।”

“अभी हाल ही तक तो मरीना के पति की पतलून कौन घिस रहा था ?”

“ठूस-ठूसकर थूथनी मोटी हो गयी।”

“उतार दो इसके कपड़े, लुगाइयो।”

अधाधुध गोलिबारी की तरह चीख-चिल्लाहट मच गयी। कई दर्जन औरतें मंच के पाम झुंड बनाये खड़ी थीं। अद्रेई उन्हें शांत कराने का विफल प्रयास कर रहा था, उसकी आवाज ही नहीं सुनायी पड़ रही थी।

“उतार लो इसके बूट। चलो, लुगाइयो, मिलकर।”

पलक भपकने अनेक हाथ मच की ओर बढ़े। उन्होंने अट्रेई की बायीं टांग पकड़ ली। वह बूथ में चिपक गया, गुस्से में लाल-पीला होने लगा पर पैर से बूट उतारकर पीछे फेंका जा चुका था। अनेक हाथ बूट को लपककर और भी पीछे फेंक देने, भयावह ठहाके गूजने लगे। पिछली कतारों से मर्दों की उत्साहवर्द्धक आवाजे सुनायी दी

“उतार दो बूट इसके।”

“पतलून भी उतार दो।”

“दूसरा बूट भी उतारो।”

“लुगाइयो, गिरा दो साइ को।”

और अट्रेई का दूसरा बूट भी खींचकर उतार लिया। उसने पैर भटककर पायताबे उतारे और गला फाड़कर चिल्लाया

“और क्या पायताबे नहीं चाहिये? ले लो। शायद किसी की नाक पोछने के काम आ जाये।”

मच की ओर तेजी से कई नौजवान आ रहे थे। उनमें से एक—मांटे हांठोवाला लब-तडग जवान, निजी किमान येफीम त्रूबाचोव और तो को धकेलकर मच पर चढ़ गया।

“हमें तुम्हारे पायताबे नहीं चाहिये,” वह हाफते हुए मुस्कराकर बोला, पर अध्यक्ष, पतलून हम तुम्हारी उतार लेगे।”

“पतलून की हमें मम्न जरूरत है। गरीब लॉग बिना पतलून के घमने है और कुलको का माल सब के लिये काफी नहीं पड़ा,” दूसरा, कद और उम्र में कुछ छोटा, पर देखने में बड़ा शातिर, लापरवाही के साथ बोला।

यह लड़का जिसे सब लॉग दिमोक कहकर पुकारते थे, बड़े घुघगले बालोंवाला था। उसकी पुगनी कज्जाकी छज्जेदार टोपी के नीचे में मर्मई बालों के ऐसे गुच्छे लटकते रहते थे कि मानो कभी कधी ने उन्हें छुआ ही न हो। दिमोक का बाप जर्मनी में युद्ध में मारा गया और मा की टाइफस में मृत्यु हो गयी, नन्हा दिमोक अपनी बुआ के यहाँ पला। बचपन में वह पगयी मागबार्डियो में खीरे और मालिया बागों में चेरी और सेब, पलेज में बोरियो में भर-भरकर तरबूज चुराकर लाता, और जब सयाना हो गया, तो उसे गाव की लड़कियों को खराब करने का चस्का पड़ गया और वह इसके लिये इतना बदनाम हो गया कि गाव की एक भी सयानी बेटीवाली मा दिमोक को, उसकी

नाटी, पर बाज़ की तरह चुस्त आकृति को चुपचाप नहीं देख सकती थी। उसे देखकर वह थूकती और फुफकारकर कहती

“कजा शैतान आ रहा है। लेडी-कुत्ते की तरह गाव में मटकता फिरता है” और अपनी बेटी की ओर मुड़कर कहती “तू क्यों आखे फाड़े खड़ी है? क्यों खिड़की से चिपकी है? तू लाकर देख इसमें कुछ अपने दामन में, मैं अपने हाथों में तेरा गला घोट दूंगी। जा कुतिया, उपले ला और गाय के लिये फाटक खोल।”

और दिमोक टूटी चप्पलो में मतर्क जानवर की तरह दबे पाव, सीटी बजाता बाड़ी के पाम टहलता, चमकीली, मुड़ी पलकोवाली आखों में खिड़कियो, अहानों में भाकता चलता, और जैसे ही कहीं लड़की नजर आती, तो देखने में आलसी, फूहड़ दिमोक पलक झपकते ही बाज़ की तरह मिर घुमाकर चुस्त हो जाता। पर उसकी मफेंद-मी आखों में हिंस्र भाव नहीं बल्कि अगाध स्नेह टपकता, ऐसे क्षणों में दिमोक की आखों तक का रंग बदल जाता, वे जुलाई के निर्मल आकाश की तरह नीली हो जाती। लड़की का नाम लेकर वह कहता, “फव्वलशा मेरी रानी। आज अघेर होते ही मैं पिछवाड़े में आ जाऊंगा। आज तुम सोओगी कहा?” लड़की दौड़कर हड़बड़ी में अभेद्य कठोरता में कहती “हाय, आप छोड़िये भी ऐसी बातें।”

दिमोक समझपूर्ण मुस्कान के साथ उसे जाते देखता और आगे बढ़ जाता। सूर्यास्त के समय सामूहिक खत्ती के पाम अपने निष्कामिल मित्र तिमोफेई नकटे का अकार्डियन बजाता और जैसे ही बागों और कुत्ता में अघेर घना हॉन लगता लोगों और दारों की आवाज़ें शान हो जाती वह टहलता हुआ फव्वलशा के घर की ओर चल पड़ता और उदाम फमफमाहट करते पाप्पर वृक्षों की फनगियों, नीरव गाव के ऊपर आकाश में दिमोक की तरह ही एकाकी, गोल चेहरेवाला चांद विचरता।

लड़किया ही दिमोक का एकमात्र शौक नहीं थी, उसे वोदका में भी लगाव था और मार-पीट तो उसे सबसे प्रिय थी। जहां भी लड़ाई होती, वही दिमोक होता। शुरू में वह पीठ के पीछे हाथों को कमकर पकड़े, मिर टेढ़ा करके देखता रहता, फिर उसके घुटने कापने लगते, कपकपी बढ़ती जाती और दिमोक अपने जोश पर नियंत्रण खोकर लड़ाई में कूद पड़ता। बीस की उम्र तक वह कोई आधा दर्जन दान

खो चुका था। अनेक बार उसकी ऐसी धुनाई हो चुकी थी कि मुह से खून बहने लगता था। लडकियों की बजह से भी उसकी पिटाई होती और हाथापाई के माध्यम से होती पगयी बहम से टांग अडाने के लिये भी। खासकर खून थूकता दिमोक महीने भर, सदा अपने भाग्य का रोना रोती बुआ के यहा पडा रहता, और फिर से शाम को जमने-वानी लडके-लडकियों की मडली में आ जाना। दिमोक की नीली-सी आखे और भी चमकीली हो जाती, बाजे की कूजियों पर उसकी उग-लिया और भी चपलता से चलने लगती, बस आवाज ही बीमारी के बाद फटी-फटी-सी होती जैसे पुराने हार्मोनियम की घिसी धौकनी की।

दिमोक के शरीर से जान निकालना बड़ा मुश्किल था—वह बिल्ली की तरह नौ जीवनवाला था। उसे कोम्मोमाल से निकाला जा चुका था गडागदी और आगजनी के लिये उस पर मुकदमा चल चुका था। शांति भग करने के लिये अट्रेई कट बाग उसे गिरफ्तार करके ग्राम-मोवियत की काठरी में रात भर के लिये बंद कर चुका था। दिमोक के मन में कब से उसके प्रति बड़ा क्रोध उफन रहा था और अब बदला लेने का उचित मौका देखकर वह हिमाब माफ करने के लिये मच पर चढ़ा

वह अट्रेई के पास जाता जा रहा था। उसके घटने काप गड़े थे लगता था कि वह मानो फटककर चल रहा है।

“हम पतलून दो ” दिमोक दहाडा चल जल्दी उतार। ”

मच लगाटयो में भरता जा रहा था सदस्रवाट भीट ने फिर से अट्रेई को कमकर घेर लिया।

“मै—अध्यक्ष हू।” रजम्योत्लोव चिल्लाकर बोला। “मेरी हमी उडाना मोवियत मत्ता की हमी उडाने जैसा है। हटो पीछे। मै अनाज तुम्हे नहीं लेने दूंगा। मै मभा बंद करता हू। ”

“खुद ले लेगे अनाज।”

“हा-हा। बंद कर दी।”

“खुद खोल लेगे।”

“चलो दवीदोव के पास, उसे भी जरा मजा चखाये।”

“अरे चलो, फार्म के दफ्तर।”

“रजम्योत्लोव को पकड़े रखो।”

“अरे लौंडा, कर दो उसकी पिटाई।

“क्यों ताक रहे हो इसका मुह ?।”

“यह स्तालिन के खिलाफ है।”

“बद कर दो इसे।”

एक औरत ने मच पर रखी मेज से माटिन का लाल मेजपोश उतारा और पीछे से जाकर उसमें रजम्योत्लोव का सिर लपेट दिया। जब अद्रेई धूल और स्याही की गंधवाले मेजपोश को सिर से उतार रहा था, दिमोक ने उसकी पसलियों पर घूसा मारा।

अद्रेई ने सिर पर से मेजपोश उतारा। अपार क्रोध और दर्द में हाफते हुए उसने जेब से रिवाल्वर निकाला। औरते चिल्लाकर पीछे हट गयी पर दिमोक येफीम त्रूबाचोव और मच पर चढ़े और दो कज्जाको ने उसके हाथ मरोड़कर निहत्था कर दिया।

“जनता पर गोली चलाना चाहता था। देखो तो कुतिया की औलाद को।” सिर के ऊपर रजम्योत्लोव का, बिल्कुल खाली, जिसके मैगजीन में एक भी गोली नहीं थी, रिवाल्वर उठाकर येफीम त्रूबाचोव विजयोल्लाम के साथ बोला।

खतियों के पास में आती जनसमूह की गरज को सुनकर दवीदोव की चाल अनायास ही धीमी पड़ गयी। पुरुषों की भारी आवाजों के बीच औरतों की ‘आई-ई-ई-ई’ अलग से सुनायी पड़ रही थी ठीक वैसे ही जैसे पतझड़ में पहल पाले के बाद जंगल में बड़े शिकार का पीछा करनेवाले कुत्तों की भौ-भौ के बीच शिकारी कुतिया की मिसक भरी भूक।

“दूसरी टोली को बुलवा लेना चाहिये, नहीं तो मार्ग अनाज उठा ले जायेंगे,” दवीदोव ने सोचा। उसने बीज की खतियों की चाबियाँ छिपाने के लक्ष्य में दफ्तर में लौटने का फैसला किया। द्योम्का उशाकोव घबराया फाटक पर खड़ा था।

“मैं छिप रहा हूँ, कामरेड दवीदोव। नहीं तो चाबियों के लिये मेरी जान निकाल लेंगे।”

“जो तुम्हारी मर्जी। नाइद्योनोंव नहीं है ?”

“वह दूसरी टोली के पास गया हुआ है।”

“दूसरी टोलीवाला कोई है यहाँ ?”

“कोद्रात माइदानिकोव है।”

“कहा है ? यहाँ क्या कर रहा है ?”

“बीज लेने के लिये आया है। वह आ रहा है दौड़ता हुआ।”

माइदानिकोव तेजी से उनकी ओर आ रहा था। दूर ही से चाबुक घुमाकर वह चिल्लाया

“अट्रेई रजम्योन्नोव को जनता ने गिरफ्तार कर लिया। उसे नहसाने में बंद करके अब खत्तियो की ओर जा रहे हैं। कामरेड दवी-दोव, तुम कहीं छिप जाओ नहीं तो न जान क्या हो जाये लोग पागल हो गये हैं।”

“मैं नहीं छिपूंगा। तुम्हारा दिमाग तो ठीक है न। लो पकड़ो चाबिया और टोली में जाकर ल्युबीशकिन में कह दो कि पद्रह-एक लोगों के साथ घोंडो पर बैठकर फौर्गन यहाँ आ जायें। देखत हा यहाँ दगा शुरू हो रहा है। टलाकेंवालो को परेशान नहीं करना चाहता, खुद निबट लेंगे। तुम कैसे आये हो?”

घोडागाड़ी में।”

“घोड़े का खोल लो और उस पर सवार होकर, जल्दी से जाओ।”

“अभी पलक भपकते ही।” माइदानिकोव जेब में चाबिया ठूसकर दौड़ पड़ा।

दवीदोव आराम से खत्तियो के पास आ रहा था। उसके आने की प्रतीक्षा में भीड़ कुछ शांत हो गयी। ‘आ रहा है, हगमी।’ कोई औरत दवीदोव की ओर इशारा करके उन्माद में चीखी। पर वह जल्दी में नहीं था, सबके सामने वह मिगरेट सुलगाने के लिये रुका हवा की आंग पीठ करके उसने माचिस जलायी।

‘आ, इधर तो आ। मिगरेट पीने का तो बहुत वक्त मिलेगा।’

“परलोक में पी लेना जी भरकर मिगरेट।”

‘पता नहीं चाबी ला रहा है या नहीं’

‘शायद, ला रहा है।’ उसे तो मालूम है कि हम उसकी खबर लेनेवाले हैं।’

दवीदोव जेबों में हाथ ठूसकर धुआ उड़ाता अगली कतारों के पास आया। भीड़ पर उसके आत्मविश्वास और शांत चेहरे का विविध प्रभाव हुआ कुछ लोगों को महसूस हुआ। इस आत्मविश्वास का कारण यह है कि दवीदोव को अपनी पीठ पीछे खड़ी शक्ति और श्रेष्ठता का बोध है। दूसरे उसके शान्त चेहरे को देखकर तिलमिला उठे। टीन की छत पर बरमते आँवों की तरह लोगों की चिल्लाहटे सुनायी पड़ी

“चाबी दो।”

“सामूहिक फार्म बद करो।”

‘बिस्तर गाल कर अपना। किमने तुझे बुलाया था?’

‘बीज दे।’

“हमे क्यों नहीं बोने देते?”

मद-मद बहती हवा औरतो के सिरो पर बधे रूमालो के कोनो से खेल रही थी, खत्तियो के छप्पगे को मग्मरा रही थी, स्तेपी से सूखती मिट्टी की फीकी गध और हरी घास की कच्ची अगूरी की तरह मादक मुगध ला रही थी। पाप्पर वृक्षो की फूलती कलियो की मधुर सुगध इतनी मीठी थी कि जब दबीदोव ने बोलना शुरू किया तो उसे ऐसा आभास हुआ मानो उसके होठ चिपचिपे हैं और जीभ को तालू से छूकर उसे शहद का स्वाद तक महसूस हो रहा था।

“नागरिको, आप क्यों मोवियत सत्ता के आदेश नहीं मान रहे? आपने याम्स्की के सामूहिक फार्म को क्यों नहीं दिया अनाज? क्या आपने यह नहीं सोचा कि इस प्रकार आपने बोवाई अभियान को भग किया और आपको अदालत के कटघरे में खड़ा होना पड़ेगा? सच कहना है। मोवियत सत्ता आपको इसके लिये हरगिज माफ नहीं करेगी।”

“उस समय तुम्हारी मोवियत सत्ता हमारी कैद में बंद है। चुपचाप बंद है तहखाने में।” नाटे और लगटे निज्जी किमान मीगेन दोब्रोदेयव ने उत्तर दिया, उसका तात्पर्य रजम्योल्लोव की गिरफ्तारी में था।

कृष्णक हम पड़े पर हमामची आगे आकर गुम्मे में चिल्लाया

‘मोवियत सत्ता यह नहीं कहती, जो तुम अपनी मनमानी में कर रहे हो। हम तुम्हारी और मकार नागूल्नोव की बनायी मोवियत सत्ता को नहीं मानते। यह कहा का फैशन है खेतीहर को बोवाई न करने देने का? यह क्या है? यह पार्टी की विकृति है।’

“क्या, तुम्हें नहीं बोने देते?”

“और क्या, नहीं?”

“तूने सामूहिक खेती में बीज जमा करवाये थे?”

“हां, करवाये थे।”

“तुम्हें वापस मिल गये?”

“हां, मिल गये। तो आगे क्या?”

“कौन तुम्हे नहीं बोने दे रहा? यहाँ खती के पास तेरा क्या काम?”

बात के इस अप्रत्याशित मोड़ से हमामची कुछ सक्पका गया, पर उसने अपनी मफाई देने की कोशिश में कहा

“मैं अपनी नहीं, उन लोगों की चिंता करता हूँ जो सामूहिक फार्म से निकल गये और जिन्हें आप अनाज नहीं वापस कर रहे और सामान भी नहीं लौटाते। बात यही है। और मुझे भी तो आपने कौनसी जमीन दी है? क्यों इतनी दूरवाली दी है?”

“जाओ, रास्ता नापो।” दबीदोव से नहीं रहा गया। “तुम से हम बाद में करेंगे बात, फैंकट। और फार्म के मामलों में अपनी नाक मत घुसेड़ो, नहीं हम भट से काट देंगे। तुम लोगों को भड़काने हों। जाओ, जाओ रास्ता नापो।”

हमामची धमकिया बड़बड़ाता हुआ पीछे हट गया और उसका स्थान औरतो ने ले लिया। वे सब एक स्वर में चिल्लाने लगी, दबीदोव को वे अपना मुँह तक नहीं खोलने दे रही थी। वह किसी तरह समय खींचना चाहता था ताकि ल्यूबीशकिन अपनी टांगी के साथ आ जाये। पर औरतो ने उसे घर लिया, पुराना के मौन समर्थन का महसूस करके वे ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी।

दबीदोव ने इधर-उधर नज़रे दौड़ाये, उसे कुछ दूरी पर मरीना पोयाकोवा खड़ी दिखायी दी। वह कोहनी तक खुले अपने वॉलण्ट हाथों को बाधे खड़ी, औरतो से कोई बात कर रही थी, उसकी काली भौंहे चढ़ी हुई थी। दबीदोव पर उसकी द्वेषपूर्ण नज़र पड़ी और तभी उसे मरीना के पाम उत्तेजित मुस्कान के साथ याकोव लुकीच दिखायी दिया वह देसीद घुन्न के कान में कुछ फुसफुसा रहा था।

‘ला चाबिया। चुपचाप दे दे, मुना पूने’

एक औरत ने दबीदोव का कंधा पकड़कर उसकी जेब में हाथ डाला।

दबीदोव ने उसे ज़ोर से धक्का दिया। औरत पीछे हटकर पीठ के बल गिर गयी और कृत्रिम स्वर में चिल्लायी

“अरे, मार डाला। बचाओ भल लोंगा, बचाओ।”

‘यह क्या बदतमीजी है?’ कोई भीड़ की पिछली कतारों से पतली कापती आवाज़ में बोला। ‘हाथापाड़े शुरू करना है? अरे

जग एक-दो हाथ तो भाडना, ताकि उसकी नाक से रेट निकल पड़े। ”

दबीदोव ने जमीन पर गिरी औरत को उठाने के लिये कदम बढ़ाया ही था पर किमी ने उसकी टोपी गिरा दी, उसके मुह पर कई चाटे पड़े और पीठ पर घूसे बरसे, किसी ने उसके हाथ पकड़ लिये। कधे भटककर उसने उसे पकड़नेवाली औरत को हटाया पर वे फिर चिल्लाकर उससे लिपट गयी, कमीज का कालर फाड़ दिया और कुछ ही सेकेड मे उसकी मारी जेबे टटोलकर उलट दी।

“नही है इसके पास चाबिया ।”

“कहा है चाबिया ? ”

“दे दे। नही तो ताले तोड़ लेगे।”

हट्टी-कट्टी बुढ़िया - मिखाईल इग्नात्योनोक की मा, घुरघुराती हुई भीड को चीरकर दबीदोव के पास आयी और मा की गाली देकर उसके मुह पर थूककर बांली

“ले राक्षस, शैतान, नास्तिक कही का।”

दबीदोव का चेहरा सफेद पड़ गया, उसने पूरा जोर लगाकर हाथ छुड़ाने की कोशिश की पर लगता था कि कोई मर्द औरतों की मदद को आ गया था। किमी की लौह उर्गालियों ने सड़मे की तरह पीछे मे उसकी कोहनियों को जकड़ लिया। तब दबीदोव ने छूटने का प्रयास छोड़ दिया। वह समझ गया कि बात बहुत बढ़ गयी है और वहा उपस्थित कोई भी व्यक्ति उसकी मदद नही करेगा। उर्मालिय उसने दूमरा रास्ता अपनाने का फैसला लिया।

“नागरिको, खतियो की चाबी मेरे पास नही है। चाबिया हमेशा ”

दबीदोव अटक गया वह कहना चाहता था कि चाबिया उसके पास नही रहती, पर उसके दिमाग मे कौधा कि अगर वह यह कहेगा तो भीड द्योम्का उशाकोव को दूहन के लिये दौड़ पड़ेगी, शायद वे उसे दूढ़ लेगे और तब द्योम्का की खैर नही, ये उसे जान से मार डालेगे। “कह दूगा कि मेरे घर पर है, वहा दूढ़कर कह दूगा कि खो गयी। इतने मे ल्युबीशिकन भी आ जायेगा, मुझे जान से मारने की इनमे हिम्मत नही होगी। अरे, देख लेगे।” वह चुप हो गया, गाल पर लगी खरोच मे बहते खून को कधे से पोछकर वह बोला “चाबिया मेरे क्वार्टर म है पर मै तुम्हे नही दूगा और ताले तोड़ने के लिये तुम्हे कडी सजा मिलेगी। तुमको यह समझना चाहिये।”

“ले चल अपने कौंटर मे। हम अपने आप ले लेगे,” इग्नात्योनोक की मा धकेलकर बोली।

उत्तेजना से उसके लटके गाल और नाक पर बड़ा मस्सा काप रहा था। भुर्रियो से ढके चेहरे पर निरंतर पसीना बह रहा था। सबसे पहले उसीने दबीदोव को धकेला और वह सहर्ष, पर धीरे-धीरे अपने घर की ओर चल पड़ा।

‘क्या चाबिया वही है?’ कही तुम भूल तो नहीं गये?” हमामची की पत्नी अब्दोत्या ने पूछा।

“वही है, मौसी मेरी।” सिर झुकाकर मुस्कान को छिपाते हुए दबीदोव ने उत्तर दिया।

चार औरते उसके हाथ पकड़े और पाचवी पीछे-पीछे मोटी सोटी उठाये चल रही थी। दायी ओर थुल-थुल हिलती इग्नात्योनोक की बुढ़िया मर्दों जैसे लम्बे-लम्बे डग भरती चल रही थी और बायी ओर औरते छोटे-छोटे भुंड बनाकर चल रही थी। मर्द चाबियो की प्रतीक्षा म खनियो के पास रह गये थे।

“हाथ छोड़ दो, मौसी जी। मैं कही भागूंगा नहीं,” दबीदोव अनुरोध कर रहा था।

‘कौन जाने तेरे मन की बात, कही भाग ही न जाये तू।”

“अरे नहीं।”

‘हमारी पकड़ मे चल कम से कम हम शांत रहेगी।”

वे दबीदोव के घर पर पहुँचे, टहनियो की बाड़ और फाटक गिराकर औरते अहाते मे घुस गयी।

“जा, ला चाबिया। अगर नहीं लाया तो फौरन मर्दों को बुला लेगे, वे भूट से तेरी गर्दन मरोड़ देगे।”

“अरे, मेरी ताइयो, बड़ी जल्दी तुम भूल गयी मोबियत सत्ता को। पर वह तुम्हे इसके लिये माफ नहीं करेगी।”

“आगे खड्ड और पीछे खाई। हमे कोई फर्क नहीं पड़ता, सजा भुगने या बोवाई न करन की वजह पतझड़ मे भूखो मरे। अरे, तुम जाओ, लेकर आओ।”

दबीदोव ने अपने कमरे मे प्रवेश किया, उसे मालूम था कि उस पर नजर रखी जा रही है, इसलिये उसने बड़ी लगन से खोजने का दिखावा किया। उसने सूटकेस पूरा उलट-पलट दिया, मेज़ पर एक-एक

कागज को भाड़कर देखा, पलंग और टेढ़े पायेवाली मेज के नीचे घुसकर देखा...

“नहीं हैं चाबियां,” बाहर निकलकर वह बोला।

“तो कहा है?”

“शायद नागूल्लोव के पास हों।”

“पर वह तो गया हुआ है!”

“तो क्या हुआ?!” चाबियां तो क्या पता छोड़ गया हो। आज हमें दूसरी टोली को बीज देने थे।’

औरते उसे नागूल्लोव के घर की तरफ ले चली। रास्ते में उसे पीटने लगी। शुरू में तो हल्के से धक्के देकर गालियां सुना रही थी पर बाद में इस बात से खीजकर कि वह हर वक्त हसता हुआ मजाक किये जा रहा था वे उसकी कसकर पिटाई करने लगी।

“लुगाइयो! मेरी महबूबाओ! तुम कम से कम सोटियो से तो मत मारो,” वह बड़ी मुश्किल से मुस्कराता सिर दुबकाकर, आम-पास की औरतो को नोचता हुआ अनुरोध कर रहा था।

उमकी चौड़ी भुकी पीठ पर दनादन मार पड़ रही थी, पर वह सिर्फ कराहकर कंधे हिलाता और दर्द के बावजूद अभी भी मजाक करने का प्रयास करता:

‘ओ नानी! तेरे मरने का वक्त आ गया पर तू लड़ रही है। तू में भी तुझे एक बार मार, क्यों?’

“बुत कही का! ठंडा पत्थर!” जवान नास्तेन्का दोनेन्स्कावा, जो दवीदोव की पीठ पर अपनी छोटी-छोटी, पर मजबूत मट्टिया बरसा रही थी लगभग रोते हुए बोली, “मेरे हाथों में चोट लग गयी पर यह उफ तक नहीं कर रहा।”

“मोटियो में नहीं मारो!” सिर्फ एक बार दात भीचकर दवीदोव मस्ती से बुदबुदाया और किसी लुगाई के हाथ से भिसे की सूखी लकड़ी के खूटे को छीनकर घुटने से तोड़ दिया।

उसके कानों से खून बह रहा था, होठ और नाक फूट गये, पर वह अभी भी मूजे होंजों से मुस्कुरा रहा था। वह धीरे-धीरे उन औरतो का धक्का देता चल रहा था जो कुछ ज्यादा ही जोंग में उसे मार रही थी। इग्नात्योनोक की नाक पर हिलते मस्मेवाली बुढ़िया उसे बहुत मार रही थी। उसके मारने पर बड़ा दर्द होता, वह या तो आंखों के

बीच या कनपटियो पर घूसे मारती और दूसरो की तरह नही बल्कि उभरी हड्डियोवाली तरफ से घूसा मारती। दवीदोव चलते-चलते उमकी तरफ पीठ मोड़ने का निष्फल प्रयास करता। वह घुरघुर करती औरतो को हटाकर दवीदोव के सामने जाकर फुफुकारती

“जग मैं इमका भमरा छेत दू। भमरा इमका।”

“जग देखके रहता शैतान की दुम घूमा म बचत हण दवी-दांव गुस्से को छिपाते मोच रहा था, “जैसे ही ल्युबीशिकन दिखायी पडेगा, मैं तुम्हे ऐसा मजा चखाऊंगा कि छठी का दूध याद आ जायेगा तुम्हे।”

घुडमवारो के साथ ल्युबीशिकन अभी तक नही आया। भीड नागूलनोव के घर के पास पहुची। इस बार दवीदोव के साथ औरते भी कमरे में घुम गयी। उन्होने सब उलट-पलटकर देखा, कागज किताबें कपडे सब बिखर दिये, मवान-मालिक तक की तलाशी ली। स्वभाविक ही था कि चाबिया नही मिली। वे धक्का देकर दवीदोव को बाहर लायी।

“कहा है चाबिया? तुम्हे मार डालेगे बता।”

‘ओम्ब्रांनोव के पास है’ खनियो के पाम भीड में खडे याकोव लुकीच के दुर्भाविना के साथ मुस्कराते चेहरे को याद करके दवीदोव बोला।

“भूठ! हमने उससे पूछा था। उसने कहा कि तुम्हारे पाम ही होनी चाहिये चाबिया।”

‘नागरिको!’ दवीदोव ने अपनी मूँक फूली नाक को छुआ और हौले से मुस्कराकर बोला “नागरिको! बेकार ही तुमने मुझे पाँटा चाबिया दफ्तर में है मेरी मेज की दरान में, फैंक। अब मझे याद आया।’

“अरे तो हमारी हसी उड़ाता है।” खनियो से आयो येकातेरीना गुल्याशाया चीखकर बोली।

“मुझे उधर ले चलो। हसी की क्या बात है? बस, कृपया मार-पीट नही करो।”

दवीदांव ड्याढी से उतरा। उस प्याम और नपुमक क्रोध सता रहे थे। पिटाई उसकी बहुत बार हो चुकी थी, पर औरते पहली बार पीट रही थी, इस कारण वह बड़ा अजीब महसूस कर रहा था। “बस गिरू नही, अगर गिर पडा तो क्या पता नोच-नोचकर मार डाले।

बड़ी बेहूदा मौत होगी, फ़ैक्ट! कटक की ओर आशा के साथ देखता हुआ वह सोच रहा था। पर सड़क पर न तो घोड़ों के खुरों से उड़ती धूल और न ही घुड़सवारों का दल दिखायी पड़ा। क्षितिज पर सुदूर टीले तक फैला कटक निर्जन था... सड़कें भी इसी तरह निर्जन थीं। सब खत्तियों के पास जमा थे, वहां से कोलाहल आ रहा था।

फ़ार्म के दफ़्तर पहुंचते-पहुंचते दबीदोव की इतनी पिटाई की जा चुकी थी कि वह बड़ी मुश्किल से पैरों पर खड़ा था। वह अब मज़ाक नहीं कर रहा था। सपाट जगह पर ठोकें खाता वह अकसर सिर को पकड़ता। वह भरपूर स्वर में अनुरोध करता :

“बस करो! मार डालोगी। सिर पर मत मारो... नहीं हैं मेरे पास चाबियां! रात तक तुम्हें ऐसे ही घुमाता रहूंगा, पर चाबियां नहीं... नहीं दूंगा!”

“अच्छा! रात तक?!” क्रुद्ध औरतें जोक की तरह दबीदोव के निढाल शरीर से चिपक गयी, वे खरोचने, पीटने यहा तक कि दांतों से काटने लगी।

सामूहिक फ़ार्म के कार्यालय के अहाते के सामने दबीदोव मड़क पर बैठ गया। उसकी किरमिच की कमीज़ खून से तर थी, उसकी छोटी शहरी पतलून (पायचों पर घिसी) घुटनों पर फट गयी थी, कमीज़ के खुले कालर से सांवली गुदी छाती भांक रही थी। वह घुरघुर करता हांफता बड़ा दयनीय लग रहा था।

“उठ, कुनिया की औलाद!” इग्नात्योनोक की बुढ़िया पैर पटक-पटककर कह रही थी।

“हरामज़ादो, तुम्हारे लिये ही तो! अचानक दबीदोव जोर से बोला। उसने अजीब-सी चमक भरी अपनी आंखें दौड़ायी। “तुम्हारे भले के लिये ही तो कर रहे है! और तुम मुझे मार रही हो.. हरामज़ा-दियो! नहीं दूंगा चाबियां। ममभी?! नहीं दूंगा!”

“अरे छोड़ दो इसे!” वहां दौड़ी आयी एक लड़की चिल्लायी। “कज़्ज़ाकों ने ताले तोड़ दिये हैं, अनाज बांट रहे हैं।”

औरतें दबीदोव को दफ़्तर के फाटक के पास छोड़कर खत्तियों की ओर दौड़ पड़ीं।

दबीदोव बड़ा जोर लगाकर उठा, अहाते में घुसकर वह कुनकुने पानी से भरी बालटी ओसारे पर लाया, बड़ी देर तक पानी पीता

रहा, फिर मिर पर पानी डालने लगा। कराहने हुए, उसने चेहरे और गर्दन से खून धोया, ड्योढी पर टगी घोड़े की भूल से हाथ-मुह पोछा और दहलीज पर बैठ गया।

अहाता सुनसान था। कहीं कोई आशंकित मुर्गी कुट-कुट कर रही थी। चिड़ियों के लिये बने लकड़ी के घरौंदे की छत पर बैठा काला भरत पक्षी सिर उठाकर कूज रहा था। स्तेपी में मर्मटो की मीटिया मुनाई पड़ रही थी। बैगनी बादलों के भीने परदे ने मूरज को ढक दिया था, पर इसके बावजूद इतनी घुटन थी कि अहाते के बीचोंबीच राख क ढेर में नहाती गौरैया गर्दन पसारकर उड़ लेंटी थी, बम कभी डैने खोलकर पखा-सा भलती।

घोड़े की अस्फुट टाप सुनकर दवीदोव ने मिर उठाया फाटक में जीन कसा नाटा समद घोड़ा मरपट दौड़ता घुसा। तेजी से मूडकर उसने पिछली टांगों में जमीन खोदी और फुफकारते हुए अहाते का चक्कर लगाया, उसके पुटों में तपती जमीन पर भाग टपक रहा था। अस्तबल के दरवाजे पर रुककर वह देहरी को मूधने लगा।

उसकी मदर चादी के कामवाली लगाम टूटी हुई थी गंमे लटकी हुई थी जीन अयाल तक खिसक गयी थी पशवद की टूटी पटिया जमीन तक लटकी काली सीपियों की तरह चमकते सुमों को छू रही थी। वह गुलाबी नथूनो को फ्लाकर बुरी तरह हाफ रहा था। उसकी मुनहरी अलक और उलभी अयाल में पिछल माल के मुग्भाय गोख्रा के कथर्ड गुच्छे चिपके हुए थे।

दवीदोव आश्चर्य के साथ घोड़े को देख रहा था। तभी फूम की कोठरी का दरवाजा चरमगराकर खुला और बुड़े श्चुकार का सिर बाहर निकला। कुछ देर बाद बड़ी सावधानी से दरवाजा खोलकर डगते-डगते डधर-उधर देखकर वह खुद भी निकला।

पसीने से तर उसकी कमीज घास-फूस से ढकी हुई थी, गुच्छेदार दाढ़ी में घास के तिनके, पत्तियां, सूखे फूल फसे हुए थे। बुड़े श्चुकार का चेहरा पकी चेरी की तरह लाल था, उस पर असीम भय की छाप थी। श्चुकार की कनपटियों में बहती पसीने की धारा कपोलो और दाढ़ी को भिगो रही थी

“कामरेड दवीदोव!” उच्चकर पजों के बल चलते हुए ड्योढी के पास जाकर अनन्यपूर्ण फुसफुसाहट में वह बोला, “भगवान के

लिये, आप छिप जाइये। जहाँ उन्होंने लूट मचा दी, तो खून-खराबा होने में भी देर नहीं। देखो तो आपकी क्या दुर्गत बनायी है, पहचानना मुश्किल है। मैं फूस में छिपा था घुटन बहुत जबरदस्त है, मैं पसीने से पूरा तर हो गया पर मन के लिये शांति है, भगवान की कसम। आइये, दगा रुकने तक साथ छिपकर बैठे जाये, क्यों? अकेले तो जी घबराता है हमें क्या पड़ी है मुफ्त में मौत को गले लगाने की। आप खुद सुनिये कैसे औरते भिड़ के छत्ते की तरह भाय-भाय कर रही है, लकवा मारे उनकी जबान को। नागूल्लोव का भी लगता है काम तमाम कर डाला। यह तो उसी का घोड़ा दौड़ा आया है उसी नाटं पर वह सुबह को कस्बे गया था। सवेरे फाटक से निकलते वक्त उसके इसी घोड़े को ठोकर लगी थी। तभी मैंने उसे कहा था 'लौट आओ मकार, बड़ा खराब शकुन है।' पर उसने भला कभी किसी जानकार आदमी की बात सुनी है? जिदगी भर नहीं। हमेशा अपने मन की करता है, बस इसीलिये मारा गया। अगर मेरा कहना मानकर लौट आता तो अब कहीं आराम में छिपकर बैठ सकता था।'

"क्या पता वह इस समय घर पर हो?" दवीदोव शय के साथ बोला।

घर पर? तो घोड़ा क्यों खाली दौड़ा आया और उसे फुटकार रहा है मानो उसने मूर्ख को सूँघा हो। बात माफ है मकार कस्बे में लौटा तो उसने देखा कि खानियों में अनाज लूटा जा रहा है, बम उसमें न रहा गया कुछ कट डाला खून तो उसका गर्म था, बम लोग न आदमी को मार डाला '

दवीदोव चुप था। खानियों के पाम अब तक कोलाहल मूज रहा था, बैलगाड़ियों और छकड़ों की चर-चू सुनायी पड़ रही थी।

"अनाज ले जा रहे है" दवीदोव ने सोचा। "सचमुच, मकार को क्या हुआ? क्या वास्तव में मारा गया? चलकर देखता हूँ।" वह उठा।

बुढ़ा चुका यह समझ बैठा कि दवीदोव उसके साथ फूस की कोठरी में छिपना चाहता है। वह हडबडी में बोला

'चलिये, चलिये आपसे दूर। अगर कोई शैतान की बला से यहाँ आ गया तो हमें साथ देखकर हमारा भुरता बना देगे। वे तो

एक सेकेड मे यह कर डालेगे ! और फूस की कोठरी मे बहुत अच्छा है। घास-फूस की सुगंध इतनी सुहानी है, अगर खाने का प्रबन्ध होता तो मैं तो महीने भर वहीं पड़ा रहता। बस बक्रे ने मेरी नाक मे दम कर दिया मार डालता, मुझे को ! जब मैंने मना कि लुगाटया सामूहिक फार्म को तहस-नहस कर रही है और अनाज के लिये आपकी बोटिया नोच रही है तो मोचा 'बुचुकार तू तो मुफ्त मे मारा जायेगा !' आखिर एक-एक लुगाई को मालूम है कि ये कामरेड दबीदोव, आप और मैं ही तो थे जिन्हें ग्रेम्याची मे सामूहिक फार्म बनाने की मूभी, हम दोनों ही तो क्रांति के पहले दिन से अगली कतार मे रहे और हमी न तो तीन को बेदखल किया। सबसे पहले वे किमको मारेगे ? बात साफ है - मझे और आप ही को तो ! मैंने सोचा 'हालत हमारी पतली है, कहीं छिप जाना चाहिये, नहीं तो दबीदोव को मारकर मेरे पीछे पड़ जायेंगे। पर तब कोन टम्पक्टर का बतायेगा कि कामरेड दबीदोव की मौत कैसे हुई ? बस मैं भूट मे फूस मे मिर छिपाकर लेट गया। मेरा दम घूटा जा रहा था पर छाती फुलाकर सास लेने हुगा भी नर लग रहा था। और अचानक सुनता क्या है कि कोई मेरे ऊपर फूस के ढेर पर चढ़ रहा है चढ़ रहा है और स्वभाविक ही है, नाक मे धूल भरने मे लीक रहा है। 'हाय अम्मा, मैंने सोचा, 'मुझे ही दूढ रहे है, मेरी जान लेने के लिये दूढ रहे है मुझे।' पर वह मेरे ऊपर चढ़ा जा रहा था, और उसका पैर मेरे पेट पर पड़ा मैं चुपचाप लेटा रहा। हांश फाखता हो गये, डर के मारे जान निकल गयी पर मैं पड़ा रहा चुपचाप क्योंकि कोई चारा ही नहीं था इसके मिवाये। और उसने फिर सीधे मेरे थोबडे पर पाव रखा। मैं ने भूट मे पकड़ लिया - मेरे हाथ मे खुर था मारा बालो मे ढका ! मेरे रोगटे खड़े हो गये डर के मारे प्राण गले मे अटक गये ! बालोवाले खुर को छूकर पता है मैंने क्या सोचा ? सोचा, 'शैतान है।' फूस की कोठरी मे घना अधेरा था और भूत-प्रेत तो अधेरे के प्रेमी होते है। मैंने सोचा, 'अब यह मुझे पकड़ेगा और गुदगुदी करके मार डालेगा इससे अच्छा तो लुगाटया ही मंगी बोटिया नोच लेती।' हा-हा मुझे गेमा डर लगा कि कुछ पूछो मत ! मेरी जगह कोई दूसरा होता, कोई बुजदिल जवान, तो उसका तो पल भर मे दिल फट जाता डर के मारे। अचानक डर मे हमेशा फट जाता है दिल ! पर मेरे तो सिर्फ हाथ-पाव फूले थे।

मै लेटा रहा। फिर मैने ध्यान दिया कि बकरी की बड़ी तेज बू आ रही है। मै तो बिलकुल भूल गया कि तीत का जब्त बकग फूस की कोठरी मे रहता है, मरदुए के बारे मे बिलकुल दिमाग से उतर गया। मैने सिर निकालकर देखा, वही था, तीत का बकरा, फूस के ढेर पर चढकर चुन-चुनकर घास खा रहा था। बस फिर क्या था, मै उठकर उसकी ऐसी धुनायी करने लगा कि कुछ पूछो मत। मैने उमे दाढी खीचकर, और न जाने कैसे-कैसे पीटा। 'दाढीवाले शैतान, गाव मे दगा मचा हुआ है और तुम्हे फूस के ढेर पर चढने की सूझी है। बिना बात के मत घूम हगमजादे।' मुझे टतना गुस्सा आया कि मै उसे हलाल कर डालता, चाहे वह ढोर है पर इतनी तो समझ होनी चाहिये उसे कि कब फूस के ढेर पर मटरगश्ती करनी चाहिये और कब दुबककर चुपचाप बैठना चाहिये। आप किधर चले, कामरेड दवीदोव ?'

दवीदोव बिना कुछ बोले फूस की कोठरी के पाम मे होता हुआ फाटक की ओर बढ़ गया।

आप कहा जा रह है' विस्मय व साथ वृद्धा इत्कार फुमफुमाया।

अधखले फाटक मे उमने देखा कि दवीदोव मानो हवा के थपेडो से डगमगाता हुआ तेजी से सामूहिक खतियो की ओर जा रहा था।

३४

मडक के पास कब्र का टीला था। हवाओ से कटी उसकी चोटी पर नागदौने की मूखी भाडिया शोकपूर्ण खडखड करती है, भट-कटैया की लटे उदास-सी लटकी है, चोटी से लेकर तलहटी तक उसकी डलानो पर फैदर घास के पीले रोयेदार गुच्छे बिछे हुए है। कडी धूप और वर्षा मे बदरग उदाम-मे प्राचीन क्षर्गित मृदा पर उनके डठल पसर हे, वमत के चटकीले रंगो क बीच भी वे अलग वृद्धो की तरह मुग्-भाये उदाम-मे दिखायी पडत है। वम पतभड के पाम आने पर ही उन पर पाले की शुभ्र धवलता छा जाती है। पतभड ही मे टीला रुपहला शल्की कवच धारण करके स्तेपी के मजग प्रहरी के समान खडा हो जाता है।

गर्मियों में शाम को आकाश की ऊँचाई से सुनहला उकाब उतरता उसकी चोटी पर। पख फड़फड़ाता वह टीले पर मानो गिरता और दो-एक बेढब कदम रखकर कत्थई डैने फैलाता और उनके परो को टेढ़ी चोच से साफ करने लगता। और फिर मिर उठाकर नीले आकाश को अपनी कहूँबे जैसी काले छल्ले में घिरी पुतली से एकटक देखने लगता। शाम के शिकार से पूर्व उकाब विश्राम करता और फिर से उड़ जाता। मर्यास्त तक उसके शाही डैनों की स्लेटी परछाई कई बार स्तेपी की सतह पर आर-पार फिसलती।

पतझड़ की ठिठुरन भरी हवाएँ उसे कहाँ ले जायेगी? कोहकाफ पर्वतों की नीली तलहटियों में? मुगान्स्क स्तेपी में? फारस में? या अफगानिस्तान?

और मर्दिया में जब कब्र का टीला समूह की तरह हिम का ध्वेत आवरण ओढ़ लेता है, रोज़ प्रातः के नीले भूटपुटे में स्लेटी छाना वाला बूढ़ा लोमड़ उसकी चोटी पर चढ़ता है। वह बड़ी देर तक मानो लपट की तरह पीले करारा मगमग्मर में तराशी मूर्ति की तरह जड़ खड़ा रहता है। बैगनी बर्फ पर अपनी ललौही दुम को बिछाकर, उसकी श्थनी हवा की दिशा में उठी झोती है। इस क्षण उसकी नम गोमेद जैसी नाक ही विविध गंधों की शक्तिशाली दुनिया में विचरती। फूले फड़कते नथुनों में बर्फ की फीकी गंध, पाले में जमे नागदौने की कसैली गंध, पास की सड़क में घोड़ों की लीद की बूँद और दूरी पर जंगली भाड़ियों में आती तीतरों की हल्की-सी अति उत्तेजक सुगंध भरनी थी।

तीतरों की सुगंध में और भी गंधों को इतनी मिलावट होती कि लोमड़ को उसे जी भरकर सूँघने के लिये टीले से उतरकर गहरी बर्फ में धसते हुए, हिम शकुओं से ढके अपने उदर को भाड़ियों के ऊपर में घसीटते हुए कोई सौ-एक गज जाना पड़ता। और सिर्फ तभी उसके फूले नथुनों में ताजी बीट की कमैली-खट्टी बूँद और परो की दोहरी गंध भर जाती। पख के ऊपरी हिस्से से जो घास को छूता है नागदौने की कड़वी बूँद आती और उसका जो हिस्सा मास में गड़ा रहता है उससे गर्म, नमकीन खून की सुगंध आती।

लू टीले की जमी मिट्टी को तराशती, दोपहर की धूप उसे तपाती, वर्षा उसे धोती, प्रभुप्रकाश के दिनों का कड़कता पाला उसे काटता, पर टीला उसी तरह स्तेपी के शासक की तरह मीना

ताने खड़ा था जैसे वह कभी सैकड़ों साल पहले मारे गये पोलीवेल्ल
 राजा की कब्र पर सैनिक सम्मान के साथ उसकी रानियो, सैनिकों,
 रिश्तेदारों और गुलामों के हाथों बनाया गया था।

यह टीला ग्रेम्याची से आठ वेस्टर्न की टूटी पर कटक पर खड़ा
 था। पुराने जमाने में कज्जाक उसे मौत का टीला कहते थे। किवदन्ती
 थी कि पुराने जमाने में एक घायल कज्जाक की यहाँ मृत्यु हो गयी,
 शायद उसी की ज़िम्मे के बारे में एक प्राचीन गीत में कहा गया है

शमशीर की धार में
 निकाली ख़द चिगागी
 मलगा अलाव नागदौन का
 चश्मे का कर पानी गर्म
 धोये उसने ज़ख्म,
 मरे खून में बहने ज़ख्मों
 में तोड़ रहा हूँ दम।

कम्ब में बीस-क वेस्टर्न तक नाग्लोव घोड़े को मरपट दोड़ाना
 रहा और मौत के टीले के पास जाकर उसने अपने समद घोड़े को
 रोका। उतरकर उसने घोड़े की गर्दन में भाग को हटायी।

हालांकि वसंत अभी शुरू ही हुआ था पर गर्मी बहुत थी। सूरज
 धरती को ऐसे तपा रहा था मानो मई का महीना हो। क्षितिज पर
 धध तैर रही थी। स्टेपी के दूरस्थ ज़ाहड में जल पक्षियों का कलरव
 सुनायी पड़ रहा था।

मकार ने घोड़े की लगाम उतारी और उसकी राम को अगली
 टांग में बांध दिया, जिन की पेट्टी ढीली की। घोड़ा ताजी हरी घास
 पर टूट पड़ा, कभी-कभी वह पिछले साल में बची मूखी दूब पर भी
 मुह मार लेता।

टीले के ऊपर में बत्तखों की डार ची-चे करती गुजरी। जोहड
 पर वे उतरने लगी। मकार ने जो ऐसे ही खड़ा उन्हें ताक रहा था,
 उन्हें पत्थरों की तरह जोहड में गिरते देखा, सरकड़ों से ढके छोटे-
 से टापू के पास पानी मानो खाल उठा। जोहड के बांध में डरे हंसों
 का भुड़ उड़ा।

स्टेपी निर्जन थी। मकार बड़ी देर तक टीले के नीचे लेटा रहा।
 शुरू में उसे पास में चरने घोड़े की फुत्कार, उसके दहाने की खड़-खड़

सुनायी दे रही थी पर कुछ देर बाद घोड़ा घाटी में उतर गया जहाँ हरियाली अधिक घनी थी, और ऐसी नीरवता छा गयी जैसी पतझड़ में छा जाती है जब लोग स्टेपी में काम पूरा करके घरों को लौट जाने हैं।

‘ घर पहुँचकर अर्द्रेई और दवीदोव में विदा लूँगा, वहीवाला फौजी ग्रेटकोट पहनूँगा, जिसे पहनकर पोलिश मोर्चे से लौटा था और गोली मार लूँगा अपने को। क्रांति को इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा। क्या कम लोग उसका समर्थन कर रहे हैं? एक कम, एक ज्यादा, क्या फर्क पड़ता है ” पेट के बल लेटा मकार घास के तिनकों को निहारता उदासीनता के साथ सोच रहा था, मानो अपने बारे में नहीं बल्कि किसी पराये के बारे में सोच रहा हो। दवीदोव शायद मेरी कब्र पर कहेगा ‘ हालाँकि नागल्नोव को पार्टी से निकाल दिया पर फिर भी वह अच्छा कम्युनिस्ट था। आत्महत्या करने की उसकी कार्यवाही का हम अनुमोदन नहीं करते, फैक्ट, पर उस ध्येय को जिस के लिये वह विश्व प्रतिक्रांति में मर्घर्ष कर रहा था हम पूरा करेंगे।’ और यह कल्पना करके मकार का खून खौल उठा कि मुस्कुराना हमामची अपनी सफेद-सी मूँछों को ताव देता भीड़ में यह कहता फिरेगा “ भगवान का शुक्र है, एक में तो छुट्टी मिली। कुत्ता-कुत्ते की ही मौत मरा।”

“नहीं, साप की दुम। नहीं मारूँगा अपने को गोली। पहले तुम जैसा का सफाया करके रहूँगा।” मकार दात पीसकर जार में बोला और ऐसे उछलकर खड़ा हुआ मानो उसे बिच्छू ने डक मारा हो। हमामची का खयाल आते ही उसने फैमला बदल दिया और नजरो में घोंड़े को खोजत हुए उसमें मोचा “अगूठा चमो। तुम सबको मार-कर ही मरूँगा। मेरी मौत की खुशिया मनाना तुम्हें नसीब नहीं होगा। और कोर्चजीन्स्की का फैमला क्या अतिम है? बोवार्ड पूरी होने पर मडल समिति जाऊँगा। बहाल कर देगे। मास्को तक जाऊँगा। अगर काम नहीं हुआ तो ऐसे ही, पार्टी की सदस्यता के बिना भी दुश्मनों से लड़ूँगा।”

उसने चमकीली आँखों में अपने चारों ओर नजर दौड़ायी। उसे महसूस हो रहा था कि उसकी स्थिति इतनी खराब, निराशाजनक नहीं है जैसी कि उसे कुछ घंटे पहले लगी थी।

वह जल्दी से उस घाटी में उतरा जहाँ घोड़ा था। उसके कदमों

की आहट सुनकर जंगली घास से ढके तोड़े पर मादा भेड़िया उठकर खड़ी हुई। पल भर वह आदमी को ताकती रही फिर कान भुकाकर, दम दबाकर मांद में भाग गयी। उसके काले थन पिचके पेट पर थुलथुल लटके हुए थे।

जैसे ही मकार घोड़े के पाम गया उसने झटके से सिर हिलाया। टांग से बंधी रास टूट गयी।

“पुच-पुच!” मकार फुसफुसाकर घोड़े को शांत करा रहा था, वह पीछे से जाकर घोड़े की अयाल या रक्काब को पकड़ना चाहता था।

सिर हिलाते हुए समंद चाल तेज कर देता और कनखियों से सवारी को देखता। मकार दौड़ पड़ा पर घोड़े ने उसे पास नहीं आने दिया, वह बिदककर उछला और गांव की ओर सरपट दौड़ पड़ा।

मकार गाली देकर उसके पीछे-पीछे चल दिया। गांव के पास नज़र आते खेत की दिशा लेकर वह ऊबड़-खाबड़ रास्ते से कोई तीन-एक वेर्स्ता चलता रहा। लहलहाती घास के मैदानों में तरह-तरह के पक्षी विचर रहे थे ..

स्तेपी में महान मृजन हो रहा था : घनी घाम उग रही थी, पशु-पक्षी ब्याह रच रहे थे, बस मानव द्वारा परित्यक्त जोते, बिना बीज पड़े खेत मौन आकाश को ताक रहे थे ..

मकार जोत में मिट्टी के सूखे लौंदों पर कदम रखता गुस्से में चल रहा था। वह झट से झुककर मिट्टी उठाता और हथेलियों में मसलता। मुरझायी घास से मिली मिट्टी सूखी थी। बोवाई का समय निकलता जा रहा था ! एक घंटे की भी देर किये बिना, फ़ौरन तीन-चार बार पाटा चलाकर, दबी मिट्टी को गोड़कर ही भुरभुरी सीताओ में बोवाई मशीनें चलानी चाहिये ताकि गेहूं के सुनहरे बीज गहराई में गिरें।

“देर कर दी ! ज़मीन का मत्यानाम कर देंगे !” अकृष्ट काली निरवस्त्र जोतो को देखकर मकार के दिल में कसक उठी। उसने सोचा : “एक-दो दिन, और बस जोत बेकार हो जायेगी। ज़मीन भी घोड़ी की तरह है। मौसम आने पर झट से घोड़ा ढूँढ़ो नहीं तो वक्त निकलने पर वह नहीं ब्याहेगी। ज़मीन को भी आदमी की वक्त पर ज़रूरत होती है ! हरेक जानवर, हर पेड़ और ज़मीन भी अपना वक्त जानते हैं पर लोग ... हम किमी जानवर तक से बदतर हैं ! देखो, डमीलिये नहीं आ रहे बोलें कि माल-जायदाद उनके गले में अटक गयी ... हराम-

जादे ! अभी पहुँचते ही सबको खेतों में खदेड़ दूँगा ! एक-एक को ! ”

वह तेजी से चलता जा रहा था , कभी-कभी तो दौड़ने लगता । उसकी टोपी के नीचे से पसीना चूँ रहा था पीठ पर कमीज तर हो गयी , होठ सूख गये और गालों पर अस्वस्थ लाली के चकत्ते उभर आये

३५

जब वह गाव में घुसा , अनाज का बटवारा पूरे जोगे पर था । ल्यूबोर्स्कन अपनी टोली के साथ अभी तक खेत में था । खत्ती के पास धक्का-मुक्की हो रही थी । हडबडी में अनाज की बोगिया तराज पर चढ़ायी जा रही थी छकड़े बारी-बारी से उसके पास आकर खड़े होने जा रहे थे , मर्द और औरते गठगियों , बोगियों , चादरो में अनाज उठाये लिये जा रहे थे , खत्ती की सीढियों पर अनाज की मोटी तह बिखरी पड़ी थी

नागूल्लोव फौरन स्थिति को भाप गया । गाववालों को धकेलते हुए वह तराज के पास आया ।

भूतपूर्व फार्म सदस्य इवान बाताल्लिकोव अनाज तौल-तौलकर दे रहा था , अदना अपोल्लोन पेस्कोवात्स्की उसकी मदद कर रहा था । खानियों के पास न रजम्योल्लोव था , न दवीदोव और न ही कोई टोली नायक । भीड़ में पल भर के लिये मेनेजर याकोव लुकीच का अवाक् चेहरा दिखायी पड़ा पर वह भी बैलगाड़ियों के जमघट के पीछे छिप गया ।

“ किस ने अनाज ले जाने को कहा है ? ” बाताल्लिकोव को धकेलकर तराज के पास खड़े होकर मकार चिल्लाया ।

“ समाज ने ”

‘ दवीदोव कहा है ? ’

“ मैं क्या उसके पीछे-पीछे घूमता हूँ ! ”

“ प्रबध-मडल कहा है ? प्रबध-मडल ने दी है अनुमति ? ”

देमीद घुल्ला जो तराज के पास खड़ा था , मुस्कराया , उसने आम्नीन से पसीना पाछा । उसकी भारी आवाज सुनायी पड़ी

जिममें विश्वास और भोलेपन दोनों की झलक थी .

“ हमने खुद , प्रबंध-मंडल के बिना अनुमति ली है। खुद ले रहे हैं । ”

“ खुद ? . यह बात है ? ! ” नागूल्लोव लपककर खत्ती की सीढ़ी पर चढ़ गया , देहरी पर खड़े लड़के को उसने धूसा मारकर धराशायी कर दिया , और धड़ाके से दरवाजा बंद करके उस पर पीठ टिकाकर खड़ा हो गया । “ अपने-अपने घर जाओ ! अनाज नहीं दूंगा ! और जो भी खत्ती के पास फटकेगा उसे सोवियत सत्ता का दुश्मन मानूंगा ! .. ”

“ ओहो ! ” दिमोक बोला जो किसी पड़ोसी को छकड़े पर अनाज की बोर्गियां लादने में मदद कर रहा था ।

नागूल्लोव को वहां देखकर अधिकांश लोग चकित रह गये । नागूल्लोव के कम्बे जाने से पहले ही ग्रेम्याची में यह अफवाह गर्म थी कि हमामची को पीटने के लिये नागूल्लोव पर मुकदमा चलाया जायेगा और उसे पद से हटाकर जेल में डाला जायेगा मुबह से ही यह सुनकर कि मकार कम्बे गया है हमामची ने घांघणा की

“ नागूल्लोव अब नहीं आयेगा लौटकर ! अभियोक्ता ने मुझे खुद बताया कि वे उसे कड़ी में कड़ी मज्जा देगे ! अब मकार को नानी याद आयेगी ! पार्टी से निकाल देगे तब पना चलेगा उसे किसानों को कैसे पीटते हैं ! अब पुराना जमाना नहीं रहा ! ”

इसीलिये तराजू के पास नागूल्लोव को देखकर लोग हक्के-बक्के रह गये । पर जब वह तराजू के पास से जाकर खत्ती के दरवाजे को बंद करके खड़ा हुआ तो अधिकांश लोगों के होश फौरन लौट आये । दिमोक के “ ओहो ! ” के बाद चिल्ल-पो मच गयी

“ अब हमारी अपनी सत्ता है ! ”

“ जनता की ! ”

“ जग चखा दो टमे मजा ! ”

“ जा जहा से आया है ! ”

“ बड़ा आया हुकम चलानेवाला , तेरी ... ”

सबसे पहले दिमोक खत्ती की ओर बढ़ा , वह बाको की तरह कंधे नचाता , मुस्कान के साथ पीछे मुड़-मुड़कर देखता चल रहा था । उसके पीछे-पीछे कुछ और मर्द हिचकिचाते हुए चल पड़े । उनमें से एक ने झुककर पत्थर उठा लिया ..

नागूल्नोव ने आगम से पतलून की जेब से गिवाल्वर निकाला और उसका घोड़ा चढ़ाया। दिमोक हिचकिचाकर रुक गया। बाकी लोग भी रुक गये। भारी पत्थर से लैम हुए आदमी ने उमे हाथो से उलट-पलटकर देखा और एक ओर गिरा दिया। सब जानते थे कि अगर नागूल्नोव ने घोड़ा चढ़ाया है तो जरूरत पडने पर वह उमे बेहिचक दबा देगा। और मकार ने भी इसकी फौरन पुष्टि कर दी

“पहले सात कुत्तो को मार डालूंगा तभी तुम खत्ती मे घुमोगे। कौन है पहला ? आओ।”

टल्लुक नजर नही आये पल भर के लिये सब किकर्तव्यविमूढ़ खडे रहे। दिमोक कुछ मोच रहा था, वह खत्ती की ओर जानें हुए हिचकिचा रहा था। नागूल्नोव गिवाल्वर की नाल भुकाकर चिल्लाया

“अपने-अपने घर जाओ। फौरन चले जाओ नही तो गोली चलाना शुरू करता हू।”

वह बात पूरी भी न कर पाया कि उसके मिर मे कुछ ऊपर दरवाजे पर लोहे की कीली आकर पडी। दिमोक के यार येफीम त्रूबाचोव ने मकार के मिर का निशाना लगाकर वह मारी थी पर निशाना चूकना देखकर वह झट से बैलगाडी के पीछे छिप गया। नागूल्नोव ने ऐसा महसूस किया मानो वह युद्ध लड रहा हो। भीड मे आये पत्थर से बचकर उसने हवा मे गोली चलायी और दौडकर सीढियों मे उतर गया। भीड के पाव उखड गये। आगेवाले पीछेवालो का गिराने धक्कलने भाग पडे, छकडो और बैलगाडियों के बस चरमराकर टूटने लगे, जमीन पर गिरी कोई औरत जोग से चीखी।

“नही भागो। उसके पास सिर्फ छ गोलिया बची है।” कहीं मे प्रकट हुआ हमामची लोगो का जोश उठा रहा था, उन्हे भागने मे रोक रहा था।

मकार फिर मे खत्ती के पास लौट आया पर मीढी पर नही चढा, बल्कि दीवार के पास ऐसे खडा हो गया कि बाकी खत्तिया भी उसकी नजर मे रहे।

“मत पास आओ।” फिर से तराजू ने गस आते दिमोक, त्रूबाचोव व अन्य लोगो को देखकर वह चिल्लाया। “छोरो, पास मत आओ! गोली मार दूंगा।”

खत्तियो से कोई सौ कदम की दूरी पर खडी भीड मे इवान बाता-

ल्लिखकोव, अतामान्चुकोव और फ़ार्म के तीन भूतपूर्व मदस्य निकले। उन्होंने चालाकी से काम लेने का फ़ैसला किया। कोई तीस क़दम की दूरी पर रुककर बाताल्लिखकोव ने हाथ उठाकर चेताया :

“कामरेड नागूल्लोव ! रुको, हथियार मत उठाओ !”

तुम्हें क्या चाहिये ? अपने-अपने घर जाओ, मैं कहता हूँ !”

“अभी चले जाते हैं, पर तुम बेकार ही नाराज़ हो रहे हो ... हमें अनाज लेने की अनुमति मिली है ...”

“किस की ?”

“मंडल से कोई आया है .. मंडल कार्यकारिणी समिति से शायद, उसी ने हमें दी है अनुमति।”

“पर कहां है वह ? दवीदोव कहां है ? और रज़म्योल्लोव ?”

“वे दफ़्तर में बैठक कर रहे हैं।”

“भूठ बकता है, साले ! .. मैं कहता हूँ, हट जा तराजू के पास से ! हटेगा या नहीं ? ..” नागूल्लोव ने बायें हाथ को मोड़ा और उस पर रिवाल्वर की घिसकर सफ़ेद हुई नाल टिकायी।

बाताल्लिखकोव निडरता के साथ आगे बोला :

“नहीं विश्वास करते तो जाकर देख लो खुद, अगर नहीं तो हम अभी उन्हें बुला लाते हैं। हथियार से धमकी मत दो, कामरेड नागूल्लोव, नहीं तो ख़ैर नहीं होगी ! तुम किस की खिलाफ़त कर रहे हो ? जनता की ! सारे गांव की !”

“नहीं आओ पास ! एक भी क़दम नहीं बढ़ाओ ! तू मेरा कामरेड नहीं है ! तू — क्रांति का दुश्मन है क्योंकि सरकारी अनाज लूटता है ! .. मैं तुम्हें सोवियत मत्ता को नहीं रौदने दूंगा।”

बाताल्लिखकोव कुछ और भी कहना चाहता था पर ख़त्ती के पीछे से दवीदोव निकला। बुरी तरह पिटाई के कारण सारा नीलों, खरोचों और खून के मूखे निशानों से ढका दवीदोव लड़खड़ाता आ रहा था। उसे देखकर नागूल्लोव चिल्लाकर बाताल्लिखकोव की ओर दौड़ा : “आ-हा, कुत्ते ! धोखा देता है मुझे ? .. हम पर हाथ उठाता है ? !”

बाताल्लिखकोव और अतामान्चुकोव भाग खड़े हुए। नागूल्लोव ने दो बार उन पर गोली चलायी पर निशाना चूक गया। दिमोक बाड़ का खूँटा उखाड़ने लगा, बाक़ी लोग वहीं खड़े रोष के साथ घुड़घुड़ाने लगे।

“मैं तुम्हें सोवियत सत्ता को नहीं रौंदने दूंगा!” भीड़ की ओर दौड़ता हुआ मकार दांत पीसकर चिल्लाया।

“मारो साले को!”

“अरे कोई बंदूक-शंदूक ही होती!” पिछली कतारों में खड़ा याकोव लुकीच हाथ नचा-नचाकर आहें भर रहा था, वह बेमौक़े गये पोलोवत्सेव को कोस रहा था।

“कज़्ज़ाको! पकड़ लो इसके हाथ, क्या मुंह देख रहे हो?!” मरीना पोयाकोवा का रोबपूर्ण, उत्तेजित स्वर गुंजा। वह सामने से दौड़कर आते मकार की ओर कज़्ज़ाकों को धकेल रही थी। देमीद घुत्ने के हाथ पकड़कर वह घृणा के साथ बोली:

“तू कैसा कज़्ज़ाक है?! डरता है?!”

और अचानक भीड़ बिखरकर चारों ओर दौड़ पड़ी, मकार की ओर भी लोग दौड़ने लगे...

“मिलीशिया!!!” वहशी आतंक में नास्त्या दोनेत्सकोवा चीखी।

ढलान पर बिखरकर कोई तीसेक घुड़सवार अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते गांव की ओर आ रहे थे। उनके घोड़ों के सुमों से वासती धूल के भीने गुबार उड़ रहे थे...

पाच मिनट बाद खाली चौक में खलियो के पाम मिर्फ दवीदोव और मकार बचे थे। घोड़ों की टाप पास आती जा रही थी। गांव के मैदान में घुड़सवार प्रकट हुए। सबसे आगे पावेल ल्युबीशकिन, लाप्शीनोव के रहवाल पर बैठा आ रहा था, उसके दायें हाथ पर सोटे से लैस चेचक के दागों से ढके चेहरे पर दृढ़ संकल्प का भाव लिये आगाफ़ोन दुबत्सोव था और उनके पीछे रंग-बिरंगे घोड़ों पर दूसरी और तीसरी टोली के सदस्य बिखरे थे...

शाम को दवीदोव के बुलावे पर इत्ताकाई केन्द्र से मिलीशियामैन आया। उसने इवान बाताल्शकोव, अपोल्लोन पेस्कोवात्स्की, येफ़्रीम वूबाचोव और खेत में कुछ भूतपूर्व फ़ार्म सदस्यों को गिरफ़्तार किया जो कुछ ज़्यादा ही ‘सक्रिय’ थे। इग्नात्योनोक की बुढ़िया को घर पर गिरफ़्तार किया। उसने गवाहों के साथ उन सबको क्रमबद्ध भेज दिया .. दिमोक खुद ग्राम-सोवियत में हाज़िर हुआ।

“आ गये, मेरे कबूतर?” रज़म्योलोव ने विजयोल्लास के साथ पूछा।

उसकी ओर व्यग्रपूर्ण नजर डालकर दिमोक बोला

“ हाजिर हूँ। अब लुका-छिपी खेलने का क्या फायदा, जब पत्ते ज्यादा आ गये ”

“ कैसे पत्ते ? ” रजम्योत्नोव ने भौंहे सिकोडकर पूछा।

“ अरे, ताश के जब जरूरत से ज्यादा पत्ते उठा लेते हो, ममभे ? मुझे कहा जाना है ? ”

“ कस्बे जाओगे । ”

“ पर मिलीशियामैन कहा है ? ”

“ अभी आता है, क्यों उससे मिलने को बेताब हो ? लोक अदालत तुम्हें सिखा देगी कैसे अध्यक्षों पर हाथ उठाना चाहिये ! लोक अदालत तुम्हें सही पत्ते बाटेगी । ”

“ इसमें कोई शक नहीं । ” दिमोक सहर्ष मान गया और उबासी लेकर उमने अनुरोध किया “ रजम्योत्नोव, मुझे नींद आ रही है। जब तक मिलीशियामैन नहीं आता तुम मुझे कोठरी में बंद कर दो, और मैं सो लूँगा थोड़ा। कृपा करके दरवाजा बाहर में बंद कर देना नहीं तो मैं नींद में भाग जाऊँगा । ”

अगले दिन लूटे गये अनाज को जमा करने का काम शुरू हुआ। कल जिन लोगों ने अनाज लिया था उनके घर जाकर मकार बिना दूआ-मलाम के नजर छिपाकर सर्यामित स्वर में पूछता

“ अनाज लिया था ? ”

“ लिया था ”

“ वापस लाओगे ? ”

“ कोई दूसरा चारा नहीं है ”

‘ ले जाओ, ’ यह कहकर विदा लिये बिना चला जाता।

फार्म में निकल बहत-स लगा न बीज का अनाज जितना जमा करवाया था उससे अधिक ले लिया था। बटवारा सवाल जवाब के आधार पर हुआ। बातालिस्कोव बेमन्नी से पूछता “ कितना गेहूँ दिया था ? ” — “ मान पूद के हिसाब से दो हेक्टेयर के लिये । ” — “ अच्छा, चढ़ाओ बोरिया तराजू पर । ”

पर वास्तव में लेनेवाले ने बीज जमा करने के समय सात-चौदह पूद कम जमा करवाया था। इसके अलावा कोई सौ पूद अनाज औरते भोलियों और थैलों में भरकर ले गयी।

शाम तक सारा गेहूँ जमा किया जा चुका था बस कुछेक पूद कम रहा। सिर्फ़ कोई बीस पूद जई और मकई की कुछ बोरिया कम पड़ी। शाम को ही निजी खेती करनेवालों को उनके सारे बीज वापस लौटा दिये गये।

ग्रेम्याची में गाव की सभा अघेरा छाने के बाद शुरू हुई। स्कूल में जमा अपूर्व भीड़ के सामने दवीदोव बोल रहा था

“नागरिको, अभी हाल ही तक फार्म सदस्य रह चुके लोगों और कुछ निजी किसानों के कल के दगे का क्या मतलब है? इसका मतलब है कि वे कुलक तत्वों की ओर झुक गये हैं। यह तथ्य है कि वे हमारे दुश्मनों के पक्ष में झुक गये हैं। उन नागरिकों के लिये यह बड़ी शर्म की बात है, जो कल ख़तियों से अनाज लूट रहे थे, पैरों से उसे कुचल रहे थे, भोलियों में भर-भर कर उसे ले जा रहे थे। नागरिको, आप में से कुछेक आवाजे लग रही थी कि औरते मुझे पीटें, और उन्हों ने जो हाथ लगा उसमें मुझे पीटा, और एक नागरिकनी तो रो तक पड़ी जब मैंने आह तक न की। मैं तेरे बारे में कह रहा हूँ।” और दवीदोव ने दीवार का सहारा लेकर खड़ी नास्त्या दोनेत्सकोवा की ओर इशारा किया, जब दवीदोव ने बोलना शुरू किया तो उसने हड़बड़ाकर कमाल में मुंह ढांप लिया था। “यह तू ही तो थी जो मेरी पीठ पर मुक्के बरसा रही थी और खुद ही चिढ़कर रो रही थी, तू ही तो कह रही थी ‘मैं इसमें पीटे जा रही हूँ पर यह पत्थर की मूर्त की तरह उफ तक नहीं कर रहा।’”

नास्त्या का ढका चेहरा शर्म से लाल था। सब लोग उसकी ओर देख रहे थे और वह सिर झुकाकर शर्म में गड़ी जा रही थी, पीठ में दीवार की सफेदी पोछ रही थी।

दखा तो पांच में कृचली नागिन की तरह नल खा रही है टायन।’ दाम्का उशाकोव न चप न रहा गया।

“सारी दीवार की सफेदी भाड़ दी।’ चेचकरू आगाफोन उशाकोव भी बोला।

“ओ छमकछल्लो, मत मटक। मारते तब तो शर्म नहीं आयी, अब क्यों नहीं मिलाती लोगों में आखें?” ल्युबीशकिन गुंरा कर बोला।

दवीदोव निष्ठुरता से बोले जा रहा था, पर फूटे होठों पर मुस्कान भी झलक आयी जब उसने कहा

“ यह चाहती थी कि मैं घुटनो पर बैठकर दया की भीख मागू, खतियो की चाबिया इसे दे दू। पर, नागरिको, हम बोल्शेविक ऐसी मिट्टी के नहीं बने कि जो चाहे अपने साचे में ढाल ले। गृहयुद्ध में कैडेटो ने मुझे पीटा था पर कुछ बिगाड़ नहीं पाये। बोल्शेविको ने कभी भी किसी के सामने घुटने नहीं टेके और न कभी टेकेगे, फैक्ट।”

“ बिल्कुल ठीक है।” मकार नागूलनोव के कापते, उद्विग्न स्वर में भावुकता की झलक थी।

“ नागरिको, हमें खुद को सर्वहारा के दुश्मनो के घुटने टिकवाने की आदत है। और हम टिकवाकर रहेगे।”

“ हा, दुनिया भर में टिकवा देगे उनके घुटने, पर कल आपने में बोल पड़ा।

“ हा, दुनिया भर में टिकवा देगे उनके घुटने, पर कल आपने इस दुश्मन को अपना समर्थन दिया। यह क्या है, नागरिको, खतियो के ताले तोड़ लिये, मुझे पीटा और रजम्योनोव को पहले हाथ-पाव बाधकर तहखाने में बंद कर दिया और फिर ग्राम-सोवियत में ले गये, रास्ते में उसके गले में सलीब लटकाना चाहते थे? यह प्रतिक्रांतिकारी विद्रोह है। हमारे फार्म के सदस्य मिखाईल इगनात्योनोक की मा, जिसे गिरफ्तार कर लिया गया है, जब रजम्योनोव को ले जा रहे थे, चिल्ला रही थी ‘अंधमी, रब्रीस्त-विरोधी को ले जा रहे है। नरक के शैतान को।’ और औरतो की मदद में वह उसके गले में सलीब लटकाना चाहती थी, पर हमारा कामरेड रजम्योनोव एक सच्चे कम्युनिस्ट के नाते ऐमा उपहास नहीं सह सकता था। वह औरतो और पादरियो के बहकावे में आयी कूडम-गज बुढियो से कह रहा था ‘मैं ईसाई नहीं हूँ, मैं कम्युनिस्ट हूँ। अपना सलीब हटाओ।’ पर तब तक उन्होंने इसका पिंड नहीं छोड़ा जब तक इसने दातो से सलीब लटकानेवाली डोरी को नहीं कुतर दिया और सिर-टांगे न चलाने लगा। यह क्या है, नागरिको? यह प्रतिक्रांति है और कुछ नहीं। और लाक अदालत मिखाईल इगनात्योनोक की मा जैसे लोगो को कड़ी सजा देगी।”

‘मैं अपनी मा के लिये जिम्मेदार नहीं हूँ। उसे खुद को मनाधि कार प्राप्त है, अपने आप भुगतें अपनी करनी को।’ अगली कतारो से मिखाईल इगनात्योनोक चिल्लाकर बोला।

“और मैं भी तुम्हारे बारे में थोड़े ही कह रहा हूँ। मैं उन लोगो

के बारे में कह रहा हूँ जिन्होंने गिरजे बद करायें जाने पर शोर मचाया था। उन्हें गिरजों का बद किया जाना अच्छा नहीं लगा, पर खुद जबरदस्ती एक कम्युनिस्ट को सलीब पहना रहे थे तो कोई बात नहीं हुई। उन्होंने खुद अपने पाखंड का पर्दाफाश कर दिया। उन लोगों को जिन्होंने बलवा भड़काया और जिन्होंने उसमें सरगर्मी दिखायी गिरफ्तार कर लिया गया है। पर बाकी लोगों को जो कुलकों के बहकावे में आ गये, समझना चाहिये कि वे सही रास्ते में भटक गये। मैं मच कह रहा हूँ किसी ने पुर्जा भेजा है, उसमें पूछा गया है 'क्या यह सच है कि जो लोग अनाज ले गये थे उन सबको गिरफ्तार करके उनकी मर्ति जल कर ली जायेगी और यहाँ में निष्कासित कर दिया जायेगा?' नहीं, नागरिकों, यह गलत है। बोल्शेविक बदला नहीं लेते, वे तो सिर्फ दुश्मनों को बेरहमी से कुचलते हैं पर आप लोगों को, हालांकि कुलकों के कहने में आकर आप सामूहिक फार्म से निकल गये, हालांकि आपने अनाज लूटा और हमें पीटा पर फिर भी हम दुश्मन नहीं मानते। आप लांग - हिचकिचाते मझौले किसान हैं जो कुछ समय के लिये भ्रम में पड़े हैं, और हम आपके खिलाफ कोई प्रणामकीय कार्यवाही नहीं करेंगे, बल्कि आपकी आँखें खोलेंगे।"

स्कूल में खुसर-पुसर होने लगी। दबीदोव आगे बोला

"और तू भी, नागरिकनी, डर मत, चेहरा खोल अपना, कोई तुझे कुछ नहीं करेगा हालांकि कल तूने मेरी बड़ी धुनायी की। पर अगर कल, जब बोवाई करने जायेंगे तू ठीक से काम नहीं करेगी तो मैं तेरी ऐसी धुनायी करूँगा कि नानी याद आ जायेगी। पर मैं पीठ पर नहीं, बल्कि कुछ नीचे मारूँगा ताकि तू न बैठ सके, न लेट।"

हल्की-मी हसी पिछली कतारों तक जाते-जाते बेतकल्लुफ ठहाकों में बदल गयी।

"नागरिकों, बस हो गयी मटरगश्ती। बोवाई का वक्त निकलता जा रहा है, काम करना चाहिये न कि गाल बजाना। बोवाई के बाद जी भरकर लड़-भगड सकते हो मैं भवाल को इस तरह रखता हूँ जो सोवियत सत्ता के पक्ष में वह कल से खेत में जा रहा है और जो खिलाफ है, वह गिरिया चबाता रहें। पर जो कल बोवाई नहीं करने गया उसकी ड्रम, यानी सामूहिक फार्म, जमीन छीन लेंगे और खुद बो देंगे।"

दवीदोव आकर मच पर रखी मेज पर बैठ गया और जब उसने पानी के जग की ओर हाथ बढ़ाया, पिछली कतारों से, तेल के लैप के नारंगी भुटपुटे में किसी का हार्दिक, उल्लासित स्वर भावुक होकर बोला

“दवीदोव तुम्हारी जय! प्यारे दवीदोव! तुम कितने अच्छे हो बुरी बातों को दिल से निकाल देते हो, बुरी बातें भूल जाते हो लोग घबरा रहे हैं भेष के मारे नजरे छिपाते हैं, शर्म आती है लुगाइया भी शर्म से जमीन में गड़ी जा रही है आखिर हमें तो साथ रहना है दवीदोव, आओ यह फैसला करे जो हो गया, सो हो गया! क्यों?”

* * *

अगले दिन सुबह फार्म के पंचाम भूतपूर्व सदस्यों ने उन्हें फिर से सामूहिक फार्म में भर्ती करने के प्रार्थना-पत्र दिये। पौ फटते ही निजी किमान और ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म की तीना टोलिया खेतों में चली गयी।

ल्युबीस्कन ने खेतियों पर पहरा बिठाने का मुझवि दिया पर दवीदोव मुस्कराकर बोला

“अब, मेरे खयाल में इसकी कोई जरूरत नहीं ”

चार दिन में सामूहिक फार्म ने पतभड में जुती आधी जंतों पर बोवाई कर डाली। २ अप्रैल को तीसरी टोली ने बसत की जुताई शुरू कर दी। इन दिनों दवीदोव सिर्फ एक बार फार्म के दफ्तर में गया था। उसने काम करने में समर्थ सब लोगों को खेत में भेज दिया, बुढ़े श्चुकार तक को साईस के काम से अस्थायी छुट्टी देकर दूसरी टोली में भेज दिया। वह खुद पौ फटते ही खेतों में चला जाता और आधी रात के बहुत बाद जब मुर्गे सबेरा होने की तैयारी में बाग लगाते, वह गाव लौटता।

फार्म के प्रबन्ध-मंडल के अहाते में नीरवता छायी थी। घास से ढका अहाता गाव के मैदान जैसा लग रहा था। खत्ती की छत पर लनौही खपरैले धूप में तपकर चमक रही थी, पर कोठरियों की छाया में कुचली घास पर अभी तक ओस की जामनी-सी बूंदें लटकी थीं।

अहाते के बीचो-बीच अत्यंत दुबली भेड़ पिछली टांगे चौड़ी करके खड़ी थी और पाम में घुटनों पर झुककर मा की तरह सफेद ऊनवाला मेमना थन चूम रहा था।

ल्यूबीशकिन ने नाटी दूध पिलानी घोड़ी पर अहाते में प्रवेश किया। कोठरी के पास में गुजरते हुए उसने गुस्से में, छत पर से उसे अपनी शैतान जैसी हरी आंखों में घूरने बकरे को चाबुक मारा और बड़बड़ाया

“शैतान की औलाद, तुझे छतों पर चढ़ने का चमका पड़ा गया। भाग यहां से।”

ल्यूबीशकिन गुस्से में बहुत चिड़चिड़ा था। वह स्टेपी में आया था, घर गये बिना वह सीधा दफ्तर आया। उसकी नाटी घोड़ी के पीछे-पीछे अपनी झबरीली पूछ उठाये, पतली टांगेवाला बछेड़ा, गले में बंधी घटी को टनटनाना दौड़ रहा था। ल्यूबीशकिन के कद के हिमाचल से घोड़ी इतनी नाटी थी कि रकाबे घोड़ी के घुटनों से नीचे झूल रही थी। ऐसा लगता था कि घुड़मवार झुककर घोड़ी को अपनी टांगों में दबाकर लं जा रहा है जैसे एक कहानी का वीर इयोदी पर खड़ा घोम्का उशाकोव ल्यूबीशकिन का देखकर चिहुक उठा।

“अरे, तुम तो गधे पर बैठकर येगशलम जाते ईसा मसीह जैसे लग रहे हो।”

“तुम खुद गधे हो।” इयोदी के पाम पहुंचकर ल्यूबीशकिन घुड़का।

“और टांगे तो ऊपर उठा लो, तुम तो पैरों में जमीन जोतते चल रहे हो।”

ल्यूबीशकिन चपचाप घोड़े में उतरा और लगाम को रेलिंग से बांधकर कड़े स्वर में घोम्का से पूछा

“दवीदोव यहां है?”

“यही है। बैठा-बैठा तुम्हारी याद में तड़प रहा है, तुम्हें देखने

को उतावला है। दो दिन से मुह मे अन्न-जल नही डाला, बस एक ही बात रटता रहता है 'कहा है मेरा पावेल ल्युबीशिकन? उसके बिना तो जीना बेकार है, इस दुनिया से मेरा मन भर गया।'

"और कर बक-बक। तेरी जीभ अगर लम्बी है तो मैं अभी काट देता हूँ।"

द्योम्का ने ल्युबीशिकन के चाबुक पर तिरछी नजर डाली और चुप हो गया और ल्युबीशिकन अदर चला गया।

दवीदोव और रज्म्योत्नोव ने अभी-अभी महिला मभा की प्रतिनिधियों के साथ शिशुशाला खोलने के पश्न पर विचार-विमर्श समाप्त ही किया था। जब औरते बाहर चली गयी, ल्युबीशिकन मेज के पाम आया। उसकी पतलून मे बाहर निकली कधो पर मैली सूती कमीज मे पमीने धूप और धल की भभक उठी

"मैं टोली से आया हूँ"

"क्यो आये हो?" दवीदोव ने भीहे तानकर पूछा।

"कुछ काम नही बन रहा। मेरे पाम काम करने लायक अट्टाइस लोग बचे है पर वे काम नही करना चाहते, वेगार टाल रहे है मैं उनके साथ कुछ कर नही पा रहा। इस वक्त मेरे यहा बारह हल काम कर रहे है। बडी मुश्किल मे हलधरो को जुटाया। अकेला कोद्रात माइदानिकोव बैल की तरह काम कर रहा है, पर अकीम बेसल्लेन्कोव, सेम्योन कृभेन्कोव या मुस्टडा अतामान्चुकोव और बाकी लोग तो खून क आम्र है न कि हलधर। देखने मे तो ऐमा लगता है मानो उन्होंने जिदगी मे कभी हल छुआ ही न हो। ले-देकर जोतते है। एक फेरा लगाकर मिगरेट पीने बैठ जाते है, लाख कहने पर टम मे मस नही होते।"

"दिन मे कितना जोतते हो?"

"माइदानिकोव और मैं दो-दो एकड जोतते है और ये—एक-एक मे ज्यादा नही। अगर ऐसे ही जोतने रहे तो एकादशी पर मकई बोनी पड जायेगी।"

दवीदोव ने कुछ बोले बिना पेमिल से मेज पर ठक-ठक की और चुपके से पूछा

"पर तुम आये क्यो हो? ताकि हम तुम्हे दिलामा दे?" और गुस्मे मे उमने आख तरेरी।

ल्युबीशिकन कुलबुलाकर बोला

“मै रोने के लिये नही आया। तुम मुझे लोग दो और हल भी बढा दो, मजाक तो मुझे भी करना आता है।”

“मजाक तो तुम्हे करना आता है पर काम का प्रबध करने मे ढीले हो। कैसे टोली-नायक हो? आलसियो को ठीक नही कर सकते। और ठीक कर भी कैसे सकते हो जब तुमने अनुशामन मे ढील दे रखी है, हर चीज की मर्हिणुता पाल ली है।”

“तुम जरा दूढकर तो दिखाओ अनुशामन को।” उत्तेजना के कारण पसीने मे तर ल्युबीशिकन चिल्लाया। “वहा हर बात मे अतामान्चकोव की चलती है। वही मेरे लोगो को ब्रिगाड रहा है, उन्हे मामूहिक फार्म म निकालने को उकसा रहा है, उम हगमजादे को फार्म मे निकालकर तो देखो वह अपने साथ दूसरो को भी ले जायेगा। तुम, सेम्योन दवीदोव, क्या मेरा मखौल उडा रहे हो? तुमने लगडे-लूलो को मेरे मत्थे मढ दिया और ऊपर से काम की माग कर रहे हो? उम बुड्डे श्चुकार का ही मै क्या करू? वह बातूनी शैतान तो सिर्फ खेन मे पुतले की तरह खडे होकर चिडियो को डराने के काम के ही लायक है और तुमने उसे मेरी टोली पर मढ दिया। उसका फायदा क्या? हलधर का काम नही कर सकता, हकवैये का भी नही। आवाज उसकी चिडिया जैसी है, बैल तक उसे आदमी नही मानते, बिल्कुल भी नही डरते। वह जुए से लटक जाता है, सुमरा, और एक ही फेरे मे दस-दम बार गिर पडता है। कभी वह रुककर जूते बाधने लगता है, तो कभी लेटकर टांगे उठाना है और अपनी नाल चढाने लगता है। और लुगाइया बैलो को छोडकर हमती हुई शोर मचाने लगती है ‘श्चूकार की नाल उतर गयी।’ और दौडकर यह देखने पाती है कि वह कैसे लटकी नाल को जगह पर बिठायेगा। यह काम बहा, नाटक है। उसकी नाल की वजह से कल हमने उस बावर्ची का काम सौपा, पर वह वहा भी बेकार और नुकसानदेह निकला। मैने उसे खिचडी मे डालने के लिये बैक-फैट दिया पर वह खुद उसे खा गया, और खिचडी मे इतना नमक डाल दिया और ऊपर से न जाने क्क से भाग आ गये। तुम बताओ मै उसका क्या करू?” ल्युबीशिकन की काली मूछो के नीचे होठ फडके। उसने चाबुक उठाया और निराशा के साथ बोला “मुझे टोली-नायक के काम से हटा दो, ऐसे लोगो से काम कराना मेरे बस

की बात नहीं, वे मेरे काम में भी टगड़ी अड़ाते हैं। .”

“तुम दया की आशा छोड़ दो। हमें मालूम है कि तुम्हें कब काम में हटाना है, अब खेत में जाओ और देखना कि शाम तक बारह हेक्टेयर पर जुताई पूरी हो जाये। अगर यह नहीं किया तो बाद में बुरा मत मानना। दो घंटे बाद आकर जांच करूँगा। जाओ।”

ल्यूबीशकिन धडाक में दरवाजा बंद करके दौड़ता हुआ इयोही में उतरा। रेलिंग में बंधी घोड़ी उदाम खड़ी थी। उसकी बैगनी-सी आँखों में धूप की सुनहरी रश्मियाँ प्रतिबिम्बित हो रही थी। काठी पर बिछे टाट को ठीक करके ल्यूबीशकिन धीरे में उस पर सवार होने लगा। द्योम्का उशाकोव ने आँखें मिचमिचाकर व्यग्रपूर्ण लहजे में पूछा

“कामरेड ल्यूबीशकिन, आपकी टोली ने जुताई काफी कर ली है?”

“तेरा इससे कोई वास्ता नहीं”

“अच्छा। पर जब तुम्हें मदद देने आना पड़ेगा तब तो मेरा वास्ता हो जायेगा।”

ल्यूबीशकिन न कमकर मट्टी भीची कि उर्गलिया मुन्न हो गयी और द्योम्का को घुसा दिखाकर बोला

“आकर तो देखना। मैं तुम्हें भेगों की आँखें मीठी कर दूँगा। गुद्दी पर लटका दूँगा और उल्टे पाव चलना सिखा दूँगा।”

द्योम्का ने उपेक्षा के साथ थूककर कहा

“बड़ा आया है हकीम कहीं का। तू पहले अपने हलधरों का तो इलाज कर ताकि वे जल्दी-जल्दी जुताई करें”

ल्यूबीशकिन घोड़े को सरपट दौड़ाना फाटक से निकला और स्तेपी की ओर मुड़ गया मानो चढ़ाई करने जा रहा हो। बछेड़े के गले में लटकी घटी की टन-टन अभी सुनायी ही दे रही थी कि दवीदोव ने इयोही पर निकलकर द्योम्का से जल्दी में कहा

“मैं कुछ दिन के लिये दूसरी टोली में जा रहा हूँ, तुम को अपने स्थान पर छोड़े जा रहा हूँ। शिशुशाला के प्रबंध पर नज़र रखना, जरूरत पड़ने पर मदद कर देना। तीसरी टोली को जई मत देना, सुन रहे हो? अगर कोई परेशानी हो तो फौर्गन आ जाना मेरे पास। समझे? अच्छा, घोड़ा जोतो और रज्म्योत्नोव को कह दो कि वह मुझे लिवाने आ जाये। मैं घर पर हूँगा।”

“मैं न चला जाऊ अपने लोगों के साथ ल्यूबीश्विन की मदद को?” द्योम्का ने प्रस्ताव किया पर दवीदोव झिड़ककर बोला

“तुम भी खूब हो! उन्हें खुद अपना काम करना चाहिये। जाकर उनकी दुम मरोड़ता हूँ, तब देखते हैं कैसे नहीं करेंगे काम। जोतो घोड़ा।”

छकड़े में जुते फार्म-कार्यालय के घोड़े को लेकर रजम्योल्नोव दवीदोव के घर पहुँचा। दवीदोव फाटक के पास बगल में छोटी-सी पोटली दबाये उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

“बैठो। तुम यह क्या खाना बाधकर ले जा रहे हो?” रजम्योल्नोव ने मुस्कराकर पूछा।

“कपड़े हैं।”

“कैसे कपड़े? किसलिये?”

“अरे कच्छा-बनियान है।”

“पर किसलिये?”

“अरे खड़े क्यों हो? चलाओ। कपड़े इसलिये ले जा रहा हूँ कि चीलडो को नहीं पालना चाहता, समझे? टोली में जा रहा हूँ और मैंने तब तक वहीं रहने का फैसला किया जब तक जुताई पूरी नहीं हो जाती। मुह बंद करो और हाको घोड़े को।”

“तुम कहीं पागल तो नहीं हो गये? तुम जुताई पूरी होने तक वहाँ करेंगे क्या?”

“जुताई।”

“दफ्तर छोड़कर जुताई करने जाओगे? वाह, क्या दूर की सोची है।”

“चलो-चलो!” दवीदोव नाक-भौं सिकोड़कर बोला।

“तुम मुझे नहीं हाको!” रजम्योल्नोव को शायद गुस्सा आने लगा था। “तुम मुझे ठीक से समझाओ, क्या तुम्हारे बिना उनका काम नहीं चलेगा? तुम्हारा काम निर्देशन करना है, हल चलाना नहीं। तुम फार्म के अध्यक्ष हो।”

दवीदोव की आँखों में क्रोध चमका

“तुम मुझे सिखाओगे? मैं सबसे पहले कम्युनिस्ट हूँ, और फिर इसके बाद ही सामूहिक फार्म का अध्यक्ष। मेरे यहाँ जुताई का काम मारा जा रहा है और मैं यहाँ हाथ पर

हाथ धरे बैठगा ? चलो ! मैं कहता हूँ , चलाओ ! ”

“ मुझे क्या फर्क पड़ता है ! क्या , तू अधा हो गया है ! ” रजम्यो-
नोव ने घोड़े पर चाबुक बरमाया ।

भटके से दबीदोव पीछे को लुढ़का , उसकी कोहनी बड़े जोर से
तस्ते में टकगई । पहिये हौले में खट-खट करने स्तेपी जानेवाली कच्ची
सड़क पर चलने लगे ।

गाव से निकलकर रजम्योनोव घोड़े को दुलकी चाल से चलाने
लगा । घाव के निशानवाले अपने माथे को आम्तीन से पोछकर वह
बोला

“ तुम , दबीदोव , बेवकूफी कर रहे हो ! तुम उनके यहाँ काम
का सही प्रबंध करके फौरन लौट आओ । भइया , हल चलाना कोई
बड़ी बात नहीं है ! अच्छे कमाडर का काम लडाई में आगे-आगे चलना
नहीं बल्कि अपने लोगों का सही आदेश देना होता है । मैं तो तुम्हें
यही कहूँगा ! ”

“ कृपा करके , अपने उदाहरण अपने पाम ही रखो ! मुझे उनको
काम करना सिखाना है और सिखाकर रहूँगा , फैक्ट ! यही है अगुआई !
पहली और तीसरी टोली ने अनाज की फसले बो दी है पर दूसरी
टोली पिछड़ गयी , लगता है ल्यूबीशिकन अकेला नहीं सँभाल पायेगा ।
और तुम हो कि ‘ अच्छे कमाडर जैसी बातें कर रहे हो । तुम क्यों
मरी आँखों में धूल भोंक रहे हो ? ’ तुम क्या सोचते हो कि मैंने अच्छे
कमाडर नहीं देखे हैं ? वही अच्छा होता है जो कंटिनाई के क्षणों में अपना
व्यक्तिगत उदाहरण दिखाकर लोगों की अगुआई करता है । और मैं
भी अगुआई करती हूँ ! ”

“ बेहतर तो यही होता कि तुम पहली टोली से उन्हें दो हल भिजवा
देते । ”

“ और लोग ? लोग कहाँ मे लाऊँगा ? चलाओ ! कृपा करके
तेजी से चलाओ ! ”

कटक तक वे मौन रहे । स्तेपी के ऊपर सूरज को छिपाकर सिर
के ऐन ऊपर हवा से मथी ओलोवाली गहरी जामनी घटा छाया थी ।
उसकी हिम की तरह शुभ्र किनारियाँ उफन रही थी पर काली भयावह
चोटी स्थिर खड़ी थी । घटा में बने छिद्र से , सूरज द्वारा नागनी रंगे
किनारे में धूप की निर्गुली किरणों का चौड़ा पुंज धरती पर पड़ रहा

था। सूर्य की किरणें क्षितिज पर फैली मुदूर भूरी स्तेपी में विचित्र रंग भर रही थी, उसमें अल्हड-जवानी भर रही थी

घटा की छाया में मौन स्तेपी वर्षा की प्रतीक्षा कर रही थी। हवा सड़क पर मुरमई धूल का गुबार उड़ा रही थी। हवा में अभी से वर्षा की नमी की सुगंध बसी थी। और एक-दो मिनट बाद बारिश के मोटे छोटे पड़ने लगे। मोटी-मोटी ठंडी बूंदें सड़क की धूल में गिरकर कीचड़ की नन्ही-नन्ही गोलियों में बदल जाती। मार्मेट चिन्ता के साथ सीटिया बजान लगे बंटेरो की चहचहाते तज हो गयी मादा को पुकारने हुकने की उत्तेजित आवाज रुक गयी। ज्वार की खूटी में मतही हवा का तेज भोका आया और वह खड़-खड़ हिलने लगी। स्तेपी में सूखे भाड़-भखाड़ की सरसराहट भर गयी। घटा के लटके सिरे के बिल्कुल पाम, वायु प्रवाह में डैने फैलाकर एक कौआ पूर्व की दिशा में विसर्पण कर रहा था। आकाश में मफेद बिजली चमकी और कौआ काय-काय करता अचानक तेजी से नीचे गिरने लगा। पल भर के लिये उस पर सूरज की किरण पड़ी और वह अलकतरे की धधकती मशाल की तरह चमका। उसके परो में कटती हवा तूफान की तरह सीटी बजा रही थी पर जमीन में कोई पचाम गज की ऊर्चा पर गोध्रा होकर डैने चलाने लगा और उसी क्षण कर्णभेदी गरज हुई।

कटक पर दूसरी टोली का शिविर दिखायी पड़ा रजम्योन्लोव का हलान पर उतरता एक व्यक्ति नजर आया जो उन्ही की ओर आ रहा था। वह गड्डो को फादता कभी-कभी फुदककर वृद्धों की तरह दौड़ने लगता। रजम्योन्लोव ने घोड़े को उसकी ओर मोड़ दिया और दूर ही से उसने बुढ़े श्चुकार को पहचान लिया। लगता था कि श्चुकार के साथ कोई अप्रिय घटना हुई है वह छुकड़े के पाम आया। उसके नंग सिर पर वाल बार्गस ग गील हो गये गीली दाढ़ी और भोहा पर बाजरे के उबले दाने जगह-जगह चिपके थे। श्चुकार के चेहरे पर हवाईया उड रही थी, उसे देखकर दबीदोव का माथा ठनका "टोली में कुछ गड़बड़ हो गयी भगडा हो गया।"

"क्या हुआ?" उसने पूछा।

"बड़ी मुश्किल से जान बचा पाया।" श्चुकार ने निश्वास छोड़कर कहा। "मुझे जान में मारना चाहते थे।"

"कौन?"

“ल्युबीशिकन और दूसरे।”

“क्यों?”

“उनके नखरों की वजह से ... दलिये के कारण ... मैं चुप रहने-
वालों में नहीं हूँ. मुझसे नहीं सहा गया ... बस ल्युबीशिकन छुरा उठा-
कर मेरे पीछे दौड़ पड़ा ... अगर मैं फुर्तीला न होता तो इस वक्त छुरा
मेरे आर-पार होता ! मरा पड़ा होता ! ..”

“अच्छा गांव जाओ, बाद में देखेंगे,” दवीदोव ने हल्की सांस
लेकर उसे आदेश दिया।

... और आधे घंटे पहले बात यह हुई थी : बुढ़ा श्चुकार एक दिन
पहले खिचड़ी में बहुत ज्यादा नमक के कारण रुष्ट टोली को खुश
करने के लक्ष्य में शाम को गांव के लिये खाना दृष्टा, रात वही बिताकर
सुबह को उसने घर से बोरी उठायी और रास्ते में गांव के छोर पर
रहनेवाले क्रास्नोकूतोव के खलिहान की ओर मुड़ गया, बाड़ फांदकर
वह चोकर के ढेर के पास चोर की तरह छिपकर बैठ गया। बुढ़े श्चुकार
की योजना बड़ी सरल-सीधी थी : सावधानी से मुर्गी पकड़कर उसे
हलाल करना और मुर्गी के मांस के साथ दलिया बनाकर टोली का
आदर-सम्मान प्राप्त करना। वह सांस रोककर कोई आधे घंटे लेटा
रहा, पर मुर्गिया दूरी पर ही दाना चुग रही थी, चोकर के ढेर के
पास फटकने का नाम ही नहीं ले रही थी। तब बुढ़ा श्चुकार धीरे-
धीरे उन्हें बुलाने लगा : “कुट-कुट-कुट ! ..” वह शिकारी पशु की
तर्ह चोकर के ढेर के पीछे छिपकर फुसफुसाने उन्हें पुकार रहा था।
संयोग से बुढ़ा क्रास्नोकूतोव खलिहान के पास ही था। मुर्गियों को
फुसलाते किसी व्यक्ति की चोर-आवाज उसे सुनायी पड़ी और वह बाड़
के पीछे छिपकर बैठ गया। मुर्गिया चोकर के ढेर के पास चली आयी
और तभी क्रास्नोकूतोव ने देखा कि चोकर में निकले किसी के हाथ
ने चितकबरी मुर्गी की टांग पकड़ ली। श्चुकार ने बिल्ली की फुर्ती
से मुर्गी की गरदन मरोड़ी और उसे बोरी में ठूस ही रहा था कि किसी
ने दबे स्वर में उससे पूछा : “मुर्गियों को छेड़ रहे हो?” और उसे
बाड़ के पीछे से उठता क्रास्नोकूतोव दिखायी दिया। बुढ़ा श्चुकार ऐसे
सकपका गया कि उसके हाथ से बोरी छूट गयी, टोपी उतारकर,
उसने बेमौक़े दुआ-सलाम किया : “नमस्ते, क्या हाल-चाल है, अफ़ा-
नासी पेत्रोविच !” — “भगवान की दया है,” वह बोला, “क्यों

मुर्गियों से खेल रहे हो?" — "हा-हा, यहा से गुज़र रहा था तो देखता क्या हूँ — चितकबरी मुर्गी। उसके पंख इतने विचित्र थे कि मैं अपने को गोक नहीं सका। मोचा, चलो पास से तो देखू कि यह कैसा विचित्र पक्षी है? बुढ़ा हो गया पर कभी ऐसी अजीब नहीं देखी।"

श्चुकार की वाक्पटुता यहा बेमौके की थी और क्रान्सोकूतोव ने उसे टोककर कहा "भूठ मत बोल खूमट बुढ़े। मुर्गियों को बांगी में डालकर नहीं देखते। सच बता, किसलिये चुगना चाहता था?" और श्चुकार ने अपना दोष स्वीकार करके कहा कि वह अपनी टोली के हलवाहो को मुर्गी के मांस का दलिया खिलाना चाहता था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ जब क्रान्सोकूतोव कुछ भी नहीं बोला बल्कि मलाह दी "हलवाहो के लिये यह करना पाप नहीं है। अब तुमन एक मुर्गी की गर्दन मरोड़ ही दी तो उसे बोरी में डाल लो और एक और ले लो, यह नहीं, यह वाली जो अडे नहीं देती, कलगीवाली एक मुर्गी में पूरी टोली के लिये कहा बनेगा दलिया। जल्दी से पकड़ो दूसरी और चपत हो जाओ, भगवान न करे अगर मेरी बुढ़िया ने देख लिया तो हम दोनों का जीना हराम हो जायेगा।"

बात के इस अंत से बहुत शूश श्चुकार ने दूसरी मुर्गी पकड़ी और बाड़ फादकर चल पड़ा। दो घंटे पहले वह टोली के शिविर में पहुँचा और जब ल्यूबीशकिन गाव में लौटा तो बड़े देग में उबलते पानी में बाजरा खदक रहा था, मुर्गी के मांस के टुकड़ों में चर्बी पिघलकर निकल रही थी। बुढ़े श्चुकार को बस एक बात का डर था कि कहीं दलिये में सड़े पानी की बूँद न रह जाये क्योंकि पानी वह पामवाले उथले पोखर में लाया था जिसकी सतह पर हल्की-सी झरी परत जमी थी। पर उसका डर सही नहीं निकला सब खाते हुए नारीफो के पुल बाध रहे थे और टांली-नायक ल्यूबीशकिन तो यह तक बोला "जिदगी भर कभी इतना बुढ़िया दलिया नहीं खाया। बाबा, सारी टोली की तरफ में तुम्हे धन्यवाद।"

देग बड़ी जल्दी खाली हो गया। सबसे चट लांग पेदी से गाढ़ा दलिया और मांस के टुकड़े निकालकर खाने लगे। और तभी वह घटना हुई जिसने हमेशा के लिये बावर्ची की हैसियत में श्चुकार का सारा 'कैरियर' बिगाड़ दिया ल्यूबीशकिन ने मांस का एक टुकड़ा निकाला

और उसे मुह में डालने ही वाला था, पर अचानक सिर झटका और उसका चेहरा पीला पड़ गया।

“यह क्या है?” उसने झुंकार से चिंघाड़कर पूछा, उसकी उगलियो में उबले मांस का सफेद टुकड़ा झूल रहा था।

“शायद मुर्गी का डैना है,” बुढ़े झुंकार ने शांत स्वर में उत्तर दिया।

ल्यूबीशकिन का चेहरा धीरे-धीरे लाल-पीला होने लगा।

“डैना? जरा इधर आकर देख, खानमामा!” वह गुर्गया।

“हे, भगवान!” एक औरत अग्न करके बोली, “अरे इस पर तो नाखून है।”

“अरी डायन!” बुढ़ा झुंकार औरत पर बरसकर बोला “डैने पर नाखून कहा में आये? तू अपना लहगा उठाकर दूढ़ अपने वहां नाखून।”

उसने मेजपोश पर अपनी चम्मच पटकी और ध्यान में देखा ल्यूबीशकिन के कापते हाथ में पतली-सी हट्टी लटकी थी, उसके सिरे पर झिल्लीदार पजे पर नन्हे-नन्हे नाखून थे।

“अरे!” अकीम बेसम्लेबनोव घबराकर बोला, ‘हम तो मेढक खा गये।’

बस यही हुल्लड शुरू हो गया कुछ ज्यादा धिन करनेवाली एक औरत कराह कर फदकी और मह को हाथ में दबाकर खन में बनी कुटिया के पीछे भाग गयी। बुढ़े झुंकार की आश्चर्य में फैली आखों को देखकर कोद्रात माइदान्स्कोव हमी से लोट-पोट हो गया, वह बड़ी मुश्किल से बोला ‘अरे लुगाइयो! तुम्हारा तो धर्म भ्रष्ट हो गया!’ उन कज्जाको ने जो इतनी धिन नहीं करते उसकी हा में हा मिलायी। “अब तुम्हारे पाप कभी माफ नहीं होंगे।” कृत्रिम भय के साथ कुम्बेन्कोव चिल्लाया। पर हमी से चिढ़ा अकीम बेसम्लेबनोव गेष के साथ चिल्लाया “हमने की क्या बात है? झुंकार के बच्चे की धुनाई करनी चाहिये।”

“देग में मेढक कहा में आ सकता था?” ल्यूबीशकिन जानना चाहता था।

“अरे यह तो पोखर में पानी लाया था, नहीं देखा इसने।”

“कुटिया के। खूमट बुढ़े। तूने हमें क्या खिला दिया?”

दोनेत्सकोव के बेटे की बहू अनीस्या चीखकर बोली और रो-रोकर कहने लगी “मैं तो गर्भवती हूँ। अगर तेरी वजह से, हरामजादे, गर्भ गिर गया तो ? ”

और उसने अपने कटोरे से बुड्डे श्चुकार के मुँह पर दलिया दे मारा।

बस तब तो हुडदग मच गया। औरने श्चुकार की दाढ़ी नोचने के लिये हाथ बढा रही थी हालांकि भय से आतंकित श्चुकार घबराकर चिल्लाये जा रहा था

‘जग रुको। यह मेढक नहीं है। भगवान की कमर मेढक नहीं है।’

“तब क्या है ?” अनीम्या ने गुस्से में चिल्लाकर पूछा।

“तुम्हें यह लग रहा है। तुम्हारी कारी कल्पना है।” श्चुकार ने चालाकी दिखा देने की कोशिश की।

पर ‘कल्पित’ हड्डी को चबाने का ल्युबीशिकन का प्रस्ताव उमने दृढ़ता से ठुकरा दिया। शायद मामला इसी पर ठंडा हो जाता अगर औरनों से चिढ़कर बुड्डा श्चुकार यह नहीं चिल्लाता

‘चुडैलो। डायनो। मेरा भमरा छेतना चाहती हो पर तुम्हें इतनी अकल नहीं कि यह मादा मेढक नहीं बल्कि शुक्ति है।’

“क्या SS ?” औरनों ने आश्चर्य के साथ पूछा।

“शुक्ति, एक प्रकार का पानी में रहनेवाला जीव होता है। मेढक तो नीच होता है पर शुक्ति ऊँची जाति की होती है। मेरा एक रिश्तेदार पुगने जमाने में जनरल फिलीमोनोव का अर्दनी था और उसने बताया था कि जनरल खाली पेट उन्हें सैकड़ों निगल जाता था। कच्चा खा जाता था। शुक्ति सिप्पी में निकली भी नहीं कि वह काटे में कुरेदकर सफाया कर देता। वह बेचारी ची-ची करती और जनरल उसे गले में उतार देता। तुम्हें क्या पता यह चीज शुक्ति की जात की भी तो हो सकती है ? जनरलो को पसंद थी और मैंने क्या पता तुम गवारो के लिये जान बूझकर दलिये में डाली हो, स्वाद के लिये ”

अब ल्युबीशिकन से न रहा गया। उसने ताबे की कलछी उठायी और खड़े होकर गला फाड़कर चिल्लाया

“जनरलो को ? स्वाद के लिये। मैं लाल छापेमार हूँ और तू मुझे किसी जनरल की तरह मेढक खिलाता है ?”

श्चुकार को लगा कि ल्यूबीस्कन के हाथ में छुरी है और वह मुडकर देखे बिना सिर पर पाव रखकर भाग खड़ा हुआ

शिविर में पहुँचकर बाद में दवीदोव को यह सब पता चला पर अभी श्चुकार को विदा करके उसने रज्ज्म्योल्नोव से घोड़ा तेज दौड़ाने का अनुरोध किया। वे शीघ्र ही टोली के शिविर में पहुँच गये। स्तेपी में वर्षा अभी भी टप-टप कर रही थी। ग्रेम्याची से सुदूर जोहड तक आधे आकाश में इद्रधनुष लटका था। शिविर में कोई भी नहीं था। रज्ज्म्योल्नोव से विदा लेकर दवीदोव पासवाली जोत की ओर चल पड़ा। उसके पास खुले बैल चर रहे थे और हलवाहा अकीम वमस्लेंबनोव शिविर में जाने के आलस्य के कारण मीता में ही मिर तक ओवरकांट ओढ़कर बारिश की टप-टप सुनता ऊध रहा था।

दवीदोव ने उसे उठाकर पूछा

“क्यों नहीं जोत रहे?”

अकीम अनिच्छा के साथ उठा और जम्हाई लेकर मुस्कगया।

“बारिश में जुताई नहीं की जा सकती, कामरड दवीदोव। आप को यह नहीं पता? बैल ट्रैक्टर नहीं है। उसकी गर्दन के बाल थोड़े से भीगे कि जुए में रगड़ खाकर गर्दन पर गहरा घाव हो जायेगा और तब समझ लो कि बैल तुम्हारा अब किसी काम का न रहता। हा-हा, मच कह रहा हूँ।” दवीदोव की आँखों में अविश्वास को देखकर उसने इस प्रकार अपनी बात पूरी की और दवीदोव को मलाह दी “बेहतर तो यही होगा कि आप जाकर इन लडाके मुर्गों को अलग करें। मुबह में कोद्रात माइदानिकोव हाथ धोकर अतामान्चुकोव के पीछे पड़ा हुआ है और अब वे उस पट्टी पर लड़ रहे हैं। कोद्रात उसे बैल खालन को कह रहा है और अतामान्चुकोव कहता है ‘मेरे बैलों के पास मत फटक, नहीं तो सिर फोड़ दूँगा।’ देखो तो गायद वे हाथापाई करने लगे।”

दवीदोव ने दूसरी पट्टी के सिरे की ओर देखा, वहाँ सचमुच कुछ हाथापाई-सी हो रही थी माइदानिकोव लोहे की कीली को तलवार की तरह घुमा रहा था और लम्बा अतामान्चुकोव एक हाथ की मुट्ठी भीचकर कमर पर रखे दूसरे से उसे जुए के पास से धकेल रहा था। उनकी आवाजे नहीं सुनायी पड़ रही थी। उनकी ओर तेजी से जाते हुए दवीदोव दूर से ही चिल्लाया

“यह क्या हो रहा है?”

“अरे दबीदोव, देखो तो! बारिश हो रही है और जोते जा रहा है। ऐसे तो वह बैलों की गर्दन रगड़ देगा। मैं कहता हूँ ‘बारिश हो रही है, खोल दे बैलों को,’ और यह मुझे मा-बहन की गाली देकर कहता है ‘टमसे तेरा कोई मरोकार नहीं।’ पर कुनिया की औलाद, किसका मरोकार है? किसका, लम्बू शैतान?” अतामान्चुकोव की ओर मुड़कर कीली घुमाता हुआ माइदानिकोव चिल्लाया।

लगता था कि वे पहले ही एक-दूसरे में हाथापाई कर चुके थे माइदानिकोव की आख के ऊपर अलूचे जैसा नीली पड़ा था और अतामान्चुकोव की कमीज आगे में फटी हुई थी, सफाचट, फूलें होट में खून रिस रहा था।

“मैं तुझे सामूहिक फार्म को नुकसान नहीं पहुंचाने दूंगा।” दबीदोव के आने से उत्साहित होकर माइदानिकोव चिल्लाया। “यह कहता है, ‘बैल मेरे नहीं, फार्म के हैं।’ अगर फार्म के हैं तो इसका मतलब कि तू खाल उतार सकते हो। हट बैलों के पाम में, हगमी।”

“तू कौन होता है, हुक्म चलानेवाला।? मुझ पर हाथ उठान का भी तुझे हक नहीं। अभी खुरचनी उठाकर तुझे ऐसा उधेड़गा। मुझे कोटा पूरा करना है और तू मुझे रोक रहा है।” बाये हाथ में कमीज के बटनो को टटोलते हुए अतामान्चुकोव फटे स्वर में चिल्लाया, उसका चेहरा सफेद पड़ गया था।

“बारिश में जुताई की जा सकती है?” दबीदोव ने उसमें पूछा और कोद्रात में कीली छीनकर जमीन पर पटक दी।

अतामान्चुकोव की आखें चमकी। अपनी पतली गर्दन को घुमाकर वह फुफकारकर बोला

“निजी खेतों में नहीं की जा सकती, पर सामूहिक फार्म में जरूरी है।”

“कैसे ‘जरूरी’ है?”

“ऐसे कि योजना पूरी करना जरूरी है। बारिश हो या न हो पर तुम्हारा काम जुताई करना है। अगर नहीं करोगे तो ल्यूबीशिकन जीना दूभर कर देगा।”

“तू बक-बक मत कर कल जब मौसम साफ था तूने जुताई का कोटा पूरा किया?”

“जितना हो सकता था उतना जोता।”

माइदान्स्कीव फुत्कार कर बोला

“आधा एकड़ जोती। देखो तो बैल इसके कैसे है। इतने तगड़े कि सीगो तक हाथ नहीं जाता, पर कैसी जुताई की? दवीदोव, चलो। खुद देखो चलकर।” वह दवीदोव के ओवरकोट की गीली आस्तीन पकड़कर उसे सीता पर ले गया, आवेश में हाफता हुआ वह बुदबुदा रहा था ‘छू टच में कम गहरी जुताई न करने का फैसला किया था और यह क्या है? खुद नापकर देखो।”

दवीदोव ने झुककर नर्म और चपचपी सीता में उगलिया घुसेडी। उसकी गहराई तीन-चार इंच से ज्यादा नहीं थी।

“इसे जुताई कहते हैं? यह तो जमीन को खुजाना है न कि जोतना। मैं मुबह में ही गेमी लगन के लिये इसकी पिटाई करना चाहता था। जाकर देख लो सब जगह इसने इतनी ही गहरी जुताई की है।”

‘अरे, इधर आओ। मैं तुम से कह रहा हूँ।’ अनिच्छा से बैलों को खोलते अतामान्स्कीव को दवीदोव ने चिल्लाकर बुलाया।

वह धीरे-धीरे, आलस्य के साथ पास आया।

“तुम यह गेमे जुताई करते हो?” दवीदोव ने धीरे से पूछा।

“और आप क्या चाहते हैं? डेढ़ फुट गहरी?” अतामान्स्कीव ने आखे तरेरी और मुड़े सिर में टोपी उतारकर सिर झुकाया “माफ कीजिये। इसमें गहरी आप खुद जोतने की कोशिश करें। बाने करने में तो सब माहिर हैं पर काम करने नानी मरती है।”

‘पता है हम क्या चाहते हैं, तुम लुच्चे को फार्म में निकालना। दवीदोव चिल्लाया उसका चेहरा तमतमाकर लाल हो गया। “और निकालके रहेंगे।”

‘आप मुझ पर कृपा ही करेंगे। मैं खुद चला जाऊंगा। मैं सारी ज़िदगी तुम लोगों के लिये कमर नहीं तोड़ना चाहता। किस चीज के लिये मैं अपना खून-पसीना एक करूँ।’ और वह सीटी बजाता शिविर की ओर चल पड़ा।

शाम को जैसे ही सारी टोली शिविर में जमा हुई, दवीदोव ने कहा

“टोली के सामने मैं यह सवाल रखता हूँ मार्महिक फार्म के उस झूठे सदस्य के साथ क्या करें जो फार्म और सोवियत सत्ता को धोखा

देता है—छ इंच गहराई की ज़ताई की जगह तीन इंच की करता है? उसके साथ क्या करे, जो बारिश में काम करके बैलो को जान-बूझकर बेकार करना चाहता है जबकि अच्छे मौसम में सिर्फ आधा कोटा पूरा करता है?"

"निकाल दा।" ल्यूबीशिकन बोला।

औरतो ने उसका जबरदस्त समर्थन किया।

"आपके बीच ऐसा नुकसानदायी सदस्य है। यह रहा।" दवीदोव ने छकड़े के बम पर बैठे अतामान्चुकोव की ओर इशारा किया। "पूरी टोली यहा है। मैं इस प्रश्न पर मनदान का प्रस्ताव रखता हूँ। कौन इसके पक्ष में है कि विध्वंसक और कामचोर अतामान्चुकोव को निकाल दिया जाये?"

मन्तार्स में म नेर्ट्स ने पक्ष में हाथ उठाये। दवीदोव गिनती करके अतामान्चुकोव से रूखाई के साथ बोला

"चले जाओ। अब तुम सामूहिक फार्म के सदस्य नहीं रहें, फैंकट। एक साल बाद देखेंगे, अगर सुधर गये तो वापस ले लेंगे। और अब माथियो, मैं संक्षेप में आपसे बड़ी जरूरी बात करना चाहता हूँ। लगभग आप सब ठीक में काम नहीं कर रहे हैं। बहुत खराब कर रहे हैं। माइदान्निकोव के सिवाये और कोई भी कोटा पूरा नहीं कर रहा। दूसरी टोली के लिये यह बड़ी शर्म की बात है। ऐसे काम में तो मुह पर कालिख पुन जायेगी। ऐसे काम नहीं चलेगा।"

'कोटा बहुत ज्यादा है। बैलो के बस का नहीं है।' अकीम बेम-ब्लेबनोव ने कहा।

"बस का नहीं है। बैलो के? बेकार की बात है। पर माइदान्निकोव के बैलो के बस का कैसा है? मैं आपकी टोली में रुक रहा हूँ, अतामान्चुकोव के बेल लेकर मैं आपको उसका जीता-जागता उदाहरण दिखाऊंगा कि एक दिन में एक हेक्टेयर, सवा हेक्टेयर तक जमीन जोती जा सकती है।

"अरे दवीदोव, तुम तो बड़े चालाक हो। बढ़िया चीज भट देख लेते हो", अपनी छोटी खिचड़ी दाढ़ी को हाथ में कमकर कुभेन्कोव हसकर बोला, "अतामान्चुकोव के बैलो में तो पहाड़ तक पलटे जा सकते हैं। उनसे तो मैं तक पूरा हेक्टेयर जोत सकता हूँ"

'अपने बैलो में नहीं जोत सकते?"

“कभी नहीं।”

“तो चलो अदला-बदली कर ले? तुम अतामान्बुकोव के ले लो और मैं तुम्हारे! ठीक है?”

“चलो देख लेते हैं,” कुछ मोचकर कुभेन्कोव सतर्कता के साथ गभीर स्वर में बोला।

रात दवीदोव ने बेचैनी से काटी। वह खेत में बनी कुटिया में सोया था। रात को अकसर उसकी आख खुल जाती, कभी छतके टीन की खड़खड़ से, कभी वर्षा में नम ओवरकोट के अदर घुसती अर्द्धरात्रि की ठंड से, तो कभी भेड़ की खाल के बिछौने में भरे पिस्सुओं के काटने में।

मुह अंधेरे कोद्रात माइदान्कोव ने उसे जगा दिया। कोद्रात पूरी टोली को उठा चुका था। दवीदोव कुटिया में बाहर आया। आकाश के पश्चिमी आंचल में तारे मद्धिम-मद्धिम चमक रहे थे, आकाश के मुरमई-नीले पटल पर चांद की रुपहली हमिया दमक रही थी। दवीदोव जोहड़ के पानी में हाथ-मुह धो रहा था और पास ही में खड़ा कोद्रात अपनी पीली-सी मूछ का सिगा चबाते हुए बोल रहा था

“एक दिन में ढाई एकड़ में भी ऊपर, यह तो बहुत ज्यादा है कल तुम कुछ ज्यादा ही जोश में कह गये, कामरेड दवीदोव! कही हमारी जग-हमाई न हो जाये ”

“मब हमारे बस में है, हमारी मुट्ठी में है। बड़े अजीब हो, डरने की क्या बात?” दवीदोव उसका ढाढ़स बधा रहा था पर मन ही मन उमने मोचा “चाहे जान देनी पड़े खेत में, पर करके रहूंगा। रात को लालटेन जलाकर हल चलाऊंगा, पर पौने तीन एकड़ जोत कर रहूंगा, मुझे यह करके ही दिखाना है। नहीं तो मारे मजदूर वर्ग की नाक कट जायेगी ”

इतने में, जब अपनी किगमिच की कमीज के पल्ले में दवीदोव मुह पोछ रहा था, कोद्रात ने अपने और उसके बैलों को जोता और चिल्लाकर बोला

“चलो।”

हलो के पहिये चू-चू कर रहे थे, कोद्रात दवीदोव को बैलों में चलनेवाले हल से जुताई के दर्जनो सालों से चले आ रहे सीधे-सरल सिद्धांत समझाता चल रहा था।

“हम साक्कोव्स्की हल को सबसे बढ़िया मानते हैं। अकसाइस्की को ही लो, हल बुरा नहीं है, पर साक्कोव्स्की से वह कोई मुकाबला नहीं कर सकता। उममे वह सफाई नहीं। हमने इस तरह जुताई करने का फैसला किया है हरेक को पट्टी काट दी और अपनी मर्जी में जुताई करने की छूट दे दी। शुरू में बेसम्लेबनोव, अतामान्चुकोव और कुभेन्कोव एक पात बनाकर जुताई करने लगे, और तो और ल्युबीगिकन तक ने उसका पल्ला पकड़ लिया, वे बोले, ‘अब हम सामूहिक फार्म में काम करते हैं, इसलिये हमारा हल भी एक लाइन में चलने चाहिये।’ बस चला दिये। पर मैंने देखा कि मामला कुछ जंचा नहीं आगेवाला हल रुकता तो दूसरे को भी रुकना पड़ता। अगर आगेवाला काम में ढील देता तो पीछेवालों को भी अनचाहे ही उसी की रफ्तार से काम करना पड़ता। बस मैंने शोर मचा दिया, मैं बोला, ‘या तो मुझे आगे रखो या हरेक को अलग-अलग पट्टी दे दो।’ न्यूबी-शिकन भी तब तक समझ गया कि ऐसे जुताई करना बेकार है। किसी का काम दिखायी नहीं देता। सबको अलग-अलग पट्टियाँ दे दी गयीं और बस मैं निकल गया सबसे आगे। हमारी हरेक पट्टी हार्ड-हार्ड एकड़ की है तीन सौ सत्तर गज लम्बी और पैतीस गज चौड़ी।”

“पर बीच-बीच में मेढ़े क्यों नहीं जोती?” जोत के किनारों की ओर देखते हुए दवीदोव ने पूछा।

“इसकी वजह यह है तुम लम्बाई में हल चलाते हो और पट्टी खत्म होने पर बैलों को मोड़ना पड़ता है न? अगर तुम उन्हें एकदम मोड़ दा उल्टा तो बैलों की गर्दन छिल जायेगी जुआ, मैं और गये काम में तुम्हारे बैल। इसलिये हल उठाकर पैतीस गज खाली चलना पड़ता है। ट्रैक्टर तो एक जगह पर उल्टा मुड़ सकता है, उससे अगले पाँचों तो एकदम मुड़ जाते हैं और वह फिर उसी सीध में उल्टा चलने लगता है, बैलों की तीन-चार जोड़ियों को भला कैसे घुमाया जा सकता है? इसके लिये तो उन्हें फौजियों की तरह एक पाव पर उल्टा घूमना होगा ताकि मोड़ पर भी जमीन जुत जाये। इसीलिये बैलों से जुताई के लिये लम्बी पट्टियाँ नहीं काटी जा सकती। ट्रैक्टर के लिये तो जितनी लम्बी पट्टी हो उतना ही अच्छा है। अगर मैं बैलों से तीन सौ सत्तर गज की लम्बाई में हल चलाऊँ, पर इसके बाद मेरे हल को जमीन

छुए बिना पट्टी को पार करना होगा। अभी मैं आपको खाका बनाकर दिखाता हूँ," और कोद्रात ने रककर जमीन पर अपनी खुरचनी के पैने मिरे से लम्बोतर चौखाना बनाया। "मान लो यहाँ दस एकड़ है। तीन सौ मत्तर गज लम्बाई और एक सौ चालीस चौड़ाई। और मैं लम्बाई में पहली मीता में हल चलाता हूँ, देखिये अगर मैं ढाई एकड़ जोतता हूँ तब मुझे मोड़ पर पैतीस गज खाली चलना पड़ता है, और अगर मैं दस एकड़ की पट्टी जोतूँ तो मुझे एक सौ चालीस गज खाली चलना पड़ेगा। फायदा क्या? आप समझें? वक्त की बर्बादी है "

"हा, समझ गया, तुमने बात अपनी मिढ़ कर दी।"

"आपने कभी हल चलाया भी है?"

"नहीं, भैया, कभी मौका नहीं मिला। हल में तो मैं थोड़ा-बहुत परिचित हूँ पर चला उसे नहीं सकता। तुम मुझे समझा दो मैं बड़ी जल्दी समझ जाता हूँ।"

"अच्छा चलिये मैं आपका हल बिठा देता हूँ, आपके साथ दो एक घेरे लगा लगा फिर आप खुद ही सीख लेंगे।"

कोद्रात ने दबीदोव के हल को छ उच की गहरी जुत्कार्ट के लिये मट किया और अनायास ही 'तू' पर आकर बोला

"जब जुताई करते समय तुम्हें लगे कि बैलों को मुश्किल हो रही है तो तू इस चीज को थोड़ा घुमा देना। हम इसे पीपा कहते हैं देख रहा है, इसकी चेन बड़ी-छोटी हो सकती है। तू पीपा घुमायेगा तो फाल थोड़ा मुड़कर तिरछा हो जायेगा और वह अपनी आठ इंच की चाटार्ड पर नहीं ब्रॉन्क छ उच चौड़ी मीता काटन लगगा और बैलों को थोड़ी आसानी हो जायेगी। अच्छा चलो!" और उसने बैलों को हाककर कहा "तू अपनी जान की परवाह मत कर, कामरेड दबी-दोव!"

दबीदोव के किशोर हकवैये ने कोड़ा फटकाग और आगेवाले बैल तेजी में चल पड़े। दबीदोव ने कुछ घबराहट के साथ हल की मूठ पर हाथ रखा और हल के पीछे-पीछे चल पड़ा। वह जमीन पर देखता चल रहा था। कोंल्टर में कटकर चिकनी मिट्टी माप का तरह बल खाती मोल्ड-बोर्ड की चमचमाती लौह सतह पर फिसलती जा रही थी।

पट्टी के मिरे की छूट पर माइदाल्निकोव दवीदोव के पाम दौडा-
दौडा आया और बोला

“हल को बायी तरफ भुका दे ताकि पहिए पर चले और ताकि मोल्ड-बोर्ड न माफ करना पड़े, ऐसे कर, देख।” उमने हल का दाया हत्था दबाया और जमीन की मतह ने मोल्ड-बोर्ड पर चिपके कीचड़ को चाटकर साफ कर दिया। “देखो, कैसे करना चाहिये।” कोद्रात हल को पलटकर मुस्कराया। यह भी एक गुर है। अगर ऐसे न करता तो जब बैल मिरे की छूट को पार करते तुम्हें खरचनी में उसे माफ करना पड़ता। अब तो वह ऐसा माफ है मानो धोया हो। और तू मिगरेट पीकर जी खश कर सकता है। ले, पकड़।”

उमने दवीदोव की ओर तबाक की थैली बढ़ायी, अपने लिये मिगरेट बनाकर उमन मिर हिलाकर अपने बैलों की ओर इशारा किया

“देखो मेरी लुगार्ट कैसे जुताई कर रही है। हल अच्छा है, एक बार लगा दिया तो बाहर कम ही निकलता है, वह तो अकेली भी जुताई कर सकती है”

“क्या तुम्हारी बीबी तुम्हारे साथ हकबैये का काम करती है?” दवीदोव ने पूछा।

“हां। उसके साथ आसानी रहती है। खरी-खोटी कहने पर भी बग नहीं मानती अगर मान भी जाये तो गत तक के लिये गत मलह करवा देती है, आखिर गैर तो नहीं है हम”

कोद्रात मुस्कराया और दाये-बाये हिलते-डुलते, लम्बे-लम्बे डग भरता जान को पार करने लगा।

नाशते तक दवीदोव लगभग आधा एकड़ जमीन जोत चुका था। उमने अनिच्छा के साथ दलिया खाया और जब बैलों ने अपना चारा खा लिया वह कोद्रात को आख मारकर बोला

“करे शुरू?”

“मैं तैयार हूँ। अन्यत्का, चल बैलों को लेकर।”

और फिर से काल्टर ओर फाल में कटकर पलटती मर्दियों में जमी धरती पर हल रेखाएं बनती जाती, सूखी घास की अकड़ी जड़े उखड़कर आकाश को ताकने लगती, उमके डठल कटकर काली मिट्टी में दबते जाते। मोल्ड-बोर्ड की बगल में मिट्टी लहंगे की तरह हिलोरे लेती। काली मिट्टी की सीठी गंध मधुर और स्फूर्तिदायी थी। सूरज

अभी चढ़ा ही है पर पिछलेवाले बैल की खाल पसीने से काली हो गयी ...

शाम तक दबीदोव के पांवों में जूतों के काटने के कारण छाले पड़ गये, कमर में दर्द होने लगा। लड़खड़ाते हुए उसने अपनी पट्टी को मापा और फटे, धूल जमे होंठों से मुस्करा दिया। दिन भर में उसने ढाई एकड़ जमीन जोत डाली थी।

“क्यों, कितनी पलट डाली?” हल्की-सी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कुभेन्कोव ने पूछा जब दबीदोव पैर घसीटता खेत-शिविर में पहुंचा।

“तुम्हारे खयाल से कितनी होगी?”

“क्यों, सवा एकड़ जोत दी?”

“नहीं, तेरी ऐसी की तैसी, ढाई एकड़ से ऊपर!”

पाटे के दाते से टांग पर आयी खरोचों पर मामोंट की चर्बी का लेप करता कुभेन्कोव कराहकर उठा और दबीदोव की पट्टी को मापने चल दिया। आधे घंटे बाद जब झुटपुटा छा गया था वह लौटा और अलाव से दूर बैठ गया।

“कुभेन्कोव, चुप क्यों हो?” दबीदोव ने पूछा। •

“टांग में दर्द हो रहा है... बोलना क्या है, जितनी जोत ली, उतनी जोत ली क्या बड़ी बात है इसमें।” उसने अनिच्छा से उत्तर दिया और अग्रखंड में मिर दृक्कर अलाव के पास लेट गया।

“कर दिया तेरा मुंह बंद? अब तो बक-बक नहीं करेगा?” कोद्रात ठहाका लगाकर बोला पर कुभेन्कोव चुप रहा, मानो उसने कुछ सुना ही नहीं।

दबीदोव ने कुटिया के पास लेटकर आखें मूदी। अलाव से लकड़ी की राख की गंध आ रही थी। दिन भर चलते रहने के कारण तलवें जल रहे थे, पिडलियों में मानो सीसा भरा था, वह किसी भी तरह पैरों के लिये आरामदेह स्थिति नहीं ढूंढ़ पा रहा था... लेटने के साथ ही उसकी आखों के सामने हल से पलटती काली मिट्टी तैरने लगी... मिर में हल्के-से चक्कर और मिचली को महसूस करके दबीदोव ने कोद्रात को आवाज दी।

“क्यों, नींद नहीं आ रही?” उसने उत्तर दिया।

“ हा , हल्का चक्कर आ रहा है , आखो के सामने हल से पलटती जमीन तैर रही है ”

“ यह तो हमेशा होता है , ” कोद्रात के स्वर में सहानुभूतिपूर्ण मुस्कान झलकी । “ दिन भर पाव तले देखते रहने से चक्कर आने लगते हैं । और मिट्टी की गंध भी इतनी सौधी , नशीली होती है कि बिना पिये नशा चढ़ जाता है । तू , दबीदोव , कल पाव तले ज्यादा मत देखना , इधर-उधर देखते रहना । ”

रात को दबीदोव को न पिस्सुओ के काटने की कोई खबर रही , न उसे घोड़ों के हिनाहिनाने और न ही पास में रात बिताते हंसों की डाग की चे-चे सुनायी पड़ी । वह बेसुध सोया पड़ा था । पौ फटने में पहले जब उसकी आख खुली तो उसे अगर्खे में लिपटा कोद्रात कुटिया की ओर आता दिखायी पड़ा ।

“ कहा गये थे ? ” उनीद में , सिर उठाकर दबीदोव ने पूछा ।

“ तुम्हारे और अपने बैलों की रखवाली कर रहा था खूब चर चुके हैं वे । मेने उन्हें घाटी में हाक दिया है , वहां घास बढ़िया है ”

कोद्रात की फटी-फटी-सी आवाज तेजी से दूर जाती हुई बुझने लगी । दबीदोव ने पूरी बात नहीं सुनी । नीद ने उसके सिर को फिर से ओम से भीगे भेड़ की खाल के कोट पर लिटा दिया और विस्मृति की चादर में लपेट दिया ।

उस दिन शाम तक दबीदोव ने ढाई एकड़ और दो सीते जोती । ल्युबीशिकन ने ठीक ढाई एकड़ , कुभेन्कोव ने ढाई एकड़ से कुछ ही कम जमीन जोती पर उनके ‘नय यह विलकुल आकस्मिक बात थी कि अतीप कौआ’ पहले स्थान पर आया जो इससे पहले तक उन फिसड्डी लोगों के बीच था जिन्हें दबीदोव गजाक में कमजोर ताकतवाली टीम’ कहता था । वह तीनवाले बैलों से जोत रहा था जो अब तक दुबले हो गये थे । दोपहर के खाने के समय वह इसके बारे में कुछ नहीं बोला कि कितनी जोती है । खाना खाने के बाद उसकी पत्नी जो उसके हकवैये का काम कर रही थी , बैलों को अपनी भोली से खल खिलाने लगी और अतीप ने दस्तरखान पर गिरे डबल रोटी के चूरे तक को अपनी पत्नी की भोली में डाल दिया — बैलों को खिलाने के लिये । ल्युबीशिकन ने यह देखकर खीसे निपोरी

“ बड़ा जोर लग रहा है , अतीप ! ”

“क्यों नहीं ?। हमारा सारा खानदान काम के मामले में कभी पीछे नहीं रहा।” वसंत की धूप में और भी काला हुआ अतीव ‘कौआ’ चुनौतीपूर्ण स्वर में बोला।

और उसने सचमुच कमाल कर डाला, शाम तक वह तीन एकड़ जमीन जोत चुका था। पर कोद्रात अधेर छाने के बाद ही खेत-शिविर में लौटा, जब दबीदोव ने उसमें पूछा “कितनी जोत डाली ?” वह बैठी आवाज में बोला “साढ़े तीन से कुछ ही कम। तबालू दो दोपहर में मिगरेट नहीं पी ” और उसने थकी पर विजयपूर्ण आंखों से दबीदोव की ओर देखा।

रात का खाना खाने के बाद दबीदोव ने दिन के काम के निष्कर्ष निकाले

‘दूसरी टोली के कामरेडों। हमारे यहाँ समाजवादी प्रतियोगिता बड़ी जबरदस्त रही। काम की गति बहुत प्रशंसनीय है। जुनाई के लिये टोली को सामूहिक फार्म के प्रबंध-मंडल की ओर से बहुत-बहुत शुक्रिया। प्यारे साथियों पिछड़ेपन में हम उबरकर रहेंगे, फैक्ट। और क्यों नहीं उबरेंगे, जब हम वास्तव में मिट्टी कर चुके हैं कि कोटा पूरा किया जा सकता है ? अब मार्ग जोर पाटा चलाने पर डालना है। और तीन मीनों पर एक साथ पाटा चलाना चाहिये। मीडान्स्कोव को खास तौर से शुक्रिया क्योंकि वह सचमुच ही बड़ा बढ़िया कामगार है।

३७

पंद्रह मई तक इलाक़े में अनाज की बोवाई लगभग पूरी हो गयी। तब तक ग्रेम्याची का सामूहिक फार्म बोवाई की योजना पूरी कर चुका था। दस तारीख को दोपहर तक तीसरी टोली ने बाकी बची आठ हेक्टेयर जमीन पर मकई और मूँगमुखी बो डाली और दबीदोव ने इलाकाई पार्टी समिति को बोवाई की समाप्ति की सूचना देने के लिये फौरन घुड़सवार सदेशवाहक को रवाना कर दिया।

वसंत के शुरू में बोये गये गेहूँ के अकुरों को देखकर जी खुशी में भर जाता पर दूसरी टोली के क्षेत्र में कोई सौ हेक्टेयर पर मई

के शुरू में कुबान्का गेहूँ बोया गया था। दवीदोव को डर था कि देर से बोया गया कुबान्का गेहूँ ठीक से नहीं उगेगा, ल्यूबीशकिन को भी यही आशंका थी और याकोव लुकीच तो माफ-माफ कहता था

“अकुर नहीं फूटेंगे। हरगिज नहीं निकलेगे। आप माल भर बोते रहना चाहते हैं, और चाहते हैं कि अकुर फूटें? किताबों में लिखा है कि मिश्र में माल में दो बार फसल उतांगी जानी है, पर कामरेड दवीदोव, ग्रेम्याची मिश्र नहीं है यहाँ बोवाई बड़ी पाखदी में करनी पड़ती है।”

“तुम क्यों अवसरवाद फैला रहे हो?” गुस्से में दवीदोव कहता। ‘हमारे यहाँ उगेगा। अगर हमें जरूरत पड़ेगी तो हम दो-दो फसले भी उगायेंगे। हमारी जमीन है, अपनी ही जमीन है जो चाहे वही करवा सकने है इसमें, फैक्ट।”

“बच्चों जैसी बातें करते हैं आप।”

“देख लेना। नागरिक ओस्त्रोव्नोव, तुम अपनी बातों में दक्षिणपंथी भकाव दिखा रहे हो और यह पार्टी के लिये अवांछित और हानिकार भुकाव है वह यानी यह भुकाव बहुत बदनाम हो चुका है—तुम यह मत भूलो।”

‘मैं भुकाव के बारे में नहीं, जमीन के बारे में बोल रहा हूँ। आपके भुकावों-वुकावों में मैं कुछ नहीं समझता।”

दवीदोव को कुबान्का गेहूँ की शक्ति में विश्वास था पर फिर भी वह अपनी शका से मुक्त नहीं हो पा रहा था। रोज वह फार्म-कार्यालय के घांड़ों की जिन कमकड़ धूप में भूलसी, निर्जीव पड़ी मनहूस काली जोतों को देखने जाता।

जमीन तेजी से सूख रही थी। पूरा पोषण न मिलने के कारण बीजों में फूटे अकुरों में बाहर निकलने की शक्ति नहीं थी। अकुरों की कोमल और क्षीण घुड़िया तपी, धूप की गंध से रमी मिट्टी के भुरभुरे ढेलों के नीचे, प्रकाश की उत्कठा लिये कुम्हलायी पड़ी थी। नमी से वंचित मिट्टी की सूखी पपड़ी को वे फोड़ नहीं पा रही थी। दवीदोव खेत में घोंडे से उतरकर घुटनों पर बैठता और हाथ में मिट्टी हटाता। हथेली में लेकर गेहूँ के कोमल अकुर को निहारते हुए उन मिट्टी में दबे उन लाखों दानों पर दया की कमकड़ भरी अनुभूति होती जो सूर्य का प्रकाश देखने को तड़पते थे और जिनकी मौत लगभग निश्चित

थी। अपनी असहायता पर उसे क्षोभ होता। वर्षा की आवश्यकता थी, तब तो कुबान्का हरे मखमली कालीन की तरह जोतो पर बिछ जाता। पर वर्षा नहीं हो रही थी और जोतो पर ढीठ जंगली घास-फूस ही पनप रहे थे।

एक बार शाम को वृद्धो का शिष्टमडल दबीदोव के घर आया।

“हम आपके पास एक विनम्र अनुरोध लेकर आये हैं,” बूढ़े अकीम मुर्गीछेड ने अभिवादन करके कहा, वह आखो से कमरे में देव-प्रतिमा को खोजने का विफल प्रयास करने लगा।

“क्या अनुरोध है? बाबा, देवप्रतिमा नहीं है मेरे यहाँ, बेकार मत ढूँढो।”

“नहीं है? खैर छोड़ो अनुरोध हम बुद्धो का यह है ”

“क्या है?”

“दूमरी टोली के खेत में, लगता है, गेहूँ के अकूर फूटेंगे नहीं?”

“बाबा, अभी कुछ नहीं लगता।”

“नहीं लगता पर आमार तो यही नजर आते हैं।”

“तो?”

“बारिश की जरूरत है।”

“हाँ, जरूरत है।”

“पूजा-पाठ के लिये पादरी को बुलाने की अनुमति देगे?”

“किमलिये? दबीदोव के गाल लाल हो गये।

“यह भी कोई पूछने की बात है, नाकि भगवान बारिश करें।”

“तुम भी क्या हो, बाबा जाओ-जाओ, बाबा, फिर कभी ऐसी बात न कहना।”

“कैसे नहीं कहूँ? गेहूँ क्या हमारा नहीं है?”

“सामूहिक फार्म का है।”

“पर हम क्या है? हम सामूहिक फार्म के सदस्य हैं।”

“और मैं—सामूहिक फार्म का अध्यक्ष हूँ।”

“हम यह सब समझते हैं, कामरेड। आप भगवान को नहीं मानते, हम आपसे पूजा में भाग लेने को नहीं कहते, पर हमें इसकी अनुमति दे दे, हम तो आस्तिक हैं।”

“नहीं दूंगा अनुमति। आपको फार्म की आम सभा ने भेजा है?”

“नहीं। हम बूढ़ो ने खुद आपमें अनुरोध करने का फैसला किया।”

“आप खुद सोचिये, आप कितने कम हैं, आम सभा कभी भी इसकी अनुमति नहीं देगी। बाबा, विज्ञान के कहने पर खेती करनी चाहिये न कि पादरियों के कहने पर।”

दवीदोव बड़ी देर तक उन्हें सावधानी से समझाता रहा ताकि वृद्धों की धार्मिक भावनाओं को ठेस न पहुंचे। वृद्ध चुपचाप उसे सुन रहे थे। अंत में मकार नागूल्लोव भी आ पहुंचा। उसने सुना कि आर्स्निको के प्रतिनिधियों के रूप में वृद्ध दवीदोव के पास पूजा की अनुमति मागने गये हैं, बस वह जल्दी-जल्दी वहां आया।

“मतलब, नहीं मिलेगी अनुमति?” बूढ़े अकीम मुर्गोछेड ने उठते हुए उसास छोड़ी।

‘नहीं और कोई जरूरत भी नहीं। इसके बिना भी ब्रागिश होगी।’

बूढ़े बाहर निकले और नागूल्लोव भी उनके पीछे-पीछे इयांड़ी में निकला। उसने दवीदोव के कमरे का दरवाजा कमकर बंद किया और फुसफुसाकर बोला

“ओ खूमट बुद्धो! मैं तुम्हारी रग-रग पहचानता हूँ। तुम बस अपनी मनमानी में रहना चाहते हो। तुम्हारा बस चले तो तुम हर दिन कोई न कोई त्योहार मनाते रहो, देवताओं की तसवीरे उठाकर स्नेपी में घूमते अनाज की फसलों को कुचलते फिरो अगर तुम अपनी मर्जी में पादरी को बुलाकर खेतों की तरफ गये तो मैं तुम्हारे पीछे-पीछे फायर-ब्रिगेड लेकर पहुंच जाऊंगा और तब तक तुम पर पंपों से पानी डलवाता रहूंगा जब तक तुम खुद घुलकर पानी नहीं बन जाओगे। समझे? पादरी के न आने में ही उसका भला है। मैं उस लम्बे बालों-वाले खन्चर के बाल मरे-आम भेटों को मड़नेवाली कैंची में कतर दूंगा। मुंह काला करके उसे भगा दूंगा। तुम समझे?” यह कहकर वह मुंह चढ़ाये दवीदोव के पास लौटा और सटूक पर बैठ गया।

“बुद्धो के साथ क्या फुसफुस कर रहे थे?” दवीदोव ने सशय के साथ पूछा।

“मौसम के बारे में बात कर रहे थे,” मकार ने पलक झपकते बिना उत्तर दिया।

“आगे?”

“आगे क्या, बस उन्होंने पक्का फैसला किया कि पूजा-बूजा नहीं करवायेगे।”

“पर उन्होंने कहा क्या?” दबीदोव ने मुस्कान छिपाने के लिये मुंह मोड़कर पूछा।

“कहा कि वे समझ गये कि धर्म अफीम की तरह है तुम मेरे पीछे क्यों पड़ गये, सेम्योन? तुम बिल्कुल जोक की तरह हो, एक बार चिपक गये तो छूटने का नाम नहीं लेते। क्या कहा, क्यों कहा? अरे जो कहा सो कहा। तुम इनके साथ डेमोक्रेसी की बातें करते हो, मनाते हो, मिलते करते हो। अरे ये बुद्धे ऐसी भाषा नहीं समझते। उनके तो दिमाग में भुम भरा है। बातों का उन पर असर नहीं होता, इन पर तो सौ सुनारवाली नहीं एक लोहारवाली ठीक बैठती है।”

दबीदोव ने हसकर निराशा के साथ हाथ भाड़ दिया। नहीं, मकार को कोई दुरुस्त नहीं कर सकता था।

दो मप्नाह वह पार्टी की सदस्यता में वचित रहा और इस दौरान इलाकाई पार्टी समिति में नेता बदल गये। कोर्चजीन्स्की और खोमु-तोव को हटा दिया गया।

इलाकाई पार्टी समिति के नये सचिव ने मडल के नियंत्रण आयोग में नागूल्नोव की याचिका मिलने पर ब्यूरो के एक सदस्य को मामले की द्वारा जांच के लिये गेम्पाची भेजा। उसके बाद ब्यूरो ने नागूल्नोव को पार्टी में निष्कासित करने के बारे में अपने पुराने फैसले को रद्द कर दिया, उसे रद्द करने का कारण यह बताया गया कि दंड दोष में कहीं अधिक मस्त था। इसके अलावा नागूल्नोव के विरुद्ध तब लगाये गये कई आरोप भी (‘अनैतिक आचरण’, ‘अनैतिक यौन संबंध’) दमरी जांच के समय मिट्ट नहीं गए। मकार को वम चेतावनी दी गयी। इसी पर मामला समाप्त हो गया।

दबीदोव ने जो पार्टी इकाई का कार्यवाहक सचिव था, मकार को कार्यभार लौटाते हुए पूछा

“मिल गयी मीख तुम्हें? और फिर करोगे ज्यादाती?”

‘हा बड़ी मीख मिली। पर यह बताओ ज्यादाती किसने की थी मेने या इलाकाई समिति ने?’

“तुमने भी और इलाकाई समिति ने भी। दोनों ने थोड़ी-थोड़ी।”

“पर मैं तो कहता हूँ कि मडल समिति भी ज्यादाती करती है।”

“कैसी, उदाहरण दो?”

“ऐसी सामूहिक फार्मों से निकलनेवालों को ढोर लौटाने का

आदेश क्यों नहीं दिया? क्या यह जबरन सामूहिकीकरण नहीं है? वही तो है। लोग सामूहिक फार्म में निकले पर उन्हें न ढोर लौटाये जा रहे हैं न औजार। बान साफ है, उसके पाम जीने के लिये कुछ नहीं, फिर से सामूहिक फार्म में लौटने के अलावा कोई चारा नहीं। और वे चू-चू करके लौट रहे हैं।”

“पर ढोर और औजार तो सामूहिक फार्म के अविभाज्य कोष में शामिल हो गये हैं।”

“भाड़ में जाये ऐसा कोष अगर वे मन मारकर सामूहिक फार्म में लौट रहे हैं। निकाल बहार करो उन्हें। कह दो उन्हें, ‘लो, चाटो अपने औजार।’ मैं तो उन्हें सामूहिक फार्म के पाम फटकने तक न देता पर तुमने ऐसे पूरे मौ लौटुओं को भर लिया, क्या सोचते हो कि वे सचेत सामूहिक किसान बनेंगे? ठेगा। वे बिच्छू रहेंगे तो सामूहिक फार्म में, पर आखिरी दम तक अलग खेती का सपना देखते रहेंगे मैं जानता हूँ उन्हें। और जो उन्हें ढोर व कृषि औजार नहीं लौटाये गये यह वामपथी भुकाव है और तुमने जो उन्हें वापस सामूहिक फार्म में भर्ती कर लिया, यह दक्षिणपथी भुकाव है। भैया, मैं भी अब राजनीतिक दृष्टि से विकसित हो गया हूँ, अब तुम मझे उल्लू नहीं बना सकते।

तुम राजनीतिक दृष्टि से विकसित कहा हूँ, अगर यह तक तो समझत नहीं कि अभी, कृषिवर्ष पूरा होने से पहले हम फार्म में निकलने-वालों का हिसाब साफ नहीं कर सकते।”

‘यह तो मैं समझता हूँ।

“अरे मकार, मकार! तुम चैन से नहीं बैठ पाते, अकसर तुम्हारे दिमाग का कोई पेच ढीला हो जाता है, फैक्ट।’

वे बड़ी देर तक उमी तरह बहस करत रह अतत उनसे भगडा हो गया और दबीदोव चला गया।

दो मप्ताहो मे ग्रेम्याची म बहुत-सी घटनाएँ हुईं। देसीद घुल्ले में मरीना पोयार्कोवा की शादी पर सारे गाव को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उसके यहाँ रहने चला गया, रात को बैलगाड़ी में खुद जुतकर वह अपना सारा सामान, जो कुल मिलाकर बहुत थोड़ा था, उसके यहाँ ले गया। अपने घर की खिड़कियों और दरवाजे पर तख्ते ठोक दिये।

“मरीना को जोड़ी मिल गयी। वे दोनों मिलकर तो ट्रैक्टर से ज्यादा काम कर सकते हैं।” गाववाले आपस में कहते।

अपनी बहुत वर्षों की महबूबा की शादी से अद्रेई रजम्योलोव का दिल टूट गया, शुरू-शुरू में उसने अपने को काबू में रखने की कोशिश की पर यह ज्यादा समय नहीं चला और वह दबीदोव से छिपकर पीने लगा। पर दबीदोव में यह छिपा न रहा, एक दिन उसने चेतावनी देते हुए कहा

“अद्रेई, तुम यह छोड़ दो। अच्छी बात नहीं है।”

“छोड़ दूंगा, सेम्यान, पर मुझे बेहद बुरा लगता है। किसको ले आयी कुतिया मेरे बदले? मेरे बदले किम को ले आयी?”

“यह उसका निजी मामला है।”

“पर मुझे तो बुरा लगता है।”

“बुरा तुम मान सकते हो पर पियो नहीं। इसका वक्त नहीं है। जल्दी ही नलाई शुरू होनेवाली है।”

पर मयोग से मरीना अकसर अद्रेई के रास्ते आ जाती, देखने में वह बड़ी सतुष्ट, सुर्खा लगती थी।

देमीद घुन्ना उसके छोटे-से घर-बार में बैल की तरह जुता रहता। कुछ ही दिनों में उसने मरीना के अहाते की सभी कोठरियों की मरम्मत कर डाली। एक ही दिन में उसने तीन मीटर गहरा तहखाना खोद डाला, अकेला डेढ़-डेढ़ क्विटल भारी बल्लिया और कड़िया उठा लेता मरीना ने उसके सारे कपड़े धो-धाकर मी डाले, बनियानो आदि में पैबद लगा दिये, पडोमिनो में देमीद के काम की तारीफ करते न थकती।

“वह मेरे घर में बहुत काम का है। भालू की तरह तगड़ा है। हर काम फटाफट करता है। घुन्ना है तो क्या हुआ हमारे बीच तू-तू मैं-मैं कम ही होगी ”

और अद्रेई अपने नये पति में मरीना के खुश होने की बातें सुन-सनकर उदासो के साथ बदबदाना

“अरे मरीना! क्या मैं तुम्हारी कोठरियों की मरम्मत नहीं कर सकता था, क्या मैं तुम्हारे लिये तहखाना नहीं खोद सकता था? तुमने मेरी जवानी बरबाद कर डाली!”

बेदखल गायेव निर्वासन में ग्रेम्याची में लौटा। क्षेत्रीय निर्वाचन आयोग ने उसके नागरिक अधिकार बहाल कर दिये। जैसे ही बहुत

बच्चो का बाप गायेव गाव मे पहुचा दवीदोव ने उसे भट से फार्म के कार्यालय मे बुलवाया।

“कैसे जीने का इरादा रखते हो, नागरिक गायेव? अलग खेती करोगे या सामूहिक फार्म मे भरती होगे?”

“जैसी जुगाड बैठेगी,” गायेव बोला, वह गैरकानूनी बेदखली के अपमान को नही भूला था।

“फिर भी?”

“लगता है, सामूहिक फार्म मे बचना मुश्किल ही है।”

“तो लिख दो अर्जी।”

“पर मेरी सपत्ति का क्या हुआ?”

“मवेशी तुम्हारे सामूहिक फार्म मे है, कृषि औजार भी। पर कपडे जत्ते, बर्तन-भाडे तुम्हारे हम बाट चुके है। इस मामले मे कठिनाई होगी। कुछ चोजे लौटा दोगे बाक़ी के पैसे ले लेना।”

“अनाज तो तुमने मेरा माग ले लिया था।”

“अरे, यह मामूली बात है। जाओ मैनेजर के पास, वह स्टोर-कीपर से कह देगा तुम्हे शुरू के लिये दमेक पूद आटा देने को।”

यह सुनकर कि दवीदोव गायेव को सामूहिक फार्म मे भरती करने-वाला है मकार रोष के साथ अद्वेई रजम्योल्लोव मे बोला

“हरेक ऐसे-जैसे नत्थू खैरे को फार्म मे भरती किया जाने लगा। तब तो दवीदोव को ‘मोलोत’ अखबार मे विज्ञापन छपवा देना चाहिये कि वह हरेक सजायाफ़्ता को सामूहिक फार्म मे भरती करेगा।”

बोवार्ड के ब्राद ग्रम्याची की पार्टी ट्काई के सदस्यो की सन्ख्या दुगनी हो गयी तीन के यह तीन साल बधु ग रह चुका पावेल ल्युबीश्विन, तीसरी टाली का सामूहिक किसान नस्तोर लोश्चीलिन और घोम्का उशाकोव कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार सदस्य बने। पार्टी इकाई की बैठक के दिन जब ल्युबीश्विन और दूसरे को पार्टी मे भरती किया जा रहा था, नागूल्नोव ने कोद्रात माइदानिकोव को सुभाव दिया

“कोद्रात, हो जाओ भरती पार्टी मे, मै खुशी से तुम्हारा समर्थन करूंगा। तुम मेरे दस्ते मे सेवा करते थे, बहादुर लाल अश्वारोही थे और अब अग्रणी सामूहिक किसान हो। मै पूछता हू तुम क्यों पार्टी मे दूर खडे हो? हालात ऐसे है कि किसी भी वक्त विश्व क्रांति शुरू हो सकती है और क्या पता हमे फिर से एक ही दस्ते मे शामिल होकर

सोवियत सत्ता की रक्षा करनी पड़े। और तुम इतने वक्त बाद भी पहले की तरह ही पार्टी के सदस्य नहीं हो! अच्छी बात नहीं है! हो जाओ भरती!”

कोंद्रात ने उसांस छोड़ी और मन की बात कह डाली:

“नहीं, कामरेड नागूलोव, अभी मेरी आत्मा मुझे पार्टी में शामिल होने की इजाजत नहीं देती सोवियत सत्ता की खातिर लड़ने के लिये मैं फिर से तैयार हूँ और सामूहिक फ़ार्म में भी ईमानदारी से काम करूँगा पर पार्टी में नाम नहीं लिखवा सकता...”

“क्यों?” नागूलोव ने भौंहे तानकर पूछा।

“इसलिये कि मैं अब सामूहिक फ़ार्म का सदस्य हूँ पर फिर भी अपनी संपत्ति का मोह है मुझमें...” कोंद्रात के होंठ कांपे और वह जल्दी-जल्दी फुसफुसाकर बोलने लगा “मेरा मन अपने बैलों के लिये दुखता है, मुझे उन पर तरस आता है... उनकी ऐसी देखभाल नहीं होती जैसी होनी चाहिये... अकीम बेसल्लेबनोव ने गाड़ी में जोतकर जुए से मेरेवाले घोड़े की गर्दन रगड़ दी, यह देखकर दिन भर मेरा जी मुंह में कौर डालने को न हुआ... भला छोटे से घोड़े को इतना बड़ा जुआ पहनाया जा सकता है? बस इसी कारण मैं भरती नहीं हो सकता। अगर अभी तक मैंने संपत्ति से मुंह नहीं झेड़ा तो मेरा ईमान मुझे पार्टी में शामिल कैसे होने दे सकता है। मैं तो यही मानकर चलता हूँ।”

मकार कुछ मोचकर बोला:

“तुम ठीक ही कहते हो। कुछ रुक जाओ, अभी नहीं भरती होओ। सामूहिक फ़ार्म में सब गड़बड़ियों से हम डटकर संघर्ष करेंगे, जुए सब सही नाप के होंगे। और अगर तुम सपनों में भी अपने बैलों को देखते हो तो पार्टी में तुम्हें भरती नहीं किया जा सकता। पार्टी में संपत्ति का मोह त्याग कर ही भरती होना चाहिये। पार्टी में भरती होने के लिये काच की तरह साफ़ होकर एक ही विचार मन में रखना चाहिये कि कैसे विश्व क्रांति हो। मेरा बाप भी खाता-पीता था, बचपन से ही मुझे भी जायदाद से प्यार करना सिखाता था पर मेरा मन इसमें बिलकुल भी नहीं लगता था, मेरे लिये संपत्ति का कोई मोल नहीं था। मैं अच्छे-खासे जीवन को, चार जोड़ी बैलों को ठोकर मारकर खेत मजदूर बन गया इसलिये अच्छा ही होगा अगर तुम अब तक पार्टी

मे भरती न होना जब तक सपत्ति का मोह न छूट जाये। ”

यह खबर आग की तरह ग्रेम्याची मे फैल गयी कि ल्युबोशिकन , उयाकोव और लोन्चीलिन पार्टी मे भरती हो रहे है। किसी ने बुढ़े श्चुकार से मजाक मे कहा

‘ अरे तुम पार्टी मे क्यों नही भरती होतें ? तुम तो सक्रिय लोगों मे हो , दे डालो अर्जी ! तुम्हे कोई ओहदा-वोहदा दे दिया जायेगा , तुम चमडे का ब्रीफकेस खरीद लेना और उसे बगल मे दबाकर घूमना । ”

श्चुकार ने इस सुझाव पर गौर किया और ग्राम को जैसे ही अधेरा छाया वह नागूल्लोव के घर पहुचा ।

“ नमस्ते , मकार । ”

“ नमस्ते । क्यों आये हो ? ”

लोग-बाग पार्टी मे भरती हो रहे है ”

“ तो ? ”

तो-तो क्यों करने हो तोते की तरह ? ”

“ आगे बोलो ? ”

‘ आगे यह कि मै भी भरती होना चाहता हूँ । भैया , मुझे ज़िदगी भर घोडो की रखवाली नही करनी । मैने उनमे ब्याह थोडे ही किया है । ’

“ तुम चाहते क्या हो ? ”

“ मै कह तो रहा हूँ पार्टी मे भरती होना चाहता हूँ । यही पता करन आया है कि मुझे कौनसा ओहदा वगैरह मिलेगा तुम मझे यह बताओ मुझे क्या और कैसे लिखना है ? ”

“ तुम क्या क्या तुम सोचते हो कि पार्टी मे लोग ओहदे पाने क लिये भरती हात है ? ”

“ हमारे यहा तो सभी पार्टीवाले किसी न किसी ओहदे पर है । ”

मकार ने अपने को सभालकर बात बदली

“ ईस्टर पर तुम्हारे घर पादरी आया था ? ”

“ यह भी कोई पूछने की बात है ? ”

“ तुमने उसे दक्षिणा दी ? ”

“ क्यों न देता ? दो अडे और कोई आंदा पाउड बैंक फैंट दिये थे । ”

“ मतलब , तुम अभी तक भगवान मे विश्वास करते हो ? ”

“नहीं, इतना ज्यादा तो नहीं पर अगर बीमार हुआ या कोई और मुसीबत आये या बिजली जोर से गरजे तो बेशक मैं प्रार्थना करता हूँ भगवान की।”

मकार बुढ़े श्चुकार में भद्र व्यवहार करना चाहता था, उसे अच्छी तरह प्यार से समझाना चाहता था कि क्यों उसे पार्टी में नहीं लिया जा सकता, श्चुकार का मुह तो खुलवा दिया उसने पर अपने को मर्यामित न रख सका, उर्मलिये भट्ट बोला

“भाइ में जा, खूसट बुढ़े! पादरियो को अडो की दक्षिणा देता है और ऊपर से ओहदो-पदो के सपने देखता है? थोडो को तो कुट्टी डालनी आती नहीं। पार्टी को तुम्हें जैसा थोथे चने की क्या जरूरत? तू क्या मजाक करने आया है? तू क्या सोचता है पार्टी में हर राह चलते को भरती किया जाता है? तुम्हें तो बस गाल पीटना आता है, गप्पे हाकने के अलावा तुम्हें कोई काम नहीं। नाप अपना रास्ता, मुझे मत चिढ़ा, मैं आदमी नर्वस हूँ। मैं बीमार आदमी हूँ, तुम्हें से शांति के साथ बात नहीं कर सकता। जा अपने रास्ते। मरग मुह क्यों ताक रहा है?”

“गलत समय आया हूँ। दोपहर के खाने के बाद आना चाहिये था” बुढ़े श्चुकार ने हडबडी में फाटक बद करते हुए म्मनाल के साथ मोचा।

ग्रैम्याची में तहलका मचानेवाली विशेषकर वहां की लड़कियों को स्तब्ध करनेवाली आखिरी खबर दिमोक की मौत थी।

लोक न्यायालय द्वारा दंडित येफीम त्रूबाचोव और बाताल्लिकोव ने लिखा था कि स्टेशन के रास्ते दिमाक आजादी की लिये, ग्रैम्याची की याद में तड़पने लगा और उसने भागने की कोशिश की।

कैदियों के साथ जा रहे मिलीशियामैन ने तीन बार चिल्लाकर दिमोक में रुकने को कहा, पर वह झुककर जोत को पार करता जंगल की ओर दौड़े जा रहा था। भाड़ियों तक कोई तीस गज की दूरी रह गयी थी कि तभी मिलीशियामैन एक घुटन को टिकाकर बैठा और रायफल तान ली और तीसरी गोली में उसने दिमोक को मदा के लिये लिटा दिया।

बुआ के अलावा उस यतीम लड़के के लिये आम् वहानवाला था ही कौन, और दिमोक में प्रेम का सरल विज्ञान सीखी

लडकियों ने आसू बहाये भी, तो दो पल के लिये।

कहते हैं न, 'बात पुरानी पड़ जाती है, देह का घाव भर जाता है' और लडकियों के आसू तो सुबह की ओम की तरह हैं।

३८

सन् १९३० में पहली बार तथाकथित 'मृत काल' न रहा। पहले जब लोग पुराने ढर्रे से रहते थे टन दो महीना को व्यर्थ ही मृत काल नहीं कहा जाता था। बोवाई करके किसान धीरे-धीरे घास काटने की तैयारी करने लगते। चरागाहों में बैल और घोड़े चरते और भावी काम के लिये शक्ति जोड़ते रहते। और पुरुष कृषि यंत्रों, बैलगाड़ियों आदि की मरम्मत करते। शायद ही कभी कोई मई में जुताई करने जाता। गावों में बांझिल नीरवता छा जाती। दोपहर को गलियों में मल्लाटा छा जाता, किसी भी आदमी की सूरत न नजर आती। मर्द कहीं गये होते या घरों में तहखानों में आराम कर रहे होते या आलस्य के साथ कुल्हाड़े से ठक-ठक करते। उनीदी औरते कहीं ठंडक में बैठकर एक दूसरे के सिर देखती। गावों में निर्जनता और उनीदी नीरवता का राज होता।

पर सामूहिक जीवन के पहले ही वर्ष ग्रेम्याची में 'मृत काल' भग हो गया। जैसे ही अकुर निकले निगाई शुरू हो गयी।

'तीन बार निगाई करेंगे ताकि सामूहिक फार्म के खेतों में जंगली घास की एक भी पत्ती न बचे।' सभा में दबीदोव ने घोषणा की।

याकोव लुकीच बेहद खुश था। उस जैसे फुर्तीले और अथक आदमी को ऐसी व्यवस्था बेहद अच्छी लगती थी जब सारा गाव किसी न किसी काम में व्यस्त रहता। सोवियत सत्ता उड़ तो बहुत ऊंची रही है, देखते हैं उतरेगी कैसे। निगाई भी करेंगे, परती भूमि भी जोतेंगे, ढोर भी चराओं और औजारों की मरम्मत करेंगे पर लोग काम करेंगे भी? क्या लुगाइया निगाई करने का राजी होगी? यह तो अनसुनी बात है। दोन के सारे इलाके में पहले कभी भी किसी ने अनाज के खेतों की निगाई नहीं की। वैसे बेकार ही नहीं की। फसल और भी अच्छी होती। और मुझ फूहड़ बूढ़े को भी निगाई करनी

चाहिये थी। लुगाइया तो गर्मी भर हाथ पर हाथ धरे बैठी रहती थी, " वह बड़े मलाल के साथ सोच रहा था कि जब उसकी अपनी अलग खेती थी तो वह बेकार ही अपने खेतों में निगाई नहीं करता था।

और दवीदोव के साथ बात करते समय कहता

" अब की बार तो, कामरेड दवीदोव, अनाज की कोई कमी नहीं रहेगी हमारे पास। पहले क्या होता था ? आदमी बीज बिखेरकर बैठ जाता, जैसी होगी फसल वैसी होगी। पर अनाज के साथ ढेरों खर-पतवार उग जाते। काटते वक्त तो फसल अच्छी लगती, पर कूटकर जब तौलते तो एक देस्यातीना से मुश्किल से चालीस पूद ही गेहूँ निकलता, कभी-कभी तो इससे भी कम। "

उसके बाद जब ग्रेम्याची के लोगो ने सामूहिक फार्म की खतियों से अनाज लूटा दवीदोव ओम्ब्रोव्नों को मैनेजर के पद से हटाना चाहता था। दवीदोव के मन में गहरा सदेह उपजा उसे खतियों के पास भीड़ में दिखायी पड़ा ओम्ब्रोव्नों का चेहरा याद था जब उसके चेहरे पर न केवल घबराहट बल्कि आतुरता की विद्वेषपूर्ण मुस्कान भी छायी थी कम से कम दवीदोव को तो तब यही लगा था।

अगले ही दिन उसने याकोव लुकीच को अपने कमरे में बुलाया और बाकी लोगो को बाहर भेज दिया। बातें वे फुसफुसाकर कर रहे थे।

" तुम कल खतियों के पास क्या कर रहे थे ? "

" लोगो को समझा रहा था, कामरेड दवीदोव। दुश्मनों को समझा रहा था कि होश में आये सामूहिक फार्म का अनाज न लूटे " याकोव लुकीच ने बिना अटके उत्तर दिया।

" और औरतो को तुमने औरतो को क्यों कहा कि खतियों की चाबियाँ मेरे पास जानी चाहिये ? "

" आप भी क्या कहते हैं ! मैंने किसे कहा था ? किसी से भी नहीं कहा था " "

" खुद औरतो ने मुझे बताया था जब मुझे पकड़कर ले जा रही थी " "

" झूठ है ! मैं मौगध खाकर कह सकता हूँ। मुझसे चिढ़कर चुगली की है। "

और दवीदोव का इरादा डगमगा गया। याकोव लुकीच ने भी

शीघ्र ही निगाई की तैयारी, सार्वजनिक भोजन-प्रबंध के लिये चंदा जमा करने में ऐसी सक्रियता दर्शायी, प्रबंध-मंडल के सामने ढेरों उपयोगी योजनाएं रख दी कि दवीदोव फिर से अपने उद्यमी मैनेजर का कार्यालय हो गया।

याकोव लुकीच ने प्रबंध-मंडल को टोलियों के खेतों के आम-पास कई नये जोहड़ बनाने का सुझाव दिया। उसने घाटियों में वे स्थान तक निश्चित कर दिये जहां वसंत में पिछली बर्फ का पानी आसानी से जमा किया जा सकता था। उसके विचार में नये जोहड़ इस प्रकार अवस्थित होने चाहिये थे ताकि टोलियों के ढोंगों को पानी पीने के लिये आधे किलोमीटर से दूर न जाना पड़े। दवीदोव को और प्रबंध-मंडल के अन्य सदस्यों को भी ओस्त्रोव्नोव की योजना की उपयोगिता को मानना पड़ा क्योंकि पुराने जोहड़ सामूहिक फार्म की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं थे। वे स्टेपी में इधर-उधर बिखरे पड़े थे और वसंत में टोली के शिविर में मवेशी को पानी पिलाने के लिये ढाई-तीन किलोमीटर हांककर ले जाना पड़ता था। इसमें बहुत अधिक समय बेकार जाता था। थके-मादे बैलों को जोहड़ पर जाकर पानी पीकर लौटने में लगभग दो घंटे लग जाते, और इतने समय में तो एक क्या, कई हेक्टेयर क्षेत्र को जोता जा सकता था। प्रबंध-मंडल ने नये जोहड़ों के निर्माण की अनुमति दे दी और याकोव लुकीच खेती के काम में अंतराल का फायदा उठाकर दवीदोव की अनुमति से बांधों के लिये लकड़ी जमा करवाने लगा।

यही नहीं, याकोव लुकीच ने ईंट का भट्टा बनाने का भी सुझाव दिया और उसके औचित्य में संदेह करनेवाले अर्काशा बदलू को आसानी से सिद्ध कर दिया कि पक्के अस्तबल और पशुशालाओं के निर्माण के लिये अपनी ईंट बनाना, शहर में अट्टाईस किलोमीटर की दूरी से लाने और साढ़े चार रूबल सैकड़ा के हिसाब से उनका दाम चुकाने से कहीं लाभदायक है। याकोव लुकीच ने ही तो तीसरी टोली के किसानों को दुर्नोय खड्ड को भरने के लिये राज़ी किया था जो धीरे-धीरे गांव के पास की उपजाऊ भूमि को काट रहा था जहां ज्वार और बड़े-बड़े मीठे तरबूजों की उम्दा फसल होती थी। उसके निर्देशन में खड्ड के आर-पार बल्लियां गाड़ दी गयीं, उनके बीच भाड़-भंखाड़, लीद-गोबर, कंकड़-पत्थर भर दिये गये। खड्ड की कटती ढलानों पर पाप्लर

और बेद की पौधें रोप दी गयी ताकि उनकी जड़ें आपस में गुंथकर भुरभुरी मिट्टी को जकड़ लें। इस प्रकार विशाल क्षेत्र को भू-क्षरण से बचाया जा सका।

इन सभी बातों के फलस्वरूप याकोव लुकीच की सामूहिक फ़ार्म में डगमगायी स्थिति मजबूत हो गयी। दबीदोव ने पक्का फैसला किया कि वह किसी भी हालत में अपने मैनेजर को नहीं खोयेगा और उसकी अथाह पहल-शक्ति का हर तरह समर्थन करेगा। नागूलोव तक याकोव लुकीच के प्रति नर्म पड़ गया।

एक बार पार्टी इकाई की सभा में उसने कहा :

“हालांकि विचारों की दृष्टि में वह पगया है, पर किसान बढ़िया है। जब तक हम उस जितना जानकार अपना आदमी तैयार नहीं कर लेते, तब तक ओस्त्रोव्नोव को मैनेजर बनाये रखेंगे। पार्टी हमारी बहुत बुद्धिमान है। उसमें लाखों दिमाग हैं, इसीलिये वह इतनी तेज़ बुद्धिवाली है। ऐसे इंजीनियर भी हैं जो मन ही मन हमें डमन को आतुर है, अपने विचारों के लिये वे गोली खाने के लायक हैं, पर उन्हें नहीं खिलायी जाती बल्कि उन्हें काम देकर कहा जाता है ‘तुम पढ़े-लिखे आदमी हो। लो पैसे, ठूस-ठूसकर खाओ, अपनी लुगाइयो के लिये मनभावन रेशमी कपड़े खरीदो, पर अपने दिमाग को चलाओ, विश्व क्रांति के वास्ते इंजीनियरिंग का काम करो।’ और वे करते हैं। हालांकि पुगने जीवन की ओर मुड़-मुड़कर देखते हैं, पर काम करते हैं। गोली मारकर उनसे मिलेगा क्या? घिमी पतलून और शायद चैनवाली घड़ी। पर काम करके तो वह हजारों रूबल का फ़ायदा देता है। इसी तरह हमारा ओस्त्रोव्नोव है। लगाने दो उसे पेड़ खड़ों में, बनाने दो जोहड़। यह सब सोवियत मन्ता के फ़ायदे में है और विश्व क्रांति भी पास आती है इसमें।”

याकोव लुकीच के जीवन में फिर से कुछ मतुलन आ गया। वह समझता था कि वे सभी शक्तियां जो पोलोवत्सेव की पीठ पीछे खड़ी थी और विद्रोह की तैयारियों का निर्देशन कर रही थी इस बार हार गयी। उसे पक्का विश्वास था कि अब विद्रोह नहीं हो सकता क्योंकि मौका हाथ से निकल गया और सोवियत सत्ता से सबसे ज़्यादा खार खाये कज़ाको तक के विचारों में कुछ मोड़ आ गया। “लगता है पोलोवत्सेव और ल्युत्वेव्स्की विदेश भाग गये हैं,” याकोव लुकीच सोच-

ता, उसे इस बात पर खेद की पैनी अनुभूति होती कि सोवियत सत्ता को भिन्नोडने का मौका नहीं मिला पर साथ ही सात्वनाप्रद हर्ष भी होता कि अब मे याकोव लुकीच के निश्चित अस्तित्व के लिये कोई खतरा नहीं रहा। अब ग्रेम्याची आनेवाले मिलीशियामैन को देखकर डर के मारे मुह मे उबकाई नहीं आती थी, पहले तो मिलीशियामैन का काला ओवरकोट देखते ही उसके शरीर मे कपकपी दौड़ने लगती थी।

“क्यो, इन म्लेच्छो का शासन कब खतम होगा? हमारेवाले जल्दी आ रहे है?” एकात मे बुडिया मा ओम्ब्रोन्नोव मे पूछती।

और याकोव लुकीच मा के बेमौके सवाल मे झुझलाकर कहता ‘माता जी, आपको क्या फर्क पडता है?’

“फर्क क्यो नहीं पडता, गिरजे बद कर दिये, पादरियो को बंद-खल कर दिया यह कहा की बात हुई?”

“आपकी उम्र मे तो भगवान का नाम जपना चाहिये दुनि-यादारी मे आपको क्या लेना-देना। हर बात मे नाक जरूर घुमेडती है आप।”

“और वह अफसर कहा गये? वह लफगा, काना तबाकूखोर किधर उड गया? तू भी अजीब है। तब तो आशीर्वाद माग रहा था, अब फिर मे इस सरकार की चाकरी कर रहा है।” बुडिया किमी भा तरह यह समझ न पाती थी कि क्यो उमका बेटा याकोव सरकार को बदलने के लिये राजी नहीं हुआ।

“अरे, माता जी, आपकी बातो मे तो मेरा खून जम जाता है। छोड दीजिये अपनी बेवकूफी भरी बातें। क्यो आप पुरानी बातो को याद करती है? आप तो लोगो के मामने भी बक सकती है। मेरा तो मिर लुडक जायेगा, माता जी। आप ही ने तो कहा था कि जो भगवान करता है, अच्छा ही करता है। बस काटिये अपने दिन मौज मे। नाक मे आपकी दो छेद है न, बस चुपचाप साम लीजिये पर मुह बंद रखिये रोटी आपके मुह मे कोई छीन नहो रहा आपको और चाहिये क्या?”

ऐसे वार्तालाप के बाद याकोव लुकीच कमरे मे ऐसे निकलता मानो किमी ने उस पर खौलता पानी उडेल दिया हो, बडी देर तक

वह शांत न हो पाता, अपने बेटे सेम्योन और घर की औरतों से वह सख्ती से कहता :

“बुढ़िया पर कड़ी नज़र रखो ! मरवा देगी मुझे ! जैसे ही कोई पराया घर की देहरी पर पांव रखे फ़ौरन उसे कमरे में बंद कर देना ।”

और बुढ़िया को दिन-रात ताले में बंद रखा जाने लगा । पर रविवार के दिन उसे बेखटके छोड़ दिया जाता । वह अपनी जैसी ही जर्जर बुढ़ियों के पास जाकर अपना रोना रोती :

“बहिनो मेरी प्यारी ! मुझे तो याकोव और उसकी बहू ताला लगाकर बंद रखते हैं ... रूखी रोटी खाकर गुज़र करती हूं, सूखी रोटी का टुकड़ा कुतरती हूं और आंसू पीती हूं । पर पहले जब हमारे यहां अफ़सर टिके हुए थे, याकोव का कमांडर और उसका यार, तब व्रत के दिन मुझे फ़लाहार मिलता था ... पर अब तो बेटा और बहू मुझसे इतने चिढ़े हुए हैं कि कुछ पूछो मत । सगा बेटा तक इतना बेरहम हो गया, पता नहीं क्यों ? पहले तो म्लेच्छों की सरकार का सफ़ाया करने के लिये आशीर्वाद मागने आता था, पर अब उसकी बुराई के लिये मुंह तक मत खोलो, मुझे कोसने लगता है, गालियां बकता है ।”

... फिर भी याकोव लुकिच का चैन का जीवन जो सिर्फ़ मां के साथ बातचीत में ही दूषित होता था, अचानक और शीघ्र ही समाप्त हो गया ..

३६

बोवाई के समय ही लूस्का नागूल्लोवा, तलाक़शुदा बीवी और हंममुख, कुलटा औरत, खेत में काम करने लगी । उसे तीसरी टोली में भेजा गया और वह खुशी से टोली की कुटिया में बस गयी । दिन में वह अफ़ानासी क्रास्नोकूतोव के हंकवैये का काम करती और रात को खेत शिविर की लाल कुटिया के सामने जहां वह रहती थी, पौ फटने तक बालालाइका और अकार्डियन बजते रहते, लड़के-लड़कियां नाचते-गाते और इन रंगरेलियों का निर्देशन लूस्का करती ।

उसके लिये यह दुनिया मीठी-सरल थी । लूस्का के विचारशून्य चेहरे पर चिंता या भय की एक भी शिकन नहीं थी । जीवन की राह

पर वह मस्तानी चाल से, विश्वास के साथ, अपनी सलोनी भौहो को आतुरता के साथ तानकर ऐसे चलती मानो किमी भी पल खुशी से उसकी भेट होनेवाली है। मकार के बारे में तो वह तलाक के अगले दिन ही भूल गयी। तिमोफेई नकटा कही बहुत दूर था, पर विरह में दुखी होना लूशका के स्वभाव में कहा था? “मेरे लिये मडो की कोई कमी नहीं।” सधवा और विधवा के बीच की उसकी अनिश्चित स्थिति की ओर इशारा करनेवाली लडकियों और औरतों से वह उपेक्षा के साथ कहती।

और वास्तव में उनकी कोई कमी नहीं थी। तीमरी टोली के लडके और जवान विवाहित पुरुष लूशका का प्रेम पाने के लिये आपस में होड़ करते। खेत शिविर की कुटिया के पास चाद की धुधली चादनी में नाचनेवालों के जूतों की ण्डियों की ठक-ठक सुनायी देती। अक्सर नाचनेवालों और लूशका के प्रेम के प्यासों के बीच गाली-गलौज छिड़ जाती जो बाद में जबर्दस्त हाथापाई में बदल जाती। और यह सब लूशका की वजह से होता। देखने में लगता कि वह बस छूते ही पिघल जायेगी, मारे गांव को तिमोफेई नकटे से उसके अनैतिक सबधों के बारे में मालूम ही था। तिमोफेई द्वारा अपनी इच्छा के बावजूद और नागूलनोव द्वारा स्वेच्छा से रिक्त किये गये स्थान को पाना हरेक अपने लिये सम्मान की बात मानता था।

आगाफोन दुबत्सोव ने लूशका को समझाने का प्रयास किया पर उसे मुह की खानी पड़ी।

“काम मैं ठीक से करती हूँ, नाचने और डस्क लडाने की कोई मुझे मनाही नहीं कर सकता। तुम आगाफोन चाचा ज्यादा तैश में न आओ, आराम में कोट ओढ़कर सो जाओ। और अगर डाह होती है तुम्हें और खुद हमारे खेल में भाग लेना चाहते हो तो आ जाओ। हम चेचक के दागवालों को भी लेते हैं। कहते हैं कि चेचकरू चेहरेवाले प्यार में बड़े माहिर होते हैं।” हमते हुए लूशका ने उसका मजाक उड़ाया।

तब ग्रेम्याची में आते ही आगाफोन दवीदोव से सहायता मागने गया।

“कामरेड दवीदोव! आप भी अजीब हैं।” वह रोंष के साथ बोला। “ल्यूबीशिकन की टोली में बुढ़े श्चुकार को ठूस दिया और

मेरे मत्थे लूशका नागूलोवा को मढ़ दिया . आप क्या उन्हे तोड़-फोड़ के लिये भेजते है ? किसी दिन रात को आकर देखिये खेत शिविर मे क्या होता है। लूशका ने मेरे सब छोकरो को पागल बना दिया। सबको वह ऐसे मुस्कराकर देखती है मानो न्योता दे रही हो, बस वे आपस मे जवान मुर्गो की तरह भिड़ जाते है। और रात को वे ऐसे एडिया पटक-पटककर नाचते है कि मुझे उनके पावो पर तरस आता है, जमीन ढोल की तरह धम-धम करने लगती है। कुटिया के पास की जमीन कूट-कूटकर पत्थर कर दी। तारे बुझने लगते है पर हमारे खेत शिविर मे मेले जैसा शोर-शराबा होता है। बिल्कुल कुत्तो के ब्याह की तरह। पौ फटने तक हुडदग मचाते है और दिन मे भला कैमे काम करेगे ? चलते-चलते सोते है, बैलो की टागो के बीच लेट जाते है आप, कामरेड दवीदोव, या तो टोली से इस बीमारी-लूशका को हटा दे या फिर उमे शादी-शुदा लुगाई की तरह रहने को कह दे। ”

“मै तुम्हारे लिये क्या हूँ ?” तिलमिलाकर दवीदोव बोला। “मै क्या हूँ ? उसका गुरू हूँ ? भाड़ मे जाओ ! बात-बात मे मेरे पास मुह उठाये चले आते है मै क्या उमे लोक-लाज की सीख दूंगा ? ठीक मे काम नही करनी, निकाल दो टोली मे ! तुम लौगो ने यह क्या आदत डाल रखी है, कुछ भी हो सीधे दफ्तर मे पहुच जाते हो। ‘कामरेड दवीदोव, हल टूट गया !’, कामरेड दवीदोव, घोड़ी बीमार पड गयी !’ या इसी मामले को लो, बदचलन औरत है तो क्या मै उसे सीख दूँ ? भाड़ मे जाओ ! हल ठीक करवाना है तो सीधे लोहार के पास जाओ ! घोडो के मामले मे ढांगो के डाक्टर के पास ! तुम लोग कब अपने दिमाग से काम लेना सीखोगे ? मै कब तक तुम्हारी उगली पकड़कर चलाता रहूंगा ? जाओ ! ”

आगाफोन बहुत रुष्ट होकर दवीदोव के पास मे गया। और उसके जान के बाद दवीदोव ने एक के बाद एक दो मिगरेट पी डाली और धड़ाम से दरवाजा बंद करके अंदर मे मिटकनी लगा ली।

आगाफोन दुबत्सोव की बातो से दवीदोव बेचैन हो गया। उसको गुस्सा इस बात पर नही आया था कि टोली नायक सचमुच ही उसे बात-बात मे परेशान करते थे बल्कि दुबत्सोव की इस बात पर कि

लूशका “सबकी ओर ऐसे मुस्कराकर देखती है मानो न्योता दे रही हो।”

उस दिन के बाद से जब फार्म के दफ्तर के पास मिलने पर लूशका ने उममें मजाक में “कोई ब्रेकार पड़ा दूल्हा” दिलवाने का अनुरोध किया और फिर खुद ही उसमें शादी करने का प्रस्ताव किया, दवीदोव का व्यवहार अनायास ही उसके प्रति बदल गया। पिछले समय वह अक्सर ही अपने को इस ओछी और थोथी लुगाई के बारे में सोचता पाता। पहले वह उसके बारे में घिन भरी दया और उदामीनता के साथ सोचता था पर अब उसकी अनुभूति बिल्कुल भिन्न थी और लूशका की अटपटी शिकायत लेकर दुबल्मोव का आना, दवीदोव के लिये फटकार सुनाने का सिर्फ बहाना मात्र ही था।

बड़े बेमौके, बोवाई के प्रचंड दौर में उसका मन लूशका की ओर आकर्षित हुआ। शायद इस नयी अनुभूति के पनपने का कारण यह था कि सारी मर्दियों बकौन अट्रैड रज्म्योल्नोव के, दवीदोव ‘ब्रह्मचारी’ रहा। और शायद वसंत का मादक मौसम ग्रेम्याची सामूहिक फार्म के हर कृषि-राजनीतिक अभियान को सफलता में पूरा करनेवाले निष्काम अध्यक्ष की नश्वर देह पर भी हावी हो गया।

अक्सर रात को बिना किसी कारण उसकी नींद टूट जाती और वह मिगरेट मुलगाकर बुलबुलों की चहचहाहट सुनने लगता, उसके चहरे पर यातना के बल पड़ जाते, फिर वह झुंझलाकर धड़कें में खिड़की बंद कर देता और खेस में मिर ढककर तकिये पर अपनी गुदी छाती टिकाकर सुबह तक आखे खोले पड़ा रहता।

और मई १९३० के तूफानी वसंत में रागा और कुजों में इतनी अधिक बलवले थी कि वे न केवल रात की नागव ॥ में बल्कि दिन में भी चहचहाती रहती। बुलबुलों के प्रेमविहार ३ ॥ १५ वसंत की छोटी रातें कम पड़ जाती। “स्साली, दो पालियों में चहचहाती है।” सवेरे नींद में लड़ते हुए दवीदोव बड़बड़ाता।

बोवाई के अंत तक लूशका नागूल्नोवा टोली में रही पर जिस दिन टांली खेत का काम पूरा करके गाव लौटी, उमी दिन शाम को वह दवीदोव के पास पहुंची।

वह रात का खाना खाकर लेटा हुआ ‘प्राव्दा’ पढ़ रहा था। ड्योढी में किसी ने चूहे की तरह दरवाजा खरोचा और

फिर धीमा महिला स्वर सुनायी पड़ा :

“क्या अंदर आ सकती हूँ?”

“हां, आ जाओ,” दबीदोव ने पलंग से उछलकर कंधों पर कोट डाला।

लूस्का ने कमरे में घुसकर धीरे से दरवाजा बंद कर दिया। सिर पर बंधे काले शाल के कारण उसका रूखा, सांवला पड़ा चेहरा उम्र से अधिक लग रहा था। पर उसकी आंखों में हंसी की झलक थी, वे और भी अधिक दमक रही थी।

“मिलने चली आयी...”

“आओ, बैठो।”

उसके आने पर चकित और हर्षित दबीदोव ने स्टूल बढ़ाया, कोट के बटन बंद किये और पलंग पर बैठ गया।

वह बड़ा अटपटा महसूस कर रहा था। पर लूस्का बेझिझक मेज़ के पास जाकर लहंगे को संभालकर बैठ गयी।

“क्या हाल-चाल है, फ़ार्म-अध्यक्ष?”

“ठीक ही है।”

“एकाकीपन तो नहीं खलता?”

“कैसा एकाकीपन, वक्त ही नहीं मिलता इसका।”

“मेरी याद नहीं आती?”

कभी भी होश-हवास न खोनेवाले दबीदोव के गाल दहकने लगे। लूस्का ने बनावटी लाज के साथ पलकें झुका ली पर उसके होठों के कोनो पर मुस्कान खेल रही थी।

“तुम भी न जाने क्या कहती हो,” कुछ सकपकाकर वह बोला।

“क्या मचमुच तुम्हें मेरी याद नहीं आती थी?”

“अरे नहीं, कह तो रहा हूँ! कोई काम है मुझमें?”

“है... अखबारों में क्या नयी बातें लिखी है? विश्व क्रांति के बारे में क्या कहा जा रहा है?” लूस्का ने मेज़ पर कोहनिया टिकायी, उसके चेहरे पर वार्तालाप के अनुरूप गंभीर भाव छा गया। मानो अभी कुछ देर पहले तक उसके होठों पर शैतानी मुस्कान थी ही नहीं।

“तरह-तरह की बातें छप रही हैं... तुम आयी किस काम में हो?” दबीदोव ने दिल कड़ा करके पूछा।

शायद मकान मालकिन छिपकर उनकी बातचीत को सुन रही

थी। दबीदोव ऐसे कुलबुला रहा था मानो अगारो पर बैठा हो। उसकी हालत बिलकुल पतली थी। कल ही मालकिन पूरे ग्रेम्याची में छिडोरा पीट देगी कि मकार की भूतपूर्व बीवी रात को उसके किरायेदार के पास आती है और बस दबीदोव की उजली प्रतिष्ठा पर कालिख पुत जायेगी। गप्पे लडाने की शौकीन औरते गलियो और कुओ पर दिन-रात कानाफूमी करेगी, सामूहिक फार्म के किमान उसे अर्थ-पूर्ण हमी के साथ देखेगे। रजम्योल्लोव लूश्का के जाल में फसे कामरेड पर फब्तिया कसेगा और बात इलाकाई कृषि सघ तक पहुच सकती है—क्या पता वे कही यह न कह दे ‘उमी लिये इमन दम तारीख को ही बोवाई पूरी की क्योंकि रात को इसके पास लुगाटया आती थी। यह शायद बोवाई की सोचने के बजाये इस्क लडाने में व्यस्त था।’ और मडल पार्टी समिति के सचिव ने ‘पच्चीसहजारियो’ को गावो में भेजते समय व्यर्थ ही नहीं कहा था “क्रांति के हिरावल दस्ते—मजदूर वर्ग—की प्रतिष्ठा को गाव में ऊचा उठाकर रखना चाहिये। कामरेडा आपको बहुत सावधानी में हर काम करना चाहिये। मेरा मतलब आपके निजी आचरण से भी है। गाव में एक कोपेक की पियोगे पर नुकसान सौ राजनीतिक रूबलो का होगा।’

दबीदोव लूश्का के आने और उसके साथ बातें करने के सभी सम्भावित परिणामों के बारे में सोचकर पसीने से तर हो गया। इज्जत मिट्टी में मिल जाने का वास्तविक खतरा मुह बाये खड़ा था। पर लूश्का आराम से बैठी थी। वह दबीदोव के मन में हो रही यातनापूर्ण उथल-पुथल पर बिलकुल भी ध्यान नहीं दे रही थी। दबीदोव ने घबराहट के कारण फटे-से स्वर में सस्ती के साथ पूछा

‘क्या काम है? बोलो और जाओ मेरे पास तुम्हारे साथ गप्पे लडाना का वक्त नहीं है।’

“तुम्हें याद है क्या कहा था मुझसे तब तुमने? मैंने मकार से नहीं पूछा, वैसे भी मैं जानती हूँ कि वह इसके खिलाफ है।”

दबीदोव उछलकर खड़ा हो गया, हाथ हिला-हिलाकर वह बोला
“मेरे पास वक्त नहीं। बाद में। फिर कभी।”

इस क्षण वह उसे चुप करने के लिए उसके हमते हुए मुह को हथेली से बंद करने को तैयार था।

और वह समझ गयी, उपेक्षा के साथ भौंहे तानकर वह बोली

“तुम भी बड़े बनते हो! . अच्छा, ठीक है। मुझे कोई अच्छा-सा अखबार दे दो। इसके अलावा और कोई काम नहीं आप से। माफ़ करना परेशानी के लिये ..”

उसके जाने पर दवीदोव ने राहत की सांस ली। पर पल भर बाद ही वह मेज़ पर बैठा बालों को नोचता सोच रहा था: “मैं भी निरा ठूठ हूँ! कहने दो लोगों को जो चाहें। क्या मेरे पास औरत नहीं आ सकती? क्या मैं संन्यासी हूँ? किसी को इसमें क्या वास्ता? वह मुझे अच्छी लगती है, मतलब मैं उसके साथ समय बिता सकता हूँ .. बस काम को कोई नुकसान नहीं पहुंचना चाहिये, बाक़ी बातों की कोई परवाह नहीं! पर अब तो वह नहीं आयेगी। मैं बड़ी रुखाई के साथ पेश आया, वह यह भी भांप गयी कि मैं कुछ डर गया था ... मैंने भी क्या कर डाला!”

पर उसकी आशका व्यर्थ निकली: लूशका उन लोगो में से नहीं थी जो बड़ी आसानी से अपनी योजनाओं को न्याग देते हैं। और योजना उसकी दवीदोव को जीतने की थी। वास्तव में, ग्रेम्याची के किमी लडके से अपनी ज़िंदगी बांधने में उसके लिये क्या तुक थी? और ज़रूरत भी किम लिये थी इसकी? क्या ज़िंदगी भर अगीठी के धुएँ से आंखें फोड़ने और खेतों में जुताई के वक़्त बैलों को हाकने के लिये? और दवीदोव की बात दूसरी थी। वह सीधा-सादा, हट्टा-कट्टा मलाना जवान था, वह अपने काम में रमे और विश्व क्रांति की बाट जोहते मकार जैसा नहीं, तिमोफ़ेई जैसा भी नहीं था .. बस उसमें एक छोटा-सा तुक़म था। एक दान टूटा था और वह भी बिलकुल सामने-वाला, पर लूशका ने अपने प्रियवर में इस कमी को अनदेखा कर दिया। वह अपने अल्पजीवन में प्राप्त अति समृद्ध अनुभव से जानती थी कि मर्द का मूल्यांकन करने समय दांतों का इतना महत्व नहीं है

अगले दिन शाम के भुटपुटे में वह फिर आयी, इस बार वह बड़ी सज-धज कर आयी थी। वह पहले से भी अधिक उत्तेजक लग रही थी। उसके आने का बहाना अखबार थे।

“मैं आपका अखबार ले आयी हूँ... क्या दूसरे ले सकती हूँ? आपके पास किताबें नहीं हैं? मुझे कोई दिलचस्प प्रेम-त्रेम की चाहिये।”

“अखबार ले लो, पर किताबें नहीं हैं, मेरे घर में कोई पुस्तकालय तो खुला नहीं।”

लूशका निमंत्रण की प्रतीक्षा किये बिना ही बैठ गयी और वह तीसरी टोली में बोवाई के बारे में, ग्रैम्याची में खोली गयी डेयरी के काम में कर्मियों के बारे में बातें करने लगी। उसे लगा कि दबीदोव को इन्हीं बातों में रुचि हो सकती है और उसने अपने को दबीदोव के, उसकी रुचियों के अनुरूप ढाल लिया।

शुरू-शुरू में दबीदोव अविश्वाम के साथ उसको मुन रहा था, फिर खुद भी बोलने लगा। वह डेयरी के बारे में अपनी योजनाओं, लगे हाथ इस क्षेत्र में विदेशों में तकनीकी उपलब्धियों के बारे में बताते लगा, अंत में वह खेद के साथ बोला

“हमें ढेरों पैसे की जरूरत है। दुधारू गायों की बाँछियों, अच्छी तर्गल के माड की जरूरत है यह सब जल्दी में जल्दी हो जाना चाहिये। डेयरी के सुचारू प्रबंध में हमें बड़ा मुनाफा होगा। उसकी बदौलत सामूहिक फार्म अपना बजट ठीक कर सकेगा। अभी तो वहाँ क्या है? दो कौड़ी की सप्रेटा मशीन जो सारे दूध में क्रीम नहीं उतार पाती। दूध का एक भी डिब्बा नहीं है और दूध को पुराने जमाने की तरह हड्डियों में रखा जाता है। भला यह भी कोई बात हुई? तुम भी कहती हो कि उनके यहाँ दूध फट जाता है, क्यों फट जाता है? जरूर गंदे बर्तन में भरा होगा।’

हड्डियों को ठीक से साफ नहीं करते इसी लिये फट जाता है।”

“मैं भी तो यही कह रहा हूँ कि बर्तनों की सफाई का ग्याल नहीं रखते। तुम जाकर इस काम को सभालो। जो जरूरी है करो, प्रबंध-मंडल हमेशा तुम्हारी सहायता करेगा। नहीं तो क्या होगा? अगर बर्तनों का यही हाल रहा या ग्वालिन इसी तरह दुहती रहेगी जैसा कि मैंने देखा, तो दूध होगा ही खराब। हाल ही में मैंने देखा कि एक ग्वालिन दूध दुहन बैठी, गाय के थन नहीं धोये, वे कीचड़ और गोबर में मंथे थे और खुद ग्वालिन न भी अपने हाथ नहीं धोये। इसमें पहले न जाने क्या छूती रही हाथों में और बैठ गयी गंदे हाथों में गाय को दुहने। मेरे पास इस काम के लिये वक्त नहीं था। पर मैं अब इस पर वक्त दूंगा। और तुम भी मुह पर पाउडर पोतने और मिगार करने की जगह डेयरी का काम अपने हाथों में ले लेती तो अच्छा होता, क्यों? तुम्हें उसका प्रबंधक नियुक्त कर देगे, कोर्स में पढ़ने जाना और प्रबंध का काम सीखकर लौटना और तुम कुशलता प्राप्त औरत हो जाओगी।”

“नहीं-नहीं, मेरे बिना ही काम चला लो,” लूका सास छोड़कर बोली, “वहा मेरे बिना भी लोग है जो काम ठीक कर सकते है। और मैं प्रबधक नहीं बनना चाहती। पढ़ने के लिये भी नहीं जाना चाहती। बडा भ्रमेले का काम है। मैं तो आराम से काम करना पसद करती हू ताकि खूब मौज उडा सकू। बेवकूफ लोग ही काम करते है।”

“फिर तुम उल्टी-सीधी बकने लगी।” रोष के साथ दवीदोव बोला।

शीघ्र ही लूका घर जाने के लिये खड़ी हुई। दवीदोव उसे छोड़ने के लिये साथ चल दिया। अंधेरी गली मे वे साथ-साथ तृपचाप चल रहे थे, फिर लूका ने, जो बडी जल्दी दवीदोव की सभी चिन्ताओ को भाप गयी थी, पूछा

“आज कुबान्कावाला खेत गये थे देखने?”

“गया था।”

“क्या हाल है उसके?”

“खराब ही है। अगर इम हफ्ते बारिश नहीं हुई तो डर है कि अकुर नहीं फूटेगे। तुम समझती हो कि इसका अजाम क्या होगा? वे बुद्धे जो मेरे पाम पूजा करवाने की अनुमति लेने आये थे •बडी हमी उडायेगे। वे कहेंगे ‘पूजा नहीं करवाने दी इसीलिये भगवान ने बारिश नहीं की।’ पर उनका भगवान क्या कर सकता है जब बैरोमीटर की मुई ही माफ मौसम पर अटक गयी है। पर उनका तो अधा विश्वास और मजबूत ही हो जायेगा। बडी मुसीबत है। कुछ गलती तो हमारी अपनी ही है हमें जायद की फसल पर इतना ध्यान देने के बजाय गेहू को जल्दी से बोना चाहिये था। यही हमारी गलती है। ‘मेलीनो-पूम’ के साथ भी यही किस्मा हुआ, मैंने उम काठ के उल्लू ल्युबीशिकन को सिद्ध करके दिखाया था कि हमारे लिये यह किस्म हर दृष्टि से सबसे बेहतर है।’ दवीदोव फिर जोश के साथ बोलने लगा, अपने प्रिय विषय पर आकर वह घटो बोल सकता था पर लूका ने बेमब्री मे उसे टोका

“अरे छोडो भी अपने अनाज की बाते। चलो आओ, कुछ देर यहा बैठ ले,” उसने चादनी के प्रकाश मे नाले के नीले किनारे की ओर इशारा किया।

किनारे के पास जाकर लूस्का ने अपना लहगा समेटा और मालिकाना अदाज में बोली

“तुम अपना कोट बिछा दो जमीन पर, कहीं मेरा लहगा गदा न हो जाये। सबसे बढ़ियावाला पहन रखा है।”

और जब वे कोट बिछाकर पास बैठ गये उसने दबीदोव के व्यग्यपूर्ण चेहरे के पास अपना गभीर, सलोना चेहरा लाकर कहा

“छोड़ो भी अनाज और फार्म की बातें। यह वक्त इन बातों का नहीं है। तुम पाप्लर वृक्ष की नयी पत्तियों की मुगध को महसूस कर रहे हो?”

बस यही, एक ओर से लूस्का की ओर खिंचते और दूसरी ओर इस बात में डगते दबीदोव की हिचकिचाहट काफूर हो गयी कि लूस्का के साथ सबधों के कारण उसकी प्रतिष्ठा गिर जायेगी

बाद में जब वह उठा तो उसके पाव के नीचे से मिट्टी के ढेले भर-भर करने वाले में लटक गया लूस्का अभी भी हाथ फैलाकर थकान में आखे मूदे पीठ के बल लेटी हुई थी। कुछ देर तक वे चूप रहे। फिर वह अचानक फूर्ती में उठकर बैठी और अपने मुँड़े घटनों को बाहों में भरकर बिना आवाज किये हमने लगी। वह ऐसे हम रही थी मानो उसे कोई गुदगुदी कर रहा हो।

“तुम किस लिये हम रही हो?” असमजस में पडकर दबीदोव ने रुठे स्वर में पूछा।

पर लूस्का की हमी जैसे फूटी थी वैसे ही अचानक रुक गयी। उसने टांगे पसारी और अपने कूल्हों और पेट को महलाते हुए कुछ मोचते हुए बोली, उसके भर्ग्ये-में स्वर में आनंद की झलक थी

“मैं अपने को इस समय कितना हल्का महसूस कर रही हूँ।”

“पख लगातं ही उड़ने लगेगी?” दबीदोव ने झुझलाकर पूछा।

“तुम बेकार ही गुस्सा कर रहे हो। मेरा पेट बड़ा हल्का-सा हो गया। खाली-खाली-सा, बिल्कुल हल्का, इसीलिये हम रही थी। तुम भी बड़े अजीब हो, मुझे क्या रोना चाहिये था? बैठो, खड़े क्यों हो गये?”

दबीदोव ने अनिच्छा से उसका कहना माना। वह चादनी में लूस्का के हरे-से चेहरे को कनखियों से देखते हुए मोच रहा था “अब क्या करूँ इसके साथ? शादी-वादी रजिस्टर करवा लेनी चाहिये नहीं

तो मकार को कैमे दिखाऊगा मुह अपना कहा मे आ पडी यह मुसीबत मेरे सिर पर।”

“और लूका हाथो में जमीन का महाराग लिये बिना लचके उठी और मुस्कराने हुग, उमने आखे मिचमिचाकर पूछा

“क्यो ? मुदर हू न मै ?”

“मै तुम्हे क्या कहूँ लूका के दुबले कधो को अपनी बाहो में भरकर दवीदोव ने अर्निश्चित-सा उत्तर दिया।

४०

ग्रेम्याची में मूमलाधार वर्षा के अगले दिन याकोव लुकीच घोड़े पर सवार होकर बलूत वन में गया। उसे कटाई के लिये बलूतो को छाटना था क्योंकि अगले दिन तीमगी टोली के लगभग सभी लोग बाधों के लिये लकड़ी काटने के वास्ते वन में आनेवाले थे।

याकोव लुकीच मुबह में ही गाव में चल पड़ा। उसका घोड़ा अपनी गथी पूछ को हिलाता धीरे-धीरे चल रहा था। बिना तालोवाली उसकी अगली टांगे कीचड़ में फिसल रही थी। पर याकोव लुकीच ने चाबुक को हाथ तक नहीं लगाया, उसे कोई जल्दी नहीं थी। वह हरने पर लगाम को लटकाकर आगम में सिगरेट पीता हुआ ग्रेम्याची के चारों ओर फैली स्तेपी को देखता हुआ जा रहा था, जिसके चपे-चपे में वह बचपन में परिचित था और जो उसके दिल में रमी थी। वह नमी में फूली भुरभुरी ज़ातो वर्षा में धुली फसलों को आनंद के साथ देख रहा था। पर वह बड़े खेद और निराशा के साथ सोच रहा था “टूटे दातवाले शैतान ने बारिश की भविष्यवाणी की थी। अब तो कुबान्का उग जायेगा। देखो तो, भगवान भी इन म्लेच्छों के साथ दे रहे हैं। पहले अकाल ही अकाल पड़ते रहते थे, पर मन् इक्कीस में जब मैं इनके पाव जमे हैं हर माल एक से एक बढ़कर फसल हो रही है। जब कृदरत ही सोवियत सरकार के खेमे में चली गयी तो वह खत्म कब होगी ? नहीं, अगर मित्र राष्ट्र कम्युनिस्टों को उखाड़ फेंकने में मदद नहीं देंगे तो हम खुद कुछ भी नहीं कर पायेंगे। चाहे कितने भी अक्लमद क्यों न हो पर पोलोवन्सेव जैसा एक भी नहीं टिक पायेगा।

ताकत तिनके को तोड़ देती है, भला ताकत का मुकाबला किया जा सकता है? और लोग भी हगमी है एक दूसरे की चुगली करते हैं। हगमजादे बस अपनी नाक से दूर तो देखते ही नहीं। बड़ा खराब समय है। शैतान तक नहीं जानता कि साल-दो साल बाद वह क्या गुल खिलायेगा लगता है मैं तो शुभ घड़ी में पैदा हुआ नहीं तो पोलोवत्सेव के साथ मेरे किस्से का इतना अच्छा अंत नहीं होता। मिर लुढ़क गया होता मेरा कब का। भगवान की दया में सब ठीक-ठाक हो गया। कुछ देर और सब्र कर लेने है, देखने है आगे क्या होगा। अब की बार नहीं कर सके सोवियत सत्ता का सफाया तो क्या हुआ, आगे न जाने इसमें भी अच्छा हो।”

धूप में फैली घास के तिनको, अनाज की बढ़ती बालियों में पिरंगे ओस के बिल्लौरी मनके काप रहे थे। पश्चिमी हवा उन्हें हिला रही थी और ओस की बूंदें इद्रधनुषी आभा के साथ चमकती हुई, वर्षा की सुगंध छोड़ती धरती पर लुढ़क रही थी।

कच्चे रास्ते पर बनी लीको में अभी तक वर्षा का पानी भरा था और उधर ग्रेम्याची के ऊपर, पाप्लर वृक्षों के ऊपर मुबह का गुलाबी कोहरा उठ रहा था। आकाश के नील पटल पर, उगते सूर्य की आभा में रुपहला चाद धूमिल पड़ता जा रहा था।

हमिया की तरह लटका पतला चाद भारी वर्षा की भविष्यवाणी कर रहा था। और उसे देखकर याकोव लुकीच के मन में यह विचार पक्का हो गया “फसल अच्छी होगी।”

वह दोपहर को बलूत वन में पहुंचा। घोड़े को छानकर उमने चरन के लिये छोड़ दिया और खद पेटा में खमी बूँदों की छोटी-सी कुल्हाड़ी निकालकर उस हिस्से में बलूत के पेड़ों पर निशान लगाने चल पड़ा जो वनपाल ने ग्रेम्याची के सामूहिक फार्म के लिये निश्चित किया था।

खडू के कगार पर छ बलूतों पर निशान लगाकर वह अगले के पास पहुंचा। ऊँचा मुडौल बलूत गर्व के साथ मिर उठाये अन्य नाटे वृक्षों के बीच खड़ा था, उसकी फुनगी पर चमकीली हरी पत्तियों के बीच कौवे का काला घोंसला था। तन की माटाई के अनुसार बलूत याकोव लुकीच का लगभग हमउम्र ही था और वह मौत के मुह में जानेवाले पेड़ को खेद और उदासी के साथ देख रहा था।

तने पर एक जगह छाल छीलकर कापिंग पेसिल से लिखा 'ग्रे० मा० फा०' और पैर से छाल के रिमते टुकड़े को ठोकर मारकर मिगरेट पीने बैठ गया। "कितने सालों तक तू खड़ा रहा, भैया! तुझ पर कभी किसी का राज न चला पर अब मरने का वक्त आ गया। तुझे गिराकर छाल उतार देगे, कुल्हाड़ों से तेरी सुदरता को नष्ट कर देगे और जोंहड़ के पास ले जाकर बाध की जगह तुझे बल्ली की तरह गाड़ देगे" याकोव लुकीच नीचे से बलूत की छतरीनुमा चोटी को ताकता हुआ साच रहा था "और तू सामूहिक फार्म के जोंहड़ में तब तक मड़ेगा जब तक पूरा गल नहीं जायगा। फिर वसंत की बाढ़ का पानी तुझ बढ़ाकर ले जायेगा और तेरा नामो निशान न बचेगा।"

इन विचारों से याकोव लुकीच के दिल में कमक के साथ उदामी और आशका भर गयी। उसे अनिष्ट की अनुभूति हुई। "बम्बू इ तुझे, नहीं कटवाऊ? हर चीज सामूहिक फार्म की भूख मिटाने के लिये थोड़े ही है?" और हल्के मन उसने फैमला किया "जीता रह! बढ़ता जा! अपनी छटा बिखेरता रह! तेरी जिदगो तो मजे की है। न तुझे कर चुकाना पड़ता है, न तुझे सामूहिक फार्म में भरती होता है भगवान की इच्छा में जी!"

जल्दी से उठकर उसने मुट्ठी में कीचड़ भरा और उसे कटे निशान पर अच्छी तरह लेप दिया। वह शांति और चैन के साथ खड्ड के बाहर आया

पूरे सड़मठ बलूतो पर निशान लगाकर भारवाहल्ल याकोव लुकीच घोड़ पर सवार हुआ और वन के किनारे-किनारे चल पड़ा।

'याकोव लुकीच जग म्का! वन में एक खल स्थान पर किसी ने उस पुकारा।

फिर भाड़ी के पीछे से भेड़ की खाल की काली टोपीवाला एक आदमी निकला। उसकी फौजी कपड़े की गर्म जैकेट के बटन खुले थे। उसका चेहरा मावला, चमड़ी मूखी थी, कपोलों की हड्डियाँ दुर्बलता के कारण उभरी हुई थी, आँखें गहरी धूसी थी, उसके सफेद-से फटे हाँठों पर कोयले की रेखा की तरह काली मूछे थी।

'क्या पहचाना नहीं?'

आदमी ने टोपी उतारी और आशका के साथ अगल-बगल में

देखकर खुले स्थान पर आया। तभी याकोव लुकीच तिमोफेई नकटे को पहचान पाया।

“तू कहा से आया है ? ” उसने पूछा। वह इम भेट, क्षीणकाय और बिलकुल बदले तिमोफेई को देखकर स्तब्ध रह गया था।

“जहा से लौटके नहीं आते काले पानी से कोनलास नाम की जगह से।”

“क्या भागकर आया है ?”

“हा याकोव चाचा, तुम्हारे पाम कुछ है खाने को ? रोटी है ?”

“है।”

“भगवान के लिये दे दो। चार दिन से कुछ खाया नहीं सडी बेगियो के अलावा,” और उसने लार गटकी।

कोट के अंदर से रोटी के टुकड़े को निकालते याकोव लुकीच के हाथ को देखकर उसके होठ कापे, आखे भेड़िये की तरह चमकी।

रोटी पर वह ऐसे टूट पड़ा कि याकोव लुकीच की ऊपर की साम ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी। वह रोटी को बिना चबाये ही निगल रहा था। आखिरी टुकड़ा गटककर उसने अपनी मदहोश आखो से याकोव लुकीच की ओर देखा।

“बहुत भूखा था तू तो,” याकोव लुकीच महान्भूति के साथ बोला।

“कह तो रहा हूँ चार दिन से सडी-गली बेगिया खाकर जिदा हूँ, बहुत दुबला हो गया हूँ।”

“तू यहा आया कैसे ?”

‘ स्टेशन से पैदल। रात को चलता था, ’ थके स्वर में तिमोफेई ने उत्तर दिया।

उसका चेहरा बहुत पीला पड़ गया था लगता था कि उसने अपनी वची-खची शक्ति भी रोटी खाने पर लगा दी। उसे जोंग-जोंग में हिचकि-या आने लगी।

और बाप तो तेरा जिदा है ? घरवाले कैसे है, ठीक-ठाक तो है ?” याकोव लुकीच पूछे जा रहा था, पर वह घोड़े में नहीं उतरा और रुक-रुककर चिता के साथ चांगे ओर नजरे दौड़ा रहा था।

“बाप निमोनिया से मर गया, मा और बहन वही है। और

आपके गाव की क्या खबरे है? लूश्का नागूल्लोवा वही है?"

"वह तो, छोरे, अब तलाकशुदा है।"

"अब कहा रहती है?"

"मौसी के यहा रहती है, अब तो आजाद पछी है।"

"चचा याकोव, तुम ऐसा करना जाकर उमसे कहना कि वह मेरे लिये आज ही यहा खाना लेकर आ जाये। मैं बिलकुल कमजोर हो गया, दिन मे नही जाऊगा, आराम की जरूरत है। चोटे बहुत लगी है। रात-रात को अनजानी राहो पर एक सौ सत्तर वेर्स्ता का सफर तो मजाक की बात नही है। कुछ दिखाये देना नही अंधेरे में कह दो कि खाना ले आय। जैसे ही ठीक हो जाऊगा खद गाव मे आऊगा अपने गाव को देखन को तर्गम गया ह।" और वह दोपी की तरह मुस्करा दिया।

"आगे कैसे जीने का इरादा रखते हो?" याकोव लुकीच कुरेद-कुरेदकर सवाल पूछ रहा था। इस भेट का उम पर अप्रिय प्रभाव पडा था।

और तिमोफेई तिलमिलाकर बोला

"नही पता कैसे? मैं अकेले भेड़िये की तरह हूँ। कुछ आराम करके रात को गाव मे आऊगा, वहा गडी अपनी रायफल निकालूंगा वह खलिहान मे गडी है और शुरू कर दूंगा अपना धंधा। मेरे लिये तो एक ही रास्ता है। जब मुझे मौत की मजा ही मिलनी है तो मैं भी दूसरे को यह मजा दूंगा। कृष्णक को मौगात दूंगा तो दूसरे के हांश ठिकाने आ जायेंगे। इस जगल मे गर्मिया काट दूंगा और पतझड मे पाला शुरू होते ही कुबान या कही और चला जाऊंगा। दुनिया बहुत बडी है और मुझे अपने जैसे सैकड़ो लोग मिल जायेंगे।"

"मकार की लूश्का की तो फार्म के अध्यक्ष मे यागी हो गयी ह ' याकोव लुकीच ने हिचकिचाते हुए उसे बताया। वह कई बार लूश्का को दवीदोव के घर जाते देख चुका था।

तिमोफेई भाडी के पास लेट गया। उसके पेट मे भीषण पीडा हो रही थी। पर वह फिर भी रुक-रुककर बोला

"पहली गोली दवीदोव की होगी लूश्का मेरी बेवफा नही है पुराना प्यार कभी नही भूला जाता मैं उसके दिल की राह हमेशा दृढ़ लगा अभी उम पर भाड-भखाड नही उगे। चचा, तुमने अपनी

गोटी में मुझे तो मार ही डाला। पेट में मरोड़े उठ रहे हैं। अच्छा, तो लूका को कह देना कि बैकफैट और गोटी ले आये। गोटी जग ज्यादा लाये।”

याकोव लुकीच ने तिमोफेई को मचेत किया कि कल जंगल में पेड़ों की कटाई शुरू हो रही है और दूसरी टोली के खेत को देखने चल दिया जहाँ कुबान्का गेहूँ बोया गया था। अभी हाल ही तक कोयले की तरह काले खेत में अतन फूटे अकुरो की हरी-हरी रेखाएँ खिंची थीं।

याकोव लुकीच रात को ही गाव लौटा। फार्म के अस्तबल से घर जानें समय भी तिमोफेई नकटे में हड़ भेट में उसका मन भारी था। पर घर पर नहीं, इसमें भी अधिक विकट मृगीवन उसकी बात जोड़ रही थी।

इधारी में ही वह ने रमोई में निकलकर उसे फुसफुसाकर बताया

“पिता जी, मेहमान आये हैं।”

‘कौन?’

पोलोवन्सेव और वह काना। अंधरा छाने ही आये थे। मे माना जी के साथ गाय दुह रही थी। बैठक में बैठे हैं। पोलोवन्सेव ने बहुत पी रखी है, पर दूसरेवाले का पता नहीं। दोनों के कपड़े तार-तार हो गये हैं। हेरो चीलर पड़े हैं। कपड़ों पर रंगते हैं।

बैठक में वार्तालाप मनाया पड़ रहा था। खामत हुए स्ट व्यग्य के साथ व्यन्धकी बाल रहा था।

हा-हा बसक! श्रीमान आप क्या हैं? मैं आपसे पृष्ठता हूँ। आदरणीय श्रीमान् पोलावन्सेव। पर मैं आपका बताना हूँ कि आप क्या हैं। चाहते हैं? मुनिये! आप बिना देश के देशभक्त, बिना सेना के सेनापति और टन तुलनाओं को आप बहुत ऊँचा और गढ़ समझते हैं तो आप गेमे जआरी हैं जिसकी जेब में फटी कौड़ी तक नहीं है।”

पोलावन्सेव का भारी मोर्ग आवाज मनकर याकोव लुकीच निढाल हो गया। दीवार पर पीठ टिकाकर उसने अपना मिर पकड़ लिया।

फिर वही पुराना गगन शुरू हो रहा था।